सेठ श्री गुलाबचन्द जी सालेचा

सेठ श्री गुलाबचन्दजी अपने पूज्य पिता श्री धनसुखदासजी के साथ
राजसी वेशभूषा मे (१९१८ ई०)

—: सम्पादक – मण्डल :—

सेठ श्री गुलाबचन्दजी युवावस्था में

(१९२० ई०)

सेठ श्री गुलाबचन्दजी अभिनन्दन - समिति

अध्यक्ष
हस्तीमल पारख एडवोकेट

उपाध्यक्ष
घेवरचन्द कानूंगो, शिवराज मोहता,
प्रो० पुष्कर चन्द्रवाकर, जमराज चौपडा

मानद मन्त्री
लक्ष्मीचन्द्र सुराणा, चम्पालाल बांठिया,
डुंगरमल बागरेचा, भवरलाल सालेचा

समारोह संयोजक
सोहनलाल सदाणी

कोषाध्यक्ष
हरकचन्द चौपडा

☆

स्वागत समारोह आयोजन समिति

अध्यक्ष
जीतमल पारख

सभापति
सोहनराज सालेचा

उपाध्यक्ष
भवरलाल खारवाल, रूपचन्द खारवाल, ठाकुर मोतीसिंह गोपडो

मन्त्री
अमृतलाल चौपडा

संयुक्त मन्त्री
घीसूलाल लूंकड़, घीसूलाल ढेलरिया

व्यवस्था प्रमुख
शिवनारायण
सरपंच, ग्राम-पंचायत, पचपदरा

रक्षा मन्त्री, भारत
नई दिल्ली
दिनांक ९ नवम्बर, १९७८

सेठ गुलाबचन्द अभिनन्दन समिति, जोधपुर द्वारा श्री गुलाबचन्द सालेचा का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है और इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जा रहा है यह ज्ञात हुआ।

अभिनन्दन ग्रन्थ मे श्री सालेचा की जीवनी एव उनके द्वारा की गयी सामाजिक सेवाओ की जानकारी के साथ-साथ बाडमेर क्षेत्र की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक पक्षो को झांकी भी दी जायेगी, यह अच्छा प्रयास है।

अभिनन्दन समारोह सफल हो एव ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध हो।

जगजीवन राम

विदेश मन्त्री, भारत
नई दिल्ली
८ नवम्बर, १९७८

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मारवाड के वयोवृद्ध सामाजिक नेता सेठ गुलाबचन्द सालेचा का सार्वजनिक अभिनन्दन करने जा रहे हैं। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ मे उनके सेवा कार्यों के आकलन के अतिरिक्त कुछ ऐसी सामग्री भी होनी चाहिए जो पठनीय तथा सग्रहणीय हो।

मेठ गुलाबचन्दजी के दीर्घ जीवन की कामना करता हू, जिमसे वह सामाजिक एव मास्कृतिक क्षेत्र मे और अधिक सेवा कर सकें।

अटल बिहारी वाजपेयी

लाल कृष्ण आडवाणी

सूचना और प्रसारण मंत्री

भारत

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि १९ नवम्बर, १९७८ को राजस्थान में जिला बाड़मेर के पचपदरा नगर में प्रसिद्ध समाजसेवी सेठ गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनन्दन किये जाने का निश्चय किया गया है। श्री गुलाबचन्दजी की कर्मठता से, उनके मृदु व सौम्य स्वभाव से, मैं व्यक्तिगत रूप से परिचित रहा हूँ। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले तथा बाद में सामाजिक धार्मिक तथा शैक्षणिक क्षेत्र में उन्होंने तन, मन, धन से कार्य किया विशेषकर पश्चिमी राजस्थान के पचपदरा नगर-वासियों के लिए उन्होंने जो कुछ किया, वह सराहनीय है।

यह जानकर और भी हर्ष होता है कि आज ९४ वर्ष की वृद्धावस्था में भी इस समाजसेवी के उत्साह व लगन में कोई कमी नहीं आई। इस अवसर पर मैं उनको दीर्घायु तथा उन्हें समर्पित अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता की कामना करता हूँ।

लाल आडवाणी

कृष्ण कुमार गोयल,

वाणिज्य राज्य मंत्री, भारत

बहुमुखी प्रतिभा और कार्यक्षमता के धनी सेठ श्री गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनन्दन करना अपने एक बहुत बड़े कर्त्तव्य का पालन है।

राजस्थान के सपूत सेठ गुलाबचन्दजी ने जीवन भर लोक कल्याण एवं राष्ट्रनिर्माण हेतु अथक प्रयास किया और उन्होंने तब तक संतोष की सांस न ली जब तक उनका लक्ष्य सिद्ध न हुआ।

मैं सेठजी की दीर्घायु की कामना करता हूं।

कृष्ण कुमार गोयल,

उपसभापति राज्य सभा
नई दिल्ली

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सेठ श्री गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनदन करने का निश्चय किया गया है। श्री गुलाबचदजी हमारे क्षेत्र के प्रसिद्ध समाज-सेवियो मे हैं, उन्होने शिक्षा प्रचार के लिए, जल योजनाओ के निर्माण के लिए, रेल सेवाओ के विकास के लिए व अन्य जन समस्याओ को हल करने के लिए अथक परिश्रम किया है।

हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे समाजसेवी व्यक्तियो का अभिनदन करें। महानुभावो ने इस समारोह का आयोजन किया है वे हमारी बधाई के पात्र है। इस अवसर पर सेठ श्री गुलाबचदजी के प्रति हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूँ।

राम निवास मिर्धा

प्रो० केदारनाथ

श्रम एवं यातायात मन्त्री, राजस्थान

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि पश्चिमी राजस्थान के प्रसिद्ध समाज सेवी सेठ श्री गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनन्दन करने व ग्रन्थ समर्पित करने का आपकी समिति ने निश्चय किया है एव इस उद्देश्य हेतु दिनाक १९ नवम्बर १९७८ को रविवार के दिन कार्यक्रम का आयोजन किया है जिस समारोह मे अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन राज्य सभा के उप नेता श्री सुरेन्द्रसिहजी भडारी द्वारा किया जावेगा जिसमे राजस्थान के मुख्य मत्री एव विभिन्न अन्य राज्यो व इस राज्य के वरिष्ठ नेता भाग लेंगे। आपने सेठ गुलाबचन्दजी के जीवन के सम्बन्ध मे प्रकाशित पुस्तक तथा प्रतिवेदन भी मेरी जानकारी हेतु सलग्न कर भेजा है जिसे पढकर काफी गर्व एव प्रसन्नता हुई।

आदरणीय सेठजी ने अपने जीवन मे पिछडी जाति के उत्थान के लिये एव सामाजिक सेवा के अनेक कार्य किये हैं जो कि सदैव सराहनीय रहेंगे। मेरी हार्दिक कामना है कि आपकी समिति द्वारा आयोजित समारोह पूर्ण सफल होगा जिसके लिये मेरी शुभकामनाएँ भेजता हू।

धन्यवाद

केदार नाथ

ललित किशोर चतुर्वेदी

मन्त्री सिंचाई एवं विद्युत विभाग

राजस्थान

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि प्रसिद्ध समाज सेवी वयोवृद्ध सेठ श्री गुलाबचन्द का सार्वजनिक अभिनन्दन करके उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जा रहा है।

वस्तुत. किसी भी समाज सेवी की सबसे बडी उपलब्धि यही होती है कि सारा समाज उनके कार्य की महक से सुवासित होता रहे। सार्वजनिक अभिनन्दन करके उनके गुणो का अनुसरण करने की समाज मे प्रवृत्ति जाग्रत करने एव इस हेतु अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का जो कार्यक्रम है उससे सभी ऐसे सामाजिक कार्यकर्ताओ को प्रोत्साहन मिलेगा जो समाज सेवा के क्षेत्र मे कार्यरत हैं।

मैं इस कार्यक्रम एव अभिनन्दन ग्रन्थ दोनो की ही हृदय के अन्त स्थल से सफलता हेतु शुभ-कामना करता हू एव उनकी दीर्घायु हेतु प्रार्थना करता हूँ।

शुभ कामनाओ सहित,

ललित किशोर चतुर्वेदी
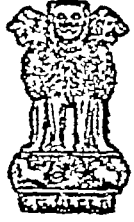
नन्दलाल मीणा

राज्य मन्त्री,

जनजाति विकास विभाग

राजस्थान
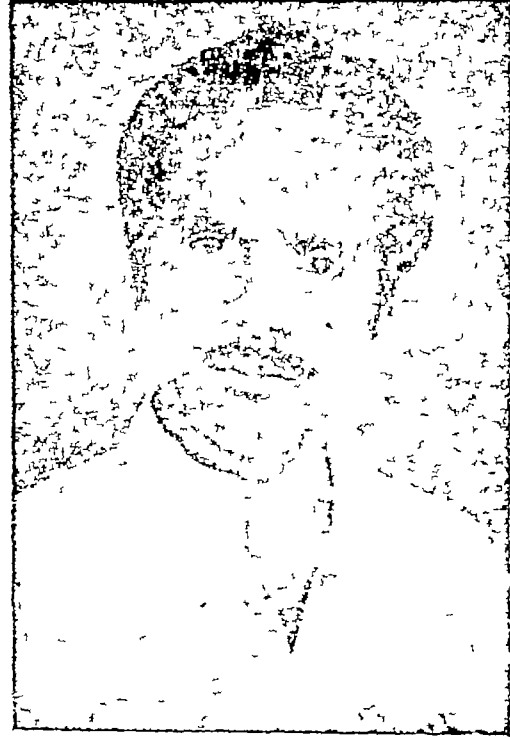
मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि दिनांक १९-११-७८ को पश्चिमी राजस्थान के प्रसिद्ध समाज-सेवी सेठ गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाने वाला है।

श्री गुलाबचन्दजी का अब तक पूरा जीवन खुली पुस्तक की तरह एक कर्मयोगी व समाज-सेवी के रूप मे प्रेरणास्पद रहा है। ऐसी महान् विभूति से आने वाली पीढिया सदा प्रेरणा लेती रहेगी।

मैं इस अभिनन्दन समारोह की सफलता की हार्दिक कामना करता हूँ।

नन्दलाल मीणा

श्री केशुभाई सवदास पटेल,

कृषि एवं सिचाई - योजना मत्री,

गुजरात.

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि दिनाक १९ - ११ - ७८ को प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता सेठ श्री गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनदन करने का निश्चय किया गया है। तथा इस अवसर पर सेठ गुलाबचन्द अभिनन्दन समिति की ओर से उनको एक अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायगा तथा एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जायगा।

सेठ श्री गुलाबचन्दजी का समाज के सभी वर्गों के हित एव विकास मे महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मुझे आशा है कि वे देश एव समाज को अपनी सेवाओ से लाभान्वित करते रहेंगे। इसके लिए प्रभु उन्हे दीर्घायु एव शक्ति प्रदान करे।

मैं उक्त अभिनन्दन समारोह तथा स्मारिका की सम्पूर्ण सफलता के लिए अपनी मगल कामनाए प्रेषित करता हूँ।

भवदीय,
के स पटेल

मकरन्द भाई देसाई

विद्युत मन्त्री, गुजरात
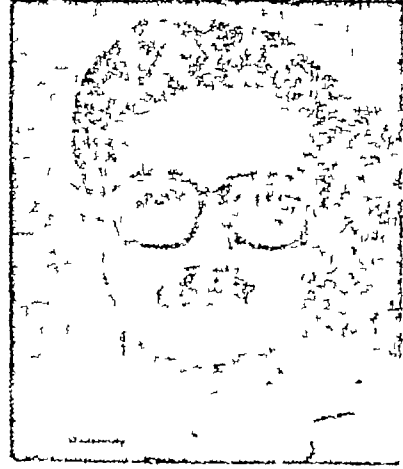
फूलो का राजा गुलाब होता है - उसका क्या कहना, उसकी कोई समता नही है। उसका वैभव निराला होता है। उसके दर्शन से यह एहसास होता है कि मनुष्य के हृदय मे इतनी पखुडिया हो। सेठ श्री गुलाबचन्दजी सचमुच गुलाब हैं उनका हृदय विशाल, बुद्धि प्रखर एव मार्गदर्शन अप्रतिम है। ऐसी हस्ती को पाकर सचमुच पचपदरा धन्यतम है-धन्यतर है राजस्थान और धन्य है भारत।

मकरन्द देसाई

हेमाबहन आचार्य

चिकित्सा एव स्वास्थ्य मंत्री,

गुजरात

आप लोग मरुधरा के इस शताब्दी के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता पचपदरा निवासी सेठ श्री गुलाबचन्दजी का सार्वजनिक अभिनन्दन कर रहे है। यह जानकर बहुत खुशी हुई।

श्री गुलाबचन्दजी का जीवन एक कर्मयोगी व समाज सेवी के रूप मे अत्यन्त प्रेरणाप्रद रहा है। अपने परिवार और निजी स्वार्थ के प्रति उदासीन रहते हुए प्रत्येक कार्य के पीछे लगकर उसकी पूर्णता हेतु वर्षो प्रयत्न के रूप मे प्रयत्नरत रहे। ऐसे मनीषी से आने वाली पीढिया सदा उत्साह लेती रहेगी।

ऐसी विभूति को मेरी ओर से शुभकानायें प्रदान करें।

हेमा आचार्य

कासम भाई अछवा

पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी, गुजरात (राज्य)
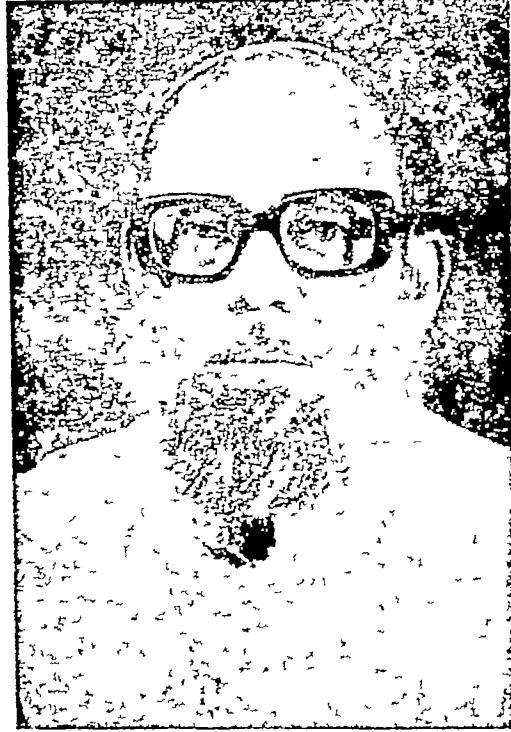
सेवा ही मनुष्य के उच्च सस्कारिता का मापदड है। वीरता स्थिरता, धीरता इसी के आधार हैं। हमारे राष्ट्र जीवन की यही विचारधारा रही है।

सेठ श्री गुलावचन्दजी यहि प्रणालिका के समाज-सेवक हैं। पश्चिम राजस्थान के पूरे समाज के लिए इनका जीवन आशीर्वाद सिद्ध हुआ है।

इस स्मरणिका के द्वारा समाज उनके प्रति श्रद्धा और आदर व्यक्त करता है। इस शुभ अवसर पर मैं भी आदरणीय सेठ श्री गुलावचदजी को अपनी शुभकामना देकर उनके दीर्घायु और स्वास्थ्य के लिए प्रभु प्रार्थना करता हूँ।

भवदीय,

कासम भाई अछवा

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ

मरसघचालक - म द देवरम

दि १३ नवम्बर, १९७८,

मान्यवर सेठ गुलावचदजी का अभिनन्दन समारोह हो रहा है और उम अवमर पर एक 'अभिनन्दन ग्र थ' प्रकाशित हो रहा है यह बहुत प्रसन्नता की वात है।

आदरणीय सेठजी ने अनेक विध क्षेत्रो मे ममाज हित को दृष्टि मे रख कर कार्य किया है और तरुण पीढी के मम्मुख एक आदर्श खडा किया है। उनके किये हुए कार्यों में एक विशेष दृष्टि रही। समाज की सर्व मुखी उन्नति और उमके द्वारा राष्ट्र की सर्वा गीण प्रगति यह उनकी सदैव प्रेरणा रही है।

ऐसे मफल जीवन विताने वाले मेठजी का अभिनन्दन करने में उनका गौरव करने की भावना तो रहती ही है माथ ही इम पीढी को और आगे की पीढियो को जीवन कैमे विताना चाहिये इसकी शिक्षा देने का भाव भी है। सभी भारतीय इस जीवन से योग्य वोध लेकर समाज के लिये किस क्षेत्र में हम काम कर मकते हैं यह सोचें और अपना कर्त्तव्य निश्चित करे।

दयाघन प्रभु मे प्रार्थना है कि श्रीमान् सेठ गुलावचदजी को शेष जीवन में उत्तम आरोग्य प्राप्त हो और उनका मार्गदर्शन इस पीढी को अनेक वर्ष मिलता रहे।

माननीय श्री सेठ गुलावचन्दजी को साष्टाग प्रणाम !

म. द देवरम

डॉ नित्यानद शर्मा

आचार्य एव अध्यक्ष

हिन्दी विभाग,

जोधपुर, विश्वविद्यालय

लोक कल्याण के महत् उद्देश्य के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले सेठ गुलावचदजी अपने सहवर्ती समाज और भविष्य की सतति के लिये प्रेरणा के स्रोत रहे हैं और रहेंगे। उनके जीवन से आत्मसस्कार के लिये मार्गदर्शन मिलता है।

ऐसे कर्मयोगी का अभिनन्दन एक प्रेरणास्पद आयोजन है। मैं हृदय से आयोजन की सफलता की और उनके दीर्घ आयुष्य की कामना करता हू।

डॉ नित्यानद शर्मा

रणछोड दास गट्टानी

ससद सदस्य (लोकसभा)

सेठ साहब गुलावचदजी को मैं खूब जानता हूँ। उन्होने निर्भीक रहकर निस्वार्थ भावना से समाज की सेवा की है। समाज उनका अभिनन्दन करके भी उनकी सेवाओ से उऋण नही होगा।

मैं समारोह की सफलता चाहता हू।

रणछोड़ दास गट्टानी

राधाकृष्ण रस्तोगी

प्रान्त सघ चालक
राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ, राजस्थान

प्रात स्मरणीय सेठ गुलाव चन्द जी का मेरा निकट का सम्वन्ध रहा है। उन्होंने तन मन व धन से जोवन पर्यन्त समाज सेवा की है चाहे सरकार उस सेवा के अनुकूल हो या प्रतिकूल। विशेष तया उस समय मे जव राजस्थान मे शिक्षा वहुत न्यून थी जनता मे जागृति नही थी जनता मे तत्कालीन अ ग्रेज व देशी सरकार के विरूद्ध आवाज उठाने का साहस नही था। प्रजातन्त्र का नाम लेना भी विद्रोह माना जाता था। जनता सगठित नही थी।

उन विकट परिस्थितियो मे श्री गुलावचन्द जी ने जनता की मागो को लेकर केवल आवाज ही वुलन्द नही की वल्कि तत्कालीन सरकार का विरोध भी किया व सफलता के साथ।

पचपदरा का नमक व्यवसाय आज की स्थिति मे केवल उनके ही कारण है यह मान लेना अतिशयोक्ति नही होगा। काश्तकारो पशु पालको के लिए सुविधा दिलाने के लिए जीवन भर सघर्ष करते रहे। जन साधारण की सुविधाओ के लिए विशेषतया पेयजल की व्यवस्था कराने मे उनका सतत प्रयत्न रहा। धार्मिक, सामाजिक व शिक्षा के रचनात्मक क्षेत्र मे विशेष रूचि ली जिसके फलस्वरूप अनेक विद्यालय, सस्थायें व धर्मस्थान आज सुदृढ अवस्था मे स्थित हैं और अपार जनता लाभ उठा रही है।

श्री गुलावचन्द जी का व्यक्तिगत जीवन भी सतोगुणी रहा। श्री गुलावचन्द जी ने सारे सार्वजनिक जीवन का निष्कर्ष यही निकाला कि भारत मे यदि किसी चीज की कमी रही कि जो गुलामी व आजादी के वाद व सव कष्टो का कारण वना तो वह चरित्र का ह्रास है इसलिए उन्होने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के कार्यों मे कि जो चरित्र निर्माण का कार्य करती है अपनी पूर्ण शक्ति लगादी और वर्षो तक जिला सघ चालक का जिम्मेदार कार्य सुचारू रूप मे सचालन किया। उनका हाथ व आशीर्वाद हम सव के उपर अधिकाधिक वनाये रखे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

जगदीशप्रसाद माथुर
सदस्य, लोकसभा

पच्चीस वर्षों से सेठ गुलाबचन्दजी से मेरा निकट सम्बन्ध रहा है। अप्रतिम जीवट के धनी सेठजी की कार्यक्षमता और उत्साह को विकट से विकट स्थिति शिथिल नही कर सकी। सामाजिक क्षेत्र मे उनका योगदान स्तुत्य है। वयोवृद्ध गुलाबचन्दजी जीवन मे सदैव दृढ़ प्रतिज्ञ रहे और उन्होंने कभी भी समझौता करना स्वीकार नही किया।

उनकी कर्मठता, औदार्य एव साहस से राष्ट्र और समाज लाभान्वित होता रहा है और होता रहेगा।

मैं सेठ साहब के दीर्घ जीवन की कामना करता हू।

जगदीशप्रसाद माथुर

शकरसिह बाघेला

समद मदस्य(लोकमभा)

सेठ श्री गुलावचन्दजी का जीवन एक आदर्श है। समाज के लिए कार्यशील व्यक्तियो के लिए सेठजी का जीवन देखना पर्याप्त है।

सम्मान–समारोह से समाज को ऐसा जीवन देखने का अवसर मिलता है–यो ऐसे व्यक्ति कभी सामने नही आते।

समाज अपना ऋण अदा करता है। व्यक्ति को अपना ऋण चुकाने के लिए सेठ श्री गुलावचन्दजी के पदचिह्नो पर चलना चाहिए।

सदेश

दिल्ली

६-११-७८

पूज्य सेठजी के प्रति हम सव श्रद्धा से नत हैं। आजीवन एक निष्ठावान समाजसेवक तथा निर्भय सघर्षकारी महान आत्मा के दर्शन से ही जीवन मिलता है। बाडमेर जिला तो उनकी सेवाओ को कभी भूल नही सकता। हिंदू समाज उनका वहुत ऋणी है।

अपने एक सघचालक के नाते उनका योगदान वहुत प्रभावी है। उनके सभी सुपुत्र तथा पौत्र समाजसेवा मे रत हैं यह जहाँ उनका सौभाग्य है वहा देश का भी है।

परम पूज्यनीय गुरुजी को उनसे वडा स्नेह था। आदर भी था। सचमुच उनकी सेवाओ से पुनीत जीवन हम सवके लिए वडा प्रेरक है।

आप इस समारोह मे सभी प्रमुख वधु उपस्थित रहेगे ही। मेरी उनके चरणो मे श्रद्धाजलि समर्पण करें।

'देव'

ब्रह्मदेव शर्मा

तूफानों से अडिग ज्योति

सेठ गुलाबचंद रूढियों और विरोधों के तूफानों में जलनेवाली ऐसी अखंड ज्योति है जिसके प्रकाश में समाज को सदा नई दिशा और नया आलोक प्राप्त हुआ है। विरोधों में चट्टान की तरह अडिग रहकर नये क्रांतिकारी कार्य किये। चाहे वह काम समाज सुधार का हो अथवा देश की आजादी का प्रश्न। सेठजी की दृष्टि सदा दूरगामी रही। उन्होंने केवल अतीत का दामन नहीं पकडा बल्कि आने वाले भविष्य पर दृष्टि टिका कर समाज को मार्गदर्शन दिया। धार्मिक क्षेत्र की सांप्रदायिकता के वे कट्टर विरोधी रहे। सर्व धर्म सद्भाव और जैन समन्वय के हिमायतियों में सेठजी का नाम उल्लेखनीय है।

जीवन में संयम, पहनावे में सादगी, विचारों में उदारता और कार्य में नवीनता सेठजी की विशेषता है। स्वय के लिए सभी जीते हैं किंतु सब के लिए जीना कुछ लोग ही जानते हैं। जो सबके लिए जीते हैं वे तेरे-मेरे से ऊपर उठकर सबके हो जाते हैं। सेठजी इसीलिए हम सबके हैं। मैं उनके स्वस्थ, सेवामय दीर्घायुष्य की मंगल कामना करता हुआ, उनके अभिनंदन में अपना स्वर मिला रहा हूं।

शुभकामनाओं सहित।

चंदनमल 'चांद'
प्रधान मंत्री
भारत जैन महामंडल

वृद्धिचन्द जैन, विधायक
बाड़मेर

पचपदरा निवासी समाज सेवी गुलाबचंदजी से मैं सन् १९३६ मे सम्पर्क मे आया जब कि मैं कुशलाश्रम-बोडिंग हाऊस मे रहता था और वे उक्त बोडिंग हाऊस के संस्थापको मे से एक थे।

उन्हे मैंने निर्भीक, कर्मठ और दृढ विचारो का पाया। वे निःस्वार्थ भावना से प्रत्येक सेवा-कार्य मे जुट जाते थे और उन्हें सफलता भी प्राप्त होती थी।

शिक्षा के क्षेत्र में उनकी बडी अभिरूचि रही। उन्होंने बाडमेर जिले के मुख्यालय, बाडमेर नगर में कालेज की स्थापना के लिये, कालेज भवन के निर्माण के लिये चन्दा एकत्रित करने में बहुत सहयोग दिया।

सेठजी का जीवन समाजसेवी के रूप मे अनुकरणीय है।

मैं क्षेत्र की जनता द्वारा उन्हें सार्वजनिक अभिनन्दन ग्रंथ भेंट करने के निश्चय का स्वागत करता हूं।

वृद्धिचन्द जैन

संदेश

सेठ गुलाबचन्द जी अेक गणमान्य समाज सेवक रहे ।

शिक्षण, उद्योग, जीवनोपयोगी वस्तुओ की प्राप्ति व अन्यान्य क्षेत्रो मे उनका प्रदान अनूठा है। फलस्वरूप जिले की जनता आज उनका अभिवादन करती है ।

मैं उनके दीर्घ जीवन की प्रार्थना करता हूँ।

विद्यावहन गजेन्द्रगडकर
उपाध्यक्षा जनता पार्टी गुजरात

संदेश

सेठ श्री गुलाबचद जी का जीवन-यानि-कर्मयोगी व समाज सेवी जीवन ।

वे अपने खुद के स्वार्थ के प्रति उदासीन तथा समाज के स्वार्थ के प्रति सतत जागृत रहे ।

उनका कर्मठ जीवन आने वाली पीढियो को सदा के लिये प्रेरणा देता रहेगा ।

मैं उनके दीर्घ व मगल जीवन की कामना करता हू।

नाथालाल झगडा
महामत्री
जनता पार्टी, गुजरात

किशोरी लाल

जिलाधीश,

बाड़मेर

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जिले के प्रसिद्ध समाजसेवी सेठ श्री गुलाबचन्द सालेचा को सम्मानित करने हेतु एक अभिनन्दन समारोह आयोजित किया जा रहा है, तथा उक्त अवसर पर उन्हे एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जायगा। श्री सालेचा का इस जिले के आर्थिक व सामाजिक उत्थान मे प्रशसनीय व प्रेरणास्पद योगदान रहा है। अत यह स्वाभाविक और उचित है कि उनका सार्वजनिक अभिनन्दन कर अनुगृही समाज अपना आभार प्रकट करे।

मैं समारोह की सफलता की कामना करता हू।

किशोरी लाल

शादीलाल जैन
भारत जैन महामण्डल

जयजिनेन्द्र। यह जानकर अत्यत प्रसन्नता हुई कि आप लोग सेठ श्री गुलाबचदजी का अभिनदन कर रहे हैं। व्यक्तिश मैं उनसे नही मिला हू, किंतु उनके सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रो मे किये गये सेवा कार्यो की जानकारी से अत्यत प्रभावित हूं। आज भी ९८ वर्ष की अवस्था मे वे हम सबके बीच मे अपनी सादगी सेवा और सयम से विद्यमान हैं। सेठ गुलाबचदजी का जीवन बहुमुखी रहा है। उन्होने सदा साहस के साथ समाज को नई दिशा दिखाई और स्वय भी इस पर चले। दूसरो को उपदेश देना उतना कठिन नही होता जितना पहले खुद अपने जीवन मे उतारना कठिन होता है।

सेठजी स्वस्थ दीर्घायु प्राप्त कर अपने अनुभव और चिंतन मनन मे इसी प्रकार समाज का पथ दर्शन करते रहे यही शुभकामना करता हू। अभिनदन समिति के कार्यकर्ताओ को भी बधाई देता हू कि उन्होंने गुणो का सम्मान कर अपनी गुण ग्राहकता का परिचय दिया है।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित।

आपका
शादीलाल जैन

अशोक भट्ट, धारासभ्य,
अध्यक्ष, गुजरात स्लम क्लियरेंस बोर्ड

सेठ श्री गुलाबचंद जी भारत माता नी मुक्ति माटे खेलायेला जगना अेक अडग योद्धा छ सरहदी सलामतीनी परिस्थिति पैदा थई त्यारे जागृत प्रहरी बनीने ऊभा रह्या छे हजारो युवानो मा राष्ट्रधर्मना सस्कारनु सीचन करी बारमेर जिला मा पचपद्रानगरमां तैयार कर्या छे तेमना जीवननी सुवास समग्र जिल्ला मा अने राज्यमा फेलायेल छे तेमनु सन्मान अेक व्यक्ति नु सन्मान नथी परा आजादी ना जगथी शरू करीने आज सुधी जे इतिहास सजीव छे ते इतिहासनु सन्मान छे भव्य भूतकाल नी अमूल्य वारसो अनेक पेढीओ सुधी युवानोने तेमणे आप्योछे तेमना सस्कार सिचनथी तैयार थयेला युवानो आजे दसे दिशामा दरेक क्षेत्रमा महान भारतनी सेवा करी तेनो वैभव वधारवा माटे सतत प्रयत्नशील बनेल छे तेमनु जीवन आपणा सौ ने माटे रामायण समु मार्गदर्शक बने अने तेमना जीवनमाथी आपणे आवती कालनी नवी सस्कृतिनी स्थापना करीअे ।

अेज अभ्यर्थना

अशोक भट्ट

प्रस्तावना

सेठ श्री गुलाबचद अभिनन्दन समारोह समिति के अध्यक्ष के नाते अनेक लेखकों की रचनाओं से सुसज्जित इस सेठ श्री गुलाबचद अभिनन्दन 'ग्र थ' को प्रस्तुत करने मे मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

यह ग्र थ सेठ साहब के सम्मान मे प्रकाशित हो रहा है, जिनका नाम औदार्य, विद्याप्रेम, अलौकिक प्रतिभा एव सर्वहित भावना के कारण सर्वश्रुत है।

पश्चिमी राजस्थान के एक विस्तृत भूभाग के सर्वांगीण विकास एव राष्ट्र हित के लिये सर्वस्वन्योछावर करने के लिये सदैव तत्पर रहने वाले सेठ साहब के नाम के उल्लेख से मरुभूमि के प्रत्येक नागरिक का मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है। सेठ साहब के लोकोपकारी कार्यो के प्रति अपना आभार व्यक्त करने की दिशा मे यह अभिनन्दन ग्र थ एक तुच्छ प्रयास है।

इस ग्र थ के सपादक अभिनन्दन समारोह समिति के धन्यवाद के पात्र हैं। प्रारभ से लेकर प्रकाशन तक उन्होने जो परिश्रम किया है, वह प्रशसनीय है। ग्र थ को इस रूप मे मुद्रित करने का श्रेय श्री नेमीचद बागरेचा को है।

उदारता, साहस तथा लोकहित भावना के धनी श्रीमान सेठ गुलाबचदजी यशस्वी एव चिरायु हो इसी कामना के साथ मैं इस अभिनदन ग्र थ को प्रस्तावित करता हूँ।

हस्तीमल पारख

अध्यक्ष

अभिनन्दन समारोह समिति

गुलाब सेठ रे स्वामी, भवने भायरण दे नामी,
खिलियो गुलाब ज्यू गहरो, दै ऊभो चरणा पहरो,
पुर जन कहै पुर रो दीयो, धन २ है इणरो जीयो,
जल नल पुनि ट्रेन कचेड़ी अस्पताल प्रेरणा रेड़ी,
जननी विरला ही जणसी, विधना पिण विरला घडसी ।

— मुनि श्री मुलतानमल जी

विषय सूची

सेठ श्री गुलाबचन्द अभिनन्दन ग्रंथ

खण्ड १

अ भि न न्द न

माननीय सेठ श्री गुलावचन्दजी साहव

शत शत अभिनन्दन
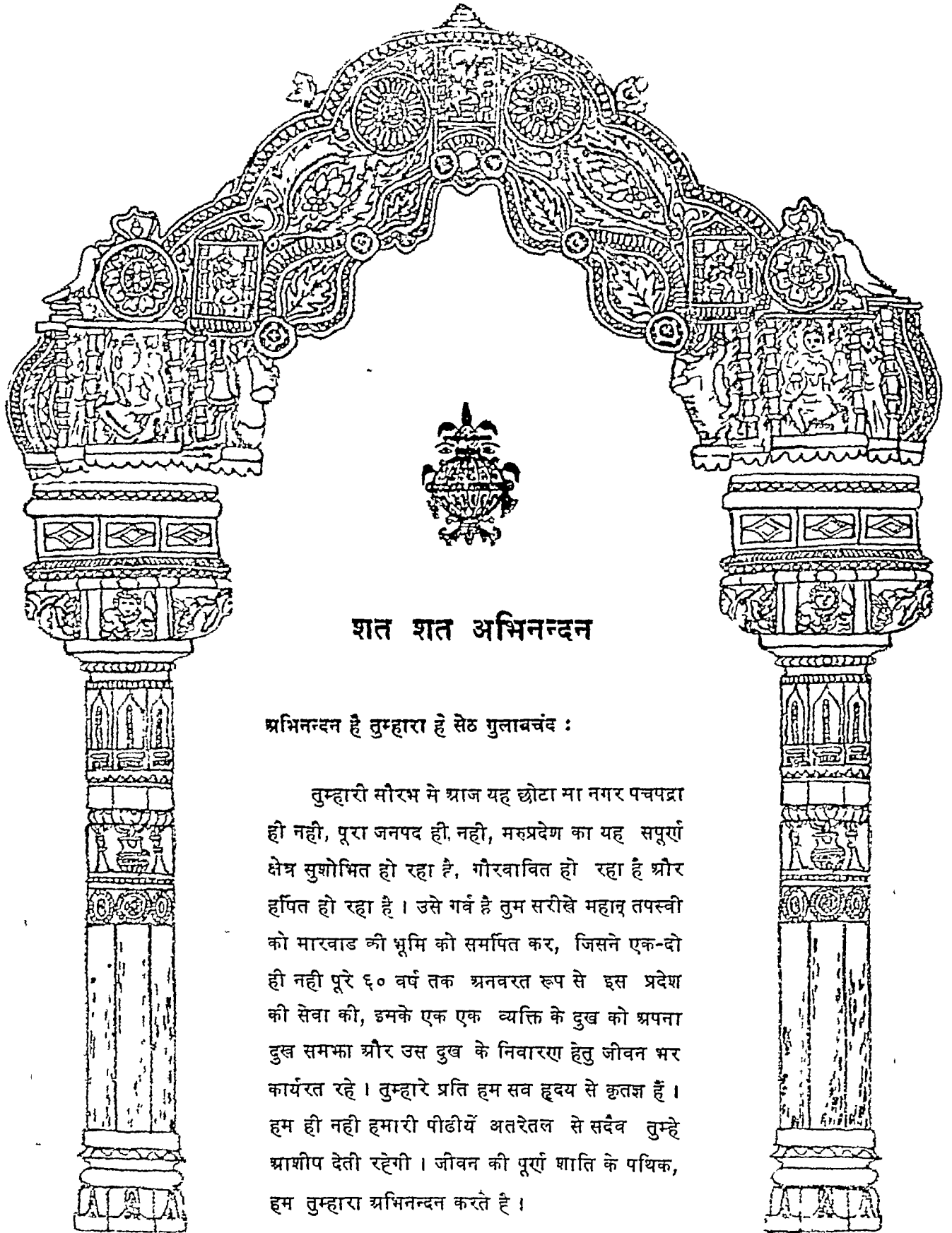
शत शत अभिनन्दन

अभिनन्दन है तुम्हारा हे सेठ गुलाबचंद :

तुम्हारी सौरभ मे आज यह छोटा सा नगर पचपद्रा ही नही, पूरा जनपद ही नही, मरुप्रदेश का यह सपूर्ण क्षेत्र सुशोभित हो रहा है, गौरवावित हो रहा है और हर्षित हो रहा है। उसे गर्व है तुम सरीखे महान् तपस्वी को मारवाड की भूमि को समर्पित कर, जिसने एक-दो ही नही पूरे ६० वर्ष तक अनवरत रूप से इस प्रदेश की सेवा की, इसके एक एक व्यक्ति के दुख को अपना दुख समझा और उस दुख के निवारण हेतु जीवन भर कार्यरत रहे। तुम्हारे प्रति हम सब हृदय से कृतज्ञ हैं। हम ही नही हमारी पीढीयें अतरेतल से सदैव तुम्हे आशीष देती रहेगी। जीवन की पूर्ण शाति के पथिक, हम तुम्हारा अभिनन्दन करते है।
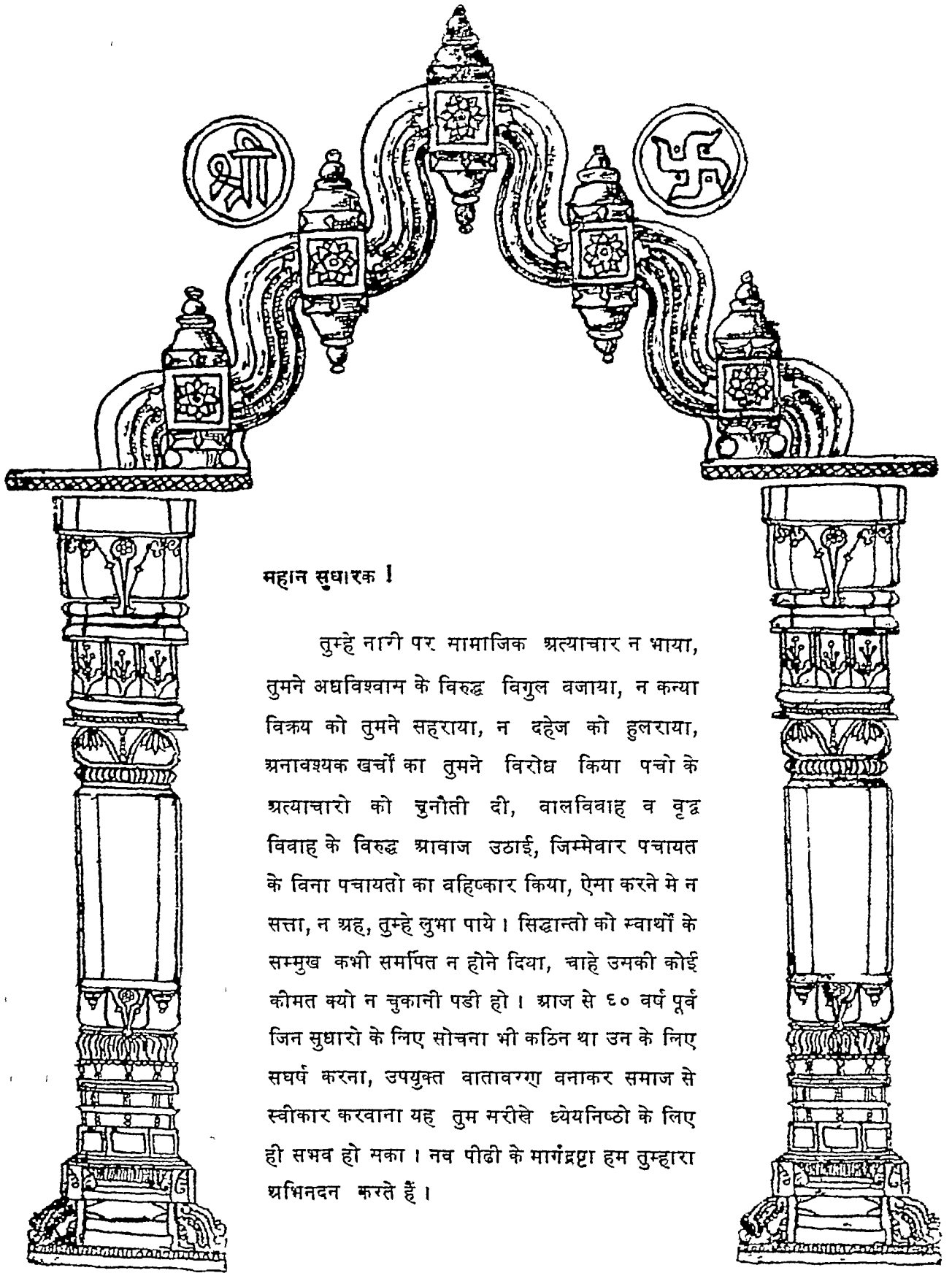
महान सुधारक !

तुम्हे नागी पर मामाजिक अत्याचार न भाया, तुमने अधविश्वाम के विरुद्ध विगुल वजाया, न कन्या विक्रय को तुमने सहराया, न दहेज को हुलराया, अनावश्यक खर्चो का तुमने विरोध किया पचो के अत्याचारो को चुनौती दी, वालविवाह व वृद्ध विवाह के विरुद्ध आवाज उठाई, जिम्मेवार पचायत के विना पचायतो का वहिष्कार किया, ऐमा करने मे न सत्ता, न अह, तुम्हे लुभा पाये । सिद्धान्तो को म्वार्थों के सम्मुख कभी समर्पित न होने दिया, चाहे उमकी कोई कीमत क्यो न चुकानी पडी हो । आज से ६० वर्ष पूर्व जिन सुधारो के लिए सोचना भी कठिन था उन के लिए सघर्ष करना, उपयुक्त वातावरण वनाकर समाज से स्वीकार करवाना यह तुम सरीखे ध्येयनिष्ठो के लिए ही सभव हो मका । नव पीढी के मार्गद्रष्टा हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं ।

ज्ञान दीप के स्नेह सलिल !

उस काल मे जब यह ऊसर प्रदेश तो क्या समस्त भारत अशिक्षा के अधकार मे डूबा हुआ था, शिक्षा के शख को लेकर तुम अवतरित हुए, अल्पायु मे भोपाल मे स्कूल खुलवाऐ, पचपदरा आने पर सन् १९२० मे अर्थात ६० वर्ष पूर्व शिक्षा समिति की स्थापना की। नाकोड़ा जी मे विद्यालय का प्रस्ताव, विद्यार्थियो की सुविधा हेतु श्री महावीर जैन डिस्ट्रीक्ट बोर्डिंग हाऊस व कुशलाश्रम का जोधपुर मे सस्थापन, पचपदरा की स्कूल को क्रमोन्नत करवाना उम्मेदपुर की स्कूल मे रुचि, बाडमेर मे डिग्री कालेज हेतु चिरस्मरणीय प्रयास व पचायत समिति बालोतरा के माध्यम से शिक्षा विस्तार मे सहयोग आपके शिक्षा प्रेम के प्रमाण हैं। मारवाड क्षेत्र मे तीन दशको मे उभरने वाला शिक्षित वर्ग आपकी सेवाओ को कभी भूल नही सकता, शिक्षा दान के महान व्रती तुम्हारा अभिनदन है।

स्त्री शिक्षा के हिमायती !

मारवाड के अशिक्षित वातावरण मे ५० वर्ष पूर्व तुमने अपनी बालिकाओ व उनकी सहेलियो हेतु शिक्षा की व्यवस्था की, पचपदरा मे स्वय का भवन वर्षो तक देकर कन्या पाठशाला की स्थापना करवाई, बालोतरा व जोधपुर मे बालिकाओ को अध्ययन हेतु प्रोत्साहित किया। हे ! भावी द्रष्टा हम तुम्हारा स्वागत करते हैं।
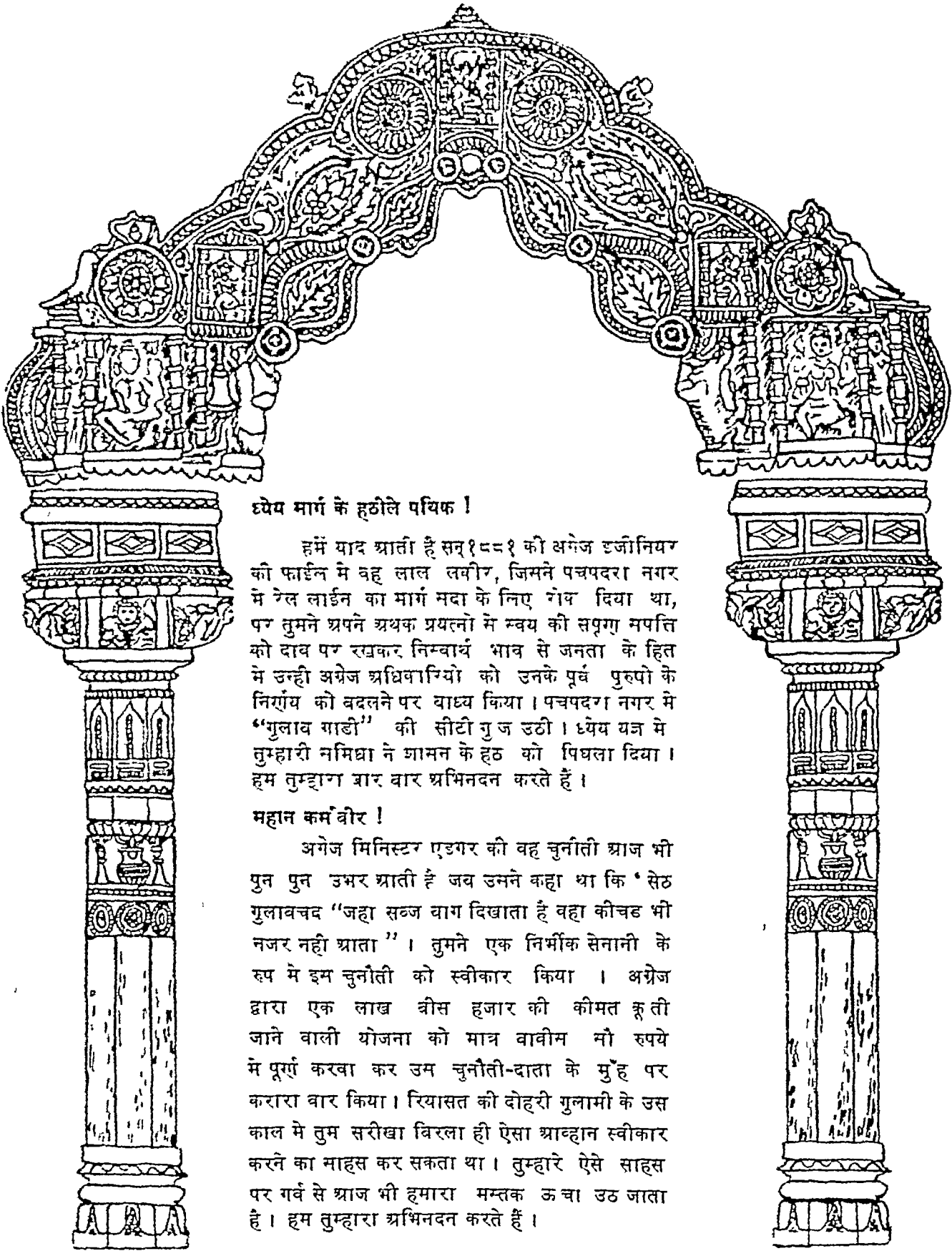
ध्येय मार्ग के हठीले पथिक !

हमें याद आती है सन् १८८१ की अग्रेज इजीनियर की फाईल मे वह लाल लकीर, जिसने पचपदरा नगर मे रेल लाईन का मार्ग सदा के लिए रोक दिया था, पर तुमने अपने अथक प्रयत्नो मे स्वय की सपूर्ण सपत्ति को दाव पर रखकर निस्वार्थ भाव से जनता के हित मे उन्ही अग्रेज अधिकारियो को उनके पूर्व पुरुषो के निर्णय को बदलने पर बाध्य किया। पचपदरा नगर मे "गुलाब गाडी" की सीटी गु ज उठी। ध्येय यज्ञ मे तुम्हारी समिधा ने शासन के हठ को पिघला दिया। हम तुम्हारा बार बार अभिनदन करते हैं।

महान कर्मवीर !

अग्रेज मिनिस्टर एडगर की वह चुनौती आज भी पुन पुन उभर आती है जब उसने कहा था कि 'सेठ गुलाबचद "जहा सब्ज बाग दिखाता है वहा कीचड भी नजर नही आता"। तुमने एक निर्भीक सेनानी के रूप मे इस चुनौती को स्वीकार किया। अग्रेज द्वारा एक लाख बीस हजार की कीमत कूती जाने वाली योजना को मात्र बावीस सौ रुपये मे पूर्ण करवा कर उस चुनौती-दाता के मुँह पर करारा वार किया। रियासत की दोहरी गुलामी के उस काल मे तुम सरीखा विरला ही ऐसा आव्हान स्वीकार करने का साहस कर सकता था। तुम्हारे ऐसे साहस पर गर्व से आज भी हमारा मस्तक ऊचा उठ जाता है। हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं।
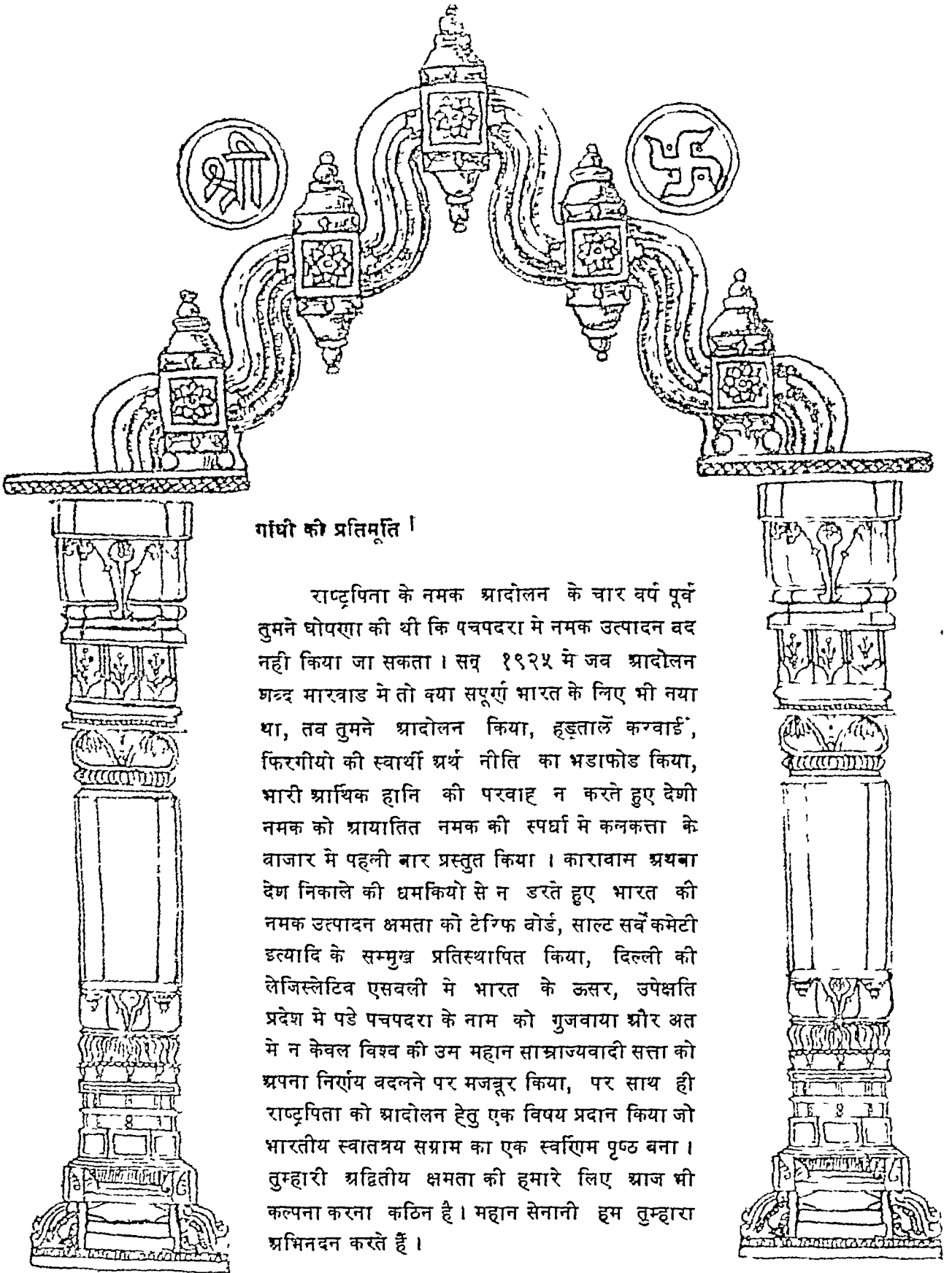
गांधी की प्रतिमूर्ति ।

राष्ट्रपिता के नमक आदोलन के चार वर्ष पूर्व तुमने घोषणा की थी कि पचपदरा मे नमक उत्पादन वद नही किया जा सकता । सन् १९२५ मे जब आदोलन शब्द मारवाड मे तो क्या सपूर्ण भारत के लिए भी नया था, तव तुमने आदोलन किया, हड़तालें करवाई, फिरगीयो की स्वार्थी अर्थ नीति का भडाफोड किया, भारी आर्थिक हानि की परवाह न करते हुए देशी नमक को आयातित नमक की स्पर्धा मे कलकत्ता के बाजार मे पहली बार प्रस्तुत किया । कारावास अथवा देश निकाले की धमकियो से न डरते हुए भारत की नमक उत्पादन क्षमता को टेरिफ बोर्ड, साल्ट सर्वे कमेटी इत्यादि के सम्मुख प्रतिस्थापित किया, दिल्ली की लेजिस्लेटिव एसवली मे भारत के ऊसर, उपेक्षति प्रदेश मे पडे पचपदरा के नाम को गुजवाया और अत मे न केवल विश्व की उस महान साम्राज्यवादी सत्ता को अपना निर्णय वदलने पर मजबूर किया, पर साथ ही राष्ट्रपिता को आदोलन हेतु एक विषय प्रदान किया जो भारतीय स्वातत्र्य सग्राम का एक स्वर्णिम पृष्ठ बना । तुम्हारी अद्वितीय क्षमता की हमारे लिए आज भी कल्पना करना कठिन है । महान सेनानी हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं ।
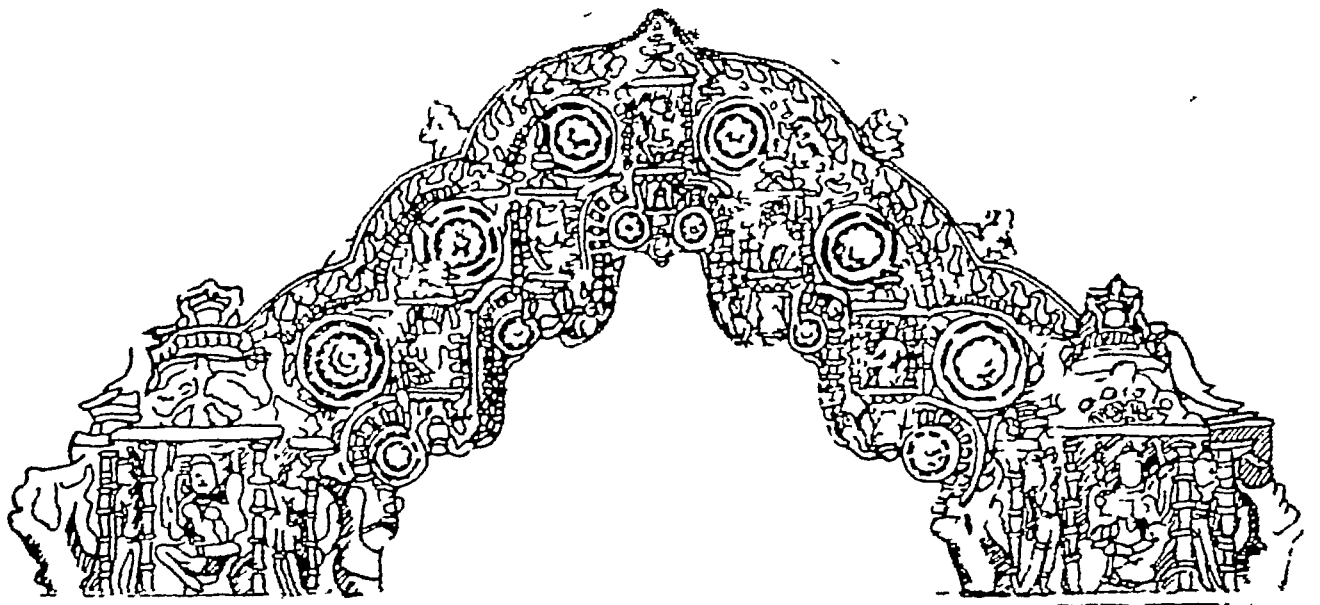
लोक नायक के अनन्य साथी !

वे साक्षी आज भी वर्तमान हैं जिन्हे पता है कि देश निकाला होने पर ४ दिन तक लोकनायक को तुमने आश्रय दिया था, पचपदरा मे लोक परिषद की स्थापना की, स्वातत्र्य आदोलन को आर्थिक सहयोग दिया, चरखे मगवा कर घर घर वितरित किये, प्रतिबधित 'आगीवाण' का प्रचार किया। अत्यत निर्भीक रूप से सैंट्रल एडवाईजरी बोर्डमे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास का समर्थन किया, उस काल मे जब स्वातत्र्य आदोलन को छिपा सहयोग भी सर्वनाश को निमत्रण देना था, तुमने अविस्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए है। स्वतत्र्य वीर हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं।
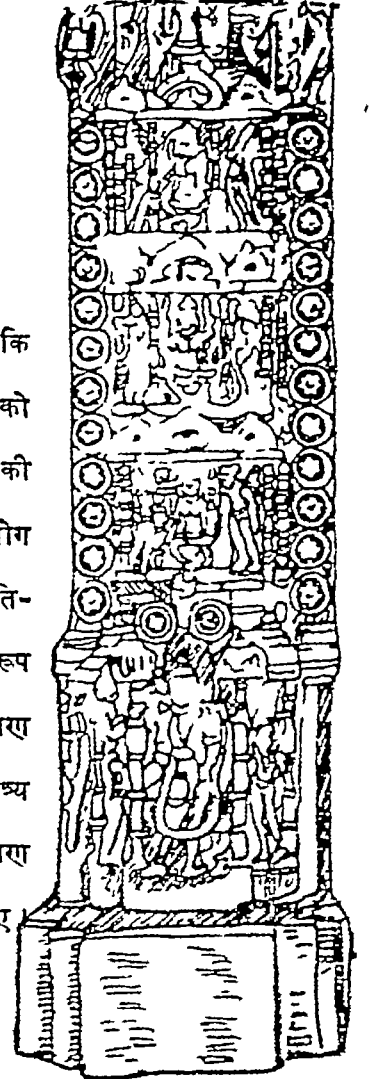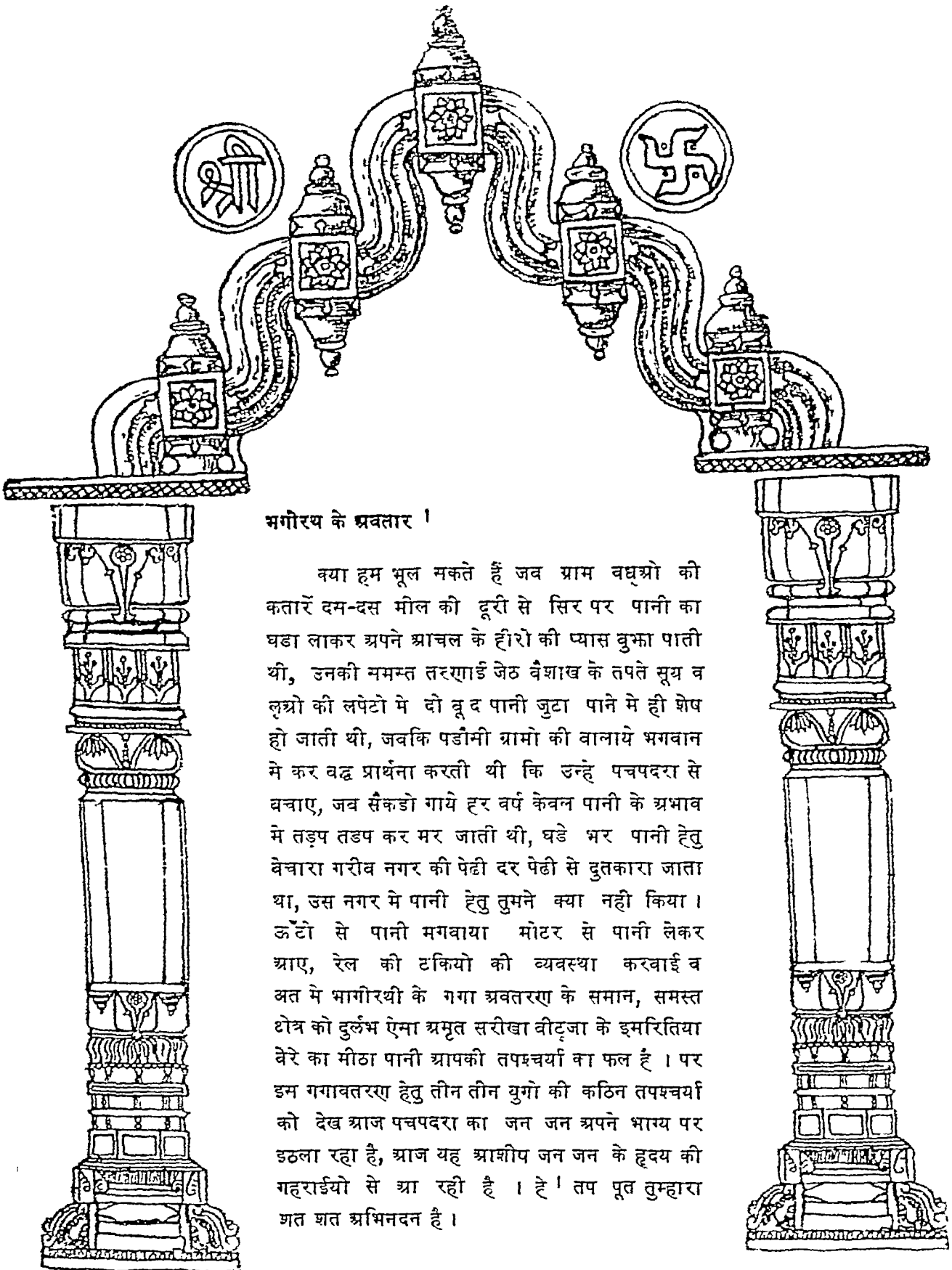
भगीरथ के अवतार !

क्या हम भूल सकते हैं जब ग्राम वधुओं की कतारें दस-दस मील की दूरी से सिर पर पानी का घडा लाकर अपने आंचल के हीरो की प्यास बुझा पाती थी, उनकी समस्त तरुणाई जेठ वैशाख के तपते सूर्य व लुओं की लपेटों मे दो बूंद पानी जुटा पाने मे ही शेष हो जाती थी, जबकि पडोसी ग्रामो की बालाये भगवान से कर बद्ध प्रार्थना करती थी कि उन्हे पचपदरा से बचाए, जब सैकडो गाये हर वर्ष केवल पानी के अभाव मे तड़प तडप कर मर जाती थी, घडे भर पानी हेतु बेचारा गरीब नगर की पेढी दर पेढी से दुतकारा जाता था, उस नगर मे पानी हेतु तुमने क्या नही किया। ऊंटो से पानी मगवाया मोटर से पानी लेकर आए, रेल की टंकियो की व्यवस्था करवाई व अंत मे भागीरथी के गगा अवतरण के समान, समस्त क्षेत्र को दुर्लभ ऐसा अमृत सरीखा बीठुजा के इमरितिया बेरे का मीठा पानी आपकी तपश्चर्या का फल है । पर इस गगावतरण हेतु तीन तीन युगो की कठिन तपश्चर्या को देख आज पचपदरा का जन जन अपने भाग्य पर इठला रहा है, आज यह आशीष जन जन के हृदय की गहराईयो से आ रही है । हे ! तप पूत तुम्हारा शत शत अभिनदन है ।
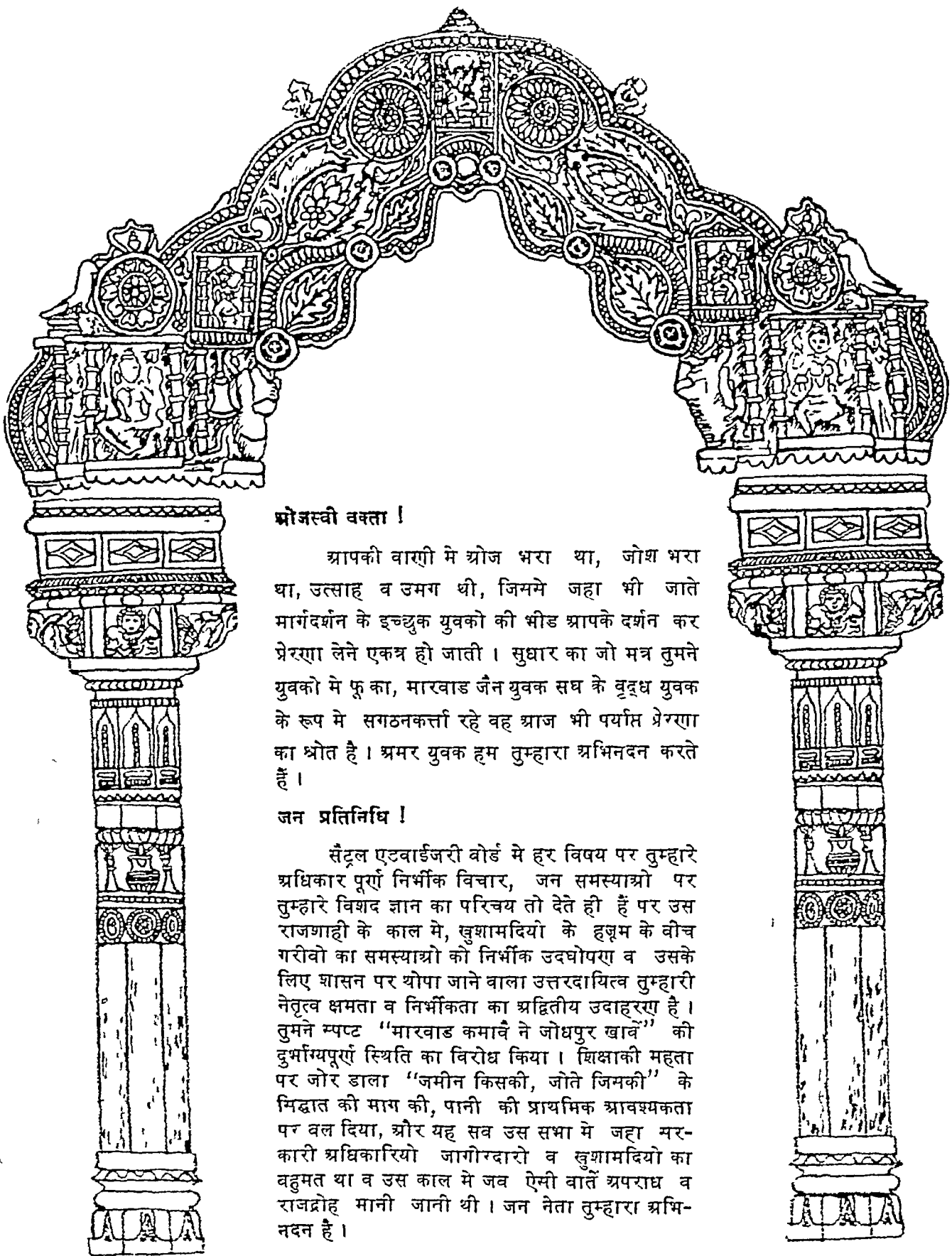
ओजस्वी वक्ता !

आपकी वाणी मे ओज भरा था, जोश भरा था, उत्साह व उमग थी, जिसमे जहा भी जाते मार्गदर्शन के इच्छुक युवको की भीड आपके दर्शन कर प्रेरणा लेने एकत्र हो जाती। सुधार का जो मत्र तुमने युवको मे फूका, मारवाड जैन युवक सघ के वृद्ध युवक के रूप मे सगठनकर्त्ता रहे वह आज भी पर्याप्त प्रेरणा का श्रोत है। अमर युवक हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं।

जन प्रतिनिधि !

सैंट्रल एडवाईजरी बोर्ड मे हर विषय पर तुम्हारे अधिकार पूर्ण निर्भीक विचार, जन समस्याओ पर तुम्हारे विशद ज्ञान का परिचय तो देते ही हैं पर उस राजशाही के काल मे, खुशामदियो के हजूम के बीच गरीबो का समस्याओ को निर्भीक उदघोषण व उसके लिए शासन पर थोपा जाने वाला उत्तरदायित्व तुम्हारी नेतृत्व क्षमता व निर्भीकता का अद्वितीय उदाहरण है। तुमने स्पष्ट "मारवाड कमावै ने जोधपुर खावैं" की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का विरोध किया। शिक्षाकी महता पर जोर डाला "जमीन किसकी, जोते जिसकी" के सिद्धात की माग की, पानी की प्राथमिक आवश्यकता पर बल दिया, और यह सब उस सभा मे जहा सरकारी अधिकारियो जागीरदारो व खुशामदियो का बहुमत था व उस काल मे जब ऐसी बातें अपराध व राजद्रोह मानी जाती थी। जन नेता तुम्हारा अभिनदन है।
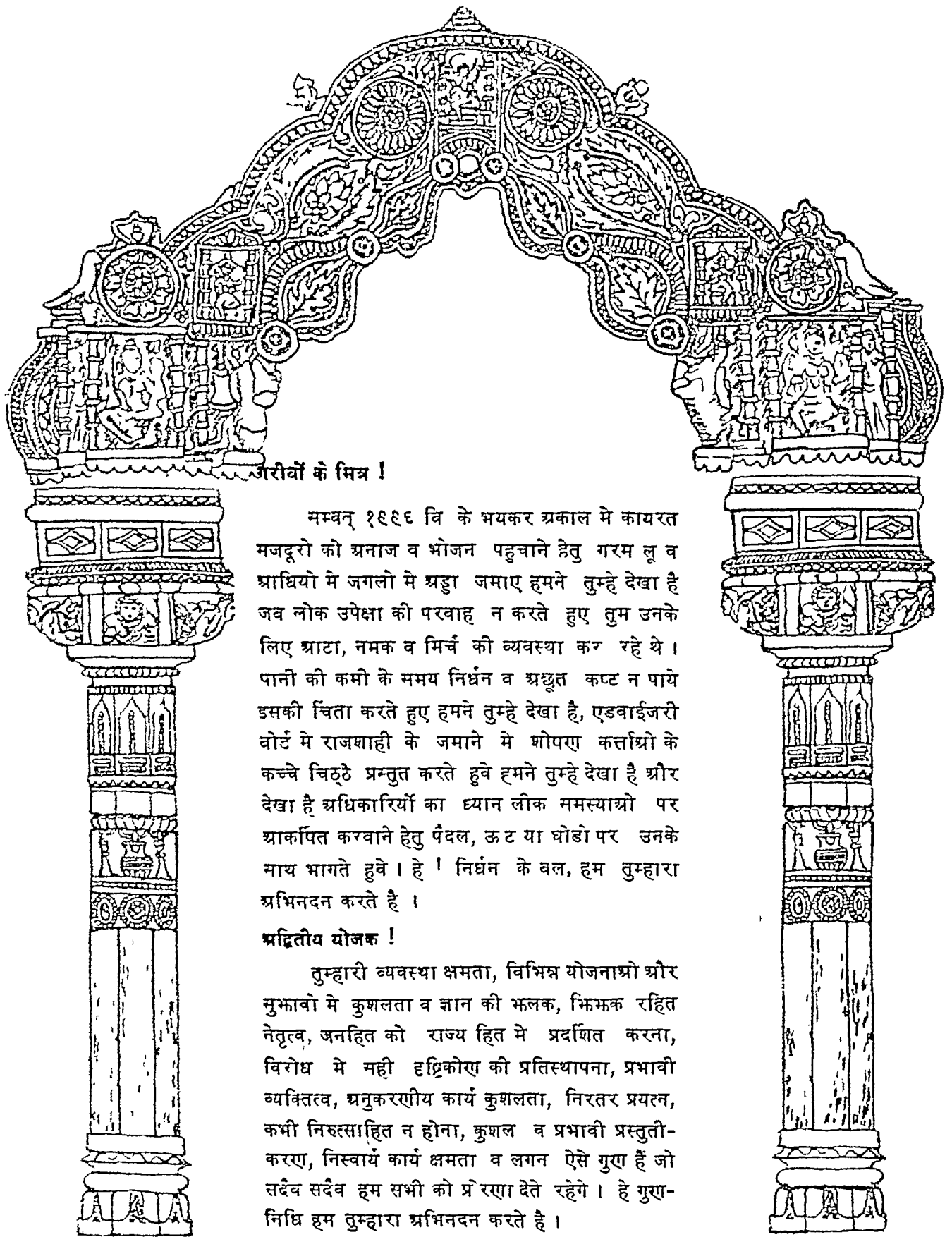
गरीवों के मित्र !

सम्वत् १९९६ वि के भयकर अकाल मे कायरत मजदूरो को अनाज व भोजन पहुचाने हेतु गरम लू व आंधियो मे जगलो मे अड्डा जमाए हमने तुम्हे देखा है जब लोक उपेक्षा की परवाह न करते हुए तुम उनके लिए आटा, नमक व मिर्च की व्यवस्था कर रहे थे। पानी की कमी के समय निर्धन व अछूत कष्ट न पाये इसकी चिंता करते हुए हमने तुम्हे देखा है, एडवाईजरी बोर्ड मे राजशाही के जमाने मे शोषण कर्त्ताओ के कच्चे चिठ्ठे प्रस्तुत करते हुवे हमने तुम्हे देखा है और देखा है अधिकारियों का ध्यान लोक समस्याओ पर आकर्षित करवाने हेतु पैदल, ऊट या घोडो पर उनके साथ भागते हुवे। हे ! निर्धन के बल, हम तुम्हारा अभिनदन करते है ।

अद्वितीय योजक !

तुम्हारी व्यवस्था क्षमता, विभिन्न योजनाओ और सुझावो मे कुशलता व ज्ञान की झलक, झिझक रहित नेतृत्व, जनहित को राज्य हित मे प्रदर्शित करना, विरोध मे सही दृष्टिकोण की प्रतिस्थापना, प्रभावी व्यक्तित्व, अनुकरणीय कार्य कुशलता, निरतर प्रयत्न, कभी निरुत्साहित न होना, कुशल व प्रभावी प्रस्तुतीकरण, निस्वार्थ कार्य क्षमता व लगन ऐसे गुण हैं जो सदैव सदैव हम सभी को प्रेरणा देते रहेगे। हे गुणनिधि हम तुम्हारा अभिनदन करते है ।
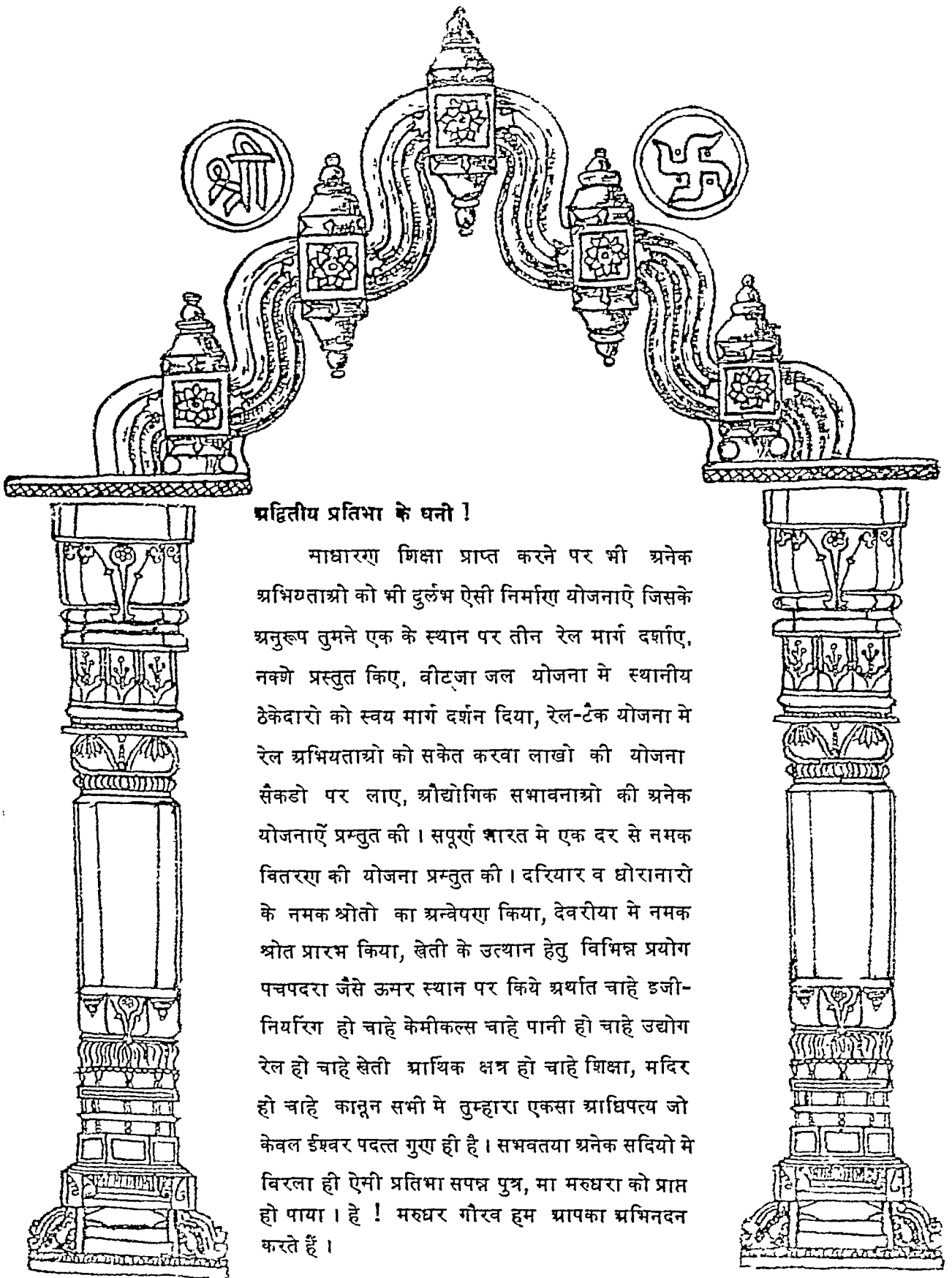
अद्वितीय प्रतिभा के धनी !

साधारण शिक्षा प्राप्त करने पर भी अनेक अभियताओ को भी दुर्लभ ऐसी निर्माण योजनाऐ जिसके अनुरूप तुमने एक के स्थान पर तीन रेल मार्ग दर्शाए, नक्शे प्रस्तुत किए, बीटज़ा जल योजना मे स्थानीय ठेकेदारो को स्वय मार्ग दर्शन दिया, रेल-टैंक योजना मे रेल अभियताओ को सकेत करवा लाखो की योजना सैकडो पर लाए, औद्योगिक सभावनाओ की अनेक योजनाऐं प्रस्तुत की। सपूर्ण भारत मे एक दर से नमक वितरण की योजना प्रस्तुत की। दरियार व धोरानारो के नमक श्रोतो का अन्वेषण किया, देवरीया मे नमक श्रोत प्रारभ किया, खेती के उत्थान हेतु विभिन्न प्रयोग पचपदरा जैसे ऊसर स्थान पर किये अर्थात चाहे इजीनियरिंग हो चाहे केमीकल्स चाहे पानी हो चाहे उद्योग रेल हो चाहे खेती आर्थिक क्षत्र हो चाहे शिक्षा, मदिर हो चाहे कानून सभी मे तुम्हारा एकसा आधिपत्य जो केवल ईश्वर पदत्त गुण ही है। सभवतया अनेक सदियो मे विरला ही ऐसी प्रतिभा सपन्न पुत्र, मा मरुधरा को प्राप्त हो पाया। हे ! मरुधर गौरव हम आपका अभिनदन करते हैं।
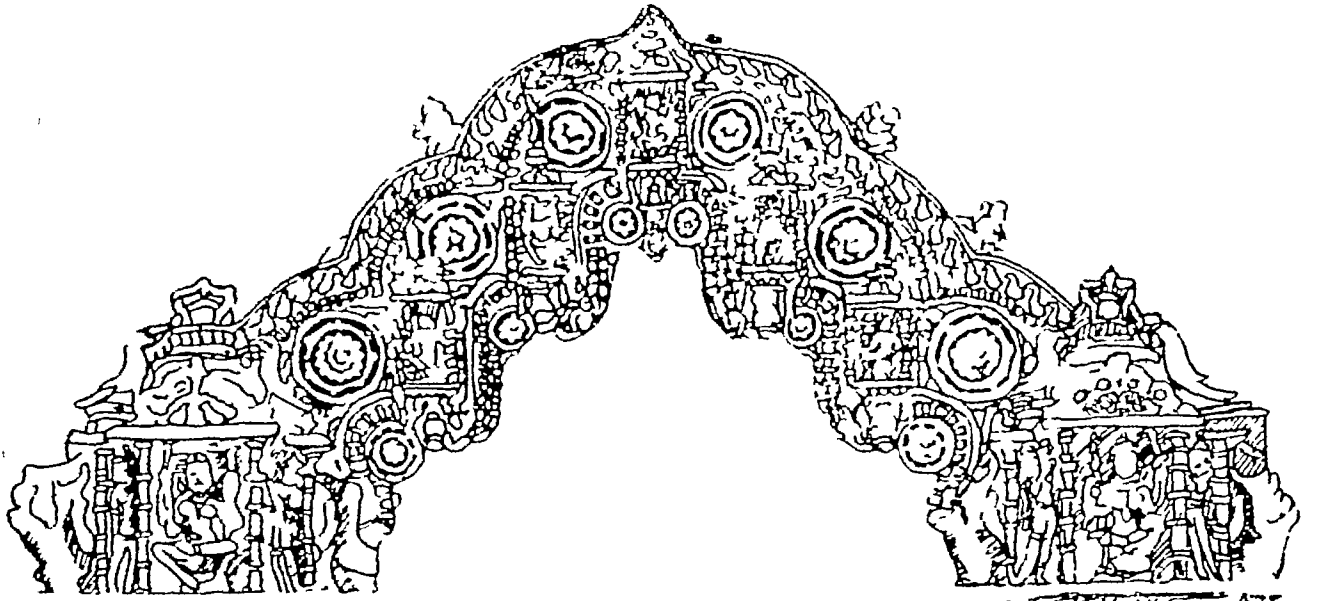
अथक तपस्वी !

लोक सेवा के पथ पर जब भी कोई कार्य हाथ मे लिया तो सफलता असफलता, सहयोग असहयोग, साधनो के अभाव इत्यादि की चिंता न करते हुए तुम अपने ध्येय पूर्ति हेतु जुट गए। जहा अच्छे अच्छे राज-नीतिज्ञ व सगठन भी दो चार माह मे थक जाते है वहा तुम लगातार अनवरत रूप से लगे रहे। नमक आदोलन ६ वर्ष तक, इसोलवेंसी आदोलन ३ वर्ष तक रेल व्यवस्था हेतु ३ वर्ष, टैंको से पानी व्यवस्था मे अढाई वर्ष, बीटूजा पचपदरा नल योजना हेतु ६ वर्ष तक लगातार प्रयत्न कर सफलता प्राप्त की। बाडमेर का कालेज खुलवाने का प्रयत्न भी दो वर्ष चला, तुम्हारा धैर्य, तुम्हारी लगन, अडिग आत्मविश्वास, कार्यक्षमता सभी का समकक्ष ढूढना अत्यत कठिन है। तुम युग युग तक प्रेरणा श्रोत व स्फूर्तिदाता बने रहोगे, हम तुम्हारा अभिनदन करते हैं।

हे युग पुरुष !

तुमसे हमने नेतृत्व पाया, शिक्षा पाई, सुविधा पाई, सरक्षण पाया, साधन पाया, धधा पाया, खोई अस्मिता पाई, मान और सम्मान पाया, मार्ग दर्शन पाया, जीवन के हर क्षेत्र मे विकास प्राप्त किया। तुम्हारे उपकारो हेतु हम ही नही हमारी सताने कृतज्ञ रहेगी। इन शाब्दिक स्वागत शब्दो से हम उऋण नहीहो सकते। तुम हमारे सरक्षक पिता, स्वजन, स्नेही सभी कुछ हो। हम तुम्हारा शत शत अभिनन्दन करते हैं।
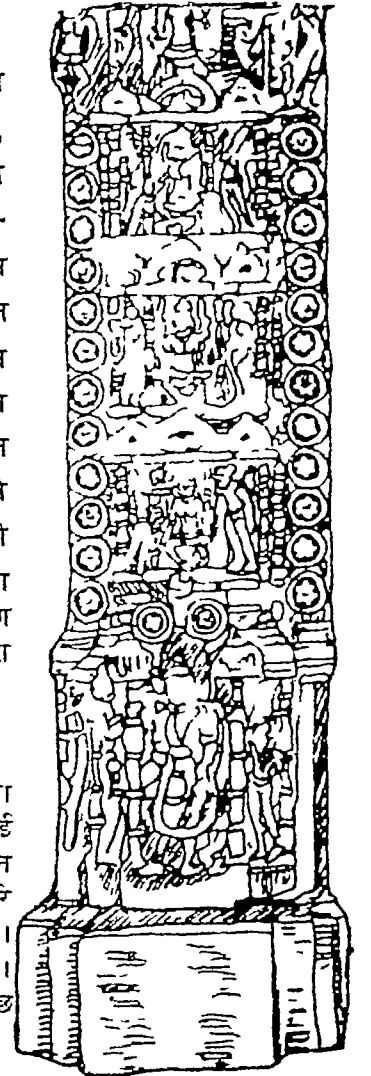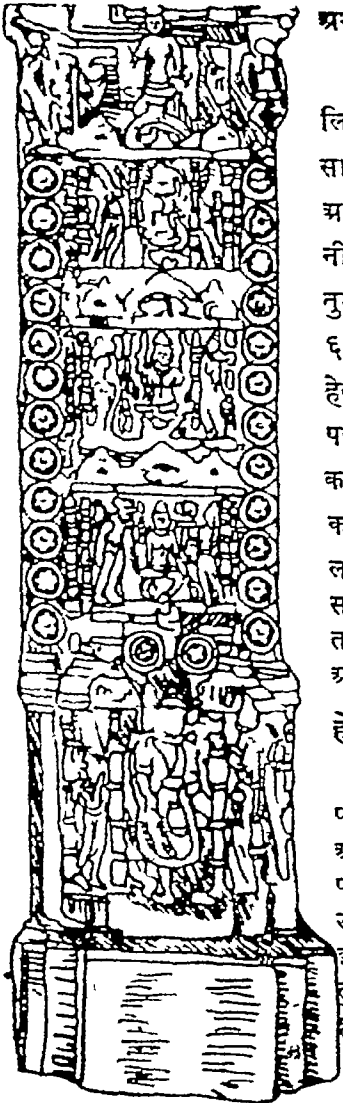
"पीढ़ी पीढ़ी पीर" - पचपदरा का सालेचा परिवार

पचपद्रा प्रारम्भ मे 'पाचा की ढांणी'' के नाम से प्रसिद्ध था या पन्चभद्राओ के नाम पर इसका नामकरण पचभद्रा हुआ। आगे चलकर जाझा के नमक उद्योग के विकास के कारण एक महत्वपूर्ण नगर के रूप मे विकसित होने लगा। सिवाना परगने का 700 रुपया वार्षिक की रेख का यह गाव मारवाड के "पाय तखतगढ" जोधपुर के हाकिम दरिवा का मुख्य स्थान बना। मारवाड राज्य की ओर से सभी प्रकार की सुविधाएँ घोषित हुई। आसपास से महाजन व खारवाल परिवार यहा बसने हेतु आमन्त्रित किए गए। इसी के फलस्वरूप सवत् 1735 अर्थात् सन् 1678 मे वरजागजी सालेचा गोपडी ग्राम से पचपद्रा मे आए। हो सकता है यह नाम वरजागजी, वजगजी का मारवाडी रूप हो। पचपद्रा का सालेचा परिवार अपने गोपडी के उद्गम से, अब भी हर शादी के पश्चात, वहा पर स्थित राव मल्लीनाथजी के जन्म स्थान पर बने मन्दिर मे, वदन हेतु जाता है।

सालेचा गौत्र की उत्पत्ति—

सालेचा गौत्र के विषय मे वर्णन मिलता है कि सवत् 1175 मे सिद्धपुर पाटन के सम्राट सिद्ध राज जयसिंह के पलग-पहरेदार जगदेव को सुरक्षा हेतु एक करोड सौनैया प्रतिवर्ष मिलता था। एक रात्रि को जब वह पहरा दे रहा था तो वहा पर जोगणिया व वेताल को नाचते देखा। उसने कारण पूछा तो जोगणियो ने बताया कि कुछ दिन बाद यवन फौज आवेगी तब राजा मारा जावेगा और हमारा खप्पर भरेगा। जगदेव ने पूछा क्या बचने का कोई उपाय है ? तो जोगणियो ने कहा कि बतीस लक्षण वाले व्यक्ति का बलिदान हो तो राजा बच सकता है। जगदेव तलवार निकाल कर स्वय का बलिदान देने लगा तो जोगणियो ने हाथ पकड कर रोका और वरदान दिया कि राजा बचेगा व जय होगी। जयदेव के पुत्र साँवलजी थे। सावलजी का पुत्र बडा सड-मुसड था। अब राजा जयसिंह उसे साड कहते थे। एक चारण की मसखरी पर उसने सूरजजी के साड से लडाई कर उसे पछाडा था। अतएव उसके वशज साड कहलाते हैं। सावलजी के दूसरे पुत्र सालदेव के वशज सालेचा कहलाये, तीसरे पुत्र पुनमदेव से पुनमिया पुकारे जाने लगे। यवनो से युद्ध के समय श्री हेमसूरी से इन्होंने आशीष मागी तो हेमसूरी ने कहा कि यदि तुम जैन धर्म अगिकार करो तो मैं प्रयत्न करूँगा। इनके स्वीकार करने पर हेमसूरी ने इनको "विजय पताका" यत्र दिया। जिसमे युद्ध मे विजय के पश्चात सभी ने जैन धर्म स्वीकार किया एव ओसवाल बने। एक अन्य वर्णन के अनुसार सालमसिंहजी वोहरगत करते थे इसलिए 'साले बोहरा' भी कहलाए।

सालेचा वश की कुलदेवी 'बरमा दे' माता है और सभवत इन कुलदेवी का मूल स्थान ओसिया है पर अधिकाश सालेचा वश के लोग कुलदेवी का पूजन अपने घरो मे ही स्थापित कर करते हैं। कुलदेवी को सिन्दूर और तेल चढता है यदि घर मे दुधारू पशु होता है तो प्रत्येक शुक्ला नवमी को प्रात कुलदेवी को दुध भी चढाया जाता है। चैत्री और आश्विन की प्रतिपदा एव नवमी के दिन व्रत रखकर कुलदेवी का पूजन किया जाता है और पुत्र के जन्म पर, उसके प्रथम मुण्डन का चढावा कुलदेवी का ही होता है। पुत्र की शादी पर अन्य चढावे के

साथ सवा रुपया चढावे का देवी के निमित्त रखा जाता है और रात्रि-जागरण भी किया जाता है। घर मे जब भी भोज होता है तो मिष्ठान का प्रथम भोग कुलदेवी को चढाकर ही आगे काम लिया जाता है। शादी की कुकुम-पत्रिका का प्रथम निमन्त्रण कुलदेवी के नाम लिखा जाता है।

प्रस्तुत मालेचा परिवार मे श्री नरसिहपुरीजी का पूजन भी होता है। नरसिहजी सेठ सागरमलजी के समय मे फलसु ड के सिद्ध पुरुष हुए हैं और उन्होने सवत् 1920 के आसपास जीवित समाधी ली थी। सेठ सागरमलजी उनके प्रिय भक्तो मे से थे। अत समाधी के पूर्व उन्होने अपनी झोली, डडा और कुछ बाल, स्मृति स्वरुप दिये थे जिनका पूजन अब तक होता है।

जैसा कि ऊपर उल्लेखित है सेठ वरजागजी सवत् 1735 मे गोपडी से पचपद्रा मे आये थे। यह काल महाराजा जसवतसिहजी अथवा मुणोत नैणसी का था। दिवान नैणसी ने अपने ग्रन्थ "मारवाड के परगनों का हाल' मे लिखा है कि गोपडी मे भी उस समय नमक की चालीस खानें थी जो दरीबा पचपद्रा के अन्तर्गत ही व्यवस्थित होती थी। अब तक भी गोपडी के जागीरदार इस परिवार को अपने मूथाओ के समान सम्मान देते आ रहे हैं जो यह प्रकट करता है कि पचपद्रा आने के पूर्व भी वरजागजी का नमक का काफी बडा कारोबार रहा होगा। उस समय पचपद्रा कस्बे के रुप मे विकसित हो रहा था और इसलिये राज्य विभिन्न स्थानो से महाजनो को आमत्रित कर रहा था, इस कारण वरजागजी पचपद्रा मे आये होंगे। पचपद्रा-साल्ट के देवल (मदिर) के पाटासन के पत्थर पर सवत् 1705 का लेख है और उसमे इस स्थान को दरीबा पचपद्रा लिखा गया है। इससे स्पष्ट है कि उस समय तक नमक उद्योग विकसित होकर दरीबे का स्वरुप धारण कर चुका था। पर ऐसा भी लगता है कि इस दरीबे मे विभिन्न गावो के क्षेत्र भी शामिल थे, जिनमे गोपडी, वेदरलाई साभरा, साजियाली, वागुण्डी, खेड, तिलवाडा, जेरला और मडापुरा की भूमि थी। इस सारी भूमि को नमक उत्पादन हेतु दरीबे के अन्दर दिया गया। पचपद्रा ग्राम को बसाया गया। इसलिये इन सभी गावो के महाजन वहा से हटकर, पचपद्रा मे आकर बस गये। आज लगभग इन सभी गावो मे महाजनो की बस्ती नही है अस्तु पचपद्रा मे विभिन्न गोत्रो वाले महाजन इन गावो से ही आ बसे होंगे।

वरजागजी के तीन पुत्र थे, जगमालजी, चतराजी और नेताजी। चतराजी और नेताजी के कोई पुत्र नही हुआ, जबकि जगमालजी के दो पुत्र हुए। दस्तरजी और जीवाजी। दस्तरजी के पुत्र रत्नाजी से वीपाजी व वस्ताजी की वश परम्परायें चली। वीपाजी के वश मे सेठ श्री गुलाबचदजी हैं व वस्ताजी के वीराजी हुए जिनके पुत्र जितोजी से श्री जेठमलजी के पुत्र मिश्रीमलजी दलीचदजी व मोहनराजजी-परिवार व गेवीरामजी के पुत्र सपतराजजी का परिवार है तथा शोभाजी से जसराजजी का परिवार है।

जीवाजी का परिवार उसी कुल की दूसरी शाखा के विस्तार से सबधित है। जीवाजी के पुत्र लखमोजी के पुत्र अजबोजी व पौत्र दानोजी हुए। दानोजी के दो पुत्र धनसुखदासजी व फोजाजी हुए। इनकी वश परपरा चली इन्ही धनसुखदासजी के तृतीय पुत्र गुलाबचदजी, वीपाजी की वश-शृ खला मे श्री हजारीमल जी के गोद आये। गुलाबचदजी के छोटे भाई रतनचदजी फोजाजी के पुत्र वाकीदासजी के गोद गये जिनके पुत्र मिश्रीमल जी बालोतरा रहते हैं तथा धनसुखदासजी के बडे पुत्र छोगालालजी के पुत्र केसरीमलजी हुए जिनके वर्तमान मे श्री नरसिहराजजी

पुत्र हैं। लखमाजी के दूसरे पुत्र केहराजी की वश परपरा मे हस्तीमलजी के पुत्र गिरधारी लाल और वनजी के गोद-पुत्र सपतरामजी हैं। केहराजी के पौत्र भैरोजी के परम्परा मे श्री मागीलाल है जो वायतु मे रहते है। लखमोजी के तीसरे पुत्र तेजोजी की परपरा मे मानमलजी के पुत्र रामलालजी व किशनमलजी के पुत्र छगनराजजी है जो वायतु मे रहते हैं।

सेठ व वरजागजी की इस वश परपरा ने, पचपद्रा के इतिहास मे ही नही सपूर्ण मारवाड व विशेष रूप से पश्चिम राजस्थान मे एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वजरागजी के जगमालजी व दस्तरजी के बाद चौथी पीढी मे रतनाजी हुए जिनके पुत्र बीदोजी हुए। सेठगुलावचदजी के परिवार की अधिकाश भूमि के पट्टे रतनोजी, बीदोजी तत्पुत्र दौलाजी व उनके पुत्र खुशालचदजी, कपूरचदजी, कपूरचदजी के पुत्र सतोकचदजी के नाम के वशज के हुए है। दौलाजी, खुशालचदजी, कपूरचदजी अत्यत प्रभावी पुरुष हुए। इनके समय मे ही इस क्षेत्र के सभी जागीरदार इन्हे अपना बैंकर्स मानते रहे हैं। दौलाजी व इनके पुत्रो के वाचनार्थ अनेक ग्र थ जैन साधुओ द्वारा लिखे गए व उन मे इनके वर्णन से, उनके प्रभाव की स्पष्ट झलक दिखती है। जोधपुर के राजघराने व शासन से उनका सबध भी अनगनित पत्रो से प्रकट होता है जो तत्कालीन दीवानो, मुसाहिबो व अन्य अधिकारियो के उनके बीच आए गए। इसमे उनके साहित्यिक रुचि की भी झलक मिलती है।

श्री दोलाजी के समय के उपलब्ध एक हस्तलिखित ग्र थ मे श्री दोलाजी को 'सघ-प्रमुख' और 'सघ-धारक' को उपाधि से विभूपित किया है। जैन परम्परा मे ऐसी उपाधिया उन्ही को दी जाती हैं जो सघ निकालते हैं। इससे लगता हैं कि उन्होंने कोई बडा सघ निकाला होगा। इस परिवार की हवेलियें भी जो श्री दोलाजी व उनके पुत्रो के समय की बनी हुई हैं, इस परिवार की लम्बी सुदृढ परम्परा की द्योतक है।

पाटोदी, पचपद्रा परगने का बहुत बडा जागीर का स्थल तो रहा ही है पर यह पाटोदी सदा से ही अपने जनवल, अश्ववल व वीरता के कारण भी प्रसिद्ध रहा है। इस ठिकाने कें श्री जोधा महेशदासोत को सवत 1813 में 20 हजारी रेख के, साढ़े बारह गाव जागीर मिले थे। इन सब गाँवो के पट्टो की सनदे श्री खुशालचदजी कपुरचदजी के समय मे इस परिवार के पास हैं। पुराने दस्तावेजो से पता चलता है कि सवत 1890 के आसपास पाटोदी ठिकाने पर श्री मारवाड दरबार के यहा से जब्ती आई और सकट के समय मे शायद उन्हें सहयोग की जरुरत पडी। उस जमाने में महाराजा के कोपभाजन जागीरदार का साथ देने वाला वही हो सकता था जिसका महाराजा पर पर्याप्त प्रभाव हो और जो स्वय मारवाड मे प्रमुख व्यक्तियो का सा प्रभाव व हिम्मत रखता हो। इसीलिये ऐसे दस्तावेज सभालकर रखने के लिये पाटोदी के जागीरदारो को इस सपूर्ण क्षेत्र मे, प्रस्तुत सालेचा परिवार ही सहयोगी के रूप में मिला। यह स्पष्ट रूप से इस परिवार के तत्कालीन वर्चस्व को प्रकट करता है। श्री कपूरचदजी के पुत्र सतोकचदजी और उनके पुत्र सागरमलजी के समय में भी यह परिवार उत्तरोत्तर बढता हुआ लग रहा है। तत्कालीन प्रसिद्ध मुसाहिब सिघवी व श्री कवराजजी के सागरमलजी के नाम लिखे पत्र इस बात के स्पष्ट आधार हैं। एक मुसलमान हाकिम के सागरमलजी से सहयोग न करने पर उसका तत्काल उठावना करवाने के हुक्म की चिट्ठी यह बताती है कि श्री दरबार पर सागरमलजी का पर्याप्त प्रभाव था। एक अन्य पत्र में तत्कालीन एजेन्ट साहब बहादुर से काम के सबध मे दीवानजी ने सागरमलजी को समाचार भेजे हैं जो महाराजा से ही नही एजेन्ट महोदय से भी उनके सबधो के द्योतक है।

इस परिवार की दोनो तरफ बनी पोलो से युक्त हवेलियो, घोडो तथा ऊँटो के बडे बडे ठाण, शस्त्रागार मे रखे भालों, तलवारो, लामछडो, बदूको, दुनालियो व राइफलो, पिस्तोलो तथा तोप का होना प्रदर्शित करता है कि इनका वैभव और धाक बडे बडे जागीरदारो से भी ऊँची थीं। सेठजी यात्राओ मे अपने तंबु, शामियाने और छौलदारिया साथ रखते थे क्योकि साथ मे चलने वाला काफिला हर कहीं ठहर नही सकता था। श्री सागरमलजी ने विभिन्न दस्तावेजो के अनुसार लगभग चार लाख रुपया राज्य को उधार दिया था जो पचपदरा से सीधा रिसाले की देख रेख मे आबु मे किसी ब्रिटिश सरकार हेतु सरकारी अदायगी में गया था। इसकी अदायगी बाडमेर व पचपद्रा के खजाने से हुई थी। उस जमाने मे ऐसी हैसियत रखने वाले पूरे मारवाड में संभव तया थोडे ही महाजन होंगे। श्री सागरमलजी व उनके पुत्र हजारीमलजी सोने की तलवार धारण करते थे। उन्हें राज्य से 'सेठ' की पदवी थी। सोने का कदोरा पहिनते थे व इजलास में उन्हें कुर्सी पर बैठने का अधिकार था। यह सभी उस जमाने का राज्य से मिलने वाला बडा सम्मान था जो बडे जागीरदारो के सिवाय अन्य लोगो को साधारणतया उपलब्ध नही था। सागरमलजी ने गुलाब बनजारे के साथ मिलकर पचपदरा में गुलाबसागर नामक तालाब खुदवाया।

श्री सागरमलजी का प्रभाव ओसवाल समाज पर भी काफी था। सपूर्ण सिवाणची समाज मे वे महत्वपूर्ण व्यक्तियो मे माने जाते थे। तत्कालीन महाराजा उनका अत्यत सम्मान करते थे और उन्हे अनेक बार हाकिम का पद स्वीकार करने को कहा पर उन्होंने अपने विशाल व्यापार मे लगे रहने के कारण यह पद स्वीकार नहीं किया। वे सारे क्षेत्र के प्रमुख जागीरदारों, जैसे पाटोदी, थोब, बागावास, कोरणा, फलसू ड, भूरटींया, मोखाब. कोटरा, ममदडी कल्याणपुर इत्यादि के बैंकर्स थे। पचपद्रा के नमक उत्पादको को भी हर समय उनके द्वारा भारी रकम उधार दी जाती रहती थी। जिस समय अंग्रेजी राज्य ने सन् 1881 के लगभग खारवालो का कर्जा चुकाया था तब लगभग 500 परिवारो के खाते तो केवल इन खारवालो के इनके यहा दर्ज थे। इनके अनाज के कोठार पूरे मालानी क्षेत्र में फैले हुए थे। कोटा में इनकी अफीम की थोक दुकान थी। जोधपुर में अनाज का बहुत बडा कारोबार था। मध्यप्रदेश में नमक का थोक कारोबार था। पचपद्रा में बनजारो की आडत का बडा फैलाव था। रहन-सहन पूर्णतया इनकी सम्पन्नता का प्रतीक था।

श्री सागरमलजी के स्वर्गवास के समय श्री हजारीमलजी चार वर्ष मात्र के थे। सागरमलजी ने तीन विवाह किये थे व उनके देहावसान के समय वे अपने पीछे दो विधवाओ को छोड गये थे। दोनो सेठानियो के आपसी विवाद मे राज्य की ओर से सपति की व्यवस्था को नाबालिग-महकमें के अन्तर्गत लेने के हुक्म आये थे पर श्री हजारीमलजी की माता ने स्वय तलवार लेकर ललकार कर अपने मकान मे सरकारी लोगो को घुसने से रोका था। यह घटना भी परिवार के प्रभाव और सम्पन्नता को प्रदर्शित करती है।

सेठ हजारीमलजी अपने समय के नामी रईस गिने जाते थे। अनेक घोडे, ऊट, नौकर इत्यादि साथ

सेठ हजारीमलजी सालेचा

पचपदरा

पचपदरा में तेरापथी महान तपस्वी श्री राकेश मुनि के स्वर्गवास
पर ग्रामवासियों के साथ

परिजनों के मध्य धूप सेवन करते हुए

सेठजी विभिन्न परिजनों के बीच
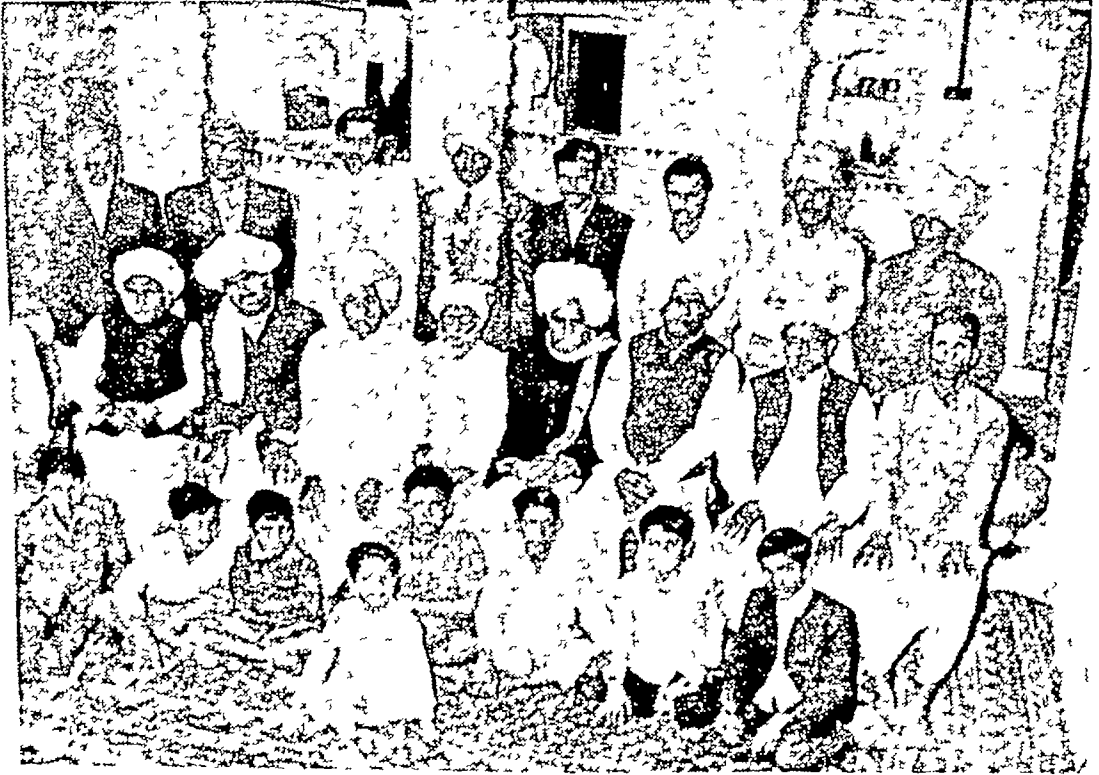
बैठे हुए – (पोत) शांतीचन्द, सुरेन्द्रकुमार, उपेन्द्रकुमार, देवेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार व स्वर्गीय प्रकाश

कुर्सी पर — सोहनराजजी अजीत, मिश्रीमलजी पायला, बक्सीरामजी चौपडा पचपदरा, श्री गुलाबचन्दजी, राणमलजी चौपडा बाडमेर, खींवराजजी राखी, मोहनलालजी मदाणी पचपदरा, देवीचन्दजी सकलेचा पचपदरा

खडे — छगनरामजी सालेचा, चम्पालालजी सालेचा, डॉ केवलचन्दजी मदाणी, गणपतचन्दजी सालेचा, पारसमलजी ढेलरीया, मोहनलालजी बाडमेर, अमीचन्दजी सालेचा, लक्ष्मीचन्दजी सालेचा

सेठजी विभिन्न परिजनों के बीच

एक समारोह में

श्री चम्पालालजी ढेलरीया, खींवराजजी राखी व पचपदरा के केवलचन्दजी लु कड,
राणमलजी लु कड व केसरीमलजी चौपडा के साथ

श्री मुलतानमलजी मेहता के साथ सपरिवार सेठजी

चार पौत्री जवाई
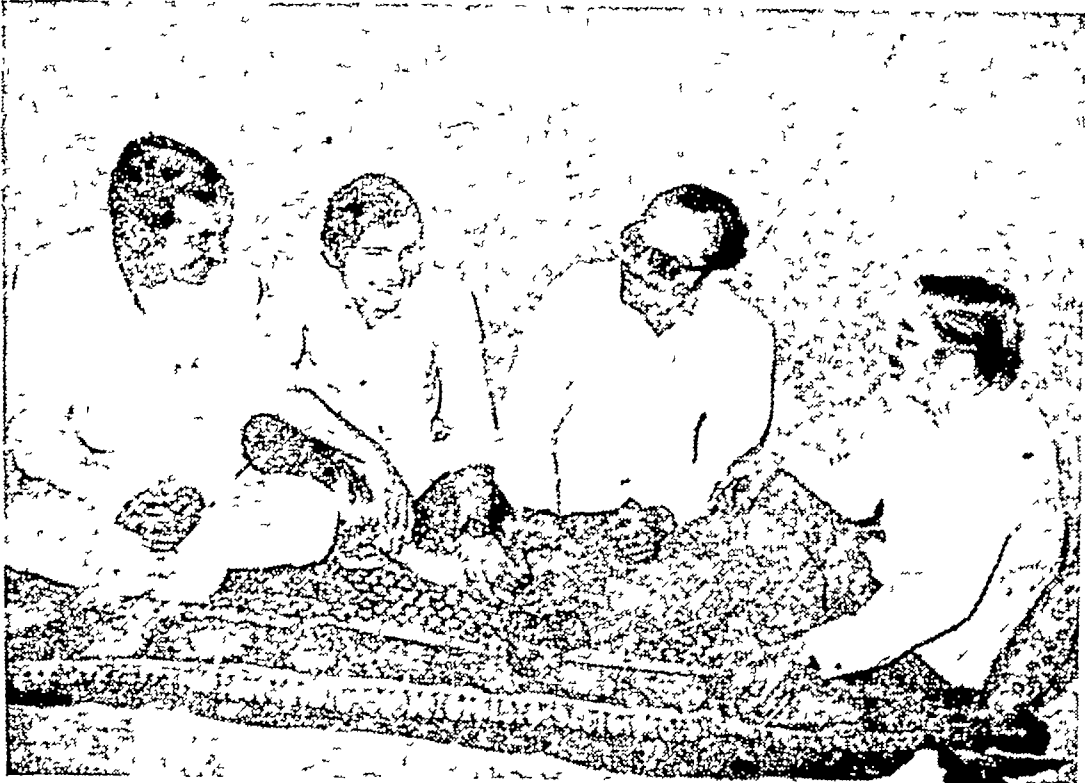
श्री पारसमलजी ढेलरीय, कपूरचन्दजी बागरेचा, सुमेरमलजी छाजेड
व अमृतराजजी जीरावला

विभिन्न परिजनों के साथ सेठजी

सेठजी के साथ

श्री मिश्रीमलजी सालेचा (जोधपुर), नरसींगरामजी सालेचा, अमीचन्दजी मोदी,
मोतीसिंहजी गोयडी व गुलाबचन्दजी ढेलरीया

सेठजी के साथ श्री सोहनराजजी अजीत, लालचन्दजी ढेलरीया,
खडे हुए — श्री पारसमलजी खींवसरा, मुलतानमलजी गुलेछा, सूरजमलजी सकलेचा,
सम्पतराजजी सालेछा, चम्पालालजी चौंपडा इत्यादि

जिणपरिं कविमुषथां अनली। तिणपर मोनै जो
डी मन रली॥ इहाथणापुरी [illegible] चौपई
बंध कीयो में पंडे॥ ५८३॥ अधिको ओछो क
हीयो नइ [illegible] कवीयण [illegible] जोय नइ पडी
यो वलि जिहां कणपातरी। ते फके वे चर कर
जो षरो॥ ५८४॥ संवत सोलै सतरी तरी आपात
ज वार थूर गुरे। जोडी जेसलमेर मकार। वां
चा सुष यां में पंपार॥ ५८५॥ [illegible] चतु
रगछ गछे वाचक कुशललाभ इम कहै रि
धविर्ध सुष संपति सदा। जोलता पांमे कंपद
॥ ५८६॥ दूहा। ढोला मारवणी तणी। ए चौपई रसा
ल। अनणतां सुणतां त्या कुशल। फलै मनोरथ
माल॥ ५८७॥ इति श्री ढोला मारवणी चौपई संपू
र्ण॥ सकल पंडित शिरोमणि पं प्रवर श्री १०८
पं श्री उदयसागरजी तत् शिष्य सकल पंडि
त शिरोरत्न पं श्री १०५ पं श्री सुमतिसागर
जी तत् शिष्य सुशिष्य पं मयासागर उदय
सागर विवेकसागर लिपीचक्रे सुश्रा
वक पुन्य प्रभावक श्री देवगुरु भक्तिका
रक सर्वावसरसावधान बहुबुद्धिनिधान
संघनायक संघमुष संघनारधुरंधुर सा
ले छाबोला गोत्रे साह जी श्री दौलाजी
तत् पुत्र सपुत्र सा षुस्यालचंद कस्तूरचं
द वाचनार्थे॥ सं १८७० वर्षे जेष्ठ सुदि [illegible]

सवत् १८७० का सेठ दोलाजी खुशालजी वाचनार्थ हस्तलिखित ग्रन्थ का एक पृष्ठ

रहते थे। पाटोदी ठाकुर जुझारसिंहजी का तथा हजारीमलजी का झगडा इस क्षेत्र का प्रसिद्ध विवाद है जो दो मित्रो में कुछ गलतफहमियो से आरम्भ हो गया था। हजारीमलजी ने कहा था कि ठाकुर को हल पर हाथ दिलवा कर छोडूगा व ठाकुर साहव ने कहा कि वाँणिया ने लूण-मिर्च विकवाने छोडू', ऐसी चुनौतिया दी गई थीं। अनेक वर्षो के सघर्ष के वाद आपस में समझौता हो गया।

इस परिवार मे गरीबो हेतु 'सदाव्रत' चने बटते थे। वाहर गाव से आया चाहे कोई किसान हो या अन्य हो वहा से भूखा नही जा सकता था। किसी व्यक्ति के यहा चोरी हो जाने पर इस परिवार के पत्र से सारे जागीरदार व हाकिम चोर को ढूढने में मदद करते थे। आसपास के हाकिम भी वारुद या अन्य सामान की खरीद हेतु सेठजी के पास अपने आदमी भेजते थे। दिन भर महफिल मे अफीम, मेवे, हुक्के चलते थे। स्त्रियो हेतु रथ थे तो पुरुषों हेतु घोडे तथा ऊट रहते थे। नौकर-नौकरानियो के लिए भी पहिनने के गहने थे।

पचपद्रा की पानी समस्या हेतु हजारीमलजी ने पचपद्रा के नाडी (तालाव) मे एक वडा कुआ खुदवाया था जिसमे प्रारम्भ मे मीठा पानी निकला पर वाद मे पत्थर तुडवाने पर खारा पानी इस तेजी से ऊपर आया कि काम करने वाले मजदूरो को मुश्किल मे वाहर निकाला जा सका। इससे तालाव का पानी खराव न हो जाय इस लिए उसे तत्काल पटवा दिया गया। पचपद्रा तालाव का वडा लाखेटा उसी कुए की पटान है।

सेठ हजारीमलजी भी समृद्धि मे अपने वशजो से कम नही थे। कहा जाता है कि उनके पास सैकडों तोले सोना, वहुत वडी मात्रा मे चादी, लाखो की नकदी तथा लाखो की ही उधारी थी। मारवाड भर के नमक के ठेके, अफीम के ठेके, जोधपुर, सेलमा, कोटा इत्यादि की दुकाने उनके विशाल कारोवार का आकार वताती हैं। क्षेत्र के वढिया घोडे, ऊट, वैल, भेसें इत्यादि वे शौक से छाट कर रखवाते थे। उनके महलो की सजावट पचपद्रा आने वालो के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र थी। वाहर जाने पर वे जागीरदारो या हाकिमो के यहां ही ठहरते थे क्योकि सामान्य लोगो को उनका यह ठाट-वाट निभ नही आता था।

सेठ हजारीमलजी होली मनाने के वडे शौकीन थे। अपनी ओर से वीस-पच्चीस गैर खेलने वालों को सोने के गहनो से विभूषित करवाते थे। पुरुषो के आभूषणो का यह हाल था तो स्त्रियो के आभूषणो का तो कहना ही क्या था? उन दिनो ग्रामोफोन भारत मे आया ही था और उन्होंने वडी घडियों व ग्रामोफोन इत्यादि को सजा रखा था। कटग्लास के फाँनूस, कलात्मक चित्र, वडे-वडे काच, शृगारदान इत्यादि इनके वैभव के प्रतीक हैं। स्वय के रहने हेतु जनानी ड्योढी, मरदानी ड्योढी, अतिथी भवन, नौकरो हेतु अलग मकान व अनेक हवेलियो के अलावा पचपद्रा व वालोतरा मे वहुत वडी जायदाद थी। इस परिवार के हर पीढी के प्रभाव व रईसी को लेकर इस सपूर्ण क्षेत्र मे अनेक प्रकार के किस्से कहानिया प्रचलित रही हैं।

इस सभी ठाट के वावजूद पुत्र नहीं होने से उन्हें दूसरी शादी करनी पडी व सम्वत् 1972 अर्थात् सन् 1915 मे निसतान स्वर्गवासी हुए। उनके देहात के कारण उनके पीछे पुत्र गोद लेने का प्रश्न खडा हुआ। जोधपुर के लाला हरिश्चन्द्रजी माथुर के पितामह श्री चतुर्भुज जी माथुर उस समय पचपद्रा मे हाकिम थे व सेठ हजारीमलजी के राखी-वध भाई भी थे। अत गोद हेतु जो कोई लडका आता उसे श्री चतुर्भुजजी परखते।

अनेक लडके मजल, साडेराव, बालोतरा, जसोल व पचपद्रा के उन्हें दिखाये गये पर उन्होंने सभी को अस्वीकृत कर दिया। उन्हें सेठ हजारीमलजी के प्रभाव व प्रतिष्ठा को बनाये रखने योग्य कोई लडका प्रतीत नहीं हुआ।

मध्यप्रदेश सन् 1916 में प्लेग की चपेट मे आ गया था। सारे नगर खाली करवा कर लोगो को महामारी से बचने हेतु गावो में जाने पर बाध्य किया गया। इस समय सागर मे धनसुखदासजी नौकरी करते थे तथा उनके छोटे पुत्र गुलाबचन्दजी भोपाल मे खजाची के पद पर थे। परिवार के सभी सदस्यो ने निर्णय किया कि गावो मे जाने के बजाय सारा परिवार तीर्थ-यात्रा करने चला चले। अस्तु वे गुजरात के शत्रुंजय, गिरिनार इत्यादि जैन तीर्थ होते हुए फिर मारवाड मे आये। धनसुखदासजी अपनी आजीविका हेतु 20 वर्ष की आयु मे पचपद्रा से ही मध्यप्रदेश गये थे। यह वह जमाना था जब कि रेल मार्ग नहीं था। अत 50 वर्ष तक वे अपने मूल स्थान पर नही आ सके। वे परिवार तीर्थाटन करते सहित सभी आत्मीयजनो से मिलने 50 वर्ष बाद पचपद्रा आये। जब वे पचपद्रा आये तब तक सेठ हजारीमलजी को स्वर्गवासी हुऐ 6 माह बीत चुके थे।

उस जमाने मे, मध्यप्रदेश मे 50 वर्ष पूर्व पहुँचा परिवार, पचपद्रा मे अपने नये अनुभव लेकर बसा था। अस्तु लोगो मे आकर्षण का केंद्र बना होगा। श्री चतुर्भुजजी से भी धनसुखदासजी व गुलाबचदजी मिले और प्रथम साक्षात्कार में ही चतुर्भुजजी पर गुलाबचन्दजी ने अपने व्यक्तित्व की छाप लगा दी। उनके मस्तिक मे तुरन्त हजारीमलजी के गोद देने की बात स्मरण हो आई। एक मास के बाद जब धनसुखदासजी रवाना होने लगे तो हजारीमलजी के घर से उन्हें दो-तीन दिन और रुकने का आग्रह किया। इसी अन्तराल मे गुलाबचन्दजी को गोद लेने का निर्णय कर लिया गया। इस समय गुलाबचन्दजी की आयु 28-29 वर्ष की थी। मध्यप्रदेश मे पनपे-पले व्यक्ति को मारवाड के पचपद्रा नगर मे भाग्य ले आया और उसने अगले 60 वर्ष तक अत्यत प्रगतिशील, पुरुषार्थी जीवन बिताया। पचपद्रा ही नहीं सपूर्ण मारवाड को एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक व सामाजिक कार्यकर्ता एव जनसेवक के रूप में उत्तरोत्तर अपनी अमिट छाप इतिहास पर जमाता गया।

सेठ श्री गुलाबचन्दजी के जीवन की घटनाओ का काल क्रम :

1885	जन्म - गज बसोदा (मध्यप्रदेश) मे।
1910-16	भोपाल व मध्यप्रदेश के अन्य स्थानो पर स्कूलें खुलवाना।
1917	गोद जाना।
1920	श्री पचपदरा-बालोतरा बस क० लि० की स्थापना।
1921	स्कूल कमेटी पचपदरा की स्थापना।
1922-23	श्री लक्ष्मी साल्ट ट्रेडर्स क० लि० के सस्थापक व अध्यक्ष।
1922	सिवाची ओसवाल पचायत में सुधारवादी निर्णय करवाना (पादरू मे)।
1926	नमक आदोलन।
1926-27	विदेशी नमक की स्पर्द्धा मे जहाज मे नमक कलकत्ता ले जाना।
1926	सैंट्रल लेजिस्लेटिव एसेम्बली मे पचपदरा व प्रश्न।
1929	टेरिफ बोर्ड का पचपदरा आगमन।

1928 पचपदरा साल्ट ट्रेडर्स एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष।
1929 साल्ट सर्वे कमेटी का पचपदरा आना।
1929 पचपदरा कन्या पाठशाला प्रारम्भ करना (अस्थायी)।
1930 जोग्राफिकल सर्वे व टोपोग्राफिकल सर्वे मे सहयोग।
1928-30 स्टेथी कमीशन की नियुक्ति व निर्णय।
1932 महावीर जैन डिस्ट्रीक्ट वोर्डिंग हाउस की स्थापना।
1925-33 श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जैन तीर्थ की समिति मे प्रथम उपाध्यक्ष व तत्पश्चात दो सत्र तक अध्यक्ष।
1933 ऊटो पर पचपदरा पानी वितरण के सरकारी ठेके करवाये।
1934-35 श्री महाजन व्यापार सुधार एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष व इन्सोलवेंसी एक्ट के विरुद्ध आंदोलन।
1935 मोटर खरीदकर टकीयो से पानी की व्यवस्था।
1936 कुशलाश्रम छात्रावास की स्थापना।
1936 रेल्वे लाईन हेतु प्रयास।
1938 रेल्वे लाईन हेतु दो लाख की व्यक्तिगत जमानत।
1936-39 राज्य स्तर पर ठेके से मोटर टकियो से पचपदरा मे पानी वितरण।
1938 अकाल पीडितो की सहायता हेतु व्यवस्था।
1938-39 सेंट्रल एडवाइजरी वोर्ड की सदस्यता।
1939 पचपदरा मे सुधार समिति की स्थापना।
1939-40 पीतल के शीट व वर्तनो के कारखाने हेतु कम्पनी वनाना।
1939 मारवाड चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापक सदस्य।
1939 पचपदरा की रेल टकियो से पानी वितरण योजना।
1940 पचपदरा मे लोक परिषद की स्थापना।
1941 वार (WAR) कमेटी की सदस्यता।
1941 साभर मे नमक कारोवार तथा कराची के नमक का कारोवार।
1942 समस्त भारत मे एक दर से नमक वेचने की केन्द्रीय सरकार को योजना प्रस्तुत करना।
1943 राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ से सम्पर्क।
1944 साभर नमक व्यवसाय मे भारी आर्थिक हानि उठाना।
1944 साभर साल्ट ऐसोसिएशन के डायरेक्टर।
1945-51 दी लक्ष्मी साल्ट ट्रेडिंग क० लि० के संस्थापक-अध्यक्ष।
1946 कुशलाश्रम विद्यालय की स्थापना।
1947 पचपदरा मे कन्या पाठशाला स्थापित करवाना।
1947 शरणार्थी सेवा व पुर्नवास मे सहयोग।
1945-48 मारवाड जैन युवक संघ के संगठन मन्त्री।
1948 पचपदरा से हकूमत हटाने के विरुद्ध आंदोलन।
1948 ओसवाल समाज की न्याति के सम्मुख सुधारो हेतु प्रयत्न।
1950 मारवाड के नमक का ठेका।

1951 पचपदरा मे तहसील भवन हेतु प्रयत्न।
1954-55 मास्टर भोलानाथ द्वारा तहसील स्थानान्तरण के आदेश व उन्हे रद्द करवाना।
1955 पचपदरा स्कूल को मिडिल स्कूल मे परिवर्तित करवाने हेतु भवन सुधार ।
1954 एसेंवली मे पचपदरा की पानी ममस्या उठाना।
1956 पचपदरा की नल योजना हेतु प्रयत्न।
1958 केन्द्रीय नमक विभाग द्वारा पचपदरा का कार्य छोडना व नल योजना से हाथ खीचना।
1958 नवीन नल योजना।
1960 नल योजना निर्माण कार्य।
1958-60 पचपदरा पचायत समिति मे सहवरणी अध्यक्ष समाजसेवा ममिति ।
1961 नल योजना का पचायत के अधिकार मे प्रारम्भ होना।
1959 पचपदरा सैकेण्डरी स्कूल के भवन हेतु प्रयत्न।
1960 राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के वाडमेर जिला सघ–चालक ।
1962 ओसवाल समाज में विवाद ग्रस्त कन्या के सवध में रुचि लेकर कन्या का विवाह करवाना।
1965 वाडमेर में डिग्री कालेज हेतु प्रयत्न, धन सग्रह व भवन वनवाना व कालेज कमेटी के सदस्य ।
1968 पचपदरा नल योजना को व्यवस्थित करवाने हेतु प्रयत्न ।
1971 जैन क्रिया भवन व देरासर ट्रस्ट कमेटी के चेयरमेन ।
1972-78

मध्यप्रदेश से मारवाड तक
(प्रारम्भिक जीवन)

सन् 1916 (सवत 1973 विक्रमी) मे जहा प्रथम विश्वयुद्ध की विभिषिका मे सारा ससार ग्रसित था वहा भारत मे प्लेग की भयकर महामारी से जनजीवन त्रस्त हो रहा था। नगर खाली हो रहे थे। गावो की ओर व जगलो की ओर लोगो का पलायन हो रहा था। ऐसे समय मे श्री धनसुखदासजी सालेचा के परिवार ने निश्चय किया कि भोपाल शहर जहा वे अपने पुत्रो के साथ रह रहे थे, छोडा जाय। कहाँ पर जाये, इस समस्या पर विचार करते हुये सोचा कि क्यो न इस अवसर पर तीर्थ यात्रा का पुण्य लाभ कर लिया जाय। इस दृष्टि से वे अपने पुत्र गुलावचद, रतनचद व पौत्र केसरीमल व अन्य परिजनो के साथ तीर्थ-यात्रा हेतु निकल पडे। श्री शत्रुजय, गिरनार पर्वत इत्यादि जैन तीर्थो की यात्राकर, मारवाड की ओर आने पर उन्हे अपने पूवर्जो के स्थान पचपद्रा का भी अनायास ध्यान हो आया। नाकोडा जैन तीर्थ मे दर्शन कर, यह परिवार पचपद्रा पहुच गया, जिसे श्री धनसुखदास ने पचास वर्ष पूर्व 18-19 वर्ष की अल्पायु मे ही छोड दिया था।

पचपद्रा ग्राम हेतु यह वर्ष उसके सौभाग्य का वर्ष सिद्ध हुआ। जव युद्ध ग्रसित विश्व व महामारी के सकट मे फसा भारत व्याकुल था, तव इस नगर मे एक ऐसे व्यक्ति का प्रवेश हुआ जो इस ग्राम की काया पलट करने वाला सिद्ध हुआ। इस उजड रहे पचपदरा ग्राम हेतु वह अपनी कर्मयोग की सजीवनी लेकर सकट मोचक के रूप मे आया। इस युवक का नाम था गुलावचद। यह धनसुखदासजी के तीसरे पुत्र थे। उनके अन्य दो पुत्रो छोगालाल और फूलचद का स्वर्गवास हो चुका था। अत वृद्ध धनसुखदासजी के यह प्रमुख एव प्रिय आधार थे।

श्री गुलाबचद का जन्म मध्यप्रदेश के गजवसौदा नगर मे सवत् 1941 आसोज वदी 10 को हुआ था। आपके पिता धनसुखदासजी वहा मारवाडी पेढीयों पर मुनीम की नौकरी किया करते थे। परिवार की साधारण स्थिति होने के कारण श्री गुलाबचद को भी छोटी आयु मे नौकरी का सहारा लेना पडा। शिक्षा की दृष्टि से केवल चौथी कक्षा तक पढ पाए। पर उस समय चौथी कक्षा तक मे भाषा ज्ञान के साथ साथ खेती की साधारण जानकारी, भूमि के सर्वेक्षण के सबध मे जानकारी व अन्य कुछ ऐसे विषय भी सिखाए जाते थे। वे सब ज्ञान सेठ जी को आगे के जीवन मे अत्यन्त उपयोगी रहे।

आपने प्रारभिक जीवन मे अनेक प्रकार के कार्यो मे हाथ बटाया, जिसमे खेती सबधी व्यवस्था, अनाज विक्री व खरीद की दलाली, बहियो व हिसाब किताब के आंकडे रखने का कार्य, कलकत्ता मे फर्मो का प्रतिनिधित्व इत्यादि प्रमुख रहे। कलकत्ता मे आपका प्रथम प्रवास सोलह वर्ष की आयु मे इसी सदर्भ मे हुआ था। इस प्रकार आपको बहुमुखी अनुभव प्राप्त होते रहे। आप प्रारभिक काल से ही राष्ट्रीय आदोलनो मे रुचि लेते रहे। बाल गगाधर तिलक के राष्ट्रीय आदोलनो मे आपने विशेष रुचि रखी। मारवाड मे आने के पूर्व ही एक सरकारी खजाने के ठेकेदारी फर्म की ओर से भोपाल मे खजाची का कार्य करते थे। भोपाल मे रहते हुए वहा के सार्वजनिक जीवन मे आपने बहुत भाग लिया और इससे वहा के जैन समाज मे अत्यत लोकप्रिय हो गये। वहा जैन स्कूल की स्थापना की और उसकी सचालन समिति मे मानद व्यवस्थापक रहे। जन्माष्टमी के अवसर पर सजी हुई झाकियें निकालना, पर्यूषण पर मदिरो में सज्जाऐं करना इत्यादि आपके बहुत प्रिय सेवा कार्य थे। सेवा भावी होने के कारण ही, एक साधारण स्थिति में होते हुए भी प्रतिष्ठा के भागी बने और भोपाल के प्रसिद्ध भडारी परिवार मे आपकी भतीजी का सबध हो गया।

आपका विवाह बैतूल के बदनूर नामक कस्बे में मुलतानमलजी दीपचदजी सेठिया के यहा हुआ। विवाह के समय आपकी आयु लगभग 24-25 वर्ष की रही होगी क्यो कि पचपद्रा मे गोद जाने से पूर्व आपकी एक कन्या का अल्पायु में देहान्त हो चुका था और उस समय तक लक्ष्मीचद जी का जन्म हो चुका था। आपकी पत्नि श्रीमती केसरदेवी अत्यत धार्मिक प्रवृति की सुशील व सरल स्वभाव की गृहस्थ नारी थी। सेठजी के और उनकी आयु में १२ वर्ष का अतर था।

सेठजी प्रारंभ से ही अत्यत ही रईस तबियत के थे। बढ़िया कपडा पहिनना, उचे स्तर का रहन सहन, उचे स्तर की मित्र मडली मे उठना बैठना रहता था, इससे कोई यह नहीं कह सकता था कि आप एक साधारण स्थिति के परिवार के हैं। वास्तव में उस समय यह कोई नही जानता था कि विधाता की इच्छा है कि श्री गुलाबचद इस प्रकार का जीवन बितायेंगे और वह आगे बहुत वैभवप्रद हो जावेगा।

मारवाड़ के कार्यक्षेत्र मे सेठजी

सन् 1916-1917 में श्री गुलाबचदजी पचपदरा में गोद आये। मध्यप्रदेश से इस नए वातावरण में आना पारिवारिक दृष्टि से उनके हेतु भिन्न था। एक नौकरी पेशा खानदान से समृद्ध परिवार में आने से उनकी जनसेवा की आकाक्षाओ को पूर्ण होने का अवसर मिला।

यहा आते ही उन्हे पहली कमी पानी की व दूसरी आवागमन के साधनों की अनुभव हुई। इन्होंने मारवाड की प्रथम लिमिटेड कम्पनी "पचपदरा-बालोतरा बस कम्पनी लिमिटेड" की स्थापना की। स्वय इस कम्पनी के मानद् सेक्रेटरी के रूप में कार्य करते रहे। इस कम्पनी की स्थापना सन् 1920 में हुई व महकमा खास से इनका सीमित दायित्व के रूप मे रजिस्ट्रेशन कराया। पानी ढोने तथा सवारियो हेतु बालोतरा-पचपदरा के बीच मे मोटर चलाने की अनुमति मिली।

सन् 1921 में स्कूल में बच्चो की पढाई की व्यवस्था हेतु आपने एक स्कूल कमेटी की स्थापना की जो बच्चो के अध्ययन पर विशेष ध्यान रखने लगी।

सन् 1921-22-23 में आप दूसरी लिमिटेड कम्पनी, "लक्ष्मी सॉल्ट ट्रेडर्स कम्पनी लिमिटेड" के सस्थापक-अध्यक्ष के रूप में कार्य रत हुए। इस कम्पनी का रजिस्ट्रेशन अजमेर में हुआ था। यह नमक के वितरण का कार्य करती थी। इस कम्पनी के सारे दस्तावेज आज की किसी अपटूडेट कम्पनी के समान बने जबकि उस समय में पचपदरा जैसे गाँव मे कम्पनी का अपटूडेट रेकार्ड वास्तव मे इनकी प्रतिभा का द्योतक है।

सन् 1922 में पादरु में ओसवालो की सिवानची पट्टी की पचायत एकत्र हुई। पारिवारिक अग्रज के नाते आपने उसमें भाग लिया। ज्याति में सुधार सबधी अनेक प्रस्ताव पारित करवाये।

सन् 1925 में श्री नाकोड़ा जैन तीर्थ के मेले के अवसर पर तीर्थ की व्यवस्था सुधारने का आपने प्रस्ताव रखा। फलस्वरूप तीर्थ हेतु कमेटी-व्यवस्था कायम हुई। श्री हिन्दुमलजी कोठारी (जसोल) अध्यक्ष व सेठ श्री गुलाबचदजी उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। आगामी चुनाव (1928-29) में आप अध्यक्ष बनाए गए और दो सत्रो तक अध्यक्ष बने रहे। नाकोडा तीर्थ मे रुचि लेकर आपने वहाँ पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की योजना रखी, जो आपके अध्यक्ष काल तक निरन्तर चलती रही। तीर्थ के वर्तमान स्वरूप की प्रारम्भिक व्यवस्था आपकी सूझबूझ का ही फल है।

सन् 1926 में पचपदरा के नमक उत्पादन में एक विचित्र स्थिति उत्पन्न हो गई। ब्रिटिश सरकार ने निर्णय लिया कि वे पचपदरा में नमक का उत्पादन बद करेंगे। सेठजी ने इस स्थिति का सामना लगभग बीस मोर्चों पर घेरा बदी करके किया। जोधपुर के तत्कालीन शासन को अपने हितो पर ध्यान रखने हेतु मामला उठाने के लिए कहा। साभर में ब्रिटिश सरकार के भारी लागत से हुए मशीनीकरण से पचपदरा को कुचलने की कूट नीति का भडाफोड़ किया। जोधपुर राज्य की रेल्वे की तुलना में बी बी एण्ड सी आई रेल्वे के हितो के विशेष रक्षण की नीति को प्रकाशित किया। जोधपुर रेल्वे से ऐसी विशेष दरें ली जिससे साभर पचपदरा का माल बाजार में समान दर से पहुँचे। खारवालो को उत्पादन में प्रोत्साहन मिले उस हेतु उनको मिलने वाली उत्पादक कीमत में वृद्धि की माग की। उत्पादक कीमत में वृद्धि न करने पर

पचपदरा नमक उत्पादको की हडतालें करवाई। सम्पूर्ण यू पी , विहार, आसाम व उत्तरी मध्यप्रदेश तथा उदयपुर क्षेत्र के प्रमुख शहरो से आवेदन भिजवाए कि यहाँ के निवासी पचपदरा का नमक पसद करते हैं और उन्हें इस नमक की उपलब्धि चालू रखी जाय। जब यह पता लगा कि इस नीति का कारण आयात को प्रोत्साहन देना है तो वे कराची मे प्रथम भारतीय नमक से भरा जहाज लेकर प्रमुख आयात केन्द्र कलकत्ता पहुँचे। विभिन्न ऐतिहासिक ग्रथो से इस नीति का रहस्य ज्ञात कर उसे प्रकाशित किया। दिल्ली की लेजिस्लेटिव एसेम्बली में यह मामला उठवाया। इडियन चैम्बर ऑफ कामर्स द्वारा उच्च अधिकारियो को ज्ञापन भिजवाए। सेठ घनश्यामदास विडला से इस विषय को विभिन्न सरकारी कमेटियो मे उठाने का आग्रह किया।

जोधपुर राज्य की सधि की शर्तो के अतर्गत लगभग एक करोड के हरजाने का दावा पेश किया। टेक्सेसन इक्वारी कमेटी 1926-27 के सम्मुख प्रश्न रखा। नमक उद्योग पर टेरिफ वोर्ड की स्थापना करवाई। टेरिफ वोर्ड से आग्रह कर 'साल्ट सर्वे कमेटी' स्थापित करवा कर भारत के नमक श्रोतो को प्रकाश में लाए। सिंध के धोरो-नारो व दलियार नमक श्रोतो का वाजार मे व कमेटियो के सम्मुख प्रचार किया। सम्पूर्ण क्षेत्रो की जोगरोफिकल, जियोलोजिकल व टोपोग्राफिकल सर्वे करवाई।

नमक की माग वढवाने हेतु व्यापारियो के लिए क्रेडिट सिस्टम जारी करवाया। खारवालो को कोपरेटिव वैंक स्थापित कर अपना आर्थिक साधन जुटाने का आग्रह किया। जहा खानें वन्द हो रही थी वहा खारवालो के लिए 40 नई खानें खोदने की आज्ञा लाए। व्यापारियो को एसोसिएशन के रूप में एक लिमिटेड कम्पनी वना कर व्यवस्थित किया।

इस विषय के उग्र हो जाने पर ब्रिटिश सरकार ने मि स्टेथी की अध्यक्षता में एक सदस्यीय आयोग की स्थापना की जिसने निर्णय दिया कि पचपदरा में नमक का उत्पादन चालू रखा जाय। यह समस्त आदोलन सन् 1925 के अन्त में प्रारम्भ होकर सन् 1931 के आरम्भ मे समाप्त हुआ अर्थात लगातार पाच वर्ष तक यह आदोलन चला।

सन् 1929 में सेठजी ने स्वय की कन्याओ को पढाने हेतु पाठशाला की आवश्यकता अनुभव की तो वालोतरा की सरकारी स्कूल से पचपदरा हेतु विशेष नियुक्ति करवाकर स्वय के व्यय पर पचपदरा में एक कन्या पाठशाला स्थापित करवाई जो दो तीन वर्ष तक चली।

सन् 1932 में इनके वडे पुत्र लक्ष्मीचदजी व हस्तीमलजी पारख जोधपुर अध्ययन हेतु गए। यहा पर देहात के छात्रो के रहने की व्यवस्था नही थी। इस कमी को देखकर श्री देवीचद्र शाह की देखरेख में "श्री महावीर जैन डिस्ट्रीक्ट वोर्डिंग हाउस प्रारम्भ किया जो तीन वर्ष चलकर जोधपुर के ओसवाल समाज के आग्रह पर, एक वर्ष तक सरदार होस्टल के रुप में चलने के वाद, फिर कुशलाश्रम के रुप में आया। यही कुशलाश्रम सन् 1945-46 में एक आदर्श विद्यालय के रुप में परिवर्तित हुआ।

इस काल में ही आपका ध्यान पुन पचपदरा की पानी व्यवस्था की ओर गया जिसे आप सिद्धात: सरकारी उत्तरदायित्व मानते थे। 1932 में ऊंटो व वैलगाडियो से पानी की कमी के समय ठेके पर जल-

वितरण कराया। 1935 मे स्वय ने मोटर गाडी मे वितरण की व्यवस्था प्रारम्भ की। अगले वर्ष मे सरकारी ठेके पर प्रबन्ध, करवाया। 1939 मे रेल टैंको से वितरण की व्यवस्था की। सन् 1961 में बीटूजा की नल योजना की सफलता आप के तीन वर्षो के अथक प्रयत्न का फल है।

सन् 1934 में मारवाड मे इ सोलवेंसी एक्ट का अलग कोर्ट कायम होकर हिंदुस्तान भर के कानूनों से अलग पद्धति मे कार्य प्रारम्भ हुआ जिसमें पूरे मारवाड का व्यापारी समाज परेशान हो गया। जिस पर आपने सपूर्ण मारवाड के कस्बो में 'महाजन व्यापार सुधार एसोसिएशन' की स्थापना करवाकर जोधपुर मे उसको फेडरेशन के रूप में स्थापना की। दो वर्ष तक सघर्ष चला। कानून में परिवर्तन करवाया। मारवाड का यह प्रथम-व्यापारिक फेडरेशन था।

पचपदरा की रेल समस्या हेतु प्रथम कार्यवाही सेठजी के पचपदरा आगमन के पूर्व 1915 में शुरु तो हुई थी पर आपने रेल की आवश्यकता का तीव्र अनुभव किया और सन् 1919 में एक विस्तृत आवेदन रेल के विषय में दिया जो पचपदरा ही नही मारवाड के सभी प्रमुख स्थानो के लिए भी समान हितकारी था। सन् 1920 में पचपदरा बालोतरा मोटर बस क की स्थापना की और इस विषय को नमक आन्दोलन के साथ-साथ जागृत बनाए रखा। सन् 1931 में जब सर महाराजसिंह जोधपुर राज्य के चीफ मिनिस्टर बन कर आये तो उनके पचपदरा आगमन पर सेठजी ने उनका ध्यान रेल की समस्या की ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपने इन्सपेक्शन नोट मे इस पर बल दिया। उस समय नमक तथा इसोलवेन्सी एक्ट के दो बहुत बडे मामले सेठजी ने अपने हाथ मे ले रखे थे अत वे इस विषय पर पूर्ण ध्यान नही दे सके परन्तु ज्यो ही उन्हें कुछ साम लेने का समय मिला उन्होने रेल का मामला फिर उठा लिया। सन् 1936 मे इस मामले को विस्तार पूर्वक राज्य सरकार व जोधपुर महाराजा साहब के सम्मुख रखा। पहला आवेदन 15 दिसम्बर 1935 को पेश हुआ। उसके पश्चात् लगातार प्रयत्न करते रहने से सन् 1939 मे रेल्वे की लाइन डाली गई। वह यही मामला है जिसमे सेठजी ने, राज्य सरकार को नुक्सान होने की स्थिति मे अपनी व्यक्तिगत जमानत दो लाख रुपयो की दी थी।

सन् 1939 मे 'छिन्नवा' का भयकर अकाल पडा जिसमे मारवाड की समस्त अर्थव्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गयी। लाखो की सख्या के पशु-धन का विनाश हुआ। जनता को पेट की अग्नि शान्त करने के लिए अपने बच्चो को बेचना पडा। मारवाड से बाहर जाने वाला पशु-धन भी 90 प्रतिशत वापिस नही आया, वही समाप्त हो गया। इस समय राज्य द्वारा सेठजी को 'फैमिन कमेटी' मे मनोनीत किया गया। सेठजी ग्राम ग्राम लोगो के राहत के कार्यों मे मदद देते रहे। जब रेल्वे लाइन का काम चल रहा था तो यह समस्या आयी कि मजदूरो को अपने नकद वेतन के स्थान पर राशन की व्यवस्था हो तो कैसे हो? सेठजी ने स्वय उनके राशन के लिए चलती-फिरती राशन की दुकान खोली और रोज जाकर मजदूरो को सम्भालते और उनके हाल-चाल पूछते। उनके इन्ही सेवा कार्यो के कारण 'छिन्नवा काल' मे एक लोक गीत गाँवो मे प्रचलित हो गया जिसकी कडियें कुछ कुछ इस प्रकार हैं—

छिन्नवा रे काल फेर मत आइजे भोली दुनिया मे
पचपदरा रे शहर मे गुलाबचद सेठ
बालोतरा सू गाडी मगाई, मिटियो जगरो क्लेश
छिन्नवा रे काल फेर मत आइजे भोली दुनिया मे।

सन् 1939 मे द्वितीय महा-युद्ध चल रहा था। नागरिको की 'ममितिया बनी और इम क्षेत्र मे सेठजी को उसमें मनोनीत किया गया। सेठजी के जिम्मे पश्चिम मारवाड मे प्रचार सम्बन्धी कार्यक्रमो मे सहयोग देने का उत्तरदायित्व रखा गया था।

इमी वर्ष मारवाड मे जनतान्त्रिक पद्धत्ति का श्रीगरोश 'सेंट्रल एडवाईजरी बोर्ड' की स्थापना के द्वारा हुआ। सेठजी को भी इम बोर्ड में मनोनीत किया गया। इम बोर्ड के सन् 1939 व 40 में कुल पाच अधिवेशन हुए थे और उन सभी अधिवेशनो में अत्यन्त निर्भयता पूर्वक जनहित का प्रतिपादन किया। सेठजी ने प्रेस की स्वतत्रता के विषय में, किसानो की आर्थिक दशा मे सुधार हेतु, मादिन जानवरो की सरक्षता, पशुधन हेतु गौचर-भूमि, मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणिया, पानी की ममस्या, सफाई की व्यवस्था, लघु उद्योगो का विकास, सडको व परिवहन का प्रबन्ध, चिकित्सा-व्यवस्था इत्यादि अनेक जनसेवी योजनाओ के सम्बन्ध में अत्यन्त निर्भीक रूप से वकालत की। उस काल में एक देशी राज्य में ऐमी निर्भीकता रखना मराहनीय है।

सन् 1938 से सेठजी का सम्पर्क लोकनायक श्री जयनारायण व्यास मे विशेष रुप मे हो गया। सेठजी ने भी व्यासजी को पचपदरा मे आमन्त्रित कर उनके भाषण करवाये। लोगो मे स्वदेशी व चर्खे के प्रति उत्साह जागृत करने हेतु चरखे बटवाये। पचपदरा में लोक परिषद की स्थापना की। 'आगोवान' 'लोक परिषद बुलेटिन' इत्यादि पत्र-पत्रादि सेठजी के पास नियमित रुप से आते थे। सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड मे भी व्यासजी का पूर्ण समर्थन करते थे।

सन् 1938 में पचपदरा में सामाजिक व स्थानीय ममस्याओ हेतु 'सुधार ममिति'' की स्थापना की। 'सुधार-समिति' की स्थापना ता० 19-3-38 को हुई। श्री कन्हैयालालजी कोठारी, हस्तीमलजी, सेठजी के पुत्र लक्ष्मीचन्दजी, केसरीमलजी चौपडा, मोहनलालजी पीलूकड व ग्राम के सभी युवक, इस समिति में अत्यन्त उत्साह से कार्य करते थे। इम ममिति की स्थापना पर आई जी पी पुलिस द्वारा आपत्ति भी की गयी पर सेठजी ने अपने प्रभाव से उन्हें शात कर दिया।

सन् 1939 मे 'मारवाड चेम्बर आफ कामर्स' की स्थापना हुई। सेठजी उसके सस्थापक सदस्यो मे से थे। चेम्बर के प्रचार हेतु जालोर, सिवाना, ममदडो, बालोतरा, पचपदरा व बाडमेर के क्षेत्रो का उत्तरदायित्व अपने हाथो में सम्हाला। इसके पश्चात अनेक वर्षों तक कार्यकारिणी की सदस्यता के साथ साथ चेम्बर की परगना शाखाओ का काम देखते रहे। चेम्बर की विधान समिति में भी आप सदस्य रहे।

सन् 1936 से 40 तक के वर्षों में आपने उद्योग विकास हेतु अनेक योजनाऐ बनायी। जापान से मशीनें मगाकर कढ़ाई, बुनाई व अन्य प्रकार के छोटे छोटे उद्योग शुरु करने की आपकी योजनायें थी। इसके अलावा ऊन का प्रेस, ऊन के कम्बल बनाने, पीतल की सीट व बर्तन बनाना, मैच फेक्टरी प्रारम्भ करना इत्यादि अनेक धधो के लिए आपने जोधपुर में अपने साथियो को उत्साहित किया। परन्तु यह सभी योजनाऐ सन् 1939 का महायुद्ध प्रारम्भ होते ही, आयात की रोक के कारण स्थगित कर देनी पडी।

इसी समय मे आपने पचपदरा के नमक के शेपासो के उपयोग हेतु एक योजना बनाई थी परन्तु तत्कालिन पी डब्लू डी मिनिस्टर मिस्टर एडगर ने यह कह कर उस योजना को रद्द कर दिया कि यदि ऐसी

कोई योजना बनानी हो तो हिन्दुस्तानी लोग उसके लिए अनुपयुक्त हैं व किसी ब्रिटिश कम्पनी को यह काम सौंपना चाहिए ।

सन् 1938 में पचपदरा से हकूमत के हटने की समस्या पुन. खड़ी हुई । यह समस्या सर्व प्रथम सन् 1915 में फिर सन् 1928 में और उसके बाद सन् 1938, 1943, 1948, 1954 में बार-बार उठती रही । हर बार सेठजी अपने प्रयत्नों से इस मामले को शांत करवाते रहे लेकिन जब सन् 1948 में हकूमत का सामान ही उठकर जाने लगा तो आपने ट्रकों के आगे सोकर आन्दोलन शुरू किया । अनेक प्रयत्न कर सरकारी आदेशों को स्थगित करवाया । इसके साथ ही प्रश्न के स्थायी हल हेतु तहसील भवन के निर्माण की स्वीकृति का प्रयत्न करके राजस्थान सरकार से प्राप्त की । तहसील भवन के बनते बनते सन् 1954 में तत्कालीन मिनिस्टर श्री भोलानाथ ने मौखिक आज्ञा देकर, बाड़मेर प्रधान के समय काम रुकवाने का आदेश दिया । तब तीव्रता से पुन एक आन्दोलन का रूप देकर समस्या को उठाया, प्रेस-कॉन्फ्रेंस बुलायी, प्रतिनिधि मंडल लेकर गये, तब श्री व्यासजी ने (जो उस समय मुख्यमंत्री थे) आज्ञा देकर इस विषय को सदा के लिए समाप्त किया और भवन का निर्माण पूर्ण हुआ ।

सन् 1941 में आपने साभर में नमक का कारोबार शुरू किया । कराची से भी नमक का कारोबार करने लगे । इसी समय आपने एक योजना भारत सरकार के सामने समस्त भारत में एक दर से नमक बेचने की रखी । इस काल में साभर में सभी प्रकार के सार्वजनिक कार्यों में सहयोग देते रहे ।

साभर के नमक कारोबार में (सन् 1944 में) आपको भारी आर्थिक हानि हुई और 1944-45 के डेढ़ वर्ष का कार्यकाल आपके लिए अत्यन्त समस्यापूर्ण रहा । इस काल में मारवाड़ जैन युवक संघ की स्थापना हुई और सन् 1945 से सन् 1950 तक मारवाड़ जैन युवक संघ के संगठन मंत्री तथा उपाध्यक्ष आदि पदों पर रहकर समाज सुधार के कार्यों में लगे रहे ।

सन् 1938 में जोधपुर में 'मरुधर मित्र मंडल' नाम की राजनैतिक व सामाजिक मिश्रित विचारों वाली संस्था चल रही थी । उसके भी आप सदस्य थे । उसमें अत्यन्त रुचि से कार्यक्रमों में भाग लेते रहे । जोधपुर में लगभग 1932-33 से ही आप आर्य समाज के सारे सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेते रहे तथा बाद में आपने पचपदरा व बालोतरा में भी आर्य समाज की स्थापना में योग दिया ।

समाज सुधार के क्षेत्र में सन् 1947 में एकत्र हुई ओसवाल समाज की न्याति के सम्मुख, सुधारों हेतु समस्त मारवाड़ के समाज प्रेमियों का एक प्रतिनिधी मंडल लेकर उपस्थित हुए व कई प्रकार के सुधारों के प्रस्ताव पारित करवाए । इसी प्रकार सन् 1962 में एक कन्या के सम्बन्ध को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया था, जो रुढ़िवाद की शिकार हुई थी । उस कन्या को विवाद से छुटकारा दिलवा कर उसका विवाह करवाने का प्रबंध किया ।

शिक्षा के क्षेत्र में सन् 1952-53 में पचपदरा स्कूल को मिडिल स्कूल के स्तर तक लाने व उसके लिए भवन की व्यवस्था के प्रयत्न किए । सन् 1959 में पचपदरा सैकण्डरी स्कूल के भवन हेतु घर-घर चन्दे के लिए चक्कर लगाये । नगर में कन्या पाठशाला प्रारम्भ करने हेतु स्वयं का भवन पांच वर्ष के लिए देकर, प्राइमरी

पाठशाला शुरु करवाई जो कालान्तर मे पारख परिवार द्वारा भवन बनवा देने पर मिडिल स्कूल बन कर अब सैकण्डरी स्तर की बनने की तैयारी में है।

सन् 1965 मे बाडमेर के निवासियो ने शिक्षार्थ कालेज स्थापना की आवश्यकता बतायी। दो वर्ष प्रयत्न करके बाडमेर मे कालेज खुलवाने मे सफलता प्राप्त की। सन् 1958 मे पचपदरा पचायत समिति मे आपका समिति द्वारा महवरण किया और समाज सेवा समिति का आपको अध्यक्ष बनाया। उस समय आपने सपूर्ण क्षेत्र मे शिक्षा, पानी इत्यादि समस्याओ के समाधान मे रुचि लेकर विकास कार्यों मे महत्व-पूर्ण योगदान दिया।

सन् 1947 मे देश विभाजन पर जब शरणार्थी समस्या खडी हुई तो बाडमेर जिला इस सकट से सबसे अधिक प्रभावित हुआ। आपन शरणार्थी-बन्धुओ के प्रति खुले हृदय से प्रेम प्रदर्शित किया। उनको बसाने मे पूर्ण-सहयोग दिया। उनके बसाने हेतु विभिन्न उपाय बताये। अस्तु, आज भी सभी शरणार्थी बन्धुओ द्वारा सेठजी अत्यन्त सम्मान से स्मरण किये जाते हैं।

सन् 1945 मे नमक के वितरण की कम्पनी के रूप मे 'लक्ष्मी सॉल्ट ट्रेडिंग क' के आप अध्यक्ष बने और छ साल तक कम्पनी के सफल सचालन के पश्चात् सन् 1951 मे पचपदरा की जल योजना हेतु प्रयत्न कर सारे व्यय की राशि इसी कम्पनी मे दिलवाई। सन् 1954 मे पचपदरा साल्ट मर्चेन्ट एसोसिएशन' की स्थापना की जो नमक व्यापारियो के सामुहिक हितो का ध्यान रखती थी। पचपदरा में जैन देरासर व क्रिया भवन के निर्माण का निर्णय भी महत्वपूर्ण है जो बहुत बड़ी लागत से बने हैं, इस धार्मिक कार्य में आपने सभी प्रकार से समर्थन दिया।

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ से आपका सबध 1943 से हुआ। आप उनकी कार्य पद्धति और निस्वार्थ भाव की राष्ट्र सेवा से प्रभावित हुए। उनके विभिन्न कार्यक्रमो में भाग लेते रहे तथा पिछले लगभग 20 वर्ष से आप बाडमेर जिला के जिला सघ चालक हैं।

इनके जीवन का घटना क्रम यह स्पष्ठ बताता है कि सार्वजनिक जीवन मे यह इतने सेवा-लीन रहे कि स्वय का कोई विशेप कारोबार जीवन भर नही कर सके। विशाल पैतृक सम्पति भी इसी दौड-भाग में समाप्त करते रहे। अत्यन्त छोटे काल का इनका भेलसा में दुकान का कारोबार, मीरपुर में विनोलो का धधा तथा सांभर का नमक कारोबार भी उचित देखरेख और समय देने के अभाव से हानि को ही प्राप्त हुए।

जीवन भर सेवा कार्यों में लगे रहने मे जो अनुभव अर्जित किए उनका लाभ आज के सभी कार्यकर्ता परामर्श प्राप्त कर लेते रहते हैं। सेठजी का जीवन ज्ञान तथा जन-सेवा की खुली पुस्तक बन गया है।

परिजन

श्री सेठ गुलाबचन्दजी के चार पुत्र हैं व चार पुत्रिया थी। वर्तमान मे सेठजी के पुत्रियो की वश-परम्परा से पाचवी पीढी का दोहित्र है व पुत्रों की वश परम्परा में चौथी पीढी चल रही है। वास्तव मे बहुत कम लोगों को अपने सामने ऐसी वश परम्परा देखने का सौभाग्य मिलता है।

सेठजी के चारो पुत्र व पौत्र शिक्षित व सार्वजनिक क्षेत्र मे अत्यन्त उत्साह से काम करने वाले हैं। सेठजी सहित पुत्र-पुत्रो की सक्रिय शृंखला 21 व्यक्तियों की बनती है। जिसमें से अपने छोटे पुत्र से पौत्र प्रकाश के आकस्मिक निधन से अब यह संख्या 20 व्यक्तियो की है।

सेठजी की धर्म-पत्नि स्वर्गीय श्रीमती केसरदेवी एक अत्यत विदुषी व सात्विक विचारो की महिला थी। जिन्होने आयुभर सेठजी के कार्यो मे प्रोत्साहन ही दिया। जो व्यक्ति वर्षो सार्वजनिक कार्यों मे अपनी सम्पत्ति लुटाते हुए तल्लीन रहता हो उसे अपने गृहणी की तरफ से ऐसा सहयोग मिलना भाग्यशालीनता ही कही जायेगी। सेठजी का विवाह मध्यप्रदेश के बेतूल जिले के बदनौर नामक कस्बे मे नाग सेठिया श्री मुलतानमलजी के पुत्र दीपचन्दजी की पुत्री से हुआ व श्रीमती केसरदेवी की छोटी बहन मध्यप्रदेश बड़वाह शहर के सुराणा केसरीमलजी को ब्याही थी। जिनके पुत्र श्री सौभागचन्दजी व शान्तिलालजी बड़वाह के सार्वजनिक जीवन में अग्रणी हैं। श्रीमती केसर देवी का स्वर्गवास १ जनवरी 1933 को हुआ।

सेठजी के बड़े भ्राता छोगालालजी की पुत्री पानकवर भोपाल में श्री सिरेमलजी भण्डारी से ब्याही थी। श्री सिरेमलजी ने जीवन भर अखाडे चलाना, औषधालय चलाना इत्यादि सार्वजनिक कार्य अत्यन्त रुचि से किये व अभी भोपाल के अस्पताल में एक वार्ड का निर्माण उनके द्वारा करवाया गया है। भोपाल का भण्डारी परिवार वहा के सार्वजनिक जीवन में बहुत अग्रणी है। सतान के अभाव मे अपने भ्राता के पुत्र को गोद लिया है।

श्री छोगालालजी के पुत्र केसरीमलजी की अल्प आयु मे मृत्यु हो गयी व उनके पुत्र नरसिंगदासजी ने पचपद्रा में प्याऊ का भवन बनवाया है व यदा-कदा शुभ कार्यो मे व्यय करते हैं। सेठजी के छोटे भाई रतनचदजी को अपने चाचा बालीदासजी को गोद दिया गया जिनके पुत्र मिश्रीमलजी व पौत्र भवरलालजी बाकरा मे व्यापाररत हैं।

बड़े पुत्र श्री लक्ष्मीचन्द सालेचा

सन् 1915 मे भोपाल मे जन्मे श्री लक्ष्मीचंद सालेचा अत्यत शात व हसमुख प्रवृति के व्यक्ति हैं, आपने सरदार हाई स्कूल से सन् 1937 मे अपना अध्ययन समाप्त कर पचपद्रा मे रहना शुरु किया। पचपद्रा में श्री सुधार समिति मे सहमत्री (1938-41) व लोक परिषद के मंत्री (1940-41), शिक्षक अभिभावक सघ के अध्यक्ष (1944-45) मारवाड चैम्बर आफ कामर्स की पचपद्रा शाखा के सयोजक (1948-55) व अन्य सामाजिक धार्मिक सस्थाओ के सक्रिय कार्यकर्ता रहे। पचपद्रा के जैन देरासर के निर्माण के धन सग्रह मे आपके प्रयत्न सराहनीय रहे हैं। जैन मदिरों मे पूजा प्रतिक्रमण इत्यादि मे आप विशेष रुचि लेते हैं व ये सभी आपको कठस्थ हैं।

आपका प्रथम विवाह श्री गेबीरामजी चाँदमलजी चौपडा के यहा व द्वितीय विवाह श्री केसरीमलजी मागीलालजी चौपडा के यहा हुआ। आपके पुत्र धेवरचदजी व पुत्री कमला प्रथम धर्म-पत्नि से व भवरलालजी, पूनमचदजी, मैना, प्रेम व मजू द्वितीय पत्नि से है।

श्री धेवरचन्दजी सालेचा

श्री धेवरचन्दजी बलारी में लोह रतन का कार्य करते है। बलारी के हर सार्वजनिक कार्य में अग्रणी रहते है। इस समय हम्पी के भद्रमुनि आश्रम के सयुक्त मत्री हैं। इनका विवाह श्री मिश्रीमलजी

तख्तमलजी गोठी, पॉयलो वाले के यहा हुआ व इनके दो पुत्र अशोक व महेन्द्र हैं व दो पुत्रिया उगम व सुषमा हैं। वडी पुत्री उगम का विवाह अजीत के श्री लक्ष्मीचदजी भुरट के पुत्र प्रकाशचदजी से हुआ है।

श्री लक्ष्मीचन्दजी की बडी पुत्री–

सौ कमला सिवाना निवासी श्री मानमलजी छाजेड के पुत्र श्री सुमेरमलजी बलारी वालो को व्याही है जिनकी दो पुत्रियो मे से सौ का किरण आहोर निवासी श्री जुगराजजी के पुत्र श्री मिलापचन्दजी से व्याही है। दूसरी पुत्री ललिता व पुत्र श्री राजेन्द्र है।

दूसरी पुत्री सौ कॉं मैना करमावास निवासी श्री गुणेशमलजी के पुत्र वाडमलजी भसाली को व्याही है व उनके चार पुत्र व दो पुत्रियाँ हैं।

तीसरी पुत्री प्रेम का सम्वन्ध ममदडी के श्री हरकचन्द जी के पुत्र श्री कॉंतिलालजी से हुआ है व छोटी पुत्री मजू है।

श्री अमीचन्दजी जैन,

सन् 1923 मे सेठ हजारीमलजी के सालेचा परिवार मे छियालीस वर्ष वाद जन्मने वाले प्रथम पुत्र श्री अमीचदजी ने सन् 1945 मे जसवत कालेज जोधपुर से स्नातक की परीक्षा पास कर 1947 मे नागपुर विश्व-विद्यालय से विधि की डिग्री ली, सन् 1942 से आप राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ मे सक्रिय रूप से भाग लेते थे व मेरठ व अलवर से शिक्षण प्राप्त कर कुछ काल के लिए सघ के विस्तारक रहे। जव जोधपुर मे वकालात प्रारम्भ की तो राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के प्रथम प्रतिवध के समय सत्याग्रह करने से आपको छ मास के कठोर कारावास का दड मिला, कारावास मे प्रमुख नेतृत्व वर्ग के होने से काल कोठरी इत्यादि की भी सजा दी गयी। जेल जीवन समाप्त करने के पश्चात् आपने वालोतरा मे वकालत प्रारम्भ की व इसी समय जनसघ की स्थापना पर वाडमेर जिले के जनसघ के मत्री भी रहे कुछ समय तक वाडमेर जिला के राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के जिला कार्यवाह के रूप मे भी कार्य किया। आप वाडमेर जिला इडस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष भी थे व वाडमेर खनिज उद्योग के अध्यक्ष भी रहे इसी वीच अनेक वार जनसघ आन्दोलनो मे जेल की यात्रा भी की।

सन् 1965 की लडाई मे आप वाडमेर शहर के नागरिक रक्षा कार्यों मे जुट गये व रात-रात पहरे पर लगना, सैनिको को स्वागत के साथ मोर्चों पर भेजना, मोर्चो से आने वाले सेनिको के स्वागत के लिए धन एकत्र करना इत्यादि मे तो आप प्रमुख रूप से भाग लेते ही थे पर युद्ध के समय शहर पर वम वर्षा की घडियो मे भी नागरिक कार्यों का सचालन करते। युद्ध समाप्ति पर चौहटन क्षेत्र मे जव मुजाहित अन्दर तक घुस आये थे तो आपने सैनिको के साथ मोर्चों तक जाकर भी उन्हे आवश्यक सुविधाए प्राप्त करवाने हेतु सहयोग दिया।

सन् 1969 मे जव तिलवाडा के पास एक रेलगाडी वाढ मे घिर गयी थी तो आपने कलेक्टर महोदय के साथ आकर पचपदरा इत्यादि स्थानो से सहयोग व्यवस्था मे मदद की।

अनेक अकालो के समय में वाडमेर क्षेत्र के गावो मे घूम-घूम कर अकाल प्रभावित लोगो को सहायता पहुँचवायी।

हुआ, जिनके एक पुत्र व पुत्री हैं। श्री पारसमलजी गुजरात विश्व विद्यालय के गोल्ड मेडलिस्ट व चार्टर्ड एकाउ-टेंट हैं व अपना स्वय का अहमदाबाद मे आडिट व कर सलाहकार का फर्म चलाते है।

द्वितीय पुत्री सरला का व्याह सिवाना निवासी श्री मिश्रीमलजी बागरेचा के पुत्र श्री कपूरचदजी से हुआ जो गुजरात मे वापी, महाराष्ट्र मे बम्बई व पाली-मारवाड मे अनाज व कपडे का थोक व्यापार व उद्योग का कार्य करते है।

श्री नरपतचदजी सालेचा –

आप श्री अमीचदजी के ज्येष्ठ पुत्र है। बी काम के पश्चात बाडमेर मे खनिज उद्योग का कार्य देख रहे है। बाडमेर मे विद्यार्थी परिषद के नेता, कालेज यूनियन मे अग्रणी, राष्ट्रीय स्वय सेवक स घ मे अनेक पदो पर, विश्व-हिन्दू परिषद के जिला म त्री रहे हैं व वर्तमान मे जिला जनता युवा मोर्चा के पदाधिकारी है। सन् 1965 व 1971 के युद्ध मे भी नरपतचन्दजी ने भी नागरिक सुरक्षा मे अत्यन्त तत्परता से भाग लिया व अकाल राहत-कार्यों व चुनावो मे भी सदा सक्रिय रहे। बाडमेर खनिज उद्योग सघ व बाडमेर उद्योग सघ मे भी बहुत रुचि से भाग लेते हैं। मारवाड चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज के एक वर्ष कार्य कारिणी के सदस्य भी रहे। आपके दो पुत्र व दो पुत्रिया हैं। आपका विवाह बाडमेर श्री राणामलजी चौपडा की पौत्री व श्री भवरलालजी की पुत्री से हुआ है।

श्री गणपतचन्दजी सालेचा –

श्री गणपतचदजी सालेचा जो कि अमीचन्दजी के द्वितीय पुत्र हैं, आपने कालेज अध्ययन छोड अहमदाबाद मे कपडे का व्यवसाय शुरू किया और अहमदाबाद के अपने कार्य क्षेत्र मे राजनैतिक व सामाजिक कार्यों मे अत्यन्त रुचि लेते हैं, राष्ट्रीय सेवक सघ के भी आप अच्छे कार्यकर्ता हैं। अहमदाबाद की जनता युवा मोर्चा के प्रदेश-कोषाध्यक्ष हैं। आपका विवाह पचपदरा निवासी श्री वगसीरामजी चौपडा की सुपुत्री से हुआ व आपके दो पुत्र हैं।

श्री गौतमचदजी सालेचा –

आप बाडमेर के डिग्री कालेज से स्नातक हैं व राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ मे भी सक्रिय हैं। विद्यार्थी परिषद के जिला सयोजक हैं। आपातकाल मे काफी समय भूमिगत रहने के बाद 1975 के दिसम्बर मे जोधपुर से सत्याग्रह कर जेल गये थे। इनका सम्बध बालोतरा के श्री हीरालालजी जीरावाला के यहा हुआ है।

श्री शांतिलालजी सालेचा –

अभी बाडमेर मे हायर सैकण्डरी मे अध्ययन कर रहे हैं व राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के कार्यकर्ता हैं।

श्री चंपालालजी सालेचा –

आप सेठ जी के तृतीय पुत्र हैं। आपका जन्म 1927 मे हुआ। सरदार हाई स्कूल से मैट्रिक, जसवन्त कालेज से इटर टावर कालेज आफ कामर्स बम्बई से मैक्ट्रीयल प्रेक्टीस एण्ड एकाऊंटस का डिप्लोमा व पजाब विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी से हिन्दी मे प्रभाकर की उपाधि ली। आपका विवाह बालोतरा के श्री हस्तीमलजी लूणियां के यहा हुआ। सन 1942 से राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के स्वयसेवक बने।

जोधपुर मे सघ में सक्रिय भाग लेते हुए आपने 1946 मे पचपदरा मे शाखा की स्थापना की, 1947 मे शरणार्थियो की सेवा कार्यो मे जुटे व 1948 मे पचपदरा मे जनाधिकार समिति की स्थापना की। 1948 के दिसम्बर मे सघ के प्रतिबंध के विरुद्ध बालोतरा से पाच सत्याग्रहो के जत्थे का नेतृत्व करते हुए सत्याग्रह किया जिसके फलस्वरूप छ माह का सश्रम कारावास व पाच सौ रुपये जुर्माने की सजा मिली व पैरो मे बेडियो व हाथो मे हथकडिया डालकर जोधपुर लाया गया। सजा समाप्ति के बाद पचपदरा व बालोतरा में जनता ने अत्यत उत्साह से स्वागत किया, जिस स्वागत समारोह में वर्तमान केन्द्रीय राज्य मत्री श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल भी साथ थे। सन् 1951 मे आपको पचपदरा पचायत का सरपच चुना गया।

1946 से 1951 तक आप पचपदरा की श्री लक्ष्मी साल्ट ट्रेडिंग कम्पनी लि के सेक्रेटरी थे। सन् 1951 में ही आपने मारवाड के नमक का ठेका लिया व नमक की आढत का कार्य प्रारम्भ किया पर अल्पकाल मे ही उस कार्य को छोड बालोतरा मे नीलकठ स्टोर्स के नाम से दवाइयो की दुकान प्रारम्भ की व छोटे स्तर पर दवाइयो का निर्माण भी प्रारम्भ किया। इसी काल मे आपने अपने लघु भ्राता के साथ मिलकर जो उस समय पिलानी की बिडला कालेज मे भेषज विज्ञान का अध्ययन कर रहे थे, नमक के शेषांशो व ब्राईन से सोडा बनाने व अन्य लवणो के निर्माण की योजना नीलकठ कैमिकल वर्क्स के नाम से बनायी इस योजना मे श्री ए के राय जो इस समय बाडमेर मे जिलाधीश थे ने सुझाव दिया कि इस उद्योग मे बिजली कच्चे माल का काम करेगी जो उस समय न तो बाडमेर जिले मे उपलब्ध थी और न अनेक वर्षो तक उसकी वहा कोई सम्भावना थी अत उस योजना का आपको स्थगित कर देना पडा।

इसके पश्चात ही सन 1954 मे आपने थोब मे छार्गेली के रुप मे रवेदार कैलसियम सल्फेट के खनिज सेलेनाइट दोहन के हेतु आवेदन दिया। मारवाड मे व्यापारिक परिवार से खनिज क्षेत्र मे प्रवेश करने का यह लगभग पहला प्रयास था इस सेलेनाइट का लीज आपको 1958 मे मिला पर इसी बीच आपने व बडे भ्राता श्री अभीचदजी ने बैन्टोनाइट के बाडमेर मे लीज लेने का निश्चय किया व उस हेतु आवेदन दिये पर राज्य सरकार ने स्थिर भाटक के उच्चतम राशि के बद निवेदनो पर बैन्टोनाइट के लीज देने का निश्चय किया व 1956 से पूर्व मे इनकी फर्म नीलकठ कैमिकल वर्क्स के नाम मे आकली हाथीसिह की ढाणी व बिसाला के बैन्टोनाइट के लीज स्वीकृत हुए राजस्थान के बैन्टोनाइट के ये प्रथम लीज थे व भारत मे बैन्टोनाइट लगभग एक अनजाना खनिज था। 1957 मे बैन्टोनाइट का पल्वराईजीग प्लाट लगाया गया जिसे बाडमेर जिले का प्रथम उद्योग कहा जा सकता है। जो नमक कलमीसोरा, आटे की चक्कियो व तेल के घाणो मे आगे बढ कर सौ हार्स पावर से अधिक की अश्व शक्ति वाला विधिवत उद्योग था।

बैन्टोनाइट के सम्बन्ध में उनके उपयोग हेतु कई टेक्नीकल पेपर्स इस संस्थान द्वारा जारी किए गये व आज भी इस खनिज के सम्बन्ध में जो तकनिकी जानकारी इस सस्थान के पास है भारत में अन्य जगह नही। जिससे लगभग दो सौ विदेशी पुस्तकें व पेपर्स बेन्टोनाईट की खनिज विशेषताओ की जानकारी उद्योगो मे उपयोग का स्वरूप आदि शामिल हैं। बैन्टोनाईट के भौतिक व रासायनिक खाद के सभी उपकरण सस्थान की प्रयोगशाला में है। बैन्टोनाइट के एक्टीवेशन प्रोसेसिंग की फैक्ट्रिया जोधपुर व बाडमेर में चल रही हैं व इसी की एक फैक्ट्री जोधपुर में निर्माणाधीन है।

बैन्टोनाइट के अतिरिक्त सेलेनाइट पर आधारित औषध उपयोग व रसायन उपयोग में आने वाले उच्चकोटि के प्लास्टर आफ पेरिस के निर्माण की भी एक फेक्ट्री जोधपुर में चल रही है जो विश्व के चोटी के प्लास्टर आफ पेरिस के उपयोग कर्त्ताओं को यह उपलब्ध करवाते हैं ।

श्री चम्पालालजी जोधपुर में खनिज व रसायन उद्योग के सम्बन्ध मे एक अधिकृत जानकार व्यक्ति के रूप में समझे जाते हैं । उनके विशिष्ठ शोधपत्रो राजस्थान बैन्टोनाइट-टेक्नीकल एण्ड मार्केटिंग आसपेक्टस तथा पत्रों में 'मिनरल वेल्थ ओफ वेस्टर्न राजस्थान-इन्फ्रास्टेक्चर एण्ड लीगल आसपेक्ट्स' महत्वपूर्ण हैं तथा अन्य अनेक लेख विभिन्न पत्रो व स्मारिकाओं में प्रकाशित हो चुके है ।

सन् 1951 मे पचायत सरपच बनने के बाद 1954 में सिवाना में बाडमेर जिले के प्रथम पच सम्मेलन की अध्यक्षता की सन् 1956 मे तहसील पचायत पचपदरा के सरपच बने । 1958 मे पचायत समिती बालोतरा वित्त कर प्रशासन स्थायी समिति के अध्यक्ष रहे । 1961 से 1966 तक पुन तहसील पचायतो के समाप्त होने पर पचपदरा पचायत के सरपच रहे 1967 मे पचपदरा के विधान सभा क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लडा । 1972 के लोक सभा चुनाओ के समय श्री भैरोसिंहजी शेखावत वर्तमान मुख्य मत्री राजस्थान के बाडमेर क्षेत्र से लोक सभा चुनाव मे बालोतरा सिवाना, पचपदरा व सिन्धरी का चुनाव सचालन कर रहे थे । तथा अगले वर्ष के विधान-सभा चुनाव मे श्री गुमानमलजी लोढा व श्री खिवराजजी कच्छवाह के चुनाव प्रचार कार्य को सम्भाला ।

आपात काल मे भूमिगत सहयोग देते हुए लोक सभा व विध न सभा चुनाओ में भी सक्रिय सहयोग दिया ।

सन् 1951 की जनसघ की स्थापना के समय से ही जनसघ के विभिन्न कार्यों मे सक्रिय भाग लेते रहे, अनेक बार अकाल समितियो का सयोजन किया, बाडमेर जिले के जिला विकास समिति में सक्रियता से भाग लिया, हिन्दू ट्रस्ट खिल नाकोडा तीर्थ के विधान व व्यवस्था इत्यादि में श्री लक्ष्मणदासजी बोहरा को प्रमुख रूप से सहयोग दिया व राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के बाडमेर जिला के जिला कार्यवाह जोधपुर मे प्रभात विभाग के कार्यवाह के रूप मे सक्रिय रहे ।

विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना के समय परिषद के आप नगर मत्री थे व परिषद् की गतिविधियो मे समय समय पर योग देते हुए आप इस समय जोधपुर जिले के जिला अध्यक्ष व परिषद् द्वारा सचालित पिछडे वर्ग हेतु मसूरिया बाल प्राथमिक पाठशाला के उपाध्यक्ष हैं । सन् 1977 मे विश्व हिन्दू परिषद् के विभाग कार्यकर्ता सम्मेलन के आप सयोजक थे ।

सिवांची क्षेत्र की ओसवाल न्यातो पचायत मे आपने सदा मे अत्यन्त सक्रियता से भाग लिया । न्याति के पाच पचो की अपील व्यवस्था मे साथ जुट कर निर्णयो में सहयोग दिया । न्याति की सघ सभा मे अनेक सुधार-वादी निर्णय करवाये । जडाव सबधी विवाद मे पिता श्री गुलाबचदजी को विषय के हल करवाने मे सहयोग दिया । श्री सपतमलजी भण्डारी के नेतृत्व मे पच फेसले के समय न्याति धडो के एक पक्ष का विषय प्रतिपादन आपके नेतृत्व मे हुआ उसके पश्चात् सिवाची के ऐतिहासिक सुधारवादी अधिवेशन मे भाग लेकर अनेक प्रगतिशील सामाजिक निर्णय लेने मे अग्रणी सहयोग दिया ।

मारवाड चैम्बर आफ कॉमर्स के सन् 1961 से कार्यकारिणी के सदस्य व 1963 से मानद मंत्री के रूप मे कार्यशील रहे। चैम्बर के इतिहास मे 15 वर्ष तक मानद मंत्री के रूप मे लगातार कार्य करने वाले प्रथम व्यक्ति हैं जो आज चेम्बर के उपाध्यक्ष हैं। इसी कार्यकाल मे चैम्बर का नया नाम करण मारवाड चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज बना व नया विधान बनाया गया जो पूर्ण रूपेण व्यापार एव उद्योग व जोधपुर विभाग क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाला विधान था।

चैम्बर मानद मत्री के नाते आपने चैम्बर बुलेटीन का सम्पादन किया जो पहले एक मासिक पत्रिका के रूप मे शुरू हुई व तत्पश्चात् साप्ताहिक पत्रिका के रूप में निकलती रही।

चेम्बर प्रतिनिधि के रूप में पश्चिम रेलवे की अजमेर विभागीय उपभोक्ता सलाहकार समिति पर रहे तथा उत्तर रेल्वे की जोधपुर विभागीय सलाहकार समिति पर अनेक सत्रों तक रहे। 1964 से अब तक लगभग लगातार चेम्बर का प्रतिनिधित्व उत्तर रेल्वे की सलाहकार समिति पर काय अत्यन्त कुशलता से कर रहे हैं व रेल्वे की जोनल एमीनीटीज कमेटी के भी सदस्य हैं।

राजस्थान प्रदेश बिक्री कर सलाहकार समिति पर भी पिछले अनेक वर्षो से आप चैम्बर का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं व जोधपुर खण्ड बिक्रीकर सलाहकार समिति तथा जोधपुर इन्कम टैक्स सलाहकार समिति, के सदस्य रहे हैं इसके अतिरिक्त जोधपुर श्रम नियोजन सलाहकार समिति, उद्योग विभाग की कच्चा माल वितरण सलाहकार समिति, जिलाधीश के अन्तर्गत उद्योग समिति 1965 व 71 के लडाई के समय नागरिक समिति, जोधपुर क्षेत्र की आर एण्ड डी समिति व अन्य अनेक औद्योगिक समितियो की आपने सदस्यता की है।

जोधपुर में अखण्डित हाईकोर्ट हेतु सन् 1968 से 1975 तक बने अनेक नागरिक सघर्ष समितियो के आप मत्री रहे जोधपुर के भूतपूर्व महाराजा श्री गजसिहजी के लन्दन अध्ययन समाप्त करके आने पर समिति के आप सयोजक व मत्री थे। चु गीकर के निवारणार्थ चु गी कर की वृद्धि मे सशोधन के हेतु बनी 1963 से 76 तक की सभी समितियो मे आप सयोजक थे।

भारतीय जनसघ द्वारा आयोजित सन् 1965 से 75 तक के आन्दोलनो में हर बार भाग लिया व दो बार अल्पकाल के लिए जेल गये। जनता पार्टी के निर्माण के पश्चात फलौदी के उपचुनावो हेतु बनी सहयोग सम्पर्क समिति के व समन्वय समिति के सयोजक व मत्री मनोनीत किये गये व दक्षिण भारत की जनता पार्टी की तुफान समिति के सयोजक मनोनीत किये गये।

सन् 1976 में आपके संयोजन मे क्लेमिनरलस जिप्सम लाइम स्टोन आफ वेस्टर्न राजस्थान के विषय पर एक विचार गोष्ठी मारवाड चैम्बर आफ कामर्स के तत्वावधान में हुई जो राजस्थान मे अपने ढंग की पहली थी। इसमें लगभग 30 शोध पत्र पढे गये व लगभग 250 प्रतिनिधियो ने भाग लिया जिनमें 20 सरकारी विभाग व 25 राजस्थान के बाहर के प्रतिनिधि थे। राजस्थान के हर विभाग के खनिज उदयमियो का इसमें प्रतिनिधित्व था।

जोधपुर के आदर्श शिक्षण सस्थान जिसके अन्तर्गत इस समय 1700 छात्रो को शिक्षण देने वाले तीन शिक्षण सस्थान चल रहे हैं उनके आप अध्यक्ष हैं। प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र जोधपुर के लगभग तीन वर्षों तक आप

अध्यक्ष रहे। सिवान्ची गेट गौशाला के आप सरक्षक है व दो वर्षो तक कोषाध्यक्ष रहे राष्ट्र भाषा आन्दोलन समिति के अनेक वर्षों तक कार्यकारिणी के सदस्य व दो वर्ष तक उपाध्यक्ष रहे।

जोधपुर इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन के पिछले अनेक वर्षो से कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं तथा एक वर्ष उसके उपाध्यक्ष रहे दो वर्ष राजस्थान चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज के कार्यकारिणी के सदस्य रहे।

इन्डस्ट्रीज एसोसिएशन से सहयोगी सस्थान इन्डस्ट्रीयल कोपरेटिव सोसाइटी के भी आप निर्देशक मण्डल में हैं लाइन्स क्लब आफ जोधपुर के आप उपमत्री, मत्री व उपाध्यक्ष के पद पर रहे तथा उसकी अनेक समितियो में आप अध्यक्ष तथा सदस्य हैं। जोधपुर के कोपरेटिव बैंक में भी आपको निर्देशक मडल में मनोनीत किया है।

भगवान महावीर 2500 वी निर्माण शताब्दी समारोह की बाडमेर जिला की सरकारी स्तर पर व गैर सरकारी समितियो में आप सदस्य थे व जोधपुर की नगर समितियो में भी आप सदस्य थे। इसके अतिरिक्त बाड़मेर, बालोतरा, पचपदरा, जोधपुर राजस्थान की अनेक सस्थाओ व समितियो में आप सदस्य व पदाधिकारी हैं।

आपको सामाजिक कार्यो मे पर्याप्त रूचि तो हैं ही लेकिन आपकी लेखनी मे भी काफी बल है। विभिन्न विषयो पर आपने अनेक लेख लिखे हैं। इतिहास व लोक साहित्य मे आपकी बहुत रूचि है व धार्मिक इतिहास की भी काफी जानकारी है।

इतिहास प्रसिद्ध पचपदरा के खारवालो के नमक अधिकार सम्बन्धी हाईकोर्ट रिट मे आपने नमक उद्योग इतिहास सम्बधी विस्तृत जानकारी व सहयोग वकील वर्ग को दिया था व पचपदरा व मारवाड के नमक क्षेत्रो के बारे मे आपकी साधिकार वैज्ञानिक विचार व जानकारी है। पचपदरा के नमक उत्पादको को आपसे सदैव बहुत सहयोग व आत्मीयता मिलती रही है।

आपका विवाह बालोतरा के आसोत्रा के निवासी श्री हस्तीमलजी लूणिया के वहा हुआ व आपकी छः पुत्रियो मे से प्रथम सौ०लीना अजित के बम्बई निवासी श्री सरदारमलजी के पुत्र अमृतराजजी को व्याही है द्वितीय पुत्री सौ पुष्पा पचपदरा के श्री मोहनलालजी मदाली के सुपुत्र श्री केवलचदजी मदाणी, सौ शकुन्तला ओमप्रकाश चौपडा एण्ड क० के श्री हरकचन्दजी चौपडा के सुपुत्र श्री केवलचदजी को व्याही है। चौथी पुत्री सो सुश्री शाति बी ए का सबध सिवाना निवासी भसाली श्री हरकचन्दजी के सुपुत्र भीमराजजी के साथ हुआ है। पुत्री जोत्सना अध्ययन कर रही है।

ज्येष्ठ पुत्र रगलालजी –

जो कि उदयपुर विश्वविद्यालय से ज्योलोजी के स्नातक हैं राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के जोधपुर के मण्डल कार्यवाह व जोधपुर के युवको के एन्टर प्रिनियर्स फोर्म मे भी सक्रिय हैं। प्राकृतिक जीवन पद्धति व प्राकृतिक जीवन यापन मे बहुत रूचि लेते हैं व विद्यार्थी जीवन मे विद्यार्थी परिषद मे सक्रिय रहे। जनता पार्टी को समय समय पर सक्रिय योगदान देते रहे। श्री रगलालजी का विवाह जसोल के श्री जसराजजी कोठारी के यहा हुआ व उनके दो पुत्रिया व एक पुत्र है।

द्वितीय पुत्र श्री हुरक चंद जी सालेचा –

श्री चम्पालालजी के द्वितीय पुत्र श्री हुरकचदजी पारिवारिक सस्थान मे सेलेनाइट के खनन व प्लास्टर के उत्पादन का कार्य देखते हैं आप भी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ में सक्रिय हैं तथा जनता युवा मोर्चा के सरदारपुरा क्षेत्र के मत्री थे। गत लोकसभा व विधान सभा चुनावो में उद्योगिक क्षेत्र मे आप देख रहे थे। राष्ट्र भाषा आन्दोलन समिति मे भी सक्रियता से भाग लिया व लेते थे। आपका विवाह पाल्ल के श्री बादरमल जी मेहता के सुपुत्र श्री घेवरचद जी के यहा हुआ है जो जोधपुर मे लकडी का व्यापार करते हैं। आपके एक पुत्री व दो पुत्र हैं।

तृतीय पुत्र नदलाल जी सालेचा –

श्री चम्पालालजी के तृतीय पुत्र जो कि जोधपुर विश्वविद्यालय के विधि स्नातक है। आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ की एक शाखा के मुख्य शिक्षक हैं व विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी परिषद में सक्रिय थे व विश्व हिन्दू परिषद मे भी सक्रियता से कार्य करते रहे। आपका विवाह समदडी के चपालाल जी भसाली जिनकी जोधपुर में ड्रोवेक्स के नाम से फैक्ट्री है व लाइफ इन्शोरेन्स के प्रमुख एजेन्ट के रूप में जोनल मेनेजर्स क्लब के सदस्य हैं की पुत्री से हुआ व आपके एक पुत्र व एक पुत्री है।

श्री सुरेन्द्रजी सालेचा –

श्री चम्पालाल जी के चौथे पुत्र जोधपुर विश्व विद्यालय में बी का म आनर्स के छात्र हैं। व राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की एक साय शाखा के कार्यवाह तथा विद्यार्थी परिषद के सक्रिय कार्यकर्ता है।

श्री चम्पालालजी के पाचवे व छठे पुत्र देवेन्द्र व उपेन्द्र हायर सैकण्डरी व आठवी में अध्ययन कर रहे हैं।

श्री छगनराजजी सालेचा –

श्री छगनराजजी सालेचा का जन्म सन् 1933 मे पचपदरा में हुआ व प्राथमिक शिक्षा पचपदरा एव साभर में, तत्पश्चात् महिला बाग स्कूल व सरदार हाई स्कूल से मैट्रिक पास की। तत्पश्चात् पिलानी के बिडला कालेज आफ साईस से भेपज विज्ञान से आई फार्म का डिप्लोमा व बी फार्म की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् औषधि निर्माण हेतु बनारस व जयपुर की सस्थाओ में चार वर्ष तक कार्य किया। उस समय में अनेक विटामिन की दवाइयों के फार्मूले आपने स्वय बनाये। तथा सन् 1959 से पारिवारिक सस्थान नीलकठ केमिकल वर्क्स के सारे तकनीकि क्षेत्र सम्भालने लगे। साथ ही कई वर्षो तक जोधपुर में राजस्थान फार्मेसिया, टैक फार्मास्युटिकल वर्क्स के मेन्युफैक्चरिंग कैमिस्ट व टैक्नीकल कन्सल्टेंट रहे।

पिलानी, बनारस व जयपुर मे आपने राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ व जनसघ के विभिन्न पदो पर कार्य किया व जोधपुर मे भी सघ के विभिन्न उत्तरदायित्वो को सभालते हुए वर्तमान मे जिला कार्यवाह का उत्तरदायित्व सम्भाल रहे हैं।

सघ तृतीय वर्ष का शिक्षण वर्ग भी आपने पूर्ण किया है। जोधपुर जनसघ के नगर मत्री के नाते आपने कई वर्ष कार्य किया व हर वर्ष चुनाव मे सरदारपुरा क्षेत्र के चुनाव व्यवस्था का भार आपके ऊपर रहा है। 1948 के सघआन्दोलनो में भी भाग लिया । जनसघ कार्यकर्ता के नाते रेल भाडा विरोधी आन्दोलन, रेल चक्का जाम

आन्दोलन, महगाई विरोधी आन्दोलन, व शिमला समझौता विरोधी आन्दोलन में गडरारोड पर श्री लालकृष्णजी अडवानी के नेतृत्व में, गिरफ्तारी दी थी ।

सन् 1965 में दिल्ली के कच्छ समझौते विरोधीप्रदर्शन मे भी भाग लिया था । सन् 1965 व 71 की लडाई के समय जोधपुर में नागरिको के उत्साह वर्धन में सक्रियता से भाग लिया तथा सैनिको हेतु रक्तदान मे युवको को तैयार करने मे सक्रिय योग दिया, तथा जनसघ द्वारा सचालित जोधपुर स्टेशन पर सैनिको हेतु कैंटीन के प्रबन्ध मे अग्रणी थे ।

जनता पार्टी के निर्माण के बाद अनेक स्थानीय उत्तरदायित्व सम्भालते रहे व विश्व हिन्दु परिषद मे भी विभिन्न कार्यक्रमो मे अनेक प्रकार के उत्तरदायित्व सम्भाले ।

रसायन उद्योग और औषधि निर्माण उद्योग पर तो आपका विशेष अधिकार है ही पर खनिज मे भी विशेष रुचि के कारण कलकत्ता के जियोलोजिकल माईनिग एण्ड मेटेलिजीकल सोसायटी ने आपको फैलो मनोनीत किया आपके आक, सणिया व फ्वी इत्यादि रेगिस्तानी पौधो पर औद्योगिक उपयोग के प्रयत्न चल रहे हैं। तथा नमक के शेवामो के आधार पर कैमिकल्स उत्पादन लाइट-कैलशियम सल्फेट बनाना परशियन गल्फरेड परशियन गल्फरेड आक्साइड समकक्ष रेड आक्साइड बनाने के, ब्लिचिग अर्थ का सस्ता निर्माण इत्यादि लेबोरेटरी परक्षण चल रहे हैं। इनके परिक्षणों हेतु अनेक उपकरण स्थानीय स्थल पर ही तैयार करवाये गये है । राजस्थान बैन्टोनाइट पर अनेक शोध पत्रक भी आपने लिखे है । तथा मारवाड के तू त्रा के बीज व फल पर शोध पत्र लिखा है ।

जोधपुर स्टेशन की स्टेशन कसलटेटिव कमेटी के भी आप सदस्य रहे हैं व मोहल्ले, क्षेत्र व शहर की अनेक सस्थाओ मे आप सम्बधित रहे हैं ।

आपका विवाह जसौल के प्रसिद्ध कोठारी परिवार मे श्री दौलतरामजी की पुत्री से हुआ जिनके पुत्रो का अहमदाबाद व हरीहर मे कपडे का व्यापार है व आपके तीन पुत्र श्री रविन्द्र कुमार, प्रकाश व राजेन्द्र कुमार मे से श्री प्रकाश का केवल 17 वर्ष की आयु 1976 के अप्रेल मे देहावसान हो गया ।

आपकी ज्येष्ठ पुत्री सौ सरस्वती का विवाह कानाना निवासी श्री चम्पालालजी बाफना के सुपुत्र श्री प्रकाशचन्दजी बाफना से हुआ है जिनका बलारी में कपडे का बहुत बडा व्यवसाय है । शेष दोनो पुत्रिया सौ दमयन्ती व सतोष अध्ययन कर रही हैं ।

श्री रविन्द्र सालेचा–

श्री छगनराजजी के ज्येष्ठ पुत्र हैं जो एम काम, विधि व कोस्ट एकाउण्टस के अध्ययन के साथ प्लास्टर फैक्ट्री का कार्य भी देख रहे हैं । अपनी शैक्षणिक प्रतिभा मे प्रथम वर्ष वाणिज्य मे जोधपुर विश्वविद्यालय मे प्रथम रहे । श्री रविन्द्र विद्यार्थी परिषद मे अत्यत सक्रिय रहे व राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ मे भी मुख्यशिक्षक इत्यादि के नाते कार्य करते रहे हैं । 1975 के आपातकाल के प्रथम छ माह मे भूमिगत आदोलन मे सहयोग दे रहे थे व 1975 के दिसम्बर मे सत्याग्रह कर आपातकाल के विरुद्ध गिरफ्तारी दी । इस के फलस्वरुप लगभग ४ माह कारावास मे रहे । जनता युवा मोर्चा मे भी आप सक्रिय हैं इनके लघु भ्राता राजेन्द्र का कालेज मे वाणिज्य क्षेत्र मे अध्ययन चल रहा है । आप भी सघ के सक्रिय कार्यकर्ता हैं ।

सेठ जी के चारो पुत्रियो मे मे एक भी जीवित नही है वडी पुत्री श्रीमती रामप्यारी का व्याह पचपदरा के हीराणी परिवार के सिरेमलजी के पुत्र स्वर्गीय श्री मुकनचदजी से हुआ था जिनके पुत्र श्री शकर लाल जोधपुर मे शिवदास सिरेमल के नाम मे थोक व्यापारी हैं व उनके पाच पुत्र व चार पुत्रिया है ।

श्रीमती रामप्यारी वाई के दो पुत्रियो मे से एक सौ शान्ति पचपदरा के लूकड परिवार मे श्री भवरलालजी खतग को व्याही है । उनके तीन पुत्र व तीन पुत्रिया हैं । सौ शाति की वडी पुत्री पुष्पा मोकलसर निवासी श्री खीवराजजी के पुत्र डूगरचन्दजी को व्याही है जिमका पुत्र सेठजी की वश परम्परा मे पाचवी पीढी का पुष्प है। श्रीमती रामप्यारी बाई की द्वितीय पुत्री सौ मोहनी श्री भवरलालजी ढेलरिया को व्याही जिनका बीकानेर व बम्बई मे कारोवार है व जिनके तीन पुत्र व तीन पुत्रिया है।

सेठजी की दूसरी पुत्री स्व श्रीमती सुन्दर वाई का विवाह राखी के गोटमलजी के पुत्र खीवराजजी से हुआ । सुन्दरवाई के दो पुत्र श्री पारसमलजी और अमृतराजजी है । व एक पुत्री सौ. रेशमीवाई वालोतरा के श्री मिश्रीमलजी के पुत्र श्री रूपचदजी को व्याही है । श्री खीवराजजी के द्वितीय विवाह के पुत्र श्री शातिलालजी, प्रतापमलजी व छ पुत्रियाँ है ।

सेठजी की तीसरी पुत्री श्रीमती भवरीवाई की शादी पचपदरा के निवासी लूकड धोलचदजी के पुत्र केवलचदजी से व्याही जिसका व्याह के थोडे वर्षो पश्चात् ही देहात हो गया । श्री केवलचदजी का दूसरा व्याह सालेचा परिवार मे ही श्री किमनलालजी की पुत्री से हुआ ।

सवसे छोटी पुत्री श्रीमती मूलीवाई का व्याह पचपदरा के निवामी श्री मीठालालजी के पुत्र कानराजजी से हुआ व उनके तीन पुत्र भूपतराज, अशोनकुमार व जसवत कुमार व एक पुत्री सु चद्रा है । श्रीमती मूलीवाई के स्वर्गवास के वाद कानराजजी का व्याह काकरिया नरसिहमलजी की पुत्री मे हुआ ।

इस प्रकार मेठजी के चार पुत्र व चार पुत्रियो के परिवार मे चौथी पाचवी पीढीया चल रही हैं । यह सौभाग्य की वात है कि जिस परिवार मे वे गोद आए थे और जहा आठ पीढी से कोई वटवारा नही हुआ था वहा सेठजी की स्वय की वश परम्परा से सम्वन्वित लगभग ५० परिवार हैं ।
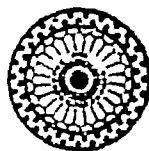
अनन्य सहयोगी श्री प्रतापमलजी मेहता

इस काल मे पचपदरा नगर की विशिष्ठ प्रतिभाग्रो मे से प्रतापमलजी मेहता का नाम सर्वोपरि है। श्री प्रतापमलजी मेहता श्री हजारीमलजी मेहता के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपके दो लघु भ्राताग्रो मे से श्री मीठालालजी जोधपुर मे अनाज मडी के अत्यत प्रतिष्ठित व्यापारी रहे। एव श्री मिश्रीमलजी जोधपुर मे वकालात करते थे। श्री प्रताप मलजी का जन्म सन् 1886 मे पचपदरा मे हुआ था व वयस्क होने पर आपने वालोतरा मे जुडीशियल सुपरिटेंडेंट श्री अम्वाचन्दजी भडारी के पास दीवानी लिपिक का कार्य प्रारम्भ किया। यह कार्य आपने लगभग दस वारह वर्ष तक किया और इसी काल मे जोधपुर मे वकालात की परीक्षा मे सफलता के वाद सन् 1923-24 के आसपास आपने जोधपुर मे वकालत प्रारम्भ की।

श्री प्रतापमलजी मेहता अपने समय के एक आदर्श वकील के रूप मे रहे। ऐसा कहते हैं कि किसी एक जटि मामले मे चीफ जज श्री टोपनरामजी ने यह समझते हुए कि एक हिन्दी जानकार वकील उनकी निश्चित कानूनी राय को कैसे चुनौती दे सकता है उनकी वात पर ध्यान नही दिया। आपके अत्यन्त नम्रता-पूर्वक विभिन्न केसेज लॉ उनके आगे करते हुए निवेदन किया "श्रीमान मैं आपसे मेरी वात स्वीकारने का आग्रह नही करता मैं तो केवल मेरे द्वारा प्रस्तुत तर्को के योग मे सवधित केसेज लॉ को मात्र देखने का आग्रह कर रहा हूँ," ज्योही विद्वान जज ने वे सारे केसेज देखे, वे इनकी प्रतिभा मे चकित रह गए व उस मामले का निर्णय तो इनके पक्ष मे हुआ ही, भविष्य मे चीफ जज महोदय उनके तर्को को अत्यन्त ध्यान से सुनते थे।

श्री प्रतापमलजी मेहता सत्यवादी वकील के रूप मे प्रसिद्ध थे। यदि उन्हें ज्ञात हो जाता कि उनके फरीक ने उन्हें गलत सूचना दी है तो वे जज के सम्मुख उसे स्वीकार कर अपनी हार मान लेते। अनेक व्यक्ति उनकी सत्यवादिता से प्रभावित थे। अनेको जागीरदारो व राजघराने के लोगो के वे स्थायी वकील थे। वार एसोसिएशन मे उनकी वहुत इज्जत थी। वे कई वर्षों तक वार एसोसिएशन के सेक्रेटरी व तत्पश्चात अध्यक्ष भी रहे। पिछले वर्षो मे, वार एसोसिएशन के हाल मे उनका चित्र स्थापित कर उनका सम्मान किया गया है।

श्री प्रतापमलजी के जोधपुर पधारने के पश्चात् उनके दोनो भ्राता श्री मीठालालजी व श्री मिश्रीमलजी भी जोधपुर आ गए। श्री मीठालालजी जोधपुर की इनकी श्री हजारीमल प्रतापमल नाम से अनाज व आडत की दुकान सभालते थे व श्री मिश्रीमलजी जोधपुर मे वकालत करते थे। हजारीमल प्रतापमल फर्म कीभी अपनी ईमानदारी के कारण मडी मे व वाहर भी वडी पेठ थी।

श्री गुलावचदजी के मारवाड आने पर श्री प्रतापमलजी प्रथम मित्र थे। यह मित्रता व वधुत्व का सम्वन्ध उनका जीवन भर निभा। श्री गुलावचन्दजी अपने हर कार्य मे श्री प्रतापमलजी की सलाह लेते व कार्य की प्रगति से उन्हे अवगत करवाते रहते। श्री प्रतापमलजी भी यथासभव उनको उत्साहित करते व अपनी सम्मति से आगे की योजना मे मदद देते। जोधपुर मे अधिकाशत श्री गुलावचदजी इनके घर ही रहा करते थे।

श्री प्रतापमलजी ने जोधपुर मे ओसवाल समाज मे भी अच्छा स्थान वनाया था सभवत, वे पहले व्यक्ति थे जो एक गाव से आकर जोधपुर की ओसवाल सिंह सभा के अध्यक्ष वने' जोधपुर के ओसवाल समाज मे इनको अत्यत इज्जत व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था।

जोधपुर राज्य के समय मे इन्हें ओनरेरी मजिस्ट्रेट के सम्मान से विभूषित किया गया था। साथ ही इन्हें राज्य की ओर से जोधपुर नगरपालिका मे मनोनीत किया गया जहा वे अनेक वर्षो तक सदस्य रहे। मारवाड़ के राजघराने के पुनीत प्रसगो शादीयो इत्यादि पर इन्हे उत्तरदायित्व पूर्व कार्य सौंपे जाते थे जो आप अत्यंत कुशलता से निभाया करते थे।

मारवाड चेम्बर आफ कामर्स की सन् 1939 की स्थापना के समय से अनेक वर्षो तक उसकी कार्य कारिणी के सदस्य व कानूनी सलाहकार रहे। अपने इस कार्यकाल मे व्यापारी समाज के हितो के अनेक कार्यो मे आपने भाग लिया। द्वितीय महायुद्ध के समय भावो को स्थिर रखने हेतु बनी समिति मे भी आपने अत्यन्त उत्साह से योगदान दिया।

जब श्री गुलाबचन्दजी ने महावीर जैन डिस्ट्रिक्ट बोर्डिंग हाउस की स्थापना की तो आपको अध्यक्ष बनाया व स्वय उपाध्यक्ष थे। दोनों ने मिल कर इस उत्तरदायित्व को अत्यन्त सफलता-पूर्वक निभाया। तत्पश्चात् कुशलाश्रम को स्थापित कर उसके विद्यालय बनने तक भी इसी क्रम से मिल कर दोनो ने योगदान दिया।

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ से आपका सबध सन् 1944 से आया जब श्री गुरुजी के जोधपुर प्रवास पर आपके निवास स्थान पर ही श्री गुरुजी का ठहरना हुआ था उसके पश्चात् भी जब भी श्री गुरुजी पधारते, आपसे सदैव मिलने व भेंट हेतु आया करते।

वकालात से निवृति पर मडी के अनाज व्यापारी सघ के आप अनेक वर्षो तक अध्यक्ष रहे। आप व्यापारियो के आपसी टटो को अत्यन्त शान्ति से समझा-बुझा कर निपटवा दिया करते थे। आपकी कानूनी सलाह से भी व्यापारियो का मनोबल सदैव ऊचा रहा करता था।

आप आचार्य श्री तुलसी के प्रिय व सम्मानीय श्रावको मे तो थे ही पर जोधपुर की तेरापथी सभा के अध्यक्ष भी रहे व आपके प्रयत्नो से ही जोधपुर में तेरापंथी सभा भवन बन सका। आपने उसमें अपनी ओर से पर्याप्त आर्थिक सहयोग भी दिया। जोधपुर में ही नही पचपदरा के तेरापथी सभा भवन में भी आपका प्रारम्भिक सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा।

श्री प्रतापमलजी जोधपुर में गरीबो के सहारे व बन्धु गिने जाते थे। न जाने कितनी विधवाओ व गरीबो को गुप्तदान के रूप में आपसे सहयोग मिलता था। आपके पास जो कोई सहयोग मागने गया तो खाली हाथ नही लौटा कोई पैसा अगर उधार भी माग लेते तो आपकी ओर से उसे कभी याद तक भी नही दिलवाया जाता था।

पचपदरा का हर साधारण आदमी भी जब श्री प्रतापमलजी के पास जाता तो वे उससे उसके परिवार व कस्बे के अन्य व्यक्तियो के हाल पूछते व उसके कार्य में यथा संभव मदद व सहयोग देने की कोशिश करते। उनके पास कानूनी राय पूछने आने वाले को निशुल्क व सच्ची राय दी जाती थी।

जोधपुर के ओसवाल समाज की अनेक सस्थाओ का कार्य जो धर्मपुरा व अन्य नामो से चलते थे, आपकी देखरेख में अनेक वर्षो तक चले। धर्मपुरा सस्था के तो आप चौदह वर्ष तक अध्यक्ष रहे। आपको सन् 34-35 में महावीर जैन डिस्ट्रिक्ट बोर्डिंग हाउस द्वारा एक मानपत्र समर्पित किया गया था। जोधपुर के ओसवाल समाज द्वारा जोधपुर के नगर पालिका भवन में आपका अभिनदन किया गया व भावभीने श्रद्धा पुष्प समर्पित किए गए।
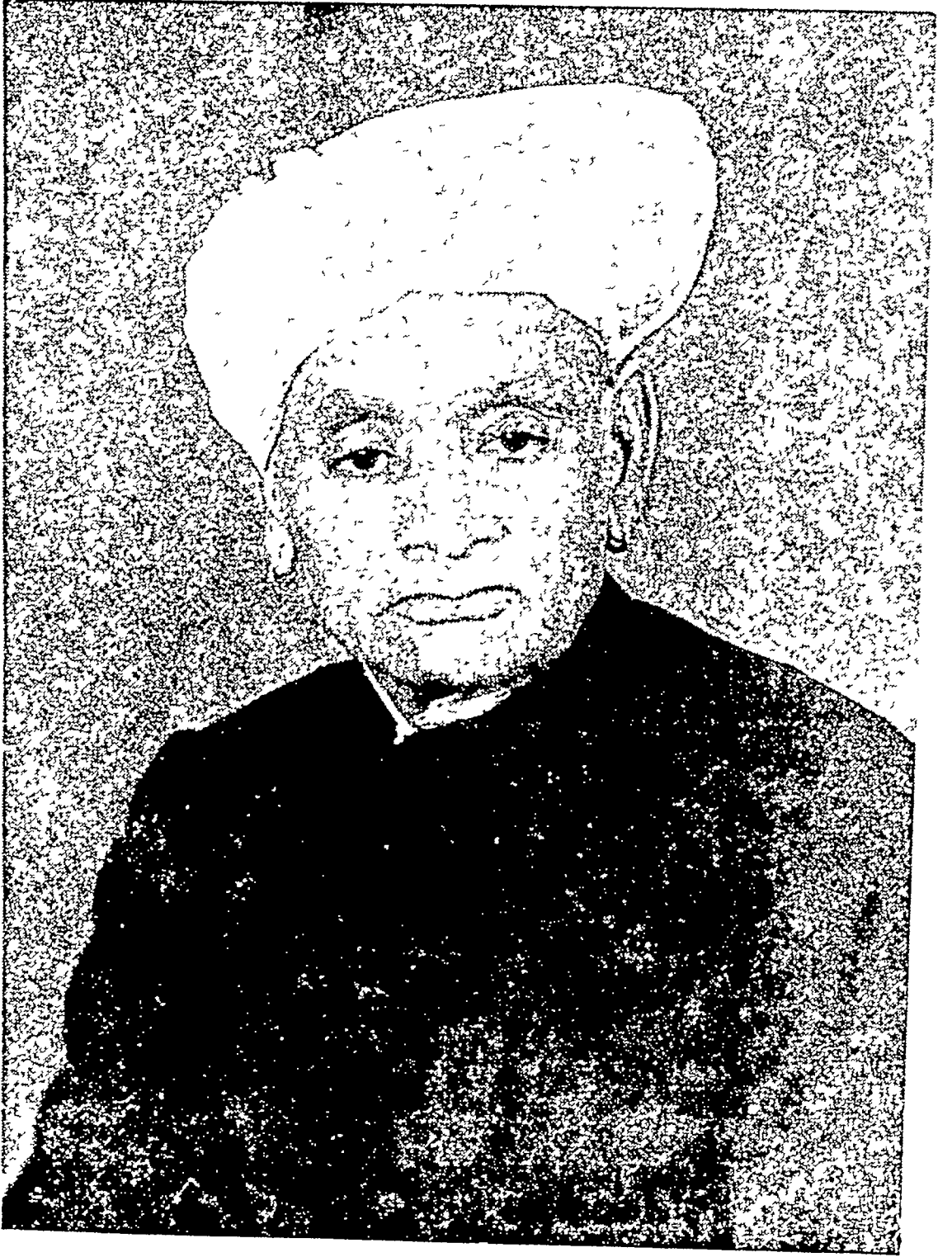
सेठ साहब के अंतरंग मित्र समाजभूषण श्री प्रतापमलजी साहब मेहता
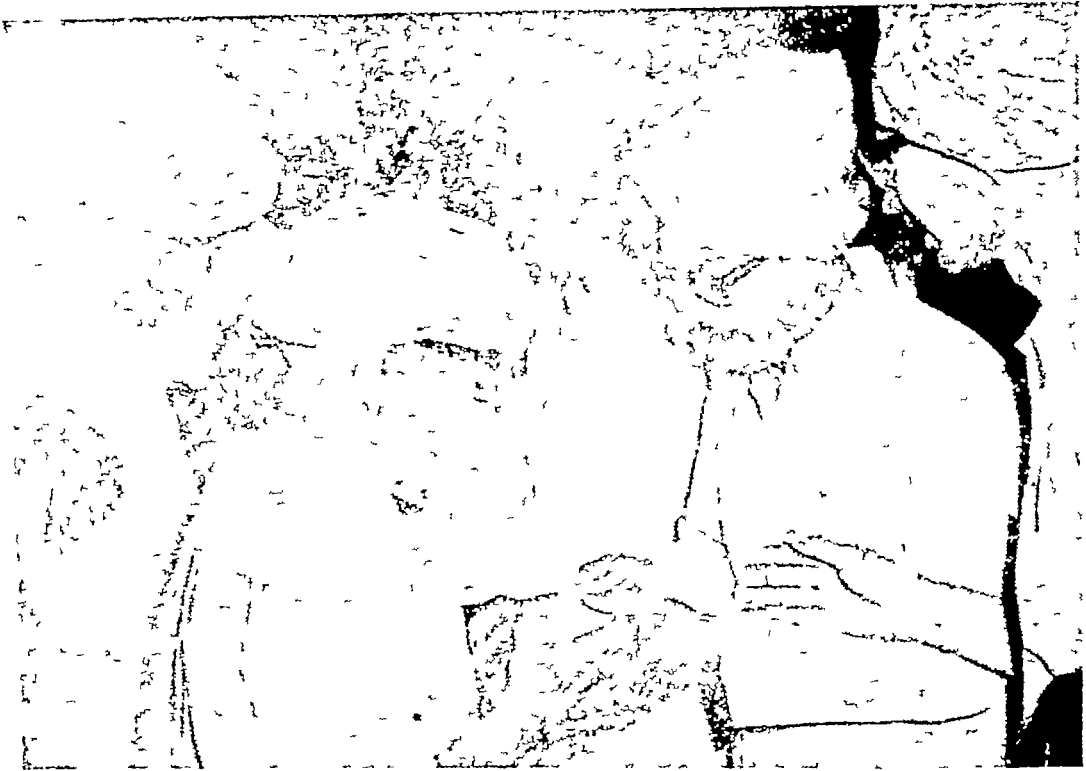
शाहजी मोहनलालजी व केसरीमलजी मदाणी से मिलनी करते हुए पास में
शाहजी हरकचंदजी चोंपडा

शाहजी कानराजजी व सोहनराजजी चोंपडा से सेठजी व जसराजजी सालेचा मिलनी करते हुए

मेहता बादरमलजी के साथ मिलनी करते हुए, पास में शाहजी हरकचंदजी खडे हैं

एक विवाहोत्सव में अपने परिवार के साथ
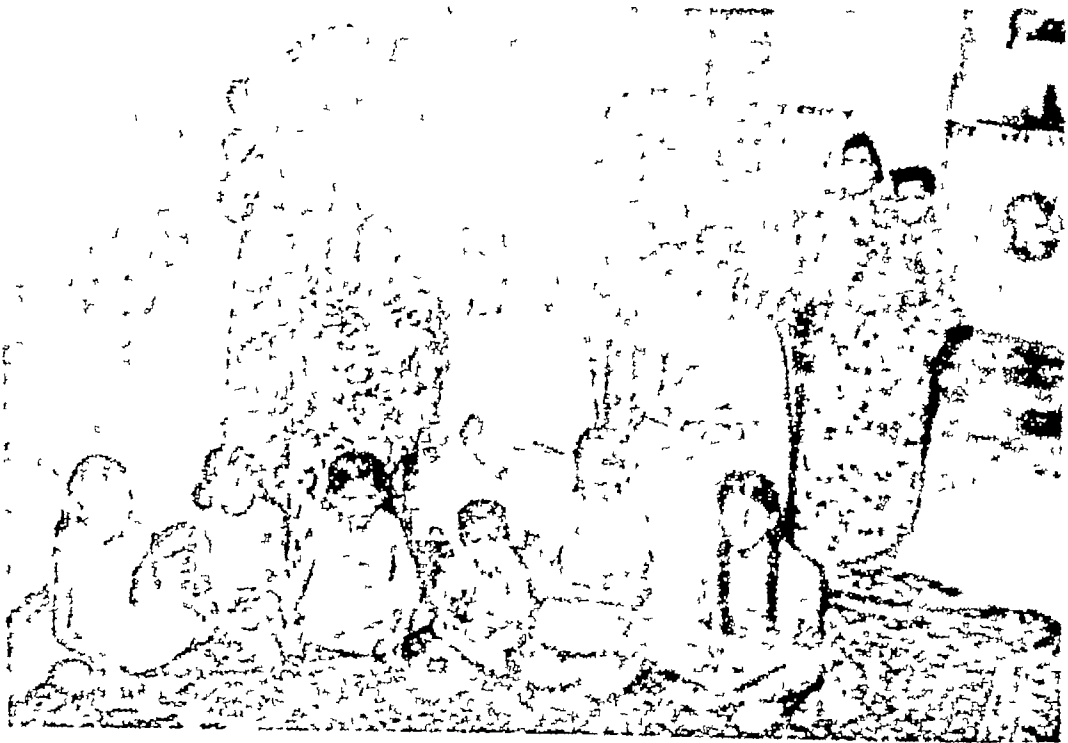
सेठ साहव परिवार की वहूओं और पौतियों के साथ

सेठ साहब अपने पुत्रों
और पौत्रों के साथ

ज्येष्ठ पौत्र घेवरचंद
और
उनके बाल-गोपाल

एक समारोह में प्रो० ए० डी० बोहरा, श्री ओंकारसिंहजी, श्री तारकप्रसादजी व्यास, श्री अनन्तरामजी शर्मा, श्री चम्पालालजी सालेचा व भाषण देते हुए श्री के० सी० भाटिया
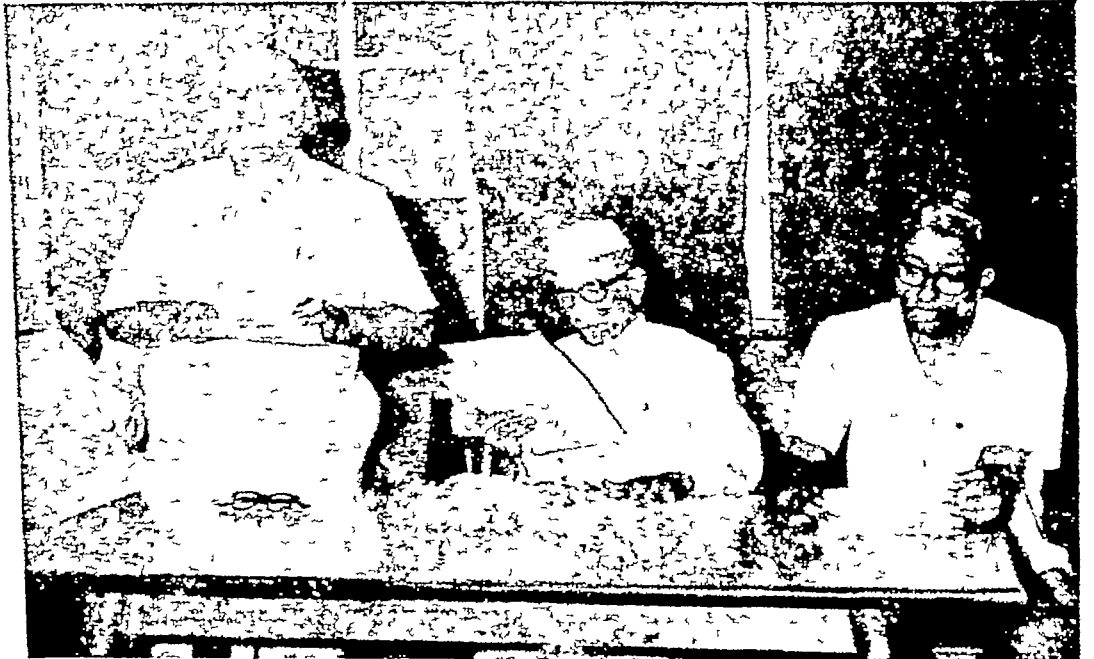
मारवाड चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के एक समारोह में प्रधानमंत्री मोरारजीभाई देसाई के साथ श्री शिवराजजी मोहता व सेठजी के पुत्र श्री चम्पालालजी सालेचा
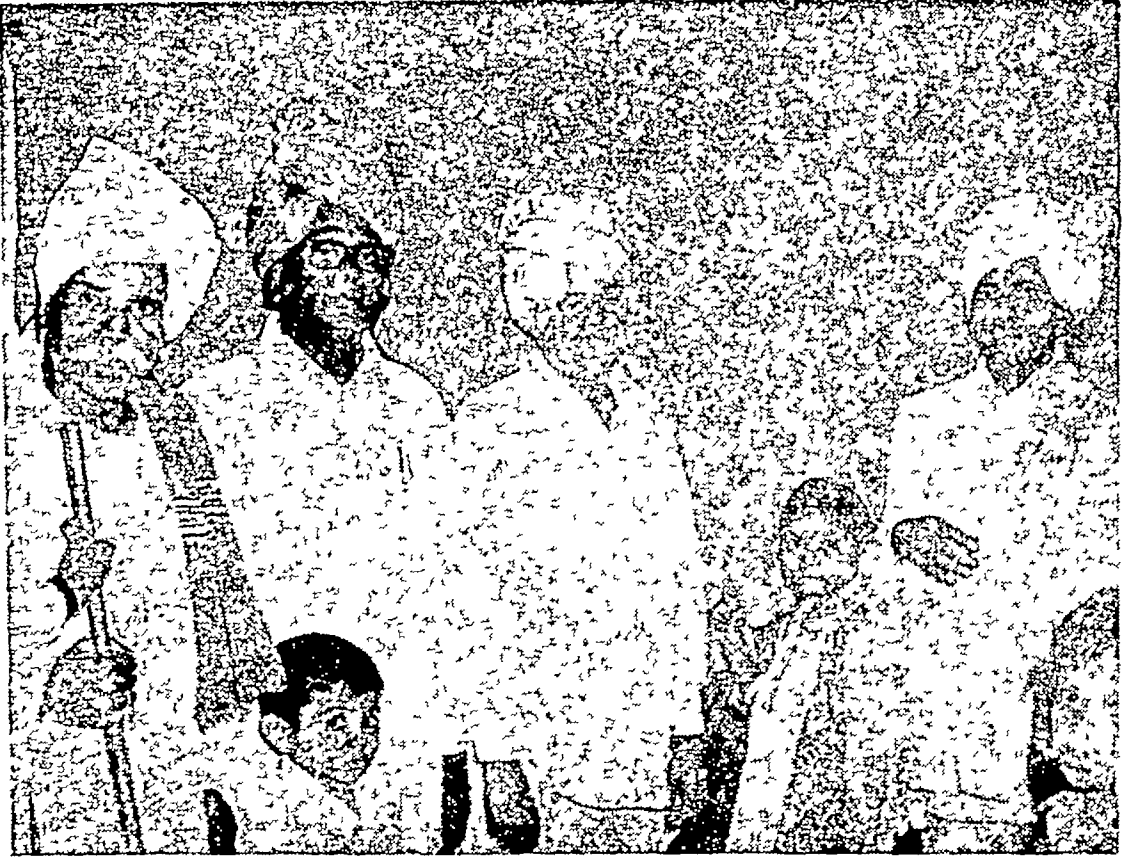
सिवाना निवासी परिजन श्री वसराजजी, बस्तीमलजी, हरखचदजी भसाली व मिसरीमलजी बागरेचा
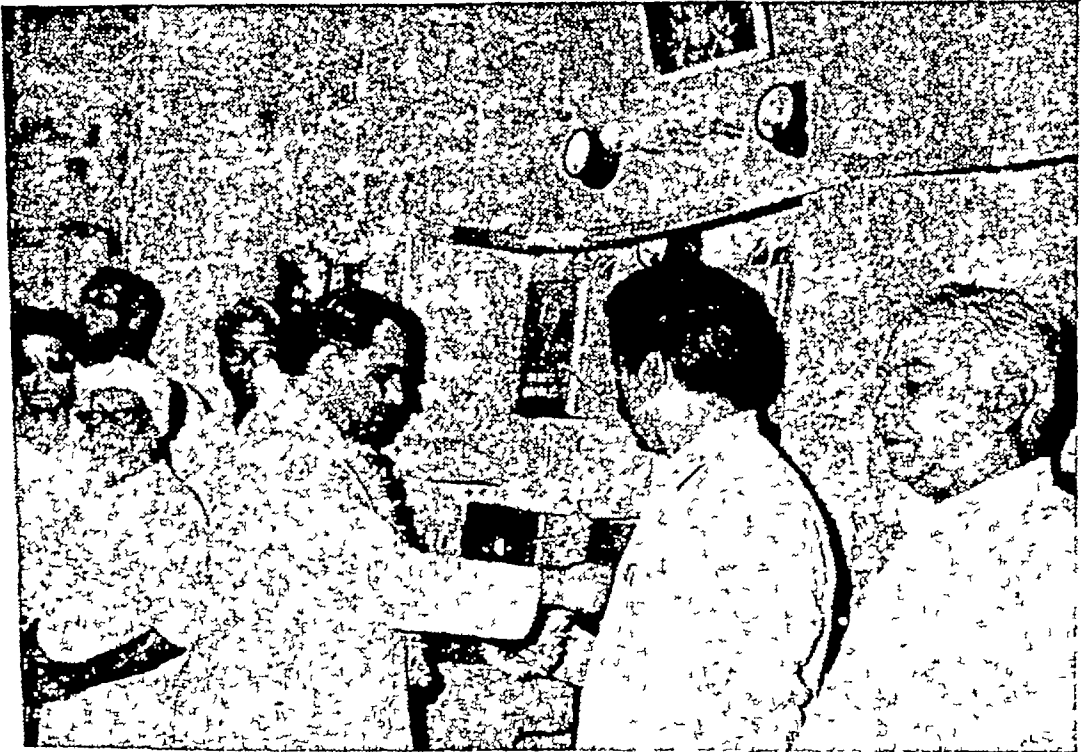
फॅक्ट्री उदघाटन समारोह में सेठजी ओंकारसिंहजी व श्री छगनराजजी सालेचा (पुत्र) के साथ

सालेचा परिवार के स्वर्गीय श्री जेठमलजी सालेचा

बाडमेर में नगरपालिकाध्यक्ष श्री मदनलालजी रामावत, सदस्य श्री श्रीवल्लभजी शास्त्री व अमीचन्दजी जैन (पुत) सेठजी के साथ

श्री देवीचन्दजी शाह – एक परिचय

— श्री मिश्रिमलजी मेहता

श्री देवीचदजी शाह उन कतिपय शिक्षा सेवियो मे से प्रमुख है जिन्हे सेठ श्री गुलावचदजी से प्रेरणा व उत्साह प्राप्त होता रहा है। श्री शाहजी का अध्ययन काल मे ही श्री राखडमलजी के माध्यम से सेठजी से सवध हुआ और उन्होने श्री देवीचदजी को शिक्षा व समाज क्षेत्र मे प्रवेश करने का मार्ग प्रदान किया। महावीर जैन डिस्ट्रीक्ट वोर्डिग हाऊस, कुशलाश्रम विद्यालय, मारवाड जैन युवक सघ, ग्राम २ मे समाज सुधार हेतु भ्रमण, इन सभी मे सेठजी व शाहजी की सिद्ध साधक की जोडी रही।

श्री देवीचदजी का जन्म श्री स्वरूपचदजी वरडिया के यहा पाली में आषाढ वदी 8 सवत् 1967 तदनुसार सन् 1910 मे हुआ। आपने ८वीं कक्षा मिडिल की शिक्षा पाली मे तदंतर दरवार 10वी हाई स्कूल जोधपुर मे 1929 मे की तथा 1933 मे जसवत कालेज मे वी. ए की परीक्षा पास की।

सन् 1932 मे आप महावीर जैन डिस्ट्रिक्ट वोर्डिग के प्रोक्टर-सस्थापक वने। सन् 1935 में शनिश्चरजी के थान के पास सरदारपुरा जोधपुर मे आपने 7 विद्यार्थियो से एक छात्रावास आरम्भ किया। दूसरे सत्र मे श्री पृथ्वीराजजी अरोडा के मकान में स्थानान्तरित हो गया। इसमें ग्यारह छात्र थे, यही छात्रावास अ तत वी-रोड पर आया तव इसमे पैंतीस छात्र थे जो फिर उन्नचालीस हो गए।

इस छात्रावास की विशेषता रही थी कि ग्रामीण क्षेत्र जैसे वाडमेर, वालोतरा, डीडवाना, पचपदरा, वरकाना, सादडी, वाली, फालना, जालोर, भीनमाल, साचोर, लाडनू आदि में समाज सुधार हेतु प्रयास किया। शिक्षा, अनमेल विवाह, वाल विवाह, विधवा विवाह, जीवन-सुधार, राष्ट्रीय भावना, साम्प्रदायिकता व छुआछुत चूडा, घू घट का वहिष्कार, मृत्युभोज तथा मरने पर रोने-पीटने का विरोध भी इसमे उल्लेखनीय है।

आपने प्रयोगात्मक पद्धति से शिक्षा दी, अपने जीवन आचरण तथा सत्याग्रह के माध्यम से वच्चो को प्रभावित करने की आपने चेष्ठा की पर मारपीट का सहारा नही लिया।

वच्चो को शौच-निवृति के लिए आप भ्रमण करने जगल ले जाते थे। आपने सादा जीवन उच्च विचार के वीज डाले। दैनिक सफाई, स्वास्थ्य, कमरे तथा छात्रावास की सफाई तथा वगीचा लगाने का काम प्रारम्भ किया। आपने छात्रो को स्वास्थ्य तथा शारीरिक सक्षमता का महत्व वताया तथा अखाडे और व्यायामशाला का शुभारभ किया।

आपकी शिक्षा शैली में गांधीवादी पद्धति का अदभूत समावेश था। आप आग्ल पढाया करते थे तदतर दूसरी पारी मे उद्योग जैसे वुनाई, सिलाई, जिल्दसाजी, सावुन तेल वनाना, वागवानी आदि की शिक्षा प्रदान करते। इस प्रकार यह निजी शाला उच्चकोटि के चरित्रवान शिक्षको से सपर्क मे रही। स्वर्गीय श्री जयनारायणजी व्यास तत्कालीन मारवाड राज्य के मुख्यमंत्री तथा कविवर प्रमुख, के शब्दो मे यह एक छोटा शाति

निकेतन ही था। प्रारम्भ मे सी रोड पर इस पाठशाला के स्वरूप का बाल मन्दिर के रूप मे मोटेसरी पद्धति पर गठन हुआ। यह विद्यालय आज भी गाँधी मैदान शिव मन्दिर के पीछे विकसित रूप से चल रहा है।

सन् 1953-54 मे ग्राम विकास योजना का सूत्रपात हुआ। यह गाधीवादी पद्धति पर सचालित होती थी। इसमे खेती, गोपालन, उद्योग के भी विषय थे। अनवरी-(जिला जालोर)-मे ७ वर्ष तक यह सस्था चलती रही। इसी शाला के छात्रावास मे अनेक विद्यार्थी तथा श्री फूलचदजी रिडमलजी मिश्रीमलजी आदि महीने मे दस दिन रहते थे। फिर बीमारी तथा ग्राम विकास कार्य में उदासीनता के कारण यह काम पिछड गया।

अब आपका कार्यक्षेत्र बदला। आपने लगभग दस वर्ष तक श्री फूलचद जैन उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय, सिंहपोल जोधपुर मे प्रधानाध्यापक की हैसियत से कार्यभार सभाला। इस अवधि मे आपने एक निर्माणशाला स्थापित की जिसमे निर्धन माताओ को उद्योग-धधे, सिलाई, कसीदा, चाक बनाना आदि की शिक्षा का प्रचुर प्रवध किया।

बालवाडी व महामन्दिर शाला की देखरेख अब भी जारी है।

आप सिवाची गेट स्थित गौशाला का काम पाच वर्ष मे सभाल रहे है। बछडो की देखरेख का काम भी आप चार वर्ष मे कर रहे है।

आपने अपनी स्थापित शालाओ मे शिक्षा के साथ उद्योग मदिरो की स्थापना की और दोहरे उद्देश्य की पूर्ति की।

स्पष्टवादिता आपका विशिष्ट गुण है। स्वर्गीय मुख्यमत्री राजस्थान श्री हीरालालजी शास्त्री तथा श्री जयनारायणजी व्यास की भी यही धारणा थी। आप हिंदी के हितैषी तथा प्रेमी हैं। वस्तुत आप मारवाड के प्रथम हिन्दी एम ए हैं।

सरकारी गलत काम, चक्करबाजी तथा झासो का आप सदैव विरोध करते रहे। आपने अपने आत्म-सम्मान की सदा रक्षा की। अपने कार्यक्षेत्र जोधपुर से स्थानान्तरण होने पर सरकारी सेवा से त्याग-पत्र दे दिया किंतु अपने ध्येय को नही छोडा। आप रणछोड नही है।

आपकी जीवन चर्या सादी है। सादा जीवन, उच्च विचार, निर्मल आचरण और सस्कार की आप साक्षात् प्रतिमा हैं। आप हाथ से कताबुना खादी पहनते हैं हाथ का पिसा आटा खाते हैं, स्वय कुए से लाकर पानी पीते है तथा किसी प्रकार के वाहन काम मे नही लेते। शेष जीवन मे आप जीवदया की ओर आकृष्ट हुए है तथा गाय बकरी की सेवा करते हैं।

आपका जीवन सादा, व्यस्त, सेवा परायण, त्यागमय, सस्कारित, सुव्यवस्थित तथा उन्नत है। शिक्षा, परोपकार, शारीरिक श्रम, कर्तव्य-निष्ठा, सत्परामर्श व सहयोग के लिए सदैव तैयार रहते हैं तथा इस परिपक्वावस्था मे भी पूरे कर्मयोगी हैं। कुछ मारवाड के भौगोलिक क्षेत्र को छोडकर आपका अधिकाश कार्यक्षेत्र जोधपुर नगर मे रहा है। कुशलाश्रम के पीछे के भाग मे आपने अपना निवास स्थान आधुनिक एव सुविधापूर्ण बना लिया है तथा वही नियमित जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हमें अब भी आप से अनेक आकाक्षायें हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

सेठजी ने अपने बचपन मे मध्यप्रदेश मे चौथी श्रेणी तक विद्या प्राप्त की पर उनका संपूर्ण जीवन एक बहुमुखी प्रतिभा के भडार के रूप मे प्रकट होता है। उन्हे खेती का, उसकी बुवाई, खाद विकास, बगीचो की संभाल, अनाज की किस्मे, उनके राजस्व सम्बन्धी पद्धतियो, पटवारी के विभिन्न उत्तरदायित्वो, सर्वे व सेटलमैंट सबधी विषयो का पर्याप्त ज्ञान था। सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड के उनके भाषणो मे इन सभी विषयो पर उन्होंने पर्याप्त प्रकाश डाला है।

भवन निर्माण व इजीनियरिंग में भी उनकी अधिकार पूर्ण दखल थी। नाकोडा के अध्यक्ष के रूप में मन्दिर के विस्तार की योजना उन्होने बनाई थी। पचपद्रा रेल मार्ग के परावर्तन में उन्होंने अपनी ओर से तीन विकल्प नक्शो सहित दिये थे। पचपद्रा को पानी की टकियो सम्बन्धी योजना मे एडगर की एक लाख बीस हजार की स्कीम को चुनौती देकर वही कार्य उन्होंने बाइस सौ रुपये मात्र मे करवा दिया और एक अग्रेज इजीनियर को नीचा दिखाया था। पचपद्रा स्कूल के घोडो के तबेलो जैसे भवन मे सुधार श्री मुकुट बिहारीलालजी साघी तत्कालीन तहसीलदार के साथ खडे रह कर स्वय करवाया।

पचपद्रा की बीटूजा नल योजना मे ठेकेदार के न मिलने पर स्थानीय व्यक्तियो के साथ स्वय रह कर निर्माण कार्य पूरा करवाया। नल योजना हेतु विभिन्न वैकल्पिक अलग अलग लागतो की योजनाए प्रस्तुत की। ग्यारह लाख की नमक विभाग के साथ की योजना मे विभाग के पीछे हटने पर पाच लाख की पचपद्रा हेतु अलग योजना बनवाई। इजीनियरो को इनकी सहज प्रतिभा पर आश्चर्य होता था।

साहित्यकारो की सभा मे भी सेठजी अपना विशेष स्थान रखते थे। उन्हे अनेक सवैये, कविता, दोहे इत्यादि कठस्थ थे और जब एक विशेष प्रभावी रुप मे ओजस्वी वाणी से वे उसे प्रस्तुत करते तो श्रोता वाह वाह कह उठते। उनके "फूट गयो हीरो"—भग के गुण, गोपीयो की होली, इत्यादि मध्यप्रदेश के सभाओं के सवैये अत्यत रुचिप्रद हैं।

सेठजी की वक्तृत्व कला भी बहुत ओजस्वी थी। वाणी में गम्भीर्य व ओज के साथ विषय की गहन जानकारी भी अपना प्रभाव रखती थी। किसी भी समीप के स्थान पर सेठजी के पहुँचने की खबर होते ही आसपास के युवक सेठजी को सुनने व उनके दर्शन करने पहुँच जाते थे। अधिकारियो के क्रोध व असहमति के क्षणो मे भी आप अपना मानसिक सतुलन खोये बिना अपना पक्ष निर्भीक रूप से प्रस्तुत करते थे। एडवाइजरी बोर्ड मे राज्य के उच्च अधिकारियो व जागीरदारो से भरे इकतरफी शासकीय मंच पर भी आपने अत्यन्त निर्भीकता से शासन की उपेक्षाओ, कमियो व जागीरी जुल्मो का वर्णन कर जन सामान्य का पक्ष प्रस्तुत किया है।

सेंट्रल एडवाइजरी बोर्ड मे आप एक कुशल पार्लियामेंटेरीयन के रूप मे सामने आते हैं हर प्रस्ताव का सुनियोजित ढग से खडन व मडन कर, एक विचारधारा व उद्देश्य को लेकर कुशलता पूर्वक आपने अपना

कर्तव्य निभाया। सरकार द्वारा नामंजूर होते हुए भी आपने श्री जयनारायण व्यास के क्रांतिकारी विचारों का कुशलता पूर्वक सहयोग किया।

सेठजी की विशेषता थी हर विषय की पूर्ण घेरा बन्दी। नमक आंदोलन मे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश के प्रमुख बाजारो में पचपद्रा की माग उठवाई। ब्रिटिश नीति के भंडाफोड हेतु विदेशी नमक की स्पर्द्धा मे नमक का जहाज भर कर कलकत्ता स्वयं ले गये, विषय को इंडियन चेम्बर आफ कामर्स मे उठवाया, तत्कालीन दिल्ली की लेजिस्लेटिव एसेंबली मे विषय पर वादविवाद करवाया, रेल्वे से सहयोग लेकर पचपद्रा नमक की स्पर्द्धापूर्ण स्थिति उत्पन्न की। जोधपुर राज्य की ओर से विषय के पक्ष मे प्रयत्न करवाये। टेरिफ बोर्ड, साल्ट सर्वे कमेटी, जियोलोजिकल सर्वे आफ इंडिया व अन्त मे स्टेथी कमीशन की रिपोर्ट अपने हक मे प्राप्त करना संघर्ष की व्यूह रचना का एक बहुत बडा प्रमाण है। इसी प्रकार की व्यूह रचना आपने जल समस्या, हुकूमत समस्या, रेल समस्या, इंसोलवेंसी एक्ट हटवाने इत्यादि मे की।

आपको व्यापारिक संगठन पद्धतियो का भी पूरा ज्ञान था सन् 1920 मे बस सर्विस हेतु लि० कंपनी बनाई। सन् 1921 मे लक्ष्मी साल्ट ट्रेडर्स कंपनी लि० का निर्माण, सन् 1928 में पचपद्रा साल्ट मर्चेन्टस एसोसिएसन, 1933 में श्री महाजन व्यापार सुधार एसोसिएसन, 1938 मे पीतल के बर्तनों हेतु कंपनी बनाना, 1944 में सांभर के सांभर साल्ट ऐसोसिएसन मे निर्माता डाइरेक्टर, 1945 मे लक्ष्मी साल्ट ट्रेडिंग क० लि० का निर्माण आपकी इस क्षमता के ज्वलंत उदाहरण है। 1920 मे कंपनी नाम मारवाड में शायद पहला था।

औषधियो के संबंध मे भी उनकी अच्छी जानकारी थी। उनके विशेष प्रकार के चूर्ण, खमीरे, अवलेह, देशी दवाईयो के गुर बहुत उपयोगी व प्रभावी थे। पाकशास्त्र मे भी आपकी निपुणता विशेष थी व बडे भोजो, भोजनो, पश्चिमी प्रकार के खानो, सुन्दर मिठाईयों इत्यादि में आप बहुत कुशल थे। श्री फिन्ट के सन् 40 में पचपद्रा आने पर जोधपुर से ट्रकों पर सामान फराश खाने से लेजाकर बहुत बडा व प्रभावी आयोजन किया था।

कृष्ण जन्माष्टमी, महावीर जयती, शिवरात्रि इत्यादि की झाकियां बनवाना झाकियें निकलवाना इत्यादि में भी आप निपुण थे। मारवाड की जल समस्या मे आपके ज्ञान का बडे बडे अधिकारी भी लोहा मानते थे। लूनी नदी व उसकी प्रवृत्ति उसका जल श्रोतो पर प्रभाव, मीठे पानी की उपलब्धि के स्थान, जल समस्या के हल के विविध उपाय व उस संबधी जानकारी बार-बार आपके कार्य कलापो मे सामने आती रही है।

उद्योगो के संबध में भी बहुत दूर तक आपने चिंतन किया धोरोनारो व दरियार नाम के सिंध के नमक श्रोतों को आप ही प्रकाश में लाए, माचिस बनाने की फेक्टरी की योजना, पीतल के बर्तन बनाने की योजना, ऊनी कम्बल व गलीचे बनाने की योजना, नमक के सहयोगी उत्पादन विकसित करने की योजनाएं आपने बनायी थी। पचपद्रा नमक उद्योग के पूर्ण विकास की योजना आपने प्रस्तुत की थी। पचपद्रा नमक का सेंटल स्टोर सिस्टम विकसित करवाने का भी आपने प्रयत्न करवाया था।

आपके मारवाड मे सक्रियता के ५०-६० वर्षो के जीवन व समय के हर क्षेत्र में आप अग्रणी रहे व उसमें आपकी बहुमुखी प्रतिभा उभर कर सामने आई।

व्यक्तित्व

सेठ गुलाबचन्दजी एक प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व के धनी रहे । इनका जीवन अत्यत सादगी पूर्ण रहा । नित्य प्रात प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, पूजन के पश्चात दिनचर्या शुरू होती जीवन मे किसी प्रकार का व्यसन नही । घर मे अतिथियो के लिए अफीम, हुक्का, चिलम इत्यादि के सदैव व्यवस्था इस काल के वैभव सम्पन्न परिवारो का रिवाज था, पर सेठजी स्वय इनसे दूर रहे । दूसरी ओर उच्च अधिकारियो को उपहार स्वरूप डालियो मे अनेक प्रकार के केक, पेय इत्यादि प्रस्तुत किए जाते, पर स्वय इन सभी से निर्लिप्त रहते । सादे भोजन हेतु सदैव "मितभुक" रहने हेतु अकेले भोजन पर बैठना व जूठा न छोडना आपका नियम रहा ।

लेकिन इस सादगी के साथ ही जीवन मे रईसी का उच्च स्तरीय पुट था जोधपुर का बढिया इक्का सवारी हेतु, नित्य प्रथम श्रेणी के धोबी से धुपकर आई पोशाक, फ्लेक्स के बूट, शहर के नामी दर्जी से सिली जोधपुर बिरजिस व शेरवानी, दुकानी से शहरी सवारी सुन्दर दाढी, सिर पर जोधपुरी पगडी, हाथ मे पहाडी चित्रकारी वाली बेंत, सुन्दर विजिटिंग कार्ड, चपरासी को ईनाम देने का सहज स्वभाव । यह सभी उस काल के जोधपुर प्रभावी जीवन स्तर के स्वरूप थे, जो किसी अधिकारी, व्यक्ति या सभा के सम्मुख आपका प्रथम प्रभाव प्रस्तुत करने हेतु पर्याप्त थे ।

आपकी भाषा शुद्ध हिन्दी की खडी बोली, जो भोपाल के नवाबी प्रभाव के कारण उर्दू के पुट को लिए हुए थी । प्रस्तुतीकरण अत्यन्त सुन्दर, रोचक उद्देश्य पूर्ण शब्दो से भरा होता था । जब भाषण करने खडे होते तो वाणी का जोश व प्रभाव दोनो श्रोताओ पर अमिट छाप छोडते थे । हर विषय पर आप साधिकार बोल सकते थे, व हर प्रकार के श्रोताओ को उनके उपयुक्त सामग्री उचित भाषा मे प्रस्तुत करते ।

सार्वजनिक कार्य में किसी प्रकार के व्यवहार मे आपको हिचक नही थी । सिवाना मे न्याति विवाद को हल करने हेतु पचो के आगे पगडी रखकर आपने उन्हे हट छोडने का आग्रह किया । चूडे का विरोध करने पर औरतें गालियें बोलती तो हस कर टाल जाते । कार्य में आगे बढने हेतु कोई विरोध करता तो उसकी उपेक्षा करते । पचपदरा ग्राम के मामलो मे अनेक बार मतैक्य नही हुआ तो स्वय अपनी हिम्मत पर थोडे साथियो के साथ ही सघर्षपूर्ण वातावरण मे अड गये ।

इनका हृदय अत्यत निर्मल रहा । किसी से किसी कार्य हेतु तेज आवाज मे कहने से झगडा भी हो गया तो दूसरे क्षण बात समाप्त होते ही अत्यत स्नेही के रूप मे बात करने लगते । किसी विचार विमर्श हेतु किसी के भी घर जाने में बिल्कुल हिचक नही । प्रत्येक को उसके हित की सलाह देना चाहे माने या न माने । भारत स्वतत्रता के पश्चात खारवालो को आग्रह किया कि उन्हे सरकारी जुओ से मुक्त होना चाहिए, पर खारवालो को इसका भान बाईस साल बाद हुआ ।

आत्मविश्वास व निर्भीकता सेठजी का बहुत बडा गुण रहा । किसी भी बडे से बडे कार्य को, अकेले अपनी पद्धति से अत्यत विश्वास के साथ हाथ में लिया, कभी इन्कार किसी को नही किया । मोकलसर के लोग

एक बार इमारती पत्थर इत्यादि के सम्बन्ध में जागीरदार परेशानी से आपके पास सहयोग हेतु आए। आपने तत्काल जोधपुर में महकमा खास से वे आज्ञाऐं निकलवाई जिनके अन्तरगत जागीरदारो को ऐसा करने का अधिकार नही था। हिन्दु ट्रस्ट बिल का विरोध करने डेलीगेशन के साथ जयपुर तत्काल रवाना हुए। मिनिस्टर के तहसील हटाने के आदेश के बाद दो दिन मे ही प्रेस, अधिकारी वर्गसपर्क, ऐतिहासिक भूमिका के प्रतिवेदनो से सरकार को निर्णय बदलने पर बाध्य कर दिया। सन् 37-38 की बात है अंग्रेज मिनिस्टर एडगर के पास आप नल योजना हेतु गए। चूंकि सेठजी ने एडगर की लाख रु के ऊपर की योजना केवल ढाई हजार में करवाने के अंक रेल्वे से प्रस्तुत करवाए थे अत एडगर बहुत क्रुध था। बातचीत में क्रुध होकर लाल आंखें करता वह दरवाजे पर खडा हो गया। सेठजी भी कुर्सी से उठे, उसकी बाँह के नीचे से निकल दरवाजे के बाहर आए व अत्यंत नम्रता से अपनी बात पुनः कहना प्रारंभ किया। अंत मे एडगर को शात होना पडा व उसने सहयोग का वादा किया।

इसी प्रकार स्वतत्रता के पश्चात् सेठजी जयपुर किसी सार्वजनिक कार्य से गए। एक मिनिस्टर ने कहा कि सेठजी काम करवाना हो तो पगडी छोड़कर सफेद टोपी पहन लीजिए। उसका सकेत काग्रेस में शामिल होने से था—सेठजी ने अत्यत विश्वास पूर्ण शब्दो में कहा "मैं यह कार्य इसी पगडी से करवाऊंगा।"

सेंट्रल एडवाईजरी बोर्ड के सम्मुख "मादीन जानवरो" के कुर्क करने सबधी मामला था। सेठजी का कहना था कि चूंकि किसान की खेती स बधी सपत्ति जैसे बैल इत्यादि कूर्की से मुक्त है अत मादीन जानवरो पर ही किसान की साखें है और यदि साख टूट गई तो किसान सकट में पड जायेगा। सारा जागीरदार वर्ग सेठजी के विरूद्ध था पर अत्यत साहस व आत्म विश्वास से सेठजी ने निर्णय अपने मत के पक्ष में प्राप्त किया।

सन् 1948 में पचपदरा से हकूमत हटने की आज्ञा हुई। हाकिम ने रात में ही ट्रको द्वारा सामान ले जाने की योजना बनाई। ट्रको के आते ही सेठजी को हाकिम का उद्देश्य ध्यान में आ गया और कस्बे के लोगो को साथ ले रात्री में ही ट्रको के आगे सो गये। हाकिम की सारी योजना विफल चली गई। यह आपके आत्म विश्वास व निर्भीकता से ही हो पाया।

सेठजी को किसी भी कार्य के विषय में सुस्ती बिल्कुल नही थी। हर विषय पर सही समय पर कदम उठाना उनका नियम था। जैसा कि ऊपर उल्लेखित के तहसील के निर्माण स्थगन का समाचार मिलते ही २ दिन पश्चात होने वाली प्रोफेसर्स कान्फ्रेंस के पूर्व अपने पक्ष में भूमिका निर्माण की, किसी भी विषय में किसी भी महत्वपूर्ण व्यक्ति के पचपदरा या जोधपुर पहुचने पर अपना पक्ष रखने व उसे प्रभावित करने अपने सारे अन्य कार्य छोड स्वय पहुँच जाते। समय की पाबन्दी का पूर्ण ध्यान रखते। किसी भी अधिकारी द्वारा दिए गए समय से कभी एक मिनट भी लेट नही होते।

व्यवहार कुशलता सेठजी का ऐसा गुण रहा जो इनके कार्य सिद्धी में अत्यत उपयोगी रहा। प्रत्येक अधिकारी को पहले स्वागत व सत्कार से इतना प्रभावित करते कि वह सेठजी की बात में रूचि लेता, फिर अत्यन्त तर्कपूर्ण ढग से अपना पक्ष प्रस्तुत करते जिससे उसका पूरा सहयोग मिलता।

अथक लंबा प्रयास भी सेठजी के सफलता का बहुत बडा राज है। जिस काम के पीछे लग गए उसके पूर्ण होने तक उसे छोडा नही। एक एक काम साल, दो साल, छ साल व पानी सरीखे मामले में तीस साल तक लडते रहे। लगातार पीछे लगे रह कर, छ माह अथवा साल साल भर घर के बाहर रह कर ध्येय की पूर्ति हेतु लगे रहना आपके व्यक्तित्व की विशेषता रही है।

श्री गुलाबचदजी लोकेषणा से सदा दूर रहे। यह अद्भुत है कि इतना कार्य करने वाले व्यक्ति का कोई व्यक्तिगत चित्र सन् 1958 के पूर्व का अर्थात् लगभग 75 वर्ष की आयु से पूर्व का नही है। नाकौडा तीर्थ की प्रवन्ध समिति वनाने पर श्री हिन्दुमलजी कोठारी को अध्यक्ष वनाया तो साथ ही महावीर डिस्ट्रीकट बोर्डिंग-हाउस मे श्री प्रतापमलजी मेहता की अध्यक्षता मे उसका सस्थापन किया। वर्षों तक किए गये कार्यों में अनेक वडे वडे अधिवेशनो व समारोहो के भी कोई चित्र उपलब्ध नही हैं। कार्य में निस्वार्थ-भाव भी सेठजी की विशेषता रही। इतना विशाल सम्पर्क होते हुए भी एक भी ऐसा उदाहरण नही जब किसी अधिकारी को अपने किसी व्यक्तिगत कार्य के लिए कहा हो, स्वय सिफारिश की हो अथवा अन्य किसी से सिफारिश करवाई हो। सच तो यह है कि यह निस्वार्थ भाव ही उनकी सफलता की कुजी है जो इनमें कार्य के प्रति आत्मविश्वास व नैतिक वल प्रदान कर सका तथा जहा भी कार्य हेतु जाते उनकी भी सहयोग व सहानुभूति अर्जित हो सकी।

वास्तविक शिक्षा वह है जो समाज और मानवजाति की परिस्थितियो के अनुकूल सस्कारो का परिष्कार करते हुये जीवन को मानव-समाजोपयोगी वना सके।

विचार कुन्ज

सेन्ट्रल एडवाईजरी बोर्ड जोधपुर हेतु विषयो पर सेठ गुलाबचन्दजी के अन्य हस्तलिखित विचारो का संकलन

मुझे चौदह साल की लडकियो की शादीयो की उम्र के बारे मे मारवाड मे कई स्थानों पर घूमने से यही एक बात ज्यादातर मालूम हुई कि लडकी आज-कल तेरह-चौदह वर्ष की उम्र मे रजस्वला हो जाती है। हिन्दू धर्म-शास्त्रो मे लिखा है कि कन्या अपने बाप के घर मे रजस्वाला हो जावे तो उसके पिता को उसका मुह देखना पाप है ।

इसके अलावा दूसरी दलील यह है कि हमारे विवाह के रीतिरिवाज ऐसे है कि जिससे आर्थिक स्थिति को ठेस लगती है। विवाह सबंधी रीतिरिवाज जैसे खाना खिलाना, एक साथ मे पाच-पाच व छ-छ दिन तक खाना खिलाते हैं, कई जगह तीन चार दिन खाना खिलाते है, किसी जगह लडके वाला और लडकी वाला दोनो कई दिन तक आमने-सामने खाना दिया करते हैं। और भी कई खर्चे नाच-गाना रोशनी, जलूस देहातो मे भी अफीम, हुक्का, कीमती कपडे, गहने वगैरहा ऐसे बहुत-से खर्चे करने के रिवाज लगे हुए हैं। बहुत लोगो का कहना है कि एक शख्स के चार लडकियाँ हैं व एक दस साल दूसरी बारह साल व तीसरी चौदह साल की हो उस हालत मे तीनो लडकियो की शादी एक शादी के करीब करीब खर्चे मे काम हो जाता है।

तीसरी बात दहेज-टीका की प्रथा बहुतायत से चल पडी है उसमे अगर छोटी उम्र मे सम्बन्ध-सगाई कर दिया जावे तो कम पैसे से लडके वाला राजी हो जाता है। बडी लडकी होने पर लडका वाला मनमाना पैसा मागता है। उस वक्त धर्म-शास्त्रो का हव्वा हमारे पीछे धर्माचारियो ने लगा दिया है। यहा तक कि कन्या रजस्वला होने के बाद पिता उसका मुँह कुवारेपन मे देखे तो छ महीने मे मर जाता है या कन्या के पाप मे डूब जाता है। ऐसे ऐसे रिवाजो के भय से कम उम्र की कन्याओ की शादी कर देते है। ये दलीले पाई जाती हैं इसके अलावा कोई दलील नही मिलती है लेकिन मेरा ख्याल है अर्थात् मेरा कहना है कि ये खराबिया समाज के रीति-रिवाज से सम्बन्ध रखती है । मूल प्रस्ताव से सम्बन्ध नही रखती। रीतिरिवाज का सुधार होना जरूरी है मगर असली प्रस्ताव को जिस मक्सद से रखा गया है उसको इन दलीलो से लुप्त करना ठीक नही है। हर एक कानून-कायदा जो बनाया जाता है उसमे ज्यादा फायदा व नुक्सान कम होना चाहिए। छोटी उम्र मे शादी से फायदा कम व नुक्सान ज्यादा है वे मैं आपकी सेवामे रखता हूँ ।

छोटी उम्र की शादी मे लडके लडकी का वीर्य परिपक्व नही होता और जन्मभर तक के खर्चे के लिए अपनी कमाई नहीं कर सकता। मूल धन नही बना सकता। हर एक आदमी जो गणित के जानेमाने वाले इस बात को मानेंगे कि कोई भी काम चलाने के लिए मूल धन कायम करके उसके सूद से काम चलाये वह कभी फेल नही होगा अगर मूलधन को खोदेगा तो उसका दिवाला निकालना पडेगा। इस शरीर को बलिष्ठ रखने के लिये मनुष्य को वीर्य की रक्षा करना उसको परिपक्व बनाना यत्न से खर्च करने का बहुत ध्यान रखना है।

मारवाड़ राज्य मे शिल्प व उद्योग धन्धों की आवश्यकता

" किसी देश का भविष्य उसके शिल्प पर ही निर्भर है "

उद्देश्यहीन आधुनिक शिक्षा की उन्नति के साथ मारवाड मे भी वेकारी बढ रही है। इसके कई कारणो मे मुख्य कारण मारवाड मे शिल्प व उद्योग धन्धो की शिक्षा का अभाव ही है। यहा न कोई ऐसी फेक्टरिया है न कोई ऐसा व्यवसाय जिमसे शिक्षित वेकार नवयुवक कार्य मे लग सके और रोटी का प्रश्न हल हो। न तो सरकार स्वय ही मारवाड मे उद्योग धन्धो आदि के लिए फेक्टरी व मीलो आदि की स्थापना करती हैं और न पब्लिक को ही यह कार्य करने के लिये प्रोत्साहन देती है। प्रोत्साहन तो देना दूर रहा यदि कोई अपनी निज की सम्पति लगा यहा उद्योग धन्धो को व्यवस्था करना चाहे तो सरकार उसे ऐसा करने से रोकती है। वर्तमान समय मे प्रत्येक राष्ट्र शिल्प व उद्योग धन्धो मे तरक्की कर रहा है इस लिये अत्यन्त आवश्यक है कि हमारी सरकार भी इस तरफ ध्यान दे और मारवाड मे शिल्प व उद्योग धन्धो की व्यवस्था करे व इनकी व्यवस्था करने वाले लोगो को आर्थिक सहायता व प्रोत्साहन दे जिससे हमारे वेकार शिक्षित युवक कार्य मे लगे और मारवाड की उन्नत्ति मे हाथ वटावे।

प्रस्तावक
सेठ गुलावचन्द
मैम्बर सैन्ट्रल एडवाईजरी वोर्ड,
जोधपुर

तारीख 30 6 1939

मारवाड की उद्योग क्षमता.

(हस्त लिखित पृष्ठो से)

मारवाड की जमीन का क्षेत्रफल 35021 वर्गमील है और खेती करने के लिये काफी गुजायश है परन्तु अभाग्यवश वर्षा न होने की वजह से खेती के उद्योग धन्धो को प्रोत्साहन नहा मिल सकता और हमेशा कहतसाली की वजह से कृपको को कष्ट उठाना पडता है। हमारे मारवाड के मुकावले मे हिन्दुस्तान मे और भी कई ऐसे प्रात हैं कि जहा वर्षा की कमी हमारे माफिक ही रहती है जैसे सिंध, पजाव वगैरह मगर वहा की सरकार ने खेती की उन्नति के लिए वडे वडे वाध वन्वाकर, नहरे निकाल कर हजारो वर्ष के पडे हुए जगलो की भूमि को नहरो के जरिये पानी देकर हमेशा के लिये आवाद और मूल्यवान वना दिया हैं। कच्चा माल को अपने ही देश मे काम लेने के लिए कोटन इण्डस्ट्रीज आँयल इण्डस्ट्रीज़, सुगर इण्डस्ट्रीज कई तरह तरह की इण्डस्ट्रीयें खुलवा कर शिक्षित और अशिक्षित वेकारो को काम मे लगा दिया है। हमारे देश में पानी की कमी होने से खेती का कच्चा माल कीमती (व्यापारिक फसलें) तैयार नही हो सकती इसी वजह से हमारे देश के कृपक मजदूर वर्ग और शिक्षित वेकार पडे हुए हैं लेकिन हमारे यहा खनिज पदार्थो के कच्चे माल की कमी नहीं हैं जैसे पत्थर, सगमरमर का पत्थर और खड्डी, दादडा, चूना, नमक, सेट इत्यादि वडी वडी तादाद मे मिलते हैं। ऊन, रुई, चमडा हड्डी ये भी काफी तादाद मे मिलते हैं। और पुराना पीतल, पुराना लोहा वगैरह भी यहा से वहुत वाहर जाता है।

अव इन सब चीजो की इण्डस्ट्रीये यहा खोली जाय तो लाखो आदमियो की वेकारी दूर हो सकती है।

१ करीब उन्नीस हजार टन दादड़ा मारवाड़ से बाहर जाता है जिसकी कीमत एक मन की नौ पाई सरकार को मिलती है और इसी दादड़े से पंजाब और बम्बई सिमेंट फैक्ट्रियों में सिमेंट तैयार होकर वापिस मारवाड़ में करीब डेढ़ या दो रुपये मन तक बिकती है।

२ नमक हमारे देश में बहुत पैदा होता है और ऐसा अच्छा बढ़िया नमक हिन्दुस्तान में दूसरे प्रान्तों में नहीं मिलता। पचपदरा में जो नमक पैदा होता है वह लिवरपुल, पार्टसईद, इग्लैंड के नमक से बहुत बढ़िया सिद्ध हुआ है। जो कि टेरीफ बोर्ड व साल्ट सर्वे कमेटी की रिपोर्टों से साबित हो चुका है और आसाम, बंगाल, बिहार के मार्केटों का अच्छी तरह से कम्पीट कर सकता है। इस लिए पचपदरा के नमक के उद्योग को तरक्की दी जाय व नमक से बनने वाले दूसरे केमिकल के उद्योगों को भी तरक्की दी जाय --

३ ऊन इतनी बड़ी तादाद में बाहर जाती है, अगर ऊन की फैक्टरी यहां खोल कर अपना व्यवसाय बढ़ाया जाय तो काफी गुन्जायश है।

४. संगमरमर के पत्थर का सामान, मूर्तियां टाइलस, खिलौने वगैरह की इण्डस्ट्री यहां खोली जाय जैसे आगरा, जयपुर इत्यादि में हैं।

५ सींग और हाथी-दांत का सामान बड़े पैमाने की इण्डस्ट्री से तैयार किया जाय।

६. चमड़े की फैक्ट्री खोली जाय, जैसी की कानपुर, बम्बई, लाहौर वगैरह में है।

७. पुराना लोहा और पुराना पीतल जो बड़ी तादाद में बाहर जाता है यहां गलाकर और उससे नया सामान तैयार करके यहां बेचा जाय तो बड़ी तादाद में यहां बिकता है।

८ हड्डीयां पीसने-पीसने की मील भी खोली जाय।

९ उद्योगो इण्डस्ट्रीज की स्थापना के लिए पूंजी का प्रबन्ध यथाशक्ति सरकार द्वारा हो और मदद के लिए उद्योगिक बैंक याने इण्डस्ट्रीयल बैंको की स्थापना की जाय।

जोधपुर गवर्नमेंट, सेन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पहिले अधिवेशन की रिपोर्ट
फरवरी, सन् 1939.

पेज न 13

श्रीयुत् सेठ गुलाबचदजी ने प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि हमारे यहां मुकलावे- 'गौने' का महाराष्ट्र की तरह कड़ा नियम नहीं है। महाराष्ट्र में तो लड़की जब रजस्वला होती है, तब शादी की रस्म फिर अदा की जाती है। इस लिए वहां छोटी उम्र में शादी हो तो कोई बात नहीं परन्तु मारवाड़ में ऐसा रिवाज नहीं हैं। यहां भी ऐसा रिवाज हो तो बाल-विवाह जो वास्तविक विवाह नहीं कहा जा सकता, बुरा नहीं है। परन्तु यहां यकसां और कड़ा रिवाज नहीं है। इस लिए यहां यह प्रस्ताव बहुत जरूरी है।

जोधपुर एडवाइजरी बोर्ड के पहिले अधिवेशन की रिपोर्ट
फरवरी सन् 1939

पेज न 15

श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ने खानसाहिब सेठ फिरोजशाह का समर्थन करते हुए कहा कि मारवाडी ही में, जिसे सब सभासद समझ सकते हैं, कार्यवाही होने से सभा को सफलता मिल सकती है ।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड, के पहिले अधिवेशन
फरवरी, सन् 1939

पेज न 21

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने उक्त प्रस्ताव के विरोध में भाषण देते हुए कहा कि पहिले किसानो में, जो दूसरे रोग या दोष हैं, जैसे फिजूल खर्चा कर्जदारी, अफीम आदि नशीली चीजो का प्रयोग, जिनके कारण वे बोहरो के चगुल मे फसते हैं या अहलकारो की बातो में आ जाते हैं, रोके जाय फिर प्रस्तावित सुधार किया जाय । अभी किसानो को इस सुधार के बारे मे होसला नही है, वे बहुत गरीब हैं और उनकी स्थिति बहुत खराब हैं ।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड के पहिले अधिवेशन की रिपोर्ट
फरवरी, सन् 1939

पेज न 26

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा कि इस सभा का उद्देश्य शासन प्रबन्धो सम्बन्धी समस्याओ पर बहस दलील ठीक तरह से करना सिखाना भी है और खासकर बाहर वालो को ट्रेनिंग मिलना बहुत जरूरी है । जब कि परगनों के सदस्य यहा की अग्रेजी कार्यवाही मे समझेंगे ही नही, तो वे कैसे शिक्षा पा सकेंगे ।

Government of Jodhpur, Proceedings of the Central Advisory Board
(Second Session)
AUGUST 1939

Mr Gulab Chand speaking in favour of the proposal said that formerly there was no need for such legislation because the caste organisations and Panchayats were strong and convention prevented social evils In modern times, Panchayats had weakened and the caste rules had been relaxed Social Legislation was thus very necessary to stop ill-matched marriages The issue of such ill-matched pairs remain very weak and unfit all their life and prove a burden on society

Government of Jodhpur, Proceedings of the Central Advisory Board
(Second Session)
AUGUST 1939

Mr GULAB CHAND supporting the motion said that the prosperity of trade or business depended on demand Press is a great industry in which thousands of people could

find employment and thereby earn their bread. But if there was no demand for the products of the press industry, it would then fail There can be demand for the press industry only when the stringent restrictions put on the press by the Government were liberalised. The press industry would flourish, if there would be great demand for books and newspapers rather than of notices and pamphlets Therefore in order to create such demand, restrictions with regard to printing of books and newspapers and establishing presses should be removed. He hoped that the Government would encourage the press industry and liberalise the Press Act

Government of Jodhpur, Proceedings of the Central Advisory Board (Second Session) AUGUST 1939

Mr Gulab Chand in seconding the proposal said that so far it was believed that foul water, especially the water of tanks was the root cause of this disease It was very surprising that even in the present year of draught this disease was prevalent in Marwar

Government of Jodhpur, Proceedings of the Central Advisory Board (Second Session) AUGUST 1939

Mr GULAB CHAND said that in certain cases good wells had been dug by boring operations The government should therefore try boring experiments He referred to his discussion on the subject of water supply in Pachpadra with one Mr. Gokhale, who was a member of the Salt Commission appointed by the Government of India Mr Gokhale was of the opinion that on account of impurities, the water underneath the outer surface of land was saltish but on going deep, sweet water could be found Wherever there was saltish water, boring operations should be conducted to find out the beds of sweet water. In Sambhar and Pachpadra districts also, there were sweet wells at certain places This proved that underground water currents existed in Marwar

Government of Jodhpur, Proceedings of the Central Advisory Board (Second Session) AUGUST 1939

Mr GULAB CHAND, speaking generally on debt legislation, said that in modern times, it was necessary to protect the agriculturists Law in this connection was already there but if the courts did not put it into practice and did not do full justice, the creditors and debtors could not be blamed The law was that if a person realised 4 to 8 times of the amount lent, the courts and the officers concerned should throughly examine the accounts and penalize those who were found guilty of unlawful transactions But that was not being done. In Marwar the agriculturists had no rights over land They owned nothing more. There was no security in giving money to the agriculturists on loan At the outset this sense of

security should be created and legisalation should be introduced fixing the rate of interest at 12% or so. After that a committee might be set up to examine the old khatas and decide the reasonable amounts to be paid by the debtors to the creditors. It would then be better to introduce a legislation prohibiting excessive interest. The agriculturists also should be made literate. The agricultists had to go to Bohra for borrowing money The Bohra refused to pay but when the agriculturist insisted, the Bohra was induced to lend the money and charged interest 3 to 4 times of the actual loan

Dus it was on fault of the bohras but of the conditions and the practice prevailing in the country In a marriage cerremony, an agriculturist spends about Rs 200 or 250 or even 500/- in fact the girls and boys were being sold under the pretext of marriage On occasions of marriages, they were compelled to borrow. It was necessary to reform the evil customs. After that a legislation may be introduced prohibiting excessive interest on loans to agriculturists. There was no one in Marwar to lend money to the agriculturists except the bohras it was after every four years or so that they got a good harvest It was on account of these circumstances that agriculturists could not get loans at low rate of interest

Replying on behalf of the Government, Mr Niranjan Swaroop, Superintendent Hawala, said that in proposal No 20 no scheme was suggested It contained a recommendation both for the agriculturists and the bohras. It was very difficult to frame a law which might be equally beneficial to both the agriculturists and the Bohras However, the Government had framed a draft Marwar Relief of indeb tedness Act so as to protect the agriculturists from excessive rates of interest In famine years His Highness Government granted lacs of rupees as Taccavi to the agriculturists This year $5\frac{1}{2}$ lacs of rupees had already been advanced It was hardly possible to recover even 20% of the Taccavi The Government appreciated the difficulties of the agriculturists and was contemplating in to introduce measures for their relief Under the provisions of the Marwar Relief of indebtedness Bill, Debt Conciliation Board will be established After the introduction of the Act, if any Bohra charged heavy interest, the debtor would be able to take his case before the Debt Conciliation Board

The movers of the proposals, being satisfied by the assurance given by the Government member, did not press their proposal for vote.

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट

फरवरी, सन् 1940 पेज न 16

श्रीयुत् गुलाबचन्दजी ने कहा— हमारे यहा वर्षा की कमी होने की वजह से अक्सर कहतसाली होती रहती है। इसलिये यह बहुत ही जरूरी है कि इस विषय को जानने की कोई तरकीब निकाली जाय। इसका इतजाम कैसे किया जाय यह सोचने की बात है।

जिस प्रकार पूना मे यन्त्रो द्वारा मालूम कर लिया जाता है और पहले ही अखबारों मे छाप दिया जाता है कि फला फला जगह इतनी वर्षा होगी, वैसे ही राजस्थान की विद्या जो कि विज्ञान के आधार पर बनी है और जो सच्ची गिनी जाती है, पैसा खर्च करके यन्त्र मगवा लेने चाहिये ।

मामुली दोहो और कहानियो पर विश्वास रख कर उस पर पैसा खर्च किया जायगा तो फिजूल खर्ची होगी। अत जैसे पूना मे यन्त्र है वैसे यन्त्र यहा भी मगवा लिये जायें ।'

जोधपुर गवर्नमिन्ट सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट

फरवरी सन् 1940 पेज न. 24

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा— 'गावो की सफाई के लिये जो श्री रायसहाब ने कहा उसके बारे में मैं यह अर्ज कर देना चाहता हू कि पानी की तकलिफो से जितना मैं वाकिफ हू, उतना शायद ही कोई इस सभा भवन में होगा क्योकि मैं ऐसे परगने का रहने वाला हूँ कि जहा पानी बहुत कम बरसता है और जहा पानी की बड़ी तगी है। वहा पर लोग वर्षा के दिनो मे बरसे हुए पानी को मिट्टी के बरतनो और टाको मे इकट्ठा रखके एक एक साल और डेढ डेढ साल तक काम मे लाते हैं । नहाने-धोने की तो वहा बात ही क्या है, अगर बारह महिनो में एक या दो दफा नहाया भी जाय तो लोग 'माचे' के ऊपर बैठ कर नहाते हैं और नीचे बरतन रख दिया जाता है और उस पानी को साफ करके दूसरे काम मे लिया जाता है। बरतनो मे इकट्ठे किए हुए उस एक एक साल और दो-दो साल के पानी मे कीडे पड जाते हैं और वह पानी सड जाता है। वे बेचारे ग्रामीण क्या करें, वर्षा के छींटो को इकट्ठा करने के सिवाय उनके पास पानी का और कोई साधन नही, अब आप ही सोचिये कि जहा पानी की इस कदर कमी है, वहा किस प्रकार स्वच्छता रखी जा सकती है। यह हमारा कसूर नहीं, परमात्मा का कसूर है कि जिसने हमे ऐसे देश मे लाकर बसाया और पैदा किया ।

अत जहा तक पानी का इन्तजाम नहीं हो जाय वहा तक स्वच्छता किसी भी तरह नही रखी जा सकती। पानी का इन्तजाम करना रियासत पर ही निर्भर है क्योकि हमारी मारवाड की ग्रामीण जनता इतनी गरीब है कि वह पानी के इन्तजाम के लिये कुछ भी खर्च नही कर सकती और अभी जिस हालत मे है उसी हालत मे रहना पसद करती है ।

रियासत को सारा पैसा देहातो से ही मिलता है। गरीब ग्रामीण लोगो से पैसा लेकर उसे उनकी सुविधा के लिये खर्च न किया जाय और उसे शहरो में लगा दिया जाय इससे बडा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। हम बडे अभागे हैं कि परमात्मा ने हमे ऐसे देश मे पैदा किया है ।

जोधपुर गवर्नमेंट, सैंट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट

फरवरी सन् 1940 पेज न. 39

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा— 'श्रीमान् सभापति महोदय, बडे और छोटे छोटे व्यक्तियो को उन्नत बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु इनकी मदद का बोझ सरकार पर डालना उचित् नहीं क्योंकि सरकार को और भी अन्य आवश्यक कार्यो के अन्दर बहुत पैसा खर्च करना पडता है।

इसके लिए व्यवसायिक इन्डस्ट्रियल वैंक खोले जाने की जरुरत है, जिसमें सब व्यापारी व दूसरे शख्स अपना रुपया वजाय दूसरे वैंको में जमा करवाने के इसमे करावे और कपनी सिस्टम से अर्थात् मिलकर व्यापार व व्यवसाय आदि खोलने मे मदद की जावे तो इससे व्यवसायिक तरक्की हो सकती है। परस्पर विश्वास न होने की वजह से आपस मे मिल कर व्यापार करने की प्रथा हमारे यहा नही है परन्तु अगर ऐसे व्यावसायिक इन्डस्ट्रियल वैंक खोल दिये जाय और फिर उसकी व्याज की रकम मे उद्योग धन्धो के खोलने मे मदद की जाय और मिल कर काम किया जाय तो इससे व्यवसायो के पुर्नजीवित करने मे वडी भारी सफलता मिल सकती है। मेरी समझ मे यही प्रस्ताव का मतलव ठीक है।'

जोधपुर गवर्नमेंट, सैंट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट
फरवरी; सन् 1940

पेज न. 42

श्रीयुत् सेठ गुलावचदजी न कहा— 'मैं, इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं क्योकि छोटे छोटे कस्वों मे सड़कें, सफाई, पानी आदि का इन्तजाम नही है। अत वहा म्युनिसिपेलिटिया अवश्य होनी चाहिए।'

जोधपुर गवर्नमेंन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी वोर्ड के चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट
फरवरी सन् 1940

पेज नं० 53

श्रीयुत सेठ श्री गुलावचन्दजी ने कहा—यह विल्कुल साफ है और इसको हर शख्स मानता है कि किसानो की हालत खराव है। उनको चारो तरफ से चूसा जाता है। जव कभी करसे के ज्यादा पैदावार होती है तो जागीरदार, वोहरे, राज, सेठ साहुकार शहद की मक्खियो की तरह उस पर पड जाते हैं। जागीरदार अपनी ६ या ७ साल की सव की सव वकाया रकम लेने की कोशिस करते हैं। वोहरे भी अपनी वाकी की सव रकम व्याज दर व्याज जोड कर वसूल करने की कोशिस करते हैं। उस वक्त कोई भी यह ख्याल नही करता कि वेचारे ने ज्यादा पैसा खर्च कर और ज्यादा मेहनत करके ज्यादा कमाया है। इसलिये किसानो की रक्षा के लिए ऐसे कानून का वनाया जाना वहुत जरूरी है।

किसानो के जमीन पर क्या हकूक होने चाहिए इस वारे मे कोई कानून यहा पर ठीक तौर से नही वना है।

हालांकि खालसे के गावो के लिये नियम है। वहा वापी का रिवाज रख दिया गया है जो कानून की तरह ही है परन्तु दूसरी जगह कही भी ऐसे हकूक नही हैं। अगर कोई करसा अपनी जमीन को अच्छी तरह काश्तकर, खाद आदि डालकर उपजाऊ वनाता है और थोडे दिनो के लिये वाहर चला जाता है तो जागीरदार वह जमीन ज्यादा रुपया देने वाले को दे देते हैं और वह फिर उसे नही मिलती। किसान के पास गाय, भैंस, लरडी, वकरी आदि जानवर होते हैं उसे अपने घर मे जलाने आदि के लिये लकडी की जरूरत पडती है, परन्तु उसको कोई हक नही कि वह अपनी जमीन मे से इतनी भी ले सके। खालसे के गावों मे भी अच्छी लकडी—इमारती लकडी अगर जमीन मे हो, तो करसे को कोई हक नही हैं कि वह उसे लावे। इसलिये जिस तरह का कानून अंग्रेजी

इलाके मे है, उसी तरह का कानून हमारे यहा भी बना दिया जावे। जितने साल तक जो कास्ता जमीन को जितना ज्यादा पैसा खर्च कर जितनी ज्यादा उपजाऊ बनावे उतना ही उसका मोरूसी हक बढा दिया जावे। अगर कोई कम करे तो उसका मोरूसी हक कम कर दिया जावे। परन्तु मारवाड मे ऐसा कानून नहीं है। इसी लिये मारवाड के करसे फकीरो की तरह रहते हैं। मेरे कहने का मतलब यह है कि जिस प्रकार कोई किरायेदार किसी मकान मे ज्यादा अर्से तक रहे तो उसका मकान पर हक हो जाता है और वह किराया कम करवाता है, ठीक उसी प्रकार जितने ज्यादा अर्से तक किसान जमीन बोवे, उसका उतना ही अधिक मोरूसी हक बढना चाहिए और लगान मे कमी होनी चाहिए। ऐसा जब तक नही हो जायगा तब तक किसानों की हालत कभी नहीं सुधर सकती और वे कभी खुशहाल नहीं हो सकते। अन्त में इस प्रस्ताव का जोरो का समर्थन करता हूँ।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाईजरी बोर्ड के चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट

फरवरी सन् १९४० पेज न० 80

श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा—आज कल यूरोप में भयकर लडाई चल रही है। हिन्दुस्तान पर भी हमला होने की सभावना दिन प्रतिदिन बढ रही है क्योकि हिन्दुस्तान पडोसी देशो के नजदीक लडाई चल रही है। हमारे यहा के रिसाले आदि सब बाहर भेजे जा रहे हैं और बाकी बचे हुए भी चले जायेंगे। इसी तरह जो दूसरी सरकार की फौजें है वह भी यूरोप की तरफ चली जावेगी इसलिये अब हमे अपने हिन्दुस्तान को बचाने के लिए हमारे नवयुवको को तैयार करने की फिक्र करनी चाहिए।

अगर किसी देश ने हम पर हमला कर दिया और उस वक्त हमें फौजी शिक्षा पाये हुए नवयुवक नही मिले तो हमारी रक्षा होनी मुश्किल हो जायेगी। इसलिए हर एक स्कूल में अनिवार्य सैनिक शिक्षा दी जानी चाहिए और नये नये प्रकार और एक अलग सैनिक शिक्षालय–मिलिटरी कालेज–खुलना चाहिए जिसमे कि हवाई जहाज, मशीनगन और नये प्रकार के यत्रो को, जो कि आधुनिक लडाइयों मे उपयोग मे लाये जाते हैं, उपयोग करना सिखाया जाना चाहिए और इनके आक्रमण से बचने के तरीके भी बताने चाहिए।

हमारी सरकार को इस सम्बन्ध मे विचार करके जल्दी से जल्दी फौजी शिक्षा देने का प्रबन्ध करना चाहिए। इसमे यह भावना नहीं होनी चाहिए कि फला फला कौम ही लडाकू है अत उन्ही को शिक्षा दी जानी चाहिए।

सबको सैनिक शिक्षा देनी चाहिए। फौजी शिक्षा मिडल क्लास मे चालू होनी चाहिए और लडको को आगे बी० ए० तरफ न बढा कर फौजी शिक्षा की तरफ ध्यान दिया जाय जिसमे मौका आने पर देश की रक्षा भी की जा सकती है और बेरोजगारी दूर हो जायेगी।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के तृतीय अधिवेशन की रिपोर्ट

फरवरी 1940

श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा– मारवाड मे ऐसी कोई प्रथा नही है कि जिसके माफिक जैसे किसानो को खेती करने के लिए जमीन दी जाती है, उसी प्रकार जानवरो के लिए घास आदि के वास्ते अलग जमीन दी जाय ताकि साल भर तक वे अपने जानवरो को सुख से घास चरा सकें।

सयुक्त प्रान्त, मध्य प्रान्त और ग्वालियर आदि मे किसानो को खेती करने के लिए जो जमीन की वापी दी जाती है, उसी के साथ उनको जानवर आदि के लिए भी जमीन दी जाती है। वहा पर घास पैदा करने की जमीन को अगर कोई खा ले तो वहा का माल सीगा-रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट जुर्माने के वतौर उससे ज्यादा लगान—टेक्स ले लेता है। वहा जो जमीन छोडी जाती है, उसमे कृषक लोग अपने जानवरो को चरा लेते हैं और उसमे से अपने जानवरो के लिए घास इक्ट्ठा कर लेते हैं।

पुराने जमाने में यह प्रथा मारवाड में भी मौजूद थी। खालसे के गावो में तथा जागीरी के गावो में जानवरो के चरने के लिए जमीन छोडी जाती थी, जिसे ओरण के नाम से पुकारा जाता था। धर्म या देवताओ के नाम से यह जमीन छोडी जाती थी, जिसे कि देवताओ के डर के मारे कोई भी वहा से लकडी आदि नही काट सकते थे और वहा केवल जानवर ही चर सकते थे।

परन्तु अब ऐसी जमीन नही छोडी जाती। इससे किसानो को बडी मुसीबत उठानी पडती है। किसानो के पास जानवरो को चराने के लिए कोई जमीन नही है। फलत. जानवर जब दूसरी जमीन में घास चरने जाते हैं तो उनको फाटक में डाल देते हैं। और इस प्रकार जागिरदार लोग फाटक के जरिए हजारो लाखो रुपयो पर सालाना आमदनी कर लेते हैं और कही जानवरो को नही चरने देते। इसलिए खेती की जमीन के साथ ही साथ किसानो को खालसे के गावो में और जागीर के गावो में जानवरो के लिए घास पैदा करने की जमीन दी जानी चाहिए, जिससे कि किसान आराम के साथ अपने जानवरो को चरा सके और एक दो साल के लिए घास का सग्रह भी कर सके और जिससे कि उन्हे सुकाल दुस्काल के अन्दर मदद मिल सके।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के चतुर्थ अधिवेशन की रिपोर्ट फरवरी 1940

पे न 90

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा—यदयपि बहुत कम जमीन में खेती होती है फिर भी मारवाड में मवेशियो को चराने की बहुत तकलीफ है। इस वक्त कहरमाली में सिर्फ थोडी सी जमीन में वैरो से गेहू आदि पाये जाते है, उनकी हिफाजत भी खूब रखी जाती है परन्तु फिर भी खालसे के गावो में जब भी सालाना ५०-५० हजार ६०-६० हजार रुपयो के फाटक की आमदनी की जाती है। जानवरो के लिए वहा अगर जमीन छोडी जाय तो मवेशी चरते है। उसका लगान वसूल कर लिया जाता है। खालसे के गावो में घासमारी के पैसे लिये जाते हैं।

अभी एक जागीरदार साहब ने फर्माया कि जागिरदार घास, पान पाला आदि सब छोड देते हैं। लेकिन नही, मोठ आदि जो होते हैं, उनके पान का हिस्सा भी ले लिया जाता है। खाखला, पाला, घास आदि भी सब ले लिया जाता है और अपने आराम के लिये रखा जाता है। इसके अलावा जो खास अच्छी अच्छी जमीन होती है जहा कि अच्छा अच्छा घास पैदा होता है, वह अपने जानवरो के लिए रख लेते हैं। जो घास पैदा होता है वह अपने जानवरो के लिये रख लिया जाता और बहुत सा बेच दिया जाता है परन्तु बेचारे करसो को अच्छा घास नही मिलता। वे लोग भूरट आदि खराब घास से ही काम चलाते हैं, यह आंखो देखी बात है।

अव्वल तो जागीरदार भी घास आदि का वाँटा ले लेते हैं। अगर खाखला घास आदि वचती है तो वोहरे उसे विकवा देते हैं। फिर भी अगर वचता है तो मेहमानो आदि के जानवरो को खिलाना पडता है।

जव कि ऐसा कोई नियम नही है कि करसो के लिये अलग जमीन छोडी जाय और जरा भी निगाह चूको और जानवर इधर उधर गया तो झट फाटक मे डाल दिया जाता है। खासकर कीमती जानवर जैसे ऊंट वैल आदि और इनको नीलाम कर उनकी रकम हजम कर ली जाती है, तो ऐसी हालत मे करसो की दशा कैसे सुधर सकती है।

अत जरुर कोई ऐसा कायदा रखा जाय कि जिस मवेशियो के चरने के लिये अच्छा घास पैदा करने के लिये जमीन मुफ्त मे दी जाय। तभी लोग और मवेशी आनन्द से रह सकते हैं और आमदनी भी वहुत वढ सकती है।"

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी वोर्ड के पच अधिवेशन की रिपोर्ट

जुलाई, सन् 1940

पेज नं 11

श्रीयुत् सेठ गुलावचन्दजी ने कहा .— "श्रीमान सभापति महोदय। घी का काम वनस्पति मे नही वल्कि घी ही से होगा। हमारे जिस फायदे के लिए यह कानून वनाया जा रहा है, इसका उद्देश्य यह है कि हमे खाने को असली चीजें - घी, दूध, चीनी, आटा आदि मिलनी चाहिए। यह वनस्पति - वेजीटेवल का घी उसी कानून के उद्देश्य के खिलाफ है और इसे होनेवाले हमारे फायदे के विपरीत है क्योकि वनस्पति - वेजीटेवल का घी भी एक खराव खाने की चीज है। जो फायदा असली घी पहुँचा सकता है, वह वनस्पति - वेजीटेवल - का घी कदापि नहीं पहुचा सकता।

मान लिया जाय कि वनस्पति का घी दो तीन तेलो की मिलावट से वनता है और जो गरीव लोग घी नहीं खरीद सकते, उनका काम इसमे चल सकता है परन्तु ऐसा क्यो नही किया जाय कि ये तेल अलग अलग तेलो ही के नामो से तेल के रूप मे मिलें। इससे जो लोग शुद्ध घी खरीदना चाहेंगे, वे घी खरीदेंगे और तेल खरीदने वाले तेल। इससे लोगो को धोखा तो नही होगा।

अगर वनस्पति – वेजीटेवल का घी ज्यादा आ जायगा तो अच्छे घी का मिलना नामुमकिन हो जायगा। वनस्पति का - वेजीटेवल - घी आदमी की तन्दुरुस्ती को विगाडता है। दिमाग को जो तरी असली घी पहुचाता है, वह वनस्पति का - वेजीटेवल घी कदापि नही पहुचा सकता। इससे उल्टा नुकसान पहुंचता है।

अव जव कि इस काम को, जो कि शुद्ध खाद्य सामग्री के इन्तजाम के वारे मे है, हाथ में लिया है तो इसे पूरा ही करके रहना चाहिए। मेरी तो यह राय है कि वनस्पति - वेजिटेवल - के घी के नाम से घी आना ही नही चाहिए क्योकि इनकी परीक्षा हो ही नहीं सकती। और जो अन्य तेल घी मे मिलाए जाते हैं, उसको अलग तेल के नाम मे तेल के रूप मे आने दिया जाय।"

जोधपुर गवर्नमिन्ट, सेंट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पाँचवे अधिवेशन को रिपोर्ट
जुलाई, सन् 1940

पेज न 17

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा— श्रीमान् माननीय सभापति महोदय, मादीन जानवरो का नीलाम न करने बाबत कानून बनाने का प्रस्ताव वोर्ड के द्वितीय अधिवेशन मे रखा गया था। उस पर अब दुबारा बहस हो रही है। इस बारे मे मेरी अर्ज यह है कि काश्तकारो के बचाव और उनकी बहतरीन के लिए अगर कोई उपाय सोचना है तो पहले उनके गुजर का इन्तजाम होना चाहिये ताकि वे अपनी और अपने बाल-बच्चो की उदरपूर्ति कर सकें। यह बात सर्व प्रथम विचारणीय है।

जिस वक्त काश्तकार अपने घर पर भूखा पडा रहता है, उसके घर मे खाने को अन्न नही होता, उसके बाल-बच्चे भूख के मारे 'बिल-बिलाट' करते- चिल्लाते हैं, उस वक्त उसके पास सिवाय इसके कि वह वोहरे या महाजन से कर्ज लावे और अपने बाल-बच्चो का और अपना पेट भरे. उसके पास कोई चारा नही रह जाता।
मारवाड मे अभी तक किसानो के लिये कोई ऐसा इन्तजाम नही किया गया है कि जिससे उसको कम सूद पर सरकार से कर्ज मिल सके, जैसे कि दूसरे देशो मे इस प्रकार का कर्ज देने वाले बैंक स्थापित कर दिये गये है।

किसानो के पास मादीन जानवरो के होने से वोहरा यह समझ कर कि मेरा रुपया डूबेगा नही वरना मादीन जानवरो के कुर्की से वसूल हो सकेगा। किसानो को बैलो को जोडी आदि अपने पास मे पैसे खर्च करके दिलवा देता है और उसे 'आहवाले' लिखवा कर ऋण के रूप मे रखता है। इस तरह उसको वोहरे रुपयो का व्याज और उसे जो आमदनी होती है, वह उसी वोहरे को मिलती रहती है। किसान भी अपना गुजर करता रहता है।

परन्तु मादीन जानवरो की कुर्की अगर बन्द कर दी गई, तो वोहरो से जो किसानो को अभी कर्ज मिलता है, वह भी मिलना बद हो जायेगा।

किसानो को पहले ही इतनी ज्यादा सहूलियतें दी हुई हैं कि जाब्ता दीवानी के दफा 60 के मुताबिक उनके बैल, बीज का धान और एक साल तक बाल-बच्चो के खाने का धान छोड दिया जाता है। उनका मकान कुर्क नही किया जाता। उनकी औरतो के जेवर, स्त्री-धन आदि कुर्क नही किया जाता। मारवाड मे सन् 1917 में जब कि श्री महरबानजी दीवान थे, एक कानून जारी किया गया कि किसानो के मकान, बैल और बारह महिनो का धान दफा 60 के माफिक कुर्क नहीं होना चाहिए। उसमें यह भी निर्धारित किया गया कि चालू वोहरे की वसुली हो जाने के बाद मे ही उसके खिलाफ दूसरी डिग्री की इजराय हो सकती है, पहले नहीं। इस तरह किसानो के लिये पहले से ही सरकार ने खयाल करके कानून बनाया है तो फिर एक सिर्फ मादीन जानवरो की कुर्की रोकने से ही उनका ऐसा कौनसा फायदा हो जायेगा।

मेरे खयाल से तो ऐसा कानून बनाना किसानों के लिहाज से बहुत ही हानिप्रद होगा। ऐसा कानून बनजाने पर किसानो को बिल्कुल कर्ज नही मिलेगा और इसके अलावा जो 'साडियो गाडरो और गायो' के टोले रखने वाले हैं और उनके दूध ही से गुजर करने वाले हैं, वे भी इससे फायदा नही उठा सकेंगे।

इस लिए चीफ जजसाहब की जो राय है वह बिल्कुल ठीक है कि मादीन जानवरों की कुर्की पर कानूनी रोक लगने से बोहरे के कर्ज की वसुली होने का दूसरा कोई उपाय नहीं रहेगा। मैं, उनकी इस राय से सहमत हूँ।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पंचम अधिवेशन की रिपोर्ट
जुलाई सन् 1940

पेज न. 62

श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा—मैं इस प्रस्ताव के विषय मे यह अर्ज करना चाहता हू कि खाली परचे बाटने से कृषि की उन्नति नहीं हो सकती। मारवाड़ मे सबसे बडी कमी पानी की है। पानी का प्रबन्ध यदि हो जाय सब चीजें बहुतायत से पैदा हो सकती है इसलिए सबसे पहले पानी का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। जब तक पानी का प्रबन्ध नही हो जाता तब तक लाख पर्चे बाटे जायें तो भी पैदावार बिल्कुल नही बढ सकती।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पाचवे अधिवेशन की रिपोर्ट
जुलाई सन् 1940

पेज न. 67

श्रीयुत गुलाबचन्दजी ने कहा–इस प्रस्ताव के सबंध मे कुछ अर्ज करना चाहता हू खेजडी एक बहुत ही काम की चीज है। मारवाड मे दूसरा ऐसा कोई दरख्त नही है, जो खेजडी की तरह मवेशियों और मनुष्यो दोनो ही के काम मे आता हो। उसकी सांगरिया मनुष्य के साग के लिए काम मे आती हैं और बहुत ही महगी बिकती है। जानवरो के लिये इसके पत्ते और लोग काम मे आते है। इसकी लकडी जलाने के काम और घोचे, डाडे व पूठी आदि बनाने के काम मे आती है तथा गरीब लोग इसकी लकड़ी व सांगरियो को बेच कर अपना गुजर करते हैं। यह गरीबो के बहुत काम की चीज है। इसके काटने पर प्रतिबन्ध लगाने से गरीबों को बडा भारी नुक्सान होगा। अत. ऐसा नियम नही बनना चाहिए। मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हू।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पांचवे अधिवेशन की रिपोर्ट
जुलाई सन् 1940

❀ प्रस्तावक श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ❀

नगरों की वृद्धि और उन्नति मे सहायता देना सरकार का प्रथम कर्तव्य है। पचपदरा नगर मे रेल खुल जाने से वहा के व्यापार मे काफी वृद्धि हुई है लेकिन रेल्वे स्टेशन और पचपदरा नगर के बीच मे सड़क न होने से बैल गाड़िया इत्यादि के आवागमन मे बडी तकलीफ होती हैं। आम दरक्त ज्यादा होने के कारण रास्ते की उडती हुई धूल मनुष्यों के स्वास्थ्य पर भी बहुत बुरा प्रभाव डालती हैं। इसलिये यह बोर्ड सरकार से सिफारिश करता है कि रेल्वे स्टेशन औ पचपदरा शहर के बीच पक्की सडक बना दी जाय।

श्रीयुत सेठ गुलाबचन्दजी ने उपरोक्त प्रस्ताव को पेश करते हुए कहा– मैं यह अर्ज कर देना चाहता हू कि पचपदरा इतने दिन गिरी हालत मे था परन्तु सरकार ने महरबानी फरमा कर वहा रेल्वे लाइन खोल दी है और वहा पर पानी का इन्तजाम भी सस्ता और अच्छा कर दिया है। इन तजवीजो के हो जाने मे इस कस्बे की आबादी मे बड़ी तरक्की हो रही है। रेल्वे लाइन को खुले और पानी का इन्तजाम हुए अभी सिर्फ ६-७ महीने ही हुए हैं। इतने थोडे से अरसे मे वहा पर १½ लाख के मकान बन चुके हैं और रेल्वे स्टेशन और शहर के बीच मे जो खाली जमीन पडी हुई है, उसे बहुत से लोग खरीद कर वहा मकानात बनवाने की तजवीज कर रहे हैं। परन्तु स्टेशन और शहर के बीच जो ४–५ फर्लांग का रास्ता है। वहा इतनी धूल और इतने गड्ढे हैं वे भी रेत मे फस जाती हैं। धूल के उडने से लोगो का स्वास्थ्य खराब होता है और जानवरो को भी बडी तकलीफ होती है।

इसलिए इस नये उन्नतिशील कस्बे मे सड़क का बनाना बहुत ही जरूरी है। इससे इसकी आबादी और भी बढेगी। सडक के न होने से लोग वहा नई जमीन खरीदते हैं, वे सरकार की जमीन को भी अपनी जमीन में मिला लेते हैं और उस पर अपना कब्जा कर लेते हैं। सडक के बन जाने मे सरकार का नुक्सान नही होगा। सडक वहा जरा चौडी बननी चाहिये।

जोधपुर गवर्नमेन्ट, सैन्ट्रल ऐडवाइजरी बोर्ड के पच अधिवेशन की रिपोर्ट जुलाई सन् 1940

पेज न 83

श्रीयुत् सेठ गुलाबचन्दजी ने कहा–"वैसे दुष्काल तो करीब करीब सभी रियासतो मे पडा परन्तु हमारे महाराजा साहिब ने दुर्भिक्ष निवारणार्थ जैसा अच्छा प्रबन्ध किया वैसा प्रबन्ध दूसरी रियासतो मे मेरे देखने मे नही आया। हमारे दयालु महाराजा ने आज राजनीति क्या है और हिन्दुस्तान मे राजनीति के अनुसार अमल करने वाला कौन सा राजा है, यह दुनियां को दिखा दिया है। राजनीति का असली मतलब है प्रजा के दुख को समझ कर उसको दूर करना, पब्लिक की हर तरह की मदद करना। हमारे दयालु महाराजा साहिब ने राजनीति को अमल मे लाकर बता दिया है। महाराजा साहिब की दयालुता पर परमात्मा ने भी कृपा की है और समय समय पर मावटा करके - जल वर्षा कर - महाराजा साहिब की दयालुता को सिंचित किया है। यहा तक सिंचित किया कि जब अनाज का भाव ज्यादा तेज हो जाता था और उस वक्त सरकारी सस्ते धान की दुकानो पर बहुत सस्ते भाव से बेचा जाता था तो उस वक्त फिर बरसात हो जाती थी और अनाज फिर सस्ता हो जाता था।

ऐसा प्रबन्ध और कही नही हुआ कि दरबार साहिब ने इन्तजाम के लिए अपने मिनिस्टर्स को लगा दिया। मिनिस्टर्स इधर उधर दौडते रहे और पब्लिक के दुखो को दूर करने का प्रबन्ध किया। जहा पानी की तकलीफ थी वहा पानी का प्रबन्ध किया। जहा धान की कमी थी वहां धान पहुँचाया। जहा घास की तकलीफ थी वहा घास का प्रबन्ध किया। मतलब कि कपडो मे, खाने मे पीने मे हर तरह से लोगो को मदद दी गई और जिस चीज की जहा पर कमी महसूस की गई वही फौरन उस कमी को पूरा किया गया। मैं ऐसे दयालु महाराजा साहिब को कोटिश धन्यवाद देता हूँ और परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि महाराजा साहिब को व उनके राजकुटुम्ब को चिरायु करें।

सेठ गुलाबचंदजी !

-श्री पन्नालाल पनल
(बाड़मेर)

सोरठा—

1 अवनि तल पर आत ऐहडा नर तो कदे कदे ।
भाजत जग दुख वात, सुहुव करदे सहु जगत यो ।।

2 रग रग उण नर रीह, लग भग पर हित फरहरे ।
जग नग जे करनीह, पग पग परायो कारणे ।।

3 अदभुत उण उर होत, जोत जथारथ भावरी ।
सदवुघ उण वड होत, फल री करे न चावणा ।।

4 मातु दीठो इक स्वाव, नग जगमगातो जोत सो ।
घण गुण वीर गुलाव, पायो जनम उण आंगणो ।।

5 गुणियद चद गुलाव, गोद हजारी मल रे ।
सालेचा शुभ भाव, सागर कुल चोखो करी ।।

6 आदू घरों की रीत, प्रीत रखी पुर जोर सू ।
सद्गुण तणी प्रतीत, थो राखीह गुलावचन्द ।।

7. आवत जे न गुलाव, पचपद्रे री पात मो ।
तो होत कदे न सुभाव, जेहडो जोवन मे आज है ।

छप्पय—

8 गजव वीर गुलवेश, देश रो नामी दीवो ।
सालेचा कुल कान, मान रो नामी दीवो ।।
वीर व्रती रो भान शान कुल राखन हारो ।
वाह रे वीर गुलाव, सागर कुल वीर सितारो ।।
मडन मे मजवूत घणा, घन्य तुम्हारी धीरता ।
हजारीमन्न कुल शोभ रही, गुलाव तुम्हारी गभीरता ।

9 लवण कियो जद वद अघ आदेश अग्रेजों,
भूख मरन लगा लोग, वढी वेरोजी मरेजो,
कर कोशल सूं कार, देश मो दौरो कीनो ।

देशी नमक रो दाव, लोगो रे मन हर लीनो ।।
लन्दन लवरण पाछो गयो, पूछ हुई निज नमक री ,
श्री उम्मेदसिंह दरबार मेहर सू , चली रोजी फिर नमक री ।।

10 ऐसो चल्यो आदेश, इसोलवेसी खाता भरिया ,
जलता पुरजा सँग, मजे सू उरण रग रगिया ।।
वोहरो री तो बात केवरण जेहडी नही राखी ,
बिखरचा सब उरण वेश लोग सब ऐसी भाखी ।।
डमल्ट हुई इसोलवेंसी री, हुक्म दियो सरकार यो ,
कार वद हुआ उरण वेंसी रो, जद सुनलो तो दरबार यो ।।

घनाक्षरी —

11. कोई नहीं साधन थो, पचपद्रे पहुँचनो ओ—
खूणे मे पचपद्रो, विन रूख पाणी वारो थो ।
कठेई कोई शायद सुण्यो, पानी रा वाजार लगता,
पचपद्रे मे पानी री कमी रो नहीं पारो थो ।।
गाव गाव रे गाडो माये, ठाव ठाव भर पानी आतो
तरै तरै रा भव उरण लगत व्यौपारो थो ।
आज मीठे पाणी रा जै होद भरचा उरण हेत
जल लाग पच्चो एक गुलाव हजारी वारो थो ।।

12 गाडी आडी आडी वेती, नेडी न आती पचपद्रे रे,
नेडी लारण तडफ्यो, गुलावचन्द आप थो ।
किता ही सुजाव दिया जोध सरकार नो पै—
कोई नही लाभ उरण गाव ने दिरवावतो ।।
खूब लड़ लड वड़ कर वीर आगे आयो,
कौन जिम्मेवारी राजवन (हानि) हेतु लेवतो ।
निज सपति परहित सारी लिख दीनी,
वाह नर वका हर मुख सुन्यो जावतो ।।

13. परहित घरहित भूले नर विरला ही,
थू तो परहित निज घर भूलिगो ।
केहडी होती खवर ऐ रेल खेल अधूरो रैतो,
घर रो न घाट रो सो बात क्यू व भूलिगो ।।
राखे लाज परायो री, राम उरण लाज राखे,
लाज रही थारी, मन आनन्द मों झूलिगो ।।

आज धडाधड चाले जोर सू गुलाव गाडी,
नर नार हियो सो आनन्द मे प्रफुलियो ।।

14 विद्या के प्रचार के प्रसार को विचार कर,
धरम को भी साथ कुछ फेलन विचार के ।
सरदारपुरा जोधोण मे जैन वोडिंग ठायो,
ठाठ सू धरम प्रचलन उर धार के ।।
सैंकडो हजारो छात्र ज्ञान भरपूर पावे,
कैसी सूज तोरी श्रो विचार सत सार के ।
होस्पिटल तहसील राख्या पचपद्रा मे जोर कर,
वाह रे दिलावर वीर पुत्र श्री हजारी के ।।

15 आपको निरालो ठाठ, बुढापे मे भी गुलाबचन्द,
विद्या की विशाल ठाव में ठान को
कालेज बणाण या ढवान इण ठोर माही,
पूरण मेहनत उधरण ऐ धरन को ।।
तोरे ही भरोसे पै गुलावी गुल खिल गया,
फूल रया पढ कर वालक ऐ नरन लो ।।
कैसे कथू कार तोरे कलम भी न काम देवे,
तू तो दिखलावे महाभाग ई धरन को ।
वड मन हृदय विशाल, तोरे सुत जग में नामी ।
अमृत रस रो रूप, अमीचन्द नेक दिल नामी ।।
चम्पालाल विशाल भाल, मति वको लागे ।
छगन मगन निज लगन, पराये हित अनुरागे ।।
चारो सुत सेठ साहव रा, चार वडा नग छा रया ।
इण खानदान री खासियत रो, प्रतछ रूप दिखा रया ।।
तौ पित्रु धन सुख दास जिये, वरस चौरानु आयु ।
पनल की श्रे अरज है, रहो आप सत आयु ।।
अहो विशाल ओसवाल सो प्रगल वुध,
रेतड मे रगु अंग अग तू भरायो है ।
सूखे मारवाड़ उर शूर तूं तो ऐसो मानो,
मरुमात उर नव नग तू जडायो है ।।
धर्म ध्वज लव कज सज धज धारी मानी,
प्रतछ धरम रखवारो धरा आयो है ।
समझ न आवे मरुमात केडो तप कियो,
उण फल तों सो ऐ सपूत पूत पायो है ।।

कोटि-कोटि प्रणाम

धन्य-धन्य सेठ गुलाब, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

हजारीमलजी के नन्द दुलारे, माता ....के नयन सितारे,
मन मे धारे पूरे पारे "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

पचपदरा के दिव्य सितारे, सालेचा वश के उज्ज्वल तारे,
सर के ताज हमारे, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

कठिन तपस्या गाव वश (हित) कीनी,
कर कल्याण सबो को तारे, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

मीठा पानी, पीयूस ज्यो लाकर, (पाकर) अपना निज का नुकसान उठाकर
पचपदप (प्राणीमात्र) के प्राण आधारे, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

क्षण-क्षण (पल-पल) गाव का ध्यान लगावे, रेलगाडी गाव में लावे,
पचपदरा के एक सहारे, "तुमको लाखों प्रणाम"[2]

दीन दुखियो के भाव को देखा, उनका दुख मन से परखा,
कर जीवन उपकार हमारे "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

सव धर्मों का आदर करके, जाती तहसील को कायम रखके,
पाया पूरा सत्कार, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

नमक का धन्धा विकसित करके, दीन दुखियों का जीवन भरके,
देख सभी हरखावे, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

नर-नारी दर्शन को आवे, देख सेठजी को अचरज पावे,
होकर सभी निहाल, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

दो हजार पेतीस अब आया, मीगसर वद 5 फरमाया,
आकर लाखों करे प्रणाम, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

धन्य तुमारे लाल है प्यारे, पचपदरा के वे हैं दुलारे,
राह तुमारी धारे, कर सव का कल्याण, "तुमको लाखो प्रणाम"[2]

—मांगीलाल श्रीश्रीमाल

☆

शत शत वन्दन ! अभिनन्दन !

फूल तो अनेक है परन्तु 'गुलाब' तुझ जैसा महका कोई नहीं ,
सितारे तो अनेक हैं परन्तु 'चन्द्र' तुझ जैसा शीतल कोई नही ।
ओ 'गुलाब' और 'चन्द्र' के समन्वय 'सेठ गुलाबचन्द्र' ,
पचपदरा की धरती पर तुम्हारे जैसा चमका कोई नहीं ।

प्राकृतिक सौन्दर्य के ताज को कश्मीर कहते हैं ,
दिखाये रण मे कौशलता उसे रणवीर कहते हैं ।
जीवन मे अपने पुरुषार्थ से जो बहाये स्नेह की गगा ,
ऐसे ही अनमोल रत्न को तो कर्मवीर कहते हैं ।
जीने की यूं तो दुनियां में कई किस्म की रीतें हैं ,
कई जीने के लिए पीते हैं कई पीने के लिए जीते हैं ।
परन्तु विरले ही मिलते हैं जो जीवन मे तलवार न बन ,
सुई की तरह औरो के फटे आंचल को सीते हैं ।

बहारों को, सितारो को, नजारो को नाज है तुझ पर ,
हवाओ को, घटाओ को फिदाओ को, नाज है तुझ पर ।
गुलाब ! तुमने महका दिया है रेगिस्तान की धरती को ,
अमीन को, चमन को, गगन को, नाज है तुझ पर ।

जिसकी सौरभ से महक रहा आज हर इक वन उपवन ,
जिसकी कीर्ति गा रहा पचपदरा का हर इक जन-जन ।
ऐसे समाज सेवी, निष्काम कर्मयोगी सेठ स्वीकार करे ,
हृदय से निकला हुआ हमारा शत, शत वन्दन ! अभिनन्दन ! !

—ओमप्रकाश बांठिया

सेठ श्री गुलाबचन्दजी के प्रति समर्पण

वे युवक रहे, जिनको जग मे सुख से पहले,
हस हस कर दुःख सह लेने का अभ्यास रहा।
ज्वाला की लपटों से तपने से चमक उठे,
उस अमर तपस्वी को ही 'कुन्दन' कहते हैं।।
अगनित विषधर लिपटे रहने पर भी,
दुर्गन्धित न हो, उस तरू को ही 'चन्दन' कहते हैं।
वे तरुणी है, जिनको तूफानो मे पडकर,
अपने तट पर लग जाने का विश्वास रहा।।
पाषाणो को भगवान बना देती है,
उस अमर साधना को ही पूजन कहते हैं।
फूलों से पहले शूलों से जो प्यार करे,
उस अल्हड जीवन को ही यौवन कहते हैं।
हम उनके जीवन को यौवन कहते हैं,
जिसने जीने के साथ-साथ बदला इस दुनियां का इतिहास रहा।।
जष्ठ का परीमान न रहने पर भी निरधि निरधि ही रहते हैं,
पनघट नहीं बना करते।
अगनित पतझड आने पर भी उपवन-उपवन ही रहते हैं,
मरघट नहीं बना करते।
जवानी इनके जीवन को कहते हैं,
जिनको हस-हस कर मरने का उल्लास रहा।।

—विजयराज संखलेचा

गीतिका

मेहेंके फूल गुलाब रो, गुलाबचन्द गुण खान।
पचपदरा री जनता ने थे दियो अनोखो मान ॥

सालेचा परिवार मे, वीर हजारी जाण।
दत्तक आय थे दिपायो, कुल रो साचो नाम ॥

रेलगाडी रे आवा सु, जन पायो सुखधाम।
सारी जनता गायो है, "गुलाब गाडी" अभिराम ॥

पाणी प्यासी जनता रे, दुख रो नही थो पार।
नल विजुली सु लाय ने कर, दियो जलकार ॥

पचपदरा तहसील री हील गई थी नीव।
साचे हृदय कोशीशी सु हुई आपरी जीत ॥

पडपोत्र हो आपरा दिजो आ आशीष।
आपरे रस्ते चालसो जन्मभुमी जगदीस ॥

रचियता
—अशोक कुमार सालेचा
प्रथम पडपोत्र, सेठ गुलाबचन्दजी
पचपदरा नगर

माननीय सेठ गुलाबचन्द के साथ मधुर संस्मरण

माननीय सेठजी के सम्पर्क मे आने का शुभ अवसर सन् 1961 जनवरी से मार्च तक मिला। मैं उस समय बालोतरा मे अध्यापक था एवं उसी वर्ष स्नातक की परीक्षा दे रहा था। आपके विशाल भवन के पास एक कमरे में रात्रि मे एक चिमनी की रोशनी में अध्ययन करता था।

सेठजी मेरी दिनचर्या व रात्रि अध्ययन का कार्य ऊपर की मंजिल से अवलोकन करते एक दिन आप मेरे कमरे में आकर मुझे प्रेरणा व मार्गदर्शन का आशीर्वाद देते हुए कहा कि भाई तुम यदि चाहो तो मेरे मकान से बिजली की व्यवस्था कर अध्ययन कर सकते हो। सेठजी के इस निस्वार्थ सहयोग से मेरे हृदय मे आज तक आपके प्रति अपार सम्माम व स्नेह है।

मैं आपके कर्मठ जीवन मे जन सेवाओ के लिए महान योगदान के लिए आपके सुखमय जीवन व दीर्घ आयु की कामना करता हूँ।

राधेश्याम वासु
मंत्री, बाड़मेर जिला
प्रौढ शिक्षा समिति

सेठ गुलाबचन्दजी मेरे प्रेरणा स्त्रोत हैं

94 वर्ष के वयोवृद्ध सेठ श्री गुलाबचन्दजी केवल मेरे गांव के ही नही बल्कि मेरे पुज्य बा ना भी हैं। बचपन से अब तक उनको बहुत निकट से जाना और समझा हैं। उनके जैसा कर्मयोगी, क्रान्तिकारी, सेवाभावी और दूसरो को प्रेरणा देने वाला इन्सान विरला ही होता है। वे मेरे बुजर्ग है इसलिये नही बल्कि वे एक ऐसे आदर्श प्रेरणा पुंज है जिन्होने अपने जीवन मे अद्भुत कार्य किया हैं सामाजिक क्षेत्र मे रूढिया तोडी, राजनैतिक क्षेत्र मे गुलामी की बेडीया तोडी और धार्मिक क्षेत्र मे साम्प्रदायिक दिवारे तोड़ी। धर्म के प्रति गहरी निष्ठा है और सप्रदाय का भेदभाव नही रखते है।

मुझ पर उनका सदा स्नेह और कृपा बनी रही हैं। वे अपने जीवन के अनुभव और सस्मरणों से यही प्रेरणा देते है कि केवल व्यवसाय से पैसा पैदा करना बडी बात नही बल्कि उद्योग धन्धे स्थापित कर उसमे लोगो को काम दिलाना अधिक जरूरी है। केवल अपना पेट भरना सभी करते हैं, जो दुसरो के लिये काम आता है उसी का जीवन सार्थक हैं। उनको शिक्षा को जीवन मे उतारने का मै भरसक प्रयत्न करता हु, और भी करता रहुगा सेठजी का स्वभाव कोमल है किन्तु वाणी मे आज दृढता है। अक्सर हिन्दी भाषा मे ही बातचीत करते हैं। सादगी और सयम उनके जीवन के विशेष गुण स यम के कारण ही आज इस उम्र मे भी वे हम जैसे व्यक्तियो से अधिक स्वस्थ है।

मैं उनके अभिनन्दन के अवसर पर अपनी हार्दिक श्रद्धा और शुभकामनाए व्यक्त करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना करता हु कि सेठजी शतायु हो और हम सबको इसी प्रकार प्रेरणा देते रहे।

सोहनराज सालेचा

सेठ साहेब श्री वृद्धावस्था किन्तु युवको से आगे

अहर्निष कर्मठ समाज सेवी सेठ साहेब श्री गुलाबचन्जी के साथ निजी सम्पर्क एव साथ में रहने का अवसर मिला है। साहसी व व्यक्तित्व प्रभाव से जो कार्य आपने हाथ से प्रारम्भ किया है वह कठिन से कठिन निर्विघ्नतापूर्वक सफलता से पुरा किया है।

ध्रुव आज्ञावादी के वचन व लेखनी मे जो शक्ति है उसे देखकर आश्चर्य चकित होकर पाषाण हृदय वाला भी नत मस्तक होकर गुणगान किये वगैर नही रहेगा। वृद्धावस्था होते हुवे भी युवको से प्रत्येक कार्य मे आगे रहे है।

महान् तपस्वी के साथ दो दिन–

सीकर मे जनसघ का अधिवेशन था वाडमेर जिले के कार्यकर्ता एव सेठ साहेब के साथ एक ही स्थान पर रहने का अवसर मिला। रात्री को तीन बजे मेरी अचानक नीद खुली मेरे पास में सेठ साहेब भगवान की प्रार्थना एव अपने इष्ट देव की आराधना में मग्न थे। ईश्वर भक्ति के वाद ठीक चार बजे सभी कार्यकर्ताओ को उठाकर दैनिक कार्य से जुटाकर समय पर अधिवेशन के प डाल मे पहुचा दिया।

दोपहर के कार्यक्रम श्रीमान् सुन्दरसिहजी भण्डारी साहेब का बौद्धिक चल रहा था। जिले के कार्यकर्ताओ की कमी देखकर प डाल से कमरे में आकर देखा तो कुछ कार्यकर्ता तास खेल रहे थे। उन कार्यकर्त्ताओ को सम्बोधित करके कहा कि सैकडो मिल से अधिवेशन के लिये आये हो भण्डारी साहेब का बौद्धिक हो रहा है। क्यो नही लाभ उठाते। कार्यकर्ता लज्जित होकर प डाल पहुचे। ईश्वर आराधना तथा समय पर कार्य करने की प्रेरणा मिली।

प्रकृति का सामना–

जोधपुर से दूर वाडमेर नगर मे कॉलिज की स्थापना होने का स्वपन मे भी सम्भव नही था। लेकिन कर्मठ साहसी समाजसेवी तपस्वी ने इस महान कार्य को अपने हाथ मे लीया। मरु-देश मे जेठमास के महीने मे भयकर लू उडती रेत तथा उष्ण हवा से सरोवर कूप पेड जहा शुष्क हो जाते है। उस प्रकृति का सामना करते हुवे सेठ साहेब मेरे औषधालय में दोपहर को एक बजे पधारे। वार्तालाप के बाद आराम की सलाह दी किन्तु सेठ साहेब निरन्तर काम से झुझने वाले कर्मयोगी को आराम कहा वह तो कॉलेज बनाने की धुन मे मस्त होकर निकल पडे अकेले भयंकर धूप मे सरकारी कार्यालयो मे तथा जन सम्पर्क के द्वारा जो सामग्री की आवश्यकता की वह जुटाकर वाडमेर नगर मे कॉलेज की स्थापना करवा दी।

आयुर्वेद चिकित्सा का अनुभव–

आयुर्वेद चिकित्सा का ज्ञान आपको वहुत सुन्दर है। आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली पर आपको अटूट विश्वास है। अपने देश की जडी वुटियो से निर्मित औषधियो को सेवन करने मे गौरव समझते हैं। आयुर्वेद की

औषधिया आप स्वयं निर्माण करते हुवे देखें गये है। गरीबो को मुफ्त औषधिया देते रहें है। शुद्ध आयुर्वेद का चिकित्सक होने के नाते मेरे पर पूर्ण कृपा रही तथा पुत्रवत समझते है। महान तपस्वी कर्मठ कार्यकर्ता देशप्रेमी समाज सेवी कठिन परिश्रमी आशावादी प्रकृति एवं बाधाओं से झुंझने वाले श्रीमान सेठ साहब श्री गुलाबचन्दजी सालेचा से पचपदरा शोभायमान हो रहा है। इनके जीवन की कठिन स्मृतियो को लेकर पचपदरा की पावन भूमि मे मेला लगता रहेगा जिसमे जीवन मे प्रेरणा मिलती रहेगी। बाड़मेर जिला पचपदरा तहसील जब तक रहेंगे तब तक सेठ साहेब का नाम अमर रहेगा।

वैद्य श्रीवल्लभ शास्त्री
आयुर्वेदाचार्य
नगर अध्यक्ष जनता पार्टी
बाडमेर

✱

सेठ गुलाबचन्दजी सालेचा पचपदरा वाला के प्रति

दोहा—हजारीमल सेठ घर, गोद पुत्र श्रीकार।
सार्वजनिक, उपकार हित, निश दिन 'गुलाब" तैयार॥

सेठ गुलाबचन्दजी साहिब का जीवन उम्रभर तक पचपदरा के उत्थान कार्यो मे ही बीता आपका संवत 1973 मे श्री सेठ हजारीमलजी के गोद पधारयण हुआ आपके साथ मेरा पचपदरा के सार्वजनिक कार्यों मे हाथ बंटाणे का काफी सपर्क रहा।

जैसे कि इन्सोलवेन्सी के कार्य में जोधपुर व इधर इधर गांवो मे घूमने व जोधपुर मे साथ रहने का बहुत समय कामकाज रहा। ओसवाल समाज की श्री सीवानची सभा मे भी बार-बार साथ रहने याने आपके साथ रहने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ व रेल पानी मोटर द्वारा लाने आदि के समय मे गावं मे ओसवाल समाज पचपदरा मे दो मन होने पर भी हमारा आपके साथ एक मत रहा।

आपका मिलन सार बडा प्रेम व अन्य उच्च आचरण के साथ होना रहता है जो बडा ही सराहने योग्य है।

आपका जैन समाज के साथ व जैन समाज के साधुसतो आचार्यों के दर्शन व्याख्या आदि 2 कार्यों में भी अधिक शुभ चेष्टा रहती है।

अत में आपके गुणों की विशेष व्याख्या क्या लीखु आपका जीवन सार्वजनिक कार्यो मे बहुत हित कर हैं।

निवेदक
मोहनलाल लूंकड़
पचपदरा निवासी

सेठ श्री गुलाबचन्द अभिनन्दन ग्रंथ

खण्ड २

नमक आंदोलन

सपादक पुखराज आर्य
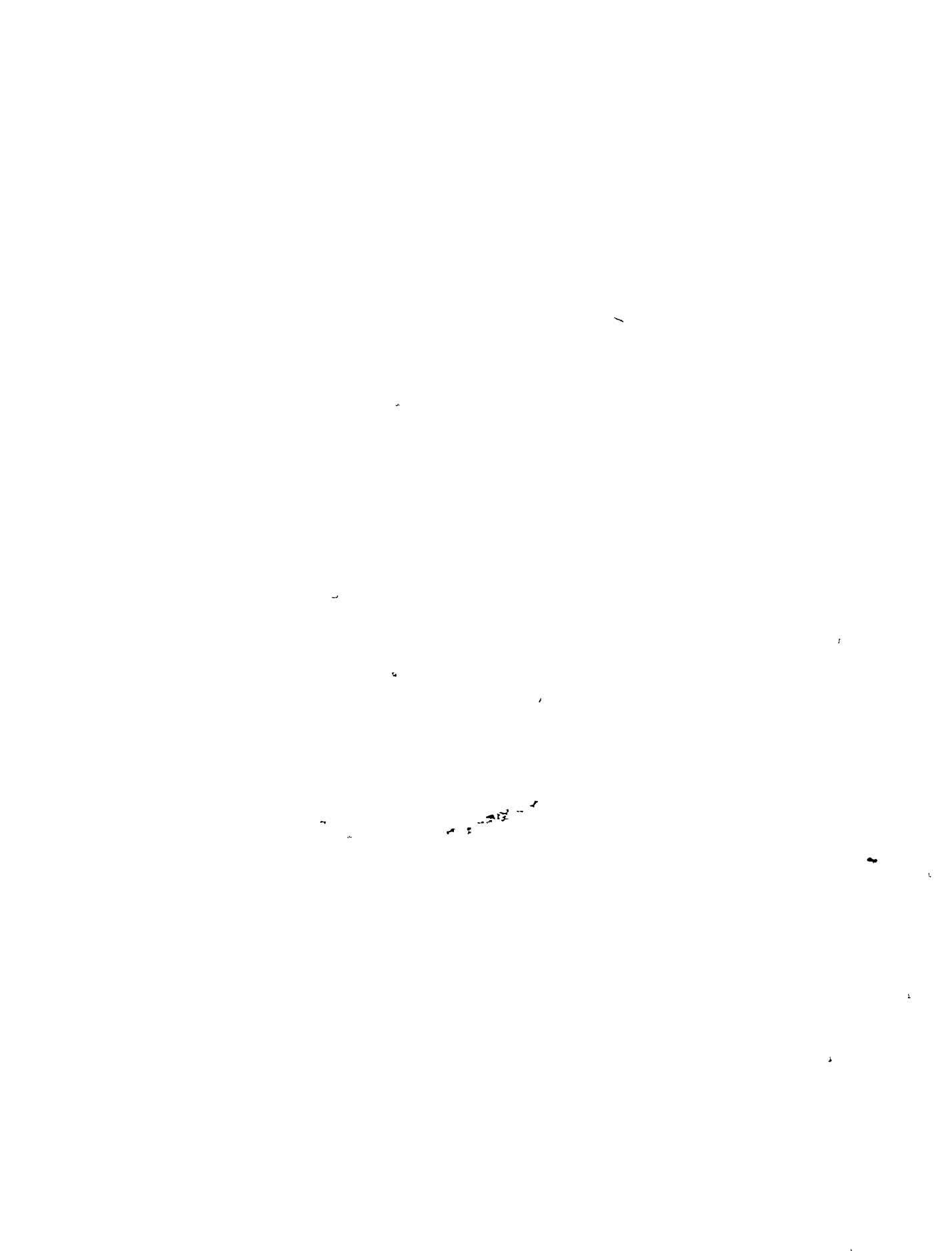
सेठ गुलाबचन्दजी सालेचा

पचपदरा का नमक उद्योग

ऐतिहासिक विवरण

—चंपालाल सालेचा

लगभग 500 वर्ष पूर्व की बात है। मेवाड का एक राज्य अधिकारी वर्तमान पचपदरा ग्राम के पास से अपने सरकारी कार्य से गुजर रहा था। मार्ग के पास के कुछ गढों में वर्षा के कारण पानी पडा था। उस अधिकारी को पानी में कुछ रवेदार कण चमकते हुए दिखाई पडे। अधिकारी कौतुहल वश अपने घोडे से उतर पडा। पानी मे हाथ डाल उसने कणों को निकाला। अत्यन्त चमकदार सफेद चौरस रवे उसकी आखो और मस्तिष्क पर छा गए। चखने पर उसे नमक का आभास हुआ पर इतने सुन्दर चमकदार रवो का नमक उसने पहिले कभी नहीं देखा था।

थोडी देर मे जिस हाथ को उसने पानी मे डाला था, उसका पानी सूख चुका था व हाथ पर अत्यन्त छोटे-छोटे सफेद कण उभर आये थे। जिज्ञासावश उस पानी का चुल्लू भरा व चखा तो पानी अत्यन्त खारा था जिसे तत्काल थूकना पडा। अधिकारी का हृदय उल्लास से भर गया। आज उसने अनायास ही एक अनोखी चीज प्राप्त की थी। सहज ही उसका मस्तिष्क कल्पनाओं के सागर में हिलोरे लेने लगा। अधिकारी उस समय वही ठहर गया।

इस अधिकारी का नाम झाझा था। कहते हैं रात्री को झांझा सो गया तो उसने स्वप्न मे दो देवियों को देखा। देवियो ने झाझा से कहा कि पास के एक पेड के नीचे हमारी दो प्राचीन मूर्तिया दबी पडी हैं। यदि उन मूर्तियो को निकाल कर मदिर मे स्थापित किया जाय तो तुम्हें व तुम्हारी सतानो को पीढ़ियो तक इस खारी चांदी से लाभ मिलता रहेगा। देवियों ने नमक के सम्बध मे झाझा को स्वप्न मे उत्पादन विधि भी समझा दी।

जहां झाझा ठहरा था वहां एक जाट की ढाणी थी। जाट का नाम पाचा था। कहते हैं इसलिए इस स्थान का नाम पचपदरा पडा। पुरानी डाक की छापों, दस्तावेजों इत्यादि मे अनेक जगह पचपदरा के नाम का उल्लेख है। ऐसा भी बताते हैं कि उपरोक्त दो नही, यहां पच मुद्रायें अर्थात पाच देवियो का स्थान था इसलिए इसका नाम पचमुद्रा पडा जो कालान्तर मे पचभद्रा हुआ और जो आगे जाकर पचपद्रा हो गया।

देवी के स्वप्न दर्शन ने झाझा में और भी उत्साह पैदा किया। देवी द्वारा साकेतिक स्थान पर खोदने पर देवी की प्रतिमायें प्राप्त हुई जिन पर साभरा व आसापुरा देवियों के नाम अ कित थे। तदानुसार देवियो की स्थान प्रतिष्ठा की गई। आज भी यह स्थान देवल नाम से पचपदरा साल्ट के नमक उत्पादन क्षेत्र के बीचो बीच स्थित है और खारवाल जाति आज इसे अत्यन्त श्रद्धा से पूजती है। खारवालो की मान्यता है कि नमक का उत्पादन इस

देवी का प्रताप या प्रसाद ही है जो देवी का झाझा को दिए गए वरदान के फलस्वरूप उन्हें प्राप्त हो रहा है।

झाझा इसके पश्चात अपने घर गया और अपने परिवार व रिश्ते के लोगों को इस स्थान पर लेकर आया। उन्होने अपने कौशल से प्रकृति के इस रत्न भडार को मानव के उपयोग हेतु काम में लेना प्रारम्भ किया।

आज पचपदरा मे जो खारवाल जाति निवास करती है उनके गाव की वशावलियो से यह स्पष्ट है कि इस जाति के पूर्वज यही के थे और इनकी उत्पत्ति क्षत्रिय अथवा राजपूत परंपरा से है। इनकी सबसे बडी सख्या पचपदरा में ही है। लगता है अन्य विभिन्न स्थानो पर भी वे पचपदरा से ही गये थे। वहा सभवतया वे अपने नमक-उत्पादन की कार्य कुशलता के कारण गये थे। इन्हें कही खारवाल, कहीं खारोल व इसी प्रकार के नामो से पुकारा जाता है। इन सभी नामो का उद्गम इनके खार अथवा क्षार अर्थात नमक के उत्पादन से ही सबध रखता है।

झाझा का नमक उत्पादन कार्य ज्यों ज्यो गति अथवा व्यवस्था पकडता गया त्यों त्यों तत्कालीन शासकों की नजर भी इस कार्य पर पडी पर लगता है काफी समय तक स्थानीय जागीरदार के सहयोग से झाझा के वशज व अन्य सहयोगी नमक का उत्पादन कार्य स्वतन्त्र रूप से चलाते रहे पर चू कि हर भूमि की आमदनी का कुछ भाग लगान के रूप मे राज्य को मिलता था इसलिये राज्य के अधिकारियो का ध्यान इस उत्पादन के लगान पर भी गया।

मारवाड के पूर्व के इतिहास-व्यवस्था के कागजो को देखने से पता लगता है कि इस राज्य ने भूमि पर केवल किसान अथवा जागीरदारों का ही, जिन्हे भूमि आवंटित की गई थी, अधिकार माना था। परन्तु भूमि के नीचे की अन्य आमदनी, जो खान के रूप में खनिज आमदनी थी, उसकी उपज का अधिकार राज्य अपने नियत्रण मे रखता था। इस प्रकार के अधिकार के अन्तर्गत तत्कालीन मारवाड राज्य ने पचपद्रा के नमक उद्योग मे भी हस्तक्षेप किया।

पचपद्रा इसके पूर्व सिवाना हकुमत का 700 रु वार्षिक की रेख का गाव था। लेकिन राज्य ने यहा नमक का दरीबा घोषित कर यहा एक हाकिम की नियुक्ति की जो हाकिम दरीबा पचपदरा कहलाता था। दरिबा पचपदरा ग्राममे एक सरकारी कार्यालय के रूप मे सवत 1821 में अथवा इसके पूर्व स्थापित हुआ, जबकि पचपदरा ग्राम मे खारवालो व ओसवालो के विभिन्न परिवार सवत 1700 के पूर्व से ही बसना प्रारम्भ हो गये थे। स्पष्ट है कि सरकारी नमक उत्पादन प्रारम्भ होने के कम से कम 150 वर्ष बाद पचपदरा मे पूर्ण विधिवत उत्पादन की स्थिति आने में भी कम से कम 100 वर्ष लगे होगे। इस प्रकार पचपदरा का नमक क्षेत्र 400-450 वर्ष पुराना माना जा सकता है। सवत 1800 के दस्तावेजो मे पचपदरा को एक कस्बा बताया गया है वह भी उपयुक्त तथ्य की पुष्टि करता है।

ज्यों ही पचपदरा में दरीबा कायम हुआ, तत्कालीन हाकिम ने खानो के पट्टे देना प्रारम्भ किया। उस समय एक खान का पट्टा केवल पाच रुपये मे दिया जाता था जो लगता है केवल सरकारी अधिकार की पुष्टि के दस्तावेजो

का शुल्क मात्र रहा होगा । राज्य की ओर से इस कार्य मे लगे खारवालो को अनेक सुविधाए दी गई । पचपदरा मे पूरे खारवालो के मोहल्ले का एक पट्टा है जो लगता है अत्यन्त रियायती दर मे खारवालो के पचपदरा मे वसने हेतु दी गई होगी । पचपदरा के शिलालेखो पर खुदी सनदें इस वात की प्रमाण है कि राज्य मे इनको वसाने व इस उद्योग को पनपाने हेतु सभी प्रकार से सुविधाए दी गई जिनमे रियायती दर पर भूमि, खरडा लाम जो मारवाड़ भर मे लगता था, उससे मुक्ति, वेगार से मुक्ति इत्यादि प्रमुख थी ।

विधि व पद्धति

खारवाल तो नमक वनाते थे पर उसके विक्रय हेतु व्यापारियो को वसाना जरूरी था । अतः खारवालो के साथ-साथ महाजन भी इसी प्रकार वसाए गये । पचपदरा की महाजन वस्ती भी आसपास के ग्रामो से आई । सेठ गुलावचन्द का मालेचा परिवार सवत 1735 मे गोपडी से आया । इसी प्रकार मडापुरा, नेवाई, थोव, रामसिन,मू गडा, तिलवाडा इत्यादि गाँवो से भी महाजन यहा आकर वसे । उनको वसाने में सहयोग रूप उन्हें भी खारड़ा इत्यादि लगानो से माफी दी गई ।

पचपदरा में नमक उत्पादन का तरीका विश्व के अन्य स्थानो पर प्रचलित तरीको से भिन्न है । अन्य स्थानों पर भूमिगत नमक स्रोतो पर ही अधिकाश झीलें हैं । साभर की झील इस हेतु प्रसिद्ध है । गुजरात का खारागोडा नमक क्षेत्र भी ऐसा ही है । डीडवाना में भी नमक की झील है पर पचपदरा मे ऐसी कोई झील नही है । अन्य सव स्थानो पर पानी को क्यारियो में सुखाया जाता है पर पचपदरा में नमक हेतु खानें खोदी जाती हैं । 100 से 500 फीट तक लम्वी व 40 से 100 फीट तक की चौड़ाई की इस समय पचपद्रा मे लगभग 750 चालू खानें हैं । जिन खानो में मिट्टी की परत जमकर गहराई पर जाती है नमक उत्पादन वन्द कर देती है और उसका मालिक उस खान को पुन नही खुदवाता हैं उसे पडतल खान कहते हैं । ऐसी पडतल खानो की सख्या हजारों में है । एक खान को खोदते समय 13 फुट की गहराई तक ले जाया जाता है । खानों का लम्वा भाग पूर्व से पश्चिम होता है, जो बताता है कि पानी के वहाव का क्रम इस क्षेत्र मे उत्तर-दक्षिण का है ।

पानी के घनत्व को, नापने के हाईड्रोमीटर से, तरल पदार्थों का घनत्व वोमे (Baume) डिग्री में मापा जाता है । पचपदरा के इस ढलान मे यह घनत्व प्रारम्भिक पानी का 13 डिग्री से 14 डिग्री वी के आस पास होता है, जव कि समुद्री पानी का यह घनत्व प्रारम्भिक अवस्था में केवल 3 डिग्री का होता है । इससे सहज अन्दाज लगाया जा सकता है कि पचपदरा के नमक उत्पादन मे भूमगत पानी कितना गाढा होता है । यह पानी 5-6 फीट की गहराई से आना प्रारभ हो जाता है और इस प्रकार एक नई खुदी खान मे लगभग 6-7 फीट तक पानी भर जाता है ।

यह पानी खान में प्रवेश के साथ ही एक बडे होज का रूप धारण कर 2-3 दिन मे ही अपने प्रारंभिक लवणीय कणो के जमाव के कारण अपने आगम श्रोतों का बन्द कर देता है और उसके साथ ही पानी के निष्कासन अवरोध के साथ एक सुरक्षित क्रिस्टेलाइजेशन पाउन्ड बन जाता है और इसमे सूर्य की गरमी से वाष्पीकरण होकर घनत्व वृद्धि होती रहती है।

पचपदरा के भूमिगत लवणीय जल मे साधारणतया निम्न लवणो का मिश्रण होता है—

सोडियम क्लोराईड कैलशियम सलफेट

मेग्नेशियम सलफेट मेग्नेशियम क्लोराईड

इन लवणों का जमाव क्रम—(Crystalization stage Saturation Point) इस प्रकार है—

कैलशियम सलफेट	18° बी.	सोडियम क्लोराईड	25° बी.
मैंग्नेशियम सलफेट	32° बी	मैगनेशियम क्लोराईड	36° बी

अत सर्वप्रथम पानी की सतह पर हल्की पपडी के रूप मे केलशियम सलफेट जिसे कज्जी अथवा फूलीया कहते हैं और जो भी 25 डिग्री बी से पहिले तक इकट्ठा होता है, ऊपर से ही अलग कर दिया जाता है।

25 डिग्री बी पर नमक के Saturation स्थिति पैदा होती है। स्थानीय भाषा मे इसे खान का कनार पर आना कहते हैं। यह वह स्थिति है जहा यह तय करना होता है कि नमक रवेदार बडी डली का बनाना है या छोटे कणो का। यदि बडी डली का बनाना है तो मोराली नामक एक कटीले वृक्ष की झाडिया को नमक मे बिछा दिया जाता है। इस काटेदार डाल की विशेषता यह है कि नमक के पानी की क्षारीयता इस पर असर नहीं करती। इस कांटे को डालने का लाभ यह होता है कि यह रवीकरण मे केन्द्र बिन्दु होता जो रवे के विस्तार में सहयोगी होता है। खानो मे कांटा डालना, खान का 'तीरना' कहलाता हैं। अग्रेजी भाषा मे ऐसी खान को सेटपिट कहते हैं।

खान को तीर कर नमक पैदा करना पचपद्रा की नमक उत्पादन पद्धति की एक विशेषता है पर इससे नमक की एक फसल डेढ साल में प्राप्त होती है पर नमक अत्यन्त दृढ रवे का होता है और इसलिए बाजार मे यह अत्यत बढ़िया नमक गिना जाता है। पुराने समय से ही पचपद्रा इस विशेष श्रेणी के नमक उत्पादन हेतु समस्त बिहार, यू. पी., मध्यप्रदेश व राजस्थान के बहुत बडे भाग मे पसद किया जाता है। हालाकि इससे नमक उत्पादन का व्यय बढ जाता है तथा इस प्रकार का नमक बाजार मे कुछ महगा पडता है।

यदि खान में मोराली न डाली जाय तो एक खान से एक वर्ष मे दो बार भी नमक लिया जा सकता है,

ग्रौर नमक की कुल तादाद में वहुत वडा ग्रन्तर नहीं पडता। जव नमक के पानी का घनत्व 28 डिग्री वी के पास पहुचता है तो नमक निकालने की तैयारी की जाती है। पहिले एक नमूना वाहर निकाला जाता है व नमूना उपयुक्त प्रतीत होने पर नमक खादना प्रारम्भ करते हैं।

पचपद्रा के नमक मजदूरो का भी एक विशेप वर्ग है। सभी खारवाल जो नमक वनाते हैं मजदूर भी है ग्रौर वे वर्ष भर स्वय के साथ की खानो मे काम भी करते हैं। 6 ग्रथवा 7 मजदूरो का एक समूह होता है जिसे 'तीग़' कहते हैं। इनको एक निश्चित नाप की ढेरी मे नमक खोद कर इकट्ठा करने पर मजदुरी की प्रचलित दर से जितने व्यक्ति लगते हैं उनसे एक व्यक्ति अधिक की मजदूरी 'टीवी' कहलाती है व यह राशि उस समूह ग्रथवा तींग़ के मुखिया को मिलती है। यह मुखिया ही सारे समुह के कार्य करने हेतु ग्रौजार रखता है ग्रौर यह ग्रतिरिक्त राशि उन ग्रौंजारो का किराया ग्रथवा घिसाई ग्रथवा उपयोग का वदल होता है। गर्मीयो मे ग्रपनी निश्चित तादाद पूरी करने पर एक समूह दोहरी या तीसरी पाली भी कर लेता है। इस प्रकार एक खारवाल समूह के माथ मजदूर है, खान के मालिक के नाते, उद्योगपति या जागीरदार है, वर्षा मे खेती करता है इसलिए किमान है पर वह वष भर मेहनत पर वसर करने वाला मेहनतकश है इसमे कोई सदेह नही।

इस प्रकार मजदूर पद्धति के कार्य करने हेतु नमक तोडने के भारी, सव्वल, लम्वे व छोटे डन्डो वाले विभिन्न प्रकार के फावडे, काटे हटाने हेनु वई, चोकनी इत्यादि प्रकार के ग्रौजार काम मे ग्राते है। यह ढेरी किया गया नमक टोकरीयो में ग्रौरतो द्वारा वाहर खान के ऊपर ढेर किया जाता है इसी समय पर यदि नमक मे कोई लकडी का कचरा ककड आ जाय तो ग्रलग कर दिया जाता है व इसी समय कज्जी या ग्रन्य ग्रशुद्धियां दृष्टि मे ग्राजाये तो छाट लीं जाती हैं। नमक की खान पर ढेरी को "छोड" बोला जाता है। एक ढेरी पूर्ण होने पर उसे पिरामिड की शक्ल मे वनाया जाता हैं। एक विशेष प्रकार से सील कर दिया जाता है जिससे पानी उस पर ठहर न सके व वर्षा से नमक कम घुलकर जाय। इसे खोडा पाली कहते हैं।

खान से नमक 25 डिग्री से 30 डिग्री वी तक निकालने मे शुद्ध निकलता है पर उसके पश्चात उसमे ग्रन्य लवणो के मिश्रण का भय रहता है। इस काल मे खान की तल पर कुछ ग्रन्य लवण जो मेगनेशियम के होते हैं, जम जाते हैं, जिन्हे "ठीकरी" कहते हैं। इस ठीकरी नमक को निकालने के वाद तोड कर वाहर फेंका जाता है। इसके पश्चात खान की वाजूग्रो से पानी के स्रोतो को खोल दिया जाता है। इस क्रिया को "गालनी" कहते हैं।

नमक की समस्त उत्पादन प्रक्रिया मे वर्षा का भी वहुत वडा योग है। वर्षा का पानी नमक के घनत्व की तीव्रता को कम कर नमक उत्पादन के काल को वढाता है जिससे नमक की उत्पादन तादाद वढ जाती है। वे रवे जो ऊचे घनत्व के कारण मिश्रित लवण के रूप में होते हैं, भूमिगत स्रोतो का पानी भी वढ जाने से है। लवण घुलकर

नमक की तादात बढाने में सहायक होते हैं। नमक का उत्पादन काल वह होता है जब स्थानीय क्षेत्र का, जो कि एक फसल का क्षेत्र है, किसान अपने खेती के काम से निपट जाता है। अतः अपने पूर्ण उत्पादन मौसम मे यह नमक क्षेत्र 10 हजार से भी अधिक मजदूरो को काम देता है।

जो पद्धति काम मे ली जाती है वह पचपद्रा मे सन् 1879 के ब्रिटिश-प्रवेश के पूर्व से ही काम मे आती रही है। स्पष्ट है कि इस पद्धति के विकास ने अपना एक निश्चित समय लिया होगा। सवत 1700 वि. से खानों के यहां विद्यमान होने के प्रमाण हैं तो इस पद्धित का विकास, जिसमे विशेष रूप से नमक के अशुद्ध तत्वो को अलग करने का काम व पहिचान, मोगाली केरवे के निर्माण का केन्द्र बनाने के लिए ढूढना, खोडो के निर्माण पद्धति व नमक निकलने के पश्चात "गालणी" पद्धति का विकास जो अपने आप मे अत्यत वैज्ञानिक है वह 400-500 साल पूर्व के उद्यमियो के कौशल व प्रयत्न का फल है, जिन्होंने कडी मेहनत से इसे विकसित किया। भारत के अन्य भागो मे नमक स्रोत कडी मिट्टी की भूमि मे हैं जबकि यह क्षेत्र बालू प्रदेश मे है शायद इसीलिए क्यारी पद्धति के स्थान पर यहा यह खान पद्धति उपयुक्त पाई गई होगी क्योंकि बालूमय भूमि पर सस्ते क्यारे बनाना जिससे पानी भूमि में प्रवेश न कर जाय, एक कठिन कार्य है।

प्रशासनिक

पचपद्रा की नमक उत्पादन विधि के पश्चात पुनः हमारा ध्यान नमक उत्पादन की प्रशासनिक पद्धति की ओर जाता है। राज्य जब इस उद्योग के बीच अपने राजस्व को बटोरने उपस्थित हुआ तो उसके अनेक उद्देश्य थे। यह उद्योग उस काल के मारवाड का एक मात्र महत्वपूर्ण उद्योग था जिसका रक्षण व विकास करना राज्य का कर्त्तव्य था। राज्य जैसे खेतीदारों से लगान के रूप मे लटाई फसल का एक भाग लेता था, इस फसल में भी वह हिस्सा लेना चाहता था। चू कि जागीरदारों का इस आय से कोई सबंध नहीं था, अत शासन उनको इस राजस्व से अलग करना चाहता था। इस नमक को लेने आने वाले बनजारे मारवाड के बाहर से विभिन्न वस्तुएं जो इस क्षेत्र मे काम मे आती थीं, लेकर आते थे अत उसका शुल्क वसूल करने की व्यवस्था हेतु भी राज्य अधिकारियो की यहा उपस्थिति जरूरी थी। इस भूमि का खारवाल नमक बनाने हेतु उस को खान खोदने में काम लेता था। वह मूलत राज्य की सपत्ति थी। अत उसके आवटन का नियमन करना राज्य के लिए आवश्यक था इसलिए भी वह अपना दखल यहा रखना चाहता था। किसी भी जगह एक कौशल विशेष के व्यक्तियो को एकत्र करना, किसी एजेंसी के मारफत ही सभव था व उस काल मे राज्य के अतिरिक्त कोई एजेंसी इस हेतु हो ही नहीं सकती थी अत इस हेतु भी राज्य वहा आया होगा। यह स्थान मारवाड़ व मालानी की सीमा पर पडता है। मालानी मल्लीनाथजी की सतानों द्वारा शासित थी न मारवाड़

वीरमजी की संतानो का प्रदेश था व बहुत काल तक यह राजनैतिक विद्वेष व सघर्ष का विषय रहा। अतः ऐसे स्थान का उद्योग एक विशेष सुरक्षात्मक महत्व लिए हुए था। उस काल में शासन की सुरक्षा एक महती उत्तरदायित्व था व विशेष रूप से जहा प्रतिदिन हजारो का व्यापार होता हो, अत शासन का यहा अपनी व्यवस्था स्थापित करना आवश्यक रहा होगा।

पचपदरा मे सवत 1821 से नियमित रूप से एक हाकिम दरीबा रहने लगा। उसके पूर्व के 150 वर्ष मे भी राज्य यहा सक्रिय था पर हाकिम की नियुक्ति सभवतया इसके पूर्व नहीं हुई, हो सकता है कि उसका कारण मारवाड मे राजनैतिक अस्थिरता हो क्योकि यह काल लगभग जसवत सिह, दुर्गादास व अजीत सिह का सघर्षमय काल था। उपलब्ध सूचनाओ के आधार पर उत्पादित नमक के उत्पादक को कोई कर नही देना पडता था। माल लेने हेतु स्थानीय व्यापारियो के माध्यम से वनजारें "पोट, वैल, रासभ, गधे, ऊट, गाडा—वैलगाडी" इत्यादि पर माल लाद कर ले जाते थे। जो माल खरीदता था उसका पाचवा हिस्सा नमक का राज्य वसूल करता था। राज्य कर्मचारियो का उत्तरदायित्व था कि खारवाल की रकम दिए बिना कोई माल ले कर बाहर नहीं जावे। इन्ही राज्य कर्मचारियों की देखरेख मे धर्मादा, देवी के मदिर का शुल्क इत्यादि भी खरीदने वालो से वसूल होता था। खरीददार अथवा व्यापारी या कोई उत्पादक लूटा न जाय व चोरी न हो इसकी भी देख रेख राज्य कर्मचारी रखते थे। हाकिम के अतर्गत पर्याप्त घोडे, जो विभिन्न पडौस के जागीरदारो को भेजने पडते थे, सुरक्षात्मक व्यवस्था हेतु रहते थे। पचपदरा की वर्तमान सेकण्डरी स्कूल का स्थान पूर्व मे इन घोडो का तवेला था। जो नमक लटाई मे एकत्र होता था वह वर्तमान पचपदरा की तहसील भवन के पास बडे पिरामिड के रूप मे एकत्र किया जाकर राज्य द्वारा वेचा जाता था जिससे सरकारी आय प्राप्त होती थी।

चू कि वह 'वनजारा व्यापार' का जमाना था व पचपदरा में मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, विहार व राजस्थान के अन्य भागो से वनजारे प्रचुर मात्रा मे आते थे अत यह वनजारे आते समय अपने साथ उन स्थानो से यहा की जनता के उपयोग वाले माल वैलों पर लाद कर लाते थे। यह माल यहां के व्यापारियो द्वारा या तो खरीद लिया जाता था या वनजारो की ओर से आढत मे वेचा जाता था। इस माल पर सायर का शुल्क—कस्टम—वसूल करने हेतु एक बहुत वडा सायर का थाना भी पचपदरा मे था। डाक की व्यवस्था हेतु महाजनी डाक व सरकारी डाक के केन्द्र भी पचपदरा में थे।

सरकारी व्यवस्था का एक सिलसिला सन् 1879 तक चला। इसके लगभग 20 वर्ष पूर्व राज्य ने सिवाना हुकूमत व जोधपुर के कुछ गावो को मिला कर पचपद्रा मे एक अलग हुकूमत पचपदरा की स्थापित की। अब तक हाकिमदरीबा के पास तो केवल पचपदरा कस्बा व पचपदरा का नमक क्षेत्र ही रहा। व इस क्षेत्र की भूमि की कृषि आय को भी वह देखता था, पर हुकूमत वनने के पश्चात लगभग 150 ग्रामो का क्षेत्र उसके आधीन हो गया था।

फिरंगी राजनीति का कुचक्र

सन् १८५७ के पश्चात भारत भर मे एक राजनैतिक परिवर्तन हुआ। कपनी सरकार के स्थान पर सीधा ब्रिटिश शासन भारत मे स्थापित हो चुका था। इतना ही नही कुछ अधीनस्थ देशी रियासतो के साथ वर्मा सहित भारत का ब्रिटिश शासन सार्वभौम सत्ता वाला था। ब्रिटिश साम्राज्ञी के नाम के साथ 'भारत की साम्राज्ञी' की उपाधि जोड दी गई थी। सभी देशी राज्य के साथ पुरानी सधियो के स्थान पर नवीन सधिया प्रतिपादित हो रही थीं। मारवाड राज्य ने भी अमरकोट सवधी, सेंदड़ा इत्यादि विषयक सधिया इसी काल मे की थी। इसी समय समस्त भारत मे ब्रिटिश सत्ता नमक के उत्पादन का एकाधिकार प्राप्त करने में तल्लीन थी इसी शृंखला मे उन्होने मारवाड राज्य के साथ भी बातचीत प्रारभ की। मारवाड के साथ नमक की तीन सधिया हुई जिनमे सबसे महत्वपूर्ण सधि है पचपद्र, डीडवाना, फलोदी व लूणी नमक के क्षेत्रो का लीज पर लेना। दूसरी संधि थी कुचामन, नावा गुढा इत्यादि के नमक क्षेत्रो के सवध मे व तीसरी सधि थी साभर के जयपुर-जोधपुर की ब्रिटिश सरकार के साथ नमक उत्पादन की शामलाती सधि। प्रथम सधि जो आखिर मे हुई सन् १८७९ मे हुई थी। इस सधि से पचपद्रा, डीडवाना, फलोदी व लूणी—साचोर तहसील में लूणी नदी के कच्छ के रन मे मिलने के पूर्व फैलाव वाला क्षेत्र—मे नमक उत्पादन का अधिकार ब्रिटिश सरकार ने अपने हाथ मे लिया था। इस सधि मे इससे आगे समस्त मारवाड के 89 स्थानो पर जो नमक का उत्पादन होता था उसे वद करने का निर्णय भी किया गया। जहा जहा उत्पादन वद किया गया उनके उत्पादकों मे वितरण हेतु मुआवजे की राशि राज्य सरकार को दी गई। इस उत्पादन के वद होने से जिन जागीरदारो को नुकसान हुआ उसकी भी राशि निश्चित होकर राज्य सरकार ने प्राप्त की। जिन स्थानों को उत्पादन हेतु ब्रिटिश सरकार को सौपा था, वहा यदि कभी ब्रिटिश शासन उत्पादन वद कर देगा तो उन्हे मुआवजा देना पडेगा ऐसी भी व्यवस्था इस सधि मे थी। राज्य को करीव ४ लाख रुपया रोकड २ ५० लाख मन नमक केवल उत्पादन की कीमत पर १२००० मन नमक विना कीमत महाराजा के रसोडे हेतु सरकारी हाकिम द्वारा छटी खानो का देना तय हुआ। इस प्रकार लगभग ७–८ लाख की वार्षिक आमदनी का स्रोत केवल इस सधि के अतर्गत राज्य का हुआ। तत्कालीन व्यवस्था मे राज्य को जो वचत होती थी उसकी तुलना में राज्य ने इसे अत्यन्त महत्वपूर्ण आय माना।

चू कि इस संधि के अन्तर्गत पचपदरा का नमक स्रोत ब्रिटिश व्यवस्था मे आ गया, अत: इस हेतु नमक उत्पादन करने वाले खारवालों को भी ब्रिटिश सत्ता के अतर्गत काम करना पडा। ब्रिटिश अधिकारीयो ने इन भोले भाले-अनपढ लोगो को अपने जाल मे लेने हेतु इन पर जो महाजनो का कर्जा था उसे स्वय अदा कर दिया उस कर्जे की इन लोगों से वसूली हेतु नमक की दर मे कमी कर दी। प्रारभ मे नमक की दर प्रति मन ५ पैसा ६ पैसा व सात

पैसा तीन श्रेणियो मे हुई थी पर उसे कर्ज की राशी के नाम पर ३ पैसा मन ४ पैसा मन व ५ पैसा मन की गयी। उन्हे शुरू मे बताया गया कि शीघ्र ही उसे ठीक कर पुराने स्तर पर ले आवेंगे लेकिन ५० वर्ष तक दर का स्तर वही बनाए रखा। इस दर का नमक चार आना आगे बेचा जाता, व १ रु ९ आना मन की उस पर सरकारी एक्साईज के रूप मे ड्यूटी ली जाती। पर एक खास बात यह थी की इस भारी मुनाफे के पश्चात भी आकडो मे पचपदरा घाटे मे बताया जाता।

इस घाटे का भी एक योजनाबद्ध तरीका था। मारवाड राज्य के बीचो बीच सत्ता का आसन एक राजनैतिक महत्व रखता था। अतः इस व्यवस्था हेतु प्रमुख अफसर अंग्रेज रखे जाते। उनकी सवारी हेतु घोडे के पीने के लिए ३० मील दूर समदडी से मीठा पानी आता, उनके साग सब्जी हेतु जसोल में एक बगीचो व बेरा था। इलाज हेतु एक बहुत बडी डिस्पेंसरी, रहने हेतु मौसम अनुकूलित पन्नी घास छाये हुए विशाल बंगले, ब्रिटिश खजाना, पुलिस, चौकीदार, रेल सफर हेतु सैलूनें अर्थात वह सभी ठाट जिससे यह जाना जा सके कि यह भारत सम्राट गौराग महाप्रभुओं का एक आसन स्थल है जहा उनके प्रतिनिधि विराजमान हैं। इस सब व्यय का भार था उस नमक उद्योग पर। इतना ही नहीं साभर के जनरल मैनेजर कार्यालय व दिल्ली के कमीश्नर कार्यालय का भी बहुत बडा व्यय भार इस नमक क्षेत्र के हिस्से आता था।

यह सत्ता राज्य सरकार पर भी बुरी तरह हावी थी। हाकिम के पास कभी भी पर्ची पहुचे उसे तत्काल बेगार मे ऊट, गाडियों या मजदूरो को भेजना पडता था। महकमे के मोदी खाने की व्यवस्था बेगार मे पचपदरा के महाजनों से करवाई जाती थी। इस क्षेत्र के सीमाकन हेतु बारह पत्थर लगा रखे थे। जिनमे दीवानी, फौजदारी सभी प्रकार का अमल ब्रिटिश शासक का था।

कहना न होगा कि पचपदरा के नमक उत्पादन की खानो पर पूर्ण लागत खारवालो की थी। एक खान खोदने में लगभग दस हजार व्यय होता था, खारवाल खान के मालिक थे, पर अंग्रेजो ने उन्हे कभी केवल मजदूर व कभी ठेकेदार गिनने की कोशिश की व अदायगी इतनी कम होती थी कि बेचारा खारवाल सदैव ऋण में दबा रहता व भर पेट भोजन भी अधिकांश को मिलना दूभर हो जाता था।

विपन्नता की इस स्थिति में सन् १९२६ में पचपदरा के नमक उद्योग पर ब्रिटिश शासन द्वारा एक भयकर आघात हुआ। सन् १९२६ प्रथम महायुद्ध के पश्चात मदी का प्रारम्भिक काल था। देश मे बेकारी बढ रही थी। इसी समय ब्रिटिश सरकार ने आदेश दिया कि चू कि पचपदरा नमक स्रोत से उन्हे नुकसान हो रहा है इसलिए वह पचपदरा मे नमक उत्पादन बद करेंगे। जिस स्थान से उत्पादन में लगे ३००० खारवालो, श्रम पर आश्रित लगभग १० हजार मजदूरों, व्यापार व अन्य स योग से बसे ४००० की पचपदरा की अन्य आबादी का भाग्य जुडा था ऐसे लगभग २० हजार लोगो के जीवन के साथ यह शासन की विचित्र खिलवाड थी। परन्तु भारत के थार रेगिस्थान के अत्यत पिछडे भू भाग मे, जहाँ दुनिया से अनजान अधिकारी, अनपढ़, विपन्न, सदैव अकाल से ग्रसित, अफीम इत्यादि

में अपने को भुलाए रखने वाले लोग बसते हो वहा, आज से ५० वर्ष पूर्व ब्रिटिश व देशी राज्यो के दोहरे साम्राज्य-वादी शासन म बसने वाले लोगो की क्या स्थिति होगी इसकी कल्पना भी आज करना कठिन है। उस स्थान से प्रथम विश्व युद्ध के विजेता, विश्व के सबसे बडे साम्राज्य के प्रतिनिधियो की इच्छा के विरूद्ध मुंह खोलना, और वह भी इतने जोर से कि हजारों मील दूर, दिल्ली के ऊचे राज प्रासाद मे बैठा शासन सुन सके व मात्र सुने ही नहीं उस आवाज के शोर से असयत होकर विचार करने को मजबूर हो, ऐसी सभावना केवल असभव की कल्पना मात्र थी।

परन्तु परम पिता ने सभवयता उनकी मूक भावना का भी सकेत पा लिया था। उसने एक ऐसे मसीहा को, गाधी के एक पतिरूप को यहा भेजा था, जिसने न केवल स्वय अपना सर्वस्व लगा कर उस सत्ता से जूझने व उसे चुनौती देने का साहस किया वरन भारत के राष्ट्रपति को भी राष्ट्रीय महत्व का एक विषय प्रदान किया। सन् १९३१ के नमक आदोलन के ठीक पूर्व नमक के विषय को लेकर चार वर्षों तक एकाकी लडने वाला युवक सेठ गुलाबचद के रूप मे पचपदरा में पहुँच चुका था। सेठ गुलाबचद ने उन गरीब खारवालो व श्रमिको का यह जटिल प्रश्न अपने हाथ मे लिया। सर्व प्रथम वे मारवाड राज्य के तत्कालीन दीवान से मिले। इस प्रश्न से उत्पन्न होने वाली भारी बेकारी, राज्य रेल्वे को होने वाला नुकसान, उद्योग मे खडी होने वाली व धा का स्वरूप दीवान साहब के सम्मुख प्रस्तुत किया। उन्होने सधि की उस धारा विशेष की ओर भी दीवान साहब का ध्यान आकर्षित किया जिसके अन्तर्गत राज्य, ब्रिटिश सरकार के इस कदम का विरोध कर सकता था। दीवान साहब ने सेठजी के सभी तथ्यों को स्वीकार करते हुए राजनैतिक कारणों से राज्य सरकार की इस सबध मे कोई कदम उठाने मे असमर्थता प्रकट की। हालांकि जिस सधि मे कोई कदम उठाने पर यह क्षेत्र पट्टे पर ब्रिटिश सरकार को दिए गए थे, उसमे चार स्थानो का उल्लेख था, जहा ब्रिटिश सरकार को कार्य जारी रखना था। वे थे पचपदरा, डीडवाना, फलोदी व लूणी। लूणी क्षेत्र मे नमक बिना प्रयत्न के बनता है। वर्षा में लूणी नदी का पानी बालोतरा के पास से तिलवाडा होता हुआ एकदम समकोणीय दक्षिण की ओर मुडकर सांचोर क्षेत्र मे घुमता है। यहा यह पानी एक विस्तृत भू भाग मे फैलकर रुक जाता है व धीरे धीरे कच्छ के रन मे दल दल मे मिल जाता है। यह फैला हुआ पानी कुछ समय बाद नमक में परी-वर्तित हो जाता है। अग्रेज सरकार ने इस क्षेत्र मे भाडकी नाम के स्थान पर अपनी एक चौकी बना रखी थी जहां एक इस्पेक्टर व चार अथवा छ: सिपाही रहते थे। वे इस नमक मे से थोडा वहा रहने वाले लोगो को खाने के लिए बाट देते व शेष को खड्डे खुदवाकर गडवा कर नष्ट कर दिया जाता। इस क्षेत्र मे नमक उत्पादन कार्य अग्रेज सरकार ने कभी नहीं किया।

दूसरा स्थान फलोदी था। फलोदी में अभी भी एक बगला अग्रेज सरकार द्वारा बनाया हुआ विद्यमान है पर इस क्षेत्र को भी उन्होंने सन् १८९१ मे ही बिल्कुल छोड दिया अर्थात १० वर्ष हेतु नाम मात्र को वह स्थान रखकर, धीरे धीरे वहा के नमक उत्पादको से नमक न लेकर, उन्हें उस स्थान को छोडने के लिए मज-बूर किया। स्वतत्रता प्राप्ति के बाद फलोदी के नमक उत्पादकों मे पूर्व का न तो कई उत्पादक परिवार है न उनका

नमक – उद्योग चित्रावली

नमक क्षेत्र की आराध्य देविया साभरामाता व आसापुरामाता
देवल पचपदरा साल्ट
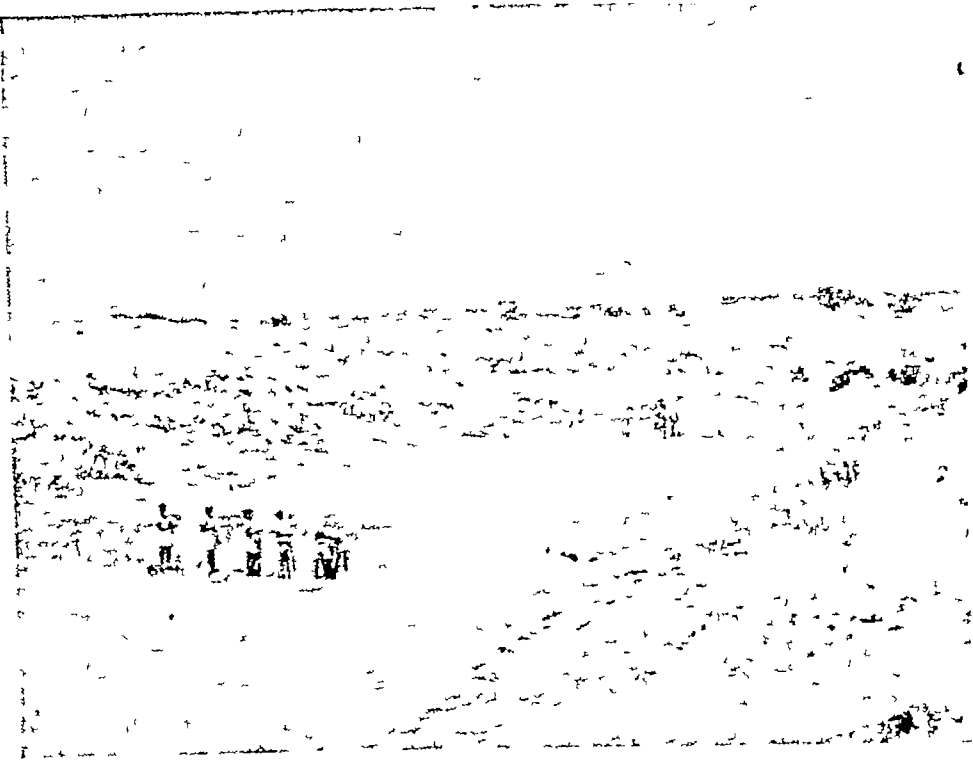
नमक की खान निकलाई का दृश्य

नमक की खान – खुदाई (मरम्मत)

सरकार गवरमेन्ट की। इसमे इनसाफ नहीं है के आपकी सरोकी गल
तीसे व्योपारी को बरबाद करना और अच्छा पैसा लेकर खराब
माल भी ठीक नहीं कर देना साल्ट डिपार्टमेन्ट की तरफ से सब
लोगों के माल नहीं बिकता और सरकार को नुकसान होता है
लेकिन इस वक्त इनसाफ की निगाह से देखा जावे तो साल्ट डिपा
र्टमेंट की गलती से गवरमेन्ट को नुकसान हो रहा है अगर इनसाफ
से थोड़ी सी गलती पर गौर किया जावे तो गवरमेन्ट सरकार को
नुकसान के बजाय १ लाख से ज्यादा सालाना का फायदा होगा है
। उसका बियान नीचे लिखे माफिक हिसाब से मालूम होता है

नमक की बिकरी इस माफिक हो सकती है

८०००००) भरतपुर सिरूसे बीकानेर सिरोही रियासत से
५०००००) १२००००)

३०००००) जोधपुर स्टेट बंजारा से
२०००००) १०००००)

१००००००)

। दस लाख मन नमक बिकरी हो सकता है इसकी कीमत ५) फी मन
के हिसाब से २५००००) वसूल होती है और सरकार को

नमक के सुन्दर रवों के चित्र

नमक उद्योग में प्रयुक्त होने वाले औजार
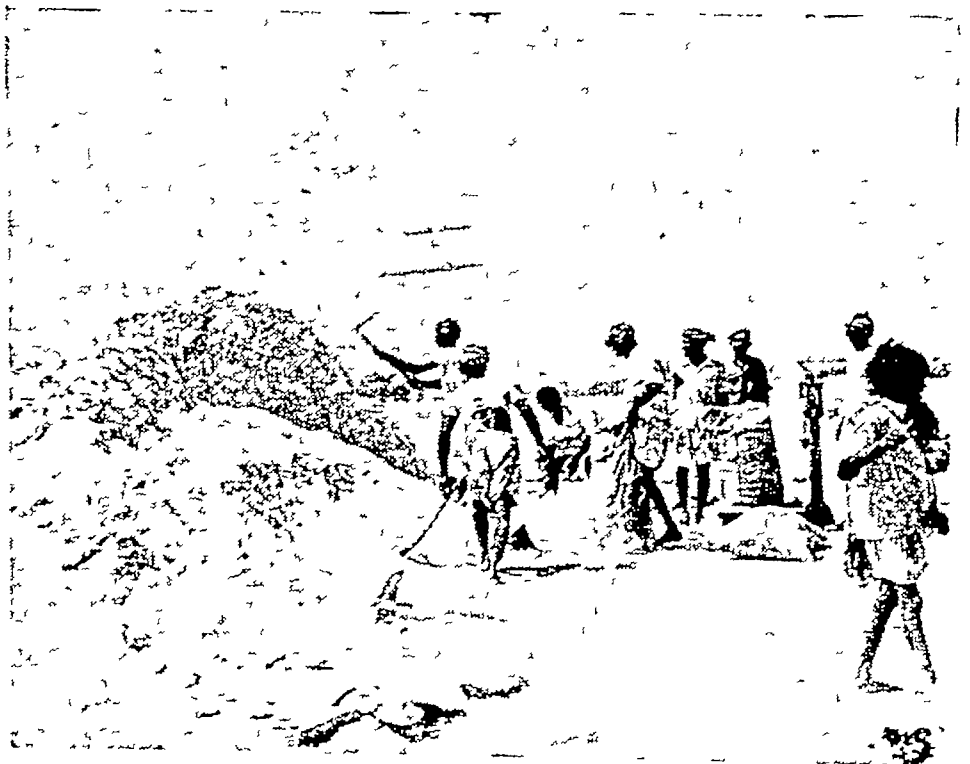
नमक की भरती और तुलाई

← सरकारी क्यार-पद्धति से नमक

नमक के खोडों की कतार →
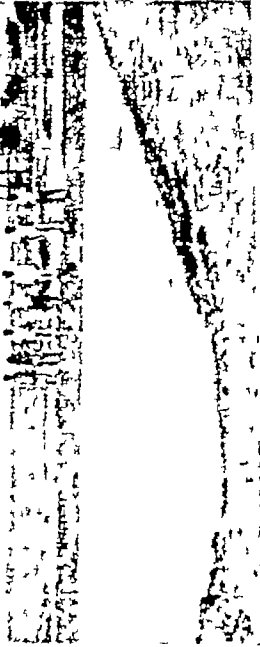
← खान का एक दृश्य

भरती के लिए खुला खोडा →

उस क्षेत्र मे कोई शेप ही है ।

तीसरा आघात उनका पचपदरा पर था । जैसा पहले बताया गया है कि मारवाड मे 90 स्थानो पर नमक बनता थाजिसे अंग्रेज सरकार ने सधि के अ नगंत बद करवाया था व केवल चार स्थान इस सधि के व तीन स्थान कुचामन नावा गुढा को संधि के थे जिनमें गुढ़ा व नांवा के कुछ भाग को साभर के साथ जोड दिया शेष उत्पादन वहा भी बंद कर दिया गया था । स्पष्ट था कि पचपदरा को बद करने के तत्काल बाद वे डीडवाना को साडियम सल्फेट की बहुतायत के नाम पर बद कर मारवाड के नमक उत्पादन से पूर्णतया मुक्ति ले लेते ।

स्पष्ट था कि ऐसी परिस्थितियों मे राज्य के दीवान का इस प्रश्न पर पूर्णरूपेण उदासीन बन जाना अत्यत निराशाजनक था । पर यह तत्कालीन परिस्थितियों की विडम्बना थी । एक लाभ जो सेठ साहब को इससे हुआ वह था दीवान साहब द्वारा जोधपुर राज्य के महकमा खास की लाइब्रेरी का उपयोग करने की खुली अनुमति । चू कि यह प्रश्न अनेक प्रकार के राजनैतिक व गुप्त दस्तावेजों से सबध रखता था, यह अनुमति भी आगे जाकर श्री गुलाबचद को बहुत उपयोगी सिद्ध हुई ।

पहला काय जो सेठजी ने इस सबध में करवाया वह था, भारत भर की उन मडियों मे, जहा पचपदरा नमक का उपयोग होता था, उनसे प्रतिवेदन करवा कर पचपदरा नमक की उपलब्धि पर जोर दिलवाना । बिहार के विभिन्न बाजार जैसे मोतीहारी, सारन, मुज्जफरपुर पटना, समस्तीपुर इत्यादि, उत्तर प्रदेश के आगरा, मेरठ, कानपुर, हापुड, लखनऊ बरेली इत्यादि, मध्यप्रदेश के भोपाल, भेलसा, सागर, बीना व अन्य प्रमुख सैकडो स्थानो से जनता के प्रतिवेदन भिजवाए कि वे पचपदरा का नमक खाने के लिए पसद करते हैं वे इसके आदी हैं और उन्हे वह नमक उपलब्ध होते रहना चाहिए । इस हेतु इन क्षेत्रों मे प्रतिनिधि भेजे गए जो वहा के पचपदरा कानमक वेचने वाले व्यापारियो का सहयोग लेकर जनता से इस प्रकार के हस्ताक्षर सग्रहित करते ।

इसके बाद वे जोधपुर रेल्वे के अधिकारियों से मिले । उनसे सहयोग लेकर विशेष लदान हेतु ऐसी रियायती रेल दरें प्राप्त कीं, जिससे साभर व पचपदरा से रवाना होने वाला नमक एक ही रेल भाडे में प्रमुख मडियो में पहुँच सके । नमक की बिक्री के बढने मे पचपदरा की दूरी एक बडी समस्या थी जिसके हल होने से स्वाभाविक रूप से पचपदरा नमक की माग बढ कर नमक का लदान अधिक होना शुरू हुआ, जो हस्ताक्षर अभियान के तथ्य की पुष्टि कर रहा था ।

महकमा खास की लाइब्रेरी का उपयोग भी अत्यत महत्वपूर्ण था । सेठ जी स्वय अंग्रेजी नही जानते थे । उन्होने जोधपुर के उस समय के एक नामी वकील, जालमचद जी को लाइब्रेरी-शोधन का कार्य सौपा । सेठ साहब के पुराने दस्तावेजो में जालमचद जी का नोट एक महत्वपूर्ण सकलन है जिसमे सैकडो इम्पीरियल गजेटीयर्स खरीते, सधियो, रिपोर्टें, अन्य ग्रथो व दस्तावेजो से सूचनाए एकत्र की गई हैं । साथ ही सेठजी ने स्वय सन १८७९ से

तत्समय तक के नमक विभाग की वार्षिक रिपोर्टों, उनके आय-व्यय के आकड़े इत्यादि खरीदकर मंगवाए अथवा अन्य स्रोतों से संकलित किए। इस प्रकार तथ्यो के आधार पर सारे विषय की एक भूमिका तैयार की गई।

इन ग्रन्थो के आधार पर सर्वप्रथम सेठजी ने वे कारण ज्ञात करने का प्रयत्न किया जिस हेतु ब्रिटिश नीति भारत के नमक उद्योग को कुचलने पर उतारु थी। भारत मे अग्रेजी प्रवेश का प्रारभ व्यापारिक था। भारतीय मण्डियो से भारतीय वस्तुए अग्रेज योरोप मे लेकर जाते व वहां के उत्पादन भारत में लाते। इस व्यापारिक आदान प्रदान मे उफान उस समय आया जबकि इगलैड में इन्डस्ट्रीयल रिवोल्यूशन अर्थात औद्योगिक क्रान्ति आई। भारतीय कच्चे माल की खपत इगलैण्ड मे भारी मात्रा में होती। कच्चा माल होने मे जहाजो में स्थान ज्यादा घिरता था। रुई, तिलहन जूट, लाख कच्चा रबड़, ऊन, कच्चे खनिज, खालें व इसी प्रकार सैकडो वस्तुओं की मांग इगलैंड में बढ गई। इन से बने माल का भी एक बहुत बडा बाजार भारत था। पर कच्चा माल जहाज में स्थान ज्यादा घेरता था व यह माल इगलैण्ड विश्व के सभी बाजारो में भेजने हेतु जाता था इसलिए आने वाले तैयार माल की अपेक्षा जाने वाले माल की मात्रा भी अधिक थी व जगह भी ज्यादा घिरती थी।

इस आदान प्रदान के अन्तर से इन जहाजो को उपलब्ध होने वाले स्थान व वजन क्रम में असतुलन पैदा होता था। जाने वाले जहाजो के पास वजन भी ज्याजा होता था व मात्रा भी जहाज के भरने में पूरी होती थी। साथ ही यह माल अधिकाश सीधा इग्लैण्ड जाने वाला होता था, क्योंकि अन्य स्थानों पर न तो उद्योग थे और न वहाँ कच्चे माल की खपत ही थी। परन्तु लौटने वाले जहाजो मे तैयार माल स्थान भी कम घेरता था व वजन भी कम होता था ऐसी स्थिति में इन जहाजो को इगलैण्ड मे अपना वजन पूरा करने के लिए पत्थर भरकर रवाना होना पडता था और अफ्रिका के बन्दरगाहो से वे अन्य भारतीय उपयोग का माल लेकर, इन पत्थरो को समुद्र में फैंका करते थे। यह जहाजी लदान का असन्तुलन उनको जहाजों के भाडे की दृष्टि से महगा पडता था।

ऐसी असन्तुलित स्थिति से छुटकारा पाने हेतु ब्रिटिश व्यापारी अत्यन्त चिंतित थे और इस सन्तुलनों को बनाए रखने हेतु किसी सामान्य उपभोक्ता वस्तु की खोज मे थे, जो बहुत बडी मात्रा मे भारत में खपाई जा सके और जिसके आधार पर यह केवल सन्तुलन ही नहीं बने वरन् ब्रिटिश अर्थतन्त्र को एक सहारा साबित हो सके। यह प्रश्न जिस काल मे ब्रिटिश उद्योगपतियो को उलझा रहा था वह काल सन 1857 के पूव का था।

भारतीय बाजार में फ्रेंच, डच व पूर्तगाली स्पर्द्धा भी अत्यन्त तेज थी, जिससे तैयार माल पर किराया कम कर के स्पर्धा के बाजार में, अन्य देशो की तुलना मे टिका जा सके।

ऐसी स्थिति मे ब्रिटिश सरकार का ध्यान नमक पर गया। नमक एक ऐसा औद्योगिक उत्पादन था, जिसका कच्चा माल समुद्री पानी था, जो पर्याप्त मात्रा में ब्रिटिश समुद्री जलतट से प्राप्त किया जा सकता था। वैज्ञानिको ने इस प्रकार के ढग निकाल दिए थे जिससे शुद्ध नमक कम जगह मे, फेक्ट्रीयो मे बनाया जा सकता था और

उसकी लागत भी नाम मात्र की आती थी।

इसमें समस्या यह थी कि भारत उस समय नमक की दृष्टि से अपनी आवश्यकता हेतु आत्मनिर्भर था। सम्पूर्ण समुद्री तट पर अर्थात गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र केरल व मद्रास इत्यादि में प्रचुर मात्रा मे नमक का उत्पादन हो रहा था। साथ ही खेवडा, वारचा व कालाबाग की विशाल (Saltrange) पर्याप्त पहाडी नमक दे रही थी। राजस्थान की देशी रियासतें भारत के उत्तरी भाग ने नमक की आवश्यकता को पूरा कर रही थीं जिसमें जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, जैसलमेर, भरतपुर, इत्यादि, अपनी झीलो के नमक व भूतल के उत्पादन का उद्योग चला रहे थे। गुजरात मे खारा गोडा, सिन्ध मे घोरोनारो व अन्य स्थानो से नमक का उत्पादन हो रहा था।

चूंकि ब्रिटिश शासन के व्यापार व हितो मे ऐसी स्थिति मे सरकार का साम्राज्यवादी प्रभुत्व का काम मे लेना आवश्यक था अत भारत में अंग्रेजी सरकार ने इस सम्बन्ध मे एक विशेष नीति अपना कर नमक उद्योग का एकाधिपत्य अपने हाथ मे लेने का निश्चय किया। प्रथम कदम जो इस सम्बन्ध मे उठाया गया वह था नमक को Central Exciseके अन्तर्गत लेना ताकि नमक का पूर्ण उत्पादन व वितरण सरकारी अधिकार में आ सके। उस जमाने मे नमक, उत्पादन–स्थल पर केवल डेढ़ आने से दो आने की दर मे बिकने वाली वस्तु था और इसलिए इस वस्तु की सस्ती दर, उत्पादन शुल्क को सहन करने की क्षमता रखती थी। इससे ब्रिटिश सरकार को जन साधारण से एकत्र करने हेतु, कर संचय का भी एक मार्ग मिल गया और केवल दो आना मन की लागत की वस्तु पर उन्होंने एक रुपया नौ आना मन की duty लागू की, चू कि यह Excise duty इतनी भारी थी कि ब्रिटिश शासन को इससे करोडों की आमदानी होती थी इसलिए अपनी कर चोरी से बचाव का बहाना लेकर उत्पादन स्रोतो पर अकुंश लगा दिए। भारत के ब्रिटिश प्रान्तो मे आज्ञा के बिना कोई उपादन नहीं कर सकता था और चू कि भारत भर मे नमक के उत्पादन छोटे–छोटे और अनपढ गरीब लोग थे अत उस सबका उत्पादन बन्द कर दिया गया। अधिकाश उत्पादकों के उत्पादन के ढग पुराने थे उनकी जाच विधिया उन्हे पता नहीं थी इसलिए बहुत से स्थानो का नमक खाने के प्रयोजन से अयोग्य घोषित किया जाकर बन्द कर दिया गया। मद्रास व केरला के समुद्र तट के उत्पादन का अधिकाश इसी आधार पर बन्द किया गया था· परन्तु आधी समस्या अभी खडी थी। देश के बहुत से उत्पादन क्षेत्र देशी रियासतो मे पडते थे। उन देशी रियासतो से उन्हें कस्टम के रूप मे, ब्रिटिश क्षेत्र मे प्रवेश के समय चुगी तो प्राप्त हो सकती थी पर जैसा ऊपर उल्लिखित है केवल चुगी ब्रिटिश नमक नीति को उद्देश्य नहीं था। उनका मुख्य उद्देश्य तो ब्रिटिश हितो का रक्षण था। अत· ब्रिटिश अधिकारियो ने अपने विभिन्न देशी राज्यों में नियुक्त पोलिटिकल एजेन्ट्स को इन उत्पादन स्रोतो को अपने हाथ में लेने के लिए निर्देश दिए। इन्हीं निर्देशो का प्रतिफल मारवाड राज्य के साथ की गयी उपरोक्त तीन संधियां थी। जिस नमक को लूणी क्षेत्र में व केवल फोमट में बेचकर उत्पादन शुल्क की भारी आय एकत्र कर सकते थे, वही नमक गढो में दबवाकर नष्ट कर रहे थे, यह इसी नीति का प्रतीक था।

मारवाड राज्य के भूतपूर्व आलेखो मे मारवाड के केवल कुछ ही नमक स्रोतो मे सरकारी आय का उल्लेख मिलता जबकि इस सन्धि मे 90 स्थानो का उत्पादन बन्द करने के लिए उल्लेख है। पिचयाक व मालकोसनी पर केवल खारी उत्पादन की छूट व तीन सन्धियो मे लगभग 9 स्थानो का उत्पादन नियन्त्रण, इस बात का स्पष्ट सकेत हैं कि ब्रिटिश अधिकारियो ने इस काल मे इन क्षेत्रो का विस्तृत सर्वेक्षण किया होगा और चू कि नमक उत्पादक क्षेत्रो के सर्वेक्षण का कही भी प्रमाण नजर नही आता इसलिए यह लगता है कि यह सर्वेक्षण ऐतिहासिक खोज खनिज खोज या रक्षा सन्धियो के अन्तर्गत सर्वेक्षण के नाम पर हुआ होगा। यह तथ्य ब्रिटिश कूट नीति की गहनता, शासन की चतुराई व राजनैतिक दावपेच के अतिरेक को प्रकट करता है।

Imperial Gazetter के Vol IV पृष्ठ 163-164 और 249 से 252 तक ब्रिटिश सरकार की नमक नीति का उल्लेख है जिसमे सन् 1865 से 1867 के दो भयकर अकालों का वर्णन है, जिसने भारत की आर्थिक स्थिति को बहुत प्रभावित किया और इसलिए भारत सरकार को अपनी आर्थिक स्थिति ठीक करने हेतु नमक पर कर लगाना पडा। उसमे यह भी दिखाया गया है कि नमक से आमदनी बढाने हेतु, उसके उत्पादन में कुशलता लाने हेतु उस पर ब्रिटिश देखरेख आवश्यक थी।

AITCHISON Treties के अनुसार साभर व नवागोढा की नमक सन्धिया 1869-70 में हुई। यह स्पष्ट करता है कि 1857 के तत्काल बाद ही अपनी नमक नीति का क्रियान्वय ब्रिटिश शासन ने प्रारम्भ कर दिया था Major Waltair के Gazettier के अनुसार 1877 व 1881-1882 मे साभर का नमक उत्पादन केवल 16 लाख मन के आस पास था जबकि पचपदरा का नमक उत्पादन भी जैसा कि N I.S R. की वार्षिक रिपोर्ट जो 1881 से 1921 तक प्रकट करती हैं 12 लाख मन से 13 लाख मन वार्षिक उत्पादन था। साभर मे सन् 1923-24 मे ब्रिटिश सरकार ने मशीनरी पर भारी खर्च किया जिससे उनका उत्पादन व्यय कम पड गया था रपउत्पादव के बढने से भारी स्टाक हो जाने के कारण उनका ध्यान पचपदरा नमक उद्योग को बद करने की तरफ गया। एक और महत्वपूर्ण बात जो इस व्यवस्था मे निहित थी वह साभर के माल का लदान एक ब्रिटिश रेल्वे कम्पनी B B & C I Rly द्वारा होना, जबकि पचपदरा में मारवाड की सीमा तक जोधपुर दरबार की रेल्वे का होना, साभर के विकास मे ब्रिटिश सरकार की एक विशेष दिलचस्पी था।

इस पृष्ठ भूमि मे जबकि इस विषय मे इतनी गहराई तक ब्रिटिश हित प्रवेश किया हुआ था पचपद्रा के प्रश्न को उठाना एक अत्यन्त जटिल समस्या थी। ब्रिटिश सरकार का कहना था कि पचपदरा के नमक की मांग ही नहीं है और इसलिए प्रथम आवश्यकता इस झूठ को प्रकाश मे लाने की थी। इस हेतु स्वय के आर्थिक अस्तित्व को खतरे में डालकर सेठ गुलाबचन्द ने एक अत्यन्त साहसिक कदम उठाया। उन्होने पचपदरा नमक की कुछ वैगनो को कराची के बन्दरगाह पर लदान कराया व इसके साथ ही कराची की नोशेखाजी कम्पनी जो कराची मे नमक उत्पादन की बहुत बडी फर्म थी, से शेष नमक खरीद कर नमक के एक जहाज का

लदान कलकत्ता हेतु करवाया'।

बंगाल, भारत में सबसे स्वच्छ और अच्छा नमक खाने वाला क्षेत्र समझा जाता है व अंग्रेजो का यह दावा था कि भारत बंगाल की जनता के पसन्द का नमक पैदा नहीं कर सकता और इसकी आड़ मे वे विलायती नमक मंगाने का औचित्य सिद्ध करते थे। और ज्योंही यह नमक कलकत्ता पहुँचा, कलकत्ता के नमक के बाजार में एक तहलका मच गया आयातीत नमक की अंग्रेजी कम्पनियो का एक पूल व एक संगठन कलकत्ता मे बना हुआ था, संगठन के प्रबन्धकर्ताओं ने अपने दलालो को यह पता करने भेजा कि इस व्यक्ति की तैयारी किस न्यूनतम भाव पर देने की है। उस समय कलकत्ता मे नमक की दर २५०) रु० टन की चल रही थी। सेठजी ने न्यूनतम लगभग १७५) रु० टन की अपनी दर बतलाई। फलस्वरूप अंग्रेजी कम्पनियो के पूल ने १४५) रु० टन पर अपनी दर निश्चित कर दी। छः माह तक इन्होने इन्तजार किया कि बाजार मे दर कुछ ठीक हो लेकिन एक सुनियोजित स्पर्द्धा में भाव को ऊँचा आना ही न था। अन्ततः भारी नुकसान उठा कर इन्हे अपना वह माल बेचना पड़ा पर अंग्रेजी षड्यन्त्र की कुंजी उनके हाथ लग चुकी थी।

यह कल्पना भी कठिन है कि इस जमाने मे सेठजी ने इस विषय पर पत्रो का भी पूर्ण सहयोग लिया। जिन पत्रों में सम्पादकीय अथवा अन्य लेख दिए गए थे वे कलकत्ता के प्रसिद्ध पत्र "कैपीटल पोयनियर", "अमृत बाजार पत्रिका", "इस्टर्न इकोनोमिस्ट" इत्यादि थे व लेख लिखने वाले अपने समय के ख्याति प्राप्त पत्रकार थे। अनेक अखबारों के कटिंग सेठजी की पुरानी फाईलो मे उपलब्ध हैं व उनमे उल्लिखित तथ्यो से स्पष्ट है कि इन पत्रो को सामग्री सेठजी से ही प्राप्त हुई थी।

अब इस विषय को इन्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री के कलकत्ता कार्यालय के द्वारा विशद रूप से उठाया गया व इसके प्रमाण स्वरूप सेठजी का अपना मामला था। यहां उन्होने महारानी विक्टोरिया के उस खरीते का भी पता सरकारी गजेटियर्स मे से लगा लिया था जिसके अन्तर्गत महारानी विक्टोरिया ने लार्ड डलहौजी को लिखा था कि ब्रिटिश व्यापारियो के हितो के रक्षण हेतु भारत मे नमक व्यवसाय पर एकाधिपत्य किया जाय। सन् १९२६ की दिल्ली की लेजिस्लेटिव एसम्बली की कार्यवाही इस बात का प्रमाण है कि मरूस्थल के एक कोने से उठी, वह अन्याय के विरूद्ध आवाज, दिल्ली के दरबार में गूंज चुकी थी।

सेठजी का नमक के जहाज सहित कलकत्ता जाना, उन्हे इस मामले को उच्चस्तर पर ले जाने मे अत्यन्त सहयोगी रहा क्योंकि वहां उच्चस्तरीय राजनैतिक गतिविधियो के वे सम्पर्क मे आते रहे।

इस साल मे भारत सरकार द्वारा एक Taxation Enquiry Committee बैठाई गई थी। इस कमेटी के सम्मुख सेठजी ने नमक की Excise duty के फलस्वरूप नमक की बुरी हालत उस पर सरकारी

एकाधिपत्य व विदेशी स्पर्धा की ओर ध्यान खींचा । इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट मे सुझाव दिया कि (Tarriff Board on Salt Industry—) बैठाया जाय। परन्तु सरकार ने कमेटी के इस सुझाव को अमान्य कर दिया । फलस्वरुप सेठजी ने समिति के अध्यक्ष से आग्रह किया कि वह सरकार पर नमक उद्योग के विषय में (Trriff Board–) बैठाने के सबध मे दवाव डालें। सेठजी के पुराने दस्तावेजों मे (Taxaton enquiry Committee) – के अध्यक्ष द्वारा सरकार को भेजने हेतु लिखे आवेदन की आईप्ड मूल, जिसमे सशोधन स्याही से किए गए हैं मौजूद है, जो इस वात के प्रमाण हैं कि सेठजी के आग्रह पर ही अध्यक्ष ने यह पत्र भेजा था।

जब नमक के भारतीय उत्पादन को कुचलने के विरुद्ध आवाज बढने लगी तब ब्रिटिश सरकार ने 'टेरिक वोर्ड ऑन साल्ट इन्डस्ट्री' की स्थापना की। इस कमेटी की स्थापना के पूर्व सेठजी ने अपने प्रयास को आदोलन का रूप दे दिया था। विभिन्न सरकारी स्तरो पर लगातार प्रतिवेदन भेजे जाते रहे। पचपदरा साल्ट मे खारवालों व मजदूरो की हडतालें करवाई गयी। खारवालों के द्वारा आवेदन प्रस्तुत किये गये कि सरकार उन्हें जमीन दे। वे नमक का उत्पादन वढाने के लिये और खानें खोदना चाहते हैं। सरकारी नीति के विरोध का घेरा ऐसा वढाया गया कि सरकार को ४० खाने और खोदने की अनुमति देनी पडी। जिस समय टेरिक बोर्ड की कमेटी पचपदरा पहुँची तो सेठ गुलावचन्द ने एक विस्तृत प्रतिवेदन अपनी तरफ से दिया व एक प्रतिवेदन खारवालों की ओर से दिलवाया। मारवाड राज्य के नमक विभाग के सुपरिटेन्डेन्ट श्री सुमेरचन्द ने भी प्रतिवेदन देकर मांग की कि पचपदरा के नमक का उत्पादन अधिक से अधिक वढाया जाय व रियासत की ओर से उसमे सभी प्रकार का सहयोग दिया जाये।

मरवाड की राज्य सरकार को भी इस विषय मे जाग्रत किया गया। नमक विभाग के सुपरिटेडेन्ट श्री सुमेरचद से पचपदरा के नमक उद्योग का विकास करने हेतु पत्र भिजवाए गए। राज्य की ओर से आश्वासन दिए गए कि यदि ब्रिटिश सरकार इस क्षेत्र का विकास करेगी तो राज्य उन्हें सभी प्रकार का सहयोग देगा। ब्रिटिश सरकार का आक्षेप था कि उन्हें आवश्यक मात्रा में मजदूर नही मिलते। राज्य द्वारा मजदूरो की उपलब्धि में सहयोग का वचन दिलवाया गया। विकास की स्थिति में राज्य द्वारा रेल की साईडिंग बिछाने व वढाने का भी आश्वासन दिलवाया गया।

जब कमेटी पचपदरा पहुँची तो सेठजी स्वय टेरिक वोर्ड के सम्मुख अपने मौखिक वयान देने लगे। इन वयानों मे उन्होंने पचपदरा की नमक उत्पादन क्षमता का उल्लेख किया और अग्रेजो की पचपदरा के विरुद्ध अप–नाई जाने वाली नीति का भी उल्लेख किया। इन बयानो मे उस समय चलने वाले आदोलनों को तीव्रता स्पष्ट झलकती है। इसी प्रश्नोत्तर मे नमक विभाग के जनरल मैनेजर ने सेठजी पर हडतालें करवाने, ब्रिटिश सरकार को परेशान करने व गलत तथ्यो का प्रचार करने का आरोप लगाया। यह वयान टेरिक वोर्ड ऑन साल्ट इन्डस्ट्री

के आरल इवोडेन्सेज में आज भी सुरक्षित हैं ।

इन बयानो के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने सेठजी से परेशान होकर मारवाड राज्य को लिखा कि यह व्यक्ति ब्रिटिश सरकार के काम मे दखलन्दाजी कर रहा है व ब्रिटिश सरकार को परेशान कर रहा है। इस पर मारवाड राज्य की ओर से एक जाच आयोग, कमीशन वैठाया गया जो मारवाड के उस समय के प्रसिद्ध हाकिमो का था। यह निश्चित लगता था कि सेठजी को गिरफ्तारी अथवा देशनिकाले का सामना करना पडेगा। सेठजी एकाकी के साथ देने वाला कोई न था। जिनका प्रश्न था वे अत्यन्त गरीव, दवे हुए, अनपढ़ व असहाय थे। वे सेठजी को क्या मदद करते। पर ऐसा लगता है कि दीवान साहव ने सेठजी के इस विषय मे प्रारम्भिक वार्ता को ध्यान में रखते हुए जांच कमीशन को कुछ आतरिक सकेत दिए है क्यो कि जाच कमीशन ने इन्हें विल्कुल निर्दोश घोषित किया ।

टरिफ वोर्ड के एकदम पश्चात ही सॉल्ट सर्वे कमेटी बैठी। थोडे ही काल में नमक पर इस दूसरी कमेटी का निर्माण नमक के सवध में भारतीय राजनीनि मे विषय कि उग्रता को प्रकट कर रहा हैं। सॉल्ट कमेटी के निर्माण पर इस कमेटी के साथ अनेक स्थानो पर सेठजी स्व य घूमे और कमेटी के सदस्यो को सिन्ध का घोरोनारो व दिलयार का नमक के वह क्षेत्र दिखाए जहाँ उच्च कोटि के साफ सफेद नमक की उत्पादन की वहुत वडी क्षमता छिपी हुई थी। इस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट मे स्वीकार किया है कि यदि प्रोत्साहन दिया जाय तो पचपदरा में कम से कम पचास लाख मन वार्षिक नमक का उत्पादन हो सकता हैं। इसी रिपोर्ट के अनुसार सरकार द्वारा यह वताने का प्रयत्न किया गया हैं कि पचपदरा मे नमक उत्पादन की भौगोलिक समस्याएं हैं व उत्पादन पद्धति पुरानी होने से उत्पादन नहीं हो सकता। रिपोर्ट मे लगता हैं कि लिपा-पोती के प्रयत्न के उपरान्त भी अनेक तथ्य कमेटी को स्वीकार करने पडे हैं।

इसी कमेटी के सम्मुख खारवालो पर यह आरोप ब्रिटिश सरकार की ओर से था कि वे काम नहीं करते, आलसी हैं, कर्ज में दवे हैं, उनके पास पैसा लगाने को नही है, वे आदोलन कर्ताओ व हडताल करवाने वालो सेठजी के प्रभाव मे आ गए हैं। तथ्य यह था कि सरकार खारवालो को इतना कम पैसा देती थी कि उनके लिए उत्पादन कार्य मे नुकसान पडता था, और इसलिए सन् 1926 मे खारवालो मे सेठजी के नेतृत्व मे हडताल की थी व दर वढाने हेतु आदोलन किया था। फलस्वरूप सरकार को बाध्य होकर नमक की खारवालों को दी जाने वाली दर मे वृद्धि करनी पडी। यह विषय टरिफ वोर्ड मे मौखिक वयानो मे सेठजी पर आरोपो की बौछार का रहा पर सेठजी अत्यन्त सन्तुलित मस्तिष्क से इन आघातो व प्रत्याघातो को सहन करते रहे।

टरिफ वोर्ड आन साल्ट इन्डस्ट्री व साल्ट सर्वे कमेटी के सम्मुख यह प्रश्न अखिल भारतीय प्रश्न के रूप मे रखा गया जिसमे पचपदरा ही नही मारवाड के 90 अन्य क्षेत्र, सिन्ध के घोरोनारो, दिलयार, कराची के समुद्री

नमक इत्यादि सभी को साथ जोड़ा गया।

सॉल्ट सर्वे कमेटी ने जोगराफीकल सर्वे ऑफ इण्डिया से भी क्षेत्र की विशालता का सर्वेक्षण करवाया था जिसमे उन्होंने इस क्षेत्र को करीब 400 वर्गमील का माना है। इसके साथ ही जियोलोजीकल सर्वे ऑफ इण्डिया से क्षेत्र की ओफोग्राफी पर रिपोर्ट बनवायी गयी जिसमे उन्होंने भी भूगर्भीय लवण जलो के दिशाकनो के आधार पर लवणीय भूजल की भारी सम्भावना इस क्षेत्र में बतायी।

इस दौरान इस पर जोर डाला गया कि पचपदरा मे नमक की माग खड़ी हो न हो उसके लिए सरकार क्या क्या क्या चालें कर रही है। साभर मे उस समय जो नमक खरीदना चाहता उसे क्रेडिट पर नमक खरीदने की सुविधा थी पचपदरा के व्यापारियो को क्रेडिट सिस्टम की सुविधा नहीं थी। सेठजी ने सरकार पर दबाव डालकर पचपदरा हेतु भी क्रेडिट सिस्टम शुरू करवाया।

साभर मे नमक खरीदने हेतु आवेदन व अग्रिम राशि जमा करवाने की सीमा न थी पर पचपदरा हेतु आवेदन लिए ही न जाते थे। सरकार का कहना था कि यदि हमने इस प्रकार के आवेदन लिए तो बाहर के एक दो व्यापारी ही सारा नमक खरीद लेंगे व पचपदरा के व्यापारी जो छोटे व्यापारी है धन्धा नहीं कर पावेंगे। सेठजी ने इस हेतु एक लिमिटेड कम्पनी "पचपदरा साल्ट ट्रेडर्स एसोसिएशन लि०" गठित करवाया जिसके द्वारा सभी व्यापारी अपने भाग अनुसार इन्डेंट लगा सके जिससे इतनी माग सामने आई कि जो सरकार द्वारा वर्षो न हो सके।

टेरिफ बोर्ड के सम्मुख सरकार ने यह बताने का प्रयत्न किया कि पचपदरा का नमक सांभर से हल्का है व उसकी माग कम है। सेठजी ने इस असत्य बात का पर्दाफाश करने हेतु सरकार पर खानों के नमक के अग्रिम नमूने से काफी माग खडी की जा सकी।

साल्ट सर्वे कमेटी के रिपोर्ट के पश्चात भी जब सरकारी नीति के विरुद्ध आवाज दबी नही तो अग्रेजी सरकार ने पचपदरा के विषय मे श्री स्टेयी नाम के अग्रेज अधिकारी का एक सदस्यीय कमीशन बनाकर जाच हेतु भेजा। इस कमीशन के सम्मुख के यदि इस स्त्रोत का नमक उत्पादन बन्द किया जाय तो सन् की संधि के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार को कितना हरजाना देना होगा इसके आकडे सेठजी ने इस विशालता के साथ रखे कि उस अग्रेज अधिकारी को चौंक जाना पडा। उस अधिकारी ने अपनी रिपोर्ट मे लिखा है कि यदि सरकार ने इस नमक स्त्रोत को बन्द करने का निर्णय लिया तो सरकार को हरजाने के रूप मे भारी राशि देनी होगी। सेठजी ने हरजाने के आंकडे एक करोड के समीप के दिए थे।

श्री स्टेयी की रिपोर्ट से एक बार पुन अग्रेज नीति का भण्डाफोड होता हैं। स्टेयी की रिपोर्ट में सरकार को हिदायत दी गई हैं कि वह स्थान के नमक उत्पादन को चालु रखे व यदि वह इस स्त्रोत को बन्द करना

चाहती है तो इस स्थान के लिये ऐसी नीति अपनाई जाय जिससे यह नमक-स्रोत अपनी स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हो जाय अर्थात नीति ऐसी हो जिससे उत्पादक स्वय ही मर जाय अथवा इस कारोबार को छोडकर भाग खडे हो और ब्रिटिश सरकार हर्जाने के नुकसान से बच जाय। स्ट्रेथी की रिपोर्ट ने 4 साल से चलते आ रहे इस सघर्ष को, श्री गुलाबचन्दजी की विजय मे परिवर्तित कर दिया। खारवालो के सिर पर से नमक के उद्योग का आने वाला सकट टल गया। इस विजय का लाभ केवल पचपदरा मे रहने वाले 2000 खारवालो व आसपास के 10,000 मजदूरो को ही नही हुआ वरन् निरन्तर अकाल से ग्रसित रहने वाले इस क्षेत्र के हजारो परिवारों को भी हुआ, जिनकी आने वाली पीढियां सदा इस उद्योग से लाभ उठाती रहेगी।

राजनैतिक व सामाजिक विश्लेषण

सेठ गुलाबचन्द द्वारा सचालित इस आन्दोलन का, न केवल इस क्षेत्र मे बल्कि सारे भारत मे, एक आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक महत्व है। यह इतिहास का वह महत्वपूर्ण पृष्ठ है जो इस क्षेत्र के पिछडेपन के कारण छिपा हुआ पडा है और जो स्वतन्त्र भारत के निर्माण मे हुए सघर्षो मे अपना एक अनोखा महत्व रखता है।

राजनैतिक दृष्टि से यह अत्यन्त महत्व का प्रश्न है कि महात्मा गांधी ने सन् 1931 के दाण्डी नमक सत्याग्रह में अपने आंदोलन का आधार नमक को क्यो चुना। भारत का नमक-उत्पादन एक राजनैतिक प्रश्न बन सकता है व उसकी पृष्ठभूमि मे अंग्रेजो के विशाल आर्थिक हित छिपे हुए हैं। यह प्रश्न क्या अचानक ही 1931 में राष्ट्रपिता के मस्तिष्क मे आ गया था ? अर्थात इन चार वर्षो मे इस प्रश्न को जाग्रत करने की पृष्ठभूमि सेठ गुलाबचन्द ने बनाई थी। जिन ऐतिहासिक ग्रन्थो के आधार पर इन तथ्यो को प्रकाश में लाया गया था, उनमें से अधिकांश सन् 1926 मे सेठजी द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदनो में मिलते हैं। टरिफ बोर्ड के बयानो मे जो उग्रता व दर्द सेठजी के बयानों मे उभरा है वह 400 पृष्ठो के उस सकलन मे अन्य किसी के बयान मे नही है। साल्ट सर्वे कमेटी के अध्यक्ष सर पदमजी जिनवाला थे, जिनका बम्बई व गुजरात के उच्च क्षेत्रो से गहरा संबध था व उनकी रिपोर्ट के पूर्व अध्ययन यात्राओं मे सेठजी भारत की नमक क्षमता को सिद्ध करने अनेक स्थानो पर उनके साथ रहे और इसी समय उन्होंने वे सभी तथ्य, जो राजनैतिक दृष्टि से अंग्रेजो की नीति के साथ जुडे हुए थे, समिति के अन्य सदस्यो को बताए होगे व उन्हीं के आधार पर लगता है कि राष्ट्रपिता को नमक एक जनसामान्य व आर्थिक शोषण का स्पष्ट विषय प्रतीत हुआ होगा जिसने उन्हें सत्याग्रह का विषय बनाने की प्रेरणा दी।

सेठजी भारत के राजनैतिक आदोलन में सीधे सक्रीय नही थे और सन् 1926 में मारवाड में कोई प्रभावी राजनैतिक जाग्रति भी नही थी। जयनारायण व्यास का, उस समय तक, राजनैतिक प्रवेश सम्मुख नही आया था इसलिए सेठजी का अपने आदोलन को राजनीति से जोडना सम्भव नहीं था पर यह अवश्य आश्चर्यजनक है

कि रियासत के बाहर दिल्ली की, उस शासन द्वारा मनोनीत, लेजिस्लेटिव असेम्बली में सेठजी पचपदरा के नमक के प्रश्न को उठवा सके। यह भी आश्चर्यजनक है कि एक अंग्रेजी न जानने वाला व्यक्ति, ब्रिटिश साम्राज्य की राजनैतिक पेचीदगी पूर्ण नीति का, देश के एक उपेक्षित व पिछड़े कोने से खड़े होकर, राजनीतिज्ञों की दृष्टि पहुँचने के पूर्व, भण्डाफोड़ कर सका। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक यह है कि इतने बड़े आंदोलन का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति अकेला व एकाकी था। यह भी महत्वपूर्ण है कि एक सामूहिक प्रश्न के लिये स्वयं ने ब्रिटिश स्पर्द्धा में अपनी आर्थिक हानि को सहन किया। इस आंदोलन में विश्व की तत्कालीन इतनी बड़ी पूंजीवादी व्यवस्था की स्पर्द्धा में एक साधारण व्यक्ति के आने का विचार मात्र ही अत्यन्त रोमांचक व साहसिक है। साथ ही यह भी कम साहसिक नहीं कि जिनके सम्मुख यह विरोध प्रकट करना था वह संसार की महानतम सत्ता, ब्रिटिश सत्ता थी। इस आंदोलन की कुछ अन्य विशेषताएं भी हैं। प्रथम तो इसमें हड़ताल जैसे अस्त्र का प्रयोग सन् 1926 में हुआ। 1926 के पूर्व, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में, खिलाफत का आंदोलन ही एक प्रसिद्ध आंदोलन है और उसका गठन व संचालन राष्ट्रीय स्तर पर हुआ था। पर मारवाड़ के पचपदरा जैसे छोटे से व रेगिस्तानी, उपेक्षित व अत्यन्त पिछड़े भूभाग में उस समय हड़ताल शब्द की कल्पना भी कठिन थी, और देशी राज्यों के दोहरे शासन में उसका क्रियान्वयन और भी विस्मयकारी है।

आंदोलन का क्षेत्र-विस्तार भी रोमांचकारी है। विषय, मारवाड़ के पचपदरा परगने के नमक क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है। इस हेतु आवेदन अभियान सम्पूर्ण मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश व बिहार में हुआ। नमक विभाग से पत्राचार व प्रतिनिधि मण्डलों के साक्षात्कार शिमला, दिल्ली, सांभर व पचपदरा में हुए। राज्य सरकार का सहयोग जोधपुर में बैठकर लिया गया। 'इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इन्डस्ट्री' को कलकत्ता व दिल्ली में सक्रिय किया गया। ऐतिहासिक दस्तावेजों से तथ्य-संकलन हेतु जोधपुर की महकमा खास की लाइब्रेरी, दिल्ली व कलकत्ता के विशाल पुस्तकालयों की सहायता ली गई, विदेशी नमक की स्पर्द्धा हेतु नमक का जहाज, कराची से कलकत्ता भेजा गया व उसके विक्रय का केन्द्र कलकत्ता चुना गया। नमक की विशेष रियायती दरें जोधपुर, शिमला व दिल्ली के रेल मुख्यालयों से प्राप्त की गईं, लेजिस्लेटिव एसेम्बली में प्रश्न उठवाए गए, टरिफ बोर्ड व साल्ट सर्वे कमेटी के साथ घूमकर नमक क्षेत्र, मारवाड़ व सिंध के आंतरिक भागों जैसे थोरो, नारो, पियोरा, दलीयार इत्यादि में दिखाए गए। सभी प्रतिवेदनों का मूल सेठजी स्वयं हिन्दी में लिखा जाकर, भाषांतर वकीलों द्वारा तथा टाईपिंग प्रोफेसनल द्वारा, जो जोधपुर या अन्य शहरों में द्वारा होता था, प्रस्तुत करने के स्थान पर लाया जाता था और यह सभी केवल एक व्यक्ति द्वारा दो चार अनपढ़ सहयोगियों को साथ लेकर।

तथ्य-संकलन भी कम अद्भुत नहीं। उपलब्ध सैंकड़ों प्रतिवेदनों में, अनेक गजेटियर्स, ऐतिहासिक पुस्तकों, संधियों, वार्षिक रिपोर्टों, अखबारों, पत्रिकाओं, एसेम्बली की कार्यवाहियों बजट इत्यादि के सन्दर्भ आए हैं परन्तु

आंग्ल भाषा न जानने वाले एक व्यक्ति द्वारा इनका स्रोत पता करना व उन्हे सकलित करना अथवा करवाना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण एव आश्चर्यजनक है।

सघर्ष का आयोजन व व्यूह रचना भी अत्यन्त साहसिक है। मानवीय मोर्चे पर, राज्य सरकार के सहयोग से प्रश्न उठाना, लेजिस्लेटीव असेम्बली मे ससदीय मोर्चा, पत्रो द्वारा प्रचार मोर्चा, आर्थिक मोर्चे पर, रेल्वे से विशेष दरे लेना, क्रेडिट सिस्टम चालू करवाना, एसोसिएशन के माध्यम से अग्रिम नमक विकवाना; कूटनीतिक मोर्चे पर, विदेशी नमक से स्पर्द्धा, ब्रिटिश नमक नीति का भण्डाफोड, रक्षात्मक नीति मे, पक्ष मजबूती हेतु टेक्समेन इन्क्वारी कमेटी, टेरिफ बोर्ड, साल्ट सर्वे कमेटी, जियोलोजीकल रिपोर्ट, टोफोग्राफीकल सर्वे व स्ट्रेची कमीशन के सम्मुख तथ्य प्रस्तुतीकरण, कानूनी मोर्चे पर, 1879 की सधि का आधार अर्थात सम्पूर्ण व्यूह रचना में प्रति पक्षी का ऐसा घेराव किया कि कहीं टस से मस होने की जगह ही न मिली, मानो एक कुशल धनुर्धारी, विशाल सेना के सम्मुख एकाकी सघर्परत होकर प्रतिपक्ष की धज्जिया उडा रहा हो।
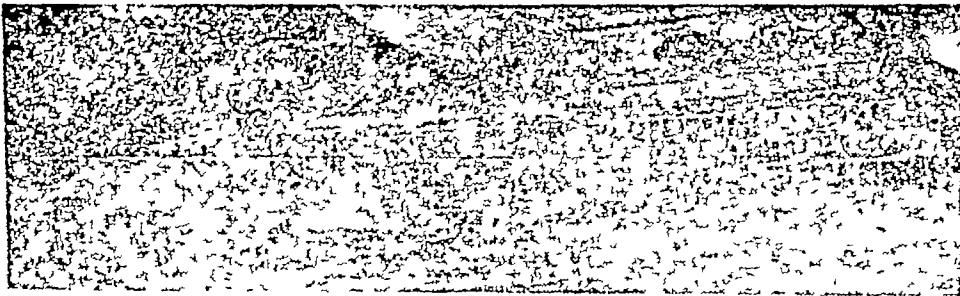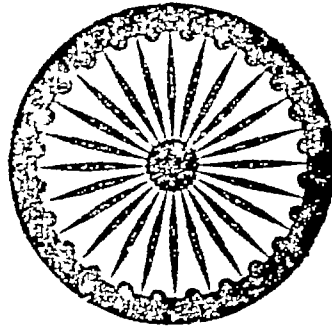
पचपदरा के नमक उत्पादको की आराध्य देवो के पादासन पर अंकित लेख, जिसके अनुसार सवत १७०५ मे पचपदरा विधिवत दरीबा के रूप मे कार्य कर रहा था।

लोकसभा

216 North Avenue
New Delhi
23/1

My dear Seth Sahib,

I have carefully gone through the note which you handed over to me at Delhi on 16th. I am in general agreement & do feel that Salt industry at Pachpadra should be established & developed & that a lot of saving will be effected if the headquarters of the offices are shifted to city — But I wonder why we cannot strengthen & develop the industry at Phalodi & Bap —

However in the meanwhile I might inform you that there is likely to be extended up to 31st March & Central Govt will remain till then when Rajasthan Govt will take over —

With all good wishes
Yours Sincerely
Harish Chandra

श्री हरिशचन्द्र माथुर का सन् १९५२ में सेठजी के नाम पत्र, जिसमें मारवाड़ की नमक–समस्या पर सेठजी के सुझावों का उत्तर भेजा गया है।

ANALYSIS OF PACHPADRA SALT SHOWS THE FOLLOWING COMPOSITION.

(1) ANALYSIS OF BRINE

Average Bringe.

SODIUM CHLORIDE	...	....	85 66%
CALCIUM SULPHATE	...	...	2 97%
MAGNESIUM SULPHATE	...	...	9.44%
MAGNESIUM CHLORIDE	...	....	1.93%

ANALYSIS OF HIRAGARH & POSALI BRINES

Density		Hiragarh 17⁰ Bc.	Posali 18⁰ Bc
		(Per cent on dry basis)	
SODIUM CHLORIDE	...	85.66	88.24
CALCIUM SULPHATE	....	2.97	3.53
MAGNESIUM SULPHATE	....	9 44	3.26
MAGNESIUM CHLORIDE	....	1.23	4.47
UNDETERMINED	....	0.70	0 50
	TOTAL	100 00	100 00

ANALYSIS OF THREE SAMPLES OF PACHPADRA SALT.

		I	II	III
SODIUM CHLORIDE	.	96 42	98 04	98.07
SODIUM SULPHATE	.	.	...	...
SODIUM BICARBONATE	..	...	...	.
CALCIUM BICARBONATE	.	0.14	0 22	0 18
CALCIUM SULPHATE	.	0.95	0 57	0 68
MAGNESIUM SULPHATE	...	0 15	0.46	0 35
CALCIUM CHLORIDE	..	...	..	..
MAGNESIUM CHLORIDE	...	0 20	0 08	Traces
INSOLU	..	0 68	0.60	0 70
UNDETERMINED	...	1 46	0 03	0 02
	TOTAL	100 00	100 00	100 00

मारवाड़ रे नमक रा आगरो री विगत

[मुहता नेणसी री लिखी–मारवाड रा परगनो री विगत द्वितीय भाग– पृष्ठ ३४-३६ प्रकाशक राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान]

श्री महाराजाजी री धरती माहे लूण रा आगर इतरा गाव हुवे छै तिण री विगत।

पाइ तषत श्री जोधपुर रे देश रे गांव –

गाव कापरडो आगर 25 घर 30

गांव काकाणी आगर 1 घर 1

गाव मोडी वाभण री आगर 1 घर 1

गांव चवाधा धीया आगर 1 घर 1

वाम्रो वीलाडी आगर 40 घर 40

गाव दसोर आगर 8 घर 20

गाव भावी आगर 3 छै, विलाडा रा पारोल करै

गाव कलोऊनो आगर 7 घर 7

गाव पारला आगर 2 घर 2

गाव पारो वेरी आगर 1 घर 1

गांव भाषरी आगर 2 घर 2

गांव वौल आगर 6 घर 6

घाघाणी आगर 13 घर 15

गाव वाहालौ आगर 4 घर 6

गांव पंचीयाक आगर 3 घर 4

गाव सावलतो वडो आगर 15 घर 20

गाव हमावस आगर 9 घर 12

३५. परगने मेडता रा गांव –

गाव पुनलतो आगर 4 घर 4

गाव जावौ सीसोदीया आगर 3 घर 3

गाव लवादर आगर 2 घर 2

गाव घेरवी कागर 4 घर 4

गाव धुहडीयावसणी आगर 5 घर 6

सिणलो आगर 2 घर 2

परगने जैतारण नही –

३६. परगने सोजत रा गाव –

गाव वडीयालो प्रोहता रौ आगर 4 घर 50

गाव गोविन्नाव आगर 1 घर 1

गाव हासलपुर आगर 4 घर 4

गाव धवले रा आगर 3 घर 3

गाव पोयरी आगर 3 घर 4

गाव नापो आगर 4 गर 4

मोकलावनगरी आगर 2 घर 2

गांव महेव आगर 3 घर 4

गाव हरलीया हेटोक आगर 13 घर 12

गाव चोपडो आगर 7 घर 6

गांव नोमडावन आगर 2 घर 2

गाव पोपला आगर 2 घर 2

३७ परगने सीवांगे –

गाव पचपदरौ

पाण 300 तथा 325 छै। निण कोस 12 माहे छै। तिण मे पाड पण नापै, पाणी या भरीजो रहै। तिण मे लूण कर नार्व मास 4 नु तयार हुवै। आक लीजै। घर 50 परोलां रा छै।

38 परगने फलावी—

गाव गोवणीलारे था कोन वीसेक मे छै। तिण मे वेरा पीठा ने पाणी क्यारीया मे आवै सु जमे। पाडतेरा 100 छै। घर पारोला रा 60 तथा 70 छै। हेनो 3 लोगे।

39 परगने पोकरण—

रिण छै तिण मे वेरा 20 छै। तिण रौ पाणी क्यारिया भरे तिण रौ लूण हुवै। हेमो ३ लीजे।
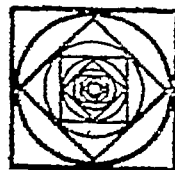
परिशिष्ठ - 2

SCHEDULE A of the treaty for lease of Pachpadra, Didwana, Phalodi, and the Luni treat of Jodhpur State between Maharaja Dhiraj Shri Jaswant Singhji on one part and Captain David M Keith Barr Political Agent at Jodhpur under Authority from Major E R C Bradford C S I. Agent to Governor General for the States of Rajputana, signed at Jodhpur on 18th January 1879 A D

SCHEDULE A

(Referred to in Article VII of Agreement)

List of Jagirdars and others entitled to share in the rents and revenues of the Salt works that will be suppressed, and to receive indemnities as shown in this statement in accordance with Article VII of Agreement

No	Name of Parganah	Name of Village	Name of Jagirdar	Share of Jagirdar			Share of Dharamdars and others		
				Rs	As	P	Rs	As	P
1	Sanchor	Khejreali	Rana Karol Singh	510	0	0	.		
2	Ditto	Sutari	Chohan Jaswant Singh	261	0	0	.		.
3	Ditto	Mandari	Chohan Jhita Singh	555	0	0	.		.
4	Ditto	Barki	Chohan Jait Singh	546	1	0			.
5	Ditto	Bakhasar	Chohan Anar Singh	684	2	0		.	..
6	Siwana	Sawanta	Bhati Kuman Singh	25	8	0	139		.
7.	Nawa	Kuchawun	Rao Bahadur Kesri Singh	2484	6	0	...	.	...
8	Pokaran	Pokaran	Thakur Guman Singh	3084	4	0		.	.
9	Sheo	Pedana	Rawuts of Girah	10	10	6	...		
10	Parbatsar	Mundota	Bishan Singh and Kesri Singh	10	0	0	12	12	0
11.	Ditto	Banigaon	Hari Singh	4	12	0	.		..
12	Merta	Gaonarha	Roa Bahadur Kesri Singh	153	12	0	10	5	0
13	Ditto	Punlota	Khalsa	2	8	0	2	8	0
14	Ditto	Lawadar	Rao Raja Anar Singh	2	4	0	0	5	0
15	Ditto	Harsor	Ditto	2	8	0	0	5	3

16	Merta	Narmo	Rathore Hari Singh of Bakri	54	2	0	..	.	..
17.	Ditto	Dodiana	Rathore Bishan Singh	60	0	0	..	.	. .
18	Jodhpur	Gangani	Kishore Singh Maharaj	432	8	0	46	4	0
19	Ditto	Bhawud	Amar Singh Bhati	4	0	0	3	2	0
20.	Ditto	Desuri	Sanker	..	.	.	12	0	0
21.	Ditto	Mori	Sasan	160	0	0	21	4	
22	Ditto	Chopra	Khalsa	0	10	9	7	0	0
23	Ditto	Bhaori	Bairi Sal	1,515	8	0	26	0	0
24	Ditto	Amdlan-Ka-Gurha	Khalsa	..		...	70	0	0
25	Godwar	Sapuni	Bias Magdat	29	14	6	2	1	0
26.	Ditto	Kord	Rathore Newat Singh	9	13	6	7	2	3
27	Godwar	Chanodi	Rathore Kishore Singh	2,120	12	0	705	12	0
28.	Ditto	Bhachunda	Ditto	20	6	3	8	6	6
29	Ditto	Kawalan	Sendal Kor Singh	87	7	6	32	6	0
30	Godwar	Bardarho	Sendal Achal Singh	154	4	0	26	5	0
31	Ditto	Jomi and half of Amdla	Bharat Ram Dan	96	14	0	42	5	0
32	Bilarha	Bhijiasni	Joshi Ashkaran	23	12	0	5	8	0
33	Ditto	Bilarha	Khalsa				80	0	0
34	Ditto	Jaitiwas	Rao Raja Jowahir Singh	20	5	3	6	12	3
35	Ditto	Kalona	Rathor Guman Singh	23	8	0	45	0	0
36	Ditto	Bhawi	Khalsa	3	0	0	84	8	0
37	Ditto	Bhoyal	Maharaj Bahadur Singh	3	4	0	9	12	0
38	Ditto	Kaparrha	Bhati Abhi Singh	189	3	6	674	8	0
39	Sojat	Bhuriarlo	Indur Singh Parohit and four others	167	7	3	269	8	9
40	Ditto	Durasni	Purohit Kani Ram and others	253	0	0	21	0	0
41	Ditto	Godarao	Charan Khan Dan	93	8	0	24	12	0
42	Ditto	Hasalpur Khurd	Khalsa	...	.	..	37	8	0
43	Ditto	Muriara	Ditto	.		..	34	8	0

44	Sojat	Dangurwas	Khalsa				2	0	0
45	Ditto	Nata Kuri	Ditto		3	6	6	14	0
46	Ditto	Meho	Bhat Tej Singh	22	0	0	20	0	0
47	Ditto	Khokhra	Rathor Bhairon Singh	5	3	9	13	12	0
48	Ditto	Sanpa	Champawut Ruttun Singh and others	3		0	13	0	0
49	Sojat	Jadan	Kalwaut Raghunath Singh	5	8	0	6	8	0
50	Ditto	Pauchwa Khurd	Rao Raja Sultan Singh	106	6	0	3	0	0
51.	Pali	Rupawas	Bharar Ajit Singh	213	0	0	64	0	0
52	Ditto	Kurnu Girwar	Kalian Singh	242	0	0	53	12	0
53	Ditto	Padaran	Sagram Singh	15	8	0	7	2	0
54.	Pali	Sali	Jodha Ruttun Singh	117	2	0	20	11	0
55	Ditto	Hamawas	Maji Ranawatji	251	15	0	88	0	0
56	Ditto	Balirao	Thakur Guman Singh	194	8	0	58	11	9
57	Ditto	Akeli	Parohit Bhom Singh	4	10	0	4	11	0
58	Ditto	Sakrawas	Charan Nathu Ram	4	13	0	3	12	0
59.	Ditto	Kherwa	Rao Bhadur Swaunt Singh	198	6	0	36	0	0
60	Ditto	Budwara	Ditto	42	5	0	6	13	9
61.	Ditto	Soni	Maharani Jarechaji	14	0	0	0	10	9
62	Ditto	Kaharrho	Rathor Bahron Singh	62	0	0	.		.
63	Ditto	Lalki	Thakur Sultan Singh	292	5	0	2	8	0
64	Ditto	Sonwalta	Subhag Sheonath Singh	642	4	0	26	8	0
			Miscellaneous Charges	..		...	14	4	9
			Grand TOTAL	19,595			5	3	..

परिशिष्ठ- 3

Pachpadra Salt Source

Extract from Northen India Salt Revenue Department Manual Vol. III

Published by - Govt. of India in 1902.

1. Mauufacture of salt at Pachpadra is conducted by private agency.

Except in pits which have been constructed by the Government or which are under Government management, the manufacture of salt at Pachpadra is carried by the Kharwals or other persons owing pits within the salt tract and the salt manufactured is purchased at varying rates according to quality by the department for issue to traders and to the Darbars of Jodhpur and Udaipur. The Department is not therefore primarily concerned (Except to a limited extent) with the actual manufacture of salt, but it is the business of the officers of the department stationed at the source to see that only good saleable salt is purchased from the manufacture and that these men maintain their pits in such condition that they are capable of producing such salt A note by Mr G F Buckley Assistant Commissioner on manufacture of Pachpadra salt is appended to these sales

2 Duties of officers in connection with manufacture

For the supervision of manufacture the source shall be divided into two circles (Western Hiragarh and Bara-Samra and Eastern Posali and Chota Samra), the Assistant Commissioner of the Division shall generally supervise all works connected with the manufacture, extraction and storage of salt throughout the source The circle officers shall under the orders of the Assistant Commissioner be in direct charge of all the work connected with the manufactue of salt within their circles, and shall personally supervise the extraction and storage of salt from selected pits An inspector will be posted to each manufacture circle to assist the officer in-charge of the circle in the performance of his duties

3 Pits are the property of persons by whom they are constructed

The pits constructed in the tract by private agency are the property of the persons by whom they have been transferred under the authority of the Commissioner N 1. Salt revenue or to whom they have been passed by inheritance.

4 Rights of the deceased pit owners from the Hakim of Pachpadra

When the death of a pit owner is reported or is known to the Assistant Commissioner he shall after due inquiry of the Hakim of Pachpadra transfer in his office registers the rights of the deceased to such person or persons as shall have been certified by the Hakim of Pachpadra to be the deceased lawful heirs and entitled to inherit.

5 Rights of pit owners to alienate the property.

Any proprietors of a private pit or shares in a pit may with the approval of the Commissioner N I. Salt Revenue shall or otherwise permanently transfer his rights in his pit Applications for such transfers shall be presented to the Assistant Commissioner Pachpadra in writing and such applications shal after attestation by the Hakim of Pachpadra be forwarded by the Assistant Commissioner to the Commissioner for orders. Temporary hypothecations will not be recognized unless that have been made prior to the 1st March 1912 and duly sanctioned

Provided that the applications to temporary hypothication rights of pits owners shall be rejected if it appears that the liability on account of which the transfer is sought to be effected has not been incurred for the pur pose of salt manufacture or that the hypothecation is not likely to improve the management of the pit or lead to the production of better quality than was formerly obtained from it

6, Construction of new pit

New pits may be constructed in the tract by or on behalf of the Government whenever this may be necessary with the object of either of increasing the quantity or improving the quality of the salt produced at the source. New pit may be constructed or disused pits may be restored by the private individuals with the permission of the Commissioner N I Salt Revenue, but shall not be constructed or restored without such permission New pits may also be constructed or disused pits may be restored by Government on behalf of private Individual no terms approved by the Commissioner

7 Limits of the working pits

The number of the working pits in the four divisions of the tract from which the salt may by accepted and purchased shall be fixed from time to time by the Commissioner in accordance with the circumstances of the trade For the present the number has been fixed at 270, subject to this limit the Assistant Commissioner may receive applications for permissions to construct new or restore disused pits shall forward the applications to the Commissioner with a report showing —

a the applicants reasons for desiring to construct a new pit or to restore a disused pit

b the status of the applicant and his shares if any in working pits

c. the Assistant Commissioner's opinion of the probable quantity and quality of the salt which the pit that is to be constructed or restored may be expected to produce and recommendation

REGISTERS OF PITS

8 The Assistant Commissioner shall maintain in his office the following registers of all the working pits in the tract

a Register of working pits form No 130 the number of each pit in this register shall be in the form of a fraction showing its working number above and the number given to the pit in coloured strapans map of the tract (Generally known as kharwals number) below.

b A pit diary form No. 131 in which shall be shown for each pit seperately the history of the pit so far as it is known and all particulars connected with it, the condition in which it is maintained and the way in which it is worked, the number of the pit in register No. 130 tho name and names of the owners or shareholders and value of shares held The entries in the register shall be written by Assistant Commissioner personally

c A register of pits form No 130, in which shall be shown all the working pits in the orders in which salt will be taken from them

The order in which the pits are to be entered in this register will be seen from the footnote below. The pits entered in these registers shall be called the working pits and all other pits shall be called unregistered pits. Without sanction of the Commissioner no pit shall be removed from the registeres nor shall the position of any pit in the register be altered

9. Pits eontaining unsaleable salt to be removed from the registers

A pit of which the salt has been shown by experience to be unsaleable shall with the sanction of the Commissioner be removed from the registers of working pits

10. All pits in the tract to be numbered.

Every registered or working pit shall have its number marked on a board nailed on a page and fixed on the bank of the pit and every unregistered pit shall have its map or survey number marked on a page fixed on the pit bank

11. Claim to pit owners to have his salt purchased.

A kharwal or other proprietor of a private pit shall be informed on application of the position of his pit on the registers of pits and is entitled to have his pit selected for the extraction of salt in the order of its position on the register provided that the right has not been forefeited (a) by the special order of the Commissioner N I Salt for misconduct or (b) failure of the owners or owner to maintain his or their pit in such order as to ensure the production of the best salt it is capable of producing.

12 If the owner of a pit fails to maintain his pit in proper order and the salt is in consequence found to be unsaleable the Assistant Commissioner shall refuse to accept the salt from the pit and shall inform the pit owner in writing of the reason for his refusal and shall further with the sanction of the Commissioner give him notice in writing that unless

the properly renovates and sets his pit within a certain period which shall not be less than an entire working season, his pit shall on expiry of the period fixed be removed from the register until the pit shall have been renovated and set to the satisfaction of the Assistant Commissioner. If the owner of an unregistered pit with the sanction of the Assistant Commissioner properly renovates and sets such pit to the satisfaction of the Assistant Commissioner it shall with the sanction of the Commissioner be brought on the register of working pits the Assistant Commissioner shall not sanction restoration of any unregistered partial pit which in his judgement is not likely to produce good saleable salt

13 Pits producing unsaleable salt

If it be found by experinece that the salt of any pit is unsaleable owing to some cause other than the failure or neglect of the owner to maintain the pit in proper order, the circumstances shall be reported by the Assistant Commissioner to the Commissioner and an application shall be submitted for the sanction to strike the pit off the registers. In all such cases the statement of the owner or owners and of the mortgagee if a pit is under hypothication, as to the condition of the pit and the possibility of its renovation shall be recorded and submitted with the application If the unsaleable quality of the salt is due to the fact that the pit is situated in soil unsuitable for the production of saleable salt the owner may apply to the Assistant Commissioner for permission to construct a new pit or to restore an unregistered pit in a suitable locality, in place of the pit containing the unsaleable salt The Assistant Commissioner shall forward the application to the Commissioner for orders and if his sanction is accorded the new pit or the restored pit when completed shall be registered in place of the pit struck off the registered and with same work number .

14 Application for purchase of salt

Early in September of each year the Assistant Commissioner shall apply to the Commissioner for sanction to purchase and storage of sufficient salt to supply to probable demandes of the trade for the ensuing twelve months and shall in application detail

a The quantity of salt in stock

b The total sales of salt during the past twelve months

c. The quantity of salt it is proposed to produce purchase and the number of pits it is proposed to select in eachd ivision of the tract calculating the average out-turn of the pit at 10,000 maunds

15 Pits be selected by Assistant Commissioner personally

Upon receipt of the Commissioner orders the Assistant Commissioner shall personally examine the salt in the pits from which the salt is to be extracted in each division of the tract

For this purpose the owner of the selected pits shall when ordered, extract representative samples of not less than five maunds of the salt in their pits for the Assistant Commissioner examination and the Assistant Commissioner shall personally satisfy himself that the samples of salt produced by the pit owners are representative of the character of the salt in the pit This is a most important duty and should be most carefully performed

16. Selection is to be made as possible in order of the register

The sanctioned number of pits to be selected from extraction of salt shall be taken in serial order from the register of pits and the number selected from each are of the four divisions of the tract, shall as far as possible be in proportion to the number of registered pits in the division When a pit is rejected, the pits next in order on the register will be taken in its place If owing to the salt not being ready or being rejected as unsaleable pits cannot be selected from any division of the tract in proportion to the number of the registered pits in that division the deficiency may be made up by the selection of pits from other division

17 Arrangements with the pit owners

Lists of selected pits shall be furnished by the Assistant Commissioner to the officer incharge of each circle who shall immediately send for the pit owners to arrange through them to have the salt extracted and stored as soon as possible. As ordinarily, unfavourable duty weather sets in by the end of March, every effort should be made to store the salt required before the close of the effieient year on the 31st March, in cold weather salt should not be extracted in days or at time under tempratures below 60fr prevails because at such times sodium sulphate is likely to form in the salt In such cases extraction should be deferred until temprature has risen above 60 fr when any sulphate of soda which may have formed will be dissolved.

18 Pit owners must extrcf salt without avoidable delay.

A pit owner ordered to extract and store the salt of his pit shall be allowed ten days to arrange for the necessary labour and impliments required, and he shall thereafter work actively and continuously so as to extract and store the whole of the saleable salt in his pits without avoidable delay

19 Refusal, failure or neglect of pit owners to extract salt to work actively and to cleen the salt.

Any pit owner who when ordered refuses or fails to extract and store the salt of his pit shall be held, by reason of such refusal or failure, to have forefeited his claim to have his salt purchased and shall also be liable to the removal of his pit from the registers or to such lesser penalty as, the Commissioner may order on the Assistant Commissioner's report And any pit owner who when orders neglects to extract and store that salt of his pit with reasonable despatch or who refuses or neglects to wash and clean the extracted salt or to pick out or

otherwise eliminate impurities in the salt so as to render it in the opinion of the Assistant Commissioner fit for sale or who refuses or intentionally omits to comply with any reasonable order which the Assistant Commissioner or officer incharge of the circle may issue in connection with the exrtraction and storage of salt may at the discrition of the Assistant Commissioner be punished for such refusal neglect or default by the stoppage of work on his pit and also by rejection of his extracted salt

20 Pit owner or agent to remain present at the open pit.

During the time a pit remain open that is while extraction or storage of salt is in progress, the owner of the pit or if there are co-shares one or more of the co-sharers or his or their responsible agent shall remain present at the pit to supervise the labourers and the work and to receive and comply with any orders given by the Assistant Commissioner or to the officer Incharge of the Circle

21. Stacking of approved salt, shape and number of heaps

All the salt of a pit which have been passed by the officer incharge of the circle as fit for storage shall be stacked by the pit owner on the pit bank in an wedge shaped heap or heap with a rectangular base A pit owner may at his option stack the approved salt of his pit in two heaps one on each side of his pit If the salt of a pit is found to be of two qualities and if in the opinion of the Assistant Commissioner both kinds are saleable he may if the interests of the trade requre it, order each kind to be stacked in a seperate heap

22· Stacking of rejected and refuse salt

Salt which has been rejected as unfit for storage and sale, and salt which a pit owner may extract from an unregistered pit which he his received permission to restore, may with the Assistant Commisssioner's permission be stacked on the pit bank in a conical heap with a circular base permission to stack rejected and refuse salt on a pit bank shall only be given if the owner of the salt stated in wrting to the Assistant Commissioner that he will stack all such salt at his own risk and will make no claim to be paid for it by the department No salt shall be stacked in a wedge shaped heap on the pit bank which has not been passed as fit for storage and sale by the officer incharge of the circle.

23. Examination of salt for storage,

Before passing salt for storage the officer incharge of the circle shall examine it personally while it is on the drying ledge within the pit upon which all freshly extracted salt shall be placed to drain and dry No salt shall be rejected as unfit for storing and sale by reason of impurities in it, which may be picked out or discolouration which may be washed off, unless the owners refuse or neglect to make the salt fit for storage and sale by picking out such impurities or by rewashing it

24. Fine Salt to be used for base and coating of heap

As the salt in the bed or base of a heap is rendered unfit for sale by contact with the soil of the pit bank and as the surface of the salt heap detroits by the exposure to weather the very fine grained salt which forms in a pit chiefly at its ends shall be used to make a base or bed for and to form the coating of the heap

25 Heaps to be dressed and prepared for estimation

When the extraction and storage of the whole of the saleable salt in a pit has been completed the wedge shape heap or heaps of salt on the pit bank shall be properly dressed and prepared for estimation and all loose and refuse salt on the pit Bank or on the drying ledge within the pit shall be collected and buried by the pit owner in such place as the officer of the circle may direct

26 Stock ledger number

The officer in charge of the circle before estimating quantity of salt in any heap stored for sale under these rules shall apply to and receive from the Assistant Commissioner a stock ledger number and the salt shall be entered under this number in the stock register, form No 133 maintained in the Assistant Commissioner's office. A single number only shall be given to the whole of the salt of any pit stored for sale irrespective of the number of the heaps in which such salt may have been stacked, under rule 21 and a fresh series of number shall be opened for each working season. The stock ledger number of every heap with the year in which the salt was extracted shall be printed on a board nailed to a page and fixed in a conspicuous position on the heap

27. Statement of salt measured and estimated to be submitted to the Assistant commissioner

The estimating officer shall submit to the Assistant Commissioner a statement in form No 134 of salt measured and estimated by him in which the measurements taken and the calculations made to ascertain the weight of salt in each heap shall be entered in detail.

28. Right of the pit owner to appeal against the Superintendents or Assistant Superintendent's estimation

A pit owner unsatisfied with the measurements of the officer incharge of the circle may claim to have his sall measured by the Assistant Commissioner.

29 Payment of salt see Commissioner Letter No 1402 dated 15-5-1903

Payment of the salt approved and stored under the above rules shall be made to the pit owner concerned at rates varying according to quality. (a) for all salt of good average quality (b) for salt of marked superior qualitys (c) for the salt inferior to average quality produced at the source but which is acceptable for sale by the department proved that if the inferiority of the quality is due to circumstances beyond the control of the pit owner and the salt is as good as the pit from which it is obtained is capable of yielding, the full rate shall be given (d) payment for salt shall be so regulated that the average rate for payment shall

approximately as near as possible to the average rate (e) In judging the differnce description of salt Assistant Commissioner shall be guided by the general quality of outurn of the season

30. Recovery of over paymente from kharwals.

The first payment shall be made for the weight of salt stored as calculated by measurent of the heap and estimation of its contents Subsequently on the clearance of the heap by issue of the salt to the traders or to the Darbars of Jodhpur and Udaipur,a second payment shall be made for any excess discovered in quantity of the salt so cleared over the estimated quantity first paid for If however on clearance of a heap it is found that the quantity actually cleared is less then was paid for on estimation the very payment shall be reported to the Commissioner and shall under his orders be recovered from the pit owner or owners concerned and shall be credited to the Government

31. Proceduer to be observed in making payment for the salt

The owners or persons entitled to receive payments for the salt shall be summoned by by the Assistant Commissioner through the Hakim of Pachpadra to appear in his office on a fixed date and all payments shall be made by the Assistant Commissioner or in his presence to the persons entitled to receive them All payments made shall, be immediately recorded under the Assistant Commissioner's initials in the day book of payments for salt form No 135 and shall further be recorded in the stock ledger form No 133 maintained in the Assistant Commissioner's office Should doubt arise as to the person or persons entitled to reveive payment under this section payment shall be withheld until the Assistant Commissioner shall have ascertained by enquiry from the Hakim of Pachpadra who is entitled to the payment

32 Guarding of the open pita

The officer Incharge of the circle shall arrange for the efficient guarding of every pit at which extraction and storage of the salt is in progress in his section of the tract It shall be the duty of the guard posted at the pit to be vigilant to prevent thefts of the salt to see that only such salt as may have been passed by the officer incharge of the circle as fit for storage is brought up on the pit bank and that any orders passed by such officer or by the Inspecter on manufacture are duly complied with to ensure vigilance and attention to duty the guards posted at the pits should be visited by the officer on manfacture at all hours of the day or night

33 Duties of officers on manufacture

All the pits at which extraction and storage are in progress shall if possible be visited and the salt extracted and stored be examined daily by the officer incharge of the circle and inspector Only thd offrcer Incharge of the circle shall have authority to pass salt as fit for storage on the pit bank The officer incharge of the circle shall report weekly for the information of the Assistant Commissioner, the work done at each open pit that is the quantity of salt estimated to have been extracted and stored during the week and the total

quantiy estimated to have been stored on the pit bank upto the close of the week and the estimated quantity of salt remaining to be extracted in the pit

34 Manufacture officer examination of brine etc, and reports to Assistant Commissioner.

The officer incharge of each manufacture circle shall personally ascertain the report of the information of the Assistant Commissiner the entry in the pit diary.

a The density and mean depth of the visible brine in each pit selected for extraction of salt in it

b The area and mean depth and the density of the brine in each pit immediately after extraction of the salt in it

c The date on which jhalni has been done and whether it has been properly done or not.

d The data of setting the pit with morali the volume and density of the brine at the time of sailing, the quantity of cart loads of morali used and whether the pit has been properly set

e The date when a pit is eleaned out at the beginning of work, the date of finishing, the depth and density of brine in the pit when work is closed and whether the pis has been thorughly cleaned out

35 Responsibilities of Assistant Commissioner

The Assistant Commissioner shall visit all the open pits as frequently as possible to satisfy himself that only good saleable salt is being stored on the pit bank and shall generally supervise as far as possible the extraction and storage of salt and the ghalni setting and cleaning out of pits He shall also do all that is possible no induce the owners to maintain the working pit in good order, to secure the storage of clean saleable salt and to see that the pit owners and all persons connected with the work in pits are fairly and justly treated

2 Produce of pits

The pits in sandy soil produce small grain white salt which matures in about fifteen months The pits in clay soil produces large grain soiled salt more or less tinted which matures in about two years The average weight of small grain salt is 35 seers and of large grain variety 38 seers Well formed matured salt is clean and glassy The crystals are always rectangulars and generally cubical

3 The chief visible impurities which form with the selt are -

a. Kajji (selenite Gympsum) crystals or in lumps more or less brown which may be picked out.

b. Haim (Gesomiete, containing besides the sulphate of magnesia, potasium and sodium chloride) which appears as chlear crystals or in small flaky pieces more or less yellow tinted and always bitter.

It is difficult to eliminate results from neglect to clean out a pit in time Phulia is another form of the same impurity which appears in frosty weather as a white efforescence on freshly extracted salt It may be brushed off.

c. Jillali twigs coated with a growth of small swallow tailed twins of selenite with some salt kes and which also appears in roundish lumps easily distinquished and as easily picked out

d Anetha (selenite crystals) which appears only in the salt in pits in clay soil in mica like flakes or in opaque white crystals

4. How salt is dried and the impurities eliminated

When salt is extracted from a pit it is first placed in oblong heaps on the drying ledge in the pit just above brine level to drain and dry for at least 48 hours before it is removed in the baskets on the pit bank for storage Impurities may be picked out while the salt is on the drying ledge, while it is taken up for storage in the pit bank and while it is being stacked on the pit bank Rewashing of salt if it is necessary, must be done before it is brought on to the pit bank

5 Condition of a pit in good order

A pit is in good order, (1) if the brine is in good condition (2) if the operation called ghalni has been properly done and (3) if it has been properly set with morali thorns

6 Qualities of the brine

Fresh brine ranges from 15 Beaume in density and is 8 to 10 feet below the surface in sandy soil and is about 50 denser and 2 feet deeper in clay soil It is purer and more copious in the sandy soil Brine is saturated and begin to deposit salt at 25 beaume and will produce saleable salt upto 29 Beaume after which the inferior salt of soda and magnesium will deposit. Good brine is clear and free from odour, bad brine is more or less coloured and often offensive In brine of less denity than 25 Beaume salt will dissolve and the morali thorn will rot After the extraction of the salt in a pit, if the brine is found to be not adove 29 Beaume it may be expected to produce a crop of saleable salt If it is found to be above 29 Beaume the brine is bad and it should be drawn off and the pit cleaned out

7 Ghalni

After the extraction of the saleable salt in a pit all the file salt remaining in it should be dragged out and heaped in a ridge just above the brine level This operaton is called ghalni It helps by opening out the brine springs to freshen the brine in the pit During the rain the ridge of fine salt will be dissolved into the pit and will reform as saleable salt Ghalni should be throughly done within a week after the close of the extraction of salt in a pit if well done it will be found to lower the density of the brine in the pit

8 Setting with Morali

Morali (Licium Europ) is a thorny bush common in the same hill around the salt tract It is put into the salt pits to help the growth of the crystals A full cart load of morali will properly set 100 cft of brine only fresh and throughly dried morali should be used If at all green it will not in brine, if old, it will have lost the sharp points of its thorns on which the most perfect crystals form to set a pit The branoes of morali should be floated on the surface of the brine until the whole surface is covered In three or four days the

moralt will sink when if necessary more may be floated on the brine, should rain fall before the morali has sunk, the morali must be taken out dried and refloated as the rain will have wet the bark of morali and if it is not drawn out and throughly dried it will not. A pit should be set as soon after ghalni is possible but not before the brine is 25 Beaume in density Unset brine will produce unformed salt fine in grain and likely to cohere when stacked

9. Cleaning out of pits,

When brine in a pit is found to be too impure to produca saleable salt or when the pit is chocked with silt, the pit should be cleaned out by drawing off the whole of the old brine it and digging out the silt and deposits of impure salt until original sides and of the pit are laid bare. Ordinarily a pit will not need to be cleaned out often then once after every forth crop of salt taken from it, or about once iu ten years

10 In summer following the setting of pit and if the brines in it has sunk out of sight, the surface of the bed of salt which has formed in trauched to a dedth of 12 to 18 inches in lines about 15 feet a part This operation is called chira and is intended to admit heat into the bed of salt help evaporation of the brine in the body of salt and improve the lustre of salt

11. In pits in which the brine is scanty or overcondense it is diluted and increased in volume by the admission of rain water through an iarthen pipe set in the pit bank or by irragation with the fresh brine drawn off from a neighbouring pit under construction or which is being cleaned out

12. The average outturn of a pit 200 feet long by fifty (50) feet broad which is situated in a favourable locality and has been properly constructed or restored and has been properly set with morali may be estimatec at 10,000 maunds.

27. How to estimate contents of the heap.

Heap shall be measured and their contents estimated by the officer Incharge of the circle according to this formula

Multiply together the mean length of the heap by its half breadth and vertical height to obtain the cubic contents and multiply the cubic contents as obtained by 25 seer to obtain the weight of salt and then reduce the final products to maunds.

Example enclosed

a,b or 30 plus de or 50=80/2 or 40 length c d or 20/2 10 or half breadth to find verticle height

add 10 or half breadth to 20 or slant height A.D. total 30 Multiply by 10 which is the difference between half breadth and slant height. Product 300 Extract square root . 17 which is required verticle height. Now Multiply 40 or mean length by 10 or half breadth product 400 square fect Multiply by 17 or verticle height give 6800 cubic feet or cubiced contents,Multiplied 25 seers rate cubic feet Result 4250 Maunds or weight of sal in heap The above rule is designed to estimate two-thirds of actual weight of salt in a heap and on this estimation the first payment for salt is made to the pit owners

टेरिफ बोर्ड ऑन साल्ट इन्डस्ट्री सन् 1929-30

Published as "OR LAEVIDENCES-Tariff Board on Salt Industry"

जवानी बयान-सेठ गुलाबचन्द, जनरल साल्ट मर्चेन्ट शहर पचपदरा, जो के १२ दिसम्बर १९२९ को पचपदरा मे साहबान मिस्टर मकेयर और होयल के सामने लिये गये।

सभापति – आप यह व्यापार कितने अरसे से कर रहे हैं?

म गुलाबचन्द – पिछली तीन पुश्तो से।

सभापति – क्या पचपदरे मे ही?

म गुलाबचन्द – जी हा, जबसे मैं बालिग हुआ हूँ। मेरे वडेरे भी इसके पहले से करते आये थे, इसी नमक का धंधा।

सभापति – आपके इस कूल व्यापार की क्या तादाद है?

म गुलाबचन्द – करीब २५० से 300 गाडियँ।

सभापति – क्या आप साभर मे भी कोई व्यापार करते हैं?

मः गुलाबचन्द – जी नहीं।

सभापति – क्या आप खारवालों को कुछ पेशगी देते हैं?

म गुलाबचन्द – जी नही।

सभापति – क्या आप सिर्फ गवर्नमेंट का ही नमक खरीदते हैं?

म गुलाबचन्द – जी हा।

सभापति – आप इसको कहा पर बेचते है?

मः गुलाबचन्द – सयुक्त प्रान्त, मध्य प्रदेश और बिहार मे।

सभापति – वहा तो सिर्फ थोडी तादाद मे नमक जाता है!

म गुलाबचन्द – वहा ज्यादा माग नही है, लड़ाई के वक्त से वहा कराची का नमक लेने लग गये हैं।

सभापति – कराची की बात छोडिये पचपदरे का बात कहिए।

म गुलाबचन्द – किराया ज्यादा होने से मुझको पुरवता नही है।

सभापति – मैं यह जानना चाहता हूँ कि सयुक्त प्रान्त और मध्य प्रदेश में, साभर का नमक ज्यादा पसद किया जाता है या पचपदरे का।

म गुलाबच द – दोनो जगहो का नमक एक ही भाव विकता है। कई जगहो मे पचपदरे का नमक महगा विकता हे।

सभापति – राजपुताने मे साभर का नमक ज्यादा खपता है ?

म: गुलाबच द – सयुक्त प्रान्त और मध्य प्रदेश मे पचपदरे का नमक ज्यादा पसद किया जाता है।

म मेथीयास – हमने सुना है कि वहा साभर के नमक की ज्यादा खपत है।

म: गुलाबच द – मेरे तजुर्बे से मैं कह सकता हूँ कि सागर की तरफ पचपदरे के नमक की बहुत ज्यादा खपत है।

सभापति – आम तौर पर यह वात सच नहीं है कि जहा सांभर का नमक विकता है वहा पचपदरे का भी विकता है।

म केकयर – यह व्यापारियो के कहने की वात है ?

सभापति – आप का क्या तुजरवा है।

म मेकीयर – दरअसल मे मुझे मालुम हुआ है कि वहुत से वाजारो मे साभर का नमक ज्यादा पसद किया जाता हैं।

सभापति – क्या पचपदरे के नमक से भी साभर का नमक ज्यादा पसद किया जाता है ?

म मेकीयर – जी हा।

सभापति – हाल मे पचपदरे का नमक वहुत कम पैदा हुआ हैं। कुदरतन यह होता है कि व्यापारियो को वही नमक पसद आएगा जो कि उसके मांग के माफिक तादाद मे मिल जाय, इसी लिये वो पचपदरे का नमक वेचने की तरफ नही रहेगा क्योकि उसको तसल्ली नही है कि वह इस उसको मिल जायगा ? क्या यह ऐसा नहीं है ?

म: मुकीयर – जी हां।

सभापति – वह पचपदरे के नमक के वजाय साभर के नमक को पाने मे ही मुनस्सर रहेगा क्योंकि गर्वनमेंट की पालिसी पचपदरे के नमक के वावत हमेशा वरावर नहीं रहे है।

म मेकीयर – पचपदरे की निकास साभर से बहुत कम रही है।

म गुलावच द – इस बावत एक और वात ध्यान देने की है यहा कोई क्रेडिट सिस्टम लागु नहीं है।

म' गुलाबच द – मैं क्रेडिट सिस्टम रखना पंसद करुगा।

म गुलाबच द – जी नहीं मेरा अर्ज यह हैं कि क्रेडिट सिस्टम से ६ माह का व्याज बचाने का फायदा हो जाता है। मैं यह वतला देना चाहता हूं कि रेल किराया गुजीसता साल से कम होने से हमने १२ लाख और उससे भी ज्यादा नमक किया है जब किराया ज्यादा था तो हम ज्यादा नहीं वेच सकते थे पहले तो साभर के नमक की कीमत

पचपदरे के नमक से चढी हुई थी धीरे धीरे कीमतें बराबर कर दी गई नतीजा यह हुआ कि ५ व ६ साल तक पचपदरे का नमक व्यापार व द रहा ।

सभापति – गवरनमेंट के हिसाव से पचपदरे और साभर के नमक मे एक रुपये का फरक रहा ।

म गुलाबच द – कुदरतन जब पेदाईश कम हुई तो कीमत मे ऊ चा पडा ।

सभापति – मैंइम से यह समझता हूँ कि वह इस वजह से हुआ कि पेदाइश कम होने पर भी गर्वनमेट ने वो ही खर्चा रखा ।

म होयल – जी हा

सभापति – अभी कीमत साभर के नमक की 5 आना और पचपदरे की ८ आना है ।

म. गुलाबच द – सब बाजारो मे साभर और पचपदरे का नमक एक भाव बिकता हैं ।

सभापति – अगर पहले की माफिक दोनो की कीमतो में फरक होता तो पचपदरा का नमक ज्यादा बिकता ।

म' गुलाबच द – जी हा ।

सभापति – तो आप ने गुजीरता साल में 12 लाख मन नमक निकाला ।

म गुलाबच द – जी हा

सभापति – क्या आप साभर के माग पर पचपदरे का नमक दे दिया करते हैं या जुदा जुदा ।

म मेकीय – साभर की मागें यहा भेज दी गई हैं ।

सभापति – तो कमी खरीददारो की हुई न की माग की ?

म मकेवर – १० लाख मन साभर का नमक बच गया और तमाम खरीददार वहा से यहाँ भेज दिये गये ।

सभापति – तो खरीददारो की बढती से यह तो मतलब नहीं हुआ कि मुल्क के अन्दर नमक की माँग ज्यादा है ।

मि होयल – जी नहीं ।

सभापति – मुल्क की माग जो कि अगस्त व सेप्टेम्बर मे १८ लाख की थी नवम्बर व दिसम्बर मे मे २० लाख की नही हुई ।

म होयल – जी नही ।

सभापति – पचपदरे के बाबत गवर्नमेट की क्या पॉलिसी है ?

म: होयल – आप का मतलब आईन्दा नमक निकालने की या मामुली तौर पर, हमारी पॉलिसी जितना नमक बन सके, उतना ही बनाने की है ।

सभापति – लेकिन वो कहता है कि वह ५० लाख मन दे सकता है ।

म होयल – मेरा ख्याल है कि वह गलती पर है और बडे ताज्जुब करने की बात है मेरे डिपार्टमेंट के किसी अफसर न सपने मे भी इतना नमक बनाने का मुमकिन नही समझा है ।

म मेथीयास – अगर वो बना देवे तो तुम ले लोगे ।

म होयल – आप मुझे उससे भी ज्यादा बनाने के लिये कह रहे हो जितनी के गवर्नमेंट ने तजवीज की है ।

सभापति – अगर गवर्नमेंट यह कहती रहे कि वो उतना ही नमक निकलवा देगें जितना कि पचपदरा दे सकता है तो यह बयान इन लोगो को २५ या ३० लाख खपाने में तरकीब दिलायगी और फिर भी यह लोग भ्रम मे रहेगें गवर्नमेंट के लिये यह बेहतर है कि हम उतना लेगें न कि जितना कि तुम निकाल सकते हो । मैं यह नही कहता कि गवर्नमेंट का ख्याल गलत है या यह लोग गलती पर है । मैं सिर्फ यह ही कहता हू कि अगर गवर्नमेंट इन लोगो को कहे कि गवर्नमेंट उतना ही नमक खरीद लेगी जितना कि यह लोग निकाल सके और खयाल करलो कि यह लोग सब निकले तो उस हालत मे गवरमेंट की क्या हालत होगी ।

म होयल – मैं यह कहने के लिए तैयार नही हु कि गर्वनमेंट ५० लाख ले लेगी गोकि यह इतनी तादाद मे होना ख्याल नहीं किया जा सकता ।

सभापति – जब गर्वनमेंट ने यह कहा कि वो उतना ही नमक ले लेगी जितना कि पचपदरा बना सके तो गर्वनमेंट को तखमीना बना लेना चाहिए ।

म होयल – हमने पचपदरे की अच्छी मौसम मे और जब तक के हर एक काम ठीक तरेह से होता रहे जैसे की मौसम ज्यादा खराब न होकर खारवाल किसी बहकाने वालो के फंदे मे न फसे और मजदूर लोग काफी तादाद में मील सके उस हालत मे - १२ व १८ लाख मन नमक पचपदरा को निकालने के काबिल समझे ।

सभापति – आपका बकहाने वालों से क्या मतलब हैं ।

म होयल – गुजीसता साल कुछ हद तक यह लोग बहकाने वालो के फदे मे फस गये थे वे गर्वनमेंट की शर्तों से सतुष्ट न थे ।

सभापति – बहकाने वाला कौन है ।

मः होयल – वो ही सवाल है जो मुझसे आप पहले पुछ चुके हो बहकाने वाला की तसरी खेवडे पर मेरे अफसरान ने दी थी कि जो सख्स काम तो कुछ नहीं करे और शोर गुल बहुत करे ।

सभापति – म॰ गुलाबचन्द मैंने सुना है कि तुम ने हडताल के अन्दर कुछ हिस्सा लिया ।

म: गुलाबचन्द	–	जी नही
सभापति	–	तो क्या कोई हडताल नहीं थी।
म' गुलाबचन्द	–	जी नही।
सभापति	–	क्या हुआ था।
म गुलाबचन्द	–	कुछ नही हुआ।
सभापति	–	म: स्ट्रैथी ने जिकर किया था कुछ हडताल हुई थी।
म: सुमेर चन्द	–	मी सी की वक्त में खारवाल रेटो मे बढती मागते थे मी स्कोट यहा आया और कुछ तय कर गया।
म' मथीयास	–	तब भी गुलाबचन्द का यह बयान गलत था कि कोई हडताल नही थी।
म: होयल	–	उसका क ना बिलकुल गलता था।
म. सुमेर चन्द	–	मी. सी ने मुझको यह लिखा था कि लोग तकलीफें दे रहे थे।
सभापति	–	क्या म: गुलाबचन्द उनमें से एक था।
म: गुलाबचन्द	–	जी नही
म: सुमेर चन्द	-	इसने मुझे यह लिखा था कि खारवास कुछ तकलीफ दे रहे हैं तब मेने अपने नायब को वहा भेजा और मी सी ने लिखा कि तकलीफ मिट गई है।
म' मथियास	–	क्या काम सब वक्त चलता रहा।
सभापति	–	मी स्ट्रैथी कहता है कि हडताल १६२२-२३ मे हुई।
म: गुलाबचन्द	–	उसको बोहत अरसा हो चुका हे और जहां तक मे जानता हू कि कोई हडताल नहीं हुई थी।
सभापति	–	क्या तुम ख्याल करते हो कि वो उसका सिर्फ कयास ही था।
म. गुलाबचन्द	–	होगा।
म सुमेरचन्द	–	मी सी ने जैसे बकवे का जिक्र किया था जो या २ माल पहले हुआ होगा।
सभापति	–	तब क्या हुआ।
म. सुमेरचन्द	–	उन्होने हडताल करने की धमकी दी उन्होने रेटो मे बढती मागी मी सी जो कि यहा सुप्रीडेन्ट था कहा कि रेटें बिल्कुल ठीक है, थोडे अरसे के बाद मी स्कोट यहा आया और उसने ख्याल किया कि रेटें बहुत कम है और उसने रेटें बढाने की सिफारिश की।
मि होयल	–	यह बिलकुल सही बयानात नहीं है- म. सुमेरचन्द क्या तुम उस वक्त यहा थे।
म सुमेरचन्य	–	म स्कोट ने मुझसे बोला था और कहा था।
मि होयल	–	जो कुछ हुआ था यह था कि खारवाल अपदे नमक के बदले में जो रेटे गवर्नमेन्ट

से देने के लिए मुकर्रर थी उसने वे राजी नहीं थे।

सभापति — क्या भाव था।

म होयल — गवर्नमेन्ट ने १,६ से आना मन की एक सरीकी रेट मुकर्रर कर दी वे उससे ना खुश थे उन्होंने कहा कि रेट बहुत कम है और गवर्नमेंट के इस वजह से एतराज किया कि सिर्फ अवल नम्बर दोयम और सोयम नही मन्जूर करना चाहिए वो इस हुक्म से ना खुश थे, और वो अपनी खानो मे काम करने से बिलकुल इन्कार हो गए, वह कुछ हफ्ते तक चलता रहा कुछ खारकालो ने काम करने का इकरार किया और काम किया लेकिन खानों मे से कुछ नमक नहीं निकला मुशकिल से उन्होंने अक्टू-बर में काम करना शुरू किया और नवम्बर और दिसम्बर मे बहुत कम निकला, जन-रल मैंनेरल म. स्कोट ने उनके काम शुरू करने की बहुत तरकीब दिखाई और म० रेड डिप्टी कमिश्नर यहा आया और उनकी आखिरी तरकीब दिलाई इसने कोई वादा नही किया लेकिन उनको वह बतलाना कि कम मीलने रेटे पर भी काम करना अकलब दी है निस्पत के कुछ काम नही मिले, इस अमनायमे उसने यह सिफारस की के रेटे बढ जानी चाहिए और तीनकिस्म माल की तीन रेटे मिलनी चाहिए। यह मैंने सेन्ट्रल बोर्ड आफ रेवेनीयू को बडी जोरदार सिफारिस करके भेजा उसने माल लिया जब यह हुआ तब सब खारवालो ने काम करना शुरू किया।

सभापति — बजदूरीका शेयर अमुमन तौर पर क्या हिसाब पडता हैं।

मः होयल — अवल नम्बर के २ आने दोयम नम्बर के १. 9. आने और कीसम सोयम का १, ६ आना अमुमन तौर पर १ ६ आना।

सभापति — अमुमन तौर पर वे ३ पाई ज्यादा पा रहे हैं।

म. होयल — वो बहुत ज्यादा पा रहे हैं चु के उनको किस्म दोयम और सोयम पर कुछ नहीं मिलता था।

सभापति — तब तो बिलकुल हडताल नहीं थी।

मि होयल — दूसरी तरह से वो हडताल ही थी

म मकेवर — काम बिलकुल बद था।

मि सुमेरचंद— मैंने सिर्फ सुना था कि वह लोग कुछ तकलीफ दे रहे थे और मैंने मेरे असिसटेन्ड को वहा भेजा है।

सभापति — यहाँ पचपदरा मे बडे बडे व्यापारी कितने है।

म गुलाबचन्द — २० आदमी जो के २०० गाडी या व्यापार करते हैं।

समापपि	–	उनको इतना धंधा यहा मिलता हैं, क्या तुम ताजे ईन्डेट पचपदरे के लेते हो या सांभर के बजाय पचपद्रे का माल दे देते हो।
म. मकेवर	–	हम साभर की माग के बदले पचपद्रा का माल दे देते है।
समापति	–	इन लोगो के पास कोई साभर की मांग नही है यह अपना धंधा कैसे चलाते है।
म, गुलाबचंद	–	हम सिर्फ सांभर की माग खरीद लेते है और व्यापार करते है।
समापात	–	तुमको कितना मुनाफा देना पडता है।
मि गुलावचंद	–	एक गाडी के पीछे ४० रुपये हाल में फी गाडी के पीछे ५६ रूपये मुनाफा देता हू मुझको सिर्फ २ या ३ रुपये कमीशन मिलता है जो कि मे देहाती खरीददारो से पाता हू।
लमापति	–	क्या पचपद्रे के बावत मे कोई तह हुई पालीसी है म, होयलक्या तुम साभर की माग के बदले पचपद्रे का नमक वेचते हो या और कुछ।
मि, होयल	–	हम पचपदरा की माग बहुत ही जल्दी वापस खोलना चाहाते है।
समापति	–	साभर से बिलकूल खुद मकतीयार।
मि होयल	–	जी हां।
सभापति	–	क्रेडिट सिस्टम के बारे मे क्या कापका विचार यहा चलाने का है।
मि, होयल	–	हम 5००० मए क्रेडिट सिस्टम रखेगे हम ने थोडी सी तादाद ही मुकरर की है क्योंकि खानो मे नमक की निकासों कम थी।
सभापति	–	5000 की हद किस गरज से रखी गई थी।
मि होयल	–	साभर के तुजरबे से मालूम हुआ कीं क्रेडिट से सौदा करना वेहद तक पोंहुच गया था इसलिए मैंने यह तजवीज सोची के इतनी ज्यादा तादाद से सौदा नहीं करना चाहिए क्योकि हाजिर माल थोडा ही था।
सबापति	–	वो सिर्फ १८ से 20 गाडी तक ही होगा।
मि होयल	–	जी हां।
समापति	–	मः गुलावचंद तुमको ज्यादा क्रेडिट नहीं मिलेगा।
म गुलाबचन्द	–	पहले मुझको कोई क्रेडिट नही मिला था और साहब कमीश्नर से दरखवास्त करने पर मुझको ५००० को क्रेडिट मिला।
सभापति	–	दीवानचंद जैसे शख्सों को क्रेडिट दिया जावे तो तमाम पचपद्रे का माल ले लेंगे।
म गुलाबचन्द	–	मैं यहां रहने वाला आदमी हू और मुझको क्रेडिट मिलना चाहिए।
सभापति	–	अगर रामविलास या दीवानचन्द की क्रेडिट दिया जाय तो वो लोग सब माल खरीद

		लेगे और तुमको कुछ नहीं मिलेगा वो लोग सब १२ लाख मण लेले गे।
मु॰ गुलावच द	—	मेरी प्रार्थना यह है कि साँभर के आदमी को पचपद्रे पर क्रेडिट नही मिलना चाहिए।
सभापति	—	मैं तुमसे दलीया के बाबत एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या तुमने दलियार के नमक का कभी कोई व्यापार किया था।
म गुलाबचन्द	—	जी हा जब के लडाई के वक्त मे नमक का भाव तेज था।
सभापति	—	तुमने जितना हटाया।
मः गुलावच द	—	५० गाडो।
म. मथीयास	—	तुमने कहा पर हटाया।
म॰ गुलावचन्द	—	भोपाल और सयुक्त प्रदेशों में।
सभापति	—	क्या रेल से।
म गुलावच द	—	जी हाँ।
सभापति	—	क्या तुम कुछ कराची से कलकत्ता ले गये थे।
मः गुलावच दजी	—	जी हा करीब १२,००० मण पहले पहल मेने ही कलकत्ते के अंदर यह नमक वेचा था मैंने यह जे मेहता से खरीदा ज्योही मैंने उस को कलकत्ते में उतारा कलकत्ते के तमाम व्यापारियो ने देखा कि नमक कराची से आ गया हैं उन्होंने भाव घटा दिए।
सभापति	—	उसको कितने साल की मुदत हुई।
मः गुलाबसिह	—	सिर्फ गत साल ही।
सभापति	—	दलियार के नमक ने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ।
मः गुलावच द	—	इस वक्त के सरमीयान मे मैंने कोई दिखलाया का नमक कलकत्ते नहीं भेजा मैंने सिर्फ नमक लिया और सब बडे-बडे व्यापारियों को दिखलाया उन्होंने कहा कि वो अच्छा है और अगर देने की गारटी की जाय तो वे वेच सके गे।
सभापति	—	तुमने नमूने पसद किए और ले गए।
मः गुलावच द	—	गवंनमेट सुप्रटेन्डेन्ट ने पंसद किए मुजे दे दिए।
म. मेथीयास	—	क्या तुम दलियार का नमक वेच सकोगे।
मः गुलावच द	—	अगर नमक वोन्ड में चडाया जाय और, मेहसूल पोचने के स्टेशन पर दिया जाय जो मैं नमक खरीद सकूगा।
सभापति	—	क्या तुम दलीयार का नमक व्यापारियों के मारफत खरीदोगे या गवंनमेंट से परवारा।

म. गुलावचन्द	–	गवर्नमेंट से परवारा लेंगे, सीध कमीशनर। यहा खारवालो के माफिक वहा मजदूर लोग काम करते हैं यह इन की किस्ते हैं और फायल के अंदर सब लिखा पडी मौजुद है (फायल दिखलाई) आना 5 कारखानो से रेल तक चढाने की कीमत होती है ।
सभापति	–	क्या तुम ऊंटो पर लाते हो ।
म. गुलावच द	–	जी हां मैं सीध के कमीशनर से मिला था और उसने मुझे यह कहा कि अगर ३ लाख से ज्यादा नमक खरीदू तो सब नमक मुझको मिल जाएगा और मे तुमको क्रेडिट भी दिलवा दूगा और तुम को निकालने के चारजेज के सिवाय और कोई चारजेज नही देने पडेंगे ।
सभापति	–	नमक की कीमत पाई ९ है और अमलेक का खरचा २ जाना ३ पाई हैं अगर यह चार्जेज हटा दिए तो क्या तुम ज्यादा नमक वेच सकोगे ।
म: गुलावच द	–	ले जाने की किमत रेल तक ५ आने हैं और अगर मेरे लिए खासतौर से रेट की कमी हो जाय जैसे कि साभर और पचपदरे की हैं, मे वहुत ज्यादा नमक वेच सकूगा ।
सभापति	–	यह जोधपुर रियासत की हद मे नहीं हैं ।
म गुलावच द	–	लेकिन रेल का स्टेशन जोधपुर रेल्वे पर हैं ।
सभापति	–	गवर्नमेंट सरकार उस माल का मालिक हैं ।
म गुलावच द	–	जी, हा ।
म: मेथीयास	–	यहा मे-पीथोरो कितने फासले पर हैं ।
सभापति	–	वा करीव २०० सौ माल के होगा
म. मेथीयास	–	यहा घारोनारो कितनी फासले पर होगा।
म गुलावचन्द	–	करीव १५ मील के ।
सभापति	–	मीलकीयत गवर्नमेंट की हैं ये रेल्वे जिस हिस्से मे निकलती है जोधपुर रियासत की है इस को वढाने के लिए मेरा ख्याल है कि तुमको रेल्वे वोर्ड की इजाजत हासिल करना होगा ।
म सीग	–	हम रेल्वे वोड को इजाजत देने की तारकीव व दिलायेंगे ।
सभापति	–	यह तुम्हारी हद नहीं हैं।
म सिह	–	हम हमारे खुद के हद मे वगैर रेल्वे वोर्ड की मजूरी के रेल नही बना सकते ।
सभापति	–	यह एक तुच्छ वात है क्योंकि फासला सिर्फ १४ या १५ माईल का हैं तथा रेल्वे वोड पैसा खरच करे या आप पैसा खरच करे इसमे किसी के हद में नुकसान नही हैं।
म. सींग	–	मैं यह नहीं जानता आया दरवार गवर्नमेंट सरकार की हद मे रेल्वे वनान मुनासिव समझेंगे ।
सभापति	–	वो एक किसा की साईडिंग होगी।
म सीग	–	जी हां ।

—

अंग्रेजों के विरुद्ध मारवाड़ का नमक आन्दोलन

— प्रो पुष्कर चद्रवाकर

लोकायतन, अहमदाबाद

डा मदनराज डी मेहता जोधपुर विश्व विद्यालय मे हिन्दी भाषा के प्राध्यापक तो हैं ही पर साथ ही साथ जोधपुर के एक भावनाशील सज्जन विद्वान नागरिक भी हैं। हमारे बीच का प्रेम तन्तु पांच वर्ष पूर्व बन्धा था जो आज अत्यन्त गाढा हो गया है और इसी से जब भी मैं जोधपुर जाता हूँ तो उनका मुझे अपने घर पर ले जाने का प्रेमाग्रह रहता है और सम्पूर्ण परिवार के साथ बैठकर मेवाड मारवाड के जन जीवन के सम्बन्ध मे खूब गहरी वार्ताएँ चलती हैं इन वार्ताओ मे हमारा भाषा माध्यम भी गुजराती रहता है।

कुछ दिन पूर्व मैं अपनी पत्नि के साथ जोधपुर गया था। तो डाक्टर मदन ने मुझे रात्रि भोजन के लिए एक दिन न्यौता दिया था। उस दिन पूरे दिवस मैं जोधपुर मे भटकता रहा व दोपहर की धूप अत्यन्त प्रचण्ड व उग्र थी इससे मेरे यजमान डा महावीरसिंह गहलोत के निवास पर जाकर ज्योंही मैंने सहजरूप से थकान उतारने का प्रयत्न किया तो इन्द्र देव ने अत्यन्त कृपा पूर्वक बरसना प्रारम्भ कर दिया। मारवाड की भूमि पर इन्द्र कृपा एक त्यौहार हुआ करता है पर इस वर्ष सुखद वर्षा हुई। मारवाड जक्शन से हमे हरियाली धरती को देख अत्यन्त प्रसन्नता हुई थी कि यहाँ हमने ऐसे सौभाग्यपूर्ण वर्ष मे मारवाड की भूमि पर पग रखा।

हमारी यह श्रद्धा डा मदन जी के घर पर फलवती बनी। झिरमिर-झिरमिर मेघ बरस रहा था और इसलिए लगभग डेढ घण्टा हम इनके यहा रहे। और वही डाक्टर भडारी, प्रो टाक जैसे अन्य अध्यापको से भी भेंट हुई क्योंकि विश्व विद्यालय सिण्डीकेट के चुनाव चल रहे थे। पर यही श्रीमान चम्पालाल जी सालेचा का परिचय हुआ जो मेरे लिए अत्यन्त सुखद बना क्योंकि डा मदन मेहता ने मुझे परिचय करवाते समय बताया कि श्री चम्पालाल जी के पिता मरुभूमि के एक वीर पुरुष हैं।

डा मदन जी, मुझे आगे परिचय करवाते हुए बताया कि सेठ गुलाबचन्द जी आज तो अत्यन्त वृद्ध हैं व लगभग १०० वर्ष की किनार पर है लेकिन मारवाड की भूमि पर रणभूमि मे प्रदर्शित करने जैसी ही ताकत के वे एक समय योद्धा थे। पचपद्रा के वीर भामाशाह थे।

मैंने योद्धाओ की अनेक बातें सुनी है ऋग्वेद काल से ले कर सन् १९५७ की क्राति तक, नगी तलवार लेकर युद्ध मे अपना जौहर दिखाने वालो के प्रति मुझे अब कोई खास आकर्षण नही रहा लेकिन जब मुझे पता लगा कि गुलाबचन्दजी ने नमक के विषय मे अग्रेज सल्तनत के विरुद्ध जोधपुर राज्य मे सघर्ष चलाया था तो मेरे मुह से सहज प्रश्न निकला 'कब' ?

महात्मा गाधी के नमक सत्याग्रह के पूर्व की यह बात है। अपने देश का इनको पहला नमक सत्याग्रही मानना चाहिये नमक सघर्ष का अगुवा । मैं जिनके पिताजी की बात कर रहा हू उसके विवरण को छोड कर श्री गुलाबचन्दजी के विषय मे सेठ श्री चम्पालालजी से प्रश्न पूछने लगा । श्री चम्पालालजी कुटुम्ब के विषय की बात पूर्ण विवेक व सयम के साथ कहने लगे। उन्होने बताया मेरे पिता बचपन मे भोपाल मे रहते थे वहा प्रारम्भिक जीवन मे जैन समाज के छोटे-मोटे कार्य करते व शिक्षण प्रवृत्ति मे भाग लेते। लेकिन ईसवी सन् १९१६ मे वे पचपद्रा आये।

इस रात्रि मेरे पास समय की कमी थी झिर-मिर झिर-मिर वर्षा हो रही थी मेरे यजमान डॉ० गहलोत की कोठी पर लगभग ढाई किलोमीटर दूर रात के १० बजे मुझे जाना था इसलिये मैं अधिक समय नही रुक सका पर मेरे चित्त मे सत्याग्रही वीर योद्धा सेठ गुलाबचदजी के जीवन मे गहरे उतरने की तीव्र इच्छा जागी।

श्री चम्पालालजी विवेकी निकले और मुझे अपनी कार मे डा० गहलोत की कोठी पर छोड गये लेकिन हमारे बीच कार मे भी गुलाबचदजी विषयक बातचीत हुई।

पचपद्रा ग्राम का राजस्थान व मारवाड के विशिष्ट प्रकार का महत्व है पानी की भयकर कमी वाला गाव माना जाता है। रेत के टीलो के बीच यह जल विहीन ग्राम है मानव को पीने को घी मिल सकता है पर यहा पानी नही। अब भी पानी के सम्बन्ध की स्थिति विशेष सुलझी नही, हा खारा पानी उपलब्ध है पर मीठे पानी के विषय मे तो खूब मुश्किल की स्थिति इस प्रदेश की है। खारे पानी धरती मे बहुलता होने के कारण यहा एक विशिष्ट प्रकार का नमक उद्योग जन्मा है और गुलाबचदजी जैसे भूमिभक्तो ने उसे विकसित किया है।

ईसवी सन १८७९ मे ब्रिटिश सरकार ने मारवाड मे काम कर रहे ७० नमक केन्द्रो को अपनी कुटिल नीति का शिकार बना बन्द करवाया। उन ७० मे से ७ बाकी रहे थे उन केन्द्रो को बन्द करने का जब इसी सन्धि के अन्तगत निर्णय किया तो सेठ श्री गुलाबचदजी की आत्मा मे विद्रोह की आवाज उठी ब्रिटिश सरकार की यह नीति गरीब खारवालो की रोटी छीन लेगी व नमक जैसे प्राकृतिक पैदावार को छीनकर देश को असहाय बनाने की अग्रेज नीति के श्री गुलाबचद विरोधी बने।

डा० गहलोत की कोठी आई व कार की गति रुकने के साथ ही हमारी बातो ने भी विराम किया दूसरे दिन प्रात मिलने की बात निश्चित हुई।

दूसरे दिवस प्रात पुराने जर्जरित कागजो मे भरी फाइलो का ढिग लेकर श्री चम्पालालजी, गेहलोतजी की कोठी पर उपस्थित हुए। हमारी वार्ता का क्रम आगे चला 'मेरे पिताजी ने कुटिल अग्रेज नीति का विरोध करने का निश्चय किया और जब जोधपुर राज्य के दीवान को उन के इस निर्णय की जानकारी मिला तो उन्होने व्यक्तिगत तौर पर कहलवाया कि आप को हमारा आन्तरिक सहयोग रहेगा आप यह लडाई शुरु कर चालू रखें।"

तत्पश्चात् अत्यन्त साहस के साथ गुलाबचन्दजी मोर्चे के अकेले सेनानी बने। नीति का विरोध करने हेतु स्थान स्थान से जनता के हस्ताक्षर करवा ब्रिटिश अधिकारियो को मेमोरण्डम भेजने लगे तो नीति निर्धारण कर्ता अधिकारियों ने उल्टी हवा पैदा की। खरीददारो को कहने लगे कि विदेशी नमक के मुकाबिले यह नमक हल्के

प्रकार का है इस पर श्री गुलाबचन्दजी नमक का एक स्टीमर (जहाज) भर कर कराची से कलकत्ता ले गये और पचपदरा कच्छ इत्यादि का नमक कितनी उत्तम कोटि का है इसकी जानकारी करवाने लगे। इस पर अंग्रेजो के दलालो ने आयातित नमक के भाव गिरा डाले जिससे कि पचपदरा का नमक बाजार मे न टिक सके।

इससे गुलाबचदजी के क्रोध का दावानल जबरदस्त भभक उठा और उन्होने ब्रिटिश सरकार की निम्न-स्तर की राजनीति का भडा फोडने का निश्चय किया। श्री घनश्यामदास बिडला सरीखे प्रमुख उद्योगपतियो को भी नमक सबधी नीतियो की जानकारी दी। इस पर अग्रजो ने कर व्यवस्था पर विचारार्थ एक कमीशन नियुक्त किया जिसने नमक उद्योग हेतु टैरिफ बोर्ड की स्थापना करने का सुझाव दिया लेकिन अग्रेज सरकार ने उस तरफ ध्यान नही दिया इसकी पुन गुलाबचदजी व अन्य उद्योग सस्थाओ की ओर से मौखिक व लिखित जबरदस्त माग की गई व नमक के मजदूरो ने एक बडी हडताल की जिससे घबरा कर अग्रेज सरकार ने इन मजदूरो की मजदूरी मे वृद्धि कर दी, इसमे भी अग्रेजो की कुटिल नीति कार्य कर रही थी। ब्रिटिश सरकार ने दूसरा प्रचार शुरु किया कि पचपदरा की उत्पादन क्षमता कम है, इसे गुलाबचदजी ने नई खाने खुदवा कर ब्रिटिश नीति के झूठ का चुपचाप हिसाब लिया। अग्रेजो की ओर से अधिकारियो ने प्रचार शुरू किया कि इस नमक के बाजार मे माग नही है। इसी समय सिन्ध के नमक के, दलियार व थोरोनारो नाम के दो नमक केन्द्रो को बन्द करने की हलचल शुरू हुई तो गुलाबचन्दजी ने मजदूरो के पक्ष मे जाकर यह मामला भी हाथ मे लिया।

नमक के उत्पादन को ऐसी विषय स्थिति ब्रिटिश सरकार ने जानबूझ कर उपस्थित की थी जिससे कि आयातीत नमक की माग देश मे बढे। जिस समय भारत के नमक उद्योग पर अग्रेजो ने प्रहार आरम्भ किया तो गुलाबचन्दजी ने इम्पीरियल गजेटियर्स व अन्य अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थो के आधार पर नमक के सम्बन्ध का पूर्ण विवरण तैयार कर सरकार की नीति का भण्डाफोड किया।

अग्रेज व्यापारी जहाजो के सतुलन हेतु उसमे पत्थर भरकर भारत लाते थे उसके स्थान पर यदि नमक लाया जाय तो उसमे आमदनी हो सकती है इसी दृष्टि से अग्रेजो ने नमक के विषय मे यह नीति अपना रखी थी। भारतीय मजदूर यदि भूखें मरे तो इसकी चिन्ता अग्रेज लाट साहबो को नही थी।

यह पूर्ण नीति जब प्रकट की गई तो अग्रेजी सत्ता ने साल्ट सर्वे कमीशन का गठन किया। इस कमीशन के सम्मुख सेठ श्री गुलाबचदजी नमक के उत्पादको व मजदूरो के प्रतिनिधियो के साथ गये व भारतीय नमक की श्रेष्ठता व योग्यता सिद्ध करवा दी। पचपदरा का नमक क्षेत्र देश के एक कोने मे पड रहा था जिससे दूरी के कारण अधिक रेलभाडे के फलस्वरुप महगा पडता था जिससे रेल भाडे मे कमी की माग और पचपदरा के नमक की श्रेष्ठता पर कलकत्ता के तत्कालीन पत्रो मे अनेक लेख छपवाये। इस आन्दोलन से अग्रेज सत्ता हैरान हो गई और मि० स्ट्रेथी आई० सी० एस० का एक सदस्यीय कमीशन की उत्पादन की जाच हेतु नियुक्त किया। मि० स्ट्रेटी ने स्पष्ट अभिमत दिया कि भारत में नमक का उत्पादन रोकना योग्य व हितप्रद कार्य नही है इस पर भी यदि ब्रिटिश सरकार उत्पादन केन्द्रो को चालू रखना न चाहे तो उसे ऐसी नीति अपनानी चाहिये कि उद्योग अपनी मौत मर जाय।

नमक का यह आन्दोलन पाच वर्ष तक चला और जो महात्मा गांधी के नमक सत्याग्रह की आधारशिला सिद्ध हुआ।

सेठ श्री गुलाबचन्द अभिनन्दन ग्रंथ

खण्ड ३

कृतित्व

सपादक · पुखराज आर्य

सेठ गुलाबचंदजी सालेचा

भगीरथ की तपश्चर्या – पचपद्रा की पानी समस्या

–श्री जसराज चौपड़ा

★

मारवाड़ की जल समस्या का पचपद्रा एक अतिरेक स्थल गिना जा सकता है । मारवाड की ठेट रेगिस्तानी हकूमतो मे वाड़मेर, शिव, शेरगढ, पचपद्रा व साचोर थे । वाडमेर व साचोर अपने गहरे कुओ से अपनी जल आवश्यकता पूरी करते थे शिव की कुल आवादी ही ५० - ६० घर की थी व वहाँ काफी वडा तालाव है, जो उतनी आवादी हेतु पर्याप्त था । शेरगढ भी तालाव व कुओ दोनो प्रकार से अपनी आवश्यकता पूरी करता था पर पचपद्रा चू की नमक का श्रोत था अत कुओ की वहा सभावना ही नही थी । यद्यपि तालाव वहा पर पर्याप्त मात्रा मे वने हैं पर आवादी व वनजारा व्यापार के कारण पशुओ के भारी आवागमन से होली अथवा फाल्गुन के वाद चार मास मे पानी की कमी से वहा अत्यत दयनीय दशा हो जाती थी । चू की नमक व वनजारा व्यापार के कारण व्यापार व मजदूरी का एक वडा श्रोत पचपद्रा मे था अत इस भौगोलिक नैसर्गिक न्यूनता के होते हुए भी लोग यहा वडी मात्रा मे वसे व किसी समय मारवाड का यह बडा व्यापारिक केन्द्र व मडी था ।

इस कमी को पूरा करने हेतू धार्मिक प्रवृत्ति के वनजारो व जनता के लोगो ने पचपद्रा के चारो ओर तालावो की भरमार लगा दी थी व पचपद्रा चारो ओर से वड वड तालावो से घिरा है । नाडी, जुनानाडी, गुयानाडा, मडापुरा का तालाव, वजरानाडा, भीलानाडा, गुलावसागर चिढाणी तालाव, अमृतीया, हरजी, नया तालाव इत्यादि प्रमुख वड व अनेक छोटे तालाब है । पचपद्रा के चारो ओर जाने वाले आठो मुख्य भागो पर पानी के टाकियें व प्याउए हैं । जुना नाडी तालाव घाटों से वंधा, पोलो व सीढीयो वाला पश्चिम मारवाड मे अपनी तरह का एक ही तालाब है जो अपने किनारे मन्दिरो की अनोखी छटा रखता है व सावन भादो मे जहा मेलो की भरमार रहती है । पूर्व मे इसके ठीक दक्षिण की ओर जहा वनजारो की ताली थी, जहां वर्षा के मौसम मे वनजारे अपने वच्चो के शादी - व्याह करने आते थे । अनेक घुमक्कड जातिया पचपद्रा अपने त्यौहार या एकत्रिकरण अथवा शादियो का स्थान मानते थे जिनमे प्रमुख देशी व वामणीयें भाट, जोगी, सासी कालवेलिये, गवारियें, राव इत्यादि हैं पर वही तालावो का नगर पचपद्रा होली के वाद विपरीत दृश्य प्रस्तुत करता था । अच्छी स्थिति के लोग अपने घरो मे ऊट रखते

थे जिन पर परवालो से जसोल, वालोतरा, रामसीन मू गडा इत्यादि से पानी म गाते थे । मिट्टी के माटो मे पीने का पानी लोग सग्रह करते व २–३ महीने तक काम चलाते थे । साधारण स्थिति का व्यक्ति भर गर्मी मे भी स्नान का नही सोच सकता था । औरते अपने सिर पर पीने का पानी १०–१३ किलोमीटर दूर वालोतरा, जसोल रामसीन, मु गडा, वीटूजा इत्यादि स्थानो से लाती थी । आसपास के ग्रामो की कन्याऐ भगवान से प्रार्थना करती थी कि उनके पिता उन्हे पचपद्रा मे नही व्याहे, ऐसी आम धारणा प्रचलित थी । हर प्रात को पचपद्रा के वाजार मे वैलगाडियो पर पानी बेचने वालो का वाजार लगता । अलग अलग दर थी । लोग हर स्थान के पानी को चूल्लु मे चखकर पानी का मोल जोख करते थे। मडापुरे के तालाव मे खारे पानी की वेरिया थी जहाँ ताले पडे रहते, पहरे दार सोते । जाति अनुसार वेरियो पर लाइन लगती । फिर भी हर रोज ताले टूटना, झगडे होना, सिर फूटना, पानी चोरी जाना इत्यादि आम वात थी। सरकारी कर्मचारियो हेतु सरकारी ठेके से राशन से पानी, वालोतरा या जसोल से मगवा कर दिया जाता था । कभी विना मोसम की कुछ वू दे भी पडती तो उस गदे पानी को घर ले जाकर सग्रह करने भीड पडती । कटोरियो, से गढ्ढो से पानी एकत्र कर उसे घर ले जाकर जितने दिन चला सकते काम चलाते । चू कि भूमिगत पानी खारा था और वह भी इतना खारा कि नाडी तालाव मे जहाँ ८-९ महीने साधारणतया पानी रहता था, पानी समाप्त होने के तीसरे दिन भी वेरी खोदने पर, इतना खारा निकलता कि उसे मुह मे डालना मुश्किल था ।

पचपद्रा से चिढाणी २ मील दूर बिना आवादी का गाव है, जहा महादेवजी का मदिर है व एक टाका पहले बना हुआ था, व दूसरा सेमपूरीजो नाम के साधु ने पैसा इकट्ठाकर सन् १९३२ के आस पास बनवाया था । ज्योही गाव के तालावो का पानी समाप्त होता इन मदिरो के पुजारी इस पानी को बेच कर अच्छी आमदनी करते थे पर यह पानी भी लगभग १५ दिन ही चलता था । १९३० से १९३८ तक मे पचपद्रा मे पानी के टाको की सख्या मे वहुत वृद्धि हुई व १९३९ तक यह सख्या ७०-८० तक पहुँच गयी थी ।

सेठ गुलावचद जी के पूर्वजो मे उनके पितामह सेठ सागरमल जी ने व गुलाव नाम के एक धनवान बनजारे ने मिलकर एक तालाव खुदवाया था जो उन दोनो के मिश्रित नाम गुलाव सागर नाम से प्रसिद्ध हुआ । सेठ गुलाबचदजी के पिता सेठ हजारी मल जी ने नाडी तालाव के दक्षिण की ओर एक कुआ अत्यत उत्साह से खुदवाया था । जो काफी गहराई तक खोदा गया और उसमे कुछ मीठा पानी भी आया पर चूँकि पानी की मात्रा वहुत कम थी अत पानी की सतह के नीचे पत्थर तुडवाया गया । परन्तु पत्थर के तोडते ही पानी इतनी द्रुतगति से आया कि काम करने वाले वडी कठिनाई से वाहर खीचे जा सके व सभी औजार अदर ही छूट गए पर इस कुए के वाहरी औजार अव भी रखे हैं। यह पानी इतना खारा था कि चिडिया भी चोच भरले तो मर जाय। अत कही तालाव का पानी खराव न हो जाय इस भय से इसे पटवा दिया गया । पचपद्रा के नाडी तालाव पर वडा लाखेटा इस कुए की पटान है ।

पचपद्रा के नाडी तालाव के "छोटे लाखेटा" के सवध मे भी एक किवदन्ती प्रसिद्ध है। कहते हैं यहा एक वावडी थी। गौरी ईशर के मेले के दिन इस "वावडी" पर गौरी ईशर को पूजन के लिए लाया गया। उन दिनो मे शासक वर्ग मे विरोधियो के, एक दूसरे के, "गौरी ईशर" हर लाने की स्पर्द्धा रहती थी। उसी के अतर्गत इन मूर्तियो को हटाने विरोधी गुट आ पहुचा तो लोगो ने और कोई रास्ता न देख गौरी ईशर को "वावडी" मे डाल दिया। चूकि गौरी ईशर की समाधि के कारण वह स्थान पवित्र हो चुका था इसलिए इस वावडी को पाट दिया गया और वहाँ जो टीला है उसे "छोटा लाखेटा" कहते हैं। ऐसा लगता है इस किवदन्ती ने ही सेठ हजारीमल को कुआँ खुदवाने की प्रेरणा वावडी के समकक्ष मीठे पानी की आशा से दी होगी। यदि कोई मीठे पानी की धारा या "सेड" है भी तो वह केवल ऊपर व अत्यत सकडी व छोटी है। आज यह मात्र खोज का विषय है।

सवत १९५६ (१८९९ ई०) मे मारवाड मे भयकर अकाल पडा। इस अकाल के समय पचपद्रा की पानी समस्या हल करने हेतु लूनी नदी के किनारे जानीयाना के पास एक वध वनाया गया व जानीयाना से पचपद्रा तक लगभग ५ फीट गहरी एक नहर खोदी गई। इसके द्वारा उस पानी को रामसीन व मूगडा के पास से होते हुए पचपद्रा के वर्तमान रेल्वे स्टेशन के पास एक अन्य वाध वनाकर उसमे छोडा गया। सवत १९५७ मे अत्यधिक वारिश के कारण यह दोनो कच्चे वाध ढह गये पर यह नहर व वाध के अवशेष आज भी मौजूद है। इसके पश्चात ३ साल लगातार अच्छी वर्षा के रहे। तत्पश्चात पुन कुछ वर्ष लगातार अकाल के आए ऐसे ही किसी वर्ष (१९१२-१३ ई०) मे, पचपद्रा मे नमक का व्यापार करने वाले सेठ तुलसीदास अग्रवाल (जो जोधपुर मे "लूणवाले" सेठजी के नाम से प्रसिद्ध रहे है) के मस्तिष्क मे वालोतरा से पचपद्रा नल द्वारा पानी लाने का विचार आया। उन्हे इस का ध्यान शायद जोधपुर मे प्रारम्भ हो चुकी नल व्यवस्था के कारण आया हो। वैसे तव तक रेल इजनो के पानी हेतु, स्थान-स्थान पर कुओ पर भाप इजन भी लग चुके थे। उनका यह विचार पूर्णतया व्यापारिक था व उन्होने इस हेतु वालोतरा मे नदी के किनारे रेल्वे के कुए के पास ही, एक कुआँ खुदवाया जो आज भी तुलसीदास का वेरा कहलाता है। वहा से पाईप लाईन द्वारा पचपद्रा की दादावाडी के पास एक वनवाए गये हौज तक पानी लाए। वहाँ से पानी जनता को कीमत मे वेचने की योजना वनाई थी। कुछ विधि का विधान ही कहना चाहिए कि इस नल योजना के पश्चात लगातार तीन वर्ष तक किसी वर्ष पचपद्रा के तालावो मे पानी की कमी नही आई। वैसे भी केवल तीन मास हेतु पानी सप्लाई करने की कोई योजना आर्थिक दृष्टि से व्यवहारिक नही हो सकती थी क्योकि शेष ९ माह का व्यवस्थापक व्यय वहुत भारी हो जाता। इसी समय सन् १९१४ का महायुद्ध शुरु हो गया। नलो के दाम अचानक वहुत तेज हो गये व सेठ तुलसीदास ने अपनी लागत पर होने वाले नुकसान से वचने हेतु वे नल उखडवा कर, वेच कर अपनी लागत लाभ सहित वसूल कर ली। पचपद्रा का हौज व वालोतरा का कुआँ व मार्ग के लाईन के सकेत आज भी मौजूद है। इस प्रयत्न की असफलता ने पचपद्रा की जल समस्या को वैसा ही वनाए रखा।

पुराने दस्तावेजो मे सन १९१६ मे पचपद्रा के हाकिम श्री चतुर्भुज माथुर द्वारा भेजा गया एक आवेदन महाराजधिराज के नाम से है जिसमे उनसे पचपद्रा में जल व्यवस्था हेतु पाईप लाईन पाईप डालने का निवेदन है।

सेठ गुलावचद के पचपद्रा इलाके आने के पश्चात उनके मस्तिष्क मे सबसे अधिक चुभने वाली पचपद्रा की पानी समस्या थी। वैसे यह परिवार उनमे से था जिनके घर पर पानी के संग्रह हेतु बडे टाके थे व घर का एक ऊट व एक नौकर तो साल भर केवल पानी लाने के लिए ही रहता था अर्थात स्वयं को कोई समस्या न होते हुए भी जनता की यह अवस्था देखते, तो उनका हृदय क्रन्दन करने लगता। गरीब परिवारो के जीवन की प्राथमिकता पानी के लिए यह कष्ट देखना, जो कि मानवता का एक क्रूर उपहास था, उनके लिये असहनीय था।

सेठ गुलावचद की यह मान्यता थी कि पीने के पानी की व्यवस्था राज्य का प्राथमिक कर्तव्य है राजकीय व्यवस्था के अलावा दूसरी व्यवस्था सभव भी नही थी व सेठ तुलसीदास के प्रयत्न की असफलता का दृष्टांत उनके सम्मुख था। पर तत्कालीन शासन द्वारा जोधपुर के अतिरिक्त अन्य किसी स्थान की जल समस्या का भार नही उठा रखा था। पचपद्रा की छोटी सी आबादी, उस समय का समाप्त प्राय महत्व, समस्या के निदान हेतु विपुल अर्थव्यय, सभी राज्य को इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करवाने मे बाधक थे। पर सेठ जी भी अपने धुन के पक्के थे। उन्होंने सरकार के पीछे पडकर ठेके से जिस दर से साधारणतया बाजार मे पानी विकता था अर्थात ८ घडे की बैलगाडी के छ आनो की दर से ३ पैसे घडे में पानी विकवाने की सरकारी व्यवस्था शुरू करवाई। ठेकेदार ऊटो पर पानी लाकर प्रति घडे की दर से बेचता। सरकार को उसमे कोई हानि नहीं उठानी पडती। यह व्यवस्था २ वर्ष तक चली। तीसरे वर्ष अकाल पडा। सेठजी ने उस वर्ष रियायती दर पर अधिक पानी की माग की। अकाल विभाग ने कुछ मासिक सहायता राशि के साथ टकी देना स्वीकार किया। चूं कि कोई ट्रकवाला ठेका लेने को तैयार नहीं था अत सेठजी अपने साथी मे जोधपुर से आए श्री प्रेमचंदजी बागरेचा व बक्षीराम जी लुकड से विचार कर एक ट्रक व एक टकी खरीद कर ले आए। सेठजी के इस कार्य का ओसवाल समाज ने बहुत विरोध किया पर सेठजी ने दोनों सहयोगियो के कुछ पक्षकारों के साथ मिलकर व्यवस्था चालू कर दी। साधारण जनता ने इस कार्य को खूब सराहा। "मोटर मे टकी आई" लोकगीत कई वर्ष गाव मे अत्यन्त उत्साह के साथ गाया जाता रहा जो इसी लोक समर्थन का प्रतीक था। इस व्यवस्था मे काफी नुकसान हुआ पर उस वर्ष के पश्चात टकी से उसी रियायती दर से पानी वितरण की व्यवस्था सरकार के गले पड गई उस मौसम के पश्चात ही मोटर बेच दी गई टकी अकाल विभाग को लौटा दी गई व सरकारी ठेकेदार पर मोटर से पानी वितरण का भार आ गया। यह व्यवस्था १९३८—३९ की नई व्यवस्था तक चली।

पचपदरा : चित्रों में
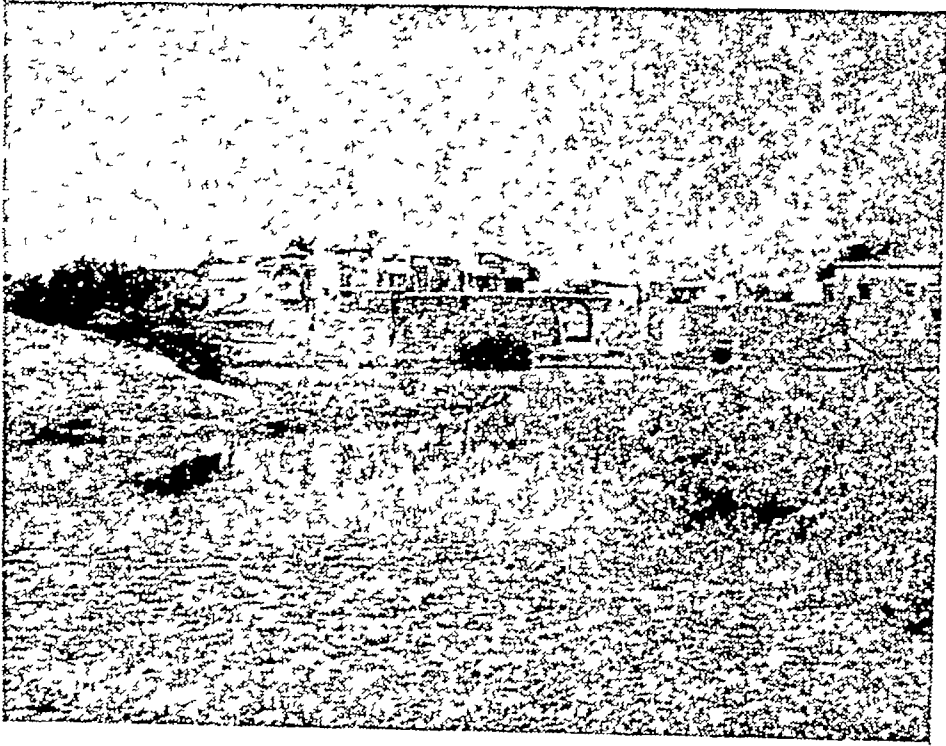
पचपदरा के नाडी तालाव पर घाट व मन्दिर
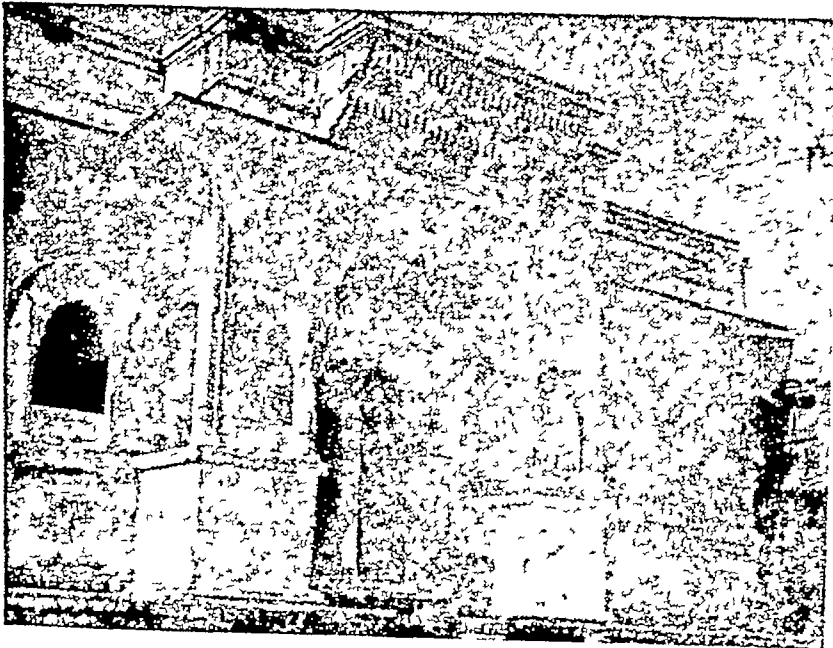
रामदेवजी का प्राचीन कलात्मक मन्दिर

मंडल की खुदाई में मिली भव्य
चामुण्डा की प्रतिमा
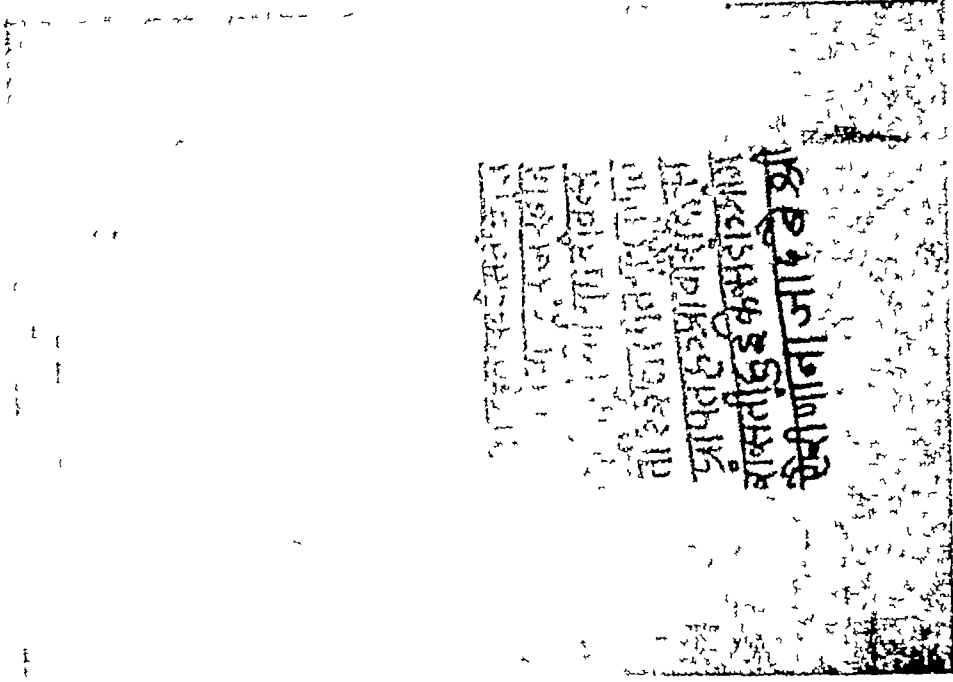
खार वालों की सती की छतरी
का स्मृति लेख
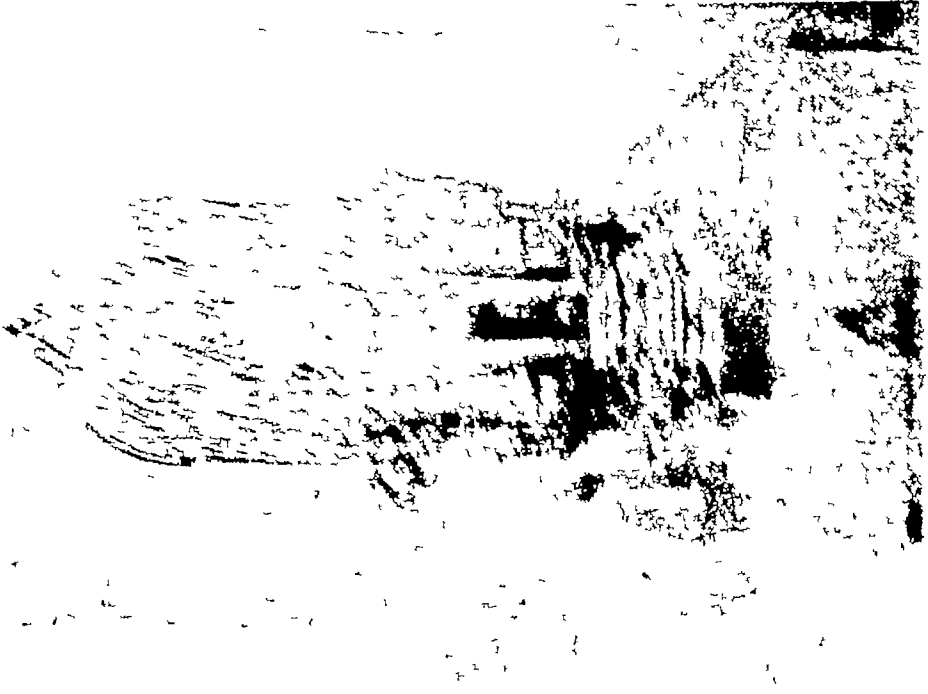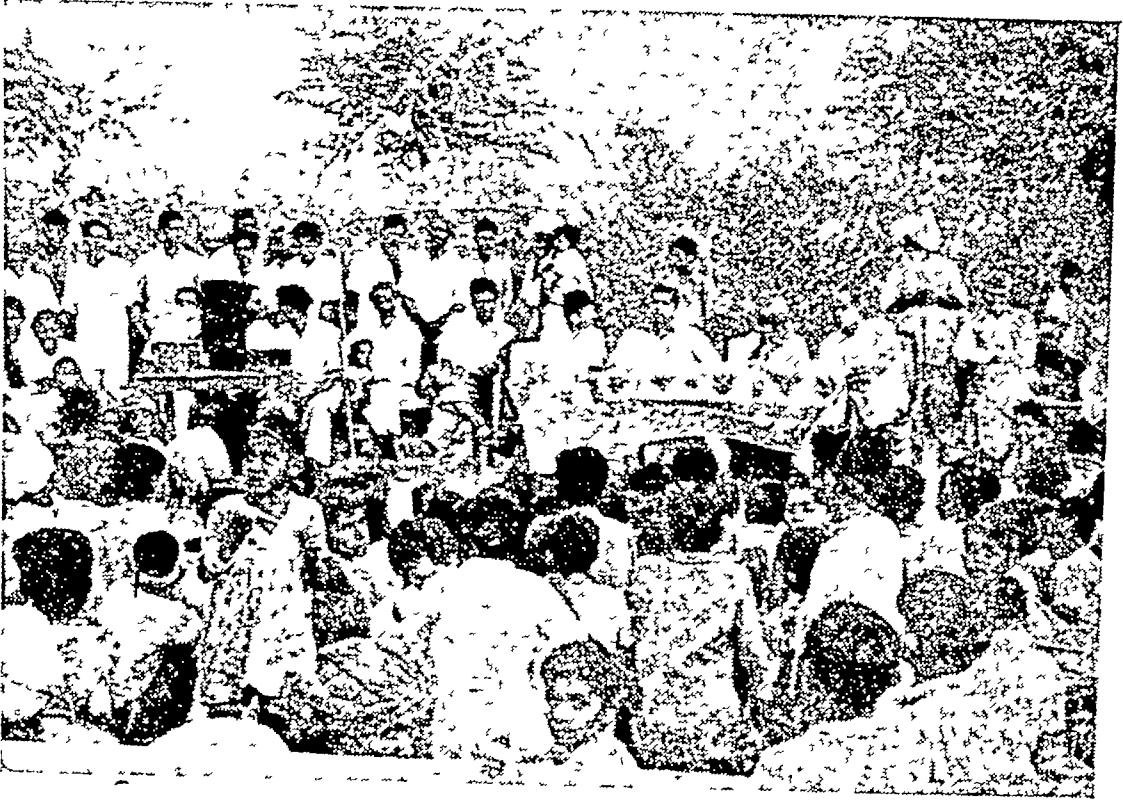
पचपदरा की जलदाय योजना

पचपदरा वासियों की सभा में मंच पर श्री कैलाशदानजी उज्जवल, जिलाधीश, श्री फतेमलजी व्यास, अधिशासी अभियन्ता, जलदाय विभाग व श्री सुधीन्द्र गेमावत उपजिलाधीश

सेठजी भाषण देते हुए

बाड़मेर में सेठजी की प्रेरणा से निर्मित कॉलेज का भव्य भवन

★ जलदाय योजना के उद्घाटन के अवसर पर नगर में शोभायात्रा

सेठ साहब का नगर की महिलाओं द्वारा पारम्परिक स्वागत

जलदाय योजना उद्‌घाटन

जिलाधीश श्री कैलाशदानजी उज्वल उद्‌घाटन करते हुए
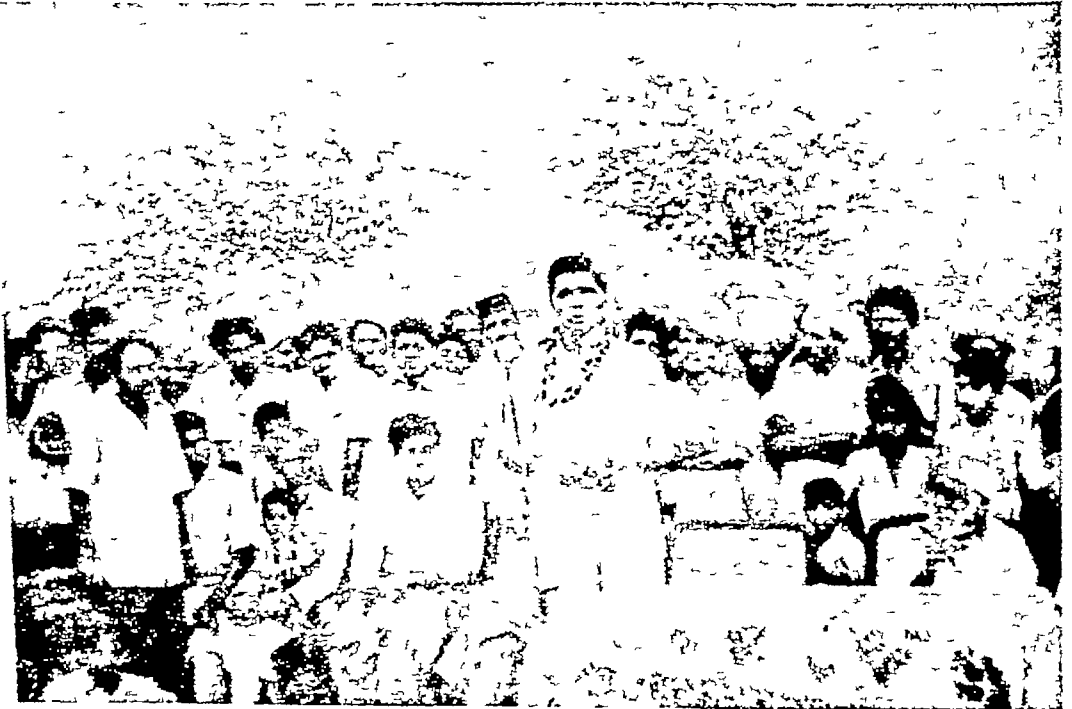
श्री उज्वल भाषण करते हुए
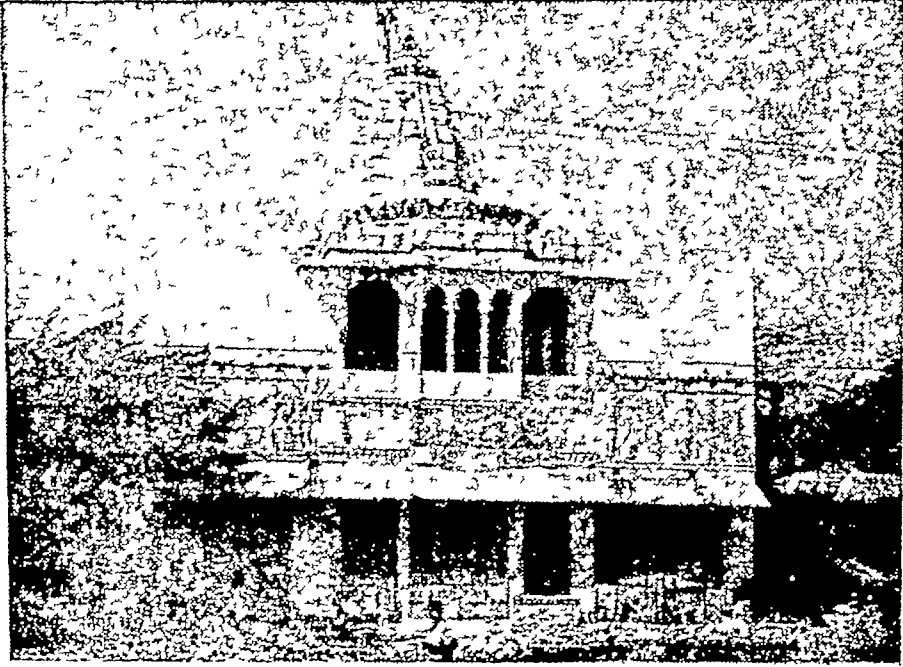
पचपदरा का जैन दरोसर
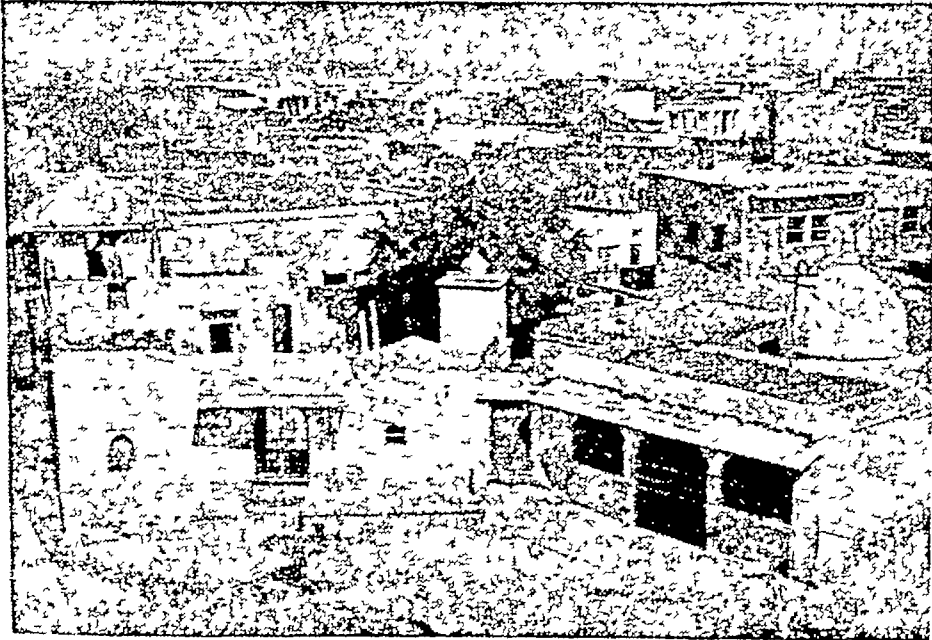
खेमपुरीजी का मठ

नवनिर्मित
जैन क्रिया - भवन व
मन्दिर के दो दृश्य

सन् १९३८ मे पचपद्रा मे रेल्वे लाईन डाली गई। इसी समय पुन सेठ जी ने पचपद्रा की स्थाई पानी व्यवस्था हेतु सरकार के सन्मुख प्रश्न उठाया। मोटर की टकी से ठेके की पानी व्यवस्था को रेल टैंकरो के द्वारा सरकारी पानी व्यवस्था मे वदलने का इनका सुझाव था। सर डोनाल्ड फील्ड उस समय मारवाड के चीफ मिनिस्टर थे। उन्होने श्री गुलाबचन्द के अग्रह पर पचपद्रा की पानी व्यवस्था हेतु तत्कालीन पी० डब्लू० डी मिनिस्टर श्री एडगर को लिखा। श्री एडगर ने एक योजना एक लाख वीस हजार की लागत को वना कर चीफ मिनिस्टर के पास भेज दी। सेठ जी ने १० से २० हजार री लागत की योजना वनाने का निवेदन किया था। उस जमाने मे जव बाजरा १ रु० १२ आना मन मिलता था अर्थात भावो का उस समय व आज १ . ३० से १ ४० का अनुपात था। राज्य के साधन सीमित थे, ऐसी किसी योजना की स्वीकृति असभव थी और वह भी तीन हजार की आवादी के एक छोटे से कस्वे के लिए। चीफ मिनिस्टर ने सेठजी को यह स्थिति वताकर राज्य की असमर्थता प्रकट की।

सेठजी ने एक वार पुन कोई सस्ती योजना वनाने हेतु इस मामले को श्री एडगर के पास भेजने का सर फील्ड से अनुरोध किया। जव श्री एडगर के पास यह अनुरोध पहूँचा तो उसके उत्तर मे उन्होने सर फील्ड को लिखा कि सेठ गुलाबचद जहा सब्ज वाग दिखाता है वहा भयकर गढा नजर आता है। सेठजी के सम्मुख यह एक वडी चुनौती थी। सरफील्ड ने जव यह उत्तर सेठजी को वताया तो उन्होने अत्यत विनीत शब्दो मे निवेदन किया कि चूकि रेल्वे व स्टेट पी डब्लू डी दोनो आपके ही हैं इसलिये इसको योजना व कार्यान्विति रेल्वे डब्लू डी से करवा दी जाय। श्री फील्ड ने यह वात मान ली।

सेठजी ने रेल्वे अधिकारियो के सम्मुख अपनी योजना रखी सेठ तुल्सीदास को एक समारोह मे रेल्वे कार्यालय मे बुलाकर सुन्दर माल्यार्पण के साथ उनका कुआ पचपद्रा की जनता के सेवा हेतु अर्पित करने की घोषणा हुई। रेल्वे ने अपने कुए के भाग के इजन से दोनो कुओ हेतु उपयोग की व्यवस्था कर ली। फेमिन विभाग की टकीयो मे से चार टकीये रेल्वे ने पचपद्रा हेतु निर्धारित की व रेल्वे की स्वय की टकीयो मे से चार और टकीये पानी के किराये की आमदनी दृष्टि मे रख रेल्वे के रोलिंग स्टाक मे सेंदुदी गई। अव केवल पचपद्रा स्टेशन पर हौज व तालाव तक की पाईप लाईन के व्यय की लागत लगभग आठ सौ रुपये का एस्टीमेट वना कर रेल्वे ने सर फील्ड को भेजा। एक लाख वीस हजार की एडगर को स्कीम पर केवल आठ सौ का एस्टीमेट उस अग्रेज मिनिस्टर के मुह पर करारी चपत थी व उस चुनौती का सेठजी द्वारा मूह तोड जवाव था।

पचपद्रा मे पानी की व्यवस्था की नई पद्धति के प्रारभ होते ही सेठजी के मस्तिक मे आया कि जनता इसका कम से कम भार पडे इसकी योजना वनाई जाय। तदनुरूप उन्होंने निशुल्क, दो रुपया, तीन रुपया व चार रुपया वार्षिक की आर्थिक भार की सूचियाँ वनवाई। हरिजनो को निशुल्क व महाजनो व खारवालो को चार व तीन रुपये मे रखा। हालांकि अपने वाले काल हेतु यह

अव इनके पास भी नित्य शीघ्र योजना प्रस्तुत करने हेतु सपर्क हुआ। इन्होने एक कच्ची स्कीम प्रस्तुत की पर भार्गव साहव ने टाईपिस्ट के अभाव मे पूरी स्कीम टाईप करवाने मे दो तीन माह का समय लगने का उल्लेख किया तो सेठ साहव इसे स्वय टाईप करवाने ले आए व केवल चार दिन मे विशाल स्कीम की २४ कापी टाईप करवा कर उन्हे प्रस्तुत कर दी। चीफ इजीनियर महोदय कार्य की इतनी लगन देखकर अवाक रह गए। यह स्कीम कुल ११ लाख की वनी व चूकि आधी राशि केन्द्रीय नमक विभाग देता अत प्रचलित पद्धति के अनुसार अव इसमें इन्कार की राज्य सरकार की स्थिति नही रही।

पर इसी वीच एक अन्य आघात हो गया। केन्द्र सरकार ने पचपद्रा का नमक क्षेत्र छोडने का निश्चय किया और इसके अनुरूप उनका इस जल योजना से हित समाप्त हो गया व उन्होने इसकी सूचना राज्य सरकार को दे दी फलस्वरुप सेठजी का चार वर्ष का प्रयत्न विफल गया।

पर सेठ जी इससे विचलित नही हुए। उन्होने अव इस प्रश्न को राजनैतिक वल दिलवाने का निश्चय किया। वार वार असेंवली मे पचपद्रा की जल व्यवस्था मे गड़वड़ी व भारी सरकारी व्यय की चर्चा होने लगी पर यह चर्चा चूकि भैरोसिह शेखावत या श्री सतीशचंद्र अग्रवाल इत्यादि करते थे इसलिये यह विषय विरोधी दल की माग होने से कमजोर पडा रहा। इन्ही दिनो एक घटना ने विषय को नया मोड दिया। वालोतरा मे उस समय एस० डी० ओ० श्री गुप्ता थे। पचपद्रा मे पानी की पर्याप्त सप्लाई नही हो रही थी व उस प्रश्न को लेकर ग्राम का एक प्रतिनिधी मडल एस० डी० ओ० महोदय से मिलने गया। एस० डी० ओ ने इनको वडे रोव के साथ पानी फालतू खर्च न करने की सलाह देते हुए कहा कि पानी वचाने हेतु आपको घाट पर स्नान करके उस पानी को पुन: प्रयोग मे लेना चाहिए ऐसे स्थानो पर तो पेशाव को भी फिल्टर करके काम में लिया जाय इत्यादि। यह समाधान अत्यन्त अपमानजनक थे व इसकी सूचना जयपुर मे सेठजी को दी गई। सेठ जी ने तत्काल असेंवली के सदस्यो से सपर्क किया। साचोर के श्री लक्ष्मीचद कानूगा ने जो उस समय विधायक थे, इस विषय को व पानी समस्या को लेकर विधान सभा मे काम रोको प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसमे सभी विरोधी सदस्यों ने सहयोग दिया व सरकार की काफी छिछालेदर हुई। अखवारो मे पचपद्रा की पानी समस्या पर लेख निकले सेठ जी ने जयपुर का प्रेस कान्फ्रेंस आयोजित कर सरकारी नीतियो का भडाफोड किया। जल योजना का भी प्रसग आया व सरकार को स्वीकार करना पडा कि जल योजना विचाराधीन है।

अधिकारियो ने सेठजी के प्रयत्नो से प्रभावित होकर सहयोगपूर्ण रुख अपनाया। पचपद्रा साल्ट को अलग करते हुए विना जन-अनुदान की योजना वनाने का निश्चय हुआ। केवल ४००० की आवादी के छोटे कस्वे हेतु विना अनुदान स्वीकृत होने वाली यह प्रथम योजना थी। श्री फतहलाल जी व्यास उस समय जल विभाग के एक्जीक्यूटिव इजीनियर थे उन्होने पूर्ण सहयोग देकर ५ लाख की योजना प्रस्तुत की, जिसे राज्य सरकार की स्वीकृति मिल गई।

इन्ही दिनो मरुक्षेत्र की जल-समस्या पर शोध व अन्वेपण हेतु भारत सरकार के एक वगाली वरिष्ठ अभियता -श्री मित्रा- पचपद्रा आए। उन्हे जयपुर, जोधपुर, व वाडमेर से सेठजी की पानी के संबंध मे विशद जानकारी की सूचना मिली थी। जव वे सेठ जी से मिले तो सेठ जी ने इस क्षेत्र के समस्त उपलब्ध जल स्त्रोतो के वारे मे जानकारी ही नही दी वरन् इसकी जांच हेतु वे स्वय अभियन्ता महोदय के साथ सभी स्थानों पर व्यक्तिगत रूप से गये। नाकोडा तीर्थ पर भी गये जहाँ उस समय जल समस्या नाकोडा तीर्थ के कुए मे भैरव वाँध से पानी वढाने का प्रयत्न की थी। वालोतरा मे वावड़ी से मिलने वाला पानी कडवा था और सेठजी का मत था कि नमक विभाग के पूर्व सर्वेषणो के अनुसार मीठे पानी का स्रोत लूनी नदी के पश्चिमी किनारे पर खोदना अधिक उपयुक्त होगा। तदनुसार विटूजा उनकी सम्मति मे इस क्षेत्र हेतु जल की अच्छी सभावना रखता था। विटूजा मे अनेक पानी के वेरे हैं व उसमे अमृतीया वेरा अपने मीठे पानी के लिए प्रसिद्ध रहा है तथा यह वेरा सार्वजनिक होने से इसके उपयोग मे किसी को आपत्ती का प्रश्न भी नही था।

जव इस योजना का आभास वालोतरा नगर-पालिका को हुआ तो उन्होने अपने वावडी के श्रोत को इस योजना की राशि से गहरा करवाकर पानी सप्लाई करने की पेशकश की। नगर-पालिका की इच्छा थी कि इस पानी की कीमत से आर्थिक लाभ का नगर पालिका को एक स्थायी साधन प्राप्त हो जावेगा। जवकि वस्तु स्थिति यह थी कि वालोतरा के स्वय के उपयोग हेतु न तो उनके पास पूरा पानी था और न उस समय वितरित होने वाला पानी पीने के लिए उपयुक्त था प्रदेश के पार्टी शासन पर नगरपालिका का पार्टी वर्ग उसका लाभ उठाने का इच्छुक था।

स्वीकृति तो मिल गइ पर दो वार टेंडर मागने पर भी उचित दर के टेंडर नही आ रहे थे। अतत सेठजी ने जोधपुर के एक ठेकेदार के सहयोग हेतु पचपद्रा के श्री कानराजजी कोठारी, हस्तीमलजी श्रीमाल व आसोतरा के श्री पावूलालजी को तैयार किया व टेडर स्वीकार करवा कर कार्य आरभ करवाया। यह कार्य भली प्रकार से चले उस हेतु स्वय कई दिन वीटूजा मे ठहरे। ठेकेदारों की सहूलियत हेतु सभी व्यवस्थाऐं की। पचपद्रा के पाईप की लाईन डालने वाले ठेकेदार को भी स्वय की ओर से गोदाम की ठहरने की व अन्य सुविधाऐं दी। कस्वे की पूर्ण सर्वे हेतु तकनीकि अधिकारियो को पूर्ण योग दिया जिससे अतत सन् १९६१ मे यह कार्य पूर्ण हुआ, केवल एक अस्थायी इजन वीटूआ मे प्रारभ हेतु लगाया था। स्कीम के दो आयातित इजन विदेशो से नही आए थे।

ऐसी स्थिति मे कार्य में देरी न हो इस उद्देश्य से अप्रेल ६१ में स्कीम का उद्घाटन करवा कर पचायत को सौंपने का निश्चय किया गया। उस समय पचपद्रा पचायत के सरपच सेठजी के पुत्र श्री चपालाल सालेचा थे।

वह दिन जब वीटूजा से पानी का प्रथम बहाव पचपद्रा पहुँचा, ग्राम के लिए अत्यत सौभाग्य का दिन था। सदियो की जल समस्या का समाधान सेठजी रूपी भागीरथ के अथक परिश्रम व प्रयत्नो से, इस गगा के अवतरण से हुआ था। सारे कस्बे के स्त्री पुरुष तालाब पर स्थित हौज मे जहा पहला पानी का श्रोत छोडा गया एकत्र हुए पानी के कलश की व सेठजी की आरतियाँ उतारी गई पचासो सुहागनियो ने गीतो के साथ कलश वदन व सावेले किए। ढोलो के ढमाको, नृत्य व लोकगीतो की लयो के साथ ग्राम मे कलश लाए गए। ग्राम ललनाओ ने विशेष रूप से भील, हरिजन व अन्य जातियो की स्त्रियो ने सेठजी के सम्मान मे, न जाने स्वनिर्मित कितने लोक गीतो से, अपने श्रद्धा कुसुम अर्पित किए। यह सम्मान दिखावा नही गरीबो के हृदय की गहराईयो से उठने वाले सुभाशीष व आभार के उद्‌गार थे जो शायद ही इस काल मे मारवाड़ के अन्य व्यक्ति को सुलभ हुए है।

पचपद्रा की हकूमत

–श्री मुलतानमल मेहता

वाड़मेर

✻

पचपद्रा पूर्व मे हकूमत सिवाना का एक सात सौ रुपया वार्षिक की रेख का गांव था। नमक उत्पादन के विकास व विस्तार के साथ इसका महत्व उत्तरोतर वढ़ता गया। नमक उत्पादन के विकास व वृद्धि से राज्य को इस स्थान से भारी आय होने लगी जिसमे खानो के पट्टे देने से आय, खानो के नमक उत्पादन पर उत्पादन शुल्क के रूप मे नमक का हिस्सा, वनजारों द्वारा लाये जाने वाले माल पर आयात शुल्क, नगर के आवादी शुल्क, नगर के आवादी भूमि विक्रय से आय इत्यादि शामिल थी। व्यवस्था मे भी राज्य की शक्ति के केन्द्रीकरण की आवश्यकता अनुभव हुई और इन सभी आवश्यकताओ को अनुभव करते हुए सन् १७६४ मे पचपद्रा मे एक हाकिम दरीवा स्थापित किया गया। पचपद्रा की सपूर्ण व्यवस्था १०० वर्ष तक हाकिम दरीवा के आधीन रही व सन् १८६४ मे हकूमत सिवाना व हकूमत जोधपुर के १५२ गावो की हकूमत पचपद्रा स्थापित हुई।

सन् १८७९ मे पचपद्रा के नमक दरीवे का लीज व्रिटिश सरकार को दे दिया गया व धीरे २ नमक का व्यवस्था सवधी कार्य हाकिम के पास पडता गया पचपद्रा नगर बनजारा व्यापार के क्रमश कम पडते रहने से नगर का व्यापारिक व आर्थिक महत्व भी घटने लगा। समद्धि के काल मे जो पानी जैसी समस्याऐ कम महत्व की लगती थी, आर्थिक ह्वास के साथ जटिल वनने लगी और इसलिए वार वार यह प्रश्न सामने आया कि पचपद्रा की हकूमत को वालोतरा ले जाया जाय। इसके कुछ पूर्व मालानी जहां अलग रेजीडेंट रहता था, जोधपुर राज्य मे मिला ली गई व जसोल की जुडीशियल सुपरिटेडेट का कार्यालय की वालोतरा आ गया था।

जिस समय यह प्रश्न उठ रहा था कि पचपद्रा के हकूमत वालोतरा ले जाई जाय वही वह समय था जव पचपद्रा नगर को अपना अस्तित्व वनाए रखने के लिए हकूमत की सवसे ज्यादा जरूरत थी। रेल न होने से उस समय मे यदि हकूमत नही रहती तो पचपद्रा सुरक्षा की दृष्टि से सकट पूर्ण स्थान हो जाता क्योकि उस समय मे अकाल के वर्षो मे डाके डालना अकालपीड़ीतो मे अनेको का आजिवका का साधन वन जाता था हकूमत के अभाव मे नमक विभाग के साथ पचपद्रा का रहा सहा प्रशासनिक सवध की दृष्टि से भी महत्व नही रहता। सार्वजनिक सुविधाऐ जैसे सडक, डाक तार, औषधालय, स्कूल इत्यादि मे भी कमी हो जाती। पानी की समस्या

का सरकार की नजरो मे महत्व कम पढ जाता । वाहर के लोगो का आना जाना भी इतना नही रहता । इसीलिए यह प्रश्न पचपद्रा के लिए जीवन - मरण का प्रश्न वना हुवा था ।

सन् १९१५ के पश्चात जितने चीफ जज, मिनिस्टर इत्यादि पचपद्रा आए उनमे सर महाराजसिह के अतिरिक्त सभी का हकूमत की पुरानी ईमारत के सवध मे आक्षेप था और वह जिस प्रकार के उल्लेखित था उससे तात्पर्य हकुमत के पचपद्रा से स्थानातरण का सकेत भी था। सर महाराजसिह को सेठजी ने विषेश रूप-से हकूमत का महत्व और उसे पचपद्रा मे वनाऐ रखने, तथा पचपद्रा मे रेल लाईन निकालने हेतु निवेदन ही नही किया था, उनकी सहानुभूति भी प्राप्त की थो ।

इतना कमजोर विपय होते हुए भी यह सेठजी का व्यक्तिगत प्रभाव ही था जो पचपद्रा मे हकूमत को रोके हुए था । जव भी यह प्रश्न उठता सेठजी वडी उग्रता से इसका विरोध करते । नमक विभाग के जरिए वे ब्रिटिश सरकार से लिखवाते और प्रश्न टल जाता । सेठजी जानते थे कि इसका हल नए भवन निर्माण मे है पर विपरीत प्रशासनिक टिप्पणीयो के कारण राज्य सरकार ने भवन निर्माण की स्वीकृति नही दी ।

सन् १९१५ मे जव यह विषय पहली वार उठा तो तत्कालीन स्टेट को प्रथम आवेदन के पश्चात सन् १९२८ मे इस विषय पर पर्याप्त पत्राकार, प्रभाव व ऐतिहासिक व प्रशासनिक प्रभाव डाले गए । सन् १९२८ के जोधपुर नरेश को लिखे प्रतिवेदन मे इस विषय का पूर्व इतिहास इसका प्रशासनिक महत्व, अधिकारियो की समय समय पर दी गई टिप्पणीयाँ तो महत्वपूर्ण है ही सर महाराजसिह का उसके तत्काल वाद का महत्वपूर्ण 'नोट' जिसमे उन्होने हकूमत के नए भवन के साथ रेल मार्ग पर भी जोर दिया है, महत्वपूर्ण है ।

जव मारवाड मे श्री जयनारायण व्यास के नेतृत्व मे जुम्मेवार हकूमत वनी तो श्री व्यास ने प्रशासनिक ढाचे मे सुधार हेतु चद्रोडकर कमेटी का निर्माण किया । इस कमेटी ने अपना निर्णय पचपद्रा के विरुद्ध देकर सव-डिविजन हेड क्वार्टर व तहसील दोनो वालोतरा ले जाने का निर्णय दिया । इसी वीच वालोतरा की माग पर वालोतरा खास के छोटे न्यायिक मामलो की सुनवाई करने हेतु वालोतरा मे नायव हाकिम की अदालत प्रारम्भ हुई । हाकिम - प्रशासनिक - हाकिम - जडिशियल व नायव हाकिम सप्लाईज पचपद्रा मे रहते तथा खजाना इत्यादि भी पचपद्रा मे ही था ।

प्रशासन को पता था कि पचपद्रा से तहसील हटाने का भारी विरोध होगा अत. ट्रक मगवा कर रातोरात कार्यालय वदलने की योजना वनाई पर सेठ जी के नेतृत्व मे आन्दोलन का शख फूक दिया गया व जनता ट्रको के आगे सो गई व यह घोषणा कर दी गई कि यहाँ से हुकुमत हमारी लाशो पर हटेगी ।

मामला मुख्य मन्त्रीजी के पास गया और उन्होनें हस्तक्षेप कर तहसील जिसके साथ खजाना व रजिस्ट्रेशन इत्यादि जुडे हुए थे पचपद्रा मे ही रखने का स्थगन आदेश दिया। पचपद्रा जनता की इस विषय मे यह विजय थी। फिर भी मामला वैसे ही अधर मे झूल रहा था। इसी बीच अप्रेल १९४८ से राजस्थान का निर्माण होकर श्री हीरालाल शास्त्री राजस्थान के प्रथम मुख्यमत्री बने। इस समय व्यास व शास्त्री मे राजनैतिक प्रतिद्वदिता थी, अत विषय के साथ राजनैतिक महत्व जुडवा कर, पचपद्रा के पक्ष मे निर्णय करवाया गया। परन्तु सेठ जी ने देखा कि जब तक नए भवन की निर्माण व्यवस्था नही हो जाती यह प्रश्न बार बार उठता रहेगा। वर्तमान भवन इतनी गिरी हुई हालत मे अनुपयुक्त व छोटा था। प्रत्येक आने वाले अधिकारी को उससे आपत्ती होती व प्रशासन का भद्दा लगता था। इस कारण नए भवन निर्माण की स्वीकृति मे सेठजी जुट गए। अतत नए भवन की स्वीकृति सन १९५४-५५ मे प्राप्त हुई। बिना समय नष्ट किए सेठजी ने उसके टेन्डर निकलवाए। ठेकेदार उपलब्ध नही थे तो सेठजी ने स्वय प्रयत्न कर ठेकेदार की व्यवस्था की व उसका टेन्डर स्वीकार करवाया पचपद्रा लाकर उसके रहने की व्यवस्था स्वय के मकान में की तब निर्माण कार्य प्रारभ हुआ।

निर्माण कार्य चल ही रहा था कि श्री मास्टर भोला नाथ जो उस समय पी. डब्लु. डी मिनिस्टर थे का बालोतरा होते हुए बाडमेर का कार्यक्रम बना। बालोतरा मे लोगो ने प्रतिवेदन दिया जिसमें पचपद्रा जैसे छोटे स्थान पर तहसील भवन के निर्माणा पर आपत्ती की मास्टर भोलानाथ जिस दिन बाडमेर पहुचे श्री ए के राय ने कलेक्टर के नाते पद ग्रहण उसी दिन किया था। श्री ए के राय को प्रश्न के सदर्भ का कुछ भी पता न था मास्टर भोलानाथ के पूछने पर उन्होने भी अपनी सम्मति तहसील बालोतरा स्थानातरित करने व भवन निर्माण का कार्य पचपद्रा मे रोकने के पक्ष मे दे दी। मास्टर जी ने तत्काल निर्माण कार्य रोकने, बालोतरा मे उपयुक्त भूमि का चयन करने, व विषय को सरकार के आदेशार्थ भेजने की आज्ञाऐं जारी कर दी। जिलाधीश कार्यालय का यह सब कार्य गोपनीय शाखा ने किया व बाहर किसी को पता भी न था।

जिस समय का यह जिक्र है, सेठजी अपने पौत्र के ईलाज के संबध मे जोधपुर में थे। उस जमाने में न तो बाड़मेर-जोधपूर के फोन सबध थे, न बसे चलती थी। सेठ जी के एक विश्वसनीय व्यक्ति ने एक व्यक्ति के साथ समाचार सेठजी को जोधपुर भिजवाए। सेठजी सबप्रथम पी डब्लू डी के एक्जीक्यूटीव इजीनियर के पास इसकी पुष्टी हेतु गए और वहाँ जाकर शिकायत की कि निर्माण का ठेकेदार कार्य बहुत धीरे कर रहा है। इजीनियर ने तत्कान उत्तर दिया कि "सेठजी आपतो धीरे की बात कर रहे है मेरे पास कार्य रोकने के आदेश आ गए है"। बाडमेर के गुप्तसंवाद की पुष्टी हो चुकी थी

श्री दौलत सिह कोठारी उस समय जोधपुर विभाग के कमिश्नर थे। सेठजी तत्काल उनसे मिले व उनके सम्मुख विषय की पृष्ठभूमी रख उनसे विषय मे सहयोग की कामना की। उन्होने इस

विपय मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। इसी समय सेठजी को यह भी पता चला कि जयपुर मे तत्कालीन मुख्यमत्री श्री जयनारायण व्यास द्वारा तीन दिन पश्चात् ही प्रशासनिक अधिकारियो की वैठक आयोजित की गई है। सेठजी इस अवसर का पूरा लाभ उठाना चाहते थे। उन्होने पचपद्रा अथवा वाढमेर से सवंद्ध रखने वाले सभी अधिकारियो जैसे विकानेर विभाग के कमीश्नर श्री कुजरु जो वाडमेर जिले के जिलाधीश रह चुके थे, श्री सम्पत मल जी भडारी गृह सचिव. जो वाडमेर जिले के प्रथम जिलाधीश थे तथा जिनके समय में ऊपर उल्लेखित १९४९ की कार्यवाही हुई थी, श्री हेतुदान उज्वल जो उस समय मुख्यमत्री कार्यालय से सवद्ध थे व जिनको मारवाड राज्य के प्रशासनिक विषयो का अनुभव था, से सम्पर्क स्थापित कर तारो द्वारा इस विपय की सूचना भिजवाई।

दूसरे दिन दोपहर मे रेल्वे रिफ्रेशमेट रूम जोधपुर मे एक प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया। जिलाधीश वाडमेर, श्री ए० के० राय उस समय तक जयपुर की वैठक मे भाग लेने जाते हुए जोधपुर पहुच चुके थे उन्हे भी प्रेस कॉन्फ्रेंस मे आमन्त्रित किया गया। वालोतरा के सार्वजनिक कार्यकर्ता श्री रामनिवास शर्मा जोधपुर मे थे, इस कान्फ्रेंस मे उपस्थित थे। सभी पत्रकारो से सेठजी ने पहले ही सपर्क कर विपय की जानकारी दे दी थी।

पत्रकार सम्मेलन मे सेठजी ने स्वय विषय की पूर्ण जानकारी सभी को दी। छपा हुवा नोट भी वितरित किया गया। पत्रकारो ने प्रश्नो की झडी लगा दी, जिलाधीश को अनेक प्रश्न पूछे गए। श्री राय को इसके पूर्व आभास भी नही था कि जोधपुर पहुचते ही उन्हे इस विषय को लेकर पत्रकारो से ऊलझना पडेगा। श्री रामनिवास शर्मा ने स्पप्ट शब्दो मे वालोतरा के प्रमुख नागरिक के नाते भी पचपद्रा के मत का समर्थन किया। जिलाधीश को स्वीकार करना पडा कि उनके नए नए आने के कारण इस विषय की गहनता से उनकी अनभिज्ञता थी व चूंकि वे अव इस जटिल परिस्थिति का अनुभव करते हैं, अत वे राज्य सरकार के सम्मुख इस विषय मे मौन रहेगे।

उसी दिन राजस्थान भर के पत्रो ने इस विषय को महत्व देकर समाचार व सपादकीय पचपद्रा के पक्ष मे छापे। जो विषय केवल मत्रीजी के आदेशो पर जिलाधीश स्तर से गोपनीय प्रकार से राजधानी मे पहूँचने वाला था, राज्य का एक तात्कालिक महत्वपूर्ण विषय वन चुका था। प्रतिपक्ष इतना क्षीण हो चुका था कि उसकी अपने पक्ष को प्रस्तुत करने हेतु मुह खोलने की भी हिम्मत नही थी।

पत्रकार सम्मेलन के समाप्त होते ही सेठजी कार द्वारा जयपुर रवाना हो गये जयपुर मे पहुच कर उन सभी परिचित अधिकारीयो से मिले जो अगले दिन की वैठक मे भाग लेने वाले थे। सभी ने सेठजी को पूर्ण आश्वस्त किया कि उनकी ओर से पचपद्रा के पक्ष को पूर्ण समर्थन मिलेगा। इसके पश्चात एक विशद प्रतिवेदन मुख्यमत्रीजी को प्रस्तुत करने हेतु वनवाकर, मुख्यमंत्री जी के सम्मुख पहुचवा दिया गया। कान्फ्रेन्स रूम मे वैठक प्रारम्भ हुई व सेठजी वाहर पेड के नीचे अपने

साथियो के साथ खडे रहे। बैठक के समाप्त होते ही मुख्यमत्री व्यासजी वाहर आए व पेड के नीचे खडे सेठजी को आवाज देकर कहने लगे। "सेठ साहव आपने कैसे यह मान लिया कि जयनारायण व्यास के हाथो पचपद्रा की तहसील हटाने की आज्ञा होगी। आप निश्चित होकर जायें, तहसील भवन पचपद्रा मे ही रहेगी, तहसील पचपद्रा मे ही रहेगी।"

सेठजी ने व्यास जी को धन्यवाद दिया। सार्वजनिक निर्माण विभाग के सचिव महोदय से तहसील निर्माण कार्य प्रारभ करवाने की आज्ञाऐं जारी करवाई व विजय के ऊल्लास के साथ वे लौट पडे। सेठजी जव वालोतरा पहुचे तो उसी समय जोधपुर-जयपुर की ओर जाने वाली गाडी से वालोतरा का एक प्रतिनिधि मडल वालोतरा के पक्ष की पैरवी हेतु जाने, स्टेशन पर आया हुआ था। पर सेठजी तो इस प्रश्न को सदा सदा के लिए कब्र मे लिटा आए थे।

आज यदि हम इन पुराने परिच्छेदो को पुन खोले तो प्रतीत होगा कि इस विषय को जव भी उठाया गया सेठजी ने सभी ओर से इस प्रकार का प्रभाव पूर्ण घेरा वनाया कि अधिकारियो को इनके पक्ष मे निर्णय देने के अतिरिक्त कोई चारा न रहा। कहना न होगा कि श्री जयनारायण व्यास के सेठजी व पचपद्रा मे अत्यत निकट सम्वध होते हुए भी उनका यह मत स्वतत्रता के पूर्व से था कि हकूमत के स्थान हेतु पचपद्रा का औचित्य कम है। पर केवल तीन दिन के प्रयत्नसे, प्रशासनिक अधिकारियो के माध्यमसे, प्रेस के द्वारा, व्यक्तिगत प्रभाव से, विषय पर आक्रमण की शीघ्रता व तत्परता से ऐसा वातावरण वना दिया गया कि न तो किसी को उसका दूसरा पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर मिला, और न कोई दूसरा पक्ष प्रस्तुत करने वाला था, और न किसी की दूसरा पक्ष प्रस्तुत करने की हिम्मत पडी। इसके पूर्व भी जव भी यह विषय उठा, नमक विभाग के माध्यम के ब्रिटिश सरकार द्वारा, विभिन्न दीवानो अथवा मुख्य मत्रीयो के नोट्स के माध्यम से, ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के माध्यम से उन कागजो पर इतना दवाव पडता कि वे कभी वढ न पाते। सन् १९१५ से १९५४ तक अर्थात पूरे ४० वर्षो तक वीसो वार उठने वाले प्रश्न को अतत पचपद्रा के पक्ष मे हल करवा कर रखे। आम परिस्थितियो व पचपद्रा की वीच के काल की स्थिति भी वदल चुकी है। किन्तु उस काल मे जव राज्य मे पचपद्रा हकूमत काला पानी गिना जाता था, कर्मचारियो को केवल सजा देने पचपद्रा भेजा जाता था पीने के पानी की जहा कमी थी, रेल्वे सबध का अभाव था, सेठजी ने हकूमत को तो रोका ही साथ ही, उन सव शिकायतो के कारणो को दूर कर स्थिति पैदा की कि आज वाडमेर जिले का प्रत्येक कर्मचारी पचपद्रा को प्राथमिकता देता हैं।

– ज्ञान यज्ञ का पुरोहित –

शिक्षा क्षेत्रमें सेठजी का अविस्मरणीय योगदान

–श्री घमंडी राम परमार

सेठ गुलावचद का सार्वजनिक क्षेत्र का प्रारम्भिक कार्य मे भोपाल मे स्कूल प्रारभ करना भी अत्यत महत्वपूर्ण है। सेठजी का जन्म गजवसौदा का है। भोपाल मे वे खजाँची के रूप मे एक महत्वपूर्ण फर्म मे कार्य करते थे। उपलब्ध जानकारी के अनुसार जो पाठशाला सेठजी ने प्रारभ की थी वह सन् १९१३-१४ या उसके पूर्व प्रारभ हुई होगी। इस स्कूल को चलाने हेतु लगभग ७०-८० जैन समाज के व्यक्ति मासिक चदा देते थे। मासिक २ रु० से २५ रु० माहवारी तक का था व कुल ३५० रु० माहवारी एकत्र होता था व उस समय की स्थिति मे जव १० रु० से १५ रु० माहवारी का वेतन स्तर था, यह चदा स्कूल की सुदृढ स्थिति को प्रकट करता है। सेठजी उन समय अर्थात गोद आने के पूर्व एक साधारण परिवार के थे, पर स्वय भी ५ रु० मासिक देते थे जो उस समय उनकी आर्थिक क्षमता के अनुसार वहुत वडी चीज थी।

सन् १९१५ मे भोपाल के नवाव की जुविलि मनाई गई व जुविलि के कार्यक्रम मे इस स्कूल हेतु भी पर्याप्त धन एकत्र किया गया। वाहर से आए व्यक्ति द्वारा भोपाल जैसे नगर मे अपना यह प्रभावपूर्ण स्थान वनाना उनकी प्रतिभा व कुशलता को प्रकट करता है।

इस स्कूल मे वच्चो की मासिक प्रगति का लेखा रखा जाता था। इस मासिक प्रगति पुस्तिका का जो सूचना सकलन होता था, उससे उस समय अर्थात आधुनिक शिक्षा के प्रारम्भिक काल मे भी व्यवस्थापको की सूझ वूझ का प्रमाण मिलता है। सभवतया जीवन के आगे के वर्षो की शिक्षा विषयक कार्यशीलता व लगन का वीज उनमे यही से पड गया था।

'जिस काल का हम यहाँ वर्णन कर रहे हैं उस समय सरकारी स्तर पर जोधपुर के वाहर मारवाड मे शिक्षा का अभाव था १९१७ मे सेठजी पचपद्रा मे गोद आए। उपलब्ध रेकार्ड के अनुसार सन् १९२० मे यहा जो दो कक्षा तक स्कूल चलती थी उसके ठीक संचालन हेतु उन्होंने एक

समिति बनाई जिसका नाम स्कूल कमेटी पचपद्रा था। यह समिति स्कूल के भली प्रकार सचालन हेतु धन सग्रह भी करती थी १९२० के रजिस्टर मे सम्पन्न छात्रो से ११ रु० माहवार साधारण स्थिति के छात्रो से १ रु० माहवार व गरीब छात्रो से किसी प्रकार शुल्क नही लिया जाता था पुराने रेकार्ड यह भी बताते है कि इस प्रकार की व्यवस्था भी उस समय के अज्ञान ग्रस्त ग्राम निवासियो को मान्य नही थी व अनेक सपन्न बच्चो के शुल्क की उगाही के सम्मुख "झगड़ा है" लिखा हुआ है। दूसरी व पहली कक्षा मे पढने वाले छात्रो को उस समय की व्यवस्था का ज्ञान होना जो उनके बड़े बूढो के सहयोग से चलती थी, सभव नही व उस स्कूल की सूचि मे से अधिकांश अब इस ससार मे नही रहे अत उस व्यवस्था की विशेषताओ या विषय को यहां विषद से देना सभव नही।

आज का नाकोडा तीर्थ बहुत विकसिक रूप मे है पर उस काल मे जब सेठजी ने इसकी व्यवस्था की कमेटी परपरा करवाई थी इसका रूप अत्यत छोटा अथवा नगण्य स्वरूप का था। सेठजी नाकोडा तीर्थ कमेटी के प्रथम उपाध्यक्ष व द्वितीय अध्यक्ष थे। उस समय इस तीर्थ पर जैन स्कूल प्रारभ करने हेतु सारे क्षेत्र के जैन समाज के नाम एक अपील निकाली गई व उनकी सम्मति मागी गई, पर चूकि समाज की ओर से सहयोग वातावरण प्राप्त न हो सका, अतः योजना स्थगित कर देनी पडी।

सन् १९२९ मे पचपद्रा स्कूल मे शिक्षा क्षेत्र मे एक नया बदल आया जब कन्या शिक्षा हेतु सेठजी ने व्यवस्था प्रारभ करवाई। श्री नगराजजी उस समय स्कूल के प्रधानाध्यापक थे। दो अध्यापिकाये पढाने के लिए आती थी, जिनके रहने की, पढाने हेतु स्थान की सारी व्यवस्था सेठजी अपनी ओर से करते। सेठ जी की कन्याओ ने व खारवाल व अन्य कोमो की की कुछ बालिकाओ ने उस समय शिक्षा प्राप्त की, पर साधारण समाज उस समय कन्या शिक्षा का विरोधी था अत यह योजना अधिक समय न चल सकी। सेठजी भी उस समय अन्य बहुत बडे बडे कार्यो मे व्यस्त थे।

सन् १९३२ मे सेठजी के पुत्र श्री लक्ष्मीचद व श्री हस्तीमल पारख जोधपुर पढने गए। श्री हस्तीमल एक प्रतिभाशाली छात्र थे, जो अपने पूरे शिक्षण काल मे विशेष प्रतिभा प्रकट करते रहे हैं। सरदार स्कूल उस समय सोजती गेट के भीतर वर्तमान नगर परिषद भवन में थी। ओसवाल बोर्डिग बाजार मे था। श्री लक्ष्मीचद को पढाने हेतु एक प्राइवेट टयूटर की आवश्यकता थी। श्री राखडमलजी ने जो उस समय ओसवाल बोर्डिग के प्रोक्टर थे, एक प्रभावी पर सहयोग इच्छुक छात्र पाली के श्री देवीचद का नाम सुझाया जो बाद मे देवी चद शाह के नाम से प्रसिद्ध हुए इन को टयूटर रखा गया। सेठजी अकसर ओसवाल बोर्डिग जाते व बोर्डिग के प्रमुख छात्र के नाते श्री देवीचन्द को छात्रावास भी शुरू करने की बात सेठ साहब ने कही जो

उस समय कालेज के छात्र थे। इसी बीच सरदार स्कूल अपने नए भवन मे स्थानातरित हो गई जो वागर से वहुत दूर पडती थी। फलस्वरूप सेठ साहव ने देवीचदजी को लक्ष्मीचदजी व हस्तीमल जी हेतु एक निवास स्थल की सरदारपुरा मे व्यवस्था करने को कहा। श्री देवीचदजी ने कहा कि सेठ साहव आप अपने ही वच्चो की चिंता कर रहे हैं पर देहातो से आने वाले शेप अनेक वच्चो की चिंता कौन करेगा। वात सेठजी को चुभ गई और दो दिन वाद ही सेठ जी ने एक वोर्डिंग सरदारपुरा मे प्रारम्भ करने की अनुमति श्री देवीचदजी शाह को दी। इस वोर्डिंग हेतु प्रारम्भिक सामान व मासिक व्यय मे सहयोग सेठजी व उनके अनन्य सहयोग व मित्र श्री प्रतापमलजी मेहता द्वारा दिया था। देवीचदजी को इसका प्रोक्टर वनाया गया। सात छात्रो से प्रारभ हुआ यह वोर्डिंग धीरे धीरे वढता गया व तीन वर्षो मे इसमे ३०-४० छात्र रहने लगे। आज मारवाड भर मे उस काल के पढे लिखे छात्रो का वर्ग सक्रिय है। वह उस वोर्डिंग की सस्कार व्यवस्था इत्यादि से इतना प्रभावित हुआ कि शेप जीवन मे समाज सूधार का स्तभ ऐसा वर्ग वन गया। यही महावीर जैन डिस्ट्रीक वोर्डिंग हाऊस कालातर मे कुशलाश्रम वोर्डिंग व आदर्श स्कूल वना जो शिक्षा मे ही नही सामाजिक क्षेत्र मे भी रुढियो का विरोधी, समाजसेवी, शिक्षा प्रेमी, विकास निष्ठ वर्ग के निर्माण मे सामने आया।

सेठजी व्यक्तिगत रूप से इस वोर्डिंग के दैनिक कार्यो व विषेश कार्यक्रमो इत्यादि मे भाग लेते थे। कुशलाश्रम के अनेक छात्रो को याद होगा प्रात के शारीरिक व्यायाम मे सेठजी उन्हे विभिन्न प्रकार के नए व्यायाम जैसे हनुमान दड, चकरी दड, अनेक आसन इत्यादि सिखाते। जव भी जोधपुर होते, प्रात व साय की प्रार्थना मे स्वय साथ होते। वोर्डिंग के छात्रो के नियमो का पालन करते। प्रार्थना के वाद के या साप्ताहिक सभा के कार्यक्रमो मे कविता, सवैये इत्यादि सुनाते।

महावीर जैन डिस्ट्रीक वोर्डिंग हाऊस की एक निरीक्षण पत्रिका के पृष्टो मे उन्होने छात्रो की छोटी छोटी सस्कार सवधी वातो की ओर ध्यान आकर्षित किया है। शिक्षा व छात्र के चरित्र निर्माण के सवध मे उनकी रूचि, जानकारी व सक्रियता का यह प्रमाण है।

इस वोर्डिंग का प्रारभ के तीन वर्षो का हिसाव सेठजी के स्वय के हाथ से लिखा हुआ है जो वताता है कि वे इसके दैनिक कार्यक्रमो से अपने आपको कितना सवद्ध रखते थे।

इस छात्रावास व स्कूल को श्री जयनारायण व्यास ने मारवाड़ का एक छोटा सा शाति निकेतन कहा है, जो इस कार्य की महानता को प्रदशित कर रहा है। इस छात्रावास का विद्यालय मे परिर्वतन श्री सेठ साहव द्वारा श्री देवीचदजी शाह को प्रोत्साहित करने का ही परिणाम है। श्री ए पी. काक्स ने सन् १९४६ मे श्री देवीचन्द शाह का स्थानातरण वाडमेर हाई स्कूल मे कर दिया। स्वाभाविक प्रश्न खडा हुआ कि वोर्डिंग का क्या हो। श्री प्रतापमल जी मेहता व सेठ साहव ने कहा कि आज सारी चिंता छोड नौकरी से त्याग पत्र दें। कुशलाश्रम विद्यालय प्रारभ कर दे, हमारा पूरा

सहयोग रहेगा व इसी अनुसार उन्होने पूरा पूरा सहयोग देकर कुशलाश्रम विद्यालय प्रारंभ करवाया। इसी माध्यम से श्री देवीचद जी मारवाड भर में समाज सुधार का विगुल लेकर जाते, वोडिग व स्कूल हेतु चदा भी लाते, अनेक कार्यक्रमो मे सेठजी व मास्टर साहव साथ होते। वोडिंग के छात्रों द्वारा ग्रामो मे समाज सुधार के नाटक वार्ताए इत्यादि प्रस्तुत की जाती, छात्रो को समाज के निकट सपर्क मे लाने के अनेक कार्यक्रम होते। उस समय यह वोडिंग राष्ट्रप्रेमी युवकों का एक केन्द्र था। जहाँ देश के नेताओ के कार्यक्रम, राष्ट्र-भावना का विकास, राष्ट्रीय सम्मान ने त्यौहार इत्यादि मनाए जाते। सस्कार डालना इस छत्रावास का विषेश कार्यक्रम था।

श्री मूलचदजी डागा पाली, कालूराम जी पाली, फूलचदजो वाफना सादड़ो, फूलचंदजी जैन तखतगढ, कनकराजजी, नगराजजी, हरकचदजी, अमरलालजी साचोर, सुलतानमलजी जैन इत्यादि वाडमेर, के एम पटवारी गणेशराजजी भसाली, स्नेहमलजी, कोठारी वालोनरा, सोहनराज जी कोठारी जसोल इत्यादि आज के मारवाड़ के कोने कोने के प्रमुख समाजसेवी नागरिक इस वोडिंग की देन है।

पचपद्रा के शिक्षा विस्तार मे स्कूल को क्रमोन्नत करवाने हेतु श्री ए के. राय कलेक्टर के समय मे भवन को मिडिल स्कूल के अनुरूप वनाने के साथ ही सन् ४८ मे कन्या पाठशाला हेतु पाच वर्ष के लिए आपने अपना स्वय का मकान निशुल्क देकर कन्या पाठशाला की व्यवस्था करवाई। वालोतरा की कन्या पाठशाला के विकास मे भी आपने काफी योग दिया। व पंचायत समितियाँ वनने पर पचपद्रा पचायत समिति ने आपको समाज सुधार समिती का अध्यक्ष वनाया और उस नाते पूरे क्षेत्र मे शिक्षा विस्तार हेतु तीन वर्षो तक आपने पर्याप्त रुचि ली।

इसी वीच पुत्रो के व्यापार विस्तार के कारण आपको वाडमेर रहना पड़ा। वाडमेर मे छात्रो की एक वहुत वडी सख्या कॉलेज के लिए तरस रही थी आपने स्वय प्रयत्न कर कलेक्टर श्री राजगोपालन, श्री गणेशन व श्री डी आर. मेहता के सहयोग से घर घर घूमकर धनसंग्रह किया, कॉलेज की विल्डीग वनवाकर वाडमेर मे डिग्री कॉलेज प्रारभ करवाया। स्वत्रता पूर्व के काल में उम्मेदपुर, वरकाणा व फालना के शिक्षा सस्थानो मे भी आपने पर्याप्त रूचि लेकर समाजसेवी युवको को प्रोत्साहित किया।

वास्तव मे पूरे ५० वर्ष तक मारवाड के शिक्षा क्षेत्र व शिक्षित वर्ग मे आप अत्यंत प्रभावी रहे व इस काल का शिक्षित वर्ग आज भी इनका नाम सुनते ही अत्यंत सम्मान के साथ इस ज्ञान परम्परा व उस हेतु किए गएँ श्रम व त्याग के प्रति श्रृद्धा से नत मस्तक हो जाता है।

सेठ साहब से लाभ कैसे मिला ?

—श्रीदेवीचंद शाह
एम ए

♥

सन् १९३१-३२ की वात है। मैं जसवत कॉलेज मे पढता था। मेरे घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। मुझे कुछ काम की जरूरत थी। वच्चो को पढाना आता था। उन दिनो ओसवाल छात्रावास के प्रोक्टर श्री राखड मल जी सिंघवी थे जो दरवार हाई स्कूल जोधपुर मे मेरे इतिहास शिक्षक रह चुके थे। उन्होंने एक रास्ते की वातचीत मे कहा कि अगर तुम ओसवाल छात्रावास मे आ जाओ तो दो टयूशन का प्रवध हो सकता हैं। अधे को क्या चाहिये-दो आँखे! मेरे खाने पीने व रहने की व्यवस्था भी वहाँ होगी और साथ मे आर्थिक लाभ भी। मै ओसवाल छात्र वास का छात्र वन गया। मुझे दो वालक सौंपे गए। उनमे एक सेठ साहव श्री गुलावचदजी के सुपुत्र श्री लक्ष्मीचद जी थे जो उस समय पाँचवी कक्षा मे पढते थे। उनको पढाने के लिए प्रतिमाह मुझे सात रुपए देने का तय हुआ। सेठ साहव को अभी आखो से देखा नही था केवल सुना था कि अच्छे भले व धनी सेठ हैं। एक वार वे अपने सुपुत्र से मिलने छात्रावास मे पधारे। उनसे मेरी भी मुलाकात हुई। एक तो आयु व पढाई मे सवसे आगे होने के नाते मै छात्रावास का मानीटर माना जाता था और वार्डन साहव का उनकी अनुपस्थिति मे प्रतिनिधि, दूसरा मै सेठ साहव के सुपुत्र को पढाना भी था।

काली सुदर कढी हुई दाढी, अगूरी रग का पेचा, मुह पर रौनक, ओठो पर पान तम्वूल की पतली सी लाल रेखा, मलमल का झवा व पतली धोती, ठिगन पर गठील कद पर खूव जचती थी। उनके इस वाहरी व्यक्तित्व से वडी प्रसन्नता हुई। जव वातचीत हुई और आनद आया। वातचीत का विषय छात्रावास की कुव्यवस्था थी।

वालको के रहने के लिए पुराने ढग की अधेरी सालें व ओरे थे। विजली, पानी थे नही। वागर मे लाडनू की हवेली के पास खीचियो की हवेली मे यह छात्रावास था जो एक पुरानी घुड़ साल के जैसा था। इसी मे हम २५-३० छात्र रहते थे। वर्तन माजने वाला था रसोईदास भी था पर अनुशासन व व्यवस्था न होने से सभी वहाँ मन मानी करते थे। सेठ साहव को

यह सव अखरा। वे वोले, यह भी कोई छात्रावास है। कोई ढग नही है। हमने इस से वढिया स्कूले व छात्रावास चलाने हैं। जोधपुर मे भी कोई दूसरी व्यवस्था अपने वच्चो के लिए करने का विचार है। "मेरे भावी जीवन की कल्पना के वीज इस वात चीत मे पड गए।

इस छात्रावास के अधिकाश वालक स्थानीय सरदार हाई स्कूल मे पढते थे जो उस समय सोजती गेट की भीतर हाल के नगर परिषद भवन मे चलती थी। कुछ महीनो वाद सरदार स्कूल अपने भैरो वाग स्थित नए विशाल भवन मे चली गई तो ओसवाल छात्रावास के छोटे २ वालको के लिए दो तीन मील रोज पैदल चल कर छात्रावास से स्कूल जाना एक समस्या वन गई। मै उन दिनो छात्रावास छोड कर एक प्राइवेट मकान मे रहने लगा था।

इन्ही दिनो यकायक श्री लक्ष्मीचदजी मेरे पास आये और वोले कि सेठ साहव हम पचपदरे वाले वालको के लिए अलग रहने का प्रवध कर रहे है अत. क्या आप हमारी देख रेख है अत क्या आप हमारी देख रेख कर सकेंगे ऐसा सेठ साहव ने पुछवाया है।

'मत चूके चौहान'! मौके वनी वात थी। पुरानी वाते सजग हो गई! मैने कहा- सेठ साहव को कहना कि आप पचपदरे के हो इस पचपदरे वाले दो तीन वच्चो के लिए तो अलग सुविधा जनक व्यवस्था कर दोगे पर वाकी के वच्चे किसके हैं। वे तो कहा करते थे कि छात्रावाल खोलना मेरे लिए वाँये हाथ का खेल है तो फिर अव यह छोटा निजी प्रवध क्यो ? मै केवल इसके लिए तैयार नही। और वच्चो को भी साथ ले तो मै विना वेतन लिए आसकता हूँ।

सेठ साहव के पास मेरी वात पहुच गई। शायद उनके सुपुत्र लक्ष्मीचदजी ने भी जोर लगाया होगा। दूसरे दिन ही वुलावा आ गया कि सेठ साहव शनिचरजी के थान मे छात्रावास खोल रहे हैं। सात वालक आने को तैयार हो गए है। अत अव आपको यह कार्य समालना होगा। मेरे मन की मुराद पुरी हुई। सामान वर्तन, खाट आदि सव आ गए और सन् १९३२ की रक्षा वन्धन के दिन वडे उत्साह व उल्लास के वीच श्री महावीर जैन डिस्ट्रिक्ट छात्रावास के नाम से सस्था आरभ हुई।

वाद मे मालुम हुआ कि इस काम मे पचपदरे के ही एक विख्यात वकील साहव हाल मे जोधपुर निवासी श्री प्रतापमल जी मेहता भी इस मे पूरा २ आर्थिक सहयोग देंगे। वे अध्यक्ष वनाये गए; सेठ साहव उपाध्यक्ष वने और श्री देवीचद शाह को अवैतनिक प्रोक्टर वनाया गया। इस प्रकार त्रिमूर्ति ने जोधपुर के वाहर मरुधर प्रदेश से जोधपुर मे हाई स्कूल व ऊची पढाई के लिए आने वाले जैन छात्रो के लिए एक छोटा सा सस्था शुरू हुई जहा उनके निवास, भोजन व देख रेख की यथा सभव अच्छी व्यवस्था रखी गई।

(२)

सन् १९३५ मे यह छात्रावास वी रोड स्थित वल्लो मोहम्मद लोहार के भवन मे आ गया व छात्र संख्या ३०-३५ तक हो गई। उधर ओसवाल छात्रावास अलग से चल ही रहा था। दोनो मे स्पर्धा वढ़ने लगी। वह छात्रावास भी सरदारपुरा मे आ गया था। जोधपुर के मुत्सदी लोगो को लगा कि छात्रावास एक ही हो जाय तो सरदार स्कूल को मदद मिलेगी; और शोभनीय काम होगा छात्रो की सख्या बढेगी। इन दिनो ओसवाल छात्रावास की सख्या काफी कम ही रही थी बच्चे छोड छोड कर महावीर छात्रावास मे आ रहे थे।

दोनों छात्रावासो के दो दो कार्य-कर्त्ताओं की एक वैठक मे यह निर्णय लिया गया कि अव एक ही छात्रावास सरदार होस्टल के नाम से रहेगा और उसके वार्डन श्री देवीचंद शाह होगे। इस प्रकार महावीव छात्रावास तीन साल वाद समाप्त हुआ और सेठ साहव भी इसकी देख रेख से मुक्त हुए। विशेप जिम्मेदारी मेरी ही रही, जो चार पाँच माह से अधिक नही चली। कारण वश मैने त्याग पत्र दे दिया। अगले ही वर्ष छात्रो ने घर पर आकर धरना दे दिया तो जुलाई १९३८ मे 'कुशलाश्रम' छात्रावास की स्थापना हुई। सेठ साहव के वच्चे तो कुशलाश्रम मे आते रहे इस नाते सेठ साहव का आना जाना चालू रहा। पर सस्था का सचालन अव वच्चे और कुलपति मिलकर चला रहे थे। वह अपने पावो पर खडी थी। सन् ४६ तक कुशलाश्रम एक सर्व जाति व धर्म की राष्ट्रीय सस्था वन चुकी थी।

(३)

अव जोधपुर के वाहर वडे वडे चार नगरो मे हाई स्कूलें वन गई थी। वाडमेर मे भी हाई स्कूल हुई। मेरी वदली दरवार स्कूल, जोधपुर से वाडमेर हाई स्कूल मे करदी गई। यह कुशलाश्रम पर एक भारी चोट थी। मैंने अव सरकारी नौकरी से त्याग पत्र देकर कुशलश्रम को ही चालू रखने का निर्णय लिया। मेरे लिए किसी स्थानीय हाई स्कूल विशेषकर सरदार स्कूल मे नौकरी की वात चीत चली। ऐसे नाजूक अवसर पर सेठ साहव गुलावचद जी फिर कुशसाश्रम के रगमच पर आ पहुचे। श्री प्रतामलजी से सलाह मशवरा कर कुशलाश्रम छात्रावास को एक प्राइवेट हाई स्कूल मे परिर्वातित करने की योशना मेरे सामने रखी और वोले अव आप कोई 'नौकरी' नही करेंगे। भारत स्वतन्त्र तो १९४६ अगस्त मे हुआ। पर सेठ साहव गुलाबचदजी मे मुझे किसी प्रकार की नौकरी करने से सदा के लिए मुक्त करवा दिया। वे हमेशा यही कहते थे कि पढने का उद्देश्य नौकरी करना ही नही है। व्यक्ति को स्वतत्र धंधा करना चाहिए। सेठ साहव जैसा कहते थे वैसा कर दिखाया। कैवल मुझे ही उन्होंने स्वतत्र रहने की प्रेरणा, उसके लिए व्यवस्था नही की, पर अपने सभी पुत्रो को भी नौकरी से अलग ही रखा। आज भी उनके सभी सुपुत्र पूर्णतया डिग्री प्राप्त शिक्षित होकर भी स्वतत्र धघे कर रहे हैं।

कुशलाश्रम जूलाई १९४६ में ही स्वतंत्र उच्च विद्यालय भी वन गया। सेठ साहव व प्रतापमलजी व श्री दौलतराम जी मेहता जसोल वालो ने भी सहयोग दिया। चंदा भी एकत्रित किया गया। सेठ साहव का संपर्क हमेशा से वना रहा। पचपदरे अपने पुत्रियो व पुत्रो की शादी पर वुलाते रहे। मुझे वे अपना परिवार शिक्षक मानते रहे हैं। इतना ही नहीं उन्होंने अपने अनेक गाँव सुधार व समाज सुधार के कार्यों में भी वुलाया। पचपदरे में जव रेल का प्रथम उद्‌घाटन हुआ तो जोधपुर के चीफ मिनिस्टर श्रीयुत फील्ड साहव का मानपत्र अंग्रेजी मे पढ़ने के लिए जोधपुर से मुझे वुलाया। इसी प्रकार अपने एक पुत्र की शादी में चूडा-प्रथा हमेशा के लिए उठाने के लिए भी मुझे वुलाया ओर वाळोतरे मे ही रुकने को कहा। अपने सगाजी को वाध्य किया कि हमारी भावी पुत्रवधू के चूड़ा नहीं होगा। मास्टर साहव तभी जसोल मे आयेंगे। आखिर चूड़ा प्रथा उठायी गई। उन दिनो एक साधारण काम नही था। सारे समाज से मुकावला करना था। पर सेठ साहव सुधार हमेशा पहले घर से करने के पक्ष मे रहते थे।

आज जो कति पय सामाजिक वुराइया, समाज से दूर हो रही है उनके श्री गणेश का श्रेय भी सेठ साहव श्री गुलावचदजी को जाता है। इस तरह सेठ साहव का मैं अनेक प्रकार से सहयोग देने के लिए आभारी रहूँगा।

वाड़मेर कॉलेज - सेठजी की अनोखी देन

— श्री भूरचन्द जैन, वाड़मेर

पचपदरा के सेठ श्री गुलावचन्द का नाम सुनते ही वाडमेर के राजकीय महाविद्यालय कॉलेज की स्मृतियो स्वत. ही मनमयूर पर नाच उठती है। जव इस महाविद्यालय की भव्य ईमारत की तरह एक दृष्टि डालते हैं तो इसके प्रत्येक पाषाण पर समाजसेवी, जनसेवी, कर्मशील, परिश्रमी, गरीवो से हितैषी जिले के हमदर्दी, निर्थिक निष्पापी, शिक्षा प्रेमी सेठ श्री गुलावचन्द का हसता खिलता चेहरा नजर आता है। वाडमेर कालेज वनाने मे आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है यदि आप दृढता के साथ इसे वाडमेर जिला मुख्यावास पर वनाने के लिये सक्रिय नही होते तो सम्भवत. यह कालेज जिले के धनाढ्य क्षेत्र वालोतरा एव सिवाना की गोद मे दृष्टिगोचर होता अथवा जिले की सघर्ष स्थिति से जिला कालेज से वचित ही रह जाता।

जनवरी १९६४ मे जव राजस्थान सरकार द्वारा वाडमेर जिले मे कॉलेज खोलने की चर्चा की तव से ही कर्मयोगी सेठ श्री गुलावचन्द ने इसे वाडमेर जिले के मुख्यावास पर खोलने की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका आरम्भ कर दी। यद्यपि सेठ साहव वाडमेर जिले के वालोतरा उपखण्ड के पचपदरा तहसील मुख्यावास के निवासी हैं। जहा के जनमानस ने सदैव आपकी अगवानी मे नाना प्रकार के निर्माण, विकास आदि कार्य करने मे कन्धे कन्धा मिलाकर योगदान दिया। संकट की घडियो मे भी वे आपके साथ थे लेकिन न्याय प्रिय सेठ श्री गुलावचद के मार्ग मे वे कभी रोड़ा नही वने। उन्होने वालोतरा एव सिवाना साथियो को वाडमेर मे कालेज खोलने के लिये अत्यन्त ही आग्रहपूर्ण समझाया लेकिन सेठजी को इसमे आशातीत सफलता नही मिली। वालोतरा एव सिवाना के जन प्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र मे कालेख खुलवाने की होड में लग गये।

सेठजी के सामने इस समय विषम परिस्थिति पैदा हो गई लेकित वास्तविकता को छिपाना भी वे नही चाहते थे। इन्होने जनवरी १९६४ से ही वाडमेर मे कालेज खोलने की न्यायोचित एव वास्तविक माग का क्षेत्रीय भावना से ऊचा उठकर प्रबल समर्थन ही नही किया वल्कि वे अगुवा वन गये। आपने वाडमेर, वालोतरा एव सिवाना के वीच

जनसख्या, छात्रो की स्थिति, छात्रावासो मे छात्रो की सख्या, मिडिल, हाईस्कूल, सैकण्ड्री पाठशालाओ मे अध्ययन रत विद्यार्थियो के तुलनात्मक सन् १९३१, १९४१, १९५१ एव १९६१ के आकडो के साथ तत्कालीन आकडे वडे परिश्रम एव कठिनाई के साथ एकत्रित किये। इसी कडी मे इन तीनो स्थलो पर सरकारी एव गैर सरकारी कार्यालयो, सस्थाओ एव अन्य सुविधाओ का तुलनात्मक मानचित्र तैयार करने मे अनेको कठिनाईयो के वीच सफल रहे।

जनवरी १९६४ से वाडमेर जिले मे कॉलेज खोलने की चर्चा ने जैसे ही जोर पकडा तव वालोतरा के जनप्रतिनिधियो ने दो लाख एव सिवाना ने तीन लाख रुपये देने की घोषणा से राज्य सरकार को सूचित भी कर दिया। इधर वाडमेर के जन प्रतिनिधि चिर निद्रा नही त्याग रहे थे तव श्रममूर्ति सेठजी ने इन्हे ललकारा और अपने स्तर से आपने राज्य सरकार को, तत्कालिन लोकसभा सदस्य श्री तनसिह, शिक्षा-मत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री भैरोसिह शेखावत आदि अनेको लोगो को वाडमेर मे कालेज खोलने की दृढ पृष्ठ भूमिका से अवगत करवाया। इस बीच तत्कालीन राज्य के गृहमत्री श्री मथुरादास माथुर का एक वक्तव्य समाचार पत्रो मे वालोतरा मे कालेज खोलने का छपा तो सेठजी का माथा ठनका और आप श्री माथुर से भिडे। श्री माथुर से श्री तनसिह एव सेठजी मिले तो उन्होने ऐसा वक्तव्य देने से साफ इन्कार ही कर दिया। फिर भी जिले के तीनो स्थलो के जन प्रतिनिधि अपने अपने क्षेत्र मे कालेज खुलवाने मे जी तोड मेहनत कर रहे थे।

इस बीच श्री गंगाराम चौधरी जिला प्रमुख की अध्यक्षता मे जिला परिषद की ३१-३-६४ को बैठक मे सर्वसम्मति से वाडमेर नगर मे कालेज खोलने की औचित्य माँग को स्वीकार किया गया। इसमे भी वालोतरा एव सिवाना के जन प्रतिनिधियों ने विरोध किया लेकिन वे इस विरोध को आगे न वढाना चाहते हुए जिला परिषद के निर्णय को स्वीकार करने मे ही अपना गौरव समझा। फिर भी उन्होने कह ही डाला कि यदि राज्य सरकार की नीति के अनुसार वाडमेर वाले धन एकत्रित करने मे असमर्थ रहे तो वालोतरा दो से चार लाख सिवाना तीन से छ लाख रुपया कालेज खोलने को देने मे सदैव तैयार है।

एक तरफ धन एकत्रित था, जन समुदाय एक था लेकिन वाडमेर में दोनो की कमी की पूर्ती निस्वार्थ सेठजी ने की और एक कालेज समिति वाडमेर जिले के तत्कालिन जिलाधीश श्री टी० वी० रमनन् की अध्यक्षता मे गठित की। सेठजी ने कालेज के लिए अपने साथियो के साथ झोली फैला दी। धन एकत्रित हुआ और वाडमेर मे कालेज खुलने की किरण का उजाला दिखने लगा। शान्त स्वभावी सेठजी फिर भी शान्त नही थे क्योकि इस वीच वालोतरा एव सिवाना की कालेज खोलने की राजनैतिक गतिविधियो ने फिर भी जोर पकड रखा था।

वाडमेर के तत्कालिन लोकसभा सदस्य एव विधायको ने भी राज्य सरकार को स्पष्ट कर दिया था कि कालेज राजनैतिक स्तर पर नही अपितु शिक्षा की दृष्टि से खोलना है। यह सघर्ष

करीवन सवा वर्ष तक चला होगा कि इस वीच वाडमेर से करीवन डेड लाख रुपये की धनराशि वाडमेर कालेज समिति ने जुटा ली और इसे ५ अप्रेल १९६५ को एक भव्य समारोह मे सेठजी की उपस्थिति मे वाडमेर के तत्कालिन जिलाधीश श्री टी० वी० रमनन् ने श्री नाथूरामजी मिर्धा को भेट की।

धुन के वनी सेठजी की मन की ईच्छा पूर्ण हुई कि अव कालेज निश्चित रूप से वाडमेर मैं खुलेगा लेकिन इसके साथ तत्काल भवन की समस्या ने उन्हे और चिन्तित कर दिया। कालेज समिति के समक्ष अपने वर्तमान हायर सैकण्ड्री स्कूल मे दूसरी शिफ्ट मे कालेज आरम्भ करने का प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया। इस पाठशाला के तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री जयनारायण जोधा ने सहयोग दिया और वाडमेर मे सन् १९६५ के शिक्षा सत्र से कालेज आरम्भ हो गया। जैसे ही कालेज आरम्भ हुआ उसमे विज्ञान, वाणिज्य एव कला के शिक्षण की व्यवस्था आरम्भ कर दी गई। इस दिन दृढ विचारक सेठजी को अपार खुशी हुई।

कालेज खुला, तो कालेज छात्रावास की समस्या खडी हुई। सेठजी ने इसके समाधान हेतु नेहरू नगर वाडमेर स्थित श्री हमीरसिह के मकान को छात्रावास हेतु किराया पर लिया और छात्रावास को प्रवक्ता श्री भूरचन्द शाह के नेतृत्व मे अस्थाई तौर पर आरम्भ करवा दिया। कालेज खुलते ही २५० छात्रो ने इसमे प्रवेश प्राप्त किया और उसके पश्चात् निरन्तर छात्रो की सख्या इसमे वढने लगी। नगर मे नेहरू नगर एव सीमासुरक्षा दल के कार्यालय के आगे नया कालेज भवन वन गया। जिसमे आज भी ७०० छात्रो को सरस्वती माँ की आराधना एव उपासना करते देखकर सेठ श्री गुलावचन्द का मन मयूर नाच उठता है। सेठजी की तीव्र इच्छा थी कि मेरे जीवनकाल मे यह कालेज पोस्ट ग्रेज्यूएट कालेज वने। यह स्वप्न भी सेठजी का साकार हुआ। काँग्रेस शासन मे वने वाडमेर कालेज को जनता सरकार ने पोस्ट ग्रेजूएशन कालेज वना दिया, सेठजी के मन थी मुराद पुरी हुई।

वाडमेर मे कालेज की कहानी के साथ निश्चित रूप से पचपदरा के निवासी सेठ श्री गूलावचन्द जी की आतमा जुडी हुई है। जिन्होने जिले मे शिक्षा प्रचार प्रसार के लिये अनेको सरस्वती मन्दिर वनाये और सरस्वती के पुजारी छात्रो के चरित्र निर्माण मे अपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हम ऐसे सरस्वती मा के पक्के श्रद्धालू भक्त, चरित्र निर्माण के हमदर्दी, निर्भिक एव निष्पक्ष शिक्षा प्रेमी की चरण रज को स्पर्श कर अपना अहोभाग्य समझते हैं। ऐसे समाजसेवी एव कर्मवीर के सदा वाडमेर के कालेज अर्थात सरस्वती मन्दिर मे दर्शन की लालसा रखते है,यदि उनकी एक तस्वीर वाडमेर कालेज मे दर्शनार्थ स्थाई तौर पर रखी जाय तो हम इनकी अमूल्य सेवाओ को चिर स्मृति वना सकगे।

दूरदर्शी सेठ गुलाब चन्द सालेचा

—श्री सुलतामल जैन

एडवोकेट

सन् १९३३ की बात है जब कि मैंने ८ वी कक्षा उत्तीर्ण की थी और शिक्षा जारी रखने का निर्णय करना था। उन दिनो भूतपूर्व मारवाड रियासत मे जोधपुर राजधानी को छोड अन्य किसी भी देहाती क्षेत्र मे उच्च शिक्षा का नितांत अभाव था। पूरे राज्य के बाहरी क्षेत्रो (परगनो) मे नाम मात्र की ३ या ४ मिडिल (बाडमेर-सोजत-साँभर) विद्यमान थी। वहाँ के विद्यार्थियो से लिये विद्याध्यन हेतु जोधपुर जाना आसान कार्य नही था। उनके रहने के लिये कोई सुव्यवस्थित छात्रावास नही था। फलत. बाहर से बहुत हीअल्प सख्या के विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण कर पाते थे। कई मेधावी छात्र अपना भविष्य सुधारने से वचित रह जाते थे।

सेठ गुलाबचदजी, देहात (पचपदरा) के रहने वाले होने से उनका ध्यान इस समस्या को सुलझाने की ओर गया। उन्होने पचपदरा निवासी सेठ प्रतापमलजी वकील, जो जोधपुर मे ही उन दिनो बस गये थे, से सहयोग प्राप्त किया और देहातियो मे शिक्षा के प्रचार प्रसार का बीडा ऊठाया।

जगह जगह उन्होने सदेश वाहक भेजे और बाहर से, विद्याध्यन हेतु आने वालो के लिए सन् १९३२ मे श्री महावीर जैन डिस्ट्रिक्ट बोर्डिग हाऊस का शुभारभ किया। फिर क्या था, मुझे जोधपुर आने का अवसर मिल गया। जोधपुर वाले आने विद्यार्थियो की सख्या उत्तरोतर बढती गई। एक वर्ष बाद तत्कालीन ओसवाल बोर्डिग हाऊस एवम् उक्त बोर्डिग हाऊस का विलय कर दिया गया और सरदार होस्टटल के नाम से छात्रावास चलाया गया। परन्तु कुछ कारणो से यह व्यवस्था केवल १ या २ वर्ष तक ही चल सकी। और सेठ साहिब व प्रतापमलजी को पुन. नया छात्रावास "कुशलाश्रम" के नाम से चलाना पडा जो दशको

★

सेठ श्री गुलाबचन्दजी साहब, श्री मदनलाल रामावत, अध्यक्ष बाड़मेर नगरपालिका और उनके पुत्र श्री अमीचन्दजी के साथ

★

आदर्श विद्यामन्दिर जोधपुर के एक समारोह में श्री उत्सवलालजी गुप्ता, श्री राधाकृष्णजी रस्तोगी और जगन्नाथजी पुरोहित के साथ

सेठ साहब द्वारा सस्थापित श्री महावीर जैन डिस्ट्रिक बोर्डिंग हाउस के अन्तेवासियों, (सन् १९३४))
श्री प्रतापमलजी साहब मेहता और कुलपति श्री देवीचन्दजी शाह के साथ
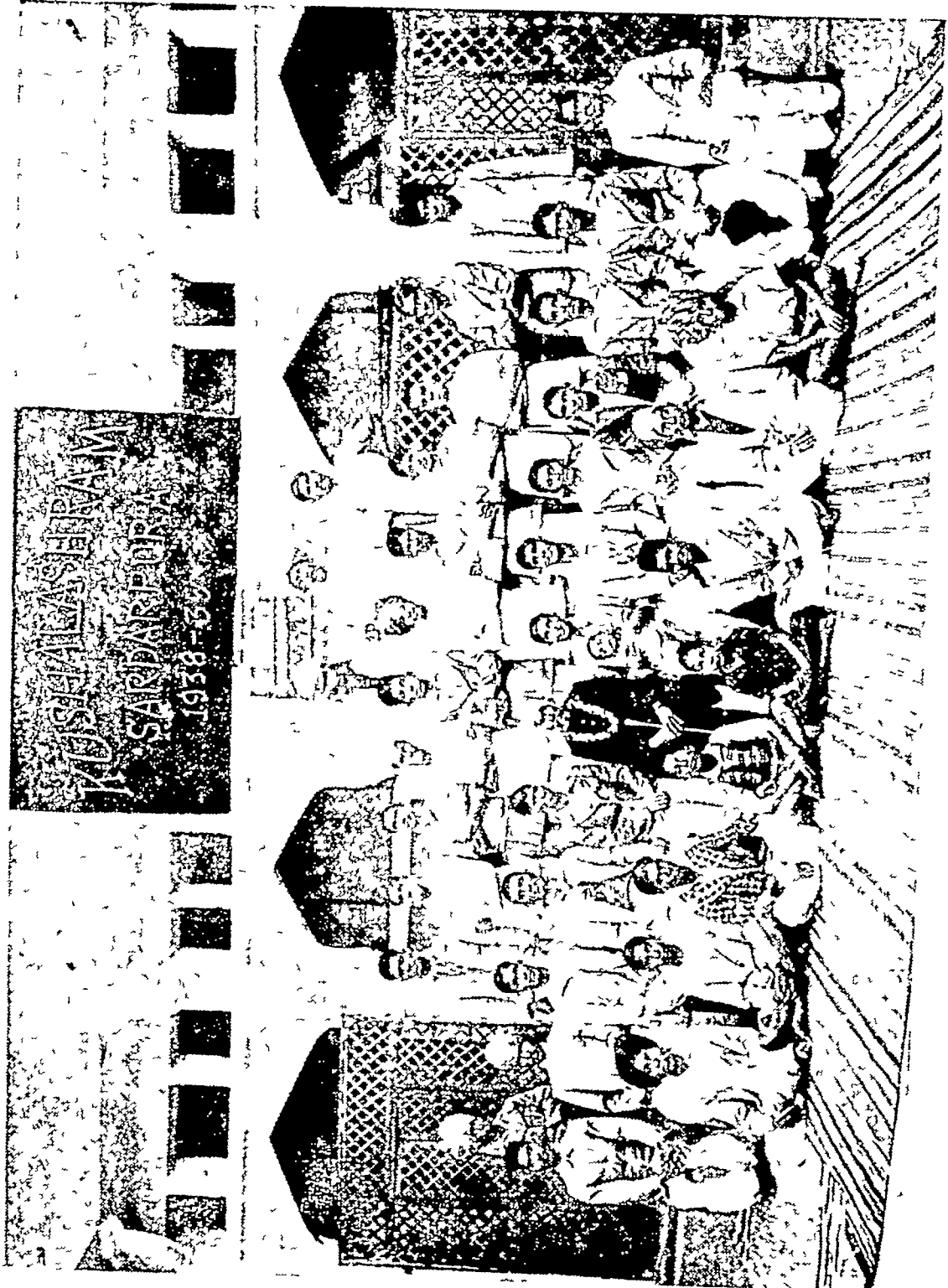
श्री कुशलाश्रम के अंतेवासियों और कुलपति श्री देवीचन्दजी शाह के साथ

बाड़मेर कॉलेज स्थापना व समारोह के अवसर पर

सेठ श्री गुलाबचन्दजी भाषण देते हुए
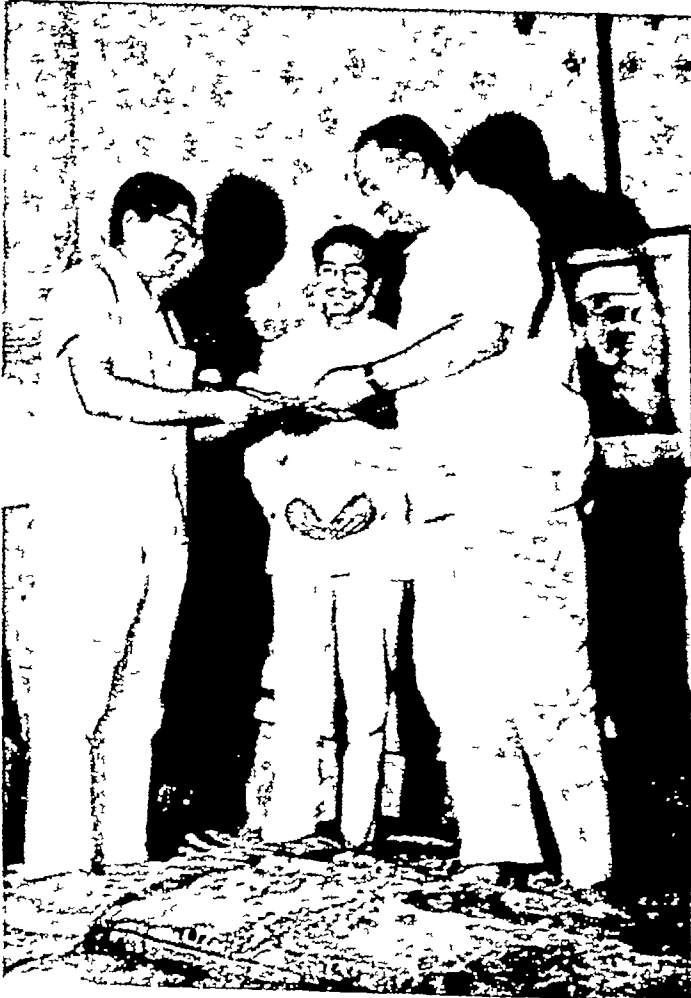
जिलाधीश बाडमेर तत्कालीन शिक्षामन्त्री श्री नाथूराम मिर्धा को सेठजी द्वारा जनसहयोग की धन-राशि भेंट करते हुए

तक श्री देवीचदजी शाह के योग्य एवम् कुशल निर्देशण मे समाज की सेवा करता रहा। इस छात्रावास से निकले हुए छात्रो ने देश के नव निमार्ण मे वहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

स्पष्ट है कि यह सव सेठ साहवकी दूरदर्शिता का घोतक है। उनका अनुमान, बाद मे जाकर सन् १९४७ मे सही सावित हुवा, कि देश स्वतन्त्र होगा और स्वतन्त्रता के साथ देश वासियो पर विभिन्न दायित्व आवेगे, यदि इन दायित्वों को सफलता पूर्वक निभाने मे देहाती स्वयम् योग्य एवम् सक्षम नही होगे तो पिछडे हुवे क्षेत्रो का विकास अवरुद्ध हो जावेगा और उनका भविष्य भी अन्धकार मय रहेगा।

कुशालश्रम मे विद्याध्यन के साथ साथ विद्यार्थियो के चरित्र निमार्ण पर भी वहुत घ्यान दिया जाता था। यहा से निकले विद्यार्थियो ने आगे जाकर जीवन के हर क्षेत्र मे राजनितिक, व्यवसायिक, सामाजिक, प्रशासनिक आदि महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किए। जब सेठ साहव इन विघान सभा के सदस्य, किसी को अमुक नगर पालिका के अध्यक्ष, किसी को राज्य सेवा में उच्च पद पर आसीन, किसी को देश के प्रमुख व्यवसायी, किसी को समाज के अग्रणी आदि के रूप मे देखते हैं तो उनके हर्ष का क्या ठिकाना होता होगा इसका हम सहज ही में अनुमान लगा सकते है।

शिक्षका के अतिरिक्त उनकी अन्य क्षेत्रो मे भी जो सराहनीय सेवाए रही हैं वे भी उनकी घनी प्रतिमा की द्योतक है। उनके सम्वन्घ मे मेरे जैसे अन्य प्रशसक, पाठको को अवश्य वताएगे।

हम सव सेठ साहव श्री गुलावचद के ऋण से कभी उऋण नही हो सकते।

अन्त मे सेठ साहव के स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए मेरी परम पिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि वह हमें सेठ साहिब के दर्शनो का लाभ अधिकाधिक वर्षो तक उठाने दें।

उद्योग प्रेमी सेठ श्री गुलाबचन्द

–श्रीशिवराज मोहता

भू पू. अध्यक्ष मारवाड चेम्वर आफ कामर्स
एण्ड इडस्ट्री व उपाध्यक्ष अभिनदन समिति

✻

२० वी शताव्दी मे उद्योग के साथ विज्ञान व मशीन का नाम जुडा हुआ है। २० वी शताव्दी के प्रारम्भ मे भारत के लिए तो मशीन शव्द नया नया था ही पर मारवाड़ के लिए यह विल्कुल अनजान शव्द था। सम्पूर्ण देश मे पहले तीन दशको तक भारत मे खुलने वाले कारखानो पर अग्रेजो का एकाधिकार था। टाटा इत्यादि ने अगुलियो पर गिने जाने योग्य फेक्ट्रीये शुरु की थी पर इस प्रदेश मे सन् १९१७ से ही सेठ श्री गुलावचद मशीनो का जनकार्यो मे उपयोग व विभिन्न प्रकार के उद्योगो की कल्पनाऐ लेकर आये।

इस कल्पना का पहला साकार रूप सन् १९१९ की पचपदरा वालोतरा मोटर क० के रूप मे देखते हैं। पचपदरा मे इस प्रकार की कम्पनी शुरू करने मे अनेक समस्याऐं थी। न तो इस जमाने मे सडकें थी न ड्राईवर व मिस्त्री थे। पेट्रोल केवल जोधपुर मे एक ही स्थान पर उपलव्ध था मोटर के हिस्से भी सिंध कराची, जहा मोटर खरीदी गयी थी मगाने होते थे। और इसलिए यह प्रयोग कितना कष्टसहाय रहा होगा इसका अदाज इसी से लगाया जा सकता है कि यह कम्पनी सात आठ वर्ष तक काम करने के वाद ही समाप्त हो गयी।

सन् १९९२-३० मे टेरिफ वोर्ड और साल्ट सर्वे कमेटी के सम्मुख पचपदरा के नमक उद्योग को विकसित करने हेतु सेठजी ने अनेक योजनाऐं रखी जिनका आधार मशीन ही था जिसमे विभिन्न खानो का उपलव्ध नमक का सेण्ट्रल स्टोर वनाना जहा रेलट्रोली से माल को लाना, टेवल साल्ट इत्यादि का निर्माण, नमक के शेखासो (ब्रटर्नस) से विभिन्न लवणो का निर्माण इत्यादि प्रमुख थे। इसीकाल मे सेठजी ने एक आयल मील हेतु आयल एक्सपेलर मगवाने की योजना भी वनाई थी। लगता है सार्वजनिक कार्यो मे व्यस्तता के कारण यह योजना भी कागजो मे ही रही।

सन् १९३५-३६ मे मोटर से पचपदरा की पानी वितरण की व्यवस्था तो मात्र सरकार पर उत्तरदायित्व डालने हेतु योजना थी अत उसे उनके मशीनी क्षेत्र में कार्य के क्षेत्र के साथ जोडना उपयुक्त नही होगा। पर १९३८-३९ में उन्होंने अनेक उद्योगो की स्थापना हेतु योजनाऐ वनाई थी। इन योजनाओ में एक महत्वपूर्ण योजना थी मारवाड के ऊन के उपयोग के लिए ऊन प्रेस व कम्बल वनाने की फेक्ट्री स्थापिन करना। इस हेतु आपने समस्त आकडे एकत्रित किये थे व जापान व इगलेड से मशीनो के कोटेशन इत्यादि मगवाये थे। इसी काल मे आपने एक दूसरी योजना राज्य सरकार के सम्मुख रखी थी जिसमें नमक के शेषासो से अन्य लवण वनाने का कार्य करना था। राज्य के एक अग्रेज मिनिस्टर ने यह कहकर यह योजना अस्वीकार कर दो कि यदि सरकार इस प्रकार की कोई फेक्ट्री शुरु करना चाहती है तो भारतीय तकनीक इसलिए उपयुक्त नही होगा और यह कार्य किसी अग्रेज कम्पनी को सौपना चाहिए।

एक अन्य योजना आपके द्वारा पीपल व जर्मन सिल्वर के वर्तन व भवन निमार्ण हेतु पीतल व लोहे के विभिन्न सामान वनाने की इसी काल मे वनायी गयी। यह योजना उस जमाने मे ३५०००) की मशीनरी व चालीस हजार रुपये की वर्कींग केपींटल की थी। इसके अलावा एक इंजीनियरिंग वर्कशोप की योजना ७००००) के मशीनरी लागत की वनायी गयी।

दियासलाई वनाने के कारखाने की योजना कुछ लोगो के साथ मिलकर आपने वनायी थी जो चालीस तीलीयो के पचास ग्रुस वाले केस १० घटे की शिफ्ट की अवधि मे ३० केस प्रतिदिन वनाने की थी। इसकी मशीनरी लागत ४० हजार रुपये की थी।

श्री महालक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी के नाम से एक अन्य सस्थान वनाया गया था जो विभिन्न प्रकार के उद्योगो की स्थापना हेतु उसका प्रारम्भिक कार्य करने हेतु था जिसमें जोधपुर के श्री रंगराज भडारी, अचलराज लोढा इत्यादि साथ थे। इस सस्थान ने जापान से भी अनेक प्रकार की उद्योगो की योजनाऐं व मशीनो के व्यौरे मगवाये थे।

चूकि ये सारी योजनाऐं जिसकाल में वनी है वह १९३८ के अत से १९३९ के सितम्वर मास में द्वितीय विश्व युद्ध की अचानक घोषणा हो गयी थी। छोटे से काल मे ही यूरोप के सभी देश व जापान युद्ध में उलझ गये थे तथा सभी औद्योगिक वस्तुओ के कच्चे माल की कमी आ गयी थी इसलिए ये सभी योजनाऐ स्थगित करनी पडी।

युद्ध के पश्चात व १९४४ के साभर के जवरदस्त आर्थिक आघात के वाद सेठजी ने पुन १९५० मे जोधपुर के कुछ मित्रो के साथ मिलकर देवरिया में नमक उत्पादन प्रारम्भ किया था। इस नयक उत्पादन में आपने खान पद्धति व क्यार पद्धति दोनो तरह से उत्पादन शुरु किया था।

देवरिया मे सन् १८७९ की नमक सधि के वाद से उत्पादन वद था व सन् १९४८ के नमक के छोटे उत्दादन पर से रोक हटने की केन्द्रीय नीति के पश्चात सेठजी ने उत्पादन शरु करवाया था। यह कार्य यद्यपि सफलता पूर्वक प्रारम्भ हुआ था पर अन्य भागीदारो की चालो के कारण आपको इसे छोड़ना पडा।

वस्तुत सन् १९५० के वाद अपने पुत्रो के कार्य मे लग जाने के कारण सेठजी का उद्योग व व्यापार का समय समाप्त हो जाता है और इस लिए आगे के काल में अपने पुत्रों को मार्गदर्शन करते हुए भी वास्तव मे यह सारा कार्य नवीव सदर्भ मे हुआ। एक विशेष वात है कि सेठजी का अपने सभी पुत्रो को नौकरी न कर उद्योगो में लगाने का सदैव आग्रह रहा और उनके अध्ययन काल में भी सेठजी ने अपने इस दृष्टिकोण को सदैव सामने रखा और समय २ पर वे उद्योगो के बारे मे दिलचस्पी वढाते रहे व इसके लिए उन्हे उचित लोगो के पास शिक्षण व मार्ग दर्शन हेतु भेजते रहे।

सहकारिता एवं सहयोग का उद्‌बोधक

—श्री घेवरचन्द कानूंगा

अध्यक्ष-मारवाड चेम्वर ऑफ कामर्स एण्ड
इण्डस्ट्री व उपाध्यक्ष अभिनदन समिति

✲

विश्व मे आर्थिक क्रातियो के पश्चात अनेक आर्थिक विचार सामने आये हैं और आर्थिक विचारो के आवार पर राष्ट्रो का गठववन होता है, उनकी राजनीति चलती है, विदेश नीति का सृजन होता है, व राजनैनिक पार्टिया वनती हैं। इसलिए आज जन साधारण व समाज के हित मे चलने वाले आर्थिक विचारो को प्रगतिशील कहा जाता है और जो इसमे सीमाएं लेकर चलते है उन्हे वुर्जुआ व रुढि वादी, प्रतिक्रियावादी और न जाने किन सम्बोधनो से पुकारा जाता है। आजकल ये सभी सम्वोधिन राजनैतिक गालिया वन गई हैं।

पर स्वतन्त्रता के पूर्व अपने देश मे गाधीवाद अर्थनीति एक विशेष महत्व तो रखती थी पर जन सावारण ने आर्थिक सिद्धान्तो का प्रयोग नगण्य रूप मे था। वहुत उच्च अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त अगुलियो पर गिने जाने वाले विद्वानो को छोड सामान्य व्यक्ति इन सव से अनजान था। मै जिस काल का वर्णन करने जा रहा हू वह आज से साठ वर्ष पूर्व १९१८ से प्रारम्भ होने वाला काल था जव भारत की अर्थनीति पर गाधी भी प्रभावशाली नही थे। उस काल से प्रारम्भ कर पिछले पचास वर्ष तक यदि मारवाड के क्षेत्र मे सहकारिता को प्रायोगिक क्षेत्र मे कोई सवसे पहले लाया है, उसमे महत्व को जनता के सम्मुख यदि किसी ने सवसे पहले रखा है तो वह सेठ श्री गुलावचद।

इस इतिहास का सवसे पहला पृष्ठ सन् १९१९ मे खुलता है जव मारवाड मे आने के दो वर्ष वाद ही सेठ श्री गुलावचद ने मारवाड की पहली जोईन्ट स्टॉक कम्पनी जिसमे सौ-सौ रुपये के शेयर थे वनायी व पचास लोगो के वीच अपनी क्षमता के अनुसार १४८ शेयरो को वेचा था। उस समय मारवाड में कम्पनीज एक्ट नही था। अत महकमा खास से इस कम्पनी की मजूरी हुई थी। कम्पनी का नाम पचपदरा वालोतरा मोटर सर्विस कम्पनी

लि० था व यह जनसाधारण के यातायात व पानी की समस्या के हल हेतु अनेक लोगो का सामुही-करण कर साधारण से जन समस्या हल करने का प्रयत्न था। नियम व उद्देश्य सेठजी श्री गुलावचद ने स्वय ही बनाये थे। इसकी वैठको मे अध्यक्ष हर मिटिग हेतु अलग चुना जाता था। सेठजी कम्पनी के सेक्रेटरी थे और कम्पनी की अधीकृत पूजी १५००० रु० थी। लगता है कम्पनी हेतु उपयोग मे लिये जाने वाले शब्द लोगो के लिए नये ही थे, जैसे कम्पनी, शेयर मनी, शेयर होल्डर, मैनेजिंग कमेटी, व सेक्रेटरी जो लोगो द्वारा मारवाडी मे गलत उच्चारण से लिखे गये है। इस शब्दावली मे हिन्दी के भी कई शब्द जैसे मूलधन, कार्यकर्ता इत्यादि काम मे आये हैं जो स्पष्टतया सेठजी की मध्य प्रदेश की भूमिका से हैं।

इस कम्पनी की एक और विशेषता है और वह सन् १९२० मे पचपदरा मे मोटर मगवाना। यत्र उस समम तक गाव मे पहुच नही पाये थे। शहरो मे उनके सचालन करने वाले भूले भटके मिलते थे। वाहनो को चलाने के लिए सडक नाम की कोई चीज नही थी पेट्रोल इत्यादि भी जोधपुर के अलवा दूसरो जगह नही मिल सकता था। वाहन स्वय भी आज की भाषा मे आदम युग के कहे जावे तो अतियुक्ति नही होगी ऐसे समय मे एक सुन्दर रेगिस्तान मे मशीन के वारे मे सोचना योजना के प्रगतिशील विचारो व न्यूनतम ज्ञान के जानकारी का परिचालक है।

सन् १९२१ मे सेठजी ने एक दूसरी कम्पनी का निर्माण किया जो नमक के वितरण हेतु व्यापारियो के सामुहिक कार्यो हेतु वनायो गयी थी। वह थी श्री साल्ट टेडर्स क लि। भारत का कम्पनी कानून सन् १९१३ मे आ गया था और अग्रेजी राज्यो के केन्द्र स्थलो पर जोईन्ट स्टॉक कम्पनी के रजिस्ट्रार की नियुक्ति हो चुकी थी और इसी के अन्तर्गत अजमेर मे उसका कार्यालय था। इसलिए इस कम्पनी का रजिस्ट्रेशन अजमेर मे हुआ। कम्पनी एक्ट के प्रावधानो के अन्तर्गत सभी प्रकार के रिर्टन्स व सभी आवश्यकताऐ पूरी की जाती थी।

सन् १९२५ मे साहूकारी के क्षेत्र की उनकी दृष्टिं का और भी प्रगतिशील स्वरूप उभर कर सामने आता है। जव सेठजी ने नमक उत्पादको अर्थात खारवालो को उनकी स्थिति सुधारने के लिए कोपरेटिव वंक की सलाह दी थी और जिसके अनुसार १९२५ मे उन्होने ऐसे बैंक का प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। उपलव्ध सूचनाऐ वेक के शरु होने की तो नही हैं पर वेक शरु होने को तैयारी व शेयर खरीदने की लोगो की इच्छा के सवूत तो हैं ही।

सन् १९२८–२९ मे एक दूसरी कम्पनी का निर्माण किया गया जो पचपदरा साल्ट ट्रेडर्स एसोशिएशन लि के नाम से। एसोसिएशन लि वाई गारन्टी था और इसका रजिस्ट्रेशन अजमेर मे हुआ था। इस एसोसिएशन का उद्देश्य साभर के वडे वडे पूजीपतियो का सामना करने के लिए पचपदरा जैसे छोटे स्थान मे छोटे व्यापारियो की सामूहिक शक्ति वनाकर, उनके

अधिकारो को प्राप्त करना था। ऊपर की कम्पनियो के साथ यह एशोसिएशन निमार्ण का कार्य यह प्रकट करता है कि सेठजी का ज्ञान व उनकी दृष्टि मे सामूहिक शक्ति का महत्व केवल एक तरफ न होकर बहुमुखो था। इस एसोसिएशन ने साभर के व्यापारियो के समक्ष अपने सदस्यो के लिए क्रेडिट सिस्टम उपलब्ध करवाया, बडे पूजीपतियो के भारी इडैन्ट होते हुए अपने सदस्यो के पक्ष मे एलौटमेंट मे हिस्सा लिया, नमक के विक्रय हेतु सरकार से सैम्पलो का लेना, नये बाजारो मे नमक भेजने हेतु रेल्वे व सरकार से सुविधा प्राप्त करना व सामूहिक रूप से पचपदरा नमक को बाजार में विज्ञापित करना इसके प्रमुख कार्य थे।

सन् १९३४ मे स्थापित श्री महाजन व्यापार सुधार एसोसिएशन इस क्षेत्र मे एक अलग कदम था। यह मात्र एसोसिएशन न होकर मारवाड के ४८ स्थानो के ४८ एसोसिएशनो की फेडरेशन थी। इसकी साधारण सभा प्रत्येक एसेसिएशन के उसके सदस्यो की सख्या और स्थान के महत्व के अनुसार, आठ व चार प्रतिनिधियो से बनती थी। इस एसोसिएशन मे मुख्य विषय तत्कालीन इसीलवेसी एक्ट को ठीक करवाना लिया था लेकिन यह एसोसिएशन इस एक्ट के तहत ३८०० मुकदमो की पैरवी सामूहिक रूप से करती थी।

मारवाड भर के इस कानून से प्रभावित लोगो के मामलो व वित्तीय प्रभाव का व्यक्तिवार ब्यौरा एसोसिएशन ने एकत्र किया था व चोफ कोर्ट मे सभी अपीले भी उचित कानूनी सहायता के साथ इस फेडरेशन द्वारा लडी जाती थी।

सन् १९३९ के जून मास मे मारवाड चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना हुई और सेठजी उन कुछ लोगो मे से थे जो इस सस्था के सस्थापक थे। इसकी तीन उप समितियो जैसे विधान समिति, वित्त समिति व प्रचार समिति के आप सदस्य थे। चेम्बर की प्रथम चार माह की कार्यवाही यह बताती है कि जालोर, भीनमाल, समदडी, बालोतरा, पचपदरा व बाडमे आदि मे चेम्बर की शाखाओ को खोलने का उत्तरदायित्व आपने लिया था तथा इस हेतु स्वय दौरा किया था। सेठ जी चेम्बर की कार्यकारिणी पर १९४९ तक रहे हैं पर इसके पश्चात अनेक वर्षो तक पचपदरा की समिति के सयोजक थे।

सन् १९४२ मे आप साभर मे साभर की नमक व्यापारी एसोसिएशन के प्रमुख सदस्य थे। व सन् १९४४ मे भी शाकम्बरा साल्ट मैन्युफेक्चर्स एसोसिएशन के आप निर्देशक थे।

नमक के वितरण की पद्धति बदलने पर कम्पनी सिस्टम से नमक विवरण शुरु हुआ तभी पचपदरा के व्यापारियो को श्री लक्ष्मो साल्ट ट्रेडिग कम्पनो के नाम से प्राईवेट कम्पनो के रूप मे सगठित किया चूकि १९४३ मे मारवाड कम्पनीज एक्ट बन चुका था अत इस कम्पनी का रजिस्ट्रेशन जोधपुर मे ही हुआ था। सेठजी कम्पनी के चेयर मेन थे व कम्पनी के ३८ शेयर होल्डरस थे। ये कपनी सन् १९५१ तक चली और चूकि इसके पश्चात नमक वितरण पद्धति

वदल चुकी थी अत मेम्वरर्स-वोलयन्टरी-वाइडिग-अप द्वारा कम्पनी का समापन हुआ। इसके कार्यकाल मे यह एक सफल सस्थान के रूप मे अत्यन्त लाभप्रद आयोजन के कार्य करती रही। इस कपनी की एक विशेसता और रही कि समापन के समय सदस्यो ने लगभग १० हजार रुपये पचपदरा की नल योजना के प्रयत्न के लिए सेठजी को दिया जिसके आधार पर आने वाले १० वर्ष तक सेठजी द्वारा पचपदरा की नल योजना के प्रयत्न मे सहयोग मिलता रहा।

उपरोक्त ऐसोसिएशनो व कम्पनियो के अतिरिक्त पचपदरा के नमक उत्पादको को कोपरेटिव सोसाइटी वनाने, ऋणो हेतु कोपरेटिव वेंक वनाने इत्यादि का सेठजी का सदैव आग्रह रहा। वैसे उद्योगो की शुरु करने हेतु भी आपने जोधपुर मे महालक्ष्मी क लि जोधपुर व्रास एण्ड व्रासशीट क लि इत्यादि सस्थान वनाये थे जो द्वितोय विश्व युद्ध के होने पर कार्य प्रारम्भ करने की स्थिति मे नही आ पाये।

जन सेवा के कार्यो मे भी आप सदा जनता के सामूहिक सामर्थ्य का प्रयोग करने हेतु तत्पर रहे। सन् १९३६ मे जो मोटर टैंको से जल वितरण की व्यवस्था प्रारम्भ करवायी गयी थी यद्यपि इसमे अनेक लोगो के विरोध के कारण कुछ लोगो ने ही आपका साथ प्रकार जव पचपदरा नल योजना प्रारम्भ हुई और सरकारी इजनो मे देरी थी तो १९४१ मे उस योजना को पचायत के माध्यम से चलवाया गया व अतरिम काल हेतु पचायत से इजिन इत्यादि की खरीद करवायी गयी व तीन वर्ष तक पचायत ने इस विशाल योजना का सचालन करते हुए तत्पश्चात राज्य सरकार को सौपा। सरकार की और श्री गुलावचद का कितना आग्रह था यह सैन्ट्रल एडवाइजरी वोर्ड मे भाषणो से भी प्रकट है जिसमे उन्होने औद्योगिक कोपरेटिव वैंक किसानो के अन्य हेतु कोपरेटिव उद्योगो को प्रारम्भ करने हेतु सामुहिक सस्थानो पर जोर, व वीजो इत्यादि हेतु कोआपरेटिव स्टोर खोलने का सुझाव दिया है। पूरे एडवाईजरी वोर्ड में उनके सिवाय किसी व्यक्ति का इन प्रयोगो पर इतना आग्रह नही था और यही इनके सहकारप्रियता व समाजवादी विचारो का द्योतक है।

यह सम्पूर्ण चित्रण सेठजी के सामूहिक व जन शक्ति पर विश्वास के उदाहण तो हैं ही पर जन सम्पर्क के जुटाने व एकमच पर लाने के प्रयत्न भी है। ये सन् १९१९ से अर्थात आज से साठ वर्ष पूर्व सेठजी के प्रगतिशील व सामाजिक अर्थशास्त्र के विचार का द्योतक भी हैं उस काल मारवाड मे कोई विरला ही ऐसे विचारो को लेकर कार्य में जुटाने का साहस कर सकता था।

पचपदरा में रेल्वे

—श्री मांगीलाल देवरिया

चार्टर्ड एकाउन्टेट

※

सन् १८५७ के स्वातत्र्य सग्राम की असफलता के पश्चात अग्रेजो ने बहुत शीघ्रता से भारत मे रेल का जाल बिछानाप्रारभ किया व इस हेतु इग्लैंड मे विभिन्न रेल कम्पनीयाँ शाही व्यवस्था के अतर्गत बनी। इन्ही कपनियो मे बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे मारवाड राज्य की सीमा मे सिरोही के एरनपुरा से प्रवेश करती हुई फालना, रानी से खारची व सोजत रोड होकर सेदडा से अजमेर-मेरवाडा मे प्रवेश कर गई। खारची जोधपुर राज्य मे अपनी अलग रेल्वे निकालने की योजना बनाई और इसीलिए इस मिलन बिदु का नाम "मा जकशन" रखा गया।

मारवाड जक्शन से पाली तक जोधपुर की रेल्वे आई। पाली पहुचने पर आगे बढाने मे सबसे बडा आर्थिक पहलू आया रेल से आमदनी का। आमदनी मे इस जमाने मे मारवाड से नमक के सिवाय अन्य किसी वस्तु का निर्यात नही होता था। अत निश्चय हुआ कि पाली से एक शाखा मारवाड की राजधानी जोधपुर को जावे, व एक शाखा मारवाड के उस समय के सबसे बढे नमक केन्द्र पचपद्रा को ले जाई जाय जिससे रेल्वे आमदनी का जरिया बन सके।

चू कि गाडी का अतिम छोर अथवा लक्ष्य बिदु पचपद्रा पहुचे व वहा पडाव डाल दिया। पर ज्योही पचपद्रा के प्रमुख लोगो को इनके उद्देश्य का ज्ञान हुआ उन्होने पचपद्रा मे रेल्वे निकलवाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। लोगो मे चर्चा यह थी रेल के द्वारा यह लोग हमारी औरतो को भगा ले जावेगें पर गूढ दृष्टि से देखे तो उनका इस इन्कारी व विरोध मे मन्तव्य कुछ और ही था। पचपद्रा इस समय मारवाड के अत्यत समृद्ध कस्बो मे से एक था। पचपद्रा की समृद्धि का प्रमुख कारण था वहा का बढा चढा बनजारा व्यापार। प्रतिदिन सैकडो की सख्या मे बनजारे भारत के विभिन्न भागो से पचपद्रा आते। ये बैलो (पोट), रासभ (गधो), ऊट, बेलगाडिया गाडा लेकर आते थे। उस समय भारत का प्रमुख माल के परिवहन व वितरण का यही साधन था। जब बनजारे आते तो अपने साथ जिस स्थान से आते वहा की प्रमुख पैदावार लेकर आते व जाते समय

नमक भरकर ले जाते। यह आवागमन पचपद्रा से राजस्थान के विभिन्न भागो विशेष रूप से मेवाड, हाडोती, डुगरपुर, बासवाडा के पहाडी प्रदेशो मे, सिरोही, राज्य मध्यप्रदेश के गवालियर भेलसा, सागर, बसौदा, भोपाल, जबलपुर इदोर इत्यादि के प्रदेशो मे, उत्तर प्रदेश के व बिहार के बिभिन्न हिस्सो तक जाता था।

वनजारा व्यापार से पचपद्रा को अनेक प्रकार के लाभ थे। पचपद्रा मे इसी आधार पर कुटीर उद्योगो के रूप मे चमडे, पीतल कासी की ढलाई, सोना चादी के जेवर, कपडा इत्यादि के कार्य बहुत पनपे हुए थे। नमक अपने आप मे महत्वपूर्ण निर्यात था। इन मवेशियो हेतु चारा विक्रय का भी केन्द्र था, बनजारो के नित्य उपयोग की सभी चीजे पर्याप्त मिलती थीं। यह घुमक्कड लोग पचपद्रा को अपना घर समझ शादी व्याह यही आकर करते थे अत उस निमित्त विभिन्न सामान जैसे चूडे–चूडियो का कारोवार, दर्जियो का घधा ब्राह्मणो को पुरोहित्व मिलता। बनजारे विभिन्न राज्यो मे घूमने के कारण अपना कारोवार सोने मे ही करते अत: सोने व चादी की जोखिम वे यहा साहूकारो मे रखते। साहूकार उसकी रखावणी अर्थात जोखिम सभालने की कीमत लेते। यह रकम वे दूसरे जानवरो अथवा अन्य लोगो को उधार देते, जिसका ब्याज आता। वनजारो को इनकी जरूरत पर रकम देते व उसके लिए ब्याज प्राप्त करते। उन्हे नमक भरवाते उनको आड त प्राप्त होती। उनका माल वे आडत बेचते उसकी आढ प्राप्त होती। वही माल यहा के व्यापारी खरीदकर आसपास मे वेचते जिससे पैसा प्राप्त होटा। इस प्रकार इस कस्बे की सम्पन्नता का प्रमुख कारण यह बनजारा व्यापार ही था।

इसी बनजारा समुदाय ने पचपद्रा मे तालाब खुदवाए, मदिर वनवाए, यहा के जीवन को चहल पहल से भरा। नाडी तालाब के ऊपर बनजारो की पट्टासुद ताली मे हर वर्ष श्रावण मे नगाडे निशानो के घोष के साथ प्रमुख वनजारे आते, बनजारो से सपूर्ण वाजार भरा रहता, उनके लोकगीत, लोक नृत्यो इत्यादि की धूम मची रहती। यहा उपलब्ध दुर्लभ वस्तुए हथियार, मेवे इत्यादि भी यही लोग लाते थे। भारत के कथानको में लक्खी बनजारो के किस्से इस कस्बे में साकार थे।

ऐसे वनजारा व्यापार को गाव का प्रभावी श्रेष्ठीवर्ग छोडना नही चाहता था। हो सकता है भारत के अन्य भागो मे रेलो के कारण जो वनजारो को हानि हुई उसी को दृष्टि मे रख वनजारो ने ही श्रेष्ठी वर्ग को रेल का विरोध करने को कहा हो। खारवालो के भी बनजारे ही प्रमुख ग्राहक थे अत वे भी उस विरोध मे शामिल हुए और इस प्रकार रेल का महाजन खारवाल, वनजारा सभी की ओर से विरोध ही गया।

जो अग्रेज निर्माण अभियता मि० होम रेल मार्ग निकालने यहा आया था वह पचपद्रा मे छ माह तक केम्प लगा कर लोगो को समझाने का प्रयत्न करता रहा। यह काल सन् १९५७ की क्रान्ति के पश्चात का समय है। १८५७ की क्राति के कारणो

मे देश-भर मे रेलो के प्रति शका व विरोध भी एक कारण था व क्राति के शात हो जाने पर भी उसके कारणो के प्रति जनता की शकाशीलता मिटी नही थी। ऐसी स्थिति मे अग्रेज अधिकारी को जनता को समझने के सिवाय और उपाय न था और विशेष रूप से जवकि यह मामला एक देशी रियासत का था और वह एक रियासत के कर्मचारी के रूप मे कार्य कर रहा था।

अतत जब कोई रास्ता नजर नही आया तो उस अधिकारी ने मार्ग परिवर्तन का निश्चय किया। चूकी पाली से लूनी तक जोधपुर व पचपद्रा हेतु एक ही मार्ग था व वहाँ से समदडी आना अनिवार्य था। अत न चाहते हुए भी आगे का मार्ग लूनी नदी के सहारे वालोतरा तक ले जाना पडा व वालोतरा से पचपद्रा के सपूर्ण मार्ग को दूसरे रास्ते से पचपद्रा साल्ट पहु चाया गया। इसके फलस्वरूप नमक का निर्माण क्षेत्र एक तरफ रह कर दूसरी ओर से रेल्वे ने क्षेत्र में प्रवेश किया।

नागरिको के इस हठ से वह गौराग अभियता क्रुद्ध हो गया। अपने फाईल मे उसने लाल रेखांकित नोट लगाया "एक दिन आवेगा जव यहा के निवासी अपनी इस भूल पर पश्चात्ताप करेगें, पर मेरा यह आग्रहपूर्ण सकेत है कि भविष्य मे इस कस्वे से कभी रेल न निकाली जाय"। पचपद्रा साल्ट वालोतरा-लूनी के रेल मार्ग का उद्घाटन १९ फरवरी सन् १८८७ मे हुआ अर्थात लगभग ७-८ साल मे यह निर्माण कार्य पूरा हुआ। उस समय यह रेल्वे जोधपुर-वीकानेर स्टेट रेल्वे के नाम से पुकारी जाती थी। हालाकि नमक विभाग को वार्षिक रिपोर्ट मे निर्माणाधीन काल मे इसे जोधपुर स्टेट रेल्वे वताया है पर मार्ग प्रारम्भ व उसके पश्चात की प्रगति मे इसे जोधपुर वीकानेर स्टेट रेल्वे कहा है।

रेल्वे के प्रारभ के पश्चात जव भी पचपदरा के निवासी उस अधिकारी को मिलते तो उसका प्रश्न होता "क्या पचपद्रा अभी वसता है" इस प्रकार पचपद्रा मे रेल का प्रश्न अग्रेजो के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न वन गया था।

पुरानें दस्तावेजो मे सन् १९१५ का एक अग्रेजी मे विस्तृत आवेदन पचपद्रा के वासियो की ओर से श्री महाराजा साहव को लिखा हुआ मिलता है जिसमे पचपद्रा मे रेल सवध स्थापित करने का निवेदन है पर उसकी कोई प्रतिक्रिया नही हुई।

अग्रेज अधिकारी का कथन सत्य निकला। पचपद्रा साल्ट मे रेल लाईन पहुचते ही १०-१५ दिन मे ही उन मुख्य वाजारो मे जहा पचपद्रा के नमक की प्रमुख खपत थी, रेल से माल पहुच गया और यह अत्यन्त सस्ते दर से पहु चा और परपरागत वालद या वनजारे जव माल लेकर पहु चे तो भावो मे भारी गिरावट आ चुकी थी। वनजारे वेचारे भयकर आर्थिक हानि

मे फस गए । यद्यपि रेलो से प्रमुख स्टेशनो का ही माल पहुचता था पर आतरिक भाग मे वनजारो से माल का जाना जारी रहा । पर पचपद्रा का वनजारा व्यापार धीरे धीरे कम होता गया । देश भर मे वनजारे अपना घुमक्कड कारोवार छोड वसने लगे । इसका प्रभाव पचपद्रा पर पडा स्टेशन के अभाव मे व्यापारिक केन्द्र पचपद्रा से हट कर वालोतरा मे विकसित होने लगा, और इसका अभाव यहा के नागरिको को शीघ्र ही हो गया ।

पुराने दस्तावेजो के अनुसार सन् १९१५ मे श्री दरवार की सेवा मे पचपद्रा की जनता के रेल हेतु प्रस्तुत होने लगे । सेठ गुलावचद को भी रेल की कमी पचपद्रा पहुचते ही खलेने लगी । उनके दस्तावेजो मे रेल सवधी आवेदन १९२१, १९२३, १९२८-३० के मिलते हैं । श्री सर महाराज सिंह १९३१ मे पचपद्रा आए व इनकी इस्पेक्शन रिपोर्ट मे पचपद्रा मे रेल स्टेशन की आवश्यकता पर जोर है, जो प्रकट करता है कि नागरिको ने इस सवध मे माग की होगी । सन् १९३४ की तत्कालीन चीफ मिनिस्टर श्री डी० एस० फिल्ड की पचपद्रा आने पर रिपोर्ट मे रेल की माग को लेकर विस्तृत नोट में भी ग्रामवासियो की इसी माग पर वल डाल रखा है ।

यद्यपि सेठ जी के पचपद्रा आते हो यह प्रश्न उन्हे प्रथम महत्व का अनुभव हुआ पर अनेक समस्याऐ एक के वाद दूसरी प्राथमिकता की आती रही । विशेष रूप से प्रथम महायुद्ध का काल, उसके पश्चात नमक उद्योग की समस्या व आन्दोलन उन्हे उलझाए रहे पानी की समस्या भी जटिल थी । नमक आदोलन के विषय मे भारत भर का भ्रमण चल रहा था । एक के वाद एक कमीशनो के दौरे, सरकारो कोत्र, सभी का वे एकाकी सामना कर रहे थे । व १९३४-३५ इसोलवेसी आदोलन ने इस विषय को और भी आगे खिसका दिया । फलत प्रश्न को उठाते रहते हुए भी वे इस पर अपनी पूरी शक्ति केन्द्रित न कर सके ।

हर प्रश्न पर सव दिशाओ से आक्रमण सेठजी की कार्य पद्धति का एन विशेष अग रहा है । उन्होंने एक तरफ इस प्रश्न जो हकूमत की समस्याओ के माथ जोडा दूसरी ओर अधिकारियो के नोट अपने पक्ष मे प्राप्त किए । इधर पचपद्रा आने वाले वरिष्ठ अधिकारियो की सहानुभूति अर्जित की । रेल्वे की आमदनी का पोसाली, छोटा साभरा व पचपद्रा कस्वे का श्रोत वताया साल्ट महकमे को उनके विशाल पोसाली व साभरा क्षेत्रो के नमक के जावक मे स्टेशन से दूरी के व्यय के कारण होने वाली हानि को ओर ध्यान दिलवा कर लाइन प्रारम्भ करने को कहा । पचपद्रा की पानी समस्या का हल भी रेल मे निहित होने की ओर राज्य का ध्यान आर्कषित किया, अर्थात ऐसी परिस्थितियो व वातावरण उत्पन्न किया जिससे सन १८८० के अग्रेज अधिकारी के लाल रेखाकन की ओर ध्यान कम से कम जाय ।

तत्कालीन चीफ मिनिस्टर सर डी एम फील्ड का विश्वास सपादन इस विषय मे अत्यत आवश्यक था । श्री फील्ड के पचपद्रा आगमन पर उनका स्वागत इस सवध मे सहयोग वना । रेल्वे मैनेजर श्री गोर्डन इस विषय की दूसरी कडी थे । श्री गोर्डन का ध्यान इस सवध मे ब्रिटिश

हितो की ओर आकर्षित किया गया। उन्हें नमक विभाग के भारत के साल्ट कमीश्नर की इच्छा दर्शाई गई, जिससे यह मार्ग परिवर्तन ब्रिटिश साल्ट विभाग के हित मे होगा। श्री गोर्डन ने स्वाभाविक रूप से इस कथन की पुष्टि चाही और इस हेतु श्री गोर्डन ने स्वय साल्ट कमीशन से मिलने का निश्चय किया।

इस समय भारत सरकार के सभी कार्यालय छ छ माह तक दिल्ली मे व छ माह तक शिमला मे रहते थे। श्री गोर्डन का शिमला का कार्यक्रम बना। सेठ जी ने अपने निजी श्रोतो से इस कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त की। श्री बरत्तीराम को साथ ले शिमला का कार्यक्रम बनाया। सेठजी गोर्डन से दो दिन पूर्व ही शिमला पहुच गए।

यह काल था जब कि विशिष्ठ भारतीय व्यक्ति अग्रेज अधिकारियो से मिलने जाते थे तो भेंट लेकर जाते थे जिसे डाली के नाम से पुकारा जाना था। सेठजी ने शिमला पहुच कर इस प्रकार की डाली की व्यवस्था दो व्यक्तियो के लिए की। प्रथम तो साल्ट कमीश्नर के लिए व दूसरी श्री गार्डन के लिए। डाली मे अनेक मजिले केक, पेस्टरी, विदेशी बढिया फल, सूखे मेवे इत्यादि हुआ करते थे। शिमला के अच्छे होटलो से बैरो की व्यवस्था की गई। ५१ थालो मे डाली सजाकर साल्ट कमीश्नर को निवास पर भेट की गई। इस प्रकार की विशाल डाली से कमीश्नर बहुत प्रभावित हुए। उन्होने सेठजी को आने का कारण पूछा। सेठ जी ने बताया कि पचपद्रा के पौसाली व छोटा साभारा इलाके से रेल्व जाय तो नमक विभाग को भारी बचत होगी व क्षेत्र से नमक उत्पादन बढने मे बडी मदद मिलेगी। कमीश्नर तत्काल इस प्रस्ताव से सहमत हो गए तब सेठजी ने रेल्वे मैनेजर श्री गोर्डन के इसी सबध मे शिमला आने का जिक्र किया व कमीश्नर ने वादा किया कि वे निश्चित रूप से श्री गोर्डन को इस योजना को कार्यान्वित करने का आग्रह करेंगे।

इसके पश्चात सेठजी मि० गोर्डन से मिले। उनके लिए भी वैसी ही डाली की व्यवस्था थी श्री गोर्डन के मुह से अचानक ही निकल पडा "अरे सेठ जी आप यहा" वह इस सौगात से वह भी शिमला में आकर, इस ठाट के साथ, देखकर अत्यत प्रभावित हुए। सेठजी ने मि० गोर्डन को कहा कि वे कमिशनर महोदय से मिलने के पश्चात पुन उन्हे भेट का अवसर दें। तदनुरूप सेठजी पुन मिले तो मि० गोर्डन ने बताया कि कमिश्नर शीघ्र से शीघ्र इस योजना के कार्यान्वयन के इच्छुक हैं।

अब सेठ जी का अगला कार्य अपनी स्टेट मे, और फिर रेल्वे बोर्ड के साथ था। स्टेट मे मि० एडगर पी० डबलू डी मिनिस्टर थे। मि० एडगर के सम्मुख भी यह प्रस्ताव गया। मि० एडगर का ध्यान उस पूर्व उल्लेखित अग्रेज अधिकारी की लाल रेखाकित टिप्पणी की ओर गया। श्री एडगर ने कहा कि योजना अत्यत खर्चीली होगी।

इस पर सेठ जी ने अपनी ओर से इस लाइन को निकालने के विभिन्न वैकल्पिक प्रस्तुत किए। इस के वैकल्पिक रूप मे तीन प्रस्ताव प्रस्तुत किए थे। प्रथय तो पुरानी लाईन को जेरला ग्राम के पास से पचपद्रा की ओर घुमाकर पचपद्रा माल्ट ले जाया जाय। इसमे आधी लाईन पुरानी काम आती थी व पचपद्रा सिटी के वाद का हिस्सा याल की विभिन्न साईडिगो मे सवंवित होने से लगान के पूजीगत व्यय का भार माना जाकर योजना के व्यय को कम कर देता। दूसरा वालोतरा अस्पताल के पास से पचपद्रा सिटी की ओर लाइन घुमाकर आगे उपरोक्त प्रकार से ले जाना इसमें वालोनरा स्टेशन पर लाईन को अलग करने का व्यय धचता था। तीसरा वर्तमान परिर्वतित मार्ग जो गेयनागाजी की दरगाह के पास से जानीयाना की ओर से निकलता था। इसमे रेल्वे को अधिक यार्ड सुविवा उपलब्ध होती थी चाहे खर्चा कुछ अविक था।

सेठ जी ने अपनी ओर से कुल पूजीगत व्यय का व्यौरा, व इस गाडी को चलाने हेतु दैनिक मासिक व वार्षिक व्यय व अनुमानित आय का व्यौरा दिया था। उस समय रेलवे को अपनी पूजी पर तीन प्रतिशत व्याज मिल जाना पर्याप्त समझा जाता था जबकि सेठ जी के अनुमान से रेल्वे की अर्तगत सुविधा पूर्लक छ प्रतिशत से अधिक व्याज मिल सकता था।

सेठजी के इन अनुमानित आकडो की पष्टि रेल्वे के नकनीकि अधिकारियों द्वारा की गई व योजना की स्वीकृति हेतु कागजात रेल्वे वोर्ड को भेज दिए गए। सेठ जी एक वार फिर रेल्वे वोर्ड के अधिकारियो से कागज शीघ्र निकलवाने दिल्ली व शिमला पहुचे व इस प्रकार इस मामले की दूसरी सीढी भी पार कर ली गई।

इसके पश्चात मामला पुन स्टेट कोसिल मे व्यय की वजट स्वीकृत व वजट आवंटन हेतु पहुचा इस वार श्री एडगर ने स्पष्ट आपत्ती उठाते हुए इस योजना को अलाभकारी वताया। स्टेट कोसिल मे रेल्वे मैनेजर, साल्ट कमीश्नर था अन्य स्थानो से सहयोग सभव नही था।

इस पर सेठजी ने अत्यत साहसी व इतिहास मे अद्वितीव ऐसा कदम उठाया। आपने चीफ मिनिस्टर को लिख कर कि यदि सपूर्ण पूजीगत राशि व व्याज १६ साल मे वसूल न हो तो स्टेट सेठ जी की व्यक्तिगत सपत्ति से उसे वसूल कर सकती है और इस हेतु आवश्यक वाँड सेठजी ने लिख कर दे दिया सार्वजनिक कार्य हेतु इस प्रकार का साहस मारवाड मे प्रथम था और इससे विरोधियो के मुह पर ताले पड गए। योजना को स्वीकृति मिल गई ओर कार्य प्रारभ हो गया।

इसी वीच दूसरा सकट आया। इतिहास प्रसिद्ध अत्यत भयकर छिनवा के अकाल की चपेट मे मारवाड आ गया। राज्य द्वारा राहत कार्यों हेतु खजाने का मुह खोल दिया गया। राहत कार्यो मे मजदूरो की अनाज, पानी इत्यादि राहत कार्यो के स्थानो पर ही राज्य कार्यों की ओर से मिलती। इससे रेल निर्माण के ठेकेदारो को मजदूर नही मिलते थे। यदि

मजदूर न मिलने से काम रुका तो अकाल के भार से दवे कोष के कारण स्वीकृति रद्द होने की सभावना थी।

ऐसी स्थिति मे सेठजी ने स्वय मजदूरो के राशन की व्यवस्था, कार्य के साथ की आधीयो, लूओ मे स्वय कुछ नोकरो के साथ तवू लगा जगल मे रहते। मजदूरो के लिए सामान उपलब्ध करवाते। मजदूरो को रेल्वे के कार्य पर लगने हेतु प्रोत्साहित करते। सेठजी के इसी कार्य के कारण गरीव मजदूरो ने तत्कालीन अकाल के लोकगीतो मे सेठजी का गुणगान अत्यत भावपूर्ण शब्दो मे किया है। यह लोक गीतो मे दी जाने वाली आशीष काम करते मजदूरो के कठों से ध्वनि होती थी।

इस लाईन के प्रारभ होने पर सन् १९४० मे सड डी० एम फील्ड का स्वागत पचपद्रा मे अत्यत उत्साह से किया गया। एक रेगिस्तानी ग्राम मे जोधपुर के राजसी फराशखाने व अन्य स्थानो से साधन पहुचा कर मारवाड के इतिहास मे अभूत पूर्व स्वागत का कार्यक्रम पचपद्रा मे हुआ। रेल के प्रारम्भ मे पचपद्रा-वालोतरा की टिकट केवल दो आना थी फिर भी सेठजी रोजाना अनेक लोगो को मुफ्त अपनी ओर से टिकटे देकर वालोतरा जाने हेतु प्रोत्साहित करते। इस अद्वितीय कार्य हेतु आज भी जन जन इस गाडी को गुलाव गाडी के नाम से पुकारता है।

रूढीवाद व कुरीतियों के विरुद्ध शंखनाद

—श्री लक्ष्मीचन्द सुराणा

❋

प्रतिभा क्षेत्र नही ढूढती, सक्रियता अवसर नही देखती, तडफ हो तो समय की कमी नही, सहृदयता के लिए जात पात का भेद नही सेठ श्री गुलाबचद के जीवन पर यह सभी उक्तियो सही उतरती हैं। जो व्यक्ति किसानो के घर पर उन्हे अफीम छोड़ने का उपदेश दे, खारवालो को शराब के अवगुण बताए, महाजनो को चूडा फेटोये को तिलाजलि देने को कहे जागीदार को जनता का स्नेह अर्जित करने का आग्रह करे, साधुओ को महावीर के हिस्से न करने का निवेदन करे, श्रावको को धर्म जीवन मे उतारने का अर्थ बताए, अनपढ हेतु शिक्षा की व्यवस्था करे, प्यासे हेतु पानी उपलब्ध करावे, राजा को उसके उत्तरदायित्व का भान करावे, प्रजा को अपने कर्तव्यो का स्मरण करने को कहे वह जीवन के हर क्षेत्र मे, देश के हर भाग मे, जनता के हर अग मे सक्रिय ही नजर आवेगा, इसमे सशय नही।

सवत १९७७ अर्थात सन् १९२० मे ओसवाल समाज की सिवान्ची न्याति पादरु मे एकत्र हुई। सेठजी को मारवाड आए केवल चार वर्ष हुए थे। लोगो के मुख से सिवान्ची पचायत का बडा नाम सुना था। परिवार प्रतिष्ठा से उस पचायत सम्मान भी था। सेठजी वहा पहुचे तो देखा आपसी विद्वेश, प्रति स्पर्धा, रुढियो मे घिरा समाज, जो दुनिया की गति से काफी पीछे, अपने सीमित दायरे मे कल्पित अह मे डूबा हुआ प्रतीत हुआ। जो बुजर्ग पचायत मे भाग ले रहे थे, उनसे सेठजी आयु मे काफी छोटे थे पर, अपने आत्मविश्वास व सुलझे हुए विचारो के कारण नियमो मे आमूलचूल परिवर्तन करवाए सामी खीचडियो के भात जिनमे विवाह के दोनो पक्ष एक दूसरे को नीचा दिखाते का प्रयत्न कर आयु भर का आर्थिक भार व आपसी मन मुटाव मोल लेते, स्त्रियो का ढोलो पर नाचना, बरातो में जानणीये ले जाना इत्यादि अनेक कुरीतियो से समाज को मुक्ति दिलवाई।

पर इस पचायत के पश्चात ही किसी छोटी बात को लेकर समाज में विवाद पड गया गया। सेठजी ने अनुभव किया कि जब तक सब स्पर्शी सर्वसम्मत प्रतिनिधित्व से अहं विहीन पचायत का गठन न हो, इस पचायत से समाज का बडा लाभ नही हो सकता। आपने घोषणा की कि जब तक जुम्मेवार पचायत न बन जाय वे इस पचायत मे भाग नही लेगे।

इसके पश्चात श्री कुशलाश्रम के माध्यम से मारवाड जैन विकास सघ के मच से, श्री सुधार समिति पचपद्रा से व अपने निजी स्तर पर आपने समाज सुधार विषयक अनेक कार्यक्रम रचे। कुशलाश्रम के छात्रो का व्यग्य नाटक के रूप मे, निम्न पक्तियो का गाना इसी का द्योतक है।

दादोसा मारा करदो पचायत नवी शहर मे
ए घनिया भोला शू काई समझे रे एडी वात मे।

इस गीत मे जहां पोता अपने दादा को नयी पचायत वनाने का कहता है वहा दादा पोते के ऐसी बातो मे कच्चे विचारो की ओर सकेत कर उसे टालने का प्रयत्न करता है।

मारवाड जैन युवक सघ का निर्माण सन् १९४५ मे मारवाड के विभिन्न क्षेत्रो के युवको द्वारा जैन समाज मे सामाजिक विकास, शिक्षा प्रसार और रूढियो के उन्मूलन हेतु हुआ था। इस समय भी सेठजी आयुमे ६० साल से अधिक थे लेकिन सेठजी के विचार इस कालान्तर मे भी इतने प्रगतिशील थे कि इससे युवको को वडी प्रेरणा मिलती थी। यह सस्था सक्रियता से लगभग ५–६ वर्ष तक चली। मारवाड जैन विकास नामक एक मासिक पत्र इस सस्था का निकलता था। जो समाज सुधार के लेखो से भरा रहता था। सेठजी इस सस्था सगठन मत्री थे व जब कोई कहता कि सेठसाहव आप तो वृद्ध हैं तब यही उत्तर मिलता व्यक्ति आयु से नही विचारो से युवक होता है।

होटलू महादेव पर एकत्र इस सस्था के व्यक्तियो के साथ पारलू ग्राम के समीप सिवानची पचायत के पचो के सम्मुख भी प्रदर्शन व निवेदन किया गया था। अनेक लोगो ने सुधारवादी भाषण दिये व सेठजी इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। उस समय पचो ने आपको पचायत के साथ में अपने स्थान पर वैठकर विचार विमर्श करने का आग्रह किया पर आपने अपना पूर्व निश्चय दोहरा दिया। पचायत के इस सम्मेलन मे भी अनेक सुधारवादी कदम उठाये गये।

समाज सुधार हेतु भारत के गणमान्य समाज सुधारको का उपयोग भी श्री गुलाबचद द्वारा वहुतायत से हुआ और इन व्यक्तियो मे सेठजो का सपर्क श्री गुलावचद ढढा से हुआ जो प्रसिद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता श्री सिद्धराज ढढा केपिता श्री व अनेक रियासतो के दीवान रह चुके थे। आगरा के सेठ अचलचद लोढा, दिल्ली के श्री आनन्द राज सुराणा व जोधपुर चीफ कोर्ट के प्रसिद्ध वकील पचपदरा निवासी श्री प्रतापमल मेहता का नाम उल्लेखनीय है। इन महानुभावो को आमत्रित कर पश्चिम मारवाड के अनेक कस्बो मे उनके कार्यक्रम रखे जाये व समाजसुधार के क्षेत्र मे जनके प्रभाव व नाम का उपयोग किया गया।

सेठजी जब भी किसी ग्राम मे जाते तो स्वभाविक रूप से वहाँ के ग्रामवासियो की सभा होती और उस सभा मे सेठजी सामाजिक कुरीतियो क खुलकर विरोध करते। जो प्रमुख

विषय सेठजी के भाषणो मे रहा करते उसमे बाल विवाह, वृद्ध विवाह, मृत्युभोज, चूडा पेटिया, शिक्षा, स्त्री शिक्षा, गहनो का प्रदर्शन, विवाहो पर फिजूल खर्ची, दहेज, टीका न्याय पचायतो के दृष्टिकोण मे परिवर्तन, स्वच्छता गृह उद्योग अफीम व शराब इत्यादि प्रमुख हैं। सेठजी की कार्यशीलता का परिचय इसी से मिलता है कि जब भी वे किसी स्थान पर जाते तो आसपास के गावो के युवक झुड बनाकर सेठजी का भाषण सुनने व उनके दर्शन करने आते। पुराने कागजो मे फालना, वरकाणा, उम्मेदपुर इत्यादि की कई जन समस्याओ हेतु सेठजी के पते से भेजे गये आवेदन स्पष्ट करते है कि उस समय उच्च राज्य स्तरीय कार्यो हेतु आम जनता सेठजी को बहुत बडा सहारा समझती थी।

ओसवाल समाज मे सिवानची क्षेत्र मे एक कन्या जडाव जो सिवाना के मला बागरेचा की पुत्री थी और जिसका सबध सिवाना के ही किसी छाचेड परिवार में हुआ था। कन्या उस लडके से शादी नही करना चाहती थी। इस विषय पर बहुत विवाद खडा हुआ जो अनेक वर्षो तक चलता रहा। जब तक न्याति कोई निर्णय न दे कन्या ने भी विवाह नही किया और उसकी आयु २८ साल की हो गयी। न्याति मे विभिन्न लोग कन्या व लडके के पक्ष मे बट गये और विषय का कही अत आतानही दिखा। श्री गुलाबचन्द को इस स्थिति पर अत्यन्त क्षोभ हुआ और इन्होने इस कन्या के मामले को निपटवाने का निश्चय किया चू कि मामला सिवाना गाव से सबधित था अत सिवाना के पचो को समझाने का प्रयत्न किया गया वकानाणा, समदडी, पचपदरा व बालोतरा इत्यादि सभी गावो मे घूम घूम कर पचो को मामला निपटवाने व उनके मानस को लडकी के पक्ष मे बनवाने का प्रयत्न किया व न्याति पचायत को एकत्र कर उसमे उन्हे उपस्थित रहने का आग्रह किया।

इसके पश्चात सेठजी ने सिवाना जाकर उन सभी व्यक्तियो से जो लडके के पक्ष मे होने के कारण मामले को तय करवाने के विरुद्ध मे थे, एकत्र किया व उनके सामने अपनी पगड़ी रखकर निवेदन किया कि समाज के हित मे व एक कन्या के करुण क्रदन को देखते हुए वे इस विषय मे सहयोग करे। पर जब इतने निवेदन के पश्चात भी वे नही माने तो श्री नाकोडा तीर्थ पर न्याति का सम्मेलन बुलवा इस विषय को निर्णित करवाया। इस निर्णय को करवाने मे विरोध करने वाले गुट ने न्याति मे "गडा दिया पर इसकी चिंता न करते हुए लडकी की शादी की व्यवस्था की व स्वय शादी मे सम्मलित हो पिता के समान लडकी के विवाह का कार्य सम्पन्न करवाया। इन पक्तियो का लेखक भी इस कार्य मे सेठ जी से प्रेरणा लेते हुए सक्रिय था।

इस विवाद मे भी आपका प्रयत्न यह रहा कि न्याति का पुन किसी प्रकार सगठन हो। क्योकि न्याति झगडो के आप सदैव विरोधी रहे इस सगठन को करवाने मे पूज्य आचार्य श्री हस्तीमलजी व अन्य पूज्य लोगो का सहयोग तो लिया ही पर साथ ही न्याति मे सगठन हो चाहे उसका वजन स्वय के उपर ही पड़े इस प्रकार का विचार रहा और इसीलिये इस विवाद मे पच निर्णय के समय आप अपना पक्ष तक प्रस्तुत करने न आये।

समाज सुधार के क्षेत्र मे आप हर कार्य अपने स्वय से शुरु करने के सिद्धान्त को मानने थे और इसलिए अपने छोटे पुत्र श्री छगनराज के विवाह के समय अपते कन्या पक्षवालो को स्पष्ट कह दिया कि इस विवाह मे चूडे का प्रयोग नही होगा।

चूंकि उन दिनो चूड़ा सौभाग्य का प्रतीक माना जाता था और इसलिए पक्ष की ओर से वहुत दवाव डाला गया धमकियां भी दीं गई, विवाद खडा किया गया पर आप अपने निश्चय पर अटल रहे। चूडे के विरोध के कारण तो आपको वार अनेक स्थानो पर स्त्री समाज की गालियें भी सुननी पडी थीं पर आप सदा हस कर उन सबको सह लेते थे।

एक वार वे कानाणा ग्राम मे गये थे व इन पक्तियो के लेखक ने आचार्य श्री तुलसी के आगमन पर सेठजी की प्रेरणा से न्याति विवाद समाप्त करवाने का प्रयत्न किया कानाणा ग्रामके पच इस विवाद को निपटवाने के लिए तैयार नही थे पर हमने आचार्य श्री को एक दिन के लिए विशेष आग्रह से रोककर छात्रो व युवको से भूखहडताल करवादी अतिथियो की भी जव तक भूख हडताली हडताल न तोड दे भोजन ग्रहण न करने का आग्रह किया व आचार्य श्री से पचो का हठ समाप्त होने तक प्रवचन न करने का निवेदन किया गया। फल यह हुआ कि पंचो को वालोतरा व पारलू के दो पच डाल कर हडताल समाप्त करवाने व विवाद समाप्त करने का निर्णय लेना पडा।

सेठजी के सेण्ट्रल एडवाइजरी वोर्ड मे प्रस्तुत विचार इन्हे ओसवाल समाज के दायरे से निकाल कर समस्त लोक जीवन सुधार के क्षेत्र की ओर ले जाते हैं। अफिम को उन्होने एक राष्ट्रीय बुराई माना व वाल विवाह, वृद्ध विवाह को राष्ट्रीय कुरीति के रूप मे स्वीकारा। मृत्यु भोज को गरीवो के लिए सामाजिक अभिशाप समझा, उस पर कानूनी रोक के हामी रहे। सामाजिक कुरीतियो को समाप्त करने मे जव कोई भी सामूहिक अवसर मिला, उसका उपयोग करने में आप कभी नहीं चूके। अपने कारोवार के संवंध में ग्राम ढाणियों मे भी आपको प्रारम्भिक वर्षो मे जाना होता था और उस समय रात्रि के समय एकत्र ग्रामवासियो, किसानो की टोलियों इत्यादि को भी आप समाज सुधार के उपदेश देते। वास्तव मे सेठजी के जीवन काल से जनता व सेठजी को अलग अलग देखना अतयन्त कठिन है।

श्री महाजन व्यापार सुधार एसोसिएशन - मारवाड की प्रथम व्यापारिक फैडरेशन

— श्री मोहनलाल मदाणी

पचपद्रा

♣

उस काल जब कि सेठ गुलावचंद जी ने पचपद्रा के नमक आदोलन की सफलता पूर्वक समाप्ति कर थोडी सास ली ही थी कि मारवाड मे व्यापारिक हितो के रक्षण के लिए उन्हे एक फेडरेशन की आवश्यकता महसूस हुई उस समय तक मारवाड मे न तो कोई चेम्वर था न समस्त मारवाड के व्यापारिक हितो के संरक्षण का उपाय। उद्योग तो मारवाड़ मे थे ही नही। पाली मिल जो कि मारवाड का वहुत समय नक एक मात्र उद्योग रहा सन् १९३९-४० के आस-पास शुरु हुआ था।। मारवाड चेम्वर आफ कामर्स की स्थापना भी सन् १९३९ मे हुई थी।

इसी बीच एक प्रसग ऐसा आया जिसमे सेठजी के पास अनेक व्यापारी आकर कहने लगे कि नवीन दिवालिया कानून की पद्धति के कारण उन्हे वड़ी परेशानी हो रही है। सन् १९१४ के दिवालिया कानून के अतर्गत सन् १९१४ से १९३४ तक केवन दो सो अठ्ठासी आवेदन आये थे, जब कि १९३४ इमोलवेंसी कोर्ट की स्थापना के वाद, कुछ लोगो के गलत वातावरण फैलाने के कारण, एक साथ ४० लाख रुपये की कीमत के ३५०० आवेदन आ गये थे। इस कारण सारे मारवाड मे आपसी अविश्वास, परेशानी व झगडो का वातावरण फैल गया।

सेठजी ने उन्हे सलाह दी कि वह अपने स्थान पर महाजन व्यापार सुधार एसोसिएशन का निर्माण करें। तदनुसार ४८ गावो मे जिसमे अनेक महत्व पूर्ण कस्बे भी शामिल थे, ऐसे एसोसिए-शनो की स्थापना हुई। इन सभी सस्थाओ का एक फेडरेशन, महाजन व्यापार सुधार एसोशिएशन के नाम से जोधपुर मे वनाया गया। सिंघी जी के त्रिपोलिया मे इसका मुख्य कार्यालय था। इस फेडरेशन ने अपने सभी सबद्ध सस्थानो का एक खुला अधिवेशन १५-१२-३५ को पचपदरा मे वुलाया जिस दिन तत्कालिन चीफ कमिश्नर श्री डी० एस फील्ड आने वाले थे। श्री फील्ड के सम्मुख सारी

स्थिति की विस्तृत जानकारी रखते हुऐ उन्हे हस्तक्षेप करने को कहा गया जिसे उन्होने स्वीकार किया व पुन एक अधिवेशन २६-१-३६ को सिंघीजी के त्रिपोलिया मे हुआ । ज्योही यह एसोसिएशन जोधपुर मे अपना नियमित कार्य करने लगा, सगठित कार्य पद्धति का सुन्दर रूप सामने आया। सम्पूर्ण ३५०० मामले एसोसिएशन के तत्वावधानमे एसोसिएशन के कीलो द्वारा सचालित किये गये। कुछ कानूनी सहयोग सकलित किया गया। मामलो के विशेष कोर्ट मे निपटारे के बाद एसोसिशन उन्हे चीफ कोर्ट मे ले जाती व चीफ कोर्ट से अनेक विशेष कोर्ट के निर्णय रद्द तो करवाये गये लेकिन अपने मामलेके पक्ष मे कानूनी व्याख्याए ली गयी जिससे विशेप अदालत को अपने विचार का दृष्टि कोण बदलने पर मजबूर होना पडा।

दूसरा क्षेत्र जो सेठजी ने चुना वह था भारत भर के इसोलवेंसी एक्टो को लाकर उसके समकक्ष मारवाड के एक्ट मे बदल करवाना। राज्य द्वारा इस विषय पर विचारार्थ एक विशेष समिति बनायी गयी जो इस कानून मे उचित परिवर्तन के सुझाव दे। इस समिति मे प्रतिनिधि इस एसोसिएशन के भी रखे गये।

इसी समय प्रसिद्ध विधि शास्त्री ठाकूर चैनसिंह बारएट लॉ, जो भारत के प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री भी थे, इगलेण्ड से भारत आये व जोधपुर राज्य मे उन्हे ज्युडिशियल मिनीस्टर बनाने की घोषणा की। ठाकुर चैन सिंह के जोधपुर आगमन पर सेठजी ने उनका एसोसिएशन की तरफ से भव्य स्वागत किया व उन्हे उनके द्वारा सचालित विषय की पूर्ण जानकारी दी। चूकि ठाकूर चैन सिह इस विषय पर सेठजी से सहमत थे कि यह कानून व्यवहारिक व जनता के आपसी सम्बन्धो का गाढा करने वाला तथा साथ ही भारत के अन्य राज्यो व भारत सरकार के समकक्ष होना चाहिए। अत. उन्होने सेठजी के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए विशेष अदालत भंग की व कानून मे मूलभूत परिवर्तन किया।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण आदोलन सफल होकर पुन. आपसी विश्वास व शाति का वातावरण फैला साथ ही इस पिछडे प्रदेश मे सामूहिक शक्ति, व्यवस्थित सचालन व विधि सम्मत विरोध से सम्बन्ध मे जनता व व्यापारियो मे आस्था बढी जो आने वाले समय मे मारवाड के व्यापार के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई।

यहा यह उल्लेख करना उचित ही होगा कि इस सम्बध मे सेठजी ने मारवाड के १५ परगनो की सभी प्रमुख मडियो का दौरा किया था और उस समय उद्योग क्षेत्र में आगे जाने हेतु उन्हे मारवाड में अनेक प्रकार के उद्योगो को प्रारम्भ करने की जानकारी दी थी।

इन्ही दौरो के समय उन्होने गाव गाव में समाज सुधार का बिगुल भी बजाया था जिससे प्रभावित होकर अनेक नवयुवक समाज सुधार के क्षेत्र में आगे आये।

सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड में जन प्रतिनिधि के रूप में

—श्री चम्पालाल बांठिया

※

भारत मे १९३५ के गवर्नमेन्ट ऑफ इडिया एक्ट के पश्चात देशी रियासतों में भी जन प्रतिनिधीत्व व प्रजातात्रिक व्यवस्था की मांग जोर पकड़ने लगी व जोधपुर रियासत उन कुछ गिणी चुनी स्टेटो मे थी जिन्होने इस सवध मे पहल करने का प्रयत्त किया। राज्य की ओर से एक सेट्रल एडवाईजरी वोर्ड का गठन इस ओर राज्य का प्रथम प्रयास था। इस सवध जोधपुर राज्य के तत्कालीन चोफ मिनिस्टर सर गेनाल्ड फिल्ड के उद्घाटन भाषण के निम्नन उदारण इस वोर्ड के उद्देश्य व कार्य पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं।

"श्री मान माननीय महाराजा साहिव वहादुर की गवर्नमेंट ने ध्यानपूर्वक विचार करने के वाद आपको इस प्रथा मे मारवाड के विभिन्न स्वत्वो का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना हैं। आपकी योग्यता और अपने अपने मेडल मे आपके प्रभाव से गवर्नमेट सन्तुष्ट है कि आप गवर्नमेट को उचित रीति से जनता की इच्छा के अनुसार सलाह देगें।"

"आज मारवाड अपने राजनैतिक जीवन की नई अवस्था मे प्रवेश कर रहा है। जिस मार्ग पर आप अग्रसर हो रहे हैं उस पर मारवाड मे अभी तक कोई नही चला।.... .... अव आपको हम राज्य शासन प्रवध के विकट कठिनाईयो ओर उत्तारदायित्वो मे हमारा अधिकाधिक रूप से हाथ वठाने के लिए आमन्त्रित करते हैं।"

.... "एकजोर आप जनता की आशाओ व अभिलाषाओ के सरक्षक है ओर दूसरो आर श्री मान माननीय महराजा साहिव वहादुर ने जो महान विश्वास किया है उसे सत्यसिद्ध करना है। यह एक ऐसा विश्वास है जिसक अर्थ है शातिपूर्ण वैधानिक उपायो से मारवाड मे राज्य शासन प्रवध मे इसका उचित भाग मिले और साथ ही एक अच्छी व सुव्यवस्थित शासन व्यवस्था के तत्वो की रक्षा हो।"

इस सवव मे लोकनायक श्री जयनारायण व्यास के इसी वोर्ड मे उदघाटन अवसर पर प्रकट किया आप भी इस सभा के उद्देश्य पर जनभावना की छाप लगाने वाले हैं—"श्रयुत जयनारायण

व्यास ने ·· ······· ······· ··· ··· ·श्रीमान माननीय महाराज साहिव वहादुर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जिनकी अनुकृपा से सेंट्रल एडवाइजरी वोर्ड की स्थापना हुई और अमीर, गरीव, किसान साहूकार आदि प्रजा के विभिन्न प्रतिनिधियो को एकसाथ एकछत के नीचे वैठ कर शासन प्रवव सम्वन्ध समस्याओ पर विचार करने का शुभ अवसर मिला।"

मारवाड मे सैंट्रल एडवाइजरी वोर्ड की पहला अधिवेशन २२ फरवरी १९३९ को हुआ। मारवाड के महाराजा साहव के लघु भ्राता महाराजा अजीतसिह जी इसके अध्यक्ष थे। वैठक स्थल श्री सुमेर पव्लिक लाईब्रेरी का हाल व सरकारी प्रतिनिधियो मे पोलिटिकल सेक्रेटरी, फाइनेंस सेक्रेटरी, पव्लिक वर्क्स सेक्रेटरी, रेवेन्यू सेक्रेटरी, होम सेक्रेटरी, जडिशियल सेक्रेटरी, स्टेट कौंसिल के एसिस्टेंट हवाला-रेवेन्ये सुपरिटेडेंट, डाइरेक्टर पशु सुधार, डाइरेक्टर जन स्वास्थ्य विभाग, इस्पेक्टर आफ स्कूल सदस्य थे, जव कि २५ जन प्रतिनिधियो मे श्री जयनारायण, सेठ गुलावचंद श्री इद्रनाथ मोदी, राधाकृष्ण मिरधा, श्री ईशराजार, शाह गोरधनलाल कावरा, रायस हत्र तनसुख व्यास, श्रीयुत राधामोहन एडवोकेट, अव्वास अली चूडीगर मेहतासुमेरचद, श्री सुखदेव चारण, रावराजा उदयसिह, ठाकुर देवीसिह ठाकुर दुर्जनसिह श्री रहमतुल्ला खा सेठ फिरोज शाह कोठा वाला श्रीयुत रामाकाकाग, श्रीयुत जालिमचद एडवोकेट इत्यादि थे। उपरोक्त चयन इस वोर्ड की चयन सर्वांगिणता व विविधता के साथ हो सदस्यो के वैशिष्ट्य को भी प्रक. कर रहा है। श्री किशन पुरी, होम सेक्रेटरी जो वाद मे राजस्थान के चीफ सेक्रेटरी वने, इस वोर्ड के सेक्रेटरी थे।

सेठ गुलावचद के इस वोर्ड मे विचार उनकी जनसमस्याओ के प्रति जागरूकता विशद ज्ञान, निर्भिक व प्रभावी वक्तृत्वता, गरीवो की समस्याओ का सही आकलन को प्रकट करते हैं। श्री जयनारायण व्यास ने इस वोर्ड मे सेठजी को अपना प्रभावी सहयोगी पाया। यह उस जमाने की वात है जव अधिकारी वर्ग अग्रेजो मे भाषण देना अपना अधिकार व शान समझता था मारवाडी या हिंदी अत्यत हेय दृष्टि से देखी जाती थी, प्रथम अधिवेशनो के ही दो दिनों मे वार वार श्री व्यास व सेठजी ने हिंदी के लिए आग्रह किया व अतत मामला राज्य सरकार व महाराजा साहिव के व्यक्तिगत विचारार्थ किया व आपने वाल विवाह पर सख्ती से रोक लगाने की माग की, पर कई कृषि सवधो सुधारो पर आपका विचार था कि पहले किसानो की अफीम, फिजूलखर्चा मौसर, कर्जे अशिक्षा इत्यादि कुरीतियो से मुक्ति दिलाई जाय तव ही अन्य सुधार के कदम सफल होगे। सन् ३९ मे जव जोधपुर के सिवाय मारवाड मे कही हाईस्कूल नही थी, हिंदीपढा हुआ व्यक्ति गाव मे ढूढे मिलता था, किसान का प्राथमिक विकास एक व्यवहारिक पहलू था।

श्री जयनारायण व्यास के प्रेस पर लगे प्रतिवधो को हटाने के प्रस्ताव का आपने पूरजोर शव्दो मे समर्थन किया। आपके विचार से प्रेस जैसे महत्वपूर्ण उद्योग मे स्वातत्र्य से ही माग वढ

सकती है और उसी से अच्छा साहित्य छप सकता है व लोगो की उसके पढने मे रुचि बढ सकती है अत प्रेस एक्ट को ढीला कर प्रेस स्वातत्र्य को बढाना आवश्यक था।

श्री व्यास के एक अन्य प्रस्ताव जिसमे नारू अर्थात "वाला" की रोकथाम हेतु प्रभावी कदम उठाने की माग थी, का समर्थन करते हुए सेठजी ने तालाबो के गदे पानी से भरने बढने व फैलने की स्थितो पर विशद प्रकाश डाला। इन्हे आश्चर्य था कि अकाल के वर्षो मे भयकर गर्मी के उपरात भी इस रोक की भयकरता कम नही पडती।

श्री व्यास के मारवाड की जल व्यवस्था हेतु सर्वेषण प्रस्ताव पर सेठ जी ने गवर्नमेंट आफ इडिया के साल्ट कमीशन द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ गोखले का उल्लेख करते हुए बताया कि समस्त खारे पानी के श्रोतो के साथ मीठे पानी के श्रोत की मारवाड में उपलब्ध है। साभर व पचपद्रा के खारे पानी के क्षेत्रो के पास भी मीठे पानी की करैंटल मिलती है खारा पानी एक निश्चित गहराई तक बहता है उसके पश्चात मीठे पानी की सभावना है जिसका पता बोरिंग द्वारा लगवाया जाना चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि उस जमाने मे मारवाड मे बोरिंग इत्यादि की बात भी कुछ अनोखी बात थी। किसानो को कानून द्वारा कर्जे से राहत दिलाने के प्रश्न पर आपने कहा कि किसान को सरक्षण देना आज कि आवश्यकता है। इस सबध में कानून उपलब्ध है पर यदि शासन इसे उपयोग मे नही लाता तो उसके लिए कर्जा लेने वालो को कोसना उचित प्रतीत नही होता। कानून यह था कि यदि कोई व्यक्ति दी गई राशि का ४ गुना या ८ गुना ले तो अदालत या सबधित अधिकारी बहीयो व हिसाब को पूर्णस्पेज परीक्षा के पश्चात अवैज्ञानिक लेनदेन के दोषी व्यक्तियो को दड दे, पर ऐसा किया नही जाता। मारवाड मे किसान का भूमि पर कोई अधिकार नही है। इसके पास केवल एक झोपडी, पानी पीने हेतु मिट्टी का घडा व कुछ पशु धन है। इसके अलावा इसका अपना कुआ नही। उसे जो कर्ज दिया जाता है उसकी सुरक्षा हेतु कुछ नही है अत सर्वप्रथम यह उधार रकम देने के प्रति सुरक्षा की भावना उत्पन्न करने हेतु किसान को आर्थिक पूजीगत नीव मजबूत करना चाहिये। व्याज की दर की सीमा सरकार द्वारा नियत की जाय। इसके बाद एक कमेटी बनाकर सभी खातो की जाचकर उचित व्याज से अधिक के कर्जो से किसान को मुक्ति दिला देना चाहिये। किसान को शिक्षित करना भी आवश्यक है। वोहरा किसान को प्रथम बार रकम देने के लिए इन्कार कर देता है फिर किसान के निरन्तर दबाव और वोहरे की सभी तरह की शर्तेमान लेने के बाद वास्तविक राशि का तीन चार गुना लिखवा कर ऊचे व्याज पर रकम लेता है। व्याह शादियो पर लडके लडकिया की बिक्री होती हैं और बुरे रिवाजो के कारण किसान को कर्जे मे पिलना पडता है। मारवाड मे सिवाय इन वोहरो के किसानो को उधार देने वाले ऐजेन्सी का भी अभाव है सब कमियो को दूर करना आवश्यक है

मारवाड मे उद्योग की आवश्यकता पर भी बल देते हुए सेठजी ने बढती हुई बेकारी के रोक के रूप मे शीघ्र औद्योगिकरण का प्रस्ताव रखा। उन्होने प्रस्ताव किया कि सरकार को स्वय उद्योग स्थापित करना चाहिए।

रायसाहव तनसुखदास ने प्रस्ताव किया था कि भारतीय वायु शास्त्र को पुनर्जिवित किया जाय। सेठजी ने प्रस्ताव का विरोध करते हुए माग की कि वैज्ञानिक आधार पर मौसम के सर्वेक्षण के हेतु नियमित उद्योगशाला का होना मारवाड जैसे मुल्क के लिये जहा निरन्तर अकाल रहता है आवश्यक है। मामुली दोहो और कहानियो पर विश्वास करके उस पर पैसा खर्च किया जायगा तो फिजुल खर्ची होगी।

सफाई के प्रश्न पर एक अन्य प्रस्ताव के सम्बन्ध मे आपने पानी के विषय मे जनता की मजवूरी को वडे मार्मिक शब्दो मे रखा। इस सम्बन्ध मे उनके मूल विचार यहा रखना होगा "गावो की सफाई के लिये जो राय साहव ने कहा इसके वारे मे यह अर्ज कर देना चाहता हू कि पानी की तकलीफो से जितना मै वाकिफ हु इतना शायद ही कोई होगा। क्योकि मै ऐसे परगने का रहने वाला हु जहा पानी वहुत कम वरसता है और जहा पानी की वडी तगी है। वहा पर लोग वर्षा के दिनो में वरस हुए पानी को मिट्टी के वरतनो और टाको मे इकट्ठा करके आधा साल तक काम मे लाते है। नहाने धोने की तो वहा वात ही क्या है अगर वारह महीने मे एक या दो दफा नहाया भी जाय तो लोग माचे के ऊपर बैठकर नीचे वरतन रख देते है। और उस पानी को साफ करके दूसरे काम मे लिया जाता है। वरतनो मे इकट्टे किये हुये उस एक साल या दो साल के पानी मे कोडे पड जाते है और वह पानी सडजाता है वे वेचारे ग्रामीण क्या करे। वर्षा के छीटो को इकट्ठा करने के सिवाय उनके पास पानी का कोई साधन नही है। अव आप ही सोचिये जहा पानी की इस कद्र कमी है वहा किस प्रकार स्वच्छता रखी जा सकती है। यह हमारा कसुर नही परमात्मा का कसूर है जिसने हमे ऐसे देश में लाकर वसाया और पैदा किया।

अत जहा तक पानी का इन्तजाम नही हो जाय वहा तक स्वच्छता किसी भी तरह नही रखी जा सकती। पानी का इन्तजाम रियासत पर ही निर्भर है। क्यो कि हमारी मारवाड की जनता इतनी गरीब है कि वह पानी के इन्तजाम के लिए कुछ भी खर्च नही कर सकती और अभी जिस हालत मे है उसी हालत मे रहना पसन्द करती है।

रियासत को सारा पैसा देहातो से ही मिलता है। गरीव ग्रामीण लोगो से पैसा लेकर उसे उनकी सुविधा के लिये खर्च न किया जाय और उसे शहरो मे लगा दिया जाय इस से वडा दुर्भाग्य और क्या हो सकता है। हम वडे अभागे है कि परमात्मा ने हमे ऐसे देश मे पैदा किया है।

इस सभा मे सेठजी ने अनेक वार इन्डसट्रीयल वैक कोपरेटिव वैक इत्यादि सस्थाओ का जिक्र किया है तथा किसान की आर्थिक मजवूरी के वारे मे जागीरदार, वोहरे, राज, सेठ साहूकार इत्यादि द्वारा उनके शोषण व निर्दयता पूर्व व्यवहार को अत्यन्त मार्मिक रूप मे रखाहै आपका विचार था कि जमीन का मालिक किसान होना चाहिए तथा किसान जमीन को ज्यादा समय को जोते उतनेही उसके मोलुहनी हक बटने चाहिए। आप तो आज के प्रगतिशील विचारो के उस ओर एक कदम आगे गये

है और कहा है कि ज्यो ज्यो उसका खेती पर कार्यकाल वढता जाय त्यो त्यों उसके लगान मे कमी होनी चाहिए।

गोचर जमीनो के वारे मे भी आपने मवेशी रखने मे किसान के सामने आने वाली समस्याओ का हृदयस्पर्शी वर्णन किया हे जव उसका उत्पादित चारा भी जागीरदारो द्वारा अपने मेहमानो के के मवेशीयो के चराने के लिए ले लिया जाता है। फाटक के नाम पर उससे दड तो वसूल होता ही है पर अनेक वार उसकी मवेशी ही हडप ली जाती है।

कृषि सुधारो के वारे मे आपने वलपूर्वक कहा था कि मारवाड मे सुधार सवसे वडा खेती के लिए पानी उपलव्ध करवाना है जव तक वह नही हो जाता तव तक अन्य सुधार अपना महत्व नही रखते।

इसके अलावा आपके प्रस्ताव सामाजिक सुधारो नगरो मे सडको की व्यवस्था, मादिन जानवरो की विक्री से किसानो का सम्वन्ध वनस्पति घी से होने वाली हानि, उद्योगो के उन्नति के उपाय इत्यादि विपयो पर भी अत्यन्त गहरे व अनुभव भरे रहे है। वास्तव मे इस जन प्रतिनिधि संस्था मे सेठजी ने जनता का वहुमुखी प्रतिनिधित्व किया।

सपादक – डॉ. सोभाग माथुर

गोविन्दलाल श्रीमाली

बाड़मेर का ऐतिहासिक परिदृश्य

वाडमेर का प्राचीन इतिहास विक्रम की दशम शताब्दी से पूर्व प्रतिहारो और भाटियो से सम्बन्धित रहा है। यह प्रदेश किरातकूप, शिवकूप और लाटहृद--इन तीन भूभागो मे विभक्त था। विक्रम की दशम शताब्दी मे 'सिन्धुराज महाराज' मरुमण्डल का शासक था। इस राजा का राज्य आबू से किरातकूप और ओसिया तक विस्तीर्ण था। सिन्धुराज के वाद उत्पलराज, अरण्यराज और कृष्णराज प्रथम (वि० स० १०२४) नामक शासक इस प्रदेश मे हुए।

विक्रम की ग्यारहवी शताब्दी के मध्य मे यहा धरणीवराह या धरणीधर नामक प्रख्यात परमार राजा हुआ। इस राजा का नामोल्लेख आबू (रोहिडा) के एक ताम्र-पत्र, राष्ट्रकूट धवला के वि० स० १०५३ के शिलालेख और किराडू के परमारो की वि० सं० १२१८ की प्रशस्ति मे पाया जाता है। इस राजा के समय के सम्बन्ध मे विद्वानो के अनेक मत हैं। डॉ० ओझा के अनुसार इस धरणीवराह के पिता कृष्णराज (प्रथम) का समय वि० स० १०२४ के आसपास है। धरणीवराह पर चालुक्य मूलराज ने आक्रमण किया था और राष्ट्रकूट मम्मट पुत्र धवला ने इसे शरण दी थी। राष्ट्रकूट धवला के उपर्युक्त शिलालेख मे यह उल्लेख पाया जाता है। मूलराज का समय वि० स० ९९८ से १०५३ तक है। इसने धरणीवराह पर क्यो आक्रमण किया? इसका ठीक-ठीक कारण तो ज्ञात नहीं परन्तु अनुमान है कि वि० स० १०३० और १०५२ के बीच मे चौहान राजा विग्रहराज (द्वितीय) जब मूलराज पर आक्रमण किया, उस समय धरणीवराह ने मूलराज का साथ नही दिया। सम्भवत यही आक्रमण का कारण था इस प्रकार धरणीवराह वि० स० १०३० से वि स १०५२ के बीच मे विद्यमान था।

इस धरणीवराह के ध्रुवभट्ट, महीपाल या (देवराज ?) और ख्यात ग्रन्थो के अनुसार वाग्भट्ट (वाहड) नामक पुत्र थे। 'नैणसी' ने वाहड और चाहड दो नाम दिये हैं परन्तु चिमनाजी ने वाहड के पुत्र का नाम चाहड लिखा है। यही वाहडराव या वाग्भट्ट पुराने वाडमेर का वसाने वाला था, जिसकी स्थिति जूना-किराडू के पहाडो के पास मे थी। इसी पुराने वाडमेर के सम्बन्ध मे 'वाकीदास की ख्यात' के २४९०वें नोट मे लिखा है—"जूना वाडमेर जहा पहाड है, गढ पहाड के आधे भाग पर है। उस पहाड का घेरा बाईस कोस पर रहता है। इस पहाड़ मे गढ, कुंए, तालाव, झरने, बावडी, (आदि) बहुत हैं। यह पहाड 'सझाडा' अर्थात पेड-पौधो से युक्त है। यह पहाड थोर, वेर, गूंदी, गागडी, लोकस, गूगल जैसे पेडो से अत्यन्त सघन है।"

वाकीदास की ख्यात के पृ ५६ पर इसी जूना वाडमेर को मुगल वादशाह औरगजेब के समय दुर्गादास का निवास स्थानवतलाया गया है। इस तरह पुराना वाडमेर जूना' के निकट वसा हुआ था और उसका वसाने वाला या निर्माता वाग्भट्ट या वाहडराव परमार था, जो कि धरणीवराह का पुत्र था। किराडू के वि स १२१८ के शिलालेख मे इस परमार शासक का नाम उपलब्ध नही है। उसमे धरणीवराह के पश्चात देवराजेश्वर का उल्लेख है। देवराजेश्वर धरणीवराह का जालोर-किराडू मे पाटवी पुत्र या कोई छोटा भाई (भीनमाल के ताम्रपत्र के अनुसार) था। अत:

वाग्भट्ट का नामोल्लेख इस शिलालेख में नहीं हुआ। देवराज का एक ताम्रपत्र वि० सं० १०५९ का उपलब्ध है। अतः वाग्भट्ट का समय भी इसी के आसपास होना चाहिए, क्योंकि देवराज और वाग्भट्ट दोनों ही भाई होने से समसामयिक थे।

यह सोचना भ्रामक होगा कि धरणीवराह स्वयं ही वाग्भट्ट था या वाग्भट्ट की ही उपाधि धरणीवराह थी। आबू से किराडू तक के परमारों के किसी शिलालेख या ताम्रपत्र में धरणीवराह के स्थान पर वाग्भट्ट का नाम अंकित नहीं है और न ही कहीं उल्लिखित है कि धरणीवराह किसी की पदवी या उपाधि थी। इसलिये वाग्भट्ट को धरणीवाराह मान कर उनको पुराने बाडमेर का निर्माता कहना न केवल असंगत, अपितु भ्रामक भी होगा। शिलालेखों में धरणीवराह का नाम या तो धरणीवराह ही है और या फिर 'धरणीधर' है। उनका नाम वाग्भट्ट कहीं भी नहीं पाया जाता। वाग्भट्ट या बाहडराव सम्भवतः धरणीवराह का पुत्र था, जिसने ग्यारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में कभी पुराने बाडमेर को बसाया होगा।

इस जूना-बाड़मेर की स्थापना के सम्बन्ध में कुमारपाल सोलंकी के मन्त्री और सेनापति उदयन के पुत्र वाग्भट्ट (वाहडदेव) का नाम भी लिया जा सकता है, जो वि० सं० १२०९ में पाली के सोमनाथ मन्दिर-लेख के अनुसार वहां का सोलंकी शासक था। वस्तुतः मन्त्री उदयन के चार पुत्र थे—वाग्भट्ट (वाहड), आम्रभट्ट (अम्बड), चाहड (चारभट्ट) और सोलाक। इनमें वाग्भट्ट उदयन के बाद में कुमारपाल का मन्त्री था। कुमारपाल का समय वि० सं० ११९९ से १२२९-३० तक माना जाता है। इस समय पाली, जालोर, किराडू, शिव आदि सोलंकी साम्राज्य के अंग थे, अतः 'खवासखां' द्वारा खवासपुर (जोधपुर के समीप) को बसाये जाने के समान उदयन के पुत्र वाग्भट्ट (वाहड) के द्वारा बाडमेर को बसाने की कल्पना स्वाभाविक है। परन्तु इसी समय के कुमारपाल-कालीन परमार सामन्त सोमेश्वर के वि० सं० १२१८ के शिलालेख में किसी वाहडराव या वाहडमेर का नामोल्लेख उपलब्ध नहीं होता। इस समय से वि० सं० १२३५ तक किरातकूप (जूना किराडू) ही राजधानी थी। परमारों (सोढों) की ख्यात और उनके प्रबन्धकाव्य (सोढायण) की परम्पराओं के अनुसार भी वाहडराव परमार के समय किराडू ही राजधानी थी, जिसके पुत्र चाहड से सोढा-सांखला आदि परमारों की लम्बी परम्परा चली।

इस तरह पुराने बाडमेर नगर की स्थापना के सम्बन्ध में कोई अन्तिम निश्चयात्मक तथ्य उपस्थित करना तो आज सम्भव नहीं, क्योंकि न तो परमार वाग्भट्ट का कोई शिलालेख या दान-पत्र उपलब्ध है और न ख्यात-ग्रन्थों में ही कोई स्पष्ट उल्लेख पाया जाता है। कहीं उसके निर्माता का नाम वाहड है, तो कहीं चाहड। इस नगर के नामकरण से ऐसा सोचना स्वाभाविक है कि कोई परमार धरणीवराह का वंशज बाहड (वाग्भट्ट) राव अवश्य हुआ था। वह कब हुआ? इस प्रश्न का उत्तर भी अनुमान पर आधारित है कि सम्भवतः वह वि० सं० १०५९ के आसपास में हो। यह भी ज्ञात नहीं कि परमार देवराजेश्वर से इस वाग्भट्ट का क्या सम्बन्ध था? वह इसका भाई था या भतीजा था? चाहे जो कुछ भी हो परन्तु वि० सं० १३१२ में जूना वाहडमेर बस चुका था – इस बात के निश्चित प्रमाण उपलब्ध है।

इससे पूर्व वि० सं० १२२८ के आस-पास में स्थित किरातकूप और शिवकूप के अन्तिम परमार आसलदेव की सौनगरा 'कीतू' (चौहान कीर्तिपाल) से हुई भारी पराजय के पश्चात इस प्रदेश पर जालोर के चौहानों का दबदबा बढ़ता ही गया। कीर्तिपाल के पश्चात समरसिंह (वि० सं० १२३९) जालोर का राजा हुआ। इसका पुत्र

उदयसिह (वि० स० १२६२ से १३०६) जालोर का वडा प्रतापी राजा हुआ। इसका राज्य मण्डोर मे साचोर और किरातकूप मे गोडवाड तक फैला हुआ था। इसके राज्य मे नाडोल, जालोर, मण्डोर, वाडमेर, सुरचन्दा, राधूडा, खेड और साचोर सम्मिलित थे। सु धामाता मन्दिर से मिले वि० स० १३१९ के चौहान चाचिगदेव के शिला-लेख से पाया जाता है कि उसके पिता उदयमिह का वाडमेर क्षेत्र (वाड़मेर, सुरचन्दा, राधूडा, गुड़ामालानी) और खेड पर आधिपत्य था। इम तरह वि० स० १३१९ मे पूर्व वाडमेर की विद्यमानता थी।

वाडमेर के पुरातन अस्तित्व का एक अन्य प्राचीन प्रमाण जिनेश्वर सूरि के शिष्य चन्द्रतिलक द्वारा विरचित 'अभयकुमार चरित्र' नामक महाकाव्य है। इमकी पुष्पिका से ज्ञात होता है कि इस महाकाव्य की रचना वि० स० १३१२ मे वाडमेर मे आरम्भ की गई और खभात मे इसकी समाप्ति हुई।

इस लेख के उपर्युक्त चाचिगदेव चौहान के पश्चात इस क्षेत्र का शासक मामन्तसिह सोनगरा चौहान था, जिसके समय मे भी वाडमेर वसा हुआ था, क्योकि जूना जैन मन्दिर के वि० स० १३५२ वैशाख सुदि ४ के लेख मे इस मामन्तसिह को 'वाहडमेर का महाराजा लिखा है। इम सामन्तसिह चौहान के पश्चात इसका पुत्र कान्हडदेव सोनगरा इस प्रदेश का अधिपति हुआ। चौहटन के कपालेश्वर मन्दिर के वि० स० १३६५ (ई० स० १३०८) के एक शिलालेख मे इसका नामोल्लेख पाया जाता है।

'कान्हडदे प्रवन्ध' के लेखक कवि पद्मनाभ के अनुसार वाडमेर मे अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओ का वडा पडाव था। इम सेना ने डा० मथुरालालजी के शब्दो मे वाडमेर को लूटा, (घोरीमन्ना के मार्ग से घुसकर) साचोर के पास एक जैन मन्दिर को तोडा और फिर भीनमाल (श्रीमाल नगर) को जलाया। 'कान्हडदे प्रवन्ध' मे वाडमेर के उल्लेख से वि० स० १३६८ मे वाडमेर की स्थिति का होना पाया जाता है। इसी सवत् मे जालोर के घेरे में अलाउ-द्दीन की फौज से सामना करते हुए कान्हडदेव मारा गया और उसका एक अन्य भाई सालमसिह भी वीरगति को प्राप्त हुआ। इस सालमसिह के एक पुत्र हापा ने अपने मामा को मार कर सुरचन्दा का प्रदेश अपने अधिकार कर लिया और चौहटन पर्वत पर एक दुर्ग वनवाया। ऐसा लगता है कि 'हापा' का मामा कोई परमार था, जो चौहानो का सामन्त था, जिसे 'हापा' ने मारकर चौहटन पर भी अधिकार कर लिया। इस समय पुराने वाडमेर पर भी चौहानो का ही अधिकार था।

वाडमेर का एक और उल्लेख श्री जिनकुशल सूरि ने 'चैत्य वन्दन कुलक' पर विनोद नामक टीका की रचना करते हुये किया है। इस टीका की पुष्पिका वि स १३८३ की है।

इस तरह वि स १३१२ से वि. स. १३५९ तक के वाडमेर के उल्लेखो से पाया जाता है कि इस समयवस्ती के रूप मे वाडमेर का अस्तित्व था। यह प्राचीन नगर वि स १३१२ से पूर्व मे वस चुका था। यहा इस सवध मे इससे पूर्व की स्थिति के वारे मे दो उल्लेख और श्री अगरचदजी नाहटाजी के सोजन्य से प्रकाश मे आये हैं।[3]

विक्रम संवत् १३३० और १३४८ के वीच मे राव सिहा के पुत्र राव आस्थान ने खेडगढ के गोहिल राज्य को समाप्त कर उस पर अधिकार कर लिया। वि स. १३६६ मे खेड के राठौड राजा आस्थान सुत् धुहड का देहात हो गया और उसका पुत्र रायपाल खेड का शासक वना। इसने वाडमेर के कुछ भाग पर कब्जा कर लिया, परन्तु वह स्थाई न हो सका। श्री रामकरण आसोपा और प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अनुसार राव रायपाल ने वाडमेर के

पवाँरो को परास्त करके ५६० गावो के साथ वाडमेर का प्रदेश ले लिया किन्तु डॉ ओझा के अनुसार वि स १३६६ मे यहा पवार शासक न थे, वलिक चौहान ही शासक थे, जैसा कि जूना के वि स. १३५२ और चौहटन के वि स १३६५ के शिलालेखो से प्रमाणित है। इस तरह राठौडो के उक्त इतिहास-लेखको का केवल ख्यातो पर आधारित उपर्युक्त कथन सत्य सिद्ध नही होता। निश्चित रूप से चौहानो से ही यह प्रदेश राठौडो द्वारा अस्थाई रूप से लिया गया था। इस समय मे चोहानो को जालोर मे अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओ के साथ उलझते हुए देख कर ही राठोडो ने यह अवसर ढूढा और जूना वाडमेर पर अस्थाई अधिकार किया, इस सम्बन्ध मे परमारो से राव रायपाल द्वारा वाडमेर-प्रदेश प्राप्त करने वाला कथन ऐतिहासिक तथ्य नही हो सकता। खेद है कि डॉ ओझा के परवर्ती श्री रेऊ ने भी इस पर पुर्नविचार नही किया और ख्यातो के कथन पर ही विश्वास कर लिया।

वि स १४५७ के लगभग राव मल्लीनाथ (वि स १४३१–१४५६) सलखावत का पुत्र राव जगमाल महेवा का स्वामी हुआ। इसकी एक रानी जूना के माझा(मू धा–मुग्धपाल)की पुत्री थी। वह द्वितीय विवाह के कारण अपने पति से रूठ कर जूना वाडमेर– अपने पीहर आ गई और रानी गाव मे रहने लगी। इस कारण से जूना वाडमेर के चौहानो का महेवा के राठोडो से वैर वध गया। जगमाल के पुत्र मडलीक ने अपने चौहान मामा सूजा को भोजन करते समय मार डाला और जूना वाडमेर और कोटडा पर अधिकार कर लिया। राव जगमाल वडा प्रसन्न हुआ और इसने अपने पुत्र मडलीक को महेवा मे रख कर भारमल ओर रणमल को क्रमश वाडमेर और कोटडा दे दिया।

'नेणसी की ख्यात' के उपर्युक्त कथन के विपरीत 'वाकीदास की ख्यात' का कथन है कि 'जगमाल मालावत का वेटा लाँका था जिसके उत्तराधिकारी वाडमेर के रावत हैं। सभवत प्रारम्भ मे वाडमेर को राव जगमाल ने भारमल को दिया हो और वाद मे किसी कारणवश यह प्रदेश लूकाजी को दे दिया गया हो। इस समय वाहडमेर के रावत अपने को लूका का वशज ही वतलाते हैं जिससे इस क्षेत्र मे लूका ही जगमाल का स्थायी उत्तराधिकारी वना–ऐसा स्वय सिद्ध है। इस तरह राव जगमाल के समय मे ही वाडमेर पर राठौडो का पूर्ण-स्थायी प्रभुत्व स्थापित हो सका।

इसी प्रकार 'दयालदास की ख्यात', 'वीरमायण' और 'जयमल वश प्रकाश' के अनुसार जगमाल के पिता राव मल्लीनाथ ने सिवाना को मुसलमानो से जीत कर अपने भाई जैतमाल सलखावत को जागीर के रूप मे दे दिया और वाद मे जैतमाल के पुत्रो– खीमकरण, हापा आदि का वहा अधिकार चलता रहा। इसी सिवाना से आगे वढकर जैतमाल ने वि स १४३२ और १४३५ के वीच मे राड़धरा (लाटहृद–गुडा मालानी) के परमार– अक्खा और नन्दा को और जसौल के रावल स्व० श्री जोरावरसिहजी के अनुसार खीमकरण सोढे (?) को मार करके १४८ गावो सहित राडधडे पर अधिकार कर लिया।

यहा यह ध्यान रहे कि इस राडधडे पर राठौडो के वहुत पहले से ही परमारो का आधिपत्य चला आ रहा था। वि स १२०९ के किराडू शिलालेख मे यह लाटहृद (राधूडा) वाडमेर के परमारो और चौहानो के तीन भू-भागो मे से एक भू-भाग माना गया है। इस तरह सिवाना के पश्चात् राडधरा (गुडा नगर) पर राठौडो का आधिपत्य स्थापित हो गया।

राव मल्लीनाथ के समय और उसके पूर्व मे खेड और महेवा इस प्रदेश की राजधानियाँ थी। वैदा (वीदा) के समय से पूर्व भिरडकोट भी इस क्षेत्र की राजधानी रही। राव जगमाल के पश्चात् महेवा और वीरमपुरा से राजधानी जसौल हो गई। जसौल और सिणदरी इस राठौड राज्य के केन्द्रीय स्थल हैं। मालाणी की मुख्य राठौड शाखा यहीं पर शासन करती रही है रावल वीरमदेव (प्रथम) वि स १५१२ के लगभग या हापा व सिहोत के समम मे जसौल सभवत इस क्षेत्र की राजधानी बनी होगी।

वि म. १६०८ (ई स १५५१) मे बाडमेर और कोटडा पर जोधपुर के राव मालदेव गागावत ने आक्रमण करके अधिकार कर लिया। इस समय एक शिलालेख के अनुसार यहा का शासक रावत उदयसिंह था, परन्तु ख्यातो के अनुसार रावत भीम नामक व्यक्ति ही यहा का सरदार था। वह जैसलमेर भाग गया। बाद मे भाटियो के सैन्य बल के साथ वह पुन आया और बाडमेर के पास युद्ध हुआ, जिसमे उसकी हार हुई और उसे मालदेव की अधीनता माननी पडी। यह भीम नामक शासक और कोई नही, रावत भीमाजी रतनावत था जो बाडमेर के रावतो के भाट के अनुसार जगमाल से सातवी पीढी मे हुआ। इन्ही भीमाजी रतनावत ने बापडाऊ के ठिकाने पर नया बाडमेर बसाया। जिसे आज हम बाडमेर कहते हैं उसको बसाने वाले यही राव भीमाजी रतनावत हैं, जो कोटडे के बाघा-राणा के समसामयिक थे। इनके सम्बन्ध मे अलग से प्रकाश डाला जायेगा। इस नये बाडमेर के सम्बन्ध मे 'बाकीदास की ख्यात' मे लिखा है —

'पहले (यहा) बापडाऊ नामक गाव था। उस स्थान पर नया बाडमेर बसा। दो कुए तीस 'पुरस' पानी खूब और मीठा। शहर के पीछे की ओर पहाड है। पहाड वृक्षहीन है।'

इस नगर को भीमाजी रतनावत ने वि स. १६०८ के लगभग कभी बसाया होगा। इन बाडमेरे रावतो के भाटो को वि स १६४२ मे नये बाडमेर मे पहली बार दक्षिणा मिली थी। इन्ही भीमाजी के समय मे ही बाडमेर प्रथम बार जोधपुर राज्य का अधीनस्थ बनाया गया।

सदर्भ १ वि म, ८१४ के आसपास यहा पर देवराज भाटी का शिवकूप देरासर (चौहटन) और किरातकूप पर अस्थायी रूप से अधिकार होना पाया जाता है।

२ (अ) खतरगच्छ वृहद गुर्वावली मे उल्लेख है कि वि स १३०९ मे वाग्भटमेरू के आदिनाथ मदिर पर स्वर्ण दण्ड और स्वर्ण कलश सहजा पुत्र अत्यड द्वारा चडाये गये थे।

(ब) जिनपाल उपाध्याय के अनुसार विक्रम सवत १२८३ माघ कृष्णा २ को बाडमेर मे ऋषभदेव भवन का ध्वजारोपण हुआ था।

(स) १३९१ विक्रमी मे जिनकुशल सूरि का वाग्भटमेरु मे चतुर्मास करने तथा विहार आदि का उल्लेख खरतरगच्छ पट्टावली मे मिलता है।

३ यह ध्वजारोहण खतरगच्छ के आचार्य श्री जिनेश्वरसूरिजी द्वारा हुआ था सवत "१२८३ माघ वदि २ वाहडमेरो श्री ऋषभदेव भवने ध्वजारोपण।"
अत बाडमेर की स्थापना वि स १२८३ से पूर्व हो चुकी थी और ऋषभदेव मदिर भी उससे पूर्व बन चुका था।

मुहता नैणसी लिखित

मारवाड़ रा परगनां री विगत से

बात परगने सिवाणे री

परगनो सीवाणो जोधपुर थी कोस ३० दपणाद कूण था जीवणें री जालोर था कोस १५, महेवा थी कोस १२ छै। आद पवारां री करायो गढ छै। धरणीवाराह पंवार वाहडमेर धणी हुवो। तिण आपरा भाई राजा भोज नु जालोर भाई वाटे दीयौ थौ। तिण री बेटौ पवार वीर नाराइण। तिण इण भापरी ऊपर गढ करायौ, समत १०७७ पोस सुद ६।

१. सीवाणा गढ री हकीकत–छोटी-सी भापरी ऊपर गढ छै। गढ रै बीच तालाव भाडेलाव परौ वड़ौ तलाव छै। पाणी सदा अटूट छै। तलाव वीच कीरत थंभ ईंट री छै। पीरसेद मारु तलाव मांहे गोर चाकले भुरज पीर जमसेद छै। तिण तलाव री पाल ऊपर तुरका रा पीरा री गोरां छै। गढ महि इमारत इसडी काई न छै। धर घर नवचौकिया रो राव चंद्रसेण री करायौ पाकौ-सौ।

२. को दिन पंवारा रै गढ रह्यो। पछै पवारा कना चहुवाण कीतु आवू जालोर लीयौ और ही धणी धरती चहुवाणे ली। रावल कानडदे सावतसी रौ वडौ रजपूत हुवौ। इण आ ठौड आपरा भतीज सातल-सोम नु दी। पछै सातल-सोम ऊपर पातसाह अलावदी री फौज आई, कोई कहे छै पातसाह आप आयौ। कोस १ था सीवाणा री भाषर दीठौ सु अलगा थका भापरी निपट नानी दीठी। तरै पातसाह फुरमायौ—आ तौ भाषरी निपट सहल है। आगे नाव कु भटौ हुतौ, पातसाह आ तौ ठौड जेकण समान जीत री छै, तठा सु नाव सीवाणौ नीसरियो छै। पछै पातसाह कह्यौ—हूं आज गढ फत करनै धान-पाणी पाईस। पीस सौगद वाही। आण डेरौ कीयौ। गढ नुं ढोवौ हुवौ। गढ हाथ आवण री नही तरै पातसाह मरण लागो। तरै आटा री गढ करनै मेलण लागो। कह्यौ पछै अेक भाई गढ सुं उत्तर नै सातल सोम माहलो आटा रा गढ मे काम आयौ। अेक भाई गढ री कर मुरग तीडौ छाडावत पिण सातल सोम साथै काम आयौ छै। सातल सोम री प्रोल १ छोटी-सी सिवाणे छै। तठा थी मुगले सीवांणौ लीयौ।

३. तठा पछै रावल मालौ सलषावत तपीयौ। मालौ मुगला कना सीवाणी लेनै राव जैतमाल सलपावत नुं दीयौ, सु इतरी पीढी ९ जैतमाल सीवाणौ रह्यौ—

१. रा० जैतमल सलषावत
२ रावत हापो जैतमालोत
३ रावत करन हापावत
४ रावत तीहणौ करनोत
५ रावत वीजौ तीहणोत

६. राणौ देवीदास वीजावत

७, राणौ जोगौ देवीदास रौ

८ राणौ करमसी जोगा रौ

९ राणौ डूगरसी करमसी रौ

४ तठा पछै अेक वार राव जोधै केरात्र सातल तोत करने देवीदास वीजावत नु जोधपुर तेडायो नै सीवल आपमल भाद्राजूण रा धणी नु सीवाणै ऊपर अजाणजकरौ मेलीयौ सु वीजौ माडण राज धरती नै सिरदार मार नै गढ सीवाणौ लीयौ। राव जोधा री आण फेर नै जोधपुर खवर मेली। मु ओठी जोधपुर नजीक आयौ। तिण हीज वेला राणौ देवीदास वीजावत इण तरफ मैदान नु आवतौ थौ। मु ओठो २ दीठा—सीवाणा रै मारग उडायाँ आवै। हाथ मे पाणी री छागलौ १ छै। देवीदास रौ मन चमकीयौ--ओठी सीवाँणा री तरफ सु उतामला आवै सो भला नही हाथ मे पाणी री छागली कासु जाणी जे ? देवीदास उण रै मारग माहि आई ऊभौ रहौ। उण नु पूछियौ—कुण छौ, कठा थी आया ? एक दोय वेला पूछियौ, तौ पिण उणी नही कहौ, तरै एण घणौ हठ कीयौ। तरे उणा कहौ महै सीवाणा थी आया, सीधल आपमल रा चाकर छा, जोधपुर जावा छा। आपमल छागल पाणी री मेल्ही थी सु लीये जावा छा राणौ देवीदास राहावेधी हुतौ, तद ही समझ गयौ—वींजौ मारीयौ राव रै साथ सीवाणौ लीयौ हिमे राव मोनु मारसी। सु देवीदास आप तौ उठा थी पालो हीज नीसरियौ, चाकर एक साथै हुतौ तिण नु कहौ—तू डेरै जाय राव रा आदमी आपणै डेरै तेडण नु आवसी तिण आगे कोई भेद मत भागौ नै कहीजौ। देवीदास सीकार गयौ छै यो कर नै आघौ काढजौ। रात पडै तरै येही नीसर उरा आवजौ। ओठी उठे पहोता राव मागल गयौ। वात किण ही नु जणाई नही। राणै देवीदास नु ऊपरा ऊपरि तेडा मेल्हीया, सीतात्र ले आवौ। आगै आदमी आय देपै तौ देवीदास डेरै नहीं। तरै देवीदास रा चाकरा नु पूछियौ—देवीदास कठै ? तरै उणै कहौ—देवीदास सीकार रमण घाघाणी री तरफ गयौ छै। तरै वासे आदमी घाघाणी दिसा गया। देवीदास अठा थी झवर गयौ। उठै सेधौ पटेल थो। तिण कन्हे घोडी १ माग नै घुघरट गयौ। उठ आपरा री पवर पूछ नै जालोर रौ गाव जाय साम पाधौ।

५ वासा राव थोणै सीवाणा रजपूत कोई और साथ भैजोयौ तिके आण अमल कीयौ। गढ माहि डेरो कीयौ। पछे राव सीवाणो आपरा वेटा सिवराज जोधावत नु दीयौ छै सू सिवराज आपरो धणी वसी ले सीवाणा नु आये छै। तद राणो देवीदास वीजावत जाय साचोर रह्यौ थी तरै बुधगेट रै भाईल दीठौ राव जोधा रौ वेटो सीवाणा आय वेठो तरै माहरो अठा मु वास चूको। तरै भाईले राणौ देवीदास नु पवर मेल्ही राव सिव-राज गढ माहि पैठौ तो पछै नीसरणौ न छै। तिण वासतै ये कोई पहली विचार करौ। तद राणौ देवीदास साथ कर नै सीवाणा ऊपर रात रौ आयौ। कहौ—सिवराजजी आयौ, पौल पोलौ, शु आगे सिवराज री अवाज हुती, राव रै साथ पौल पोली। देवीदास कोट महि पैसनेराव रै साथ सो कूट मारीयौ। राणा देवीदास री दुहाई फिरी। राव जोधा नु सीवाणो लीया री पवर पहोती, तरै सिवराज नु दूनाडौ दीयौ छै। सिवराज दूनाडे हीज रहो। राँणो देवीदास वाप रै वैर भाद्राजण ऊपर गयौ। सीधल आपमल धणौ साथ सु मारीयौ।

पछै कितराहेक दिनां राणो देवीदास मुवौ। पाट राणो जोगो वैठो, मु ही भलो ठाकुर हुवौ। सीवाणो भोगवीयो। तठा पछै जोगो मुवौ। पाट राणो करमसी जोगा रो वैठो। तिण सीवाणो भोगवीयो करमसी मुवौ। पाट राणौ डूगरसी करमसी रौ वैठो, सीवाणी रौ धणी छै।

७ पछै जोधपुर राव मालदे धणी हुवौ। सिवाणो राणो डुगरसी हुवौ। पछै राव मालदे सिवाणा ऊपर आयौ। राणा डूगरसी गढ झालीओ मास गढ घेरियौ। पछै डूगरसी री मत छूटी। गढ ऊतर दीयो। रा मदौ मेरावत मेरौ देवीदास रौ तिण रे घरे भारमल री वहन आमो थी। उण मदा नु कह्यो—तू गढ मने दै। पछै मदौ काम आयौ। अमो सती हुई। सवत १५९५ आपाढ वद ८ राव मालदे सीवाणो गढ लीयो। राव जोधीया तठा ताई गढ हौ। पछै राव मालदे मूओ, तरे सीवाणौ एक वार राजपूत रा रायमल मालदेवोत नु दीयो। पछै राव चदरसेण रायमल कन्हा गढ उ ो लीयो। रायमल मेवाड़ गयौ। पछै कितराहिक दिन राव चदरसेण रै सीवाणो रहौ।

८ पछै पातसाही फौज सीवाणा ऊपर सेहवाजषा कन्हो राजा रायसिंघ मुन्टीयौ - आण घेरीयो। राव साथ माहे थौ। गढ री कूची मु० पता उरजनोत रै हुती। मास " गढ वीग्रहयो। पछै मु० पता रै गोली रात री लागी। पछै राव रौ साथ ऊदावत जैमल नैतसीहोत रा० पतौ नगावत रा० वेरमल प्रीथी-राजोत समत १६३२ इण मुगल सु बात करनै गढ उतर नै दीयो। अै धरमदुआर नीसरोया। को दिन मुगला रौ थाणौ रहौ। पछै धरती माहे घणौ षाज पीज का नही। पछै मुगल धरती ऊभी मेल परा गया। पछै समत १६३५ राव चंद्रसेण डूंगरपुर था पाछौ आयौ तरै वले राव चद्रसेण गढ पाछौ हाथ कीयौ। पछै समत १६३७ रा माहा सुदि ७ राव चद्रसेण काल कीयौ। तद रा० रायमल ही वेगौ मुओ।

९ कीलाणदास परनापसी दरगा गया। पछै पातसाह इणा दुना भाया नु सीवाणौ दीयौ। पछै मोटे राजा नु संमत १६४० श्री पातसाहिजी जोधपुर दीयौ। पछै मोटै राजा साहिजादौ सेपु नु परणायौ। तठै रा० कीलाण-दास सु षानाजगी हुई। पातसाहि रिसाणौ सीवाणी मोटा राजा नु दीयौ। पहली एक वार मोटे राजा फौज कवर भोपत रावल मेघराज रा० किसोरदास रामौत रा० आसकरण देवीदासोत और ही साथ मेलीयौ। पछै राठौर कीलाण दास रायमलोत रातीवाहौ माणस ५० तथा ६० सु दीयौ काम कीलाणदास जीतौ। मोटै राजा रै साथ रा पग छूटा। तठै रा० राणौ मालावत रा० कलौ जैमावत काम आया। फोज भागी। पछै मोटौ राजा आप घणौ साथ वडी फौज ले आया। गढ घेरीयौ। पछै पाल्हीया रै भेद जम वुरज रौ रावरो साथ चढीयौ। राणै कीलाणदास जुहार वाल नै सामौ आयौ। वाज मुओ। समत १६४६ मिगसर वद ७ गढ लीयौ। राणा कीलाणदास साथै इतरौ साथ काम आयौ—

१ रा० गोपालदास भीवोत।

१ गोधौ भादौ हेमावत।

१ भाटी भाषरसी कूंपावत।

१ सेयटौ।

१ भायेल लालौ रातीवाहे ।

१ चा० गोपाल झाझणोत ।

१ भाटी पचाईण वीसावत ।

१ दहीयौ ।

१ धायेभाई कडवो ।

१ भायेल गोईद वसी माहे ।

१० मोटे राजा रौ साथ रतीवाही राणै कीलाणदास दीयौ तरै काम आया—

१ रा० राणौ मालावत ।

१ रा० कलौ वैरसलोत ।

१ पीपाडो कान्हा दुजणसलोत कवर भोपत रौ चाकर ।

१ रा० ईसरदास नैतसीहोत । रा० राणा मलावत रौ चाकर ।

१ रा० कलौ जैसावत ।

१ दी० परवतसिंघ मेहाजलोत, तन पसेरीयौ पटै ।

१ रा० जैसौ जगमालोत ।

१ वीदावत जैतमी रौ चाकर ।

—चंपालाल सालेचा

खेड़ के इतिहास के दो उज्ज्वल पृष्ठ

शाहजादी गीन्दोली व जगमाल

विक्रम की १५वीं शताब्दी वह काल है जब राठौडो का बाडमेर जिले मे खेड व मेहवा को केन्द्र बनाकर एक प्रभावशाली राज्य चल रहा था। राव मलिनाथ खेड पर राज्य कर रहे थे व महवा, सिठली इत्यादि उनके सैनिक और नागरिक केन्द्रो के रूप मे काम आते थे। और इस प्रकार राज्य सचालन हेतु खेड, तिलवाडा, जसोल व सिणली सभी मिलकर नगरीय व उपनगरीय अथवा सैनिक क्षेत्र बनता था।

एक बार एक चारण राव मलिनाथजी के पास आया। चारण के पास एक बहुत तेज चलने वाली घोडी थी। चारण ने अपनी घोडी की तारीफ करते हुए, राव मलिनाथजी से उनकी किसी भी घोडी से दौड करवाने की चुनौति दी। पहले कुछ समय तो राव मलिनाथजी ने टाल दिया पर जब चारण ने जिद्द पकडली तो उन्होंने अपने एक सरदार को कहा कि वह बारहटजी के साथ अपनी कावर घोडी को घुमा लावे। बारहटजी व सरदार अपनी अपनी घोडी पर रवाना हुए। सरदार लगातार चलता ही रहा और कावर न तो बारहट की घोडी को आगे जाने देती न ही पीछे छोडती, इस प्रकार यह लोग अहमदाबाद पहुँचे।

अहमदाबाद मे उस दिन नगर सेठ विदेश यात्रा से आया था और उसकी अगवानी करने के लिए व साभेलो करने के लिए एक बडा जुलूस निकाला जा रहा था। जिसमे नवाब का फौजी लवाजमा भी साथ था। यह दोनो इस जुलूस को देखकर उत्सुकता से रुक गये। अचानक सरदार बोला 'बारठजी दौड तो हुमे वेला" और पूर्व इसके कि बारहटजी बात को समझें, सरदार ने एक पालकी मे आसीन सेठ के १०वर्षीय पुत्र को उठाकर अपनी घोडी पर ले लिया और तत्काल लगाम मोड कर भाग चला। सकट और प्राणो का भय देख कर तत्काल घोडी पर सवार हो बारहटजी भी उसके साथ ही भाग चला और उनके पीछे नवाब की सेना के अनेको घुडसवार लग गये। पर यह दोनो घोडिया अपनी तेज गति के कारण नवाब के घुड-सवारो की पहुच के बाहर ही रहीं। और तभी अचानक बारहट चिल्लाया 'ठाकरा मैं तो मरा।' सरदार ने देखा कि बारहठ की घोडी कदम कदम पीछे रह रही थी, घोडी थक चुकी थी। ठाकुर ने तत्काल तलवार निकाली और बारहट की घोडी को काट डाला और बारहट को अपनी घोडी पर ले लिया।

ज्यो ही घोडी पर सवार, तीन हुए घोडी चौपगी हो हवा मे बातें करने लगी। राव मलिनाथजी के राज्य की सीमा शुरू होते ही, पीछा करने वाले रुक गये व ठाकुर ने खेड पहुँचकर राव मलिनाथजी के सम्मुख बच्चे को प्रस्तुत किया। जब राव मलिनाथजी ने पूछा कि बच्चो को क्यो लाये तो ठाकुर ने सारा असलियत का किस्सा सुना दिया।

घोडी के पैरो-पैरो, बच्चे के कुछ अभिभावक आकर बच्चे को ले गये व चिंतित बारहठ ने एक दिन मौका देख कर राव मलिनाथजी से आखिर कावर घोडी बक्शीस मे मागली। राव मलिनाथजी ने

उसको अपने तीन सौ घोड़ों मे से कोई एक छाट कर लेने को कहा पर वारहट अपनी हठ पर अडा रहा और आखिर कावर घोडी को लेकर रवाना हो गया। वारहठ पूर्व अनुसार विभिन्न राजाओ के पास घोडी लेकर जाता और घोडी की दौड करवाने का आग्रह करता। उनकी शर्त थी कि अगर उसकी घोडी जीत जाय तो वह १०,००० रु० लेगा और हार जाय तो यह घोडी दे देगा। हर जगह यह घोडी जीत जाती। इसप्रकार दौडकरवाते हुए वह गुजरात मे माडा पहुँचा। माडा मे उस समय वादशाह मोहम्मद एवक राज्य करते थे और वहा घोडी के जीत जाने पर वादशाह ने घोडी को खरीदना चाहा।

चारण घोडी वेचने को तैयार नहीथा और इसलिए जब जवरदस्ती की नौवत आयी तो चारण कह वैठा कि मुझ गरीव से ज्यादती क्यो करते हो। यदि हिम्मत हो तो मलिनाथजी से लो। उनके पास ऐसे तीन सौ घोडे हैं। वादशाह ने तत्काल एक सिपहसालार के साथ तीन सौ घुडसवारो को मलिनाथजी के पास रवाना किया और उनसे उनके तीन सौ घोडो को खरीदने की इच्छा प्रगट की। राव मलिनाथजी घोडे वेचना नही चाहता थे। पर उन्होने उन अतिथियो को सिणली के तालाव पर ठहरवा दिया।

इन घुडसवारो को सिणली रहते हुए कुछ मास वीत गये पर राजा की ओर से कोई सकेत नही था और तभी श्रावण की तीज आई। सिणली का तालाव अपनी विशालता के लिए आज भी मशहूर है। इस तालावपर उस समय अनेक मदिर वने हुए थे। और सुंदर पेडो की कतारो मे तालाव सुशोभित हो रहा था। गहने-गाठो से लदी रमणिया तालाव पर झूले झूल रही थीं और उसी समय इन मेहमानो के दिमाग मे आया कि यह राजा घोडे तो देने वाला नही है। चलो इन युवतियो को ही ले चले। और वे तीन सौ सवार, तीन सौ युवतियो को उठा कर भाग गये। इनमे अनेक राजघराने की युवतियाँ भी थी।

चूंकि यह दिन अस्त होने के पश्चात का किस्सा है और सिणली से खेड चार कोस दूर पडता है। अत जव तक राव मलिनाथजी को खवर पहुची, यह लोग काफी दूर निकल चुके थे। आपस मे विचार करने के पश्चात राव मलिनाथजी के वडे पुत्र अपने तीन सौ घुडसवारो के साथ रवाना हुए व सीधे माडा पहुचे। वहाँ पहुच कर उन्होंने वताया कि उनका अपने पिता से झगडा हो गया है और वे वादशाह की सेवा मे रहना चाहते हैं। वादशाह ने उन्हे ससम्मान अपने यहा रख लिया।

कुछ दिन वाद वे सवार भी माडा पहुँचे और वादशाह के सम्मुख इन युवतियो को प्रस्तुत किया। जगमालजी ने इन स्त्रियो को किसी प्रकार यह समाचार भिजवा दिए थे कि वो पहुच गया है, इसलिए चिंता न करें व अपने भावी जीवन के लिए वादशाह से छ मास का समय मागें। और इसी कारण जगमालजी के प्रभाव से या उनकी वात के औचित्य से वादशाह ने उनकी वात स्वीकार कर उन्हे एक अलग महल में रखवा दिया। जगमालजी अपने वीरोचित व्यवहार से वादशाह के यहा अपनी प्रतिष्ठा वढाते गए। और जव ताजिए का समय आया तो जगमाल ने उस वर्ष ताजिए की व्यवस्था अपने हाथ मे ली। जगमालजी ने उन युवतियों को भी कहलवाया कि वे वादशाह से ताजिए के जलसे मे शामिल होने की अनुमति प्राप्त करें।

ज्यो ही जुलूस शहर के वाहर पहुचातो सभी घुडसवारो ने एक-एक स्त्री को अपनेअपने घोडोपर लेलिया और स्वय जगमालजी ने शाहजादी को जो पालकी मे आ रही थी, अपने घोडे पर ले लिया और झपाटे के साथ वे सभी

खेड की ओर वट गए। इन शाहजादी का सम्बन्ध मालवा के नवाब के शाहजादे से किया हुआ था। अत मालवा व गुजरात की सम्मिलित बादशाही फौजें खेड पर हमला करने के लिए कूच कर आई। खेड को घेर लिया गया और मलिनाथजी व जगमालजी अपने सुरक्षित किले मे बैठ गए। धीरे-धीरे किले की रसद खत्म होने लगी और राठौडो ने केसरिया करने के उद्देश्य से किले के दरवाजे खोल दिए। पहली तलवार चलाते हुए जगमालजी ने नारा लगाया 'आ आई जगमाल मालावत रे हाथ री' और इसी नारे के साथ सभी राजपूतो ने युद्ध करना प्रारम्भ कर दिया। किवदती है कि जगमालजी मालावत के भूतावली वश मे थे और इसलिए उनके वार के साथ ही समस्त भूतावली युद्ध मे जुट गई लेकिन वास्तविकता यह हुई कि सारे राजपूत एक भयकर युद्ध मे जुट गए। और इस कारण बादशाही फौज के पैर उखड गए। भागती फौज का वर्णन करते हुए एक कवि कहता है कि—

पग पग नेजा नाखिया, पग पग नाकी ढाल
बीबी पूछे शाह ने, जग कीता जगमाल।

अर्थात भागती हुई फौज ने कदम कदम पर भाले, तलवारें व ढालें फेंक दी थीं और इस भागती फौज को एकत्र करने के लिए, अपने शस्त्रागार से शस्त्र देती हुई बादशाह की बेगम, हैरान हो गई थी और खास बात यह थी कि जो आता था वह यही कहता था कि जग मे कितने जगमालजी हैं और हरएक भागने वाला सैनिक यही कहता है कि जगमाल मालावत मार रहा है।

इस युद्ध मे मालवा का शाहजादा गुडले खा, जिससे माडा की शाहजादी गिन्दोली का सम्बन्ध हुआ था अत्यन्त वीरता से लडा। उसका सारा शरीर घावो से छलनी हो गया था और इस अवस्था मे राजपूतो ने उसे जिंदा पकड लिया। राजपूतो ने गुडले खा को कहा कि खान तुम बडी बहादुरी से लडे हो घाव तो वैरी का भी सराहना चाहिए और तुम मरने वाले हो अत तुम्हारी कोई अन्तिम इच्छा हो तो बताओ। मरणासन्न अवस्था मे गुडले खा ने कहा कि मैं बचूगा तो नही पर आप लोगो से एक निवेदन है कि मेरे पीछे कुछ ऐसा करना जिससे मेरा नाम बना रहे। यह कहकर उसने अपने प्राण त्याग दिए।

इधर एक दूसरी समस्या खडी हुई। शाहजादी गीन्दोली ने कहा कि मुझे या तो कोई वीर वरण करे वरना मैं कटार मारकर आत्म हत्या कर लूगी। मुस्लिम लडकी के साथ शादी करने हेतु कोई तैयार नही था और इधर अपहरत तिजणियो का कहना था कि इस कन्या के साथ शादी न करना बडा पाप होगा। राजपूतो की इज्जत क्या तब रह जाती, जब हम तीन सौ स्त्रियो को मुसलमान रख लेते या अब है जब वीर वृत से प्राप्त की गयी कन्या का वरण करना है। सवास और राजदरबार के बीच एक बहुत बडा विवाद छिड गया चूकि यदि राजपूत वरण न करे तो गीन्दोली गुडलेखा के साथ दफन होना चाहती थी इसलिए इन राजमहलों की युवतियो ने एक बडे बर्तन मे गुडलेखा की लाश को तेल मे भरकर रख दिया और घर-घर जाकर जन जागरण करने लगीं। होली के के पश्चात् मारवाड़ मे गुडले का घुमाना, जिसमे एक घडे मे दीपक रख कर छेद कर दिये जाते हैं और स्त्रिया घर घर घूमती हैं, इसी की याददाश्त है। घडे के छेद गुडलेखा के घाव दिखाते हैं और

दीपक गुडलेखा की वीरता का द्योतक है और उस समय जो गीत गाये जाते हैं वो इस सम्पूर्ण घटना की याद को ताजा कर देते है ।

घुडलो घूमै ला जो घूमैला — घुडलेखा के रण कौशल का प्रतीक है।

म्हारै घुडले सीचों तेल जी ।

गुडलेखा की लाश को सडने मे बचाने के लिए स्त्रियाँ घर-घर जाकर तेल इकट्ठा करने के बहाने जन जागरण करती थी जो गीत की भाषा मे आज भी दोहराया जाता है । इस त्यौहार के द्वारा स्त्रियो ने गुडलेखा की अन्तिम इच्छा पूरी की व उसका नाम अमर हो गया । स्त्रियो ने अपने आन्दोलन को और भी विराट रूप दिया । तालाव पर पीतल के घडे लेकर पानी लेने गई व गीन्दोली से कहा गया कि वह उन्हे घडा सिर पर रखवावे । चूकि उस समय किसी मुसलमान का हाथ लगा हुआ पानी पीना वर्जित समझा जाता था । परन्तु स्त्रियो ने इस प्रकार सारे शहर के पुरुषो को वह पानी पिला, इस सामाजिक नियम की अवहेलना की । स्त्रियो के इस आन्दोलन की स्मृति मे जोधपुर मे आज भी लोटियो का मेला भरता है जो इसकी पुनरावृत्ति है ।

जो तीसरा आन्दोलन का ढग स्त्रियो ने अपनाया वह था एक भोज मे गीन्दोली के साथ भोजन । रनवास मे एक साथ भोज किया गया । रावजी के एक विश्वस्त सेवक को दरवाजे पर खडा रखा गया तथा एक ही थाल मे भोजन परोसा गया । हर वस्तु का पहला कौर गीन्दोली लेती और उसके पश्चात सभी औरतें एक-एक कौर लेती, सेवक ने जाकर दरबार मे सूचना दी कि स्त्रियो ने गीन्दोली के साथ भोजन कर लिया है और अब इस आन्दोलन की वह स्थिति आ गई थी कि जब पुरुषो को महिलाओ के सामने झुकना पडा । इस भोजन वाले आन्दोलन की स्मृति आज भी, गवर की गौठ के नाम से ताजी है जब सब स्त्रियाँ साथ भोजन करती है । इसके पश्चात जगमालजी को गीन्दोली के साथ शादी करनी पडी । कुछ लोगो का ख्याल है कि मारवाड मे गवर-ईसर के मेले की परम्परा इस प्राचीन घटना की याददाश्त है । शायद गीन्दोली का दूसरा नाम गौर भी था और इसलिए इस वीरता पूर्ण ऐतिहासिक घटना को ताजा रखने के लिए गवर-ईशर का पूजन प्रारम्भ हुआ हो, जिसमे ईशर के रूप मे एक राजपूत वीर की मूर्ति होती है । इसकी सत्यता इससे भी लगती है कि पुराने समय मे इस भाग मे जिससे शत्रुता होती थी उसकी गवर को उठाकर लाना वीरता-पूर्ण कार्य समझा जाता था । जैसलमेर की उठायी हुई गवरें आज भी वाडवेर के रावले मे सुरक्षित पडी हैं ।

मीर का नोला घोडा, वीरम और चूडा

राव मलिनाथ और राव वीरम भाई-भाई थे और खेड व मेहवा मे रहते थे । खेड का दूसरा नाम विरदे-कोट भी मिलता है । एक वार जोहिया वश के राज पुरुषो ने सिंध से भाग कर राव मलिनाथ से शरण मागी और राव मलिनाथ ने उन्हे नगर के वाहर तम्बूओ मे ठहरवा दिया । जोहियो के वारे मे इतिहास मे उन्हे राजपूत वताया गया है व लोक कथाओ मे वे मुसलमान दिखाए गए है । वैसे इनके सरदार को मीर कहा गया जो सिंध की भाषा के अनुसार हिंदू मुसलमान दोनो मे हो सकता है । इस समय भी सिंधी मुसलमानो मे जोहिया जाती है। मीर एक पदवी है। यह मीर चूकि ईरान, या अफगानिस्तान से वादशाह की नाराजगी के

कारण भाग कर आया था इसलिए वह शरण चाहता था। खेड के नगर-परकोटे के बाहर रहते हुए, मीर व उसके लडकों की जगमाल से गहरी दोस्ती हो गयी थी दिन भर साथ उठते बैठते थे। इसी बीच जोहियों की एक घोडी ने ठाण दिया (बछेरा पैदा हुआ) यह बछेरा अत्यंत खूबसूरत था और जोहियों ने देखा कि यदि जगमाल की नजर इस बछेरे पर पड गयी तो वे इसे छोडेंगे नही। फलस्वरूप उन्होंने उस बछेरे को जगमाल से छिपा कर रखा। बछेरा धीरे-धीरे खडा होने लगा तो उसे शिक्षित करने की आवश्यकता महसूस हुई शिक्षित करने के लिए घोडे को फेरा जाता है पर चू कि जगमाल से इसे गुप्त रखना था इसलिए यह लोग इस घोडे को रात को फेरा करते थे और इन लोगों ने घोडे को शिक्षित करने का विचित्र ढंग अपनाया। रात्रि में ताजियों का ढोल बजाते और उस ढोल के साथ घोडे को शिक्षित भी करते जाते।

चू कि शाम होते ही नगर-परकोटे के दरवाजे बंद हो जाते इसलिए जगमाल को यही ख्याल आता कि यह लोग ताजियो के ढोल बजा रहे हैं।

एक बार एक बारहठजी को खेड पहुंचने-पहुंचते विलम्ब हो गया और तब तक रात्रि हो जाने से नगर परकोटे के दरवाजे बंद हो गये थे। अत उनको इन जोहियों के डेरों पर ठहरना पडा। उन्होंने बारहटजी को खाना खिलाया व एक झोपडी मे सुला दिया। ज्यों ही घोडी के प्रशिक्षण का समय हुआ तो मशालों की रोशनी मे सारे युवकों ने एकत्रित हो, ढोल पर घोडे को नचाना शुरू किया और उस सुन्दर घोडे के नाच के कारण कुछ हल्ला भी होने लगा, जिससे बारहठजी की नींद खुल गयी। चू कि झोपडी का दरवाजा बाहर से बन्द था अत दरवाजे की रेख मे बारहठजी ने देखा कि मशालों की रोशनी में एक सुन्दर घोडा ढोल पर नाच रहा है और भीड तालिया बजा रही है। बारहठ ने ऐसा सुदर घोडा कभी नही देखा था पर उनके दिमाग मे अचानक बात आई कि रात्रि मे यह घोडा सजाने व नचाने की कार्यवाही क्यों हो रही है, जरूर यह काम कुछ छिपाने के लिए होगा।

सुबह रावले मे जाने पर जब जगमाल अपने घुडसाल के घोडो को देख रहे थे, बारहठ ने अपने रात्री के देखे घोडे की प्रशंसा की। चू कि जगमाल दिन भर जोहियों के यहा आते-जाते थे अत उन्हें बारहठ की बात पर विश्वास नहीं हुआ पर जब बारहट ने बहुत ठोस रूप मे अपनी जानकारी पर जोर दिया तो जगमाल उसी समय जोहियों के डेरे पर गये और घोडा दिखाने की माग की। मीर व उसके लडकों ने बहुत आना-कानी की, पर आखिर जगमाल की जिद पर उन्हें वह घोडा दिखाना पडा। घोडा देखकर जगमाल प्रसन्न हो गये और उन्होंने उस घोडे के लिए बहुत आग्रहपूर्वक माग की। लोक कवियों की भाषा मे इस सम्बन्ध मे निम्न दोहे प्रसिद्ध है जो जगमाल ने घोडा देने हेतु जोहियों के मीर दला को कहे—

दस हजार रुपया दू खेंग दू दस तोल।
आधो दू सगाली अजा सधु दे अगी मोल॥

अर्थात हे मीर! मैं तुझे १० हजार रुपये और दस सुदर घोडे देने को तैयार हूँ साथ ही आधा सगाली गाव देता हू, तू मुझे यह घोडा मोल दे दे।

पर मीर व उसके पुत्रो द्वारा घोडा देने से इन्कार करने पर जगमाल ने फिर कहा—

वीस हजार रुपया दू खेंग दू वीस खोल।
आखी दू मगाली अखा मधु दे अगी मोल ॥

अर्थात जगमाल ने अपने आग्रह मे वीस हजार रुपये, वीस घोडे व पूरी सणली देने की पेशकश की, पर मीर ने घोडा नही दिया।

मीर के इन्कार करने पर राज्य क्रोध उग्र हो गया और इसलिए मीर ने दूसरे दिन तक का समय मागा। सलखाजी के द्वितीय पुत्र व जगमाल के चाचा विरमदेव मागलिया राजपूतो के जवाई थे व वीरमदेव की रानी ने मीर को अपना धर्म भाई बना रखा था। मीर ने यह निश्चय किया कि वह अपने पूर्ण कुटुम्ब व आदमियो के साथ वहा से चला जायेगा और इसलिये रात्री मे ही उसने अपने कुटुम्ब वालो को कूच करने का आदेश दिया और स्वय वीरम के यहा अपनी बहन से मिलने के लिए गया। बहन को जब भाई ने अपना निश्चय व सारा किस्सा सुनाया तो रानी ने वीरम को, मीर के परिवार के साथ जाकर छोड आने को कहा। वीरम व मीर सेजावा, जागडू होते हुए सिंध मे जोहियावाटी पहुँचे। वहा पहुचने पर उन लोगो ने वीरमजी को भी वही बसने का आग्रह किया और विवाद की जड वह घोडा वीरमजी को दे दिया वीरमजी अपने परिवार को भी यही ले आए और जोहियो के गाव के पास ही एक गाव पर कब्जा कर वहा रहने लगे।

धीरे धीरे वीरमजी ने आसपास के क्षेत्र मे अपना प्रभाव व अधिकार बढा दिया। एक बार वीरमजी अपने रावले मे बैठे थे तो ढोल की आवाज सुनाई दी। अपन आदमियो को पूछने पर पता चला कि यह आवाज नाईयो के गाव से आ रही थी जो वीरमजी के गाव से बारह कोस दूर था। वहा ताजीयो के ढोल बज रहे थे। वीरमजी ने अपने आदमियो से कहा कि ढोल बहुत बढिया है ऐसा अपने को भी बनवाना चाहिए। सरदार बोला कि यह ढोल जिस लकडी का बना है वैसा केवल एक पेड, जोहियो के कब्रिस्तान मे है। वीरमजी ने पेड काट कर लकडी लाने का आदेश दिया पर जब जोहियो को पता चला तो वे आगबबूला हो गए, कहने लगे कि जिस व्यक्ति को हम यहा तक लाए, जमीन दी, सम्मान दिया, वही आज ऐसा हावी हो रहा है कि हमारे पूर्वजो के ऊपर की छाया भी इसे अच्छी न लगी। वे सुसज्जित होकर वीरमजी पर हमला करने आए।

वीरमजी को जब पता लगा तो वह भी अपने आदमियो को ले, मैदान मे डट गए। भयकर युद्ध हुआ। वीरमजी के पास थोडे लोग थे और धीरे धीरे समाप्त होने लगे। पर वीरमजी बडी वीरता से युद्ध कर रहे थे व किसी तरह कब्जे मे न आते थे। वह घोडा कमाल ढा रहा था। जोहियो को लगा कि यह घोडा तो अजेय है। पर तभी उन्हे याद आया कि इस घोडे को उन्होंने ढोल पर नचाया है और उन्होंने ढोल बजाना शुरु किया दुर्भाग्य की बात कि घोडे को अपना बचपन याद आ गया और वह नाचने लगा। फलत वीरमजी शत्रुओ से घिर गए व मीर के एक जवाई ने वीरमजी का सिर काट लिया। कहते हैं उसके पश्चात भी धड लडता रहा।

इस विकट परिस्थिती मे मीर, एक ऊँट को लेकर महलो की ओर भागा व रानी को सक्षेप मे स्थिति बता, शीघ्र चलने को कहा। रानी एक ग्वालन का भेष बना, अपने छोटे से बच्चे चूडा को टोकरी मे रख, ऊट पर रवाना हुई। सिंध मारवाड की सीमा आने पर मीर ने बहन को अपने भाग्य के सहारे छोड, रुकसत ली।

मुशीबत की मारी रानी, बच्चे की टोकरी सिर पर उठाये, पैदल चलती हुई, पास के एक गाव मे पहुँची। गाव का नाम कौलाऊ था। वहा आला नाम का एक चारण रहता था। रानी ने नौकरी चाही। आला ने स्वीकार करते हुए रानी को अपने यहा नौकर रख लिया। बच्चा चारण आभा के यहा, एक ग्वालिन नौकरानी के बच्चे के रूप मे बडा होने लगा। दिन को सभी बालक गायो के बच्छडो को चराने जाते, वह बच्चा भी साथ जाता। आला को अनुभव होने लगा कि बछडे दिन-प्रतिदिन सूखते जा रहे है। उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा क्यो हो रहा है ?

एक दिन बछडो के चरने जानेके पश्चात आला चुपके-चुपके पीछे गया। वहां का दृश्य देख कर वह चकित रह गया। चूडा एक पेड के नीचे सो रहा था। मुह पर धूप पड रही थी, जिसमे बचाने एक नागराज छत्र किए हुए थे। एक रेत के बडे टीले को बच्चो ने किले के समान बना रखा था। बछडो के पिछले पैर लम्बी डोरो से घोडो के समान बधे हुए थे। साथी बालक उन बछडो के सामने घास लाकर डाल रहे थे। कुछ बच्चे पहरे पर खडे थे।

कोतुहल और असमजस मे आला घर आया और आते ही अपनी नौकरानी को पूछा कि बता तू कौन है। प्रथम तो नौकरानी ने कुछ भी बताने से इन्कार किया पर जब आला चूल्हे मे पानी डाल, स्वय भी भूखा रह, घर भर को भूखा रखने के सत्याग्रह पर अड गया तो रानी ने वीरमजी के काम आने व इस विपदा पूर्ण जीवन का वृतात कहा। आला मा-बेटे को लेकर राव मल्लिनाथजी के पास गया। मल्लिनाथजी ने एक अलग मकान मे, जगमाल को बिना बताये इन्हे ठहरा दिया गया।

एक दिन जगमाल जगल मे शिकार खेलते हुए, एक सूअर का पीछा करने लगे। सूअर पर जगमाल के भाले का निशाना चूक गया पर उसी समय चूण्डा की तलवारने सूअर का काम तमाम कर दिया। अपने शिकार के बीच मे पडने पर जगमाल व चूण्डा मे कहासुनी हो गई तो माता को चिन्ता लगी और वह चूण्डा को लेकर रवाना हो गई। नागाणा के पास नागणेचीया माता के मदिर के स्थान पर एक चारणी रहती थी। मा और बेटा वही देवीमाता की सेवा मे ठहर गई। एक बार चारणी से माता को अपने पुत्र के भविष्य के सम्बन्ध मे पूछने को कहा। देवीमाता ने बताया कि चूण्डा का भविष्य बहुत उज्जवल है। पास के एक केर के पेड के नीचे खोदने पर इसे सोने के सात कलश मिलेंगे व इस बार गर्मी मे पजाब मे भयकर आधी से अरबी व्यापारियो के घोडे, भाग कर आवेंगे। चूण्डा उन्हे घेर कर एक बाडे मे डालदे व देवी का दिया रूमाल फिरादे तो घोडो का रग-बदल जावेंगे। चूण्डा ने वैसा ही किया। उसके पास फौज हेतु धन व बढिया घोडो का काफिला हो गया।

इसी समय मण्डोर के ईदा शासको पर, गुजरात के मुसलमान बादशाह ने हमला किया व मण्डोर घेर लिया। ईदो को चूण्डा ही सहयोग हेतु नजर आया। चूण्डा ने घेरे के भीतर सहायता पहुँचाने हेतु अपने सैनिको को घास की गाडियो मे बिठा दिया व गुप्त रास्ते से भीतर भेजना प्रारम्भ किया। जो गाडी मुसलमानो को नजर आ जाती, उसमे यह जाचने के लिए कि घास ही जा रहा है मुसलमान सैनिक भाला मार कर देखते, पर अदर बैठा सैनिक, अपने कपडे से शरीर के खून से सने भाले को पोछ कर, बाहर आने देता जिससे मुसलमानो को खून के रग को देख कर भीतर छिपे आदमी का शक न हो। जब सैनिक किले मे पहुँच गये तो ईदो व चूण्डा के

सैनिको ने भीतर से और चूण्डा ने स्वय बाहर से, मुसलमानी फौज पर हमला किया। मुसलमान कैंची मे फँस गऐ व उनके पाव उखड गऐ। चूडा की जीत हुई ईदो न चूडा को अपनी पुत्री ब्याह कर मडोर का, राज्य दहेज मे दिया। इस अवसर पर एक कवि न कहा—

चूडा चवरी चाढ दियो मडोवर दायजो
ईदो तणो उपकार कमधज कदे न विसरे।

चूडा के म ोर का राजा बनने पर आला चूडा से मिलने आला पर पहरेदारो ने सीधा-सादा भेष देख कर भीतर न जाने दिया तो आला बाहर से चिल्लाया–

चूण्डा कदेक चितरे काचर कोलाउत जा।
भूप भयो भयभीत् मण्डोवर रे मालिये ॥

चू सुनते ही उन्हें भीतर बुलाया व आदर के साथ बढिया घोडा देकर, शाम तक जितनी भूमि घूम सकें, लेने को कहा। आँला ने देखा कि अच्छा घोडा कही गिरा देगा तो कुछ भी न मिलेगा इसलिए साधारण लिया तो एक व्यक्ति ने मसखरी की, आलोजी घोडा रा पारखू'। तब से यह कहावत नासमझ आदमी द्वारा बढिया चीज की कीमत न समझने के लिए काम मे आती है।

सर जिपे ना झुक जाय उसे दर नही कहते।
हर दर पे जो झुक जाय उसे सर नही कहते ॥

शिक्षा ने ऐसे लोगो की एक बडी पक्ति खडी कर दी है जो पढ तो सकते हैं, परन्तु यह नही समझ सकते कि उन्हे क्या पढना चाहिये। •• ट्रविलियन
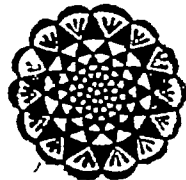
कविराज शंकरसिंह, आशिया

दिल्ली सल्तनत और मालानी

भारतीय इतिहास अत्यत विशद है जिसमे क्षत्रियों का प्रमुख स्थान रहा है। इसमे राठौड वश अपनी अद्वितीय वीरता जिसमे सिर के कटने पर भी रणागण मे तलवार चलाने का कौशल प्रकट कर 'कमद्धज' कहलाए ।

राठौड वश का आदि पुरुष नारायण इसके मरिचि, इसके सूर्य एवम् क्रमश पीढियों गुजरती आई। ये अपने आदि पुरखे से तृतीय पीढी सूर्य' के नाम पर सूर्यवशी कहलाते है। यथा—

"आदू ऊजल धाम अजोध्या, जगचख वम अम हरि जोआ ।।"

इसी सूर्य से १२६वी पीढी कन्नौज के राजा जयचद बडे वीर व प्रतापी हुए। जयचद के वर्दाईसेन और इसके सेतराम उत्पन्न हुए। सेतराम के सीहा जन्मे। यहा तक राठौडो का भारत के पूर्व दिशा मे शासन रहा एवम् सीहा ने पश्चिम मे आगमन किया।

सीहा शिव के अवतार कहे जाते हैं। वस्तुत सीहा पर शिव की अत्यन्त कृपा थी। सीहा शिव के श्रेष्ठ उपासक थे।

सीहा के आसथान नामक पुत्र हुए। एक बार बुढिया औरत के उल्लाहना देने पर वे अपने मामा से विदा लेकर ईडर आए। तत्पश्चात् पाली। पाली में वहा का राजा कान्हमेर के विरुद्ध ब्राह्मणों की रक्षार्थ भारी युद्ध हुआ। इस युद्ध मे हजारो लोगो की मृत्यु हुई ।

यहा से आसथान धुर पश्चिम मे आये। इनके साथ पाली के सभी ब्राह्मण भी आगये। पाली छोड कर आने के कारण ये 'पालीवाले' कहलाते थे। धीरे-धीरे यह ब्राह्मण 'पालीवाल' नाम से प्रसिद्ध हो गये। कालान्तर मे जैसलमेर फलोदी आदि विस्तृत भाग तक फैलते रहे।

इन दिनो खेड पर गोहिल राजपूतो का शासन था जिसका प्रधान सेनानायक एक डाभी राजपूत था। जिसको आधा राज्य देने का प्रलोभन देकर आसथान ने धोखे से मार कर उनके राज्य पर अधिकार कर दिया। बाद मे प्रधान डाभी के साथ भी वही सलूक किया गया।

उन दिनो खेड एक बहुत ही विशाल नगर था। इस शहर मे आवागमन के १२ दरवाजे थे। महेवा और खेड एक ही शहर के पृथक-पृथक हिस्से हैं। महेवा इस शहर का वह हिस्सा है जहा पर राजधानी थी और खेड प्रजा के रहने का क्षेत्र, व्यापारी बाजार आदि।

यह शहर लूनी नदी के दोनो किनारों और मध्य धोरा मे बसा हुआ था जो तिलवाडा से जमोल के मध्य के बहुत बडे उत्तर-पश्चिमी भाग तक फैला हुआ था।

अभी सन् १९७३ की लूनी नदी के बाढ प्रवाह से महेवा के धान के दो गोदाम, जो पृथ्वी मे अभी भी दबे हुए है, खुल गये थे। जिनमें एक मे बाजरा तथा एक में गेहूँ हजारो टन जला-सडा मौजूद हैं। सरकार को इस क्षेत्र की खुदाई कर ऐतिहासिक तथ्य प्राप्त करने चाहिए।

अपने पिता आसथान की मृत्यु के पश्चात धूहड विक्रमी सवत् १२६१ मे राज्यभिषेक हुए। इनका स्वर्गवास १२९४ वि० मे हुआ। [बुधजी री ख्यात]

धूहड के पश्चात उनका पुत्र रायपालजी १२९४ वि० मे राज्य के उत्तराधिकारी बने और १३०१ वि० मे इनका स्वर्गवास हुआ। [बुधजी की ख्यात]

यथा —

नरपत आसथान अनडा नड। धुर तिण पाट प्रकासे धूहड॥

धूहड तणे तखत छत्रधारी। रायपाल प्रतपे रोमारी॥ राज रूपक॥

रायपाल के पश्चात् कान्ह, फिर जालणसी, फिर छाडा, फिर तीडा ने खेड पर राज्य किया।

राव तीडा का विवाह वाण राणा वरजागोत की पुत्री 'ताारादे' के साथ हुआ था। जिसके पेट से सलखा उत्पन्न हुआ। यही पाटवी था और राज्य का उत्तराधिकारी भी।

एक बार राव तीडा और राव सामंत सोनगरों का भीममाल के मुकाम पर युद्ध हुआ। इस युद्ध क्षेत्र मे सोनगरा सामंत की रानी सीसोदणी सबली भी साथ थी। जब सोनगरे भाग गये और सीसोदणी के रथ को राठौडो ने घेर लिया तो रानी ने इस शर्त पर राव तीडा की पत्नी बनना मंजूर किया कि राज्य का उत्तराधिकारी उसका पुत्र ही होगा। इस सबली सीसोदणी राणी के कान्हडदेव नामक पुत्र हुए, राव तीडा ने इन्हें युवराज बनाया।

तीडा का पाटवी पुत्र राव सलखा इधर-उधर फिरता रहा और फिर पचभद्रा के पास गोपडी नामक ग्राम मे रहने लगे। सलखा के पास घोडे काफी थे जिन्हे पानी पिलाने को कुडी नामक ग्राम पर आया जाया करते थे। उन दिनो कूडी तालाब पर एक सिद्ध शभूनाथजी तपस्या करते थे। उदास सलखाजी को एक दिन उस सिद्ध महात्मा ने उदासी का कारण पूछा, तो राव सलखा ने व्यथित होकर पूरे हालात बताये। कहाँ राज्य तो गया ही है मगर घर मे 'दीवा' (दीपक) भी नहीं है। जिसका अभिप्राय था पुत्र भी नही है।

तपस्वी ने प्रसन्न होकर कहा कि "चारो दिशाओ में तेरी कीर्ती फैलेगी, तेरे चार पुत्र उत्पन्न होगे। सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। मगर प्रथम तो नाथ होगा कि कोई उसे जीत न पायेगा।"

राव सलखा के तीन रानिया थी, जिसमे जाणीदे नामक रानी के प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ। राव ने इसका नाम 'मिलियानाथ' रखा। इन्ही को 'मल्लीनाथ' के नाम से जाना जाता है। दोनो नामो के उच्चारण मे तो अन्तर है मगर अर्थ का अभिप्राय एक समान है कि 'मुझे तो नाथ मिल गये।'

मल्लीनाथ के जन्म मे थोडे पूर्व इस साधू ने इसी तालाव की पाल पर जीवित समाधी लेली। जहा पर हर सोमवार को भक्तजनो का विशेष मेला आज भी रहता है ।

इसके वाद सलखा के तीन पुत्र वीरम, जैतमाल और सोभत हुए। मल्लीनाथ साधुभेष मे ही रहा करते थे। इनका रज्याभिषेक भी इसी पोषाक मे किया गया।

जव मल्लीनाथ वडे हुए तो इन्होने अपने चाचा कान्हडदेव को मार कर खेड पर अपना अधिकार प्राप्त किया। मल्लीनाथ का राजाभिषेक १४२३ वि० मे किया गया।

सिमरू गणपत सरसती, पाण जोड लगपाय ।
गावू हू सलखाणियाँ, विधविध सुजस वणाय '। ४ ॥
सुणी जिती सारी कहूँ, लहूँ न झूठ लिगार ।
माल, जैत, जगमाल रो, वीरम जुध विचार ॥ ५ ॥
राजस मालो नगरमे, सोभत, जैत, ममियाण ।
थान खेड वीरम थपै, जगजाहर छवजाण ॥ ६ ॥
(वीरमायण)

इस समय गुजरात के माडल प्रदेश का वादशाह मुहम्मद वेगडा ने मालानी मे घोडो की वडी तारीफ सुनी। इसलिये सुवादार ऐलचीखान पठान को एक सौ चालीस सधे हुए सावरो सहित भेजा । सुवेदार महेवा के पास सिणली ग्राम के तालाव पर घोडो के व्यापारी के रूप मे डेरा किये हुआ था। श्रावण की तीज का सुरम्य दिन था। सुवेदार ने सोचा कि क्यो न तालाव पर झूला झूलने वाली पालीवाल ब्राह्मणो की कन्याओ को लेजा कर वादशाह को भेंट कर दू । घोडे तो फिर कभी लेजा कर दे दूगा।

तीजणियो दिन तीजरे, सज काजल सिणगार ।
हीडा आई हीडवा, अपछर रे उणियार ॥ २३ ॥
ऐलचखान पठाणरे, उरमे वरती आय ।
तीजणिया पतसाहरे, निजर करू लेजाय ॥ २४ ॥
अरक तणो वण आथमण, मेह अधारी रात ।
तीजणिया लेग्या तुरक, घोडा ऊपर घात ॥ २५ ॥
(वीरमायण)

सिणली के तालाव पर झूला झूलने वाली अनेको रमणीयो मे से, अपनी अपनी परीक्षा से १४० कुमारियो को ऐलचीखान ने वादशाह मुहम्मद वेगडा को नजर की। मुहम्मद वेगडा वडा खुश हुआ।

इधर सिणली के फरियादु ब्राह्मणो ने मल्लीनाथ के पास अपनी फरियाद सुनाई।

वेग खेड आया वहे, कूकाऊ कर कूक।
माला रावल माहरो, ऊपर करो अचूक ॥ २६ ॥
हव हूंतो पुगतो हुओ, सुणियो रावलमाल।
इणरो देसी ओलभो, वीरम कै जगमाल ॥ २७ ॥
(वीरमायण)

पूजा की प्रार्थना सुन कर वापिस वदला चुकाने को जगमाल जुम्मा के रोज गीदोली (मुहम्मद वेगडे की पुत्री) को उठा ले आये। वह मस्जिद से वापिस महल को जा रही थी। तव शिकस्त खाकर मुहम्मद वेगडे ने जगमाल को गीदोली वापिस सुपुर्द करने को कहा। किन्तु प्यार के दीवाने जगमाल ने गीदोली वापिस लौटाने से इन्कार कर दिया।

॥ गीत ॥

दुखतर माहरे गुजरवे दाखे, मोनू दै मालाणा।
जूनागढ, पावेगढ जैहडा, ठावा दयू ठकाणा ॥ १ ॥
मनसुध लिखै वेगडो महमद, सायजादी सू पीजे।
कवरागुर कीजे मो कहियो, लाखा जवहर लीजे ॥ २ ॥
भजडहथे कमधज तुरकारी माजा सवली मेटी।
घर गुजरात घणीरी घाती, वलवत खोसे वेटी ॥ ३ ॥
डरसा सू आफलवा ऊभौ, तेग भुजावल तोली।
माणीगर जगमाल महेवे, घर वाधी गीदोली ॥ ३९ ॥

॥ दुहा ॥

गीदोली सायर गुणा, अपछर रै उणियार।
जिणनू गलवाधी जगै, हिया तणो कर हार ॥ ४० ॥

माडल के वादशाह मुहम्मद वेगडा की इस पुत्री का निकाह दिल्ली के वादशाह फिरोज तुगलक के पुत्र के साथ होना तय था। जव जगमाल ने मुहम्मद की वात नही मानी तो मुहम्मद वेगडे ने इस घटना से फिरोज तुगलक को अवगत किया।

हकीकत सुनते ही फिरोज आग बबूला हो उठा। उसने तुरन्त सेना को तैयार कर बीबी सहित आक्रमण को प्रस्थान किया। उधर से मुहम्मद बेगडा ने भी अपनी सेना सजा कर खेड पर कूच किया।

यथा —

॥ नीसाणी ॥

दिली सूं चढियो दुभल, गोरी सुरताणो ।
बाज छतीसूं ई बाजता, नौबत नीसाणो ।
माडल सूं मेहमद चढे, खामंद सुरमाणो ।
असर पांडा रज ऊडकें, आकास ढकाणो ॥ ५३ ॥

सितूर पीली आयरा, जल पीजा जाणो ।
विध मैहमद ओविया, कीधी घमसाणो ।
हजरत व भेला हुआ, पूरब-पिछमाणो ।
गीम करै ज्या रोलवे, बोलै मैहरोणा ॥ ५४ ॥

(वीरमायण)

विशाल सेना के साथ जब फिरोज तुगलक तथा मुहम्मद बेगड़े ने खेड पर डेरा डाला तो वहा की प्रजा काप उठी। यह काल १८३१ विक्रमी था। भय के मारे प्रजा गाव छोड-छोड कर भाग निकली।

उस समय सम्पूर्ण क्षेत्र में आतंक छा गया। महेवा के पास के असाढा और टापरा के निवासी इतने भयभीत हुए कि वे अपने घरो को छोडकर दूसरे स्थानो पर आश्रय लेने लगे। महेवा के वीरो ने युद्ध–क्षेत्र मे आत्म बल बनाए रखा। मुस्लिम सेना भी पूरे दल बल के साथ मुकाबले में जमी रही।

मुसलमानी सेना तथा राठौडी की सेना की कई मास तक छुटपुट युद्ध होता रहा। लेकिन जब मुसलमानो ने महेवा गढ के निकट मोर्चा बदी करना शुरु किया तो मल्लीनाथ ने स्वय सेनानायक बनना चाहा। लेकिन वीरम और गव घडसी के कहने पर बीडा उनको सोपा।

यथा —

॥ दुहा ॥

कहिया सेना मोरचा, बुरज लगावै ताम ।
'मल्लीनाथ' फुरमावियो, इणरो कारो उपाव ॥ ७७ ॥

रातो वाहो देणरो, मतां फिरो जद माल ।
वोरम घडसी वरजिया, जुध में लेसा भाल ॥ ७८ ॥

वीरम घडसी वीरवर, पान माल परभात ।
आवे एकां ऊपरा, रचिया जुध अपरात ॥७९॥

इस युद्ध में वीरम और धडसी ने वडी वीरता से युद्ध किया और मुसलमानी सेना को भगा दिया । जिस पर वादशाह स्वय चितित हुआ । तब शाह ने आपात बैठक बुलाई और भरडकोट गढ(महेवा) को फतह करने का आदेश दिया । यथा

भरडकोट गट भेलके, दयो जमीपर डाल ।
मारो रावल मालकू, जगा कवर लो भाल ॥९९॥

वीटाणा च्यारु वना, भरडकोट भुरजल ।
माडेया ऊडा मोरचा, पोलो कियो पताल ॥१००॥

कमर लोक मारे कमी, हजरत कियो हलोह ।
तीन पहर मे तोडणो, कमधज तणो किलोह ॥१०१॥

माले रावल मडिया, पनग तणॅ सिर पाव ।
दल फरियों दरियाव ज्यू, ओली दोली आव । १०१॥

भिरडकोट भुरजालरै, पीरो देरागाह ।
पीर मणधर पातमा, रावल घेरागाह ॥१०३॥

इधर तो वादशाही सेना ने गढ पर धावा बोलने की तैयार की । इससे कुछ पूर्व जब वादशाही सेना का घेरा था आलणसी नाम के एक भाटी राजपूत ने मल्लीनाथ के पुत्र कूपा की ऐधूला भूत की पुत्री से शादी करवाई । अन्य कई रावरेणा की डावडियो, पोतियाँ की भी शादी करवाई । ये सभी रस्म पारकर गाँव मे किया गया । वहा पर दो हजार मोढे राजपूत मुसलमानो से युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुए थे ।' किन्तु इनका मोक्ष नही हुआ था इस कारण शादी के चवरी के धुँए से सबका मोक्ष हुआ ।

ऐवूला भूत ने कूंपाजी को प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा कि यह तो आपको कवलिया घोडा रणजीत नक्कारा, दलासमेट तलवार भेंट है । यही हमारा दहेज है । जब भी मुश्किल मे हो, आप युद्ध मे इसी कवलिए घोडे पर आरूढ होकर, रणजीत नक्कारा वजावेंगे, हम बीस हजार आपकी सेवा मे तैयार मिलेंगे ।

मल्लीनाथ के कुंवर जगमालजी को इस घटना की पूरी जानकारी थी । अत इस वक्त भीषण युद्ध ज्वाला मे आक्रमण के समय कूपाजी से कवलिया घोडा माँग लिया । दिन अस्त होते ही जगमालजी ने शाही सेना पर आक्रमण कर दिया । यथा—

॥ दुहा ॥

कूपा भ्रस कवलियौ, भूतो कीनौ भेट ।
रूडो नगारौ जीतरण, खाडौ दला समेट॥ १०९॥
वीरा जद दीनौ वचन, हथलेवा छुटवार ।
याद करौ जद आपरैं, हाजर वीस हजार ॥११०॥
कूपा कने कवलियौ, मागलियौ जगमाल ।
रातीवाहौ रात री, देवण मर्म-दुभाल ॥११६॥
कवला आगे धूपकर, दीयो पागडै पाव ।
वीस सहस भूतावली, आगे ऊभी आव ॥११७॥
मुजरो कर जगमाल ने, भाखे वायक भूत ।
कहौं जिकौ कारज करा, राजतणा रजपूत ॥११९॥
जगै हुकम दे भोक्या, किलमा पर केकाण ।
बीम नहन लागी वहण, भूतौंरी केवांण ॥१२२॥
(वीरमायण)

उधर शाही सेना टिड्डी दल की भांति आगे वढी आ रही थी, इधर जगमाल भी अपनी सेना सहित युद्ध क्षेत्र मे लड रहा था। जिसके आगे अप्रत्यक्ष रूप से वीस हजार भूतो की कपाण धाराएं लपक रही थी। यथा–

। नीसाणी ॥

वटका ऊडे वगतरा, झटका कर झाडै ।
देखो वे जगमालदे, पखरैंता पाडै ॥
पतमाहा हल पाधरे, राठौड रमाडे ।
घोडे आगे गैवका, वाजा वजवाडै ॥१३०॥
(वीरमायण)

प्रात होते होते अपार शाही सेना धराशाही हो गई। वीवी अपने खुदाको व समस्त पीरो को याद कर थक चुकी थी तथापि जगमाल का प्रलय युद्ध जारी था। यथा—

॥ दूहा ॥

माथा तूटै मीरजां, जाणे खूटै ज्वार ।
मालावत जगमालरी, आ आवै तरवार ॥१३२॥

पगपग नेजा पाडिया, पगपग पाडी ढाल ।
वीवीं पूछै खान ने, जुध केता जगमाल ॥१३७॥

कर हमला थाका किलम, अलला गल्ला उचार ।
मुडै नहीं रावल मला, अला तणा जे यार ॥१३८॥

किसडो घोडो कवलियो, खाडो किसडो खूव ।
दौरा दै जावा दिली, वीवी पाडै वूव ॥१३९॥

दोनों बादशाह महेवा पर फिर कभी आक्रमण न करने की, खुदा की कसम खाकर भाग निकले। जगमाल की विजय हुई। मल्लीनाथ ने मोतियो से भरे थाल से जगमाल को बधाई देकर स्वागत किया। तब से शाह का कोई भी अपराधी यहा शरण आकर बच जाया करता था।

जैसलमेर का पुराना नाम लुद्रवा है। बाद मे रावल जैमल ने सवत् १२१२ वि० सावण वदि ग्यारस को बसाया। जैमल के वशज मूलराज रतनसी अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से परमधाम को गए। जैसलमेर पर मुसलमानो का अधिकार हो गया। इनके पुत्र व भाई-भतीजे मुसलमानो के भय से इधर-उधर फिरते थे। मूलराज के पुत्र घडसी इसी कारण महेवा मे रावल मल्लीनाथ के पास आए।

दिल्ली के बादशाह फिरोज तुगलक तथा माडल (गुजरात) के बादशाह मुहम्मद बगेडा से घडसी ने बडी वीरता से युद्ध किया। युद्ध विजय के पश्चात् मल्लीनाथ ने अपनी पुत्री विमलादे का विवाह घडसी के साथ सवत् १४३५ वि० मे किया। मल्लीनाथ की राणी का नाम रूपादे था।

यह सब ऐतिहासिक वृतान्त "वीरमायण" नामक ग्रन्थ मे मिलता है। जिसका अपभ्रश रूप "वीरवाण" नाम से प्रकाशित भी हुआ है। मेरे पितामह महाकवि बुधजी आशिया के सशोधित यह "वीरमायण" ६२१ छदो का अनूठा ग्रन्थ है। इसका अग्रीम वर्णन साहित्य प्रेमियो मे समक्ष प्रस्तुत करुगा। जयशक्ति ॥

ग्राज जूना के सूने देवमन्दिरो ग्रौर दुर्गो का केवल ऐतिहासिक ग्रौर प्राकृतिक-महत्व ही बाकी है । जन-साधारण के लिये ग्रौर कलाप्रेमियो के लिये यहा की सामग्री ग्रव उतना महत्व नही रखती जितना कि कभी रखती थी । पुरातत्व ग्रौर ऐतिहासिक शोध की दृष्टि से ग्रभी जूना का महत्व पर्याप्त है । वि स की दसवी ग्यारवी शताब्दियो मे जूना की स्थिति ग्रवश्य रही । सम्भवत मरुमण्डल (मारवाड) के नवदुर्गो मे से एक दुर्ग किराड़ यही पर विद्यमान था । वि स १०३० ग्रौर१०५२ के बीच मे धरणीवराह या धरणीधर यहा का राजा था, जिसका राज्य ग्राबू से किराड़ तक विस्तीर्ण था । ख्यातो ग्रौर एक प्राचीन कवित्त के ग्रनुसार इसने ग्रपना राज्य ग्रपने भाईयो मे बाट दिया था । इस कथन की प्रमाणिकता को विवादग्रस्त माना जाय, तब भी धरणी-वराह के द्वारा यहा का शासक होना एक निर्विवाद तथ्य है ।

कपालेश्वर मदिर

बाडमेर से दक्षिण-पश्चिम मे तीस मील की दूरी पर कथित पाडवो के वनवास की क्रीडास्थली से युक्त चौहटन, नामक कस्बा है, जिसकी पहाड़ियो के ग्राधे मार्ग मे तीन शिवमन्दिरो के ग्रवशेष पाये जाते हैं । इनमे से प्रथम जो नवीनता लिये हुए है उसमे एक समाधिगृह, एक सभामडप ग्रौर दो डयोढीदार द्वार हैं, जिनमे से एक स्तम्भ पर सोनगरा कान्हडदेव के समय वि० स० १३६५ का शिलालेख ग्र कित है ।

इसके उत्तर मे एक ग्रन्य मन्दिर के द्वार पर सप्त फणाच्छादित लकुलीश के मस्तक की रोचक ग्रौर पवित्र ग्रवस्थिति है । इसके स्तम्भो ग्रौर शिखर भागों के निरीक्षण के ग्राधार पर इसका समय वि० स० की बारहवी से चौदहवी सदी तक माना जाता है । वि० स० १३६५ मे उत्तमराशि के शिष्य धर्मराशि ने इसका जीर्णोद्वार करवाया था । यहा यह ज्ञात रहे कि ये दोनो साधु लकुलीश शैव सम्प्रदाय मे ग्रनुयायी थे । मेवाड के एकलिग का पुजारी हारीतराशि भी इसी सम्प्रदाय का पूर्ववर्ती साधु था । लकुलीश शिव के ग्रवतार माने जाते है ।

तीसरा मदिर भी इसी समय के ग्रासपास मे बना बतलाते हैं । इसके तीन डयोढी (ग्रौसारे) दार द्वार है । इसके शिखर ग्रौर उपर्युक्त द्वार धरासायी होने की प्रतीक्षा मे है । इसके समाधिगृह के बन्द द्वार पर ग्रलकृत शिवलिग का रोचक ग्रौर ग्राश्चर्यजनक पाषाणोत्कीर्ण ग्र कन पाया जाता है, जिसके एक ग्रोर पार्श्व मे पुरुष ग्रौर दूसरी ग्रोर नारी है । इन दोनो के द्वारा शिवलिंग पुष्प-मालाग्रो से सुसज्जित किया गया है । इस मदिर के चारो ग्रोर मध्य मे शिव, दायी ग्रोर ब्रह्मा ग्रौर बायी ग्रोर शिव का ग्र कन किया गया है । यहा दो पहाडी चट्टानो की मध्यभूमि मे कपालतीर्थ नामक कुण्ड ग्रौर कपालेश्वर के (शिवमन्दिर के) स्थान हैं । कपालेश्वर का यह शिवमन्दिर इस समय भग्नावशेषो मे ही ग्रपना ग्रस्तित्व रखता है पर यह कभी बडी प्रभावशाली पुण्यस्थली रहा है । कपालेश्वर के एक मील ग्रागे 'विशन पगलिया' नामक पवित्र स्थान है, जहा भगवान विष्णु के चरणचिन्ह पूजे जाते हैं । इन स्थानो के ग्रासपास मे प्रति वर्ष सोमवती ग्रमावस्या को एक मेला लगता है । इसी तरह हर एक बारहवें वर्ष मे एक विशाल मेला लगा करता है, जिसमे दूर-दूर

से यात्री इन स्थानो के दर्शनार्थ आते है। इसे कुम्भ के मेले का एक मरुस्थलीय रूप ही समझिये। यहा के सीताकुण्ड, भीमगोडा, स्वर्ग सेरी आदि आदि अन्य दर्शनीय स्थान है।

यहा के पहाडो पर चौदहवी शताब्दी का एक दुर्ग भी विद्यमान है, जिसे 'हापाकोट' कहते है। इसका निर्माता जालोर-बाडमेर के सोनगराराजा कान्हडदेव के भाई सालमसिह का द्वितीय पुत्र हापा था। उसी के नाम पर इसे 'हापाकोट' या 'हापागढ' कहते हैं।

वीरातरा मन्दिर

चौहटन की पहाडियो के पिछले भाग मे जहा आजकल सेनाओ के शिविर है, वहा लाख और गुग्गल के वृक्षो की सुरभि मे आच्छादित पहाडो की एक घाटी मे 'वीरातरा माता' का एक पवित्र मदिर है, जो प्राय चार सौ वर्ष पुराना बतलाया जाता है। इस स्थान मे एक ओर बालू का विशाल टीला है और दूसरी ओर पहाडी चट्टाने अपना सिर ऊपर उठाये हुए है। यहा इस मदिर के अतिरिक्त द्वादस पूज्य स्थान, समाधि स्थल, कुण्ड और यात्रियो के निवास स्थान भी बने हुए है। यह स्थान कभी भाटी राजपूतो द्वारा आक्रान्त होकर भी पूजित हुआ। यहा चैत्र, भाद्रपद और माघ महीनो मे शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी और चतुर्दशी को मेले लगते है।

देवका और वासुकसा के देवमन्दिर

वाडमेर से जैसलमेर जाने वाली रोड पर लगभग ४८ मील की दूरी पर देवकी दर्शनीय सूर्य और विष्णुमदिर पाये जाते हैं। यह स्थान शिव और गगा से आगे जाने पर सडक के दायीं ओर सौ-पचास कदमो की दूरी पर स्थित है। दोनो मन्दिर आमने-सामने हैं, इनमे से पूर्वाभिमुख सूर्यमदिर है और पश्चिमाभिमुख विष्णुमन्दिर है। इनमे से सूर्यमदिर के चारो कानो पर चार अप्रधान मन्दिर थे, जिनमे के दक्षिण-पूर्वीय कोण पर एक लघु शिवमदिर और उत्तरपूर्वी कोण पर एक सूना कुवेर मदिर अव भी विद्यमान है। यह एक पचायतन सूर्यमदिर था जिसके चारो पर चार अप्रधान मदिर वने हुए थे। अपने सतोरण सभा मडप, छतो मे उत्कीर्ण कमलो, निजमदिर और परिक्रमा की ताको तथा शिखरस्थ अलकृत मूर्तियो के द्वारा यह मदिर अपने गौरव की कहानी स्वय कह रहा है। गणेश, सूर्य, उमा महेश्वर, ब्रह्माणी और कुवेर की मूर्तिया इस मदिर की शेष निधिया हैं।

देवका का दूसरा मदिर विष्णु मदिर है, जो दाये भाग मे बाहर से कुछ कटा हुआ है। निज मदिर के बहिद्वार पर नवग्रह पट्टिका के मध्य मे गदा पद्मधारी विष्णु के दायी ओर ब्रह्मा और वायी ओर शिव की मूर्तिया उत्कीण है हैं। मध्य मे विष्णु के आसीन होने से यह निश्चित है कि यह एक विष्णु मदिर है। निजमन्दिर के मुख्य द्वार पर पत्रलताओ की त्रिशाख पट्टिकाये हैं। मदिर देहली के मध्य मे कल्पवृक्ष और उसके दोनो ओर दो कीर्तिमुख हैं, जिसके एक ओर गणेश और दूसरी ओर कुबेर प्रतिमाए विराजमान है। निजमन्दिर मे एक कमल और दो कीर्तिमुख है और इसके वाहरी लघुमण्डप मे सघन कमाल उत्कीर्ण हैं। इस मन्दिर के चारो ओर त्रिकोणाकार और अर्द्ध पद्माकार पट्टिकाये विद्यमन है। इन मन्दिरो मे और इनके आसपास विक्रम की सत्रहवी सदी के (वि स १६७४, १६६४, १६२८) शिलालेख, स्मारक-पाषाण पट्टीका लेख और गोवर्द्धन स्तम्भ लेख पाये जाते हैं।

राजस्थान के स्वाधीनता सग्राम के महायोद्धा लोकनायक जयनारायणजी व्यास का जनजागरण के अदम्य सेनानी सेठ गुलावचद के नाम एक ऐतिहासिक पत्र दोनो के घनिष्ठ संबंध का परिचायक है

ALL INDIA
HARIJAN SEVAK SANGH
KINGSWAY, DELHI.

YAMANRAI A. BHATT B.Ag., D.B.S.A.
Research Scholar

Camp जोधपुर
Date ३०/११/४० 194

माननीय सेठ साहब,

हमारे मित्र वामनरावजी व कल्याणमलजी हरिजन जातियों की अवस्था की जाँच के सम्बन्ध में आ रहे हैं। कृपया इनको अपने क्षेत्र में उचित सुविधा और सहायता दें।

आपका
जयनारायण व्यास

सेठ गुलाबचन्दजी सालेचा
पचपदरा

सेठ श्री गुलाबचन्द अभिनन्दन ग्रंथ

खण्ड ५

लोक - संस्कृति और भाषा

सपादक . डॉ मदनराज डी. मेहता

रंग घणा है, रंग !

सेवग सिरेमल तिलवाडावाले,
पचपदरा

पारम्परिक रंग रा दूहा—

रग हैं पारवती रा भरतार नै,
नादीया रा असवार नै
सिरोही चारणेश्वर नै, चौकडिया भूतेश्वर नै
पाली रा बैजनाथ नै, आद ओकारनाथ नै
रग है रगीलै कूं, दसरथ कै छवीले कूं
अजनी के अकेले कू, गौरख के चेले कू
कूबडी के आर कू, रवीदास चमार कू
वेताल की वाणी कू, गगाजल के पानी कू
मथुरा के माधौ कू, वनरावन के सावू कू
ककाली माय कू, सीता सुखदाय कू
लछमण के भाई कू, पौरुष मे भीम कू
उत्तर की सीम कू, वाण मे पात कू
शकर की करामात कू, अजोदिया के नाथ कू
भरत के भाई कूं, दसरथ के दीन कू
लछमण के मान कू पका रग पपीहै कू
नामदे छीपा कूं, नाई मे चैना कू
जाट मे धन्ना कू, इन्दर की असवारी कू
पीरु मे कसरा कू, सुदामा के तन्दुल कू
आसर खतरी कू, सगर के पुत्र कू
असरग ओर कू, भीलणी के वोरा कूं
पाडवा पाचो कूं, कुवजा दासी कूं
—दारका के वासी कूं

रग रगीला ठाकरा, दसरथ रा कवरा
भज रावण रा भागीया, आलीजा भवराँ

रग रामा रग लसमणा, दसरथ के बेटा
लका लूटी सोवनी, कर कर आखेटा
कियो रवेग लकरो, जोत भई कर जँक
अमला वेला आपनै, रघु ककर रग
कव उतर देवण अदक, हरणक गग हूमेस
चारो पैर समरिये, गाडा रग गुणेस
वज्र कसौटो, वजर तन
वजरगी वजरग, अमलो वेला आपनै
रघु ककर रग
रग रगडा रंग, जो गामारु जोरवर
सोमा थू छ्गीयाण, अमलो वेला आपनै
रघु ककर रग
डोडा रग दीवान, अष्ट न भायो आपरो
जोण सकल जीतान, अमलो वैला आपने
महाराजा रगमान, कर्ण सभाल कवजना
देण हजारो दान, अमलो रग वैला आपने
रग जोधा जवान, सामण वदले मर दियो
एक दाता रढरोण, अपलो रग आपनै
रंग भाटी चन्द्रभाण, कटक पडिया ठाकर कर्नें
अवसर वरियो अग, साथ किया सुलतान रो
रग उकावत रग, रजपूतो चढण घोडा
वकनाडी ठौड, अमलो वैला आपने
रग खोडा राठौड, समजतीयो साडासरे
गढ पतियो रा मौड, अमलो वैला आपनै
रग भीमा राठौड, अमलो वैला आपनै
गढ नैना वै भूप, जणवगीयो जसवत कमध

रग है माला रूप, वाग वगीचो वाडीयो
अग रैंग्गा उमग अमलो वैला आपनै
रावल मैहल (रुपादें) रगे, अमलो आरोडी फूलमद
साकर दूध छटक, गलियो लीजै मादवा
गलियो तणा गटक, अमल थू उदमादिया
एक भंवण हएँह, वैर पुराना वाढणा
कै नवा करणा नैह, अमल थू उदमादिया
संणो हदा सैण, था वनै घडी न आवढे
मानै फीका लागै नैण, अमल थू उदमादीया
कूजला कालो नैह, जो जाणता मर जावता

नो खाता वाली वैस, खागौ खीणकारा
हकारो तूरियो होवे, तन वैला तजारा
डोढो आवै दाणवत, रहिया घरो रा राजवी
मीसल आठ रा मौड, अमलो वैला आपनै
रग सैरा राठौड, पटायत नाढा परा
पड रा छोर्डे पाण, अमलो वैला आपनै
रग हो दूथा राण, खाग वजाई खै खै

वढ वढ हुआ वडग, गजो न गोपीनाथ रा (पाठो)
रग हजारो रग, साद वराजै सोइन्तरे
सदा जलन्धर सग, अमलो वैला आपने

उमाभारती रग, रग है माधोसिह चौपावत नै
केसरसिगजी कूपावत नै, आबू रा झाडो नै
वून्दी रा पहाडो नै, नीवज रा केवाडो नै
सागर दे रा सूरो नै, झावर रा जूजारो नै
मेडतिया अमरावो नै, जसन्तसिग री लाडी नै
वून्दी रा हाडा नै, माला रो राणी नै
ईसर री ढाणी नै, गगा रा पाणी नै
सीता सती नै, लसमण जती नै

जदइपट का साच नै, गगवती काच नै
हनुमानजी लगडा नै, परथीराजजी रगडा नै
तुलसीदासजी सन्त नै, कालीया कन्त नै
जालमसिंगजी झाला नै, पावू रा भाला नै
सोनगरो री आन नै, साहजादी री जवान नै
कुसल रे दपटा नै, सेरसिहजी रा लपेटा नै
हमीरसिह री हठ नै, सवाईसिह रा वट नै
राजा मानासिह रा इसट नै,

झाडाको विकी करो तो, सवाईसिग चौंपावत किनो ज्यू किजो
जो हठ जालो तो, राजा माना सिह झाली ज्यू झाल जो
केसरिया करो तो आसोप वाले हमीरसिंग कीना ज्यू करजो
कोई आपरी पारख रो वीद परणीजो तो, दिल्ली वाली साहजादी परणीजी ज्यू परणीजो
कोई परणीजण रो ना देवौ तो, जालोर वाला सोनगरे ना कियो ज्यू कीजो
घराधणी सू रुसणो करो तो, उमादे भटीयोणी कीनो ज्यू कीजो
कोई भीतडो चुनावो तो, आसोप वाला वगतावरसिंगजी चुनायो ज्यू चुणाईजो
कोई कीला रा भलावण लो तो, हरसोणी वाला सूरसिंगजी चौंपावत लोनी ज्यू लीजो
कोई दली सू सामनो करो तो, दुर्गादास कीनो ज्यू कीजो
गुल (गुल) मीठो पण विनगुणो, तो लो पत्थर तौलाय
अमल खारो नै गुण घणो, जको रुपीयो मर जाय
वाल जवानी वरध हैं, है अमल वीन हैक, भलो रसीयो मोम पर, ओ अमरत फल एक
लाडी चढ लारों आसन भूरे उपरा, तण वैंला तजारा डोडा आवे दाणवत
सैंजो ससकारा, कामण कसकारा करै, तण वैला तजारा डोडा आवे दाणवत
रग है जमीं कू, असमान कू, पिता कू, मात कू, सूरज कू, साझ कू, घणा रग गुरुदेव कू

सांभरा माता की लावणी

— श्री प्रतापचद द्विवेदी

दोहा—साची माता साभरा जाणें जुग ससार। जिनके वचनो से हुग्रा नमक तणा ग्रपार ॥

ला व णी

टेर – एक सर पचपदरे माय साभरा माता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥ग्रन्तरा॥

वर चवाण जोजा को मात ने दिया, सर पचपदरे मे नमक उसी ने दिया,
मेवाड राज्य मे गाव जो है ईटाडी, जहा पर थी इस जोजा चवाण की गवाडी,
कोई जाण सके नही महामाया की माया, खारी के काम से खारवाल कहलाया,
भक्ति से उसने देवी का जप किया, परसन हो उसको सपने मे ग्रा वर दिया,
जोजा देवी का ध्यान हृदय मे लाता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥2॥

रूपा की खान तुम मारवाड मे पावे, जोजा मात को पीछो ग्ररज सुनावे,
चादी की खान मेरे कौन रखेगा माई, तव करो नमक की खान धातु पलटाई,
पोचो की ढाणी मारवाड मे जावो, तुम मेरे वचन से वहा नमक बनावो,
देवी के हुक्म से जोजा वहा पे ग्राया, पोचो की ढाणी ग्रपना वास वनाया,
यहा बसा गाव पचपदरा नाम धराता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥3॥

हाकडा समुन्द्र सूक के सर हुग्रा, भई पृथ्वी से मूरत दोय यहा प्रगटाई,
खोदत पृथ्वी मे हुई गेव की बानी, पहिले दे हमे निकाल करू मनमानी,
शाकबरी मेरा नाम साभर से ग्राई, मैं ग्राशापुरा को ग्रौर साथ मे लाई,
मेरी महिमा देवी पुराणा मे गाई, तेरी भक्ति से हम यहा दोनो ग्राई,
यहा होगा नमक ग्रपार मैं इसकी दाता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥4॥

देवी के हुकम से उसने खान खिणाई, निकला जल मोराली डलवाई,
दो साल बाद वो खान नमक भरपाई, ग्रौर देवकला की जान पडी सकलाई,
जोजा के गनायत सिसोदिया भी ग्राये, राठोड खाप के निज जानिय हुलाये,
सबने मिल ग्रपना यह धन्धा ठहराया, देवी का परचा पूरी तौर से पाया,
वनजारा नमक भर मुलको मे ले जाता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥5॥

मुरधरपति ने जब ऐसी खबर सुनपाई, तो खारवालो की खातिर वहुत फरमाई,
माता के हुकम से तुमने नमक बनाया, जिसका तो फायदा मेरे राज्य मे ग्राया,
हक कीना वापी कर के ठहराया, यहा नमक करेगा सदा तुमारा जाया,
मुलको मुलको मे नमक यहा का जावे, यह नमक जगत मे डेढी कीमत पावे,
हक वचन होय सो माता के मन भाता, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पाता ॥6॥

शिवगिर हुग्रा भक्ति से ज्ञानी, लिधी समाधि सो सव जग जानी,
जिन मार के गाडा देत्य जगत सब गावे, देवी की भक्ति कर वोही सुख पावे,
भादु ग्ररु माह सुद चतुर्दशी जब ग्रावे, भक्ति से करते पूजा ग्रौर गुण गावे,
दोनो चवदश का मेला होता है भारी, दर्शन को ग्रावे प्रेम सहित नर नारी,
परताप द्विवेदी देवी का यश गावे, भक्ति रक्खे सो मनवाछित फल पावे ॥7॥

पचपदरा और आस-पास के लोक देवी-देवता

— श्री रवीन्द्र कुमार मानेचा

1 मावलीयोजी रो थान—पचपदरा के पास
2 सवाईसिहजी रो थान—जसोल
3 राणी भटियाणीजी रो थान—जसोल
4 भोमाजी रो थान—थोव
5 माताजी रो थान—(कुल देवी) स्थान स्थान पर
6 साभरा व आसापुरा देवी रा थान—देवल—पचपदरा साल्ट
7 खेतलाजी रो थान—(क्षेत्रपाल) स्थान स्थान पर
8 भोमियाजी रो थान—युद्ध मे वीरगति प्राप्त लोक पुरुप—स्थान स्थान पर
9 माला जाल—जसोल—तिलवाड़ा के वीच
10 खीमा वावा रो थान—वायतु
11 गोगाजी रो थान—स्थान स्थान पर
12 ईसरा परमेसरा रो थान—भादरेस
13 शील-पील रो थान—कानाना
14 पराजी रो थान—अनेक घरो मे
15 करणीजी रो थान—निंवडो—चौहटन
16 आलमजी रो मन्दिर—धोरीमन्ना
17. मलीनाथजी रो थान—तिलवाड़ा
18 मलीनाथजी री जन्म भूमि—गोपडी
19 रामदेवजी रो थान—वीटूजा, पचपदरा, वालोतरा
20 तरसीगडी व सिवाना गुरुओ की समाधिया—सिवाना, तटसीगड़ो
21 नागेचणा देवी रो मन्दिर—नागाणा
22. पावूजी रो थान—स्थान स्थान पर
23. हडवूजी रो थान—स्थान स्थान पर
24 लम्वूनाथ रो मन्दिर—मेवानगर
25 वानर देव रो मन्दिर—वालोतरा
26 चवरजी गवरजी रो थान—देवियो रो
27 भेरूजी रो थान—स्थान स्थान पर
28 केसरीया कवरजी रो थान—विसनोईयो रो
29 जाभोजी रो थान—विसनोईयो रो
30 वसनपुरीजी रो थान— मडली
31. नरसिंगपुरीजी—फलसु ड

बाड़मेर जिले के विभिन्न मेले

—श्री मगराज जैन

क्र स	तिथि	नाम मेला	स्थान	अवधि
1	2	3	4	5
1	चैत्र वदी 7	शीतला माता का मेला	सिवाना	एक दिन
2	चैत्र वदी 7	शीतला माता का मेला	कनाना	एक दिन
3	चैत्र वदी 11	मल्लीनाथ पशु मेला	तिलवाडा	पन्द्रह दिन
4	सावण वदी 23	सावण का मेला	सिवाना	दो दिन
5	भादवा वदी 11	रामदेवजी का मेला	सिवाना	एक दिन
6	भादवा वदी 11	रामदेवजी का मेला	कुशीप	एक दिन
7	भादवा वदी 11	रामदेवजी का मेला	रानी देशीपुरा	एक दिन
8	भादवा सुद 2	आलमजी का मेला	धोरीमन्ना	तीन दिन
9	भादवा सुद 8	रणछोडराय का मेला	खेड	एक दिन
10	भादवा सुद 11	रामदेवजी का मेला	वीठूजा	एक दिन
11	भादवा सुद 11	रामदेवजी का मेला	गाधव खुर्द	एक दिन
12	भादवा सुद 14	जोगमाया का मेला	चारकना	एक दिन
13	आसोज वदी 9	गोगाजी का मेला	सिवाना	दो दिन
14	आसोज वदी 9	गोगाजी का मेला	तिलवाडा	एक दिन
15	आसोज वदी 9	गोगाजी का मेला	सिकोर	एक दिन

क्र स	तिथि	नाम मेला	स्थान	अवधि
1	2	3	4	5
16	कार्तिक वदी 5	गनी भटियाणी का मेला	जमोल	सात दिन
17	मिगसर वदी 3	वजरग पशु मेला	सिणधरी	सात दिन
18	पौष वदी 10	नाकोडाजी का मेला	मेवानगर	तीन दिन
19	माह वदी 2	आलमजी का मेला	धोरीमन्ना	तीन दिन
20	माह सुदी 9	खेमा वावा का मेला	वायतू	एक दिन
21	माह सुदी 11	रामदेवजी का मेला	गाधव खुर्द	एक दिन
22	फाल्गुन वदी 13	शिवरात्रि का मेला	गोलिया	एक दिन
23	फाल्गुन वदी 13	शिवरात्रि का मेला	मलवा	दो दिन
24	फाल्गुन वदी 15	मठखरटिया का मेला	मठखरटिया	दो दिन
25	सोमवती अमा०	गोडाजी का मेला	पादरी कला	एक दिन
26	चैत्र सुदी 14	वीरातरा माताजी का मेला	वीरातरा	तीन दिन
27	भादवा सुदी 14	वीरातरा माताजी का मेला	वीरातरा	तीन दिन
28	माह सुदी 14	वीरातरा माताजी का मेला	वीरातरा	तीन दिन
29	सोमवती अमा०	पोषण का मेला	चौहटन	दो दिन

पचपदरा के पर्व और त्योहार

—श्री चेतनलाल शर्मा, एम ए.

होली

ग्रामीण जीवन मे होली का त्योहार यौवन की मादकता, बसत की बहार, कला का सौदर्य व प्रेम की पुकार लिये हुए मानव जीवन के आल्हाद का सर्व स्पर्शी रूप बिखेरता है। जीवन के आनन्द की अनुभूति विभिन्न प्रकार से की जाती है। पचपदरा मे यह त्योहार पूर्व काल से ही एक विशेष स्वरूप लिए हुए रहा है।

होली के ठीक एक माह पूर्व, माघ शुक्ला १४ या पूर्णमासी को "डाडा रोपणा" अर्थात प्रहलाद की स्थापना करने का कार्यक्रम होता है। रात्रि के समय ढोल के साथ ग्राम के प्रमुख लोग गाव के बाहर चगो पर गीत गाते व वादन के साथ ग्राम के प्रमुख लोग पूजन के साथ प्रहलाद के प्रतीक स्वरूप एक बडा डडा गाड देते हैं व उसे चारो ओर से काटो की बाड से घेर देते हैं। अक्सर लोग यह मास "डाडा रोपण" के पश्चात शुभ कार्य के लिए वर्जित समझते हैं।

डाडा रोपण के पश्चात नाडी तालाब के ऊपर के मैदान मे प्रत्येक रात को बीसो युवक टोलियाँ चग पर होली की फाग के गीत गाया करती हैं। स्त्रियाँ व लडकिया, मोहल्ले मे खुले मे बैठकर गीत गाती व ओटें लेती है। ओटें एक प्रकार का घूमता हुआ नृत्य होता है, जिसमे ताली बजाती हुई मडलाकार रूप मे एक पैर आगे व एक पैर पीछे देती हुई गीत के साथ स्त्रियाँ नृत्य किया करती है।

घरो के प्रमुख आगन मे साखीये अर्थात् माढणे बनाए जाते हैं। गोबर से लीप कर उस पर पहले लाल मिट्टी से माडणा बनाया जाता है तत्पश्चात सफेद रग से उसका पूरा रिक्त स्थान भरा जाता है। स्त्रियाँ अनेक दिन मेहनत कर यह कलाकृति पूर्ण करती हैं। होली के दो दिन पूर्व से ही घरो मे होली के पकवान बनने शुरु होते हैं जिसमे खाजा, साकली, नमकीन सेव इत्यादि प्रमुख हैं। होली के दिन अक्सर चूरमा या लापसी बनती है व होली के दूसरे दिन सायं पर्व का भोजन होता है, जिसमे सभी प्रकार के व्यजन बनाए जाते हैं। होली के तीसरे दिन साय "जमडा" पर दाल के बडे बनते हैं जो सर्व प्रथम चीलो व कुत्तो को चुगाए जाते हैं। कुत्तो को बडो के बचे तेल मे हलवा बना कर भी खिलाया जाता है।

जिस घर मे पिछले साल भर मे पुत्र जन्म हुआ होता है वहा ढूढ मनाई जाती है। वह बिल्कुल बरात की प्रतिलिपि होती है। बच्चे को दूल्हे के रूप मे सजाया जाता है। स्त्रियाँ ब्याह के गीत गाती ढोल के साथ "डाडारोपण" के स्थान पर जाती हैं। बच्चे को उसके इर्द गिर्द चार फेरे खिलाए जाते हैं, औरतो को नारियल दिये जाते हैं, व दहन के पूर्व ही डाडारोपण के स्थान पर नारियल इत्यादि

चढाए जाते हैं। बच्चे का दूल्हे का वेष उसके ननिहाल से आया करता है। अन्य रिश्तेदार भी बच्चे हेतु वस्त्रो के रूप मे उपहार देते हैं। इनाम इत्यादि बाँटे जाते हैं। सारे समाज मे नारियल वितरण किए जाते हैं। होली की गेरे पचपदरा मे विभिन्न रूप से मनाई जाती हैं। गैरे, नृत्य व गान की विभिन्न शैलियाँ है।

1 महाजनो की गैर मे युवक आगी धारण करते थे। आगी करीब 40 मीटर कपड़े के घेरदार वेश मे बनती थी। सिर पर राजसी पाग जो अनेक प्रकार की अर्थात फडकिया, वागावदी इत्यादि होती थी। पाग मे तुर्रा व कलगी लगाते। तुर्रा दांई वाजू ऊपर रहता तथा कलगी वांई वाजू कान के पास लटकती। पाग पर सिरपेंच वधता। गले मे पुरुषो के पहनने के गहने अर्थात मोतियो के हार, कंठी, काटला, लड, चदनहार इत्यादि होते। हाथो मे पुणचियाँ, माठियाँ इत्यादि होती। गैर हेतु नगे पैर रहना पडता। दो लवी छडियाँ व उन्हे हाथ में पकड़ने के स्थान पर रगीन कोर गोटा से सजे रेशमी रुमाल और कमर मे केसरिया कमरवद होता। वडा तवू तान दिया जाता व उसके इर्दगिर्द वैतो को हाथो मे लेकर दोनो तरफ ढोलो की ताल के साथ, गोल एडी पर नाचते हुए, ताल मिलाते हुए घूमते। ताल मिलाने का भी एक निश्चित क्रम 6 प्रकार से होता। नृत्य का एक क्रम करीव 20 मिनट का होता। जिसके पश्चात सभी जाजम पर वैठ जाते और गीत गाते व यही क्रम पुन शुरु होता। अवसे 15 वर्ष पूर्व तक यह गैरे चल रही थी, इन वर्षों मे विभिन्न कारणो से वद हो गई हैं जिसमें कपडो व सामग्री का व्यय मुख्य है, युवको का व्यापार हेतु वाहर जाना भी एक कारण है। गैरियो को आर्थिक दृष्टि से समृद्धशाली लोग पहनने को गहने इत्यादि देते थे, परन्तु गैर मे कभी आर्थिक अतर की अनुभूति नही होती थी।

इस गैर को लोग अपने घर पर भी वुलाते थे। घर पर या तो नियमित रूप से 2-3 समृद्धशाली परिवार वुलाते थे, अथवा जिसके पुत्रजन्म होता वह विशेष रूप से वुलाता था। सभी को वादाम पिस्ते डाल कर रवड़ी जैसा दूव पिलाया जाता जो "दूदिया" कहलाता था। सभवतया यह दूदिया नाम वच्चे से सवध रखता है, क्योकि दूदिये को सवोधित करते हुए गैरिये व स्त्रिया होली के गीत भी गाती हैं। पचपदरा की महाजनों की यह गैर तो प्रसिद्ध थी पर यही गैर खारवालो, पलीवालो व सुनारो मे भी होती थी।

2 डडिया नाच—प्रत्येक व्यक्ति हाथो मे छोटे-छोटे डडे लेकर एक से एक, एक से दो, एक से तीन अथवा एक से अनेक के रूप मे ताल मिलाते हुए नाचा करते हैं। यह नाच भी विभिन्न स्थितियो व विभिन्न प्रकार से होता है। यह नाच खारवालो, वनजारो इत्यादि मे काफी प्रचलित है।

3. पानी की गैर—एक चौक के वीच मे पानी का कडाह भर दिया जाता है व उसमे रग डाल देते हैं। स्त्रियां कौडे हाथ मे ले लेती हैं व पुरुष पानी की डोलची। पुरुष डोलची कडाह से भरकर झपट्टे के साथ स्त्रियो पर डालते हैं व स्त्रिया कौडे की वार से उन्हे पानी तक आने से रोकती हैं।

4 चग की गैर—चग की आवाज के साथ गीत गाते, झूमते, नाचते लोग घर-घर जाते हैं। इनके साथ पुरुष, स्त्रियो का वेष धारण कर नाचते जाते है। कई पुरुष अनोखी वेशभूषा पहने, हाथ मे विभिन्न अनोखी चीजे लिए नाचते हैं।

5. होली का साँग—विभिन्न वेशभूषाओ मे अनेक रूप बना कर पुरुष, स्त्रियो और पुरुषो के जोड़े बना कर नाचते चलते व गीत गाते हैं। पचपदरा मे कुम्हारो का साग प्रसिद्ध है।

पादशाह का मेला :

इन गैरो के अलावा पचपदरा का पादशाह का मेला किसी समय बहुत प्रसिद्ध था। इस मेले मे एक व्यक्ति को पादशाह बनाया जाता। उसे एक पालकी में बिठा कर चार व्यक्ति उठाते। उसके सामने गुलालो का अबार रहता। वह गुलाल उछालता, जुलूस के रूप मे निकलता। सामने मिलने वाले मुजरा करते व वह उन्हे इनाम मे गाव या रुपये बख्शने की घोषणाये करता। वेशभूषा उसकी पूर्ण बादशाह जैसी होती। आगे चौबदार, नगारा, निशान झडे इत्यादि चलते। कोतवाल भी साथ होता, जिसे वह किसी के द्वारा बेअदबी होने पर दड देने की आज्ञा देता। अत्यत उल्लास से सारे गाव मे चक्कर काट जब प्रारभ के स्थान पर मन्दिर के किनारे पालकी से उतर कर नीचे आता तो लोग उसके पीछे जूते लेकर भागते। फिर महफिल, ठडाई, पान इत्यादि होते।

पत्थर व जूतों की गैर :

बालोतरा मे होली के दूसरे दिन सुबह जूतो की गैर का रिवाज है। बाजार मे दो दल दोनो तरफ खडे होकर एक दूसरे पर पुराने फटे जूते फेकते हैं। आने वाले जूतो को लाठियो इत्यादि से रोकते भी हैं। पूरी मोर्चा बदी का यह खेल करीब 2 घटे चलता है।

जालोर मे इसी प्रकार की पत्थर की गैर होती है।

ढोल पर नाच :

यह अलग-अलग पुरुषो व स्त्रियो दोनो वर्गो मे चलता है तथा पारम्परिक प्रकार के नाच, ढोल व थाली की लय पर होते हैं।

होली मगलाने गाव के लोग ढोल के साथ इकट्ठे हो जाते हैं। गावाऊ होली मगलाने के पश्चात मौहल्लों मे होली जलाई जाती है। लोग पोल देखकर जहा भी लक्कड पडे होते हैं उन्हें जला देते है व रात्रि भर मस्ती की फबतियें कसते, जवानी की उमग व जोश का प्रदर्शन करते, लकडे डालते रहते है। होली की ज्वाला के शकुन भी लेते हैं। ज्वाला सीधी हो, बिना हवा हो वर्ष अच्छा आवेगा। ज्वाला किसी दिशा विशेष की ओर झुकती हो तो वह क्षेत्र अच्छा पकेगा व तेज हवा से होली के प्रभात सूर्योदय व चद्रमा के अस्त होने के दृश्य पर भी शकुन लेते हैं।

दूसरे दिन का रिवाज पचपदरा व जसोल मे अन्य गावो से भिन्न है। पचपदरा तथा जसोल मे दूसरे दिन प्रात अच्छे कपडे पहन, लोग हकुमत अथवा रावली कोठरियो मे रामासामा करने जाते है व साथ ही प्रमुख परिवारो के यहा भी रामासामा होती है। रामासामा मे सूखी गुलाल काम मे ली जाती है। घुला अफीम एक दूसरे को दिया जाता है। साथ ही जिन परिवारो मे किसी के देहान्त के पश्चात पहला पर्व हो तो वहा बैठने भी जाते हैं। पर्व का विशेष भोजन इसी दिन शाम को होता है।

तीसरा दिन जमडा कहलाता है अर्थात "यम का दिन"। उस दिन दाल के वडे वनाए जाते हैं। मीठे गुलगुले चीलो को चुगाते हैं व कुत्तो को तेल का सीरा खिलाते हैं। घर मे तेल जलाना आवश्यक माना जाता है। इसी दिन धुलेडी निकलती है। यह धुलेडी वालोतरा मे दूसरे दिन प्रात ही हो जाती है। धुलेडी मे रग, राख इत्यादि सभी काम मे लेते हैं। हर व्यक्ति को घर से निकाला जाता है व रग कर साथ लेते हैं। बेचारे गधे की विशेष शामत आती है। परन्तु विशेष वात यह होती है कि जिनके घर में वृद्ध मृत्यु को काफी समय हो गया हो उनका शोक तुडवाया जाता है। सामाजिक दृष्टि से जीवन की यह परपरा अत्यत स्तुत्य है।

आखातीज

वाडमेर जिले का दूसरा महत्वपूर्ण त्योहार आखातीज है यह पर्व भी तीन दिन वैशाख की अमावस्या तथा वैशाख शुक्ला द्वितीया व तृतीया को मनाया जाता है। इस त्योहार को शकुनो का त्योहार भी मानते हैं। तीनो दिन वाजरे का खीच व गुड की गलवानी तथा गवारफली का साग वनता है।

तीज के दिन सभी लोग प्रमुख स्थानो पर रामासामा हेतु जाते हैं। इन प्रमुख स्थानो पर घुला अफीम तैयार किया जाता है। अफीम लेने वाला व्यक्ति ने कितनी वार हाथ आगे किया, कितने रग दिये, जहा की इच्छा थी वहां अफीम की मनवार हुई या नही इत्यादि के आधार पर शकुन विचारता है। अफीम देने वाला व्यक्ति सर्वप्रथम इच्छित व्यक्ति ही अफीम लेने आया नही, रग देने वाला चारण या सेवग इच्छित प्रकार से रंग देता है या नही, कितनी वार यह मनवार मानता है, इत्यादि पर शकुन लेता है।

कुम्हार ऐसे अग्रणी स्थान पर कच्ची मिट्टी के पांच कुल्हड वना कर लाता है। उन्हे चारो ओर वालो को वच्चे से असाढ, श्रावण, भादवा, आसोज के नाम कु कु से किसी एक पर विन्दी लगवाकर रखे जाते हैं। वीच का थव अर्थात पूर्ण वक्र माना जाता है। पानी लगने के पश्चात कौनसा कुल्हड पहले विखता है इसी के अनुसार वर्षा व फसल का अन्दाज लेते हैं।

अनाज की पाच ढेरियां बाजरा, गेहूं, मूग, मोठ व ज्वार की करके उन पर गुड की डलिया रख दी जाती हैं। मक्खी आकर किस पर पहले बैठती है उसी से वर्ष की फसल का अनुमान लगाते हैं।

रामायण, कल्पसूत्र व पासो से भी शकुन मदिरो मे लिए जाते हैं। धर्मग्रथो से क्षेत्र अथवा देश के शकुन लेते हैं, व्यक्तिगत शकुन धर्मग्रथो से लेना उचित नही समझा जाता।

इस दिन कही भी भोजन का न्योता मिलने पर कोई इन्कार करना अपशकुन माना जाता है। एक-एक व्यक्ति थोडा-थोडा 20-25 स्थानो पर भी खा लेता है। इस दिन भोजन मे सात धान का कुटा हुआ खीच, घी गुड की गलवाणी व साबुत बडी का बिना झोल का साग तथा ग्वारफलो का छाछ मे साग बनाने का रिवाज है।

दिन को लडके-लडके या लडकिया-लडकिया दूल्हे दुल्हन बनकर शादी के गीतो के साथ घर से घर घूमते हैं तथा वे जहा जाते है वहा उन्हे उपहार मे पैसे या गुड दिया जाता है।

जैनियों मे यही दिन आदिनाथ भगवान के सेलडी के रस से बारहमास की तपस्या के पश्चात (पारणा) आहार ग्रहण करने के दिवस के रूप मे विशेष उत्साह से मनाया जाता है। अनेक स्त्री पुरुष वरसी तप करते हैं, जिसमे एक दिन उपवास व एक दिन भोजन होता है, और इसकी समाप्ति का पारणा महोत्सव के साथ शत्रुजय या अन्य तीर्थ स्थानो पर किया जाता है।

दीपावली

दीपावली के पुण्य-पर्व की तैयारी, विजयदशमी के पश्चात प्रारम्भ हो जाती है। घर-आगन को साफ सुधार कर, उन पर लीपा पोती होती है। दीवारो को विभिन्न चित्राकर्षक भित्ति-चित्रो से सुसज्जित कर, उन पर अनेक रगो से पुष्पादि चित्रित किए जाते हैं। इसी क्रम मे आगन पर साखिये व माडणे भी, जो अनेक प्रकार के होते हैं, वनाए जाते हैं तथा जिसमे लाल रग की पृष्ठभूमि निर्मित कर श्वेत रग से सुसज्जित किया जाता है। तत्पश्चात इन माडणो पर, उनके मध्य मे, चार वर्तिकाओ का दीपक रखा जाता है। प्रभातकाल मे घर के बाहर निर्मित माडणो पर, ज्वार की फूलिया, काचरे, छोटे वेर इत्यादि की सामग्री चढाई जाती है।

पचपदरा मे, दीपावली के शुभ दिवस पर पूजन के पश्चात समस्त स्वजनो के यहा मिष्ठान से पूरित थाल भेजे जाते है और इस क्रम मे मनो मिष्ठान खर्च हो जाता है।

पचपदरा मे इस पर्व पर अनेक प्रकार के शकुन लिए जाते है और इनमे से अधिकाश शकुन रोशनी पर आधारित होते है।

लक्ष्मी पूजन के समय पचपदरा मे स्वर्ण तथा रजत सिक्को को लक्ष्मी माता का प्रतीक मानकर वर्तिका को मा शारदा का प्रतीक मानकर तथा कलम एवं स्याही को मा काली का प्रतीक मानकर उनकी पूजा तथा अभ्यर्थना की जाती है। यहां यह तथ्य स्मरणीय है कि आधुनिक प्रगतिशील युग मे तो सभी आवश्यक वस्तुए आसानी मे उपलब्ध हो जाती है, जिनमे स्याही भी एक है, किन्तु प्राचीनकाल मे भी स्याही को घर मे घोटकर तथा भलीभांति छानकर निर्मित किया जाता तथा उसकी बड़े चाव से पूजा की जाती थी।

दीपावली पर 'जैनियो' की वही की लिखावट, स्वयं मे एक विशेषता लिए हुए होती है, जिसका नमूना निम्नांकित है :—

(स्वास्तिका, रिद्धि-सिद्धि व शुभ नाम को कु कुम या केसर से अकित किया जाता है।

| श्री गुणेशाय नम·
| श्री परमेश्वराय नम·
| श्री जिनेश्वराय नम.
| श्री महावीराय नम.
| श्री जिनेन्द्राय नम

卐

।। .।। श्री गौतमस्वामी नमो नम: श्री भरत चक्रवर्तीजी तणी पदवी, श्री बाहुबली जी तणो बल, श्री अभयकुमारजी तणी बुध, श्री गोतमस्वामी तणी लबध, श्री धना सालभद्रजी तणी रिध, श्री केवनाजी तणो सोभाग, श्री कुबेरजी तणो भण्डार सदा भरपूर रहीजोजी, श्री महालक्ष्मी महाराज रिधि सिधि बल बुधी लब्धी पदवी सोभाग आवजोजी, श्री महालक्ष्मीजी महाराज रो पूजन आज मिती काति वद अमावस शुभ लगने अमरत रे दुघड़िये मे घणे ठाठ बाट सू कीनो छै, आ वही श्री आनन्दजी कल्याणजी री रोकड रोजमेल री वही छै, सोना चांदी सराफा रो धंधो छै, दुकान मे भागीदार सा आनन्दजी नै कल्याणजी छै, आज रो बजार भाव इण मुजब है।

अन्य त्योहार

पचपदरा मे भी त्योहारो की एक विशेष परम्परा है · होली, आखातीज व दीवाली तो प्रमुख पर्व है ही उनके अतिरिक्त कुछ और त्योहार है —

१. सीलसातम :

शीलपील दो देवीयो का ठडे भोजन के पकवानो से पूजन, जिसमे खेजडी की डाल, कनेर के फूल वाजरा की ठडी छाछ व खीच कुलर, (बाजरी का सतू का आप) वला (बाजरी के भीगे दाने) व इसी तरह के ठडे व्यजन काम मे लेते हैं। दो पत्थरो पर सील पील की मूर्तिया बना कर उन्हे पूजते हैं। वच्चों को चेचक के प्रकोप से वचाने हेतु माता की कृपा की इच्छा की जाती है। पूजन सामग्री कुम्हार के यहा देने जाते हैं। औरते माता की वात करके गीत गाती है।

२. घुड़ला :

होली के पश्चात दस दिन तक वालिकाएँ या नव विवाहित स्त्रिया छेदो वाले घडे मे दीपक रख शाम के समय गीत गाती हुई घर घर घूमती है। घरो से उन्हे पैसे दिए जाते है जिसकी वे अन्त मे दावत करती है। आखरी दिन घुडले का विसर्जन तालाव मे होता है।

३. दौलीया :

होली के दसवे दिन सुहागिने जिन्होंने व्रत ग्रहण किया हो वह दौलिया पूजती हैं। चौबीस सुहागिन स्त्रियो को भोजन करवा कर वस्त्र दिये जाते हैं। दौलीए की वात की जाती है। जो सुहागिन भोजन मे भाग लेती है उन्हे भविष्य मे अपने यहा भी दौलीया पूजना जरूरी होता है। वच्चे कार्यक्रम समाप्त होने पर दरवाजा वंद भाग लेने वालो स्त्रियो को पति का नाम कहने का आग्रह आमोद स्वरूप करते है।

४. चैत्री एकादशी :

गवर ईसर की मूर्तिये तहसील से जलूस के रूप मे निकल कर तालाब के किनारे मदिरो पर जहा मेला भरा हुआ होता है, लाई जाती है, उनका पूजन होता है। वालिकाएँ अपने घरो से भी गवर ईसर पूजन के लिये लाती है।

५. महावीर जयन्ती :

चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को जैन उपाश्रय से भगवान महावीर की प्रतिमा को पालकी निकाल कर गाव मे जलूस मे निकलती है साथ मे भजन कीर्तन भी होता है, लोग मूर्ति के समुख पैसा चढाते हैं।

६. हनुमान जयन्ती :

चैत्र शुक्ला 15 को रेवाडी के साथ हनुमान जयन्ती का उत्सव भी सपूर्ण ग्राम मे धूमधाम से मनाया जाता है। रेवाडी हनुमान जी के मदिर से निकल कर वही समाप्त होती है।

७. नरसिंह चौदस :

वैसाख सुदी 14 दिन मे मलूके काले कपडे व राक्षसी चेहरा लगाए हाथ मे कोडे लिए गाव मे भागते है व घर घर से पैसे वसूल करते हैं। वच्चे "मलूका डाकी" कहते हुए पीछे भागते हैं। शाम को तालाव पर नृसिंहजी के मन्दिर मे दरवाजे पर वने कागज के खभे को फाड नृसिंह का स्वरूप वनाए अवतार प्रकट होकर प्रहलाद पर हाथ फेरते हैं व मेले के लोग उनको हाथ जोड कर स्वागत करते हैं। आरती उतारी जाती है।

८. निर्जला एकादशी :

जेठ मास मे प्रात गाव के सभी लोग नाडी तालाव की मिल कर खुदाई कर मिट्टी फेंकते हैं। यह रिवाज जन सहयोग से तालाव खोदने का पीढियो से चला आ रहा है। दिन को ब्राह्मणो को शक्कर, फल, पानी छानने का कपडा, वस्त्र इत्यादि दान दिए जाते हैं। अनेक लोग व्रत करते हैं।

९. सावणियां तीज या छोटी तीज :

इस तीज का पचपदरा क्षेत्र मे वडा महत्व है। नवविवाहित युवक सुसराल मिठाई लेकर आता है। सालो को मिठाई खिलाता है। शाम को सभी युवक युवतियाँ तालाव पर इकट्ठे होते हैं। तालाव मे ककडी इत्यादि फल फेंके जाते हैं जिन्हे तैरने वाले युवक उठा लाते हैं। युवतिया गीत गाती हुई तालाव पर एकत्रित होती है। युवक-युवतिया के लिये यह दिन सुहागरात जैसा होता है। इसी दिन से झूले शुरु होते हैं। पचपदरा मे झूले दो मन्दिरो मे सजाये जाते हैं।

१०. झूलना एकादशी :

यह भाद्रपद मास मे एकादशी के दिन मनाई जाती है। श्री राधाकृष्ण की रेवाडी मन्दिर पर आती है तथा तालाव मे ककडी व अन्य फल इत्यादि फेंके जाते हैं। तालाव पर मेला लगता है स्त्रिया भी झूला झूलती हैं।

११. वड़ी तीज :

यह श्री कृष्ण के झूलने का आखिरी दिवस होता है जो सावन सुदी तीज से प्रारम्भ होकर पन्द्रह दिन मे समाप्त होता है। स्त्रियाँ व्रत करती है व चन्द्रोदय पर व्रत खोलती है। घरो मे वधुए सत्तू वनाती है।

१२. जन्माष्टमी :

कृष्ण जन्म का उत्सव कृष्ण मन्दिरो मे मनाया जाता है। प्रसाद मे धणिया इत्यादि की पजरी बना कर बाटी जाती है।

१३. पर्यूषण :

यह जैनियो के आठ दिन के त्योहार है। मन्दिरो मे धूम धाम होती है। व्याख्यान के बाद बताशे इत्यादि की प्रभावना बाटी जाती है। स्त्रिया गीत गाती हुई सब मन्दिरो मे आती है। जो स्त्रिया आठ उपवास (अठाई) करती हैं उनके घर-परिवारो मे विशेष धूम धाम होती है। सवतसरी के दूसरे दिन क्षमापना भी धूम धाम से मनाते हैं।

१४. नवरात्रि व दशहरा :

पचपदरा मे नवरात्रि अधिकाश घरो मे कुल देवी के पूजन हेतु मनाई जाती है। कई लोग नवरात्रि का व्रत भी रखते है। दशहरे के दिन श्री राम की रथ यात्रा के साथ सरपच, तहसीलदार इत्यादि गाँव के बाहर जाते है जहा रावण को लाया जाता है। पचपदरा साल्ट की देवी के मन्दिर मे हवन व मेला होता है।

१५. कार्तिक पूर्णिमा :

इस दिन साँय घरों मे दीपक जलाये जाते हैं।

१६. सक्रान्ति :

भगवान श्री सूर्य के पूजन हेतु गुड की गलवाणी व बाजरे का खीच बनाया जाता है। ज्वार के तीन डकोलो पर आगन मे आटा लगा कर सजा कर कुमकुम से सूर्य बना कर पूजन किया जाता है। तिल पापड़ी व तिल्ली के लड्डू भी घर पर बनाये जाते है। मूला विशेष रूप से खाया जाता है।

१७. शिव रात्रि :

शिव मन्दिर में जागरण के साथ शिव रात्रि धूम धाम के साथ मनाई जाती है। इस क्षेत्र मे शिव रात्रि के मेले मलवा महादेव, होटलू महादेव व गोयणा की पहाड़ियो में धूम धाम से मनाते है।

पचपदरा की दो लोक कथाएँ

—सुश्री शांति सालेचा बी. ए.

[पचपदरा की लोक-कथाओं का अद्यावधि संग्रह नही हुआ है। लोक-गीतों एव लोक-कथाओ की दृष्टि से विपुल सामग्री आज भी लोक-कण्ठो में सुरक्षित है। यहां हम दो लोक-कथाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो हास्य एव व्यग्य की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।]

बात सूरजी री—

सूरजी मे राणादे। मा थाल पुरसँ। चौसठ पकवान सूरजी नँ नँ राव राणां दे री। राब पीता राणां दे छ महीना हुवा। एक दिन सूरजी जाय नै पाडो खोलियो। मा, मां पाडो वावैं। राब सूरजी पीदी नै चौसठ पकवान राणां दे नै दिया। सूरजी राव पी नै ऊगवा नैं गिया। राणा दे थाल ले नें ऊपर गी। सासू कहियो वह इतरी जेज काई लगावैं। राणा दे कहियो के राव ठरे जद पियां। साझ हुई, सूरज भगवान री मा वाट जोवैं। मारो वेटो अजे आयो कोनी। लडखडियो खातो वेटो आवैं। वेटा थनैं आज लडखडिया किया आवे। दुनिया मे कांई काल सुगाल है। मा काल है तोई थारैं घरैं नें सुगाल है तो तोई थारैं घरैं। घन है राणा दे नैं। छ छ महीना राव पीदी। मैं तो एक दिन पीदी उणमें ई लडखड़िया आवैं। ए वेटा थनैं राव कठैं पाई। माता थारैं घरैं वापरी नँ म्हैं पीदी। काई करू वेटा धान ओछो घणो मेले सजे कोनी। मा बादी हाडी खावो काणउ सजे। हाथउ आटा वाले नैं आटो दो, कांणा वाले नें कीणो दो। हाथी नैं मण टो कीडा नें कण दो। घणा वाले नें घणो दो नें थोड़ा वाले नैं थाडो दो। सूरजी धान लायनैं मेलियो सैंगां नै दिया। धान घणो ही घणो हुवो।

× × × ×

पोपों बाई रो अदल नीयाव—

जूना जमाना री बात है। खेड मे पोपो बाई राज करता हुता। राज मैं रीत हुती कैं बाराऊं माल लेनैं आवतो उणरो दोण लागतो। एक मनख मतीरा लेनैं वेचवानैं आयो, राज रैं कणव रियै दोण मागीयो। मनख पूछ्यो काऊ दोण लागैं। कणवारीयैं कहियो तेरैं मतीरा। मनख कहियो कैं मू तो वेचवा नै सात होज लायो हूं। कणवारीयैं कहियो राज रो धारो है तेरे मतीरा इज़ दाण रा लागैं। कणवारीयो ने मनख लडिजवा ढूका। लडिजता लडिजता पोपों बाई रैं कनैं गया। पोपा बाई कहियो बोला रो। लडाजो मतो। अठै थोंरो अदल नीयाव वेंही। मनख कहियो बापजी मू तो सात मतीरा इज वेचवा नैं लायो हूं ने ओ तेरे मतीरा दाण रा मागे। कीतरो अनीयाव है। पोपा बाई कहियो थू साव साची कैवे। हमे थू कै रैं कणवारीया काई बात है। किया बापडा नैं दैण दे। कणवारीये कहियो घणी खमा अन्नदाता आपरो हुकम है कैं दोण रा तेरे मतीरा लागसी। मू आपरैं हुकम नैं कीकर टालू। थू ई साव साचो कै। पछै मनख नै कहियो कै देख रे भाया अठै पोपोंबाई रो राज है। अदल नीयाव वेंही

थू ं सात मतीरा ईज लायो है तो कोई वात कोनी । सात ता मतीरा दै दे नै बाकी छ रा पैइया दै दे । बापडो मनख आपरा सैंग मतीरा नै गाठ रा पैइया खाली करनै गयो । जातो जातो हाको कीदो जै पोपा बाई रै अदल नीयाव री ।

बीजोडे दिन मनख हाटों मे गयो नै हाको कीदो लो मू ग, लो मू ग । पैइया रा पची पायली । सैंग जणा देखीयो कै मोला मू ग मिलै । सौदा नूंदावा ढूका । थोडी वेला में हुबारा कलसी रा सौदा नू दीज गया । मनख बीजोडे दिन माल लावा रो कै ने परो गयो । बीजोडे दिन परभात रा साड मातै एक पोटकी मू गो री बोदने आयो । सैंग वाणीया हाका करवा ढूका । लाव मू ग भराव । मनख कहियो लो मू ग सभालो । मनख ऊदी पायली मारने मू ग भरवा ढूको । वाणिया कहियो इयां काई करै । पायली समी भरीजै कै ऊदी । मनख कहियो कै मारे तो ऊंदी भरवा रो ईज धारो है । हमे वाणीया ने मनख खडवडिजवा ढूका । नै लडीजता लडीजता पोपों बाई रे राज मे गया । पोपो बाई पूछियो कै काई वात है । वाणिया कहियो कै पायली सदामद समी भरीजै । श्रो सौदो नटवाने ऊदी भरै । मनख कहियो कै माथो पड जाये तोई जबान नी हारू । मू माल भरावा नै तैयार हूं पर मारे तो ऊदी पाइली रो ईज धारो है नै मैं तो मारे धारा ऊ ईज सौदो कीनो है । पोपो बाई कहियो अरै भला मिनखा लडोजो मती । म्हारै राज मे ईज थानै नीयाव न मिलो तो पछै कठै मलसी । थांरी समी पाइली जावादो नै थारी ऊदी जावा दो । आडी पाइली ठौरम ठोर करनै माप दो । आडी पाइली ठौरम ठोर करताई पायली मे मू ग रो दाणोईनी रैतो । वैपारियो ने बापड़ो ने पूरा पैइया देणा पडीया नै वो मनख आपरी सोंड माथे रुपीयो रो बोरो भरै ने लेगीयो । वीर वैता उणे हाको कीदो "जै पोपो बाई रै अदल नीयाव री ।"

खेड रै पाय गौपडी नै वैदरलाई वै गांम पै पै आयोडा है वसमैं पाटोधी रो मारग व्है । एक वार औठी नै धाडैती आया अर गोपडो वैदरलाई नै चू थ ली । गाम वाला जाय नै पोपो बाई नै अरज की दी । गौपडी, वेदरलाई चू थीज गई, पोपों बाई बोलिया कै राडा कवैला री वारै क्यूं निकली थी । लोके कहियो कै अन्नदाता लुगाइयां नी है, गोम है गोम । जदै पोंपा बाई पाछो फरमायो कै गांम है तो सीम मे क्यूं बसीया था । लोक मूडो लैयनं नै पाछा वलीया । जातां 2 हाको कीदो "जै पोंपा बाई रै अदल नीयाव री ।"

पचपदरा की पांच व्रत कथायें

–श्रीमती भगवती गहलोत एम ए.

पचपदरा का क्षेत्र प्राचीन समय से शक्ति उपासक रहा है। पांच भद्राओ की मान्यता लोकप्रिय रहने के कारण ही सारे क्षेत्र का नामकरण पंचभद्रा हुआ जो कालांतर मे मुख सुख के कारण उच्चारण मे पचपदरा हो गया। इस क्षेत्र मे अनेक देवियो के थान (पूजा स्थान) बिखरे पडे हैं। ग्रामीण लोक-समुदाय इन थानों पर अपने वार्षिक मेले भरता है और परिवार के प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रसग पर इन थानों की 'जात' (साक्षी) देकर पूजापा-(अपर्ण सामग्री) चढाता है।

पचपदरा की इस शक्ति उपासना की परम्परा मे वैष्णव भक्ति पूजा भी समा गई। दर्शन की दृष्टि से यदि व्याख्या की जावे तो यहां की धर्म (व्रत-माहात्म्य) कथायें किसी एक समुदाय के अन्तर्गत नहीं रखी जा सकतीं। उनमें भक्ति के माहात्म्य का प्राबल्य ओत-प्रोत रहेगा। लोक व्रत कथा के तन्तु उनके उपदेशात्मक रूप की ओर सकेत करने मे स्पष्ट हैं कि करणी (कर्म) का फल ही घटनाक्रम का मुख्य आधार है।

पचपदरा की लोकव्रत कथाओ की विविधता और अनेक-रूपता की बानगी प्रस्तुत करने के लिए, यहां पर चार कथाओ (वातो) को प्रस्तुत करते हैं। यह वाते लगभग सभी जातियो द्वारा अपनाई हुई हैं। पचपदरा क्षेत्र के निवासी कृषक श्रमिक और व्यापारी वर्ग के लोग हैं। यह लोग धनिक भी है और रोज अपनी रोटी कमाने वाले भी है। परन्तु सभी धर्मप्रिय। वैष्णव, शाक्त और जैन सम्प्रदायो के अनुयायी होते हुए भी इनको तथा इन व्रत कथाओ को समान रूप से अपनाते हैं। इसका कारण भी सरल और बोधगम्य है। मानव जीवन के कुछ ऐसे आवरण है जो नवनीत की भाँति समाज-सथन मे मथन से अंत मे ऊपर आ जाते हैं। इन मे विशुद्ध लोक-मानस के स्वरूप के दर्शन होते हैं जो सास्कृतिक पीयूष ही होता है।

इन व्रत कथाओ मे लोक-मानस, कथारूप, अभिप्राय, कथा-मानक आदि लोक-वार्ता के निर्माण तन्तुओ के दर्शन तो होते ही हैं पर इन सब से परे कथाओ मे उपयोग की दृष्टि से उनकी सार्थकता भी प्रकट होती है। प्रत्येक कथा में चमत्कार है, दिव्य अथवा दैवी शक्ति का हाथ है पर इसे सबकी आवश्यकता किसी निर्णय को स्थापित करने हेतु है। मानव समाज में समानता, कर्म-फल मे विश्वास, श्रद्धा, सत्यमार्ग का पालन आदि प्रचलित रहे, स्थापित रहे, यही इन कथाओ का बोध है।

इन कथाओ का प्रचलन रहे और इनके माहात्म्य को जीवित रखने के लिए 'वात' (व्रत कथा) कहने वाला, अंत मे अपनी 'मागणी' (याचना-अभिलाषा) भी व्यक्त करता हैं। यह मांगणी इतनी व्यापक है कि हर वर्ग अथवा स्तर के व्रता (महिला) की अभिलाषाओ को समेट लेती है। आखिर मे लोक मानस की अभिलाषा भले ही भौतिक सुखो की कामना करे पर उसमे मुखरित स्वर लोक-मंगल का ही रहता है। यह चार

व्रत कथायें और 'मागणी' (अभिलाषा) इस प्रकार हैं—

(1) राम लिछमण री बात

(2) होली माता री बात

(3) गिनगौर री बात

(4) शीलपी री बात

(5) मांगणी।

राम लक्षमण री बात—

राम ने लक्षमण अढाई चावल ने कलसीयो दूध रो लेते सारे सेर मे फरे। कोई खीर रांघो कोई खीर रांघो। "कुण रांधे" "गाव रे छेवाडे डोकरी बैठी जका रोघी"। "डोकरी-डोकरी खीर रांघ," के घणी राघू बावजी। दूध ने चावल दी दा। रामजी सनोन करवाने गया ने लक्षमणजी मद्द री माखी वे ने भींते रे परा छेंटा। डोकरी खीर राघणी माडी। डोकरी कोरी खादी, काची खादी, भीजवी खादी, सिनती खादी, राघती खादी, उफनती खादी खाये खाये रे घरो की दो। एक कटोरो भरने आगो मेलीयो तोई रोमजी री तोमणी अखूट री अखूट। राम नें लकसमण घरे आया डोकरी डोकरी थाल पुरस। दो थाल पुरसीया। "एक थाल, फेर लाव"। सदाई मोरा माता पीता ने जीमाए ने जीमो आज थनें जीमाएने जीमो। को तो बावजी साच बोलू को तो बोलू कूड़। डोकरी साच मे सेंग हैं नें कूड में घूड हैं। मैं तो सीनती खादी भीनती खाती, काची खादी कोरी खादी खा खा ते घरो की दो। सोते रो छरीयो ने रूपा री दडी पाटीये हेठे घरे ने राम लकसमण परा गया। डोकरी लारे दोडी 'बावजी अ सोने रो घटीयो ने रूपा री दडी मारे घरे नी फाबे, आपरे घरे फाबी। डोकरी है तो थू सत वाली बोल थने दूठो' बावजी, कोई दूठो धन मांगू तो चोर लेगे वर मांगू तो दुनिया चरचा करे, पूत मांगू तो परो मरे। डोकरी रो छोकरी करो, खीर खाड मोकली करो, करची ने कडायो दो, सोने रो अरटीयो दो, रूपा री पूणी दो बैठी बैठी कातू, मनचाया भोजन करु रोजरा माल मसाला खाऊ। सदाई ले-ले ने खादो, गाव रो ढेरो खादो किनेई दी दी कोनी आज नगरी नेतरू नगरी नेतरी गाव, ने तेडो दीदो थालो कोरी लेने आईजो, डोकरी रे घरे जीमा आईजो। सेग दुनिया चरचा करे काले डोकरी भूको मरती आज डोकरी काई खवाई। डोकरी घाती घोई सनोन सपाडा करे ने तैयार हुई ने सेग नगरी ने जिमाई। जीमा आवे जको जीमने जावे, ने देखवा आवे न कोई जीमने जावे। राजा रो आदमी देखवा आयो। एडाकडची कडायला राज मे फावे डोकरी रे घरे नी फावे। राज मे लावो। डोकरी डोकरी कडछी कडायला दे के इण मेही घणो देखीयो जको एई नही सुहाया तो लेने जावो' कडची कडायला राज मे ले गया। राज मैं नगरी नेतरी सेग राखले जीमा आईजो। घी घाने तो घी बले, तेल घाले तो तेल बले, गुल घाले तो गुल-बले, बले न भसम वे। सेग के डोकरी तो घणाई जीमाया अठे आठीरो दन अठी आयो ने जीमा रा कोई पता न बीजा हाल कोई तेडवाने ईनी आयो। राजा वाला के डोकरी ने तेडो कोई बात हुई। डोकरी कयो हुता वाला ई रोवे ने अणुता वाला ई रोवे, साल भायो री बेन घणेरी रोवे, मने तो रामलकमन टूटा था डोकरी थारो कडची कडायलो घरे भेज माने नेता तेडा कर ने नगरी जीमा ने घरे भेज। डोकरी रामलकसमन री वात की

दी ने बतीस भोजन तेतीस पकवान करेने नगरी जीमाई । कडची कड़ायला घरे लेगीया । डोकरी ने तूठा जेडा हेंगो ने टूजनो ने राजा ने टूठा जेडा किने ई मत टूठजो ।

होली माता री बात—

बहन नैं भाई होली माता रो वरत उजमे बहन बोली भाई मू तो करुं रसोई, तू होलां लेने आ जको मू वरत उजमूं । भाई होला लेवा नैं गयो । बीच में सौ वरस रो गोगाजी बैठा था । आहुको पार करता था, भाई उने ससकारियो । ससकारियो जरे गोगाजी कीयो, ऐ पापी दुष्टी तू मनैं क्यू सुसकारे रैं, मूं तो सौ वरसों रो आयुको पार कर तो थो । मूं थनैं खाऊ भाई कैवे ओ बावसी अठै मती खाओ, मारैं बहन बहन रैं होली माता रो वरत है । होला लेने पाछो जाऊं तो मारैं मारैं रैं विठोलीजजो परा । गोगाजी भारे रैं विठोलिजीया रा । भाई घरैं आयो । कोठा रैं पास मे भारो लाए नैं राख दियो ने चुपचाप आयैं ने सो गयो । बहन कैवे-भाई सूतो क्यू, उठनैं होला बाधेंनी । भाई कैवे-थू थारैं बाप रा मारो मायो दुखे । मारुं नी बाधीजैं । बहन होला बाधीयो । बौवि बधाए, नैं फूफा भैलो करैं भाई नैं कीयो । भाई हालैं नी ओपै होला सैंको । भाई कैवे—मारो जी सोरो कोनी । थु थारैं सेक रा । बहन फूफा भैला करैं नैं धकं दीदो कै मारैं भाई रा वैरी दुपटी व्यैं जको भैला आयैंने बलजो । गोगाजी आयनैं सगणा-सगणा करता बलवा लागा । बहन कैवे ऐं बावजी आप क्यूं बलो ? गोगोजी कहियो कै थारैं भाई रो वैरी थो, दुसमी थो तो मूं ही थो जको मूं हीं बलू । मूं बलू जरे सोना रो सांकलो व्हैला जको पेहरलीजे रो । बहन साकलो पैहरे नैं भाई नैं उठावा गई कै भाई-भाई उठ ओपे वरत उजमों । भाई सौमी देखीयो नैं कीयो कि ए वैन यू सोना रो सोंकलो कठा सूं लायो । चोरी की दी कै भारी । कै घर फाडीयो काई ? काई जीव रैं दैंग कीनी । वैंन कीयो मैं तो काई घर नी फाडीयो । मैं तो अरक दीदो कै मारैं भाई रा वैरी दुसमीं व्हे जको मैला बलजो रा, जको गोगोजी आयनैं बलिया । सोना रो साकलो हुओ जको मैं पहरीयो । पछै भाई वैंन दोही जग होली माता रो वरत कीदो । ऐ बावजी । भाई वैंन ने तूठा जैडा मोंनें ही चोथा भाग तूठजो ।

गणगोर री बात—

शकर ने पार्वती । तीज रो तेवार आवे जरे पार्वती तीज रो व्रत राखे । पीर मु बुलावो आयो के सगार अठेईज लेवजो । पार्वती वरत करण ने जावे तो शकर देव केवे के मै भी साथे चालू । गौरा दे ना करे के आतो लुगायों रो वरत होवे आप कठे साथे चालो । शकर देव जिद्द करे के थे जावो तो मैं भी साथे चालू ना । गोरा दे साथे शकर भी आपरे सासरे गया । जितरो खाणोवणियो सब शकर देव जीम लीयो । लारे काई नी वचीयो सिवा बथुआ री पींडोली रे । पार्वती री मां केवे के बाई लारे काई नही वचियो आपा नवो खानो बणावो पार्वती वेवे नहीं मा, मैं तो बथुआ री पीडोली ले ने पाणी पी ने ही सगार ले लेऊ । पार्वती बथुआ री पींडोली खा ने माथे एक लोटो पांणी पी लीयो । रात रो सूवतो वगत शकर पार्वती ने पूछे के गौरा दे आप काई जीमीया पार्वती केवे भगवान आप जीमीया वो मे ई जीमीया शकर जी क्वे नही सही सही बतावो, पार्वती

केवे मैं सही सही वेघू के आप जीमंया वो मे भी जीमीया। गौरा दे सूता ने नीद आईगी। सिवजी सूटी रो ढकनो खोलने देखोया तो मांय एक लोटे पाणी में बथुआ री पींडोली तरती थी। सवाररों गौरा दे उठीया तो सिवजी केवे के गोरा दे थे मारे सामे झूठ वोलीया थांरे पेट में तो लोटे पांणी मे बथुआ री पींडोली तरती थी। गौरा दे कयो हे भगवान आज थे मारो पेट उगाड़ीयो जको जगत रो ही उगाडो। मारो उगाडोयो तो काई नही पण जगत रो मत उगाडजा।

शील-पील री बात —

शील पील दो बेनो थी। सारे सेर मे फरे, कोई ठाडो सीरो घालो, ठाडो सीरो घालो। कुण घाले, रावले मे जा पगे उठे घ लिला। बलतो भनतो घोडो रे जावडो घ लीयो। हाथ मे लीधो हाथ बलीयो, पेट मे खादो पेट बलीयो। उठा सू कुंवार रे घरे गई कुम्हारण ने कया ठाडो सीरो घाल। कु बारण कयो—मारा सासू सोरा घरे कोनी माता पूजवा गया है। 'थू वे जकोई डोलो डाकलो वोए धाए मे घाल, पाछो आसार दे ने मेलदे।" उणे ठाडो ठूडो घाल ने आसार दे ने मेल दियो। जावतो कयो सारी नगरी मे ला लागी, थारो घर कोलं रेई। "मारो घर कोलं मत राखो मारी धा कोलं राखो।" थू अमी री धार दे ने जितरो राखणो वे राखले।" उणे काचे दूध री बास मे धार दीदी। राजा री नगरी बलबा ढूकी। राणियो रा चीर वलीया, कुंवरो रा मोलीया वलीया, घोडो रे आखो मे फुलीया उठया, वडारणो रा बेडा फूटा, नगरी आखी पदे उतरी। राजा ऊंचो चढने जोवे तो सेग नगरी बले, एक कुम्हारी री धा कोलं। राजा छूटे छल्ले, अलवांणे पगे कु वारों रे घरे आयो। "थारी वा कौले कीकर रही।" मे तो म ता पूजवा गया था, मोरे नेनकोडे बेटे री वहू घरे थी उणने पूछो"। वेटे री बहु ने पूछीयो जद केयो के शील पील दो बेनो आई थी, रावले मे वलतो भलतो घ लीयो, हाथ मे लीधो हाथ बलीया, पेट मे खादो पेट वलीयो, वले बले ने फोफला हुआ जदे सराप दी दो। मैं ठाडो सीरो घालीयो ने काचा दूध री धार दी दी जदे धा कोली रही। "हमे वे मातावां कठे"—"खोखे खेजडे हेठे बैठी है।" राजा माता रे पगे गयो। सील पील जूं लीक करती थी। राजा ने देख ने अपूठो फरी। पापी दुरासी थारो मू डो कुण देखे।" "माता भूलो-चूकों ने मारग घालो थे ही देखीयो ने थे ही देखओ, हमे माता कांई करणो।" "ओ अमी रो कूंपो दू नगरी मे फेर, नगरी सोवनी हो जाई। हाली लारे शील सातम आवे नगरी मे सातम री ने रावले आठम री पूजजे, ढोल बाजतो गीतो गावतो। नेना री मा सात दिन ठाडो खाइजो बीजा दो दिन।

माँगणी-

सुश्री शाती सालेचा बी ए

शील माता री वात कीदी, पील माता री वात कीदी
दौलीया री वात कीदी, गवर री वात कीदी,
थैल भेलीगे भादरवे उजमीयो, पाच लाड्डू परगट कीजे छठा रो भोजन कीजे
पालोयो पीपल नवलखी वाडी, वात कीदी सीता-रामजी रो नारी

सीता रामजी रे चवदे वेटा, कातती आई, नाचती आई, पीपल पूजती आई
पीपल पूजे रानादे राणी, ज्यो ने मिलीया सूरजजी भरतार
छडकल छडकल छड़कलीयो, छड़कलीयों ने छड़वा इसतरीयो ने घरवा
—ज्योरी रामजी पूरे आस

टीनी दे, झमका दे राणी, आ माता आ दे खाटीमोली छा दे,
घीलोडी मे घी दे, तेलोडो में तेल दे, कोठीये कनार दे,
मोनीये मंडार दे, वाटकडी रो वीरो दे, घोडे चढीयो वाप दे,
करतीणे री माँ दे, सारणीयें सूत दे, पारणीये पूत दे
सायवजी ने राज दे, पूतो रो परवार दे, कल वहुओं रो
झूलरो दे, राते चुड़ले वेन दे,
सावलीयो वेनाई दे, तलसी थाने-भरीये-मांगे-मरतो री वेला मुख चौलडीयो दे।

पचपदरा की शब्द सम्पदा

डॉ० मदनराज डी० मेहता

भापाए और वोलिया स्वभावत सरिता की अनाहत-अवाध धाराओ की भाति निरतर गतिमान रहती हैं। अनेक वाह्य प्रभाव स्वीकार करते हुए भी वे अपना व्यक्तित्व बनाए रखती हैं।

युद्ध, विवाह-सवध, व्यापार-वाणिज्य एव शासन के प्रभाव से एक भाषा दूसरी भाषा के अनेक नए शब्द ग्रहण करती है, अपने कतिपय परपरागत शब्दो को परित्यक्त करती है और साथ ही साथ प्रचलित शब्दों मे अर्थ परिवर्तन करते हुए प्रगति करती रहती है। यह बात पचपदरा की शब्द सम्पदा पर भी पूर्णत लागू होती है। अपने सुदीर्घ इतिहास मे पचपदरा की वोली ने भारतीय भाषाओ का शब्द भण्डार, मूल अथवा परिवर्तित रूप मे प्राप्त किया है अथवा विदेशी भाषाओ के शब्द ग्रहण किए।

पचपदरा घुमक्कड वनजारा व्यवसायियो का प्रमुख केन्द्र रहा और बनजारा लम्बी-लम्बी यात्राओ से लौटते समय अपने साथ अनेक विदेशी एव प्रातीय शब्दो को अपनी शब्दावली मे स्वीकार करते रहे। यही कारण है कि पचपदरा की बोली मे हिन्दी की भाति केवल तत्सम्, तद्भव अथवा देशज शब्द ही नही हैं, ऐसे अनेक शब्द हैं, जो वगाल, पजाव, सिंध प्रभृति प्रदेशो से आए हुए हैं।

पचपदरा की शब्दावली मे सामान्य स्तर के शब्दो की व्यापकता है। सामान्य स्तर के शब्द ग्रामीण वोलियो और शिक्षित लोगो की भापा के वीच कडी के रूप मे महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन शब्दो का मुख्य आधार आस-पास की भापाए और वोलिया होती है। आवश्यकतानुसार विदेशी भाषाओ के शब्द भी ग्रहण किए जाते हैं।

शिक्षित व्यक्तियो की भाषा मे अन्य भाषाओ से गृहीत शब्द प्राय. शासन व्यवस्था एव आवश्यकतानुसार कम काम मे आने लगते हैं, इसलिये वे अस्थायी होते है, किन्तु ग्रामीण वोलियो मे विदेशी शब्द अपेक्षाकृत स्थायी होते हैं। पचपदरा की शब्दावली पर विदेशी प्रभाव आज भी दिखायी देता है।

पचपदरा निवासियो मे अव धीरे-धीरे ग्रामीण शब्दो का महत्व कम हो रहा है और साहित्यिक हिन्दी शब्दो की व्यापकता वढती जा रही है। इसका मुख्य कारण है कि अनेक लोग प्रदर्शन, फैशन एव रोव के लिये प्राय साहित्यिक शब्दो का प्रयोग अधिक करते है।

पचपदरा की वोली मे भरतियो, खारवालो, खातियो, किसानो, मोचियो की अपनी-अपनी परिभाषिक शब्दावली है। योन कर्मों, निषिद्ध कार्यों, अभद्र एव असभ्य वातो से सवधित अनेक पुराने

शब्द भी आज जीवित हैं। यद्यपि इन शब्दो के प्रयोग से बचने के लिये प्राय प्रयत्न किया जाता है और लाक्षणिक शब्दो का व्यवहार किया जाता है, फिर भी इस प्रकार के शब्द विभिन्न स्तरो के लोगो मे प्राय चलते रहते हैं।

ऐतिहासिक व्युत्पति की दृष्टि से पचपदरा की शब्दावली को हम दो बडी श्रेणियो मे विभाजित कर सकते हैं – भारतीय एव विदेशी। माता, भक्त, पुस्प, पूजा, वाण, खेत, दही, नीद, बूद, मा, साग, अमावस, दरसन, धरम, नितनेम, नीत, रतन, साध, देवता आदि तत्सम और तद्भव शब्दो के अतिरिक्त पचपदरा की वोली मे पजावी, मराठी, गुजराती, वगाली, सिंधी और कोल भापाओ से अनेक शब्द गृहीत किये गये हैं। पंजावी से सिख, गुजराती से हडताल, मराठी से गूण और पटेल, वगाली से रसगुल्ले, गमछो और छतरी, सिंधी से साई और माई तथा कोल से हाडी।

पचपदरा की वोली मे आदि-काल से अनेक विदेशी शब्द समाविष्ट होते रहे हैं। तोल सम्बन्धी 'मण' शब्द वेबिलोन के 'मिना' शब्द से व्युत्पन्न माना जाता है। युनानी भापा से इस वोली में द्रख्मे से दाम, सेमादालिस से 'मेवा' और तुर्की शब्द 'तेगिन' से 'ठाकर' प्रचलित हुआ। पचपदरा की वोली मे तुर्की शब्दो की वहुत वडी सूची है। कुछ शब्द इस प्रकार हैं :—

वादर, कलगी, कोरमो, चकमक, चकू, तुरक, तोप, दरोगो, मुचलको। फारसी भापा का पचपदरा क्षेत्र मे विशेप व्यवहार होता रहा। सुलतानों और मुगलो के काल मे सिवाना और खेड़ सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण समझे जाते थे। 16वी शताब्दी के बाद पचपदरा की शब्दावली मे फारसी शब्दो की सख्या वढने लगी और एक प्रारभिक सर्वेक्षण के आधार पर कहा जा सकता है कि पचपदरा मे आज भी एक हजार फारसी शब्द व्यवहार मे आते हैं। यहा कुछ शब्दो का उल्लेख ही पर्याप्त होगा। जैसे . आदमी, वच्चो, हवा, जमी, आइस्ता, मालम, नजीक, सवर, कसूर, सरम, हिसाव-किताव, सिपाई, फोज, मोज, मजो, मुरदो।

फारसी के साथ अनेक अरवी, तुर्की एव मध्य एशियाई शब्दो ने पचपदरा की शब्दावली मे स्थान ग्रहण किया। मुगलो के शताब्दियो तक के शासन से इस प्रकार के शब्दो की व्यापकता वढना अस्वाभाविक नही है। धार्मिक एव सास्कृतिक — इमाम, ईद, काजी, कुरान, खुदा, खेरात, मोलवी, रोजो, हज, हाजी। शासन सम्बन्धी — अदालत, कानून, गवा, जमानत, तनखा, तोप, दावो, पेसी, मुकदमो, मुनसिफ, सरकार, सिक्को, वकील। शिक्षा — कलम, दवात, किताव, कागद, स्याही। अन्य — कारीगर, कसाई, कारखानो, दर्जी, दलाल, दुकान, मजूर, जुलाब, थुकाम, तंवूरो, तेजाव, दवा, मलम, कुरतो, रजाई, रुमाल, रकैवी, जलेवी, पिस्ता, कुर्मी, सुरमो, कमर, कालजो, कवूतर, खरवूजो, अगूरी, गुलावी, वदामी, कमीण, पाजी हरामी, ऊमर, खुसामद, गर्मी, जिद, जोर, नखरो, नुकसान, वदलो, वेगार, असली।

पचपदरा की नमक की खानो की देख-रेख के लिये अंग्रेज अधिकारी एक दीर्घ अवधि तक रहे

और उनके सम्पर्क मे विभिन्न वर्गो के लोग रहे। शिक्षा शासन एवं व्यवहार मे जब अंग्रेजो का प्रभाव व्याप्त हो गया तो अंग्रेजी पचपदरा की शब्दावली पर भी छा गई।

अपील, अरदली, इस्टाम्प, गारद, जज, जेल, पुलिस, वारट, समन, इजन, टेसण, टिगस, बिल्टी, मेल, इस्टेशन, राशन, सिलेट, इस्कूल, पेण, पेंसल आदि अंग्रेजी शब्दो के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अनेक यूरोपीय शब्द भी पचपदरा की शब्दावली ने गृहीत किए। अचार, अलमारो, कमीस, काजू, काज, गोदाम, तम्बाकू, परात, परेक, फीतो, वालटो, प्रभृति पुर्तगाली शब्दो के अलावा कुछ फ्रासीसी शब्दो का पचपदरा मे व्यवहार होता है।

किसी भी बोली को कुछ लोग समाज की उपज मानते हैं और कुछ लोग समाज का अग। शरीर के किसी अग के समान बोली समाज के विकास मे सहयोग देती है। विचार का साधन होने से वह समाज की उपज भी होती है। पचपदरा निवासियो ने अपनी बोली को अपने अग के रूप मे स्वीकार किया। उन्होने इस बोली की अपने अग की भाति ही रक्षा की और उसे सशक्त एव गतिशील बनाए रखने के लिये सहवर्त्ती समाज से अनेक शब्द ग्रहण किए।

पानी के अभाव मे पलने वाले इस क्षैत्र मे पानी सम्बन्धी अनेक शब्दो का प्रचलन विस्मयकारी है। नदी, नाला, कु ड, तलाब, टाका, बेरा, जौड, बावडी, कोइटा, पीच आदि शब्दो के अतिरिक्त यहा बादल के लिये बादल, बादली और मेह आदि का प्रयोग होता है। जब नदी मे पानी की मात्रा बढती है तो 'कडिया, गोडा, कमर ने छाती ताई, पदो से यहाँ के लोग पानी का माप करते हैं। आदमी की ऊचाई तक पानी का माप तार कहलाता है। पानी की आवाजो के लिये कलकल, छपाकणो और गरजणो शब्द काम मे आते हैं। प्रकाश और अधकार को सूचित करने वाले पलको, चिलको, चमकणो, उजास, तावडो, जोत, अधारो, छिया जैसे अनेक शब्द हैं।

पचपदरा की बोल चाल की भाषा मे रगो की तो छटा ही निराली है। राता, पीला, लीला, सावला, गेहूँवर्णा गोरो, जवाई, चम्पाई, कसूबल, बदामी, सलेटी, गेरुओ, जोगियो, केसरिया, गुलाबी, सिन्दूरी, अगूरी, सूआ-पखो, कथाई, बेंगणी, कबूतरी जैसे रगो के प्रभाव को प्रकट करने के लिये फबणो, जचणो, हलको पडणो आदि शब्दो से शब्दावली की सम्पन्नता का आभास होता है।

धरती और उसकी फसलो की विविधता का बोध कराने वाले शब्दो की यहा चर्चा करना समीचीन होगा। मगरो, मुडवाली जमो, दुम्मट काली, भखभूरी, धोरेवाली, खारी, तावे तालर प्रभृति भूमि के प्रकारो का लोकोक्तियो मे भी उल्लेख मिलता है। 'मू ग मगरा मे नै तिल तालर मे' एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है। फसल के बोने के सात-आठ दिन बाद की वर्षा को परालू उमरा कहते है। हसिया को दातरड़ो और हसिया से फसल को काटने के लिये 'सटिया लेगा' कहा जाता है। दूसरी बार 'सटिया लेणा' की क्रिया को सल्ला लेणा कहा जाता है। तिल, बाजरा, मूग, मोठ आदि झड जाने वाली फसलो को 'एडक' कहते हैं। बुवाई के लिये हल से 'फाडा' दिया जाता है और जमीन को सपाट बनाने के लिये 'सोकणी' दी जाती है। तीसरी बार हल चलाने को 'बातोल खडाई' कहते हैं।

गेहूँ की वालो को होले कहते हैं तथा होलो को वाधकर मोरडे वनाए जाते हैं। वाल को ऊम्बी भी कहते हैं। हल का निचला हिस्सा लोहे की मोरख और पणसियो से जडा हुआ होता है। हल के ऊपर मीडकी होती है, जिसे पकडकर हल को ऊपर नीचे किया जा सकता है। 'हाल' लकडी की 9 से 11 वेंत लम्वी होती है जिसके आगे गाथणे लगे होते हैं और नीचे 'फासिया' डालने का छेद होता है। जुताई को जोतरणो कहते हैं। कृषि एव कृपिजन्य व्यवसायो से सम्वन्वित शब्दो की एक लम्वी सूची है।

भोजन सम्वन्धी शब्दावली की विशेपता का आभास अलग अलग समय पर किये जाने वाले भोजन के निश्चित नामो से होता है। सवेरे का नाश्ता 'सिरामण', दुपहर का 'वेपारो' और शाम का भोजन 'व्यालू' कहा जाता है। विवाह के अवसर पर वर को प्रात. 'कवर कलेवा' कराया जाता है। रास्ते अथवा खेत मे पहुँचाया जाने वाला भोजन 'भाता' कहा जाता है। साग को 'ओलण' और रोटी को 'वाटी' भी कहा जाता ह। एक वार मुँह मे रखा जाने वाला कौर 'कवो', पेय पदार्थो की इकाई को 'घूँटियो' एव अधीरता से खाने को 'गिटणो' कहते है। थाली मे वचे भोजन को ऐंटो, रात से ज्यादा देर रखे भोजन को 'वासी' या 'वाई' कहते हैं। वाजरी इस क्षेत्र की प्रमुख उपज है, इसलिये वाजरी से अनेक व्यजन वनाए जाते हैं। वाजरी की वालें सेककर उसके दाने खाये जाते हैं, जो 'सेकियोडो पूंख' कहलाते हैं। रात मे भिगोकर रखे जाने वाले वाजरी के दानो को 'वला' कहते हैं। वाजरी के आटे की रोटी को 'सोगरा' और खस्ता पतली रोटी को 'खाखरा' कहा जाता है। वाजरी के सोगरे का चूरमा घी-गुड मिलाकर वनाया जाता है। वाजरी के आटे को सेककर उसमे शक्कर मिलाकर 'कूलर' वनाई जाती है। वाजरी का हलवा सीरो', सत्तू 'सातू' और वाजरी के कच्चे दानो से वनने वाला हलवा 'वाजरी रै पूखाँ रो सीरो' कहलाता है। वाजरी को कूट कर छाछ मे पका कर 'घाट' वनाई जाती है। वाजरी के आटे में छाछ मिलाकर थोड़ा पकाकर 'राव' या 'पलेव', वाजरी को कूटकर पानी मे पकाकर 'खीच' वनाया जाता है और 'वाजरिया' खीच की भाँति पकाकर फिर छाछ मे पकाया जाता है। मकर सक्रांति पर वाजरे के साथ छ प्रकार के अन्य धानो को मिला 'सात धान रो खीच' वनाया जाता है। वाजरी के खीच मे नमक, मिर्च, मसाला व काचरियां मिलाकर 'वैस वारियो खीच' नामक स्वादिष्ट व्यजन वनाया जाता है। वाजरी को दो वार कूट कर उसमे मूग व मोठ की दाले मिला कर 'खीच' की भांति सेगठी वनाई जाती है। 'लेंगटो', 'पटोलियो', 'गलवाणी', 'ढोकला', 'खीचिया', 'धाडला' के अतिरिक्त वाजरी से 'सोडता' नामक सामिप भोज्य पदार्थ भी वनाया जाता है।

पचपदरा के जनजीवन से सम्वन्धित शब्दावली के सकलन का पूरा विवरण यहा प्रस्तुत करना सभव नही है इसलिये हम व्यवसायो, वस्तुओ एव सस्कारों से सम्वन्धित एक सक्षिप्त सूची प्रस्तुत कर रहे हैं :—

नमक-उद्योग सम्वन्धी शब्द :

अनतोरी खान : खान जिसमे मोराली नही डाली गई हो

अरणेटो	·	खड्डी का जमाव
आगेडियो		लम्बे डंडेवाला फावाड
आरो	.	छोटा फावडा जिससे नमक खीच कर किनारे पर किया जाता है
आरीयो	.	आरो काम मे लेने वाला मजदूर
आथमणो पानो		खान का पश्चिमी भाग
उडाण	·	उडने वाला कण
उगमणो पानो	.	खान का पूर्वी भाग
ऊडो		गहरा
ओडी	:	टोकरी
ओडवो	:	नमक के अशुद्ध जमाव को बाहर फेंकना
कज्जी	:	नमक के साथ जमने वाली अशुद्धता
कटलो	:	भरती के वाद लदान के लिये बोरियो का वजन जाचना
कनार आवणो	:	नमक निकालने के लिये तैयार खान
कट चीरणो		नमक की सतह को खोलना
कट लगाणो	·	खोडा वनाते के पूर्व ढेर की तैयारी
काटी	:	मोराली को झाडी
कूतो	.	खोडे के नमक का अनुमान
कोटगश	·	जमादार
खड्डी	·	खडिया (जिप्सम)
खान	:	नमक उत्पादन हेतु खनिज स्थान
खान खोदावणी	:	खान का खुदवाना
खान तीरणी	:	खान मे मोराली के काटे डालना
खान रो पाणी	:	नमक का भूमिगत जल-स्रोत
खान फूटणो	:	खान मे किनारा तोड कर वाहरी पानी का प्रवेश
खोडा पालो	:	ढेर (पिरामिड) वनाकर तह जमाना
खोडो	.	खान से निकले नमक का ढेर
खोडो खोलणो	:	लदान हेतु ढेर को तोडना
खोदाई	:	खान पर चढी मिट्टी हटाना

खानधणी : खान का मालिक

गरभ : बीच का भाग

गालणी . नमक निकालने के वाद स्रोत खोलने की क्रिया

चारोली केल्शियम सल्फेट के रवे

चुगणो / चुगाई करणी नमक मे से काटी अथवा अशुद्ध सामग्री छाँटना

चौकडियो : नमक के चौरस रवे

चौकी . सिपाहियो के रहने का स्थान

चोटी दारेसी करणी नमक का खोडा वनने पर ऊपर के भाग को पिरामिडनुमा वनाना

छोटो साभरो : नमक उत्पादन का एक क्षेत्र

झूपो . झौपडी

टीबी : उत्पादन की इकाई मे मुखिया का अतिरिक्त भाग

टीवो नमक व्यवस्थापक का कार्यालय

ठाडी खान . वह खान जहा नमक वरावर नही जमता

ठाडो हिस्सो खान का वह हिस्सा जहा नमक का जमाव वरावर नही होता

ठीकरी नमक के नीचे अशुद्धिया का कठोर जमाव

ढेरी नमक निकालते समय एकत्रित ढेर

ढीरा कांटे

डोवो . (पडतल) वद खान

तीर लेणो नमक को किनारे की ओर खीचना

तीण उत्पादक श्रमिको की एक इकाई

तीणिया एक इकाई के श्रमिक

तीण घालणी . उत्पादन प्रारभ करना

तान्नी . खोडा वनाने हेतु किनारे की जमीन

ताली वोरणी खोडा हेतु किनारे की जमीन वुहारना

तेलिया लूण तेल के समान चिपचिपा नमक

दाणा नमक के रवो की एक किस्म

दारेनी करणो . नमक के खोडे को ऊपर मे पिरामिडनुमा वनाना

दरीवो नमक उत्पादन क्षेत्र

घडो करणो	:	नमक का अनुमान लगाना
धोणो	.	नमक को खारे पानी मे साफ कराना
नमूनो पास करावणो	:	नमक के नमूने को खनन के पूर्व स्वीकृत कराना
नाम चढावणो		पिट डायरी मे नमक के मालिक का नाम दर्ज कराना
निकलाई	·	नमक निकालने की प्रक्रिया
पडताल खान	.	बन्द खान
पावडो	.	फावडा
पावडी	:	छोटा फावडा
पूछी	.	खान के किनारे
फूली	.	नमक की एक अशुद्धि
वर्रो	:	नमक की खान मे काम आने वाला औजार
वट करना	:	बाटना
वडो साभरो	·	नमक उत्पादन का एक क्षेत्र
वारे भाटा	:	सोमा के बारह पत्थर
वालद	·	माल ढोने वाले बैलो का समूह
वालदियो	·	बालद से माल ढोने वाला
वेसी		अनुमान से अधिक नमक और उसका मूल्य
वेलदार	:	गधो पर नमक ढोने वाला
भरती	.	लदान हेतु बोरियो मे नमक भरने और तोलने की प्रक्रिया
भरती करनी		लदान करवाना
मकियो	:	नमक का रवा
माकी	·	नमक की एक प्रकार को अशुद्धि
मुराठियो सेजो	.	नमक के पानी का बन्द न होने वाला स्रोत
मोराली		वे काटे जो नमक के रवे बनाने हेतु काम मे आते हैं
रवन्नो		नमक को खान क्षेत्र से बाहर ले जाने का सरकारी अनुमति-पत्र
रवन्ना भरणो		नमक की खरीद के लिये आवेदन
रेट	.	खार वालो को मिलने वाली नमक की दर
सागडो	·	नमक तोडने का औजार

हीरा गद : नमक उत्पादन का एक क्षेत्र
हेम : नमक की एक अशुद्धि

वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी शब्द :

आकडो तलपट
ओगी : बकाया माल की रकम
ओली उगरावणी : माल की बकाया वसूली
ओडैवो : चिट्ठा
उगाई : बकाया
खातो : बहियो मे व्यक्ति विशेष या जिन्स विशेष या आय-व्यय के मद विशेष का एक स्थान पर विवरण
खतामणी · प्रारम्भिक वही से मद मे ब्यौरा लेना
जमावंदी : नगदी जो माग पर वापस देने के आधार पर या मुद्दत पर जमा करवायी गयी हो
टकरावणी : खतौनी का मेल
रोज मेल : दैनिक रोकड हिसाब

लेन देन सम्बन्धी शब्द :

आंक : ब्याज की फलावट की इकाई
आसामी : जिसमे रकम बकाया है
छूट : बकाया पैसा छोडना
ब्याज फलावणो : ब्याज को फलावट करना
ब्याज चढावणो : खाते में ब्याज नाम मांडना
लेखो करणो : लेन देन का वही मे हिसाव करना
लेखा माथे जावणो : लेन देन वसूली हेतु जाना
नेतरो : सराफी या जमावंदी को रकम मंगवाना
वजार फरती रकम . वह रकम जो सराफी मे बाजार मे कोई व्यक्ति रखता है
सराफी : नकदी तात्कालिक आवश्यकता हेतु मगाई गई रकम
माहे वेणो : तिजोरी मे उपलब्ध राशि

फारगती	पूर्ण अदायगी पर दी जाने वाली रसीद
लेणे पेटे	बकाया पेटे दिया जाने वाला माल या रकम
वोरो	जिससे उधार लिया हो
वोरगत	उधार देने का धधा
तलाव पाणी रो सीर	कुछ भी लेन देन न होने की रसीद
खत	दस्तावेज जिसमे बकाया हेतु लिखा पढी होती है
खत माँडणो	बकाया का दस्तावेज लिखना
साखां घलावणी	गवाही के हस्ताक्षर

सिक्को के नाम :

कलदार	सिक्का
अदेली	आधा रुपया
पावलो	पाव रुपया
तरावलो	एक तिहाई रुपया
बेआनीयो	रुपये का आठवा हिस्सा
आनो	रुपये का सोलहवा भाग
आधा आनो/टको	दो पैसे का मोटा ताबे का सिक्का
पयो	ताबे का पैसा
दोकडा	रुपये का सौवा हिस्सा
	रुपये का दोसौवा हिस्सा
कोडिया	: कौडी, जो कभी सिक्के का सबसे छोटा रूप थी

गोप्य वाणिज्य शब्दावली :

अठाणूरी बाकी	दो रुपये का सांकेतिक शब्द
चढावो	: माल पर
समझावणी	गोप्य सदेश

माप-तोल शब्दावली :

आगल	अगुली का नाप

बेत हाथ	:	लम्बाई का दूसरा व तीसरा नाप जो हाथ से नापा जाता है (एक हाथ 21″ के बराबर होता है)
पाँवडा	.	कदम से दूरी का नाप जो पाच फीट के बराबर होता है
हलवा	:	दूरी का वडा नाप जो खेती की जमीन के आधार पर होता है
खेतरवा	:	दूरी का हलवा से अगला नाप
को	:	दो मील के बराबर दूरी का नाप
टोपाली	:	अनाज को मापने का सबसे छोटा माप
पाणो	:	अनाज मापने का माप जो चार टोपाली के बराबर होता है
पायली	·	चार पाणो की एक पायली जो दो सेर के बराबर होती है
माणो	.	चार पायली
मण	·	पाच माणा
कलसी	:	आठ मण
ओडी	.	छोटी घास (चारा) मापने का छोटा माप
ओडो	:	चारा मापने का माप जिसका व्यास बेंत से निर्धारित होता है
झाल	:	बैलगाडी मे भरा जाय उतना चारा
ताकडी	:	छोटा तराजू
ताकडीयो		मध्यम तराजू
तेखल	.	तीन पायो वाला तराजू
काटो	·	वडा तराजू
मणीको	·	एक मन
अध मणीको		आध मन
पाव मणीको	:	पाव मन
पसेरी	:	पाच सेर
ढाई सेरी	.	ढाई सेर
सेर		एक सेर
अदेर	:	आधा सेर
पाव	:	एक पाव
अदपाव		आधा पाव

ग्रानी	·	एक ग्राना
ग्रादी ग्रानी	.	ग्राधा ग्राना
पया भर	.	पैसे भर
धडो		वस्तु के तोल के पूर्व पात्र का भार तोलना

सोने चांदी के तोल :

काटी	:	सोना जवाहारात तोलने की तराजू
तोलो	.	तोला
ग्राधो तोलो	:	ग्राधा तोला
पावली भर	:	पाव तोला
दो ग्रानी भर	.	एक तोले का ग्राठवा हिस्सा
एक ग्रानी भर	:	एक तोले का सोलहवा हिस्सा
मासो	.	माशा
रती	:	रत्ती
मूग	:	मूग

ग्राभूषण सम्बन्धी शब्दावली :

स्वर्ण आभूषण पुरुषों के (ग्रग कोष्ठक मे ग्रकित हैं) – ग्रगूठियो (ग्रंगूठा), कठी (कठ), कदोरो (कमर), कांठलो (कठ), किलगी (सिर), गुर्दा (कान), जनेऊ (यज्ञोपवीत की भाति), पुणची (हाथ), पावलिया वाला बटन, बटन फूल वाला, बोरिया (वक्षस्थल), माठी (हाथ), मादलियो (भुजा), माला (कठ), मुरकिया (कान), मोतिया रो हार, लड़ (कठ), लू ग (कान), वीटी (ग्रगुली), सिरपेच (शीश), साकलिया (कान)।

स्वर्ण आभूषण स्त्रियों के (ग्रग कोष्ठक मे ग्रकित है) – ग्राड माथेरी (शीश), गेडी डोरो (शीश), बोर (शीश), राखडी (हाथ), टीको (ललाट), सोसफूल (शीश), ग्रोगरिया (कान), झेला (कान), झूमका (कान), टोटिया (कान), साकलिया (कान), फीणी (नाक), नथ (नाक), चू का (दात), चनणहार (कण्ठ), वारलो (कण्ठ), तमणियो (कण्ठ), मोरा रो हार (कण्ठ), झालरो (कण्ठ), तेवटो (कण्ठ), ठूसी (कण्ठ), मू ठ (कण्ठ), वजर कण्ठी (कण्ठ), हामली (कण्ठ), कातरिया (हाथ), गजरा (हाथ), कडा (भुजा), चूडिया (हाथ), तीवा (जोडने वाली), गोखरू

(हाथ), कडा वाघ मुखा (हाथ), वाजूवन्द (भुजा), पुणचियो (हाथ), नोगरिया (हाथ), चीपा (पत्तिया), काकणिया (हाथ), दामो (दो अगुलिया) ।

चाँदी के स्त्रियों के आभूषण – कडियां (पाव), कडलिया (पाव), जोडा (पाव), तोडा (पांव), नेवरिया (पाव), विछूडिया (अगुली पाव की), पोलरिया (पाव), रमझोला (पाव) ।

पशुधन सम्बन्धी शब्द :

भेड नाम . लर्डी, गाडर, लर्डो, ससो/अणियो, घेठियो, मिंडो ।
वकरी नाम वकरी, घोनो, घोनी, टाटो, वकरियो, अमर वकरो ।
नस्ल सूचक शब्द वूनी, लापडी, मजिठी ।
ग्वाल नाम : ग्वालियो, गवारियो, रवारी, देवासी, राइको ।
समूह नाम छाग, एवड, धन ।
वालो के नाम जट (वकरी के वाल), ऊन (भेड के वाल) ।
अन्य शब्द जोटी (ऊन का छोटा वन्डल), ढेरी (हाथ से ऊन कातने का यत्र), लव (भेड की ऊन), लवलेणा (भेड से ऊन काटना), मिंगणिया (भेड वकरी का गोवर), वाडो/खोडो (भेडें व वकरियो को रखने का स्थान), धन पावणो (भेडो को पानी पिलाना), खाजरू (वह वकरा जो देवी-देवताओ को वलिदान करने के काम आता है) ।

ऊँट नामावली
आयु के आधार पर . ऊँट, खीरो, टोडियो, ऊँदत, पागल, दो दातो, ढागो ।
रग के आधार पर भूरियो, तेलियो, रातो, कालो ।
उपयोग से भारियो, पखालियो, जाखी साड (नस्ल हेतु काम आने वाला साड, ऊट), चढाई रो ऊँट, ओठिया रो ऊट, भाडेती ऊँट ।
शारीरिक अवस्था के आधार पर : भागोडो ऊँट, खीजियोडो, खागतो, पायलो (चर्म रोग से ग्रसित) ।
चाल के आधार पर . ढाण चालणो, राह मे चालणो, तापडियो, चौपगो ।
शरीर के अग . थूवी, नोह/गलो, हियो, थापो ।
ऊटो की साज सजावट के उपकरण : जोर्ड, पणचियो, फूला वालो पणचियो, गांदियां, पिलाणं/आनो (थडा, आण, रदो, घायो, पागडा, तग, हादी, झूमरा वालो, लूम्बा वालो) । कवडालो, गरघूँघर माल, गोरवन्द, नेवर, घूघरा, मुरो, मोरी/वेलछो,

टोपी, पू छ वन्द, दामणो, वोरो चमर, रदो।

ऊट सम्बन्धी कुछ
अन्य शब्द : अरडावणो (ऊँट की आवाज), ऊट खूटना (ऊट की कमर से बाल साफ करना), कतार (ऊट की पंक्ति), नाल (रेगिस्तान मे ऊटो का रास्ता), नोल (ऊट के पैर मे लोहे का कडा), पखाल (ऊट पर पानी लाने का साधन), गोडै पग देणो (चढते समय खडा न हो जाय इसलिये घुटने पर पाव रखना), जैखणो (ऊट को बैठाने की क्रिया), कामडी (बेत), फल (साढ का बच्चा होना), चक्की पिसणी (चलते हुए ऊट का गुस्सा होकर सवार पर झपटना), बेरडो (बहुत क्रोधी ऊट), पलावणो (ऊट को सजाना), सुतर सवार (ऊट का सवार), टोलो (चराने के लिए झु डो का टोला कहा जाता है), पालो, नीम, अडियो ग्वार तटी (फलगटी) व पानडो (ऊट का मुख्य चारा है), तेल व घी (ऊट की ताकत वढाने के लिये दिये जाते हैं), फिटकडी व गुड (लम्बी सफर के वाद थकान उतारने हेतु दिया जाता है), मद निकालना (ऊट को बहुत ज्यादा भगाने पर ऊट की गुदी मे से निकलने वाला काले रग का तरल पदार्थ।

अश्व नामावली :

रग के आधार पर : कमेत, भवर, लीलो, काग्डो, मऊओ, अबलग (काबर), सुरग।

चाल कोथलीकर, तरराट, बडगडो, चोर।

आयु के आधार पर · वच्चो, वछेरो, बछेरी, घोडो, घोडी।

उपयोग कर्त्ता · साणी, चानक, असवार।

साज एव आभूषण पछाडी, अगाडी, मूरो, टोपी, तुर्रो, लगाम, बाग, गरकोल, जेरवन्ध, मकियारणो, जनोई, झालरो, काधेरो, गल घू घरमाल, नेवर, दमची, पडची, डली खोगी, काठी, खालपोश, फराकी, पागडा, चियार जामा इत्यादि।

वनस्पति नाम :

पेड -- आकडो, कैरडो, कूमट, खेजडी, गूदो, गूदी, जाल, झाऊडो, थोर, नीमडो, फोग, वावलियो, बोरडी, रोहिडो ।

घास — अकवडो, तांतियो, भागरी, भरुंट, लोणो, लाणी, सणिया, साटो, सिवाण, बुरिया, भुरठ, खीप, सिदो, मोहथ, मोतियो, कडव, खारियो, ढूई, खाखलो, ग्वारतरी, पानडी, पालो, लूग, बुई ।

फल — राई वोर, वडवोर, ढालू, पीलू, गूदियां, गूंदा, काकडी, मतीरा, तूम्वा, खोखा, चिमडिया ।

अंत मे, मैं यही निवेदन करूंगा कि पचपदरा की शब्द सम्पदा का यह परिचय न तो पूरा है न सर्वांगीण । इस परिचय से शब्द समृद्धि के अन्वेषको को इस वोली के वैज्ञानिक अन्वेषण की आवश्यकता अनुभव होगी और पचपदरा वासियो को अपनी वोली की सम्पन्नता से प्रसन्नता होगी ।

लोक–संस्कृति के चार प्रमुख केन्द्र
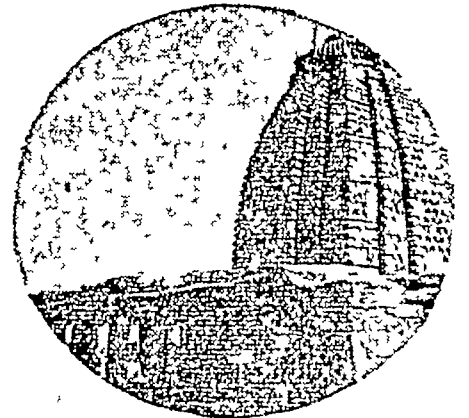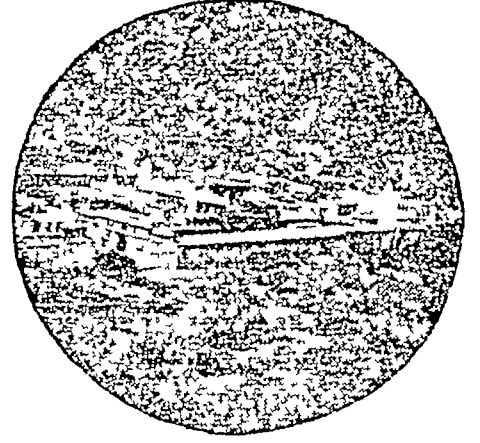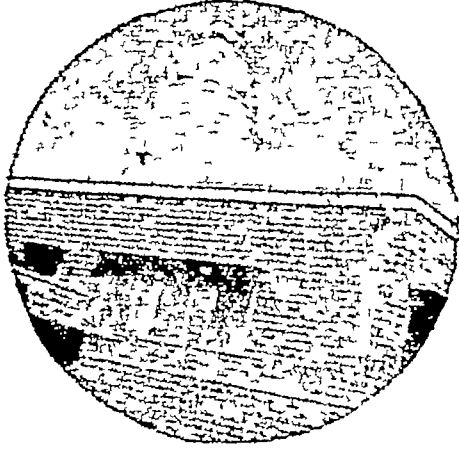
मरुभूमि का एक दृश्य
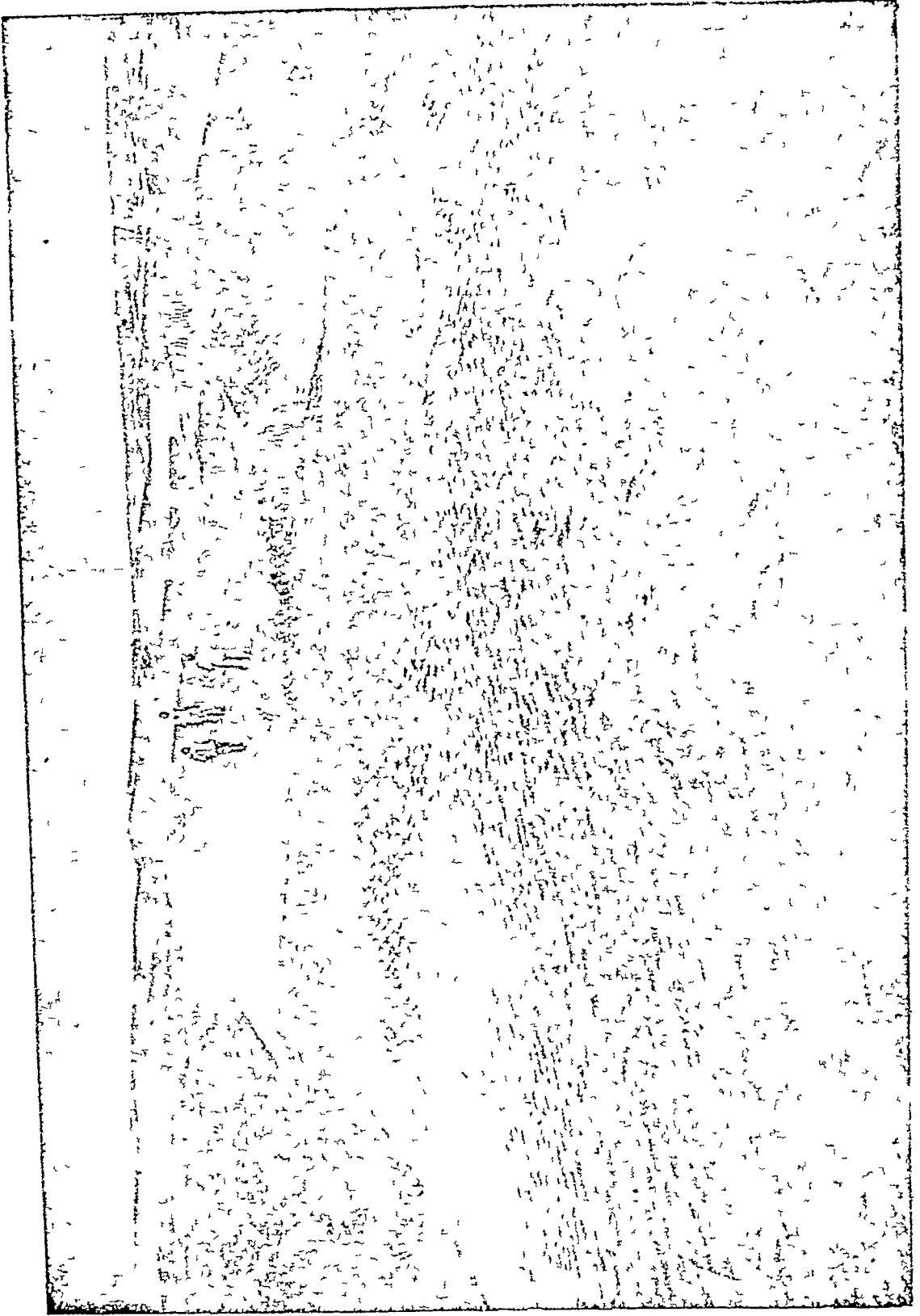
सेठ श्री गुलाबचन्द अभिनन्दन ग्रंथ

खण्ड ६

सीमान्त प्रदेश का विकास व वैभव

संपादक डॉ (श्रीमती) कृष्णा मोहनोत

सेठ गुलाबचन्दजी सालेचा

मरुभूमि का हृदय स्थल : बाड़मेर

-श्री भूरचन्द जैन

रेगिस्तान की यह वजर और परती धरती ! सदियो से यहा आदमी ने अभावो में जूझने के लिए सघर्ष किया है। रेगिस्तान की गोद मे बाडमेर, अपने ऐतिहासिक गौरव को अक्षुण्ण रखकर इतिहास के पृष्ठो को खोल रहा है। वाडमेर का इतिहास यहा के आदमी के सघर्षो का इतिहास है।

यह वाडमेर शूरवीरो की भूमि है। यहा मर्यादा स्वत: ही बोल उठती है। नाम लेते ही प्राचीन गौरव गाथाएें आंखो के सामने नाचने लग जाती हैं। इतिहास अमर हो उठता है व दुश्मन जिनके नाम से कापने लग जाता है। वीरो की मूछे मातृभूमि की रक्षार्थ वल खाने लग जाती हैं। विशाल रेगिस्तान, कटीली भाडियां, ठूठ वृक्ष, बजर भूमि, दुर्गम मार्ग, गहरा पानी और उतने ही गहरे यहा के आदमी। सैंण के लिये सदा सिर पर कफन बाधे तैयार तो दुश्मन के लिये धधकते अगारे। दस हजार आठ सौ अठहत्तर वर्गमील रेतीली तपती धरती, छन छन करती लूएें, ग्रीष्म ऋतु मे वरसते अगारे, शीत मे कडाके की सर्दी, वर्षा मे बू दाबादी, कण-कण मे रण भैरवी का गान, चप्पा-चप्पा सावधान, जर्रा-जर्रा कुर्वानी, जगह-जगह शहीदो के स्मारक एक सौ अस्सी मील सीमा से सिमटी हुई भूमि, जो चेतन, सजग एवम् सचेत पहरेदार है। अरावली की गोद मे हराभरा सिवाना, लूनी की तलहटी पर बसा बालोतरा, पानी का प्यासा बायतू, बाडमेर एव शिव, थार पार कर पशुओ की खान शिव व चौहठन, साचोरी पशुओ की देन घोरीमन्ना एव भिणधरी एव जिसके उत्तर मे रणबाकुरे राजपूतो की मयार्दा का प्रतीक जोधपुर व वीर भाटियो की की भूमि जैसलमेर। दक्षिण मे शूरवीरो की ऐतिहासिक भूमि जालोर जहा, 11 वर्ष तक अल्लाउद्दीन खिलजी को भी वीर रणबाकुरे शूरमाओ की शूरवीरता से टकरना पडा था और मीलो फैला हुआ कच्छ का रन, जहा न कोई पेड न पौधा, सफेद चादर जिसकी छाती पर बिछी हुई है। पूर्व मे वही जोधपुर जिसकी तलवारो की चमक से दुश्मन के दात खट्टे हो जाते थे, औद्योगिक एव विकासशील पाली और जालोर की सीमा। पश्चिम की तरफ पश्चिम पाकिस्तान का थार पार कर जिला जिसे, सदा इस वीहड भूमि के वहादुर लोगो से कपकपी लगी रहती है।

गठीला डील-डोल नुकीली नाक, चमकता माथा, लाल आखें, फडकती भुजाएें, सदा सर्तक कान, पीयूस वाणी घुटनो तक ऊ ची धोती, बदन पर अगरखी, गोलाकार पगडी, कमर मे वधा अ गोछा, कानो मे गोखरु, गले मे कठी, पैरो मे कडा और बाडमेरी जूती, हाथ मे बीटी, सवारी दाडी, वट दीहुई मूछे, और हल्के गोरे वदन का रेगिस्तानी पुरुष, जिसकी मस्त चाल को देख दुश्मन कापने लग जाता है।

गठीला डील-डोल, गोरा वदन, साँचे मे ढले अ ग, हिरनी सी चाल, गुलाबी चेहरा, नूकीली नाक, रसीले होठ, मदमाती आखें, सुरीली वाणी, सिर पर ओढणी, छाती पर अधकसी काचली, कमर मे फैला घाघरा, माथे पर बोडला, नीचे लटकता टीलडा, गले मे हारडा-नीम्बोली-तायेतिया-बाडला, कानो मे दूगले व झुम्वरे, नाक मे काटा बाली, हाथो मे कतरिया हथोक्ला-वीटी, पैरो में कडा-पायल-भाभर साटी-लगर, पैरो मे बाडेमेरी जूती,

दोनो हाथो में ऊपर से नीचे तक सुहागन नारी के हाथो पर सफेद हाथी दात का चुडला, दिनभर श्रम की डोर में गु थी हुई रेगिस्तानी नारी, जिसके क्रोध से पथभ्रष्ट राही अपनी राह छोड देता है ।

कलात्मक वैभव का प्रतीक किराडू –

यह किराडू है सिहानी के अटल पहाडो की ओट मे बसा, ऊगडा भानेज की शूरवीरता की कहानी शिल्पकला मे विख्यात, सिसकते पाषाणो की नगरी, परमारो की राजधानी, मुगल बादशाहो की क्रूर दृष्टि का कोपभाजन, जो आज भी सूना है--सिसकता है अपने पुराने गौरव को । मन्दिर है, एक नही अनेक परन्तु उनकी हालत क्षीण है । यहा के शासको ने इसकी रक्षा बडी दिलेरी के साथ की, जग मे खून के अतिम कतरे तक लडे । किराडू सदा कटको का डेरा रहा, जग का मैदान रहा, शूरवीरो की मान मर्यादा का प्रतीक बना इसकी रक्षा के दीवानो ने जूझकर अपने प्राण काल देवी के चरणो मे चढाये, माता बहिनो ने प्यार से उनके लिये आरती के थाल सजाये । अन्तराव साँखला की भयकर कैद से ऊगडा भानेज ने मामा को मुक्त किया, एक हाथ से ताली बजा-कर घास बेचने के लिये घास के सैंकडो गाडे सजाये, घास मे छिपे वीरो ने भालो की मार सही, खून बहा, पर खून भालो पर वीरो ने नही लगा रहने दिया, दरबार मे गाड़ो की पहुच पर अचानक भानेज ने युद्ध का शखनाद किया, योद्धा घास मे से भूखे सिह की भाति उछले, समय रहते साखला को कैद किया, मामा को मुक्ति दिलाई । एक नही अनेक राजे-महाराजे मुक्त हुए, भानेज ऊगडा ने एक हाथ से ताली बजाकर अपनी आन निभाई ।

काले रग की पहाडी नगरी में पाषाण ही पाषाण हैं । रेतीले टीलो की कतारें तथा मन्दिरो की भरमार है । पानी के सूखे तालाब, कटीली झाडियो, इत्यादि से सूना किराडू कभी किरातकूप के नाम से विख्यात रहा । रामायण, महाभारत तथा जीवन के हर पहलू को शिल्पकारो ने पाषाणो मे शिल्पकला का रूप दिया है जो 12 वी शताब्दी मे अपने अस्तित्व का होना बताते हैं । पाच मन्दिर अब भी प्राचीन शिल्पकला, वीरता, नगरी की विशालता और देश भक्तो का परिचय लिये, प्रकृति के थपेडो को सहते, खडे हैं ।

जूना · अभेद्य दुर्ग के अवशेष—

जूना अब सूना है । 12 वी शताब्दी मे चौहान सामर्तसिह और 16 वी शताब्दी में सोलकी भीमदेव के आधिपत्य की कहानी, उदारता, कार्यनिष्ठा, वीरता आज भी पाषाणो में बोलती है । कभी यह वीरो का डेरा रहा, यहा उनकी चमचमाती तलवारें चमकी, शहनाइयाँ बजी, युद्ध के शख गूजे, मागलिक गान की झकार उठी और आरती के थाल सजे । प्रतीक है पहाडी पर वीरो की स्मृति में बना जूना दुर्ग, जिसकी परिधी 10 मील मे है । पहाडी की गोद मे बिलखती जूना नगरी, पाषाण पाषाण से अलग, शिल्पकला लिये श्री, आदिनाथ का, 13 वी शताब्दी का, ऊचे तोरण वाला जैन मन्दिर । मन्दिर एक नही तीन हैं । पाषाण कला मे श्रेष्ठ, नक्काशी मे उच्च ईमारतो में वलिष्ठ । जूना कभी बाडमेर के नाम से गौरवशाली रहा, सूना होने पर बिखरता हुआ आधुनिक बाडमेर के नाम से बसा ।

शैवमत का अप्रतिम तीर्थ—

चौहटन, चेतन नगरी के प्राचीन नाम का गौरव लिये हुए है। आज भी सीमा का चेतन पहरेदार है। यहाँ के बालू के टीले, कटीली झाडियाँ, पानी की गहराई की विशेषताओ के साथ यहा दर्शनीय और तीर्थ स्थान भी हैं। किराडू और जूना के पतन के साथ इसका पतन मुगल शासको द्वारा किया गया, मूर्तियो को तोडा, और मन्दिरो को चोटें पहुचाई। चौहटन मुगल शासको से बाला राजपूतो के आधीन और फिर आटी के राठोड भानीदास के कब्जे मे रहा। यहां के वीरो ने मर्यादा के लिये आहुतिया दी आधीनता स्वीकार न करते हुए देश निकाला पसन्द किया, कर्तव्यनिष्ठा के लिए दुश्मनो से लडे, आपसी फूट ने इनको कलकित भी किया। इसकी ही गोद मे पाडवो की क्रिडास्थली है, पाडवों के वनवास का समय यहा गुजरा। शीतल झरना, प्राकृतिक नयनाभिराम दृश्य, अटल चट्टानो के बीच, दुर्गम मार्ग लिये कपालेश्वर महादेव, 13 वी 14 वी शताब्दी का बना, प्राचीन कला का उत्कृष्ट नमूना है। ऊपर आया हुआ विशम पगला–जिसका झरना विशाल है, गर्मियो मे भी लगातार बहता रहता है, पास ही सूर्य, भीम व सीता कुण्ड, भीम गोडा, स्वर्ग सेरी, सूईयो, हाप्पा कोट दर्शनीय स्थल आये हुए हैं। इसकी सीमा से लगा कच्छ का रन, मीलो फैला, सफेद चादर ओढे, पेड-पौधो से रहित, सीमा की हिफाजत का प्रतीक है। दूर से आने वाले हमलावार को स्वत ही सूचक बना देता है। चौहटन एव बाखासर के वीर राजपूतो और निडर महाजनो से दुश्मन अभी घबराता है।

शाक्त परंपरा का पावन केंद्र—

सात मील चौहटन से दूर, पहाडो की ओट मे, रेगिस्तान की गोद मे, 400 वर्ष पुराना बाकल-वीरातरा माता का मन्दिर जो 80 वर्षीय वृद्ध राजपूती महिला का जगदम्बा माता के प्रति प्रेम का प्रतीक है। स्वर्ण की परत से सज्जित माताजी की भव्य मूर्ती, विशाल धर्मशालाऐं, पानी के टाके, मन्दिर की इमारतें और भोपो की भक्ति वास्तव मे दर्शनीय स्थान की शोभा हैं। यहा भाटियो ने आतक मचाया, चोरिया की, लाख के वृक्षो को लूटा, भक्त भोपो को परेशान किया। परिणामत वीरातरा माता के प्रभाव से वे अन्धे हो गये, कोढ निकल आया। चुराया माल वापिस किया, आखो की रोशनो के लिये प्रायश्चित करते हुए भाटियो ने माताजी के 12 पूज्यनीय स्थानो का निर्माण करवाया। नगाडो की घडघडाहट के बीच आरती की गू ज, नारियलो की ज्योत, बकरो की बलि से मन्दिर की भूमि चैत, भादवा और माघ महीने में, शुक्ल पक्ष की तेरस और चौदस को मेले का रूप धारण कर लेती है और मेले मे दूर-दूर के हजारो यात्री दर्शनार्थ यहा आते हैं।

धोरीमन्ना, चौहटन की सीमा से सटा हुआ है। रेगिस्तानी स्थल, किसान, जाट और विश्नोइयो की प्रमुख बस्ती। मस्त श्रमिक और किसान सदा खेती और पशु पालन में लीन। आलमजी के मन्दिर मे जहा सभी देवी-देवताओ ने कभी विश्राम किया था और अब उनकी यादगार में विशाल मेले का आयोजन प्रतिवर्ष माघ एव भादवा शुक्ल दूज को होता हे। गुडामालानी के गेहू, महादेव का मन्दिर, नगर के प्राचीन मन्दिर आज भी इस क्षेत्र के आकर्षण बने हुए हैं। कभी यहा रेगिस्तान के रणबाकुरो ने हमलावरो को पराग्त किया था। गठीले डील-डोल का रण बाकुरा राजपूत रक्षार्थ तैयार है, जिसकी मू छों के ताव सदा तने रहते हैं। यहा का किसान श्रम से अन्न उपजाने में लीन है।

पशुधन से सम्पन्न सिणधरी—

सिणधरी का पशुपालन आज भारत भर में विख्यात है। रावल गुलाबसिंह का गो प्रेम आज भी बाडमेर की भूमि का मस्तक ऊंचा किये हुए है। हजारो उन्नत नस्ल की गायें, उछलते बछडे, मदमस्त बैल-साड, हिनहिनाते मारवाडी नस्ल के घोडे आज भी रावल सिणधरी की शान हैं। यह पशु पालन के प्रेम की गाथा और उन्नत नस्ल के पशुओ की उत्पत्ति का केन्द्र है। सिणधरी रावल ने ईश्वर-भक्ति की अमिट छाप इस क्षेत्र मे बिछा रखी है। जोड के पहाडो की ओट मे, अटल चट्टानो के बीच, भयानक गुफाओ, कठिन रास्तो तथा प्राकृतिक गहरे गड्ढो मे बोलते हैं, ईश्वर भक्ति के गीत, श्लोक एवं आरती। घी के दीपको की जोत चमकती है तो अगरबत्तियो की महक से सूखा पहाड भी खुशबू से महक उठता है। हजारो की लागत से अनेक, एक-एक से बढिया, सगमरमर की प्रतिमाओ का रावल सिणधरी ने निर्माण करवाया। भगवान गणेश अद्भुत चूहे की सवारी पर, राम लक्ष्मण और सीता, शिवजी, विष के प्याले को निगलते हुए, ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सुन्दर प्रतिमाएँ, शिव-लिंग का आकर्षण, नन्दी की सुन्दरता, सरस्वती की सौन्दर्यता, जगदम्बा की भव्यता आज बन रहे शिव मन्दिर और उसके पास ऊपरी पहाड पर पाषाण कला के रूप मे देखने को मिलती है।

अणखलो गढ–सिवाना

आज भी याद है सिवाना के दुर्ग की स्वतन्त्रता की लडाई। वीर राजपूतो ने जिसकी रक्षा के लिये सर्वस्व लुटा दिया, अन्तिम दम तक लडे, मुगल बादशाहो को पहाडी-लडाई से भयभीत किया, चमकती तलवारो ने दुश्मन के लहू को पीकर प्यास बुझाई। यह दुर्ग एक बार नही अनेक बार बना और बरबाद हुआ, वीर राठौडो ने इसकी आजादी की कीमत खून से चुकाई। राणा चन्द्रसेण ने महाराणा प्रताप की तरह यातनाएँ सहते हुए इसकी मर्यादा बनाये रखी, चार वर्ष तक अकबर बादशाह ने भी इस रणबाकुरे की तलवार के वार देखे, हजारो को मृत्यु शैय्या पर सुलाया, खुद ने दुख सहे पर बादशाह की चाकरी स्वीकार नहीं की। लडा और अन्तिम दम तक लडा और किला दुश्मनो के हाथो से छीन कर उस पर केसरिया फहरा कर मरा।

चन्द्रसेण की स्वतन्त्रता-मर्यादा गूंजती है तो राव कल्ला की बलिदानी बोलती है। भरे बादशाही दरबार में शहजादा सलीम के, अपनी बहन के साथ, विवाह प्रस्ताव पर, कल्ला की तलवार ने मुगल सैनिक को काट दिया। 12 वर्ष तक बादशाह अकबर के हुक्म से मोटा राजा उदयसिंह ने, कल्ला को पकडने के लिये, सिवाना-दुर्ग को घेरे रखा, युद्ध हुआ, दोनों ओर से तलवारें चमकी, वीरो के रक्त से भूमि लाल हो उठी, कल्ला के जीते जी किला बादशाही हुक्म मे नही गया सो नही गया। वीरो की हुंकार ने सिवाना की मर्यादा बनाये रखी, ललनाओ ने जौहर किया, वीरो ने मातृभूमि का चुम्बन किया व धूल को मस्तक पर लगा कर रण मे जूंझते रहे। लेकिन पोलिया नाई ने अपने को कलंकित करके, किले का गुप्त द्वार, मोटा राजा उदयसिंह को बता दिया। किले मे बादशाही फौजें घुस पडी, युद्ध की आग धधक उठी, शख गूंजने लगे, हर हर महादेव और अल्ला हो अकबर के नारो से सिवाने का दुर्ग आग की लपटो और खून की बौछारो से चमकने और रंगने लगा। राजपूत भूखे सिंह की भाति दुश्मनो पर टूट पडे। कल्ला ने इस युद्ध मे अद्भुत वीरता दिखाई, जिसे इतिहास नहीं भूला है। सिर कट

जाने के पश्चात् भी कल्ला, भारी तलवार लिये दुश्मन से लडता रहा । कइयो को मौत के घाट उतारता हुआ सदा के लिये किले के बाहर बने उनके शहीद स्मारक पर शहीद हो गया । स्वय शहीद होकर उसने राजपूती-गौरव को सदा के लिये उज्ज्वल बना दिया ।

विजय और पराजय मे अल्लाउद्दीन खिलजी, राव मल्लीनाथ, जेतमाल, राव मालदेव, राव चन्द्रसेण, कल्ला रायमलोत, मोटा राजा उदयसिह, महाराजा जसवन्तसिह प्रथम, औरगजेब, राजा सुजानसिह, अजीतसिह आदि के आधिपत्य मे यह किला रहा । किला वि स. 1011 मे परमार राजा भोज के पुत्र वीरनारायण ने बनाया था । जहां राजस्थान के स्वतन्त्रता-सग्रामी, शेरे राजस्थान, लोकनायक जयनारायण व्यास को कुछ समय के लिये कैदी बना कर रखा गया । एक समय वह था जब वीर रणबाकुरो को रण मे भेजते समय और विजय प्राप्त करके आने पर, शूरवीरो के लिये ललनाएँ आरती का थाल सजाये खडी रहती थी और आज केवल बिखरे पाषाण, खण्डहर, बुर्ज, झाडियाँ, टूटे महल, उचकती चट्टानें बिखरती सीढिया ही दृष्टिगोचर होती हैं ।

वीरवर दुर्गादास की जन्म-भूमि -

सिवाना क्षेत्र का कनाना गाव, मारवाड के वीर राठौड दुर्गादास की जन्म-स्थली का गौरव प्राप्त किये हुए है । पास ही प्राकृतिक सौन्दर्य, अटल चट्टानो के बीच, भयावह राहो पर बसा हिंगलाज महादेव की पचतीर्थी । छप्पन की पहाडियाँ, राठौड दुर्गादास की पदधूलि से, जोधपुर महाराजा अजीतसिह की रक्षा के लिये, गौरव प्राप्त किये हुए हैं ।

राठौड़ शासकों की पुरातन राजधानी—

लूनी नदी की कलकल करती धाराओ के किनारे पर स्थित खेड, राठौड राजपूतों की राजधानी रही है । यहा मल्लीनाथ की रणकौशलता, जगमाल की शूरवीरता ने बादशाह की बीवियो के दिला मे कपकपी पैदा कर दी थी । गिन्दोली की कहानी और पडले की गाथा इसी स्थल की देन है । खेड की विशालता समाप्त हो चुकी है केवल वैष्णव मन्दिर आज दर्शनीय स्थान का रूप लिये हुए है । कलात्मक नमूनो मे, शेष-शैय्या पर सोये भगवान विष्णु, रणछोडराय की भव्य प्रतिमा, नृत्य मुद्रा मे नारी तथा तोरण खम्भे आज भी प्राचीन शिल्पकला की याद को ताजा कर रहे हैं ।

खेड के समीप ही प्राचीन ऐतिहासिक बस्ती बसी हुई है । जसोल से करीब 3 मील दूर जैन धर्मावलम्बियो का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान नाकोडा है जिसके परकोटे में तीन गगनचुम्बी देव स्थान, जिनकी शिल्पकला, सौन्दर्यता तथा आधुनिक साज-सज्जा अत्यत ही सुन्दर है, मूलनायक भगवान श्री पार्श्वनाथ की सुन्दर प्रतिमा और भैरवजी के चमत्कारी दर्शन आज भी हजारो श्रद्धालु भक्तों को इस तीर्थ की यात्रा करने की ओर आकर्षित किये हुए हैं । प्रति वर्ष पोष बदी दसमी को मेला लगता है जिसमे हजारो की सख्या मे लोग सम्मिलित होते हैं । सेठ मालाशाह की दानशीलता इन मन्दिरों में बोलती है तो लाछी बाई की भक्ति भी यहा गूंजती है और साधु-साध्वियो की कर्त्तव्य मर्याद भी यहा अमर हो उठती है, जिन्होने इस उजडे तीर्थ स्थान को आधुनिक सौन्दर्य का रूप दिया ।

जैन उपासना का प्रभावक तीर्थ—

नाकोडा की धार्मिकता से चलकर, लूनी नदी की तलहटी के एक छोर पर, तिलवाडा गाव के पास में, वमा राव मल्लीनाथ का मन्दिर है। धार्मिकता से पुष्ट, श्रद्धालुओं का देवस्थल, यात्रियो का तीर्थ, पशुपालकों का व्यापार केन्द्र, तिलवाडा का पशु मेला, जो प्रति वर्ष चैत्र कृष्णा 11 से चैत्र शुक्ला 11 तक भरा जाता है। यह राजस्थान का मर्वोपरि पशु मेला है, जिसमे हजारों पशु, क्रय-विक्रय के लिये लाये जाते हैं। काकरेज थार पार कर के वैल, मारवाडी नस्ल के ऊट और घोडे भी इस मेले मे आते हैं। यह भारत का एक मात्र ऐसा मेला है जहा घोडों की खरीद-विक्री होती है। लूनी नदी के आचल मे थोड़ी खुदाई करने पर मीठे पानी की प्राप्ति के कारण, मेला दिनोंदिन प्रगति की ओर वढ रहा है।

लवण का लावण्यस्थल—

वालोतरा के समीप आया हुआ पचपदरा। पवारो, चौहानो, गौहलियो एव राठौड़ों ने इस स्थल की कभी साज-सम्भाल की थी और उनकी वीरता की चमक का प्रभाव जोधपुर व जैसलमेर के शासको पर पडा। इस क्षेत्र मे नागाणा गाव का नागणेची माता का मन्दिर विख्यात है। लकडी की वनी सुन्दर प्रतिमाएं आज भी प्राचीनता की झलक, भक्तो की देन, कलाकारो की कौशलता की प्रतीक है। यहा भादवे मे लगने वाले मेले में हजारों दर्शक, उपासक, भक्त एकत्रित होते हैं। पचपदरा नमक-उत्पादन की खान है तो पेयजल को सदा शीतल वनाये रखने वाले मटकों और सुराहियों का निर्माता भी।

प्यासा वायतू। पानी की भयकर कमी, रेगिस्तान ही रेगिस्तान, पानी के लिये कोसों दूर भटकने वाला वायतू का इन्सान, खुद के लिये दुख उठाता है परन्तु दूसरो के लिये उदारता का दिल रखता है। इसी क्षेत्र का वोथिया नल कूप, यहा से हजारो गैलन पानी 17 मील दूर वाडमेर नगर को. प्रतिदिन नलों से सप्लाई करता है। इसी क्षेत्र में वाटाडू गाव में सगमरमर से वना कुंआ, कलाकृतियो का केन्द्र, गो प्रेमियो का स्मरण स्थल, कोर-कोर पर आधुनिक शिल्पकला के नमूने तथा गरुड़ प्रतिमा देखते ही वनती है। सौभाग्य या दुर्भाग्य समझिये कि कुएं का पानी स्वादिष्ट और हल्का नही है। किसानो की वस्ती का वायतू क्षेत्र सदा पानी के लिये तडफता है तो अन्न उत्पादन के लिये जी तोड मेहनत भी करता है। इनकी रगो मे वल है, देश के प्रति मोह है, सहयोग की भावना है। यहा के खेमावावा के दर्शन, प्रति वर्ष मेले के रूप मे, लोग करते हैं।

एक ओर वाडमेर का प्यासा वायतू है तो दूसरी ओर पानी के लिये तडफता शिव क्षेत्र। पानी की भयकर कमी इस क्षेत्र के विकास मे अवश्य ही वाधक है परन्तु देश की सीमाओ की रक्षा के लिय यह क्षेत्र सतर्क भी है। शिव के आचल मे वसा, एक कोटडा दुर्ग है। यह जैसलमेर के किले का छोटा रूप है, कई वुर्ज, तोरण द्वार, मेड़ियो और राजप्रसादो से युक्त किला आज भी शनैं शनैं टूट रहा है। इसके अन्दर के सरगला तालाव से यहा के वीरो को, ललनाओं के हाथो से स्वादिष्ट जल पीने को मिलता था, परन्तु आज पाषाणो और वालू रेत की मार से दव चुका है। शौर्य गाथाओ का कोटडा, जैनियों का प्रमुख नगर, जो प्रेम का उलाहना भी वना। कोटड़ा किले पर मुह

लटकाई हुई आज भी खडी है, मारवाड राज्य के खजान्ची गोरधन खीची की बनाई मेडी। खीची शादी के समय ससुराल आये, उनका साफा द्वार से अटक गया, गुस्से मे लाल होकर द्वार की निन्दा करने लगे, साली पास खडी थी, मजाक मे कहा, ऐसा गुस्सा आता है तो किले पर मेडी बनाकर तोरण बांधें। किले पर तत्काल मेडी बनाई गई और तोरण भी वही बाधा। किला 11 वी शताब्दी मे किराडू के परमार शासक आमलदेव द्वारा बनाया गया था।

एक ओर किले का गौरव गूंजता है तो दूसरी ओर शिल्प कलाकृतियो का देव का मन्दिर, जिसकी कला पाषाणो मे दृष्टिगत् होती है। यहाँ बाडमेर विजय द्वार का 'गडरारोड शहीद स्मारक' कर्त्तव्य परायणता की कहानी बताता है। यहा पाक आक्रमण के समय रेल की सुरक्षा में लगे व्यक्तियो ने शूरवीरता, निडरता और देशभक्ति का परिचय ही नही दिया अपितु बलिदानी देकर भारत का मान भी बढाया। पाक हवाई जहाजो ने 9 सितम्बर 1965 को इन रेल कर्मचारियो पर आक्रमण किया, गोले बरसाये, छर्रे फैंके। देश भक्तो ने अपना कर्तव्य पालन करते हुए मौत को अंगीकार किया। रेल की सुरक्षा के साथ-साथ सैनिक सामग्री भी भारतीय सैनिको तक पहुचाई। लेकिन वे सदा के लिये अमर हो गये। 9 सितम्बर को इस स्मारक स्थल पर शहीद मेले का आयोजन होता है। इसी शिव क्षेत्र में ससार का सबसे बडा गाव, सून्दरा आया हुआ है, जिसका 318 वर्गमील का क्षेत्र है और 60 ढाणिओ मे 1500 परिवार के 6294 स्त्री-पुरुष निवास करते हैं। गाव काश्मीर मे, तीन खेजडियों वाले स्थान पर, बाबा रामदेव का जन्म होना बताया जाता है। शिव में स्थित गरीबनाथ का मन्दिर और वड्डा का तालाब, प्राचीन शिवपुरी की देन है।

बाडमेर नगर के जैन मन्दिरो की चित्रकला, काच की कारीगरी भी देखने योग्य है। बाडमेर में हनुमानजी, सत्यनारायणजी, रणछोडजी, मल्लीनाथजी, बालारखजी तथा नागनेचिया आदि मदिरो के अतिरिक्त नरगासर खत्रियो की रंगाई-छपाइ का केन्द्र, महादेव की मूठी, सूजेर की चोटी, श्री सुमेर गौशाला और बाडमेर का गढ भी देखने लायक है। सिणधरी, सिवाना एव पचपदरा के जैन मन्दिरो के अतिरिक्त, जसोल एव नीम्बडी माताजी के मन्दिर, खण्डप के पास नील कण्ठ महादेव, तरसगडी गाव में महादेव का मन्दिर, राखी स्टेशन के पास पातालेश्वर का मन्दिर आदि कई छोटे-बडे धार्मिक स्थल देखने लायक हैं। यहां पर किसी न किसी रुप में जनमानस, मेले के रुप में, एकत्रित होता रहता है। तारातरा का मठ, भाडखानाथ का मठ, चौहटन का मठ, बाडमेर का मठ भी ख्याति प्राप्त किये हुए हैं। बाडमेर–बालोतरा की रंगाई-छपाई, गडरारोड के ऊनी कम्बल, कोटडा-कपूरडी की मुल्तानी मिट्टी, बाडमेर की रजनी व सेडी, कुडला का जिप्सम आज भी लोकप्रिय है।

जूझता सीमान्त

—श्री अमीचद सालेचा

सन् 1947 के भारत विभाजन का राजनैतिक बदलाव, देश की सुरक्षात्मक परिस्थितियों में एक बहुत बडा अन्तर लाया, जिससे पिछले 200 वर्षों से चली आ रही सीमान्त व्यवस्था में परिवर्तन हुआ। अग्रेजी शासन काल मे हिन्दुकुश की स्वाभाविक पहाडी-शृङ्खलाए सीमान्त-विभाजन कर रही थीं। वहा पचनद के मैदानों व थार के रेगिस्तान में जगल, ग्राम व घर विभाजित हो गये थे। राजस्थान का यह पश्चिमी प्रदेश, जो सदा से युद्ध के खतरो से दूर, शान्त समझा जाता था, तोपो, टैंको व सेबरजेटों के धमाकों से गू जने की स्थिति मे आ गया।

विभाजन के कारण पाकिस्तान की राजनैतिक परिस्थितियों ने उसे सदैव भारत को अपना शत्रु नम्बर एक बताते रखने को बाध्य किया। और जिसके फलस्वरूप स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् बाडमेर के सीमान्त प्रदेश ने अपनी छाती पर दो बडे युद्धो को झेला और इन दोनों युद्धो में यह सीमान्त, प्रमुख युद्ध-मोर्चों व युद्ध-स्थलो मे से एक रहा। सन् 1965 के भारत-पाक युद्ध मे शत्रु का ध्यान पजाब व कश्मीर के मोर्चों मे विभाजित करने हेतु भारत ने सिंध-सीमान्त का मोर्चा भी खोला पर वास्तव मे इस मोर्चे के खुलने के पूर्व ही पाकिस्तान ने कच्छ क नगर पार कर, इस क्षेत्र मे अपना हस्तक्षेप व दावा प्रस्तुत कर दिया और इसलिए युद्ध के एकदम पूर्व यह सम्पूर्ण क्षेत्र उग्र सैनिक गतिविधियो का केन्द्र बन गया।

5 सितम्बर 1965 को सायकाल का रेडियो सारे भारत वर्ष के लिए चौंका देने वाला था, क्योकि भारतीय क्षेत्रो पर पाक विमानो की बम्बारी वर्षा हुई। कश्मीर, पजाब व राजस्थान के गंगानगर क्षेत्र में, युद्ध के मोर्चे खुल चुके थे व इस रेगिस्तानी क्षेत्र से पाकिस्तान ने दैनिक वायु आक्रमण जोधपुर, जामनगर और अन्य पश्चिमी शहरों की ओर करना प्रारम्भ कर दिये थे। इस समय भारतीय सेना युद्ध की दृष्टि से पूर्ण सक्षम नही थी पर भारतीय सेनापतियो ने युद्ध के आक्रमण-पहलू को अपने हाथ मे लेने की नीति अपनाई और इसके आधार पर युद्ध प्रारम्भ होने के 34 दिन पश्चात ही, बाडमेर के सीमान्त से, पाकिस्तानी क्षेत्र में प्रवेश करने हेतु, सेनाओं को आदेश दे दिया गया। जिस समय यह आदेश दिया गया, रेगिस्तानी भू-भाग का युद्ध भारतीय सेना के लिए नया था। चौहटन व सूनदरा के धोरो मे, किसी प्रकार के मार्गों पर सेना का बढना, बिना स्थानीय सहयोग के सम्भव नहीं था। पूरे सीमान्त पर कोई डामर की सडक नही थी और इसलिए टैंक इत्यादि वाहनों का मोर्चों तक जाना अत्यन्त कठिन था। इस सम्पूर्ण क्षेत्र मे पीने के पानी की कमी थी। यह सौभाग्य ही था कि उस समय वर्षा हुई, अत अन्य कोई साधन न मिलने पर खेतो मे मतीरे इत्यादि उपलब्ध थे, जिससे सैनिक अपनी प्यास बुझा सकते थे। जोधपुर भी उस समय सैनिक दृष्टि से एक छोटा केन्द्र था और दक्षिण कमान, जिसके जिम्मे इस क्षेत्र के युद्ध-सचालन का उत्तरदायित्व आया था, का मुख्यालय भी अत्यन्त दूर था।

इस मोर्चे के खुलते ही, चूंकि पाकिस्तान की ओर से कोई विशेष विरोध नहीं था, इसलिए भारतीय सेना बहुत अन्दर छब्बीस मील तक चली गई थी पर पाकिस्तान ने उस समय दूसरी नीति अपनाई। उसने फौज

का सामना करने के स्थान पर, फौज के रास्ते को रोकने, उसकी रसद को रोकने, जल-स्रोतो को अवरुद्ध करने और रेल मार्गों को काटने की नीति अपनाई।

इस युद्ध-काल में बाडमेर जिले के जन-जन ने अद्भुत धैर्य, साहस व शौर्य का परिचय दिया। नित्य प्रति, दिन में भी 10-10 बार पाकिस्तानी सैबर जैटो का आगमन, बाड़मेर के आकाश मे दिन के समय विमानो के श्वान-युद्ध (डाग फाईटिंग), रात्रि मे बाडमेर के सारे तालाबो, प्रवेश-स्थलो इत्यादि का जनता द्वारा पहरा, शाम पड़ते ही बिना साइरन के ही सम्पूर्ण ब्लैक आउट, हर गली मे खाइयो की प्रचुरता, नित्य आने वाली सैनिको की टोलियो का मोर्चो पर जाते व आते वक्त स्वागत, दिन भर सैनिक गाडियो, बख्तरबन्द वाहनो, तोपवाहिनियो व टैंकों का आवागमन, मोर्चे से नित्य नए समाचार, जहाँ भारत के दूसरे भागो में बसे नागरिको का हृदय बैठा रहे थे, वहा बाडमेरजिले के युवको का उत्साह बढा रहे थे।

सन् 1965 को लडाई में दो भारतीय रेल गाडियो का अधेरे में टकराना, चलती रेलगाडो पर हवाई गोलीवर्षा के फलस्वरूप रेल कर्मचारियो का शहीद होना, और उन 12 कर्मचारियों को बाडमेर की जनता की ओर से भावभीनी श्रद्धान्जलिया, सहज ही मे इस सीमान्त शहर के युद्ध कालरत इतिहास को पुन जागृत कर देती हैं। जनता ने तो तन से, मन से और धन से, सभी प्रकार से सहयोग दिया ही, पर इस क्षेत्र के डाकू कहे जाने वाले राजपूत युवक भी सेना की टुकडियो को न केवल उजाले मे, वरन अधेरे में भी रास्ते दिखा कर शत्रु की रक्षा-पंक्तियो को भेदन करने मे जो मदद कर रहे थे, वह इतिहास मे साहस व देश भक्ति का एक अविस्मरणीय पृष्ठ है।

इस क्षेत्र मे रेल व सडको का अभाव तो था ही, पर पानी की कमी भी थी और इससे आगे सिक्ख टुकडियो के लौटने के पश्चात्, मद्रास की जो टुकडिया तैनात हुई थी, उनमे रेगिस्तानी वातावरण मे प्यास इत्यादि को सहने की क्षमता भी नही थी, और इसलिए युद्ध विराम के पश्चात मुजाहिदो का जो दौर चौहटन व अन्य क्षेत्रो तक आया उसके कारण बहुत बडी जनहानि भी हुई। इसमे भी इस क्षेत्र के राजपूतो व अन्य लोगो ने सेना का सहयोग देने मे पर्याप्त शौर्य का परिचय दिया। इन्ही मुजाहिदो ने इस क्षेत्र को छोडते समय, रेगिस्तानी भागो में, जगह-जगह सुरगें बिछा दी थी, जिससे सैनिक हानि भी काफी हुई। इस क्षेत्र के युद्ध की एक विशेष बात यह थी कि इस सम्पूर्ण क्षेत्र की रक्षण–व्यवस्था आर ए सी के जवानो के हाथ मे थी और उन जवानो के जौहर भी, भारत के इतिहास मे अनेक स्वर्णिम पृष्ठ जोड गये हैं।

सन् 1965 के पश्चात भारत सरकार ने बाडमेर, जैसलमेर क्षेत्र के सैनिक महत्व को आका और इसके फलस्वरूप कुछ मौलिक अन्तर आया। बाडमेर के उत्तरलाई व जैसलमेर के हवाई अड्डो को, पूर्ण सुसज्जित, राडार व तोपयुक्त विमान तथा भूमिगत हेगरो वाले हवाई अड्डो के रूप मे निर्मित किया गया और साथ ही बाडमेर में सैनिक अड्डो की स्थापना की गई। बाडमेर से जैसलमेर, शिव से गडरा, बाडमेर से चौहटन, बाडमेर से धोरीमन्ना, सांचोर होते हुए गाधीधाम तक, बाडमेर से गडरा, विशाला, हरसाणी इत्यादि अनेक मजबूत पक्की सडको का जाल बिछाया गया तथा सभी प्रमुख स्थानो पर ट्यूबवेल व अन्य साधनो से पानी की व्यवस्था की गई। इस जिले का सम्पूर्ण विकास सुरक्षा के महत्व की दृष्टि से किया गया, जिससे सीमा पर रहने वाले सामान्य नागरिक की भारत

के प्रति श्रद्धा वढी व वी एस. एफ के रूप में केन्द्रीय सीमा सुरक्षा दल, जो कि आर. ए. सी. से अधिक सुसज्जित था, नियुक्त किया गया। आर. ए. सी. के जवानो को भी अधिक प्रशिक्षण दिये गए। तार टेलीफोनों की व्यवस्था में सुधार किया गया। पुलिस थानो व महत्वपूर्ण स्थानो पर वायरलैस सेटों की व्यवस्था उपलब्ध कराई गई। देश के प्रवेश-द्वार पर, देश के रक्षण हेतु डटा, जनप्रहरी, अपने आप के उत्तरदायित्व को अधिक गम्भीरता के साथ समझने व निभाने के लिए सन्नद्ध हो गया।

और इसी बीच पुन. आ धमका, सन 1971 का द्वितीय सीमा संकट। इस समय तक परिस्थितियां कांफी वदल चुकी थीं। जैसी कि योजना थी, रण-सज्जा, देश के अन्तरग में आये शहरों को शत्रु की मार से बचाने मे सफल हो गई थी, पर इन सीमान्त प्रहरियों की कीमत पर। सन 1971 की लडाई में जोधपुर के स्थान पर वाड़मेर शत्रु के हवाई आक्रमणो का शिकार वना। वाडमेर स्टेशन पर धू-धू कर जलती हुई, रात्रि के अन्धकार मे प्रकाश फैलाती, कोयले की वैगनों को शत्रु की वमवारी के वीच, वाडमेर के नागरिक दूर खदेड़ रहे थे। जिस समय पुलिस भी वीच में आने से इन्कार कर रही थी वाडमेर के युवक, क्षतिग्रस्त व जलते हुए मालगोदाम से, पेट्रोल से भरे हुए ड्रमों, शक्कर व अन्य सामान को वाहर खींच रहे थे. और यह उन्हीं का साहस था कि वमवारी के वीच ही, वारूद से भरी विशेष मालगाड़ी को, खतरे से निकाल, दूर खदेड सके। इन वम्वारियो में उडने वाले छर्रों के कण, एक-एक मील दूर जाकर, मकानों की छतो को फोडते हुए, घरों के अन्दर घुस गये। जहां भयकर सर्वनाश का ताण्डव फैला हुआ था, वहा युवक, मृत्यु के आह्वान को चुनौती देते हुए, साहस के वलवूते पर, शत्रु के प्रयासों को विफल कर रहे थे।

सन् 1971 की लड़ाई में इस मरुप्रदेश के रण कौशल ने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। लोंगेवाला का, पाकिस्तान को चीन से उपहार में प्राप्त, टैंको का शमशान, केवल तीन दिन मे, गडरा से पाकिस्तान के प्रमुख सीमान्त रेल्वे स्टेशन तक रेल मार्ग का जोड़ना, लकड़ी की पट्टियों से सडक वना कर भारी वाहनो को पाक क्षेत्रों में घुसाना, पैराशूट से फोजें उतार कर छाछरों पर कब्जा, इत्यादि अनेक कार्य, इस युद्ध के रण कौशल व गौरव गाथायें कही जा सकती हैं। सेनाओं ने छाछरो पर कब्जा कर उसे भारतीय प्रशासन मे ले लिया था व वाडमेर के भूतपूर्व जिलाधीश मरुधर प्रदेश के सपूत श्री कैलाशदान को सम्भालने का गौरव प्राप्त हुआ। रेल्वे की दृष्टि से भी श्री लालसिंह उज्जवल इस क्षेत्र के विशेष डिविजनल सुपरिटेन्डेन्ट के रूप में कार्य कर रहे थे।

चू कि इस युद्ध में समस्त हवाई गतिविधियों का संचालन भी उत्तरलाई व जैसलमेर के हवाई अड्डों से हो रहा था अत इन्हीं हवाई अड्डो से पाकिस्तान के सभी वडे शहरो पर वमवारी करने के लिये, विमान जाते थे और इसलिये प्रतिदिन उनका पीछा करने के लिये आने वाले वायुयानों के साथ भारतीय वायुयानों की नोकझोंक, श्वान-युद्ध, इन हवाई पट्टियों पर वम्वारी व हवाई अड्डों पर उतरते हुए वमवर्षकों को नष्ट करने के प्रयत्न, एक दैनिक प्रक्रिया हो गई थी। वास्तव मे कहा जाय तो यह क्षेत्र युद्ध-स्थल का एक भाग ही वना हुआ था। पर ऐसे विकट समय मे भी नागरिक, रात-दिन जुट कर, नागरिक सुरक्षा, सामान्य व्यवस्था व सैनिक उत्साह में वृद्धि के कार्यक्रम करने में जुटे हुए थे। हजारों सैनिकों को प्रतिदिन भोजन वितरित किया जाता था। घायल सैनिकों के लिये रक्त देने हेतु भी नागरिक तत्पर थे व रात-दिन के सैनिक वाहनों, तोपवाहिनियों, टैंकों की कतारो के वीच भी नागरिक, अत्यन्त साहस के साथ देश के प्रहरी के रूप मे जुटे हुए थें।

इस युद्ध मे पचपदरा पर की गई बमवर्षा भी उल्लेखनीय है। जब प्रात पाच बजे पचपदरा नगर के समीप ही 43 बम गिरे। सारा क्षेत्र भूकम्प के धक्को के समान थरथरा उठा। धुम्रो का अम्बार, सम्पूर्ण क्षेत्र में एक विकराल दानव की तरह फैल गया। मकानो के दरवाजे व खिडकिया अनायास ही अपने आप खुल गये पर सौभाग्य यही था कि इस भयकर विनाशलीला का आयोजन करने वालो को इससे कुछ भी हाथ नही लगा।

बाडमेर का सम्पूर्ण क्षेत्र वीरो की भूमि है व आज भी अनेक क्षेत्र पूर्णतया फौजी जीवन पर आधारित हैं। ऐसा कहना चाहिए कि युद्ध उनका शौक है, पर इन दोनो युद्धो ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि इस क्षेत्र का फौजी ही नही, सामान्य नागरिक भी, देश की सकट की घडी मे, इन फौजियो के साथ, कन्धे से कन्धा भिडा कर, उनके समकक्ष ही गौरव-गाथाओ की पृष्ठ-भूमि तैयार करने खडा हुआ है।

१९७१ के समर की काल रात्रि में पचपदरा

–श्री मोतीसिंह, सरपंच, गोपडी

सन् '71 का दिसम्बर मास। भारत-पाक युद्ध का सर्वत्र साया। प्रभाती के लगभग चार-साढे-चार बजे का समय। मैं अपने खेत में सोया हुआ था। कुछ बुढापे के कारण, कुछ हल्की-हल्की सर्दी, कुछ दूर सडक पर जाते वाहनों का शोर और कुछ आकाश में वायुयानो की गडगडाहट, इन सभी ने मिलकर मेरी नींद को गायब कर रखा था। इन दिनो थोडा–थोडा बुखार भी रहता था। खेत मे फसल इकट्ठी हो रही थी। हाली व नौकर खेत पर ही रहते थे। गायो व बकरियो के रेवड भी खेत पर ही थे। नौकर काम बराबर करें, उनकी निगरानी के लिये खेत पर रहना जरुरी था। झोपडी मे अकेला ही सो रहा था। अचानक जोर की गडगडाहट सुनकर मैं खाट पर से उठ बैठा। आवाज तेज होती जा रही थी। कुछ मन मे शका उठी। उठकर बाहर आया। देखा, दो हवाई जहाज नीची उडान भरते हुए, गोल घेरे मे पास ही घूम रहे थे। तीखी आवाज मस्तिष्क को भेदकर एक झु झलाहट पैदा कर रही थी।

अचानक एक रोशनी को नीचे उतरते देखा। हवाई जहाज ने ही फैंकी थी। पर यह क्या ? रोशनी अधर मे झूलती हुई रुक गई। स्पष्ट दिख रहा था कि बहुत बडे घेरे मे रोशनी तेज प्रकाश फैला रही है। कौतुहल बढा, कुछ कदम भी आगे बढे। पर अचानक आखें चौंधिया गई। हवाई जहाजों से तेज रोशनी की कतार छूट रही थी। इसके पहले कि आखें और दिमाग, बुद्धि से कुछ निर्णय लें, भयकर धमाको की आवाजे, गू जने लगी। और गूंजने के साथ ही धरती डगमगाने लगी। बूढा आदमी वैसे ही कमजोर, फिर आँखो मे चकाचौंध। बुखारग्रस्त शरीर मे शीत से कम्पन और यह भूमि का ताण्डव नृत्य। पैर लडखडा पडे। गिरते-गिरते पास के खम्बे को पकड लिया। आखिर राजपूत ठहरा। एसे मौकों पर ही तो रक्त का स्वाभाविक असर आता है। खम्भे को पकड कर अड गया, अडिग खडा रहने के लिये। पर हवाई जहाज अब भी चक्कर लगा रहे थे। थोडी देर यह क्रम चला। अरे ! यह क्या ? हवाई जहाज की आवाज दूर भाग रही है। चौंधिया जाने वाली आखें खोली। चकाचौंध करने वाली रोशनी गायब हो चुकी थी। अधर मे लटकती बत्ती अब भी प्रकाश फैला रही थी। परन्तु लगा कि उसका प्रकाश धुएं में दब रहा है। मस्तिष्क ने कहा बम वर्षा हुई है। कहा ? पास के खेत मे ! पर क्यों ? उत्तर नहीं सूझ रहा था। एक दम सोचा। भाई किशोर सिंह खेत में अकेला होगा। बूढा आदमी है, चलूं, उसे सम्भालूं। साहस कर आगे बढा। सोच रहा था, यहा बम क्यो ? इतने बम क्यो ? यह अधर मे लटकती बती कैसी थी ? ज्यों-ज्यो कदम आगे बढ रहे थे लगा कि बम वर्षा एक दम पास में नही, थोडी दूरी पर हुई है। ज्यो-ज्यों किशोर सिंह के खेत की तरफ बढ रहा था, लगा कि काला अम्बार सामने आ रहा है। क्या है ? यह सोचने लगा। उत्तर नाक ने दिया। यह तो धुएं का अम्बार है। मुझे किशोर सिंह की तरफ जल्दी जाना चाहिये। पर यह क्या ? यह धुआं आगे बढने ही नही देता। अरे ! यह क्या ! पीछे भागें, नहीं तो यह धुआं बेहोश कर देगा। लौट चला, जल्दी-जल्दी कदम बढाते हुए। धुएं से बचने के लिये, बेहोशी से बचने के लिये और जीवन को बचाने के लिये। ज्यो-ज्यो लौट रहा था लगा, धुआं की दिशा और है। शीघ्र ही धुएं के घेरे से बाहर आ गया। थोडी देर खडा रहा। तब तक नौकर आ गये। पड़ौसी खेतो वाले आ गये। बताया कि ठाकुर साहब

बम पडे हैं। नवा तालाब के ऊपर की तरफ बहुत बम पडे हैं। सब घबराये हुये थे। मैं साहस बन्धा रहा था, ठाकुर जो ठहरा, उनका सरपच जो ठहरा।

घण्टे बाद प्रकाश हुआ। पता लगाया। कुल तैंयालीस बम पडे थे। प्रत्येक बम के गिरने की जगह, विशाल खड्डे हो गये थे। और पैनी दृष्टि से देखा शायद यहा वाहनों का विशाल कारवा ठहरा था, मोर्चे पर जाने के पूर्व खाना पानी करने के लिये। आगे पता किया, भारतीय फौज की किस्मत अच्छी थी। बम वर्षा के समय कारवां, तीन मील सडक पर रेल्वे फाटक, पार कर चुका था। मुझे हर्ष हुआ, भारतीय सेना की किस्मत पर और शत्रु के दुर्भाग्य पर। हमारा कस्बा पचपदरा भी तो किस्मत वाला है। इन तैंयालीस में से भूले भटके दो चार भी उसके लिये तो काफी थे। किस्मत का जोश, कुछ भूमि के झटके से, कुछ धुए के अम्बार से तथा खडक्डाते दरवाजो से ही पूरा हो गया। उस स्थान की लटकती रोशनी बुझने पर एक पल्लू पडा मिला और उसके थोडी दूर पर ही कुछ वस्त्र। लगा किसी भेदिये का काम है, कोई न कोई काली भेड, हर रैवड में मिल ही जाती है।

बाड़मेर के बढ़ते कदम

परिचय—

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम मे, विशाल क्षेत्रफल मे फैले रेतीले टीलो एव उबड-खावड जमीन, कटीली झाडियो और और अन्य प्राणियों से शून्य बाडमेर जिले का क्षेत्रफल 18,174 वर्ग किलो मीटर है। जिले की जलवायु शुष्क है। यहा पर गर्मियो में अत्यधिक गर्मी तथा सर्दियो में अधिक सर्दी पडती है, लेकिन जब वर्षा ऋतु आती है तो मानसून इस जिले के ऊपर से होकर गुजर जाते हैं और यहा के नर-नारी व पशु-पक्षी पानी के लिए ताकते रह जाते हैं। यही कारण है कि यहा आवादी का घनत्व बहुत कम है।

देश के आजाद होने के पश्चात भी यह जिला उपेक्षित-सा रहा। यहा पर उद्योग-धन्धो, यातायात आदि आदि का विकास नही हो पाया क्योंकि जिले मे जल व विद्युत की कमी सदैव रही है। 844 गावो के इस जिले मे अधिकाशत ग्रामीण निरक्षर हैं, लेकिन पिछले एक वर्ष में सरकार ने इस जिले के विकास के लिये पूर्ण कृतसकल्प सा ले लिया है। एक ओर सरकार नवीन योजनाओ को इस जिले के विकास हेतु तैयार कर रही है तो दूसरी ओर जिला प्रशासन, योजनाओं की क्रियान्विति के लिए एकजुट हो चुका है। परिणामत. शनै शनै यह जिला विकास की ओर उन्मुख हो चुका है। पिछले एक वर्ष में सरकार द्वारा इस जिले में अत्योदय, राजस्व अभियान, अकाल राहत कार्य, विद्युत-विस्तार, ग्रामीण क्षेत्रो मे पेयजल एव उद्योग-धधो के विकास के लिए समुचित साधन उपलब्ध करवा कर प्रगति की दौड मे इस जिले को भी अग्रसर कर दिया गया है। यहा के जन-जीवन को राहत प्रदान हुई है।

अन्त्योदय : नि सहायों का भाग्योदय—

बाडमेर जिला सदैव ही अभावग्रस्त रहा है। जिले में गरीव ग्रामीण निवास करते हैं। अन्त्योदय योजना के तहत गरीवो में से भी सवसे गरीव व्यक्तियो को ऊचा उठाने का बीडा उठाया गया है। इसके लिये जिला प्रशासन ने रात-दिन एक करके जिले के 844 गावो मे से 3,942 परिवारो का चयन किया है। माह मई, 1978 तक इन चयनित परिवारों मे से 1,423 परिवारो को लाभान्वित किया जा चुका है।

वृद्धावस्था पेंशन हेतु चयनित 732 परिवारो मे से 507 परिवारो को पेंशन सुविधा उपलब्ध कराई जा चुकी है तथा 861 परिवारो को भूमि आवटित की जा चुकी है। चयनित परिवारों में से 15 परिवारो को दुधारू पशु दिये गये, पाच परिवारों को भेडो की इकाइया (दस भेडें व एक भेडा) दी गई, तैंतीस परिवारो को रोजगार हेतु वैल व ऊट-गाडे दिये गये हैं तथा दो परिवारो को खादी एवं ग्रामोद्योग कार्यक्रम के तहत रोजगार उपलब्ध करवाया गया है। लगभग एक हजार परिवारो को ऊन कातने के चर्खे तथा 50 परिवारों को बुनने के लिये लूम दिये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 175 व्यक्तियो को विभिन्न ग्रामोद्योग लगाने की सुविधाएँ दी जा रही हैं।

चयनित परिवारों के ऋण आवेदन-पत्र तैयार किये जा चुके हैं एवं उनको भेड़ें, गाडे व दुधारु पशु क्रय करने हेतु बैंक से ऋण उपलब्ध करवाने के प्रयास किये जा रहे हैं।

ग्रामीण जनता के प्रति न्याय—

1 अक्टूबर से 15 नवम्बर, 77 तक सरकार द्वारा एक विशेष राजस्व अभियान चलाया गया। इस अभियान से न्याय, गाव-गाव व चौपाल-चौपाल पहुँचा। ग्रामीणो को इससे अत्यन्त ही लाभ हुआ। एक ओर तो उनके समय एवं श्रम की बचत हुई तो दूसरी ओर धन भी बचा। विशेष अभियान मे 3,113 खातेदारी के अधिकार दिये गये, 8,629 नामान्तरकरण, 49 मकान और बाडो का नियमन तथा 20 सीलिंग के मामले निपटाये गये।

राजस्व अभियान चला कर सरकार ने भोली-भाली ग्रामीण जनता को न्याय प्रदान किया एव उनके होने वाले श्रम एव अर्थ की भी वचत की। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रो मे ग्रामवासियो मे सरकार के प्रति आदर की भावना झलकती है।

तृषा का अंत · पेयजल व्यवस्था—

रेतीला इलाका होने के कारण बाडमेर जिले मे सदैव ही पानी की भयानक समस्या रही है। गर्मी के दिनो में तो यहा का ग्रामीण बूद पानी के लिए तरसता है, लेकिन इस वर्ष सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रो मे पेयजल सुविधा हेतु एक करोड रुपये की स्वीकृति प्रदान की है। 32 गावो की 33 हजार जनसख्या पेयजल समस्या से मुक्त हो जावेगी।

वर्तमान मे वाडमेर नगर मे पानी की सुन्दर व्यवस्था है। एक समय था जबकि नगर के नल सूखे दिखाई देते थे, कभी पाच-सात दिनो मे नलो मे पानी आता तो मटका-युद्ध सा दृश्य दिखाई देता था, लेकिन सरकार व जिला प्रशासन द्वारा जल-वितरण की उच्च व्यवस्था के कारण अब नगर के नलो में प्रतिदिन पानी आता है। कहा जाय कि बाडमेर नगर पेयजल समस्या से मुक्त हो चुका है, तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।

विकास के लिए नया अभियान —

विकास अभिकरण द्वारा जिले के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। इस विभाग द्वारा कृषि के क्षेत्र में भू-सर्वेक्षण के दौरान विस्तृत सर्वेक्षण एव कृषि आर्थिक सर्वेक्षण तथा होम्योग्राफिक सर्वे किया गया जो कि वर्ष 77-78 मे क्रमश 5706 9182 एव 4,305 हैक्टर भूमि में किया गया। वन एव चारागाह विकास के दौरान 2,505 हैक्टर मे चारागाहो का विकास किया गया एव छ नर्सरियां स्थापित की गई तथा 3,900 क्विण्टल चारा सग्रह किया गया।

पशु एव डेयरी विकास मे, वर्ष 77-78 में 62 दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियां कार्यरत हैं। औसतन प्रतिदिन 9,262 लीटर दूध सग्रहीत किया जा रहा है। वर्ष 77-78 मे एक दुग्ध अवशीतन केन्द्र खोला गया। 980 क्विण्टल सतुलित पशु आहार का वितरण कराया गया, इसके अलावा एक स्नीयर हैडरीम, एक चल पशु चिकित्सा इकाई, एक वीर्य बैंक की स्थापना करवाई गई है। 8,749 पशुओ के चिकित्सा व 208 पशुओ के कृत्रिम गर्भाधान किये गये।

भू-जल हेतु भी यह विभाग सक्रिय हो कर कार्य कर रहा है। वर्ष 77-78 मे 1,739 कुओ की जाच की गई। 1 751 पानी के नमूने एकत्रित किये गये, 1,548 रसायनिक विश्लेषण किये गये, भू-भौतिकि ध्वनिया 255 एव 16 स्थानो पर कुओ की खुदाई का कार्य किया गया। सिचाई एव विद्युत हेतु इस विभाग द्वारा 8 क्षेत्र योजनाओ का सिचाई हेतु सर्वे एव 56 किलो मीटर मे विद्युत लाईन विछाई जा रही है। इसके अलावा ग्रामीण लोगो को बैल एव ऊट-गाडे दिलाने, चारा-प्रदर्शन, दुधारु पशुओ के क्रय एव नये पशु-पालन कार्यक्रम के तहत भेड इकाइयों के क्रय करने मे विभाग ने महत्वपूर्ण एव कर्तव्य-निष्ठा से कार्य करके ग्रामीण क्षेत्रों मे सरकार एव प्रशासन के प्रति ग्रामीणो मे विश्वास के वीज वोये हैं।

स्वस्थ नागरिक · स्वस्थ राष्ट्र

वर्तमान मे, जिले मे चिकित्सा विभाग के अन्तर्गत सार्वजनिक चिकित्सालयो के अलावा स्वास्थ्य विभाग, मलेरिया एव परिवार कल्याण विभाग कार्यरत हैं। स्वास्थ्य विभाग द्वारा कमजोर माताओ एव शिशुओं को डी पी टी, डी टी, विटामिन ए, आयरन फोलिक टेबलेट आदि का वितरण किया जा रहा है। परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 77-78 में 79 नसवन्दी से पीडित व्यक्तियों का नि:शुल्क निदान कर कष्ट से मुक्ति दिलाई गई तथा 15 व्यक्तियो की पुन नस जोडी गई। भूतपूर्व सरकार द्वारा चलाये गये नसवन्दी अभियान के तहत मृतक व्यक्तियों के परिवारो को दस हजार पाच सौ रुपये की राशि का भुगतान किया गया।

जिले मे कार्यरत मलेरिया विभाग द्वारा जनवरी 1978 से अब तक 34 हजार 899 स्लाइडें एकत्रित की गई एव 2 लाख तैंयासी हजार तीन सौ मलेरिया निरोधक गोलिया वितरित की गई। रक्त-परीक्षण मे पाये गये 502 पोजेटिव व्यक्तियो का विधिवत इलाज किया गया। जिले मे 57 आयुर्वेदिक औषधालय भी कार्यरत हैं।

केन्द्रीय सरकार की नवीन ग्रामीण स्वास्थ्य योजना के तहत जिले के चौहटन प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में 2 अक्टूबर, 1977 से जन स्वास्थ्य रक्षको को प्रशिक्षित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। अब तक दो समूहो मे 38 जन स्वास्थ्य रक्षक प्रशिक्षित किये जा चुके हैं तथा अप्रेल, 1978 से तीसरा बैंच प्रारम्भ कर दिया गया है, जिसमे 19 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। योजनान्तर्गत 100 जन स्वास्थ्य रक्षक प्रशिक्षित किये जायेंगे। प्रशिक्षित 38 जन स्वास्थ्य रक्षको को आवश्यकता की समस्त औषधिया उपलब्ध करा कर विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रो में नियुक्त किया जा चुका है।

घर-घर दीप जले—

विद्युतिकरण के क्षेत्र मे इस जिले में आशातीत प्रगति हुई है हालाकि अभी तक गावों में विद्युतिकरण नहीं हुआ है लेकिन वर्तमान सरकार का ध्यान ग्रामीण विद्युतिकरण की ओर अत्यधिक है। वर्तमान मे, इस जिले के 917 कुओ को तथा 47 गावों को विद्युतिकृत किया जा चुका है जो कि स्वय मे एक भारी उपलब्धि है।

राजस्थान राज्य विद्युत मडल, वाडमेर को वर्ष 77-78 मे 41 लाख 77 हजार के लक्ष्य की तुलना मे 42 लाख 71 हजार 940 रुपये की राजस्व प्राप्त हुई।

वर्ष 77-78 में उद्योगो के विकास के लिए बाडमेर मे 15 व बालोतरा मे 10 उद्योगो को विद्युत कनेक्शन दिये गये जबकि पिछले छ वर्षो से कनेक्शन नही देने के कारण यहा उद्योग वधे बेजान पडे थे।

बाडमेर-बालोतरा 132 के वी लाईन लगाने हेतु सर्वे-कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। 140 कृषि उपभोक्ताओ को भी विद्युत कनेक्शन दिये गये हैं। जिन गावो के मध्य एव पास से 11 के वी को लाइन गुजरी है उन गांवों का भी विद्युतिकरण किया जा चुका है। अनुसूचित जाति एव जन-जाति की आठ वस्तियो का सर्वे कार्य पूर्ण हो चुका है एव उनके विद्युतिकरण के लिए व्यय आदि सम्बन्धी प्रपत्र तैयार कर स्वीकृति हेतु उच्च अधिकारियों को भेजे जा चुके हैं।

सिमटती दूरियां : नये-नये मार्ग—

इस जिले में भारत-पाक युद्ध के पूर्व, अर्थात वर्ष 1971 के पूर्व, सडको का पूर्ण अभाव था लेकिन युद्ध के दौरान इस जिले की उपयोगिता को समझ कर सडको का जाल बिछाना प्रारम्भ किया गया। वर्तमान मे वाडमेर जिले मे सडकें अधिकांश गावो तक जा चुकी हैं एव जहाँ कच्ची सडकें हैं, उनको डामर रोड बनाया जा रहा है। वर्ष 75-76 से अब तक सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा बीस सडक कार्य पूर्ण किये गए। इस वर्ष छ सडक कार्यों पर, और कार्य किया जा रहा है। वर्ष 77-78 मे सरकार को यात्री व माल कर से 5 लाख 92 हजार रुपये की आय हुई।

खेतो मे नये प्रयोग—

उन्नत कृषि के लिए प्रशासन द्वारा समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रों मे ग्राम सभाओ का आयोजन कर खेतिहर श्रमिको को, कृषि के नवीनतम ढग से बुवाई, कटाई एव जीवो से रक्षा हेतु जानकारी कराई जाती है। इसके अलावा बीज वितरण का भी कार्य किया गया। वर्ष 77-78 मे 9,708 हैक्टर भूमि हेतु 242 47 क्विटल सकर बाजरा बीज की बुवाई, जिले की समस्त आठो पचायत समितियो मे कराई गई। इसके अलावा 4,200 हैक्टर भूमि मे उन्नत बाजरा बीज की बुवाई की गई।

जिले की आठो पचायत समितियों मे वर्ष 78-79 मे 85 हजार मैट्रिक टन कम्पोस्ट खाद बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके अलावा पौध सरक्षण कार्यो हेतु बीजोपचार, भूमि उपचार, पोली पेस्ट कट्रोल सघन उपचार, खत पतवार नियत्रण, चूहा नियत्रण आदि कार्य, प्राथमिकता के आधार पर किये जा रहे हैं।

पनपता पशुधन—

बाड़मेर जिले मे पशुपालको की सुविधा एव पशु स्वास्थ्य सुधार हेतु दस पशु चिकित्सालय, दो चल पशु चिकित्सा इकाइयां, एक ग्राम आधार योजना एव एक आरक्षण क्षेत्र कार्यरत है। इन पशु चिकित्सालयो द्वारा पशुओं के सक्रामक रोगो की रोकथाम, पशु माता उन्मूलन के टीके, नकारा साडो का बधियाकरण एव सर्जिकल कैम्प लगाकर रोगी पशुओ को मृत्यु के मुह मे जाने से रोका गया। जिले में "[illegible]" रोग के [illegible]

विशेष इकाई खोली गई है। पशु चिकित्सालय द्वारा वर्ष 77-78 मे 72,264 पशुओ का उपचार, 10,394 पशुओ का वधियाकरण, 27,704 पशुओ मे औषध वितरण किया गया। टीका कार्य के अन्तर्गत 11 605 बी क्यू , 4,369 एच एस , 258 सर्रा, 17 151 सी सी. पी पी एव 5 668 अन्य टीके लगाकर पशुओ मे रोगो की रोकथाम की गई। 166 गायो, 111 भैंसो एव 11 अन्य पशुओ का गर्भ निदान किया गया। 266 गायो, 90 भैंसो एव 26 अन्य पशुओ के बांझपन का उपचार किया गया।

ग्राम आधार योजना, बालोतरा एव चल पशु चिकित्सालय, बाडमेर एव बालोतरा द्वारा भी पशुओं की बीमारी की रोकथाम हेतु विशेष प्रयास कर रोग मुक्त किया गया।

बाडमेर मे पशु चिकित्सालयो की उत्तम व्यवस्था के कारण अब ग्रामीण क्षेत्रो में पशु रोगो पर पूर्ण नियत्रण हो चुका है।

जिले मे भेडो के बचाव एव विकास के लिए जिला भेड ऊन विभाग सक्रिय रूप मे कार्यरत है। हाल ही मे नवीन पशुपालन योजना भेड विकास) प्रारम्भ की गई है। वर्ष 77-78 मे 138 भेड इकाइयां स्थापित की गई। इन भेड इकाईयो से लाभान्वित व्यक्तियो को 3 2 0,114 रुपये ऋण तथा 1,43,537 रुपये की अनुदान राशि दी गई। इस योजना के 1,028 योजना प्रपत्र, पूर्ण रूप से तैयार किये जाकर, विभिन्न बैंको को भिजवाये जा चुके हैं।

योजना से लाभान्वित व्यक्तियो मे 42 लघु कृषक 37 सीमान्त कृषक तथा 59 खेतिहर मजदूर वर्ग से सम्बन्धित हैं। इसके अलावा 12 अनुसूचित जाति एव दो अनुसूचित जन-जाति एवं 124 अन्य हैं।

अन्त्योदय मे चयनित परिवारो में से भी, इस योजना के अन्तर्गत, दस व्यक्तियो को ऋण स्वीकृत किया जा चुका है।

ज्ञान के ज्योति-कलश छलके—

जिले मे 649 प्राथमिक विद्यालय, 123 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 21 माध्यमिक विद्यालय, 5 उच्च माध्यमिक विद्यालय एव एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय हैं, जिनमे क्रमश 37789, 18137, 4336, 3569 एव 504 विद्यार्थी विद्याध्ययन कर रहे हैं।

बाडमेर जिले में प्रौढ शिक्षा हेतु राज्य सरकार से एक लाख रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई है। जिले मे एक सौ अनौपचारिक केन्द्र स्वीकृत हैं। 90 केन्द्र ग्रामीण क्षेत्रो के लिये तथा दस केन्द्र बाडमेर, बालोतरा व सिवाना नगर हेतु स्वीकृत हैं। वर्ष 77-78 मे 852 प्रौढो को शिक्षित किया गया जिनमे 31 महिलाए भी हैं। केन्द्र सचालको के रूप मे भी 15 केन्द्रो पर महिला कार्यकर्ताए कार्यरत हैं।

गतिशील बाड़मेर

युवा चेतना

–श्री मोहन 'रत्नेश'

राष्ट्र के सामने अर्थ-सकट मे भी बढ कर बडा सकट अन्धेरे की तरफ बढती युवा पीढी का है। जिस शक्ति से राष्ट्र को उजाला मिलने वाला है, भविष्य का सितारा बुलन्द होने वाला है, उस शक्ति की परवाह करना जरूरी होगा, क्योंकि वह हर दृष्टि से हिन्दुस्तान से जुडी हुई है। फिर उसे सुदृढ़, सक्षम, शिक्षित एव आत्म-निर्भर बनाना आवश्यक है। जब वह शक्ति अपनी सही रूप मे तस्वीर बना कर सामने आ जायेगी तब सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता, राष्ट्रभावना, कर्त्तव्यनिष्ठा, राष्ट्रप्रेम, पुरुषार्थ आदि उस तस्वीर मे समाया हुआ दिखने लगेगा। सडक पर घूमने वाले प्रत्येक युवक मे विवेकानन्द सी शक्ति एव महान् आत्मबल जागृत हुआ होगा। युवा जागृति के लिए आवश्यक, रचनात्मक प्रवृत्तिया उत्पन्न हुई होंगी। नारो से खेतो-खदानो की डगरो तक सम्मोहन के लिये, राष्ट्र मे स्वतत्रता-दिवस की रजत जयन्ती पर सम्पूर्ण राष्ट्र मे 83 नेहरू युवक केन्द्र स्थापित किए गए। वर्तमान मे इनकी सख्या 223 है, जो जिला-स्तर पर कार्यरत हैं।

राजस्थान, जिसके एक कोने मे उडते अन्धड के रज और सीमावर्ती क्षेत्र पर स्थित बाडमेर। यहा का नेहरु युवक केन्द्र भी पिछले पाच वर्षों से युवा शक्ति मे स्वावलम्बन, चरित्र-निर्माण एव भातृत्व-भावना के बीज बो रहा है।

युवा शक्ति की आकांक्षाओ को नये आयाम देने को नेहरु युवक केन्द्र, बाडमेर प्रौढ शिक्षा, पुस्तकालय, वाचनालय, व्यवसायिक प्रशिक्षण शिविर, खेलकूद, सास्कृतिक सस्थाएँ, नाट्य प्रशिक्षण, कठपुतली प्रशिक्षण आदि के अतिरिक्त अनेक गृह-उद्योग सम्बन्धी रचनात्मक एव क्रियात्मक प्रशिक्षण के द्वारा युवको को रोजगार के साधन जुटा रहा है।

केन्द्र 15 से 25 वर्ष के ग्रामीण युवको को, शिक्षा एव अन्य विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ दे रहा है, ताकि वे अपने जीवन को आत्म-निर्भर बना सकें। व्यावसायिक प्रशिक्षण के द्वारा भी केन्द्र, युवको को रोजगार दिला रहा है। रेडियो मरम्मत एव निर्माण के लिए 27 व्यक्तियो को प्रशिक्षण दिया गया जो आजकल स्वय का कारोबार चलाते हैं।

डेरी प्रशिक्षण के लिए केन्द्र बाडमेर ने, 'नेशनल डेयरी इस्टीट्यूट, करनाल' मे 71 व्यक्तियो को भेजा, यही नही केन्द्र के द्वारा ग्रामीण युवको को कृषि एव पशु-पालन के क्षेत्र मे प्रशिक्षण दिलाने के लिए 16 युवको को उदयपुर भेजा गया। जो नये ढग से अपनी कृषि एव पशुपालन कर रहे हैं तथा डीजल पम्पो की मरम्मत हेतु 36 ग्रामीण व्यक्तियो को उदयपुर विश्वविद्यालय के विस्तार-निदेशालय मे भेजा गया, जिसका उपार्जन वर्तमान मे गावो मे मिल रहा है।

महिलाग्रो मे भी जागृति लाने के लिए युवक केन्द्र ने सिलाई मशीन प्रशिक्षण एव कशीदाकारी प्रशिक्षण की व्यवस्थाएँ करवायी हैं, जिसमे महिलाएँ ग्रपने व्यर्थ समय का सदुपयोग करके धनोपार्जन करती हैं। इसके लिये केन्द्र ने 4 महिलाग्रों को सिलाई मशीनें खरीदने के लिए एव 1 युवक को कशीदे की मशीन क्रय करने हेतु 1500/- रु का ऋण स्टेट वैंक द्वारा दिलवाया।

गृह उद्योग में केन्द्र ने सावुन, स्याही, खिलौने, कुर्सी का केन वुनने ग्रादि की भी प्रशिक्षण सेवायें युवकों को दिला कर स्वावलम्वी वनाया है, जिसमें क्रमश 26, 26, 25, 31 युवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रपने को व्यावसायिक क्षेत्र में लगाया है। मूर्तिकला मे भी युवको को प्रशिक्षित कर मूर्तियां वेचने के लिये विभिन्न सुविधायें—धन, विक्रय, प्रशिक्षण ग्रादि—दिलवाई हैं।

केन्द्र ने खेलकूद के क्षेत्र में, जिसमे वाडमेर जिला कई वर्षों से पिछडा हुग्रा था, सम्पन्न करने का वीडा उठाया। स्थापना के तत्काल वाद राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के समन्वय से 1973-74 में वॉलीवाल, हॉकी, कवड्डी, वास्केटवॉल एव फुटवाल खेलो के 21 दिवसीय शिविर में 260 युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त कर ग्रपने को लाभान्वित किया। एथलेटिक्स एव कुश्ती का भी प्रशिक्षण युवको को दिया गया। भगवान महावीर निर्वाण वर्ष मे केन्द्र के तत्वावधान मे भगवान महावीर व्यायामशाला स्थापित कर चलायी जा रही है, जिससे सुगठित कुश्ती के द्वारा पहलवान, शारीरिक एव मानसिक सुसम्पन्न युवक वन सकें।

विभिन्न जयन्तियो पर केन्द्र विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताग्रो का भी ग्रायोजन करता है। जिससे प्रतिभावान एव कुशल कलाकारो को ग्रागे ग्राने का मौका मिलता है। वाचनालय जहा विभिन्न प्रकार की 42 मासिक, 15 दैनिक पत्र, 8 साप्ताहिक, 5 पाक्षिक पत्र ग्रादि ग्राते हैं, जिनका लाभ जिले के समस्त लोग उठा ग्रपना ज्ञान वढाते हैं। यही नही समय-समय पर केन्द्र प्रतिभावान शिक्षार्थियो, कलाकारो, संगीतकारो, खिलाडियों को भी सम्मानित कर प्रोत्साहित करता है। जिसकी गतिशीलता मे 'मरुधर कला केन्द्र', 'जिला महिला जागृति परिषद' का सम्वन्ध है।

केन्द्र ने वेरोजगार एव रोजगार प्राप्त किराये पर ठेला चलाने वाले 178 व्यक्तियो को स्वयं का ठेला दिलवाने के लिए, स्टेट वैंक ग्रॉफ वीकानेर एण्ड जयपुर द्वारा 1,29,955/—रुपयो का ऋण दिलवाया है, जिससे वे स्वतन्त्र रूप से ग्रपनी रोजी-रोटी कमा सकेंगे एवं ऋणदार होने से बचकर ग्रपने पैसों की वचत कर ग्रन्य कार्यो में लगायेंगे, जैसे शिक्षा, ग्रामोद-प्रमोद, कपडा एव ग्रन्य कार्य।

वर्तमान देश व्यापी प्रौढ शिक्षा कार्यक्रम में भी केन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1977 के ग्रन्त तक केन्द्र, वाडमेर द्वारा पचायत समितियों में ग्रनौपचारिक शिक्षा केन्द्रो को इस प्रकार स्थापित किया गया है—वाडमेर–42, वालोतरा–11, वायतू–26, शिव–35, सिणधरी–53, चौहटन–63, धोरीमन्ना–89 एव सिवाणा–10। सभी केन्द्रो में नेहरू युवक केन्द्र वाडमेर द्वारा 6654 पुस्तकें, 3581 स्लेटें, 202 चार्ट ग्रौर 954 स्लेट पेन्सिल पैकेट ग्रादि सामग्री वितरित करवाई गई है।

केन्द्र के तत्वावधान मे 1978 से प्रत्येक शनिवार को केन्द्र के प्रागण में बाडमेर के कुटीर उद्योगो द्वारा निर्मित वस्तुश्रो का एक 'हाट बाजार' लगता है, जिसमे बाडमेर चर्म-उद्योग, काष्ठकला, रगाई-छपाई ग्रादि की ग्रद्वितीय वस्तुए विक्रय हेतु सजाई जाती हैं। इस प्रकार बाडमेर केन्द्र द्वारा युवको को स्वावलम्बी बनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए गए हैं जिसके द्वारा युवको का भविष्य उज्ज्वल बनेगा। साथ-साथ देश मे बेरोजगारी, हडतालें, तोड-फोड, दगो ग्रादि का सकट भी टलता रहेगा। ग्रनैतिक प्रदर्शन रुक जायेंगे। युवक फिर से कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, परिश्रमी एव राष्ट्र प्रेमी होकर ग्रात्मविश्वासी बनकर ग्रपने भविष्य के लिए सदैव कदम बढ़ाने को तत्पर रहेंगे।
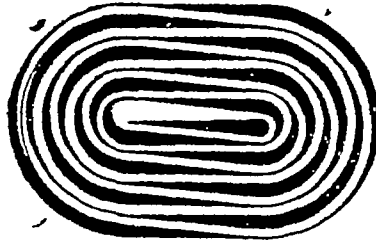
श्री वर्मा की स्मृति में

सीमावर्ती छात्रावास

–श्री भैंरसिंह सोढा

स्वर्गीय माणिक्यलाल वर्माजी का भारतीय स्वतत्रता मे राजस्थान के लिए जो योगदान रहा है वह इतिहास कभी भूल नही सकता। लोकनायक वर्माजी राजस्थान के तपे हुए नेता ही नही थे, राजनैतिक चेतना के प्रणेता भी थे। राजस्थान की स्वतत्रता के पश्चात् उनके जीवन काल तक, सत्ता को बनाने एव प्रेरणा देने का कार्य इनके मार्ग-दर्शन से ही सम्भव था। स्वर्गीय लोकप्रिय नेता श्री जयनारायण व्यास स्वतत्रता की अलख जगाने के लिए मारवाड मे जिस प्रकार प्रिय थे उसी प्रकार वर्माजी मेवाड में विख्यात थे। वर्माजी केवल कथनी मे विश्वास नही करते थे, वे तो करनी मे अधिक विश्वास रखते थे। इनके दिल मे पिछडे वर्ग के उत्थान के लिए ऐसी तडफन रहती थी कि वे सदा इनके उत्थान, विकास के लिए रात-दिन एक कर देते थे। इसके फलस्वरूप अंग्रेजी सत्ता की भीषण से भीषण यातनाओ को भी उन्होने झेला, लेकिन वे जिस मार्ग पर चल रहे थे उससे कदापि भी विचलित नही हुए। गरीबो के हितैषी, पिछडे वर्ग के सहयोगी वर्माजी वृद्धावस्था मे होते हुये भी सीमान्त क्षेत्र मे अधिक सेवारत रहे। राजस्थान के पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र मे, आपने-अपने अन्तिम समय में, जो सेवा की उसे इतिहास के पृष्ठ कभी भी ओझल नहीं कर सकते।

राजस्थान के पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र बाडमेर, जैसलमेर एव बीकानेर मे लगातार आप यात्रा कर यहा की जनता का मनोबल ही नहीं बढाते अपितु यहा पर फैली अशिक्षा को मिटाने के लिए भी सदा कटिबद्ध रहते थे। सन 1965 के भारत-पाक सघर्ष के पश्चात इस क्षेत्र मे शरणार्थियो और विस्थापितो को आश्रय एव शैक्षणिक सुविधाए प्रदान करने के लिए श्री वर्माजी की अमूल्य सेवाऍं कदापि भुलाई नही जा सकती। शैक्षणिक उत्थान के लिए इस प्रकार का गठन पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति के अन्तर्गत किया गया है। बाडमेर, बीकानेर एव जैसलमेर मे इसी समिति के अन्तर्गत शैक्षणिक सस्थाओ की स्थापना की गई। बाडमेर मे 9 दिसम्बर 1965 को सीमावर्ती छात्रावास की स्थापना की गई, जो वर्माजी के स्वर्गवास के पश्चात 'श्री माणिक्यलाल वर्मा सीमा छात्रावास', के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त किए हुए है।

बाडमेर मे स्थापित इस छात्रावास मे बाडमेर जिले के 50 मील के सीमान्त क्षेत्र के सुंदरा, रोहिडी, बन्दडा, गिराब, हरसानी, आसाडी, भू का पार, मगरा, चन्दनिया, तीमणीयार, फोगेरा, बालेबा, गोरडिया, गडरा रोड, तामलोर, जैसिंधर, मेदूसर, मुनावा, अकली, गागरिया, रामसर, खारिया, रेडाणा, माचबर, इन्द्रोही, खडीन, केलनोर, नयातला, नयापुरा, बीन्डे का पार, देदडियार मासेरी, हाथमा, बागलेसर, नागे का पाट, रतासर, चाडी गगाला, धारासर, मते का तला, बीजहार, सोभाला, बूढ राठौडान, आलमसर, कापडाऊ, बावडी कला, गुमाने का तला, धनाऊ बाखासर, दूधवा, लीलसर सेतराऊ, झन्कली धोरीमन्ना, जायडू, लखवाडा, बूठ, फागलिया, धाटा आदि गावो के अतिरिक्त कई गावो के विद्यार्थी नि शुल्क शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं। इन गावो के अतिरिक्त पश्चिमी पाकिस्तान के 1965 के भारत-पाक सघर्ष मे पाक से आये अडवलियार, डाली एव मिठडोया गावो के छात्र भी बाडमेर छात्रावास मे शिक्षा प्राप्त करते रहे हैं।

सीमान्त पर रहने वाले जन-मानस के बालको को शिक्षा प्रदान करने हेतु वर्ष 1965-66 में 40, 66-67 में 60, 67-68 मे 100, 68-69 मे 100/60, 69-70 मे 100 70-71 मे 100 व 71-72 मे 100 छात्रो को प्रवेश दिया गया। प्रवेश पाने वालो मे राजपूत ब्राह्मण, माहेश्वरी, चौधरी, सुथार, दर्जी नाई, दरोगा, लखवारा, मुसलमान, मगणियार, मेगवाल, सोनी, माली, चारण, लुहार, जटिया, आदि जातियो के भी छात्र हैं।

स्वर्गीय श्री माणिक्यलाल वर्मा की स्मृति मे चलने वाले इस छात्रावास के स्थाई भवन बनाने मे, बाडमेर जिलाधीश श्री देवेन्द्रराज मेहत्ता, नगरपालिका प्रशासक श्री राधाकृष्ण त्रिपाठी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। नगरपालिका द्वारा भूमि आवटित करने के पश्चात शिक्षा विभाग ने एक लाख रुपये का अनुदान देकर पक्की ईमारत बनाई। आज इस छात्रावास मे 14 कमरे, स्टोर, शौचालय एव गैलेरी बनी हुई है। यह भवन भविष्य मे बनाये जाने वाले पूरे भवन का आधा ही है। इस छात्रावास के भवन का शिलान्यास श्री शिवचरण माथूर ने सन् 1967 मे किया था।

सीमांत क्षेत्रो के विद्यार्थियो के लिये खोले गये इन छात्रावासो के लिए सभी प्रकार की सुविधाएँ नि.शुल्क प्रदान की जाती हैं। विद्यार्थियो के लिए आवास सुविधा, खाने-पीने, पाठ्य सामग्री, पहनने-ओढने व बिछाने के कपडो आदि सभी प्रकार की सुविधा पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति द्वारा सचालित इस छात्रावास द्वारा दी जाती रही है।

इस छात्रावास में शिक्षा प्राप्त करने वाले कई विद्यार्थी आज भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। कई छात्रो ने अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात सरकारी एव गैर सरकारी सस्थानो मे सेवाए करनी आरम्भ कर दी हैं। आज भी पुलिस, सेना, वन-विभाग, रेल्वे, ऐयर फोर्स, पैरा सूट, ग्राम सेवक, अध्यापक आदि स्थानो पर विभिन्न पदो पर सेवा कर रहे हैं। इस छात्रावास की समय-समय पर देख-रेख करने एव उत्सव समारोह मे भाग लेने के लिये भारत के उच्चस्तरीय नेताओ, समाज सेवियो का बराबर आशीर्वाद मिलता रहा है। इस छात्रावास के छात्र, समय-समय पर नागरिको के हितार्थ सभी प्रकार के कार्य करते आ रहे हैं। छात्रावास के छात्रो द्वारा किए गए सास्कृतिक कार्यक्रम, सदा ही विभिन्न शालाओ मे प्रथम स्थान प्राप्त करते रहे हैं। छात्रो का परीक्षा परिणाम भी सदा ही उत्तम रहा है। विद्या अध्ययन के साथ-साथ छात्रावास के छात्र अवकाश के समय देश-दर्शन करने के लिये प्रति वर्ष भारत के कई क्षेत्रो की यात्रा करते रहे हैं। इस छात्रावास के छात्रो ने दिल्ली, शिमला, चडीगढ, भाखडा बाध, आगरा, जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, चित्तौडगढ आदि अनेको दर्शनीय एव महत्वपूर्ण स्थानो की यात्रा कर ज्ञानवर्धन किया। छात्र अवकाश के दिनों मे अपने सीमावर्ती ग्रामीण क्षेत्रो मे शिक्षा प्रचार के साथ-साथ देश रक्षा का भी कार्य करते रहते हैं।

पश्चिमी राजस्थान सीमा विकास समिति के इस समय माननीय श्री भोगीलाल पाडया-अध्यक्ष एव मन्त्री श्री सत्यदेव व्यास हैं। इस समिति द्वारा बाडमेर के अतिरिक्त जैसलमेर एव बीकानेर मे भी स्व श्री माणिक्यलाल वर्मा की स्मृति मे एसे ही छात्रावास चलाये जा रहे हैं, जिनका नामकरण भी 'श्री माणिक्यलाल वर्मा सीमा छात्रावास' ही है।

नारी-जागृति

—श्री भूरचन्द जैन

भारत सरकार के शिक्षा एव समाज कल्याण मत्रालय से देश के पन्द्रह से पच्चीस वर्ष के बेरोजगार ग्रामीण युवको मे नई चेतना जाग्रत कर उन्हें स्वावलम्बी बनाने हेतु देश के अनेक क्षेत्रो में नेहरू युवक केन्द्रो की स्थापना की है। ये केन्द्र ग्रामीण युवा शक्ति के साथ-साथ जहाँ कार्यरत हैं वहाँ ये राष्ट्रीय भावनाओ को सबल बनाने हेतु नाना प्रकार के रचनात्मक कार्य भी कर रहे हैं। राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तान का बाड़मेर क्षेत्र शिक्षा के अभाव मे पिछड़ा हुआ है जहा स्त्री शिक्षा प्राय नगण्य भी है। दासता, दहेज, पर्दाप्रथा आदि पुरानी रूढियो एवं कुरीतियो मे यहा की महिलाए ग्रस्त हैं। महिलाओ मे जागृति एव नई चेतना जाग्रत करने के लिए नेहरू युवक केन्द्र बाडमेर के अथक प्रयत्नो से बाडमेर मे जिला महिला जागृति परिषद् की स्थापना 21 अप्रेल, 1973 को की गई।

अशिक्षा, अ धविश्वास, रूढियो एव कुरीतियो की शिकार इस क्षेत्र की महिलाओ का लबे अरसे से शोषण हो रहा है। श्रीमती रुक्मिणी देवी, श्रीमती सुचेता श्रीवास्तव आदि कुछ प्रबुद्ध महिलाओं के प्रयासो से बाडमेर जिला महिला जागृति परिषद् की स्थापन हुई। शुरू-शुरू मे इन दोनो महिलाओ ने जन सम्पर्क के माध्यम से महिलाओ को जागृति परिषद् के उद्देश्यो से परिचित कराया। कुछ शिक्षित एव सामाजिक बन्धनों का बहिष्कार करने वाली स्थानीय महिलाओ ने इस परिषद् की प्रारम्भिक सदस्यता स्वीकार की और वे नियमित रूप से इस परिषद् की समस्त गतिविधियो एव बैठको मे भाग लेने लगी। एक वर्ष के अथक प्रयत्नो के पश्चात् इस सस्था का पजीयन हुआ।

सिलाई केन्द्र–

जिला महिला जागृति परिषद् ने पजीयन के पश्चात् बाडमेर जिले मे रचनात्मक कार्य करने आरम्भ किए। अगस्त, 1974 को इस परिषद् ने नेहरू युवक केन्द्र मे ही सिलाई-कटाई प्रशिक्षण केन्द्र आरम्भ किया। उस केन्द्र का उद्घाटन बाडमेर की सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती भगत ने किया। बाडमेर जिले के इतिहास मे यह पहला अवसर था जब वहा के व्यापारी वर्ग की एक महिला ने विशाल जनसमुदाय के बीच उद्घाटन समारोह की रस्म अदा की। इस सिलाई-कटाई प्रशिक्षण केन्द्र मे प्रारम्भ मे 14 महिला सदस्यों ने एक दक्ष महिला प्रशिक्षक की देखरेख मे घरेलू उपयोग मे आने वाले कपडो की कटाई-सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू किया। इस प्रकार परिषद् का यह केन्द्र सिलाई-कटाई के क्षेत्र मे महिलाओं के लिए आकर्षण का विषय बन गया। यहा अब तक लगभग 188 से अधिक महिलाओ ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इस समय इस केन्द्र मे 30 महिलाए एव युवतिया सिलाई-कटाई का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। सिलाई-कटाई एव कशीदाकारी के लिए इस समय परिषद् ने अलग से भवन किराए पर लेकर कार्य आरम्भ भी कर दिया है।

जन सहयोग–

सिलाई-कटाई केन्द्र को व्यवस्थित रूप से चलाने हेतु जन सहयोग से चार सिलाई मशीने एव कपडे भी खरीदे गए। जनता से आर्थिक सहयोग के रूप मे 2880 रुपए भी प्राप्त हुए। सिलाई-कटाई के प्रशिक्षण के साथ-साथ इस केन्द्र में मई 1975 से कशीदाकारी का प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था की गई। अब तक लगभग 80 महिलाओं एव युवतियो ने कशीदाकारी का विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। इस समय 15 महिलाए एव युवतिया कशीदाकारी का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही है। सिलाई, कटाई एव कशीदाकारी प्रशिक्षण मे अधिकाश महिलाए ऐसी हैं जो पर्दा प्रथा के कारण घर की चार दीवारी से बाहर ही नही निकली थी। इस केन्द्र मे प्रशिक्षण प्राप्त श्रीमती खुशाली को स्टेट बैंक आफ बीकानेर एव जयपुर से एक सिलाई मशीन खरीदने हेतु ऋण भी मिला है। आज यह महिला इस मशीन पर सिलाई का कार्य कर स्वावलम्बी बन गई है।

शुरू-शुरू मे सिलाई एव कटाई प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली महिलाओं से न्यूनतम पाच रुपए का प्रवेश शुल्क लिया जाता था। परन्तु महिलाओ की बढती रुचि एव परिषद् की गतिविधियो की ओर झुकाव को देखते हुए एक वर्ष पश्चात् यह शुल्क भी वन्द कर दिया गया। इस प्रशिक्षण के लिए आने वाली महिलाओ मे अधिकांश अशिक्षित थी। अत परिषद ने समाज कल्याण बोर्ड के सहयोग से महिलाओ के लिए शिक्षा का सक्षिप्त पाठ्यक्रम जुलाई 75 से आरम्भ किया। इस दो वर्ष के पाठ्यक्रम हेतु समाज कल्याण बोर्ड ने लगभग 22 हजार रुपए का अनुदान भी दिया। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से आठवी कक्षा तक की ही शिक्षा देने का प्रावधान है। अत' आरम्भ में 15 महिलाओ ने इस पाठ्यक्रम से शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रवेश लिया। इस समय घरेलू कार्यो में व्यस्त रहने वाली लगभग 22 महिलाए अवकाश के समय यह शिक्षा प्राप्त कर रही है।

परिवार नियोजन–

उपर्युक्त कार्यक्रमो के अलावा परिषद् महिलाओ में परिवार नियोजन के प्रति जागृति उत्पन्न करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है। परिषद् की महिला सदस्याए परिवार नियोजन के आपरेशन करवाने हेतु दूसरी महिलाओं को बराबर प्रोत्साहित करती रहती हैं। घर-घर जाकर परिवार नियोजन का सदेश प्रसारित करने में परिषद् की महिलाएं प्रारम्भ से ही अधिक सक्रिय है। सामाजिक कुरीतियो एव रूढियो को दूर करने, पर्दाप्रथा को हटाने, फैशनपरस्ती को रोकने, दहेज प्रथा का वहिष्कार करने, फिजूलखर्ची कम करने, समय का सदुपयोग करने, वच्चो के लालन-पालन की जानकारी देने आदि रचनात्मक कार्यो की ओर महिलाओ को प्रेरित किया जाता है।

ग्रामीण क्षेत्र मे कार्य–

परिषद् ने 'ग्रामीण महिला जागृति परिषद्' के नाम से दो शाखाएं ग्रामीण क्षेत्र में भी शुरू कर दी है जहा ग्रामीण महिलाओ को हस्तशिल्पो के प्रशिक्षण के साथ-साथ सामाजिक कुरीतियों का वहिष्कार करने के लिए भी प्रेरित किया जाता है। इस प्रकार की ग्रामीण महिला परिषदो की स्थापना से जन-जागृति में अधिक बढोतरी होगी।

जिला महिला जागृति परिषद् बाडमेर इस समय अपनी शैशव अवस्था में है। इस क्षेत्र का पिछड़ा वातावरण अशिक्षा और सामाजिक अड़चनें अवश्य बाधक बने हुऐ है फिर भी यह परिषद् महिलाओ में जन-जागृति का शखनाद कर रही है। भविष्य मे परिषद् 400 महिलाओ को सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत आत्मनिर्भर बनाने, मजदूर महिलाओ के बच्चो का लालन-पालन करने, निराश्रित बच्चो के लिए छात्रावास चलाने आदि की योजना को क्रियान्वित करने जा रही है। महिलाओं में जागृति उत्पन्न करने और परिषद् की गतिविधियों के सफल सचालन में परिषद् की अध्यक्षा श्रीमती रुक्मिणी देवी सदैव सक्रिय है। इस कार्य में भारत सरकार के नेहरू युवक केन्द्र के युवक सयोजक श्री मगराज जैन का सहयोग एव मार्ग-दर्शन भी सराहनीय है।

मरु प्रदेश में लवण क्यों ?

—श्री चपालाल सालेचा

पश्चिम व मध्य राजस्थान लवण स्रोतो का भण्डार रहा है और यह भूमि लवणीय क्यो है ? यह बहुत समय से वैज्ञानिकों के लिये एक विशद खोज का विषय बना हुआ है। लोक कथाओ व किवदतियो के आधार पर हर लवण स्त्रोत के साथ किसी न किसी देवी का नाम जुडा हुआ है व वहा का लवण स्त्रोत उस देवी का वरदान माना जाता है। साभर मे सांभरा, डीडवाना मे देवीमाता, लटियाल माता फलौदी आईमाता बिलाडा, सामरा व आसापुरा पचपदरा मे और इसी प्रकार से अन्य नमक के स्त्रोत भी किसी न किसी देवी के नाम से सम्बद्ध हैं।

वैज्ञानिक दृष्टि से मरूधरा के नमक स्त्रोतो के बारे मे निम्न मुख्य सिद्धान्त हैं —

1 पहला सिद्धान्त, जो कुछ स्त्रोतो पर लागू होता है, वह है इन स्त्रोतो का किसी पुरानी नदी की धारा के मार्ग मे होना। इस सबध मे मैं यहाँ विशेष रुप से पचपदरा का उल्लेख करना उचित समझूंगा। क्षेत्र की प्रचलित मान्यताओ के अनुसार यहा हाकडा दरिया का बहाव था। दरिया शब्द पुरानी परम्परा मे पजाब व सिन्घ मे नदी के स्थान पर प्रयोग मे आता रहा तथा इस नदी का मार्ग पचपदरा साल्ट के पार्श्व मे मरलाड, कवास नीम्बला व जैसलमेर के भागो से होते हुए मुलतान की तरफ से आता था। कुछ पुरानी पुस्तको मे उल्लेख हैं कि पचपदरा की खान की खुदाई के समय जहाज का एक मस्तूल निकला था। इतिहास बताता है कि पचपदरा के आस-पास के क्षेत्र जैसे खेड, तिलवाडा, सरली इत्यादि मीठे पानी के क्षेत्र पर थे कालान्तर मे यह पानी गायब हो गया। पचपदरा का नमक—इतिहास इस स्रोत को 500 वर्ष पुराने स्तर पर ले जाता है। यदि आज की भौगोलिक परिस्थितियो मे कोई बडा बदलाव नही आया होता यह नमक स्रोत का इतिहास 500 वर्ष पर रुकना न चाहिये था। राव मल्लीनाथ व जगमाल के समय के जो वर्णन उपलब्ध हैं जिनमे बडी लडाईयाँ हुई, उनमे इस नमक स्रोत का कही जिक्र नही आता, पर उसके विपरीत अत्यत हरेभरे तिजणियो अर्थात स्त्रियो के क्रीडा स्थल का वर्णन आता है। जिस हाकडा दरिया के मार्ग का मैंने ऊपर वर्णन किया है, उस मार्ग पर गन्ना पेरने के कोल्हू व अन्य सामान मिले हैं। यह भी इस मत की पुष्टी करते है।

हाकडा दरिये के गायब होने के विषय मे एक प्राचीन दन्तकथा प्रचलित है जिसके अन्तर्गत एक वनजारे ने, अपनी पत्नी के राजा के द्वारा छीने जाने पर भारत की सम्पूर्ण वनजारा जाति के सहयोग से राजा को दण्ड देने का निश्चय किया और 'वह पानी मुल्तान गया' की कहावत आज भी प्रसिद्ध है। चाहे मानव के वहुत वडे दण्ड प्रक्रिया के सहयोग से, चाहे बडे तूफानो से या रेत के टीबो द्वारा मार्ग के ढक जाने से, यह वहाव रुक गया हो पर यह एक नदी का बहाव था इस सभावना से इन्कार नही किया सकता।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि यह भी मीठे पानी की नदी का वहाव था तो नमक कहा से आया। लूनी नदी का इस तरफ से बहाव होना और इस घुमाव स्थल पर उस नदी के साथ मिलना इसका उत्तर है। लूनी नदी व इसकी सहयोगी नदियो के दाहिनी ओर भूमि के वीच जो खारे पानी का वहाव वहता है, वह इस

मीठी नदी के वहाव के वन्द होने के पश्चात इन ग्रान्तरिक ढलान मे एकत्र होने लगा । मीठे पानी के साथ यह खारेपन मे हल्का होकर कच्छ के रन की तरफ से समुद्र मे मिल जाता था पर ज्योही यह मीठा पानी ग्राना वन्द हुग्रा तो लवणीय वहाव ने ग्रपना प्रभाव दिखाना शुरू किया ग्रौर इसीलिये वहुत समीप के भूत मे ही ग्रर्थात केवल 500,600 वर्ष पूर्व ही यह नमक उत्पादन की स्थिति ग्राई ऐसी एक सभावना पर विचार किया जा सकता है ।

2 दूमरी एक सम्भावना यह भी है कि कच्छ की खाडी का लवणीय डेल्टा के समान भाग इस निचाई के साथ-साथ ग्रन्दर तक घुस ग्राया हो ग्रौर उसके कारण ग्रव तक भूमिगत स्वरूप से यह लवणीय स्रोत जमीन के भीतर विद्यमान हो । यहा उल्लेखनीय यह है कि साचोर मे ज्योही लूनी नदी कच्छ के दलदल की तरफ वटती है तो उसका पानी फैल जात है ग्रौर स्वाभाविक रूप से नमक वन जाता है । इस नमक का निर्माण इस धारणा की पुष्टि करता है पर शेष मरूप्रदेश का नहीं ।

3 लूनी नदी को वैज्ञानिको ने 'जादूगर नदी' कहा है ग्रौर जैसा कि ऊपर क्रमाक एक मे विश्लेषण किया गया है यह 'जादूगर नदी' ग्रपने प्रचलित मार्ग पर मीठे पानी का वहाव लेकर चलती है। 1930 में ज्योलोजिकल सर्वे ग्राफ इन्डिया के एक वैज्ञानिक श्री गोखले का मत था कि इस नदी के मुख्य वहाव मे 40 से 100 फीट की गहराई मे मीठे पानी की उपलब्धि होती है पर इसके दाहिने हाथ की तरफ वहुत कम नीचाई पर ही इसके समानान्तर खारे पानी की धारा वहती है। यह खारे पानी की धारा का वहना ही वैज्ञानिको द्वारा लूनी नदी को 'जादूगरी नदी' वताना है। लूनी मे जोजरी नदी मिलती है जो पचपदरा के पास से निकल कर खेड के पास से तिलवाडा गाव पर लूनी मे मिल जाती है। इस नदी के वहाव पर ग्रनेक गाव ऐसे हैं जहा भूतकाल मे नमक का उत्पादन होता था। यही हाल ग्रन्य नदियो का भी है ग्रौर इसी कारण विलाडा के ग्रास-पास जिधर से लूनी की ग्रनेक सहायक नदिया वहती हैं नमक के वहुत स्त्रोत हैं। प्रश्न यह उठता है कि यह खारे पानी की धारा कहा से ग्राती है जो पचपदरा के पास से घुमाव के स्थान पर फिसल कर पचपदरा के ढलान के भूमिगत भाग मे एकत्र हो जाती है ग्रौर पचपदरा को एक भूमिगत झील की कढाही का सा स्वरूप देती है। मुलानैणसी का काल सन् 1670 के ग्रासपास का है जव उन्होंने मारवाड के परगनो का हाल लिखा था उस समय मारवाड के परगनो की सख्या भी थोडी थी। पर उनके ग्रंथ मे नमक के लगभग 38 दरीवो ग्रर्थात ग्रागारो का जिक्र है। सन् 1879 के जोधपुर राज्य के ग्रग्रेजो की विभिन्न- सधियो के साथ जुडे, वन्द किये जाने वाले ग्रथवा चालू रहने वाले कुल 80 नमक स्त्रोतो का जिक्र है। सन् 1879 से 1882 तक ग्रग्रेजो ने राजस्थान के विभिन्न राज्यो से सधिया की, वहा के नमक स्त्रोतो को वन्द करवाया। जिनमें मेवाड राज्य के भी लगभग 50 नमक स्त्रोत वन्द हुए। ग्रव तक वैज्ञानिको का ध्यान ग्रपनी शोधो मे मेवाड के इन स्त्रोतो की तरफ नही गया है पर यह सभी स्त्रोत इस जादूगरनी नदी के भूमिगत खारे पानी की धारा के कारण को शोधने पर विवश करते हैं। स्पष्ट हैं कि सम्पूर्ण ग्ररावली व उसके यदाकदा वाहर उभरने वाले भूमिगत प्रसारो के नीचे कोई वहुत वडी नमक की चट्टान है जिसके ऊपर से जव वर्षा का पानी वहता है तो वह गाढा होकर भूमिगत ढलानो मे एकत्र होकर उन सव जगह नमक के स्त्रोतो को जन्म देता है।

ग्रभी हाल में चुरु जिले में लखासार नाम के स्थान पर ज्योलोजिकल सर्वे ग्राफ इडिया का पोटेशियम लवणो के खोजने का जो कार्यक्रम चल रहा है उसमे पहाडी नमक की 400" मोटी तर्ट जमीन के भीतर मिली है

ग्रौर वैज्ञानिको का मत है कि इस चट्टान की लम्बाई कम से कम 500 किलो मीटर है और सभावना यह है कि इसका सव घ व फैलाव पजाव के साल्ट रेंज तक हो। यह वर्तमान का वैज्ञानिको का शोध कार्य मरुधर प्रदेश के ही नही, उदयपुर के भी नमक स्रोतो का उत्तर देता है।

4 एक ग्रन्य मान्यता, जो सर थॉमस होलैण्ड की 1907 से 1910 तक की मान्यताग्रो पर ग्राधारित है ग्रौर जो ऊपर उल्लेखित तीनो धारणाग्रो का सम्मिलित रूप है, उसके ग्रनुसार गर्मियो के दिनो मे इस रेगिस्तान पर तूफान चलते हैं जो कच्छ की खाडी व ग्ररब सागर की ग्रोर से हवा को ग्राकर्षित करते है। यह वायु चू कि ग्रत्यन्त वेग से चलती है ग्रतः समुद्र के ऊपर से चलते समय जल कणो को भी ग्रपने साथ ले उठनी है व रेगिस्तान की भयकर गर्मियो मे जलकण सूखकर ग्रपने साथ लवणीय कणो को वायु मे छोड देते हैं जो वायु के वेग के वदलाव के साथ हवा से छूट कर इस महान रेगिस्तान मे विखर जाते हैं। ग्रौर वर्षा के समय मे जल की धाराग्रो की ग्रोसकीय क्रियाग्रो के कारण लवणीय धाराग्रो में परिवर्तित होकर ढलानो की तरफ वहने लगते हैं ग्रौर ढलानो मे लवण स्त्रोतो को जन्म देते हैं।

वैज्ञानिको मे साधारण तौर पर यह सिद्धान्त पिछले काफी काल से मान्यता प्राप्त सिद्धान्त के रूप में चल रहा था पर ग्रभी हाल मे वैज्ञानिको के जो शोधपत्र प्रसारित हुए हैं उनमे भी यह विषय ग्रागे खोज के लिए खुला है।

5 एक ग्रन्य मान्यता जो इस सिद्धान्त पर ग्राधारित है कि किसी समय यह सम्पूर्ण भाग समुद्र का हिस्सा था ग्रौर ज्यो ज्यो समुद्र खिसकता गया त्यो त्यो समुद्रीय जल के प्रभाव से ग्रनेक प्रकार के क्षारीय भण्डार स्थान स्थान पर वनते गये ग्रौर काल के ग्रन्तर के साथ इन क्षारीय भण्डारो की लवणीय बद्धता मे ग्रन्तर रहा।

6 पुष्कर व किशनगढ के ग्रास पास के क्षेत्र चू कि सबसे पहले मुक्त हुए ग्रत वहा के लवणो मे प्रथम स्तर के रवे के जमाव के लवण हैं जबकि पचपदरा इत्यादि वहुत वाद मे मुक्त हुए इसलिये इसमे ग्रत्यधिक घुलनशीलता वाले मैंगनेशियम लवणो का मिश्रण है ग्रौर सही पूछा जाय तो नमक की भूमिगत चट्टानो का सवध भी वैज्ञानिक इसी सिद्धान्त के साथ जोडते हैं।

7. पचपदरा के सबध में डा. जे ऐ दून ने एक ग्रन्य सिद्धान्त का प्ररूपण किया जिसके ग्रनुसार लगभग 60 मील लम्वे ग्रौर 60 मील चौडे भू-भाग में जो लवणीय कण हैं वे वर्षा के कारण भूमि के ग्रन्दर जाते हैं ग्रौर ग्रपने साथ इस भूमि में फैले बालू कणो के साथ लगे नमक को घोलते हुए ले जाते हैं ग्रौर इस प्रक्रिया में लूनी की खारी भूमिगत धारा भी सहयोग देती है ग्रौर इस प्रकार कुल वर्षा का दसवा हिस्सा निश्चित रूप से भूमि में जाकर पचपदरा की ग्रदृश्य झील में एकत्रित होता है। ग्रौर वहा के नमक के उत्पादन का कारण वनता है।

हालांकि यह पूर्णरूपेण वैज्ञानिक शोध का विषय है पर परिस्थितिया इस प्रकार से एकत्र हुई है कि इस सिद्धान्त की स्थापना के साथ ग्रन्य सिद्धान्तो को बिल्कुल नकारा नही जा सकता ग्रौर ऐसा माना जा सकता है कि इन लवणीय स्रोतो का कारण विभिन्न परिस्थितियों का सम्मिलित रूप है।

पचभद्रा की प्रतिभामूर्ति—

कविराजा बांकीदास

—श्री कृष्णा मोहनोत

कविराजा बाकीदास का जन्म चारण जाति की आसिया शाखा में हुआ था। आसिया मारू चारणो की एक शाखा है। अवसूर नामक चारण के छह पुत्र हुए—वणसूर, मोहड, लालस, सामोर, सूघा और आसा, जिनसे चारणो की उपर्युक्त 6 प्रशाखाओ का जन्म हुआ। आसा की सन्तान आसिया कहलाई। राठौड जब मारवाड के अधिपति हुए तो आसिया चारण उनके पोलपात रहे। राव जोधा ने आसिया पूंजा को खाटावास ग्राम दिया। उनके कनिष्ठ पुत्र माला ने अपने पिता की सम्पत्ति (जागीर) मे से कोई भाग न ले स्वय की कवित्व शक्ति से सिवाणा के स्वामी देवीदासजी राठौड को रिझा कर उनसे भांडियावास ग्राम रीझ मे प्राप्त किया। माला की तीसरी पीढी मे भीमा नामक प्रसिद्ध कवि हुआ। इसकी उदारता और आतिथ्य-सत्कार से सम्बन्धित अनेक अनुश्रुतियाँ हस्तलिखित ग्रन्थो में प्राप्त है।[1] उसके द्वारा उदयपुर मे एक विशाल भोज देने का प्रमाण एक प्राचीन दोहे मे तथा गीत मे भी प्राप्त होता है।

> "आज उदैपुर आय, कुण थारी समवड करै।
> करता भीम कडाय, आडो चढायो आसीया॥"

आसिया भीमराज द्वारा आमेर मे याचको को दान देकर तुष्ट करने का उल्लेख 'बांकीदास ग्रन्थावली' मे भी एक प्राचीन दोहे के आधार पर किया गया है—

> "असी तखत आवेर, भीमाजल दीघा भिडज।
> फरगल वाले फेर ईढ न आवे आसिया॥"[2]

ऐसी समृद्ध, सुदीर्घ और गौरवशाली परम्परा में भीमा की सातवी पीढी मे, चारण समाज के नर-रत्न कवियो के सिरमौर महाकवि बाकीदास का जन्म वि. सं 1838 में पचपदरा परगने के भाण्डियावास ग्राम मे हुआ। कवि की प्रारम्भिक शिक्षा पिता फतेहसिंह की देखरेख में हुई। 16 वर्ष की आयु मे ही स्फुट दोहे गीत-कवित्त आदि बनाने मे प्रवीण कवि पिता की आज्ञा ले कर रायपुर गये। वहां स्वामी ठाकुर अर्जुनसिंह बडे गुणग्राहक, उदार और ख्यातिप्राप्त व्यक्ति थे।। कवि ने ठाकुर से आमना-सामना होते ही अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दिया—

---

1 हस्तलिखित सग्रह, श्री सौभाग्यसिंह शेखावत।

2 बाकीदास ग्रन्थावली, पहला भाग, सम्पादक रामकरण आसोपा, पृ 8।

"रवि रथ चक्र गणेस रद, नाक ग्रलकृत नार।
तू द्विज इक इल पर ग्रजा, दीपै सूर दातार ॥"

ठाकुर अर्जुनसिंह बांकीदास की काव्य-प्रतिभा से बडे प्रभावित हुए और उन्हे विद्याध्ययन के लिए जोधपुर भेज दिया। ठाकुर साहब की हवेली मे रहने और भोजन की व्यवस्था से निश्चित कवि ने एकलव्य भावना के साथ पांच वर्ष तक गहन अध्ययन किया। अनेक कवियो से, अनेक विद्वानो से विभिन्न भाषाओ, शास्त्रो, कलाओ और इतिहास के सम्बन्ध मे ज्ञान प्राप्त किया। अपने गुरुओ के सम्बन्ध मे स्वय कवि का कथन है—

बक इतेयक गुरु किये, जितेयक सिर पर केस।

इतने गुरुओ से शिक्षित और दीक्षित शिष्य साहित्य-प्रेमी, प्रकाण्ड विद्वान मारवाड-नरेश मानसिंह का काव्य और भाषा गुरु बने तो इसमे कोई आश्चर्य नहीं।

इस प्रकार विविध भाषाओ और काव्य ग्रन्थो का अध्ययन कर बांकीदास जोधपुर से रायपुर लौट गये। उन्ही दिनो स 1860 वि मे माडियावास के पल्लीवाल ब्राह्मणो की भूमि की लाग-बाग के प्रश्न पर जोधपुर राज्य से पल्लीवालो का विरोध हो गया। पल्लीवालो ने अपने अभियोग की पैरवी के लिए बांकीदास से आग्रह किया। वे माडियावास से जोधपुर आये और महाराजा मानसिंह के धर्म गुरु और उस समय प्रशासन मे दखल रखने वाले आयस देवनाथ से भेंट की। आयस देवनाथ बांकीदास के वाक्-चातुर्य तथा प्रत्युत्पन्नमति मे बडे प्रभावित हुए। उन्होने बांकीदास की महाराजा मानसिंह के सम्मुख बड़ी प्रशसा की। महाराजा मानसिंह तो स्वय ही गुणियो के प्रशसक और पोषक रहे हैं, तुरन्त बांकीदास को दरबार मे आमन्त्रित किया और उनकी काव्य-प्रतिभा पर मुग्ध हो प्रथम भेंट में ही लाख पसाव भेंट किया। देवनाथ के इस उपकार से उनकी उदारता और परोपकारी वृत्ति का बांकीदास ने अनेक बार वर्णन किया है—

साधन सिध उभै एक साधन, बाको सूबो बार बह,
रीजै देवनाथ रीजायो पव जालन्धर नाम पह।
मारग बाग तणो मति मेरे भगत निरन्तर उर धर भाव,
तूठै सुतन महेस तूठिया सिख मयनक गुमनेस सुजाव।

महाराजा मानसिंह ने बांकीदास मे भाषा के ग्रन्थो का अध्ययन किया और उन्हे सगर्व अपना काव्य गुरु का सम्मान प्रदान किया। उक्त विषय की स्मृति स्वरूप एक छंद मोहर छाप मे अकित करके बांकीदास को प्रदान किया—

श्रीमन मान धरणीपति, बहुगुन राम।
जिन भाषा गुरु कीनो, बांकीदास ॥

इस प्रकार महाराजा मानसिंह का काव्य गुरु पद प्राप्त करने पर बाकीदास ने कहा—

माँग तो एक मरुपति मान की, नाथ निभायगों टेक गही है।

महाराणा भीमसिंह के आश्रित कवि किसना आढा ने भी इस तथ्य की पुष्टि में एक दोहा कहा है—

जग जाहर कव जोधपुर, देखो बाकीदास।
मान समद तज हंस मन, अवरा धरै न आस ॥[1]

यद्यपि बाकीदास महाराजा मानसिंह के 'भाषा-गुरु' बन जाने तथा पालकी हाथी तथा 'उठने का कुरब' प्राप्त करने के कारण उस समय के उच्च प्रतिष्ठित व्यक्तियो मे माने जाने लगे थे परन्तु तब भी वे बडे विनम्र और कृतज्ञ व्यक्ति थे। एक बार वे महाराजा मानसिंह के साथ गजारूढ हो जा रहे थे, मार्ग मे यकायक ठाकुर अर्जुनसिंह मिल गए। अर्जुनसिंह ने कविराज को अपने जीवन की बाल्यावस्था का स्मरण दिलाया तो तुरन्त उनकी कृतज्ञता प्रकट करते हुए एक दोहा कहा—

"माली ग्रीखम माय, पोख सुजल द्रुम पालियो।
जिण रो जस किम जाय, अत घण वूठा ही अजा।

महाराजा मानसिंह के गुरु का परम प्रतिष्ठा पद प्राप्त करके भी कविराजा बाँकीदास ने कभी राजा की दुर्नीति का कभी समर्थन नही किया। महाराजा मानसिंह के आध्यात्मिक गुरु आयस लाडूनाथ के शिष्य नाथो में भी आचरण की वह पवित्रता न रही। प्रजा के साथ अत्याचार, अनीति, और चारित्रिक दुर्गुणों में फसे नाथो का बाकीदास ने साहसपूर्वक विरोध किया। महाराजा मानसिंह के इकलौते पुत्र युवराज छत्रसिंह ने नाथो की ज्यादतियों तथा प्रजा पीडनकारी कुप्रवृत्तियो से परेशान होकर नाथ पथ से विरक्ति धारण कर वैष्णव धर्म के सिद्धान्तो को मानना प्रारम्भ किया। इससे नाथो के प्रभाव तथा सम्मान पर भी गहरी चोट पहुँची। कविराज बाकीदास ने नाथो के विरोध मे युवराज की नीति का समर्थन करते हुये कहा –

मान को नद गोविन्द रटै जद गड फटै कनफट्टन।[2]

इससे यह सिद्ध है कि बाकीदास नाथ-भक्त थे लेकिन अन्ध-भक्त नही। उनके अत्याचारो या गलत नीतियो की कटु आलोचना करने में पीछे नही रहे। इतना ही नहीं, 'खरी' बात कहते हुए वे कभी नही सकुचाये, सामने चाहे राजा हो या सम्मानित प्रतिष्ठित पुरुष। राजपूत के राजाओ का बिना युद्ध कायरो की तरह अग्रजो की अधीनता स्वीकार कर लेना कवि को बहुत अखरा और इसके लिए उन्होने राजाओ को खूब खरी-खोटी सुनाई। इस सम्बन्ध मे उनका निम्नलिखित गीत बहुत प्रसिद्ध है—

---

1 हस्तलिखित सग्रह, (सौभाग्यसिंह शेखावत) अप्रकाशित।

2 महाराजा मानसिंह व्यक्तित्व एव कृतित्व' लेखक डा रामप्रसाद दाधीच पृ 65।

आयो अगरेज मुल्क रे ऊपर, आहस लीधा खैंच उरा
धणियां मरे न दीधी धरती धणिया उभा गई धरा

× × × × ×

महि जाता चींचातां महलां, अै दुय मरण तणा अवसाण
राखो रे कीहिक रजपूती, मरद हिंदू की मुस्सलमान,
पुर जोधाण, उदैपुर, जैपुर, पहु थारा खूटा परियाण
आंके गमी आवसी आंके, बाके आसल किया वखाण।[1]

इस गीत में स्पष्टत जोधपुर, जयपुर और उदयपुर के अधिपतियो को प्रताडित किया है। राजपूती शान का स्मरण दिलाते हुये मातृभूमि की स्वतत्रता का आह्वान किया है। जाति-पांति के भेद को भुला कर हिन्दू-मुस्लिम दोनो को ललकारा है। देश की धरती पर जब विदेशी शासन सत्ता बिना किसी विरोध के अपना शासन कायम करले, इससे अधिक लज्जाजनक बात देशाधिपति के लिए और क्या होगी। इस गीत के अतिरिक्त इनकी अन्य राष्ट्रीय जागृति की रचनाओं की जानकारी भी मिली है।[2]

निर्भीक कवि बांकीदास का उस समय की प्रजा में भी अच्छा स्थान था। राजा इनको कितना सम्मान देते थे इसकी अनेक जनश्रुतिया जनमानस मे बिखरी हुई मिलेंगी। सवत 1879 की भीषण अतिवृष्टि के कारण जोधपुर नगर के समीपस्थ सूरसागर तालाब जलप्लावित हो गया था। महाराजा मानसिंह अपने अन्त पुर सहित तालाब के प्लावित दृश्य को देखने के लिए गए। महाराजा की सवारी के पीछे पीछे अन्त पुर की महारानियो और उनकी सेविकाओ आदि की सवारियां थी तत्पश्चात सरदार मुत्सद्दियो आदि की। बांकीदास पालकी मे बैठे हुए शीघ्रता से जनानी सवारियो को पीछे छोडते हुए आगे बढने लगे। जनानी सवारियों के प्रतिहारो ने बाकीदास को महारानियों की सवारी के पार्श्व से निकल कर आगे जाने से मना किया किन्तु बाकीदास ने उनकी तनिक भी परवाह न की और आगे बढ गए। रानियो को यह बात बडी अपमान जनक लगी। उन्होने कविराजा की यह शिकायत महाराजा तक पहुँचाई। लेकिन कवियो के गुणी पारखी महाराजा उनकी कब सुनते। कहला भेजा तुम्हारी सी रानिया और व्याहकर लाई जा सकती है पर ऐसा कवि मित्र मुझे कहा ढूढे मिलेगा।" लेकिन

1. बाकीदास री ख्यात... सम्पादक प नरोत्तम स्वामी, पृ 3-4।
2. बाकीदास री ख्यात. स प नरोत्तम स्वामी, पृ 1.

राजा की रीझ और खीज दोनो ही प्रसिद्ध है। उत्तेजना के न जाने किन क्षणो मे महाराजा मानसिंह ने बाकीदास को देश से निष्कासित कर दिया। पर हृदय से निष्कापित नही कर पाये पुन दरबार मे बुलवाया। पर बाकीदास कहा चूकने वाले थे जब इसकी पुनरावृत्ति हुई तो कवि से न रहा गया उसने स्पष्ट कह दिया आपकी कृपा का क्या कहना—

"लाख पसाव तो एक दियो, देस निकाला दोय।"

परन्तु ऐसे निर्भय, दो टूक बात कहने वाले, साहित्य रसिक, जिनके कठ मे सरस्वती का स्थायी निवास होता है। जब इस असार ससार से विदा ले लेते हैं तो उनका विछोह असहनीय हो जाता है। वि. स 1890 श्रावण शुक्ला तृतीया के दिन जब यह शोक सम्वाद महाराजा मानसिंह ने सुना कि कविराजा नही रहे विह्वल हो उठे। कवि के साहचर्य का सतत् स्मरण करते हुए रुद्ध कण्ठ व अश्रुपूरित नेत्रों से उसे काव्यान्जली अर्पित करते हुए उनके स्वर समस्त वातावरण को भी शोक पूरित कर गये—

सद्विद्या बहु साज, बाकी थी बाका बसु।
कर सूधी कविराज, आज कठीगो आसिया॥
विद्या कुल विख्यात, राज काज हर रह सरी।
बाका तो बिन बात, किण आगल मन री कहा॥

साहित्यिक, व्यक्तिगत तथा राजनैतिक तीनो ही दृष्टियो से महाराजा मानसिंह, की अपूरणीय क्षति बाकीदास के निधन से हुई। मातम पुर्सी के लिये स्वय महाराजा इनके निवास स्थान पर गये। इनके दत्तक मातृ पुत्र भारतदान जी भी अपने समय के प्रसिद्ध कवियो मे गिने जाते रहे है।

कोटै बूदी भाण कवि, मीसण सूरजमाल।
जोध नयर भरथा ज्यू ही, गढ अलवर गोपाल॥

कविराज भारत दान ने कविता बद्ध महाभारत की रचना की थी। ये डिंगल की भाति सस्कृत के सिद्ध विद्वान थे। जोधपुर नरेश तख्तसिंह जी के कृपापात्र रहे। बाकीदास जी के भाई बुद्धदान जी भी जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह के सम्मान प्राप्त व्यक्ति थे। इनके रचित, 'मयाराम दरजी री वात' महाराजा मानसिंह जी री दुवावैत तथा सैकडो स्फुट गीत उपलब्ध हैं। इनमे 'मयाराम दरजी री वात' बडी ही रोचक और अनूठी कृति है। इसके लिये प्रसिद्ध है—

"दजो कौडी डोर रो, बनी लाख री वात।"

एक वार वर्षा ऋतु में बुद्धदान जी के नाहरू निकल आया उस समय मयाराम नामक दर्जी ने इनकी सेवा बडी लगन और श्रद्धा से की। उससें प्रसन्न हो इन्होने उस पर एक काव्य रचा जिसका नायक मयाराम को बनाया।

बाकीदास जी और बुद्धदान जी मे बडा वैचारिक मतभेद था। बाकीदास अग्रेजो के घोर विरोधी, बुद्धदान जी घोर प्रशसक, नाथो के कट्टर शत्रु बुद्धदान जी और इधर बाकीदास जी प्रबल समथक। काव्य प्रतिभा दोनो मे अप्रतिम थी। बाकीदास जी केवल काव्य सृजन मे ही निष्णात न थे इतिहास मे भी उनकी पूर्ण गति थी। देश का ही नही वरन विदेशी इतिहास की भी उन्हे अच्छी जानकारी थी। उन्हें इतिहास से बडा प्रेम था। इसी के फलस्वरूप उन्होने "बाकीदास री ख्यात" नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमे लगभग 2000 बातो का सग्रह है। इनमे अधिकाश बातें 2-3 पक्तियो की है। इसमे हिन्दुओं, जैनो मुसलमानो, राजाओ, सरदारों, आदि के विशेष कार्य, सम्वत् वशावलिया, जन्म या मृत्यु का सम्वत, युद्ध मे काम आने वाले कुछ वीरो का विवरण आदि का सूत्र रूप मे परिचय है। यह मानो कानून की ऐसी पुस्तक है जिसे इतिहास के केस को सच्चा या झूठा सिद्ध करने मे उपयोग मे लिया जाता है। इतिहास का ज्ञान कविराजा का अपने समय के इतिहासकारो में सर्वोपरि था। एक बार ईरान का शाही सरदार भारत यात्रा पर आया। जोधपुर भ्रमण के समय उसने महाराजा मानसिंह के सम्मुख इच्छा प्रकट की कि वह यहा के किसी इतिहासकार से मिलना चाहता है। महाराजा ने तुरन्त कविराज बाकीदास को भेजा। शाही सरदार उनसे बात कर बडा प्रसन्न हुआ उसने कहा कि "मैं ईरान का वासी होने पर भी उसके इतिहास के सम्बन्ध मे इतनी जानकारी नही रखता जितनी आप रखते हैं।"

कविराजा कृत लगभग 40 ग्रन्थ बताये जाते हैं। इनमे से 26 ग्रन्थ 3 भागो मे प्रकाशित हो चुके हैं। बाकीदास री ख्यात भी प्रकाशित ग्रन्थ है। कविराजा के ग्रन्थ राजस्थानी साहित्य रसिक के लिये अनमोल रत्न भडार है इसमे रस अलकार अनुठी उक्तिया विभिन्न हास्य व्यग्य की कृतिया दर्शन भक्ति और नीति की त्रिवेणी भाषा वैविध्य राष्ट्रप्रेम और इतिहास का अनूठा खजाना है।

सक्षेप मे कहा जा सकता है कि कविराजा बाकीदास आसिया अपने युग के अद्वितीय विद्वान थे। राजा व प्रजा दोनो के प्रिय व्यक्ति थे। समय पर वह अपने आश्रय दाता को भी कटु सत्य सुनाने मैं नही हिचकता था। नाथो की कृपा से वे महाराजा मानसिंह के दरबार का कविरत्न बन सके थे पर जहा उनके अत्याचार सीमोल्लघन

पर पहुँच गये वहा उन्होंने उनका भी सशक्त विरोध किया। महाराजा मानसिंह नें इसी कारण बांकीदास को दो बार देश निर्वासन दिया। बाँकीदास शाक्त मत के परमानुयायी चारण कुल में उत्पन्न होकर भी अहिंसा दया तथा परोपकार मे दृढ आस्था रखते थे अपनी अनेकानेक स्फुट रचनाओ मे उन्होने जीव दया का समर्थन किया है। अत स्पष्ट है कि महान कवि, महान विद्वान, महान देश-भक्त महान नीतिकार सद्गुण सम्पन्न विनम्र तथा आत्म सम्मानित व्यक्ति थे।

बाड़मेर जिले की औद्योगिक सम्भावनाएँ

लेखक—छगनराज सालेचा
बी फार्म, एफ.जी.एम एस.

राजस्थान के मुख्यमन्त्रीजी ने कुछ समय पूर्व घोषणा की थी कि बाडमेर क्षेत्र मे नर्बदा व गुजरात के जल-स्रोतो से पानी पहुँचाया जायगा। श्री सुखाडियाजी ने भी कभी घोषणा की थी कि बाडमेर जिले के तिलवाडा-भीमरलाई क्षेत्र में राजस्थान नहर से नावे चलेगी। जल को ये सभी सम्भावनाएँ इस ऊसर प्रदेश के विशाल भू-भाग को कृषि द्वारा मानव-हित मे प्रयोग मे लाने के स्वप्न अवश्य हैं, पर यदि सही अन्वेषण से यहाँ के उपलब्ध स्रोतो व कृतत्वपूर्ण मानव का उपयोग हो, तो इस क्षेत्र को एक महत्त्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र मे बदला जा सकता है।

यदि इतिहास का अवलोकन करें, तो यह क्षेत्र भूतकाल में भी उद्योग की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा है। मारवाड की पहली रेल पचपदरा के नमक की दूरस्थ बाजारो तक सस्ती दर से उपलब्ध कराने का प्रयत्न करती थी। नमक इस क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण उद्योग के रूप मे विकसित था। जगह-जगह मेघवाल वस्त्र बना रहे थे—पचपदरा व बालोतरा के भरावे व कसारे दूर-दूर तक पीतल व भरत की वस्तुएँ बनाने हेतु मशहूर थे। रगाई छपाई मे बालोतरा व बाडमेर उस समय भी विशिष्ट स्थान रखते थे। बालोतरा के छीपे व बाडमेर के खत्री आज भी अपने कार्य का विशेष महत्त्व रखते हैं। रोछोली मे कलमीशोरा व बारूद बनाने का काम बहुत समय से चल रहा था। मिट्टी के बर्तन पचपदरा, आसोतरा, असाढा व मोकलसर मे बनते रहे हैं। भाडका व जसोल मे छतो के मिट्टी के तलिये व नालियें बनती थी। जसोल, बजावा, बालोतरा, पचपदरा इत्यादि मे कुम्हार बकरी के बालो की पट्टियाँ बनाते रहे हैं। ऊन के कम्बल का उद्योग हर गाँव मे चलता था। पशुपालन चौहटन व बाडमेर के सीमान्त क्षेत्र का प्रमुख उद्योग था। असाढा, टापरा, आसोतरा क्षेत्र के जाल की छाल के टोकरे-टोकरियाँ दूर-दूर तक जाती थी। पाटोदी-पचपदरा व बालोतरा-बाडमेर मे चमड़े की जूती बनाना, पखाले, दीवडियें तथा ऊँटो-घोडों के माज इत्यादि बनते रहे हैं। बाडमेर घी की भी एक महत्त्वपूर्ण मण्डी रहा है।

इस क्षेत्र का वर्तमान औद्योगिक स्वरूप, सक्रमणकाल का मिश्रित रूप है। बाड़मेर-बालोतरा के नगरपालिका स्तर पर प्रारम्भ किए गए डीजल पावर स्टेशन जो केवल मात्र कस्बो की रोशनी के प्रयास थे, अब चम्बल व कोटा के जल व अणु विद्युत उत्पादन से जुड गए हैं, पर देश का अन्तिम छोर व बड़ी दूर होने के कारण उद्योग हेतु निरन्तर व निर्विघ्न व्यवस्था का स्वरूप नही बन सका है। पानी जिन नलकूपो से प्राप्त हो रहा है, वह पेयजल से आगे बढ उद्योग को पनपा सकेगा, यह कहना कठिन है। देश के पश्चिमी सीमान्त पर बसे इस प्रदेश को बाजार की दूरी की भी भयकर समस्या उलझाये हुए है। यह तो सत्य है कि रक्षा व्यवस्था, निरन्तर अकालराहत कार्यों व विकास प्रवृत्ति ने आतरिक सडको व परिवहन की समस्या को सुलझाने में काफी योग दिया है, पर क्षेत्र की विशालता देखते हुए उपलब्धियाँ नगण्य हैं। तकनीकी श्रम का अभाव भी एक महत्त्व-पूर्ण बाधा है व अकाल-सुकाल के मध्य श्रम की अस्थिर स्थिति श्रम-व्यवस्था को डावाडोल बनाए हुए है। सन्तोष केवल इस बात का है कि उद्यमी व सरकार समस्याओ के प्रति जागरुक है, इन्हे हल करने मे प्रयत्नशील हैं।

क्षेत्र के प्रकृतिजन्य साधनो, पशुधन, कृषि व निर्माण कौशल के आधार पर उद्योग के वर्तमान स्वरूप को भविष्य मे निहार सकते हैं। वर्तमान उद्योगो के भी दो रूप लघु व कुटीर उद्योग के क्षेत्र मे विकसित हो रहे हैं। बालोतरा का वस्त्र-उद्योग जो रगाई-छपाई के क्षेत्र मे देश के कुछ श्रम-प्रधान केन्द्रो मे से एक है, लगातार विकास की ओर अग्रसर है। लगभग सौ सस्थान इस कार्य मे जुटे हुए हैं। इधर बाडमेर की छपाई की चद्दरे, बिछाने की जाजमे, पर्दे व साडियाँ ग्राहको को आकर्षित कर रही हैं। नमक-उद्योग के आधार पर नमक पीसने इत्यादि के काम विकसित हो रहे हैं। प्लास्टर बनाना, चॉक बनाना, बेंटोनाईट पीसना व एक्टीवीयेट करना, अभी खनिज आधारित उद्योग का प्रारम्भ ही है। खादी ग्रामोद्योग सस्थान ने ऊन के कम्बल, गलीचो इत्यादि को व्यवस्थित तो किया है, पर उनमे निखार तो जिले मे लगने वाले ऊन के कताई-बुनाई के कारखाने के पश्चात् ही आ पावेगा। विविध प्रकार की प्लास्टिक थैलियाँ बनाने, तेल पोरने, बर्फ बनाने, खेती के उपकरण बनाने, छालें पीसने, छोटे मरम्मत करने के कार्य इत्यादि विकसित हो रहे हैं, पर यह तो सुनहरे भविष्य का एक सकेत मात्र ही है।

प्राकृतिक सम्पदा पर आधारित उद्योग—

इस क्षेत्र मे क्षारीय प्रधानता से विभिन्न लवणो का निर्माण होता है, जैसे डेयरी साल्ट,

टेबल साल्ट, आयोडाईज्ड साल्ट, सोडियम सल्फेट, हाईड्रोक्लोरिक एसिड, मेगनेशियम ऑक्साइड, मेगनेशियम सल्फेट, मेगनेशियम क्लोराईड, पोटेशियम नाईट्रेट, सोडियम नाईट्रेट इत्यादि का निर्माण तो सम्भव है ही, पर छोटे स्तर पर मिश्रित खाद बनाना, ब्लीचिंग पाऊडर, सोडियम सिलीकेट इत्यादि उद्योगो को भी बढाया जा सकता है ।

रसायन उद्योगो मे वस्त्र-उद्योग के प्रयोग मे लिए जाने वाले केमिकल व रग, धोने के रसायन, काजी, पूर्ति व भरती के रसायन भी माँग के आधार पर विकसित हो सकते हैं।

मिट्टी के भण्डारो के आधार पर निम्नलिखित उद्योग विकसित किए जा सकते हैं:—

चीनी मिट्टी का कारखाना, काँच-उद्योग, सीवर पाईप बनाना, टाईल्स बनाना, सीमेन्ट-पाईप व सीमेन्ट-शीट बनाना, मोजाक टाईल्स, मिनी सीमेन्ट कारखाना, लाल, पीली व रगीन सिथेटिक मिट्टियाँ, इन्स्यूलेटिंग वेयर बनाना, बेंटोनाईट व फुलर्स अर्थ के आधार पर ब्लीचिंग अर्थ, ड्रीलिंग-मड, फाऊण्ड्री क्ले ज बनाने के कारखाने, किसलगर व फिल्टर-एड का निर्माण इत्यादि आसानी से प्रारम्भ कर सकते हैं ।

जिपस्म के भण्डार प्लास्टर, सर्जिकल प्लास्टर ऑफ पेरिस, प्लास्टर बोर्ड; प्लास्टर ब्रिक्स, सीमेन्ट, चॉक, फर्टीलाईजर सल्फरीक एसिड के उद्योग स्थापित करने मे सहयोगी हैं।

सिवाणा व मोकलसर के पहाडो की सम्पदा से ताम्बा का उत्खनन, ग्रेनाईट पॉलिशिंग फैक्ट्री इत्यादि का विकास हो सकता है ।

ईंट बनाना बालोतरा क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण कार्य रहा है, इसे विकसित करने की आवश्यकता है।

पशुधन आधारित उद्योग—

बाडमेर जिले की पशुसम्पदा अपना महत्त्व रखती है । ऊन के तीन सौ स्पीडल्स के कारखाने की स्वीकृति मिल चुकी है । ऊन का प्रेस, ऊन के कम्बल बनाने का कारखाना, ऊनी स्वेटर इत्यादि नीटेड वस्त्रो का लुधियाना के ढग पर विकास, ऊनी गलीचे बनाना, जसोल-बालोतरा के बकरी के बालो की पट्टियो के उद्योग का विकास, बकरी के बालो की चटाईयाँ, नमदे, गलीचे विकसित करना, ऊँट व सूअर के बालो के आधार पर ब्रुश इत्यादि बनाने के उद्योग, सभी केवल बाल के उपयोग से सम्बन्धित हैं ।

डेयरी का विकास प्रारम्भ हो गया है, पर उसके आधार पर ग्राम स्तर पर भी मक्खन इत्यादि का उद्योग शुरु हो, तो किसान की सरकार पर आधारित रहने की स्थिति सुधरेगी। साथ ही उद्योग का विकास भी केवल जोधपुर को केन्द्रीय डेयरी पर आधारित न हो, जिला-स्तर पर भी विकसित होना चाहिए।

खालो व चर्म-उद्योग को बढावा मिलना अनिवार्य है। क्षेत्र का चमडा कानपुर जाकर वहाँ तैयार किया जाकर पुन: यही आता है, उसके स्थान पर सुन्दर चमड़े का निर्माण यही हो; बूट, चप्पल, बेग, बिस्तर इत्यादि वस्तुएँ यहाँ के छोटे-छोटे कारखानो मे बनें, यह क्षेत्र की आवश्यकता है।

हड्डी पीसना व हड्डी के रसायन निकालना भी एक महत्त्वपूर्ण उद्योग हो सकता है। हर वर्ष अनेक हड्डी मिलो को सैकड़ो वेगन हड्डी इसी क्षेत्र से जाती है।

कृषि व वन आधारित उद्योग—

विज्ञान ने इस क्षेत्र के गवार, तू बा, मतीरा को नया महत्त्व दिया है, पर इन सभी के उद्योग इसी क्षेत्र में बढें, आक का औषधि हेतु उपयोग, अकवड़े का व तातिये का रेशा काम मे लेना, मौसमी घासो में से देशी कागज व गत्ते की सम्भावना, तूम्बे के छिलके का औषधि हेतु उपयोग, बबूल के गोद को वैज्ञानिक रूप से विकसित करना भी इसी दिशा मे एक कदम है, जो भविष्य में महत्त्वपूर्ण हो सकता है। लोणा बढिया सज्जी बनाने के काम में लिया जा सकता ह।

बालोतरा का वस्त्र-उद्योग—

इस उद्योग को प्रोत्साहित करने हेतु पॉवरलूमों में विकास, प्लास्टिक के पैकिंग की वस्तुएँ बनाना, गाँठे बाँधने हेतु प्लास्टिक के पैकिंग के रस्से, नील, कास्टिक सोडा, ब्लीचिंग पाऊडर, डिटर्जेन्ट, चायनावले का फिलर, विभिन्न प्रकार की कागी इत्यादि बालोतरा, पचपदरा व जसोल में विकसित की जाए। वर्तमान रगाई-छपाई उद्योग के विकास हेतु यदि प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित हो, तो तकनीक श्रम को बडा लाभ पहुँच सकता है। कपडे की क्वालिटी, रग की किस्म के मानक इत्यादि की जाँच प्रयोगशालाएँ बाजार मे इसका महत्त्व बढ़ाने में सहयोगी सिद्ध होगी।

इञ्जीनियरिंग उद्योग—

विशेष प्रकार के उद्योगो के विकास हेतु रगाई-छपाई के कारखानो मे काम आने वाले औजार व मशीनें बनाना, रेगिस्तानी व मिट्टी के खनिज उत्खनन हेतु औजार, कुओ से पानी निकालने हेतु चरस व औजार, नमक-उद्योग हेतु विशेष प्रकार के औजार व मशीनें बाड़मेर व बालोतरा को केन्द्र बनाकर विकसित की जा सकती हैं। गोबर गैस प्लाट बनाने का काय भी इस क्षेत्र के लिए उपयोगी होगा।

एक महत्त्वपूर्ण कार्य है सूर्य ऊर्जा के उपयोग का। यदि तेज रेगिस्तानी धूप की गर्मी सूर्य चूल्हो द्वारा पानी गर्म करने, कपडा सुखाने व कपडे की मीलो मे वर्तमान कोयले के स्थान पर काम में लेने का औद्योगिक साधन के रूप मे प्रयोग हो, तो मरू प्रदेश को मौसम का उद्योग मे लाभ उठाया जा सकता है। रसायन उद्योग में भी यह उपयोगी होगा। केन्द्रीय मरू अनुसन्धान केन्द्र को यह सफल खोज अब इस क्षेत्र में हो औद्योगिक उत्पादन के रूप मे विकसित होनो चाहिए।

सम्भावनाएँ विशाल है, स्थानीय उद्यमी के पास आर्थिक साधनो की कमी नही, उसमे साहस व सूझ भी है, देश के कोने-कोने में अपनी कुशलता व साहस के बल पर ही वह स्थान बना पाया है, पर आवश्यकता है एक ऐसी आकर्षक योजना की जो उसे अपने स्थानीय विकास में खीचने मे सहयोगी हो सक।

रत्नगर्भा मरूधरा

लेखक—रंगलाल सालेचा
जियोलोजिस्ट

मरुप्रदेश का भूगर्भ इतिहास एक विशाल समुद्र द्वारा लाखो वर्षो तक संग्रहीत रत्न भंडार का खजाना है। किसी समय इस समस्त प्रदेश पर समुद्री लहरे अठखेलिया कर रही थी। समय परिवर्तन के साथ समुद्र के पीछे हटने पर मानव को यह भूमि अपनी क्रीड़ा हेतु प्राप्त हुई, और उसके साथ ही वह भूमि मे दबा खजाना भी मानव के पास रह गया, पर अनजान मानव उसके महत्व को न समझ अपने को भाग्य हीन ही अनुभव करता रहा।

इस क्षेत्र की खनिज संपदा को निम्नलिखित भागो मे बाटा जा सकता है। 1- अरावली की पहाड़ी शृंखला से लगे पहाड़ी क्षेत्र के भूमिगत अथवा पहाड़ी क्षेत्र के खनिज। 2- पचपदरा व उससे लगे क्षारीयक्षेत्र के खनिज। 3- लोहेककड़ से ढके मिट्टीक्षेत्र के खनिज। 4- बालूयुक्त उद्गम के खनिज।

(1) पहाडी खनिज— आडावली पहाडी शृंखला मोकलसर-सिवाना के हल्देश्वर पहाडो से होती हुई समदडी-मागी मेवानगर की ओर से आगे बढ सणपा सरनू बाडमेर लूणू से पाकिस्तानी सीमा की ओर बढ गई है। यह पहाड भारत की अत्यन्त प्राचीन चट्टान परपरा के हैं व विभिन्न खनिजो के भडार हैं। यहा पाए जाने वाले निम्न खनिजो का उत्खनन सभव है।

1. ग्रेनाईट पत्थर— मोकलसर-सिवाना के पहाडो मे विश्व का उच्च कोटि का खनिज पत्थर उपलब्ध है
2. एस्बस्टस— रेशेदार पत्थर मोकलसर के पहाडो मे है।
3 तांबा— सिवाना के पहाड़ो मे तांबे की चट्टानें भी है।
4 बेराइट्स — इन्ही पहाडो मे बेराईट्स भी उपलब्ध है।
5 रगीन मिट्टी— दताला के पहाडो मे रगीन मिट्टीया मिलती है। जैसलमेर व बाडमेर सीमावर्ती पहाडो में भी है।
6. पत्थर की पट्टीया—सणपा के पहाडो मे इमारती उपयोग की अच्छी पट्टीये निकल सकती हैं।

7 इमारती पत्थर— इमारती ,उपयोग का पत्थर जसोल,सरनू,बाडमेर,लूणू,थोब इत्यादि मे निकल रहा है ।

8 बलास्ट—समदडी के पहाडो से भारी मात्रा मे रेल्वे के उपयोग हेतु उत्खनन होता है । थोब से भी सडको हेतु ब्लास्ट निकाला जाता है ।

9. मूंगीया बजरी— थोब, जसोल, समदडी इत्यादि स्थानो मे उपलब्ध है ।

10. वालकेनोक ऐश— इस खनोज के भारी भडार बाडमेर, कोटरा इत्यादि पहाडो मे है ।

11. स्लेट स्टोन— सरनू के पहाडो मे स्लेट तथा लोहे की धार चढाने का पत्थर है ।

12 वरमेकुलाइट—नगर के आसपास मिलता है ।

13. सेमो-प्रेसीयस स्टोन— सणपा के पहाडो मे मिलते हैं ।

14. रेड आक्साईड—जेसलमेर से आगे पहाडो शृखला मे हैं ।

15. रोयलाईट— बाडमेर जेसलमेर सीमावर्ती पहाडो मे हैं ।

(2) क्षारीय उद्‌गम के खनिज— बाडमेर जिले का क्षारोय क्षेत्र भो अत्यन्त विशाल हैं । इसमे प्रमुख खनिज निम्न प्रकार के उपलब्ध हैं –

1. चूने का ककड व चूने का पत्थर— यह ककड के रुप मे पूरे जिले मे फैला है पर पत्थर के रुप मे जसलमेर से लगे पहाडो से भूमिगत शृखलाओ मे प्रवेश करता है । अजोत मे चूने के बहुत से भट्टे है । तथा कुछ भट्टे पचपदरा, बालोतरा, जसोल, बाडमेर इत्यादि में भी स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति हेतु बने है पर विधिवत खनन नही हो रहा है । सडको के उपयोग मे इतनी बडी मात्रा में उपलब्ध है कि क्षेत्र के किसी भाग मे पाच सात मील की दूरा पर उपलब्ध किया जा सकता है ।

2 जिप्सम अर्थात खड्डी— जिप्सम के विशाल भडार फलसू ड के क्षेत्र से प्रारम्भ हो कुरला शिवकर-कवास होते हुए भीमरलाई-बजाया की ओर से वागु डी-गोदडी हाते हुए साथु डा की ओर तथा कवास के पाक सीमात की ओर वढ गए है ।

3. सेलेनाइट—क्षेत्र में सेलेनाइट अनेक प्रकार का उपलब्ध है । थोब व चोतर का पार म हवाईजहाज नूमा खेदार, समदडी, खू टाणी की ओर ककड के समान गुलाबी झाई का, शिव आकली के मिट्टी क्षेत्र में चपटी पट्टियो वाला सेलेनाईट मिलता है ।

4 शोरा—कलमीशोरा की उपलब्धि रीछोलो, सावला,राखी, खाँडप,नौसर, टाढण इत्यादि स्थानो मे हो सकती हैं ।

5. नमक— नमक का क्षेत्र पचपदरा, खेड,बागुडी,गोपड़ी,साजीयाली की नीची भूमि में तो है ही सावला के आसपास व रेगिस्तानी प्रदेश मे जहां-2 नीचे पानी के भराव के क्षेत्र आए हैं नमक बन सकता है।

6 पापडखार अथवा खारो— क्षारीय मैदानो के अनेक क्षेत्रजिले भर मे फैलेहुए है जिसमे स्वाभाविक रुप से भूमि की पापड़ी पर खार जमता है। धन्धे हेतु अभी इसका उपयोग नही हो रहा है।

(3) मिट्टी क्षेत्र— भारत के महत्वपूर्ण मिट्टी के उत्पादन क्षेत्र यही उपलब्ध हैं जैसे:—

1. बैरोनाईट— शिव व बाड़मेर तहसील मे आकली,हाथी की ढाणी,निबला,शिव, आगोरिया बिसाला भादरेस, सोनडी, थूंबली, गिरल, काटेरा, बिसू इत्यादि स्थानो पर उपलब्ध है।
2. मुलतानी मिट्टी— भाडका कपूरडी, आलमसरीया, महाबार इत्यादि स्थानो पर उपलब्ध है।
3. फायर क्ले— नागड़दा के समीप हैं।
4. बाल क्ले— शिव के पास उपलब्ध है।
5. सफेद मिट्टी— बोतियां, नीबला, धोलिया मे प्राप्त हो सकती है।
6. लाल मिट्टी व पीली मिट्टी— नीवला, काटेरा, हाथी की ढाणी आदि स्थानो पर उपलब्ध है।
7. कुमार की मिट्टी— भाडका, असाढा, आसोतरा, बागूडी, पचपदरा, मोकलसर, थोब इत्यादि स्थान इसके स्रोत है।
8. ईंटें बनाने की मिट्टी— बालोतरा, जसोल,कानाना में प्राप्त होती है।
9. सीलीसीयस अर्थ अथवा डायरोमेसीयस अर्थ— पोहड, कोटडा, कुंवारो की ढाणी आदि स्थानो पर प्राप्त है।

(4) बालू उद्गम के खनिज— रेगिस्तानीप्रदेश बालू का पूर्ण तो है ही पर खनिज की दृष्टि से उस बालू का महत्व नही है। औद्योगिक उपयोग के लिये "सिलिका सम्बन्धित" निम्न खनिज क्षेत्र में उपलब्ध हैं।

1 सिलीका सेंड— कुम्हारो की ढाणी कोटरा इत्यादि मे प्राप्त होती है।
2. सिलीका बाल्स— गोला में उपलब्ध हैं।
3. काच का पत्थर— वोलकेनिक ऐश कोटरा, बाड़मेर के पहाड़ो मे मिलती हैं।

इस प्रकार यह जिला खनिज सपदा का अजायबघर है पर सड़को से दूरी,बाजार से दूर, भारी यातायात व्यय तकनीकी जानकारी का अभाव खनिज उद्योग के प्रति सम्मान की कमी, पानी व बिजली का अभाव, उपयुक्त प्रकार के औजारो की जानकारी न होना, श्रम की अनिश्चितता, यातायात के दो तरफा चलन का अभाव रेल्वे वेगनो की अनिश्चित उपलब्धि, खनिज प्रयोगशाला का अभाव इत्यादि कुछ ऐसी समस्याएं है जिनसे इस उद्योग का विकास अपेक्षित स्तर पर नही हो पा रहा है। प्रोसेसीग प्लाटस के लिए उपयुक्त साधन नही हैं। पर इसका भविष्य उज्जवल है इसमे कोई सदेह नही। राज्य व केन्द्र सरकार इस ओर ध्यान दे तो इस क्षेत्र का समुचित विकास और व्यापार की दृष्टि से सही उपयोग हो सकता हैं।

▱

यह पचपदरा है

लेखक—नरपतचन्द सालेचा

16वी सदी का सिवाणा हकूमत का एक गांव पांचा की ढाणी व पचभद्राओ से पचपद्रा बना। सत्रहवी शताब्दी मे दरीबा नमक की स्थापना होकर हाकिम दरीबा पचपद्रा का मुख्यालय बना।

पिछले पांच सौ वर्षों में नमक उद्योग के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रुप मे पचपद्रा विकसित हुआ बनजारा व्यापार से समृद्धि को प्राप्त हुआ यह स्थान भूतकाल मे अपनी 'सेठाई' के लिए प्रसिद्ध था। सुन्दर कलापूर्ण मदिरो की कतारें, तालावो का बाहुल्य चौड़े मार्गों का विधिवत बाजार, मौती चौक, माणक चौक इत्यादि मोहल्लो के नाम, घाटों से बंधा तालाब, पर्वों त्योहारो के उच्चस्तरोय रिवाज, सुनारों, भटावो,नाईयो, कुम्हारो, जटवटियो, मोचीयो, मेघवालो, भीलो, दर्जियो के मोहल्ले इसके पूर्व गोरव व सपन्नता को प्रकट करते हैं।

यहा जैनियो का एक शिखर वध मदिर , तीन उपाश्रय एक दादावाड़ी, तेरापथी सभा भवन, नवनिर्मित जैन क्रिया भवन व घट मदिर, ज्ञानशाला इत्यादि है, तो वैष्णवो के चारभुजा मदिर, नृसिहद्वारा, पचमुखा महादेव मदिर, मढी, दो रामदेव मदिर, शिवमदिर, हनुमान मदिर, गोपालजी का मदिर ,खारवाल्नो का मठ, चामु डा मन्दिर अन्य दो देवी मदिर, चिढाजी के शिवमदिर, पचपद्रा साल्ट का देवियो का 'देवल' और अन्य अनेक छोटे बड़े देवस्थान बने हुए है जिनमे अनेक सुन्दर, शिखरवद्द व कलात्मक हैं।

पचपदरा बनजारा सस्कृति का केन्द्र रहा है व यहा के अनेक मदिर, तालाब इत्यादि बनजारो के बनवाए हुए हैं ही पर बनजारो की तालो का भी अपना ऐतिहासिक महत्व है जहा हजारो बनजारे नगाडा निशान व ढोलो के साथ अपने सास्कृतिक कार्यक्रम किया करते थे। नवीन मदिरो मे पचपदरा का स्टेशन, पुरानी जल योजना के होज, नवीन जल योजना के टकी व मकान, अस्पताल, स्कूल भवन, कन्या पाठशाला भवन, पचायत भवन, पुरानी हकूमत से लगा नया तहसील भवन इत्यादि महत्वपूर्ण हैं।

इस समय पचपद्रा ट्रक ट्रांसपोर्ट का भी केन्द्र बन रहा है व पचपदरा से बाडमेर को ओर बालोतरा होकर, वायतु की ओर से तथा पाटोदी की ओर से पक्की सडके जाती हैं तथा जोधपुर बाड़मेर के इन तीनो मार्गों का यह केन्द्र स्थान है। इसके अतिरिक्त जोधपुर का माडपुरा होकर मार्ग भी यही मिलता है। एक अन्य सडक से पचपदरा खेड से भी जुडा हुआ है।

घुमक्कड जातियो मे जोगी, सासी व कालबेलिया भी पचपदरा को अपना सामाजिक मिलन स्थल मानते हैं और उनके ग्राम के विभिन्न दिशाओ के मैदान निश्चित मिलन स्थल हैं।

मरु विकास सस्थान ने भी पचपदरा को केन्द्र बनाकर अपने विभिन्न कार्यक्रम प्रारभ किए हैं। बनजारा व घुमक्ड जातियो हेतु समाज कल्याण विभाग एक छात्रालय भी चलाता है।
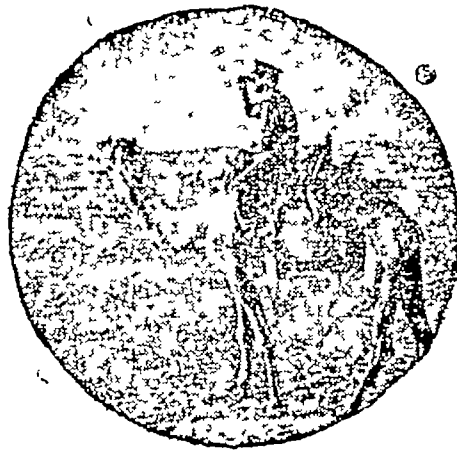
लोकनाट्यों में राजस्थानी संस्कृति

लेखक—डा. (श्रीमती) कमलेश माथुर

राजस्थानो लोकनाट्य लोक-सस्कृति का स्वच्छ एव निर्मल दर्पण है। यह राजस्थान प्रदेश की परम्परागत सस्कृति का अत्यत समृद्ध एव गहराई तक पहुचा हुआ अंग है। जनजीवन एव उसकी चेतना का अभिन्न अंग यह नाटक प्रकृति की 'प्रतिच्छवि' के समान है। जनसाधारण की अनुभुतियो, आकाक्षाओ एव प्रवृत्ति का सजीव चित्रण इन राजस्थानी लोकनाट्यो मे दृष्टिगत होता है। इनमे रचयिता का मुख्य उद्देश्य जनता का मनोरजन कर समकालीन समस्याओ की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करना होता है। लोकधर्म,परम्परागत मान्यताए सामाजिक रुढिया तथा ग्रामीण बोलियो इन सभी बातो का यथार्थ परिचय इन राजस्थानी लोकनाट्यो द्वारा अनायास ही प्राप्त हो जाता है।

लोकसस्कृति से हमारा अभिप्राय जनसाधारण की उस स्थिति से है जो अपनी प्रेरणा लोक से प्राप्त करता है, जिमको उत्सभूमि जनता है और जो बौद्धिक विकास के निम्न धरातल पर उपस्थित रहती है। सोफिया बर्न ने शब्दो मे "लोक सस्कृति वस्तुत आदिम मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है, वह चाहे दर्शन, धर्म, विज्ञान तथा औषधि के क्षेत्र मे हुई हो अथवा सामाजिक सगठन तथा अनुष्ठानो मे अथवा विशेषत. इतिहास, काव्य और साहित्य के अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश मे सम्पन्न हुई हो।"[1]

जादू-टोना,तत्र-मंत्र-जत्र, जीवनचर्या के प्रसाधन,कला-कौशल सभी का सम्बध सस्कृति से है। संस्कृति का अर्थ एव उसके क्षेत्र को चर्चा करते हुए डा० सत्येन्द्र लिखते हैं, "निश्चय ही सस्कृति किसी मानव ममाजकी दीर्घ साधना की पदाथ माध्यम से स्थूल परिणित है, जो एक प्रकार से समाजगत मानव की द्वितीय प्रकृति का स्थान ग्रहण कर लेती है और परम्परा के पर्त उस पर जमे चले जाते हैं।"[2]

---

1. सोफिया वर्न 'ए हेंडबुक आफ फोकलोर' डा० सत्येन्द्र, व्रजलोक साहित्य का अध्ययन पृष्ठ 4-5
2. डा० सत्येन्द्र 'लोक साहित्य विज्ञान' परिशिष्ट पृष्ठ 555

सस्कृति मानव की जीवनचर्या की प्रणालियो और व्यवहारो से घनिष्ठ सम्बध रखती है। राजस्थान प्रदेश मे प्रचलित रीति-रिवाज, पर्व, उत्सव, धार्मिक अनुष्ठान, शकुन, लोकविश्वास, धर्म एवं दर्शन आदि का परिज्ञान हमे राजस्थानी लोकनाट्यो द्वारा सहज रूप से हो जाता है। सामाजिक कुरीतियां एव असामाजिक कृत्यो को भी अत्यन्त मनोरजनात्मक ढग से इन लोकनाट्यो द्वारा प्रस्तुत कर लोक को उनका परिज्ञान करवाया जाता है। अत हम कह सकते हैं कि राजस्थानी लोकनाट्य हमारी सस्कृति का दपण एव उनका जीवन्त प्रमाण है।

व्रत एव त्यौहार— राजस्थानी समाज मे प्रचलित व्रत एव त्यौहारो का सुन्दर चित्रण राजस्थानी ख्यालो मे दृष्टिगत होता है। राजस्थान मे 'वडी तीज' का अपना विशिष्ट महत्व है। इसे 'काजली तीज' भी कहा जाता है। सुहागिन स्त्रिया एक दिन पहले विभिन्न मिष्ठान आदि बनाती है, उसे तीज का 'सिघार' कहा जाता है। दूसरे रोज अर्थात् तीज के दिन स्त्रिया पूर्ण रूप से उपवास रखता हैं, मन्दिर जाती हैं तथा चन्द्रमा उदित होने पर उसकी पूजा के पश्चात् आहार ग्रहण करती है।

अमरसिंह राठौड जब आगरे जाने को उद्यत होते हैं तो हाडी रानी उन्हे रोकती हुई कहती है—

आग लगो इण आगरे म्हारे काल नवेली तीज ॥ टेर ॥
मेलो देखो नी म्हाराजा म्हारी तीज रो ॥
काल नवेलो तीज है जग मे बडो तिवार ॥
देखण चालो साहेबा सावण रा दिन चार ॥[1]

जालोर नरेश विजयसिंह भी बादशाह के बुलवाये जाने पर जब आगरा जाने को उद्यत होता है तो झाली रानी तीज को महत्ता बतलाती हुई उन्हे रुकने का अनुरोध कर कहती है—

त्रीया तणो तेवार तीज को हे जग मे अख्यात।
मेलो भरसी साहेबास थें जाणो हो सब बात ॥
पतीव्रता पूजे सदासरे ईसर और गणगौर।
तीज को पूजे चन्द्रमासरे मिले हमेशा जोड ॥[2]

1. मोतीलाल 'ख्याल अमरसिंह का' प्र. खत्री भीकमचद पृष्ठ 45-46
2. गिरधारीलाल 'विजयसिंह को ख्याल' प्र खत्री भीकमचद पृष्ठ 36-38

होली का त्यौहार भी राजस्थान में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। पति पत्नी भी इस दिन 'फाग' खेलते हैं तत्पश्चात् मदिरा अथवा भाग पीते हैं। दृष्टव्य है रामदेवजी का अपनी पत्नी नेतलदे व उसको सहेलियो के साथ होली खेलना—

रग बरसावा सुन्दरी मजी या वसन्त की वहार ।।
थें लेवो कर डोलचीस ने म्हे लेवा पिचकार ।।
म्हे लेवा पिचकारक रंग स्थावस्या ।
ब्रजमण्डल सी होली आज मचावस्या । जी नेतलदे गोरी ।[1]

विवाह-राजस्थानी समाज मे लडका अथवा लकड़ी परस्पर आकर्षित हो जाने पर भी अन्तिम निर्णायक अपने माता-पिता को ही समझते हैं। इस सामाजिक रीति का उदाहरण हमे लोक देवता पाबूजी के ख्याल मे मिलता है। सरस्वती कवरी (अमरकोट नरेश की पुत्री) द्वारा उद्यान मे पाबूजी के रूप-सौन्दर्य पर मोहित हो उनसे शादी का प्रस्ताव रखने पर पाबूजी उसे बिना माता-पिता की आज्ञा के शादी न करने की शिक्षा देते हुए कहते हैं—

मन के मते किस तरा चालो वडा घरा की जाई।
माता पिता करेला थांरी सुन्दर व्याव सगाई ।।
थें थाका मन से वर कीनो बात कही तज लाज ।
सुन पावेला पिता आपका हो जासी नाराज ।।[2]

सगाई के दस्तूर का वर्णन —

सुवरण का श्रीफल ले जावो और हीरा को हार ।
हाथी घोड़ा ऊंट आदमी टीका मे दो चार ।
रीत भात सूं कीजियो टीका को दस्तूर ।
मेवा और मिष्ठान मिठाई ले जावो भरपूर ।।[3]

विवाहकार्य प्रारम्भ करते समय सर्व प्रथम 'विनायक' की पूजा होती है, दृष्टव्य है—अजमलसुत रामदेवजी का विवाह निश्चित होने पर सर्वप्रथम गजानन्द की पूजा की गई—

1. पूनमचंद सिखवाल 'रामदेवजी के व्यावला को ख्याल' प्र खत्री भीकमचन्द पृष्ठ 53
2. कवि अम्बालाल, 'रणवका पाबूजी राठोड का ख्याल' प्र० फूलचन्द बुकसेलर अजमेर पृ 29
3. वही है पृ 42 .

शैल सुता सुत वीनवू, रणत भवर के राय ।
कीजो कृपा अब व्यावपे, कुटुम सहित गन आय ।
कुटुम सहित गन आय, सग मे रिद्धसिद्ध राणी लावो ।
सकल सुधारण काज राज, भक्तो की लाज बचावो ।
आवो खनक सवारी करके, अब मत विलम लगावो ॥[1]

बाने बिठाने का वर्णन—

बाने बिठाया कवरजी दी मुझे जागीर जी ।
असल केसर की उबटनी कोई बढिया अत्र मिलाय ।
बैठाजी राठोड़ी राजा ऊनटणे ।[2]

बारात चढते समय की साजसज्जा का वर्णन लोकनाट्यो मे उपलब्ध होता हैं। माता अपने पुत्र को दूध पिलाने का दस्तूर करतो हैं। जनबधावे का वर्णन भी इन ख्यालो में दृष्टिगत होता हैं। तोरण की छवि का मोहक चित्रण दृष्टव्य हैं—

॥ टेर रामदेवजी की ॥

आदि पुरुष में आया परणवा तोरण की छवि खूब बणी ।
सोहे तीन सो साठ चिड़कली, ऊपर सोवन मोर ॥[3]

विवाह के सात फेरों का वर्णन—

पहले तो फेरे बनडी बिना पट्ण्योडी ।
थाकी तो मिली दे विष्णु–लक्ष्मी सी जोडी ।
दूजे तो फेरे बनडी चाले ममम्योडी ।
तीजो तो फेरे बनड़ी आधी परण्योडी ॥[4]

---

1. पूनमचद सिखवाल, 'रामदेवजी के ब्यावला को ख्याल' प्र० खत्री भीकमचद पृ 39
2 कवि अम्बालाल, 'रणबका पावूजो राठोड का ख्याल' प्र. फूलचन्द बुकलेसर, अजमेर पृ. 45
3. पूनमचन्द सिखवाल, 'रामदेवजी के ब्यावला को ख्याल' पृ 49
4 'पावूजी राठोड का ख्याल' पृ 47–48

राजस्थानी समाज का लोक देवी देवताओ पर अनन्य विश्वास एव अटूट श्रद्धा थी। आज भी राजस्थान में पाबूजी, रामदेवजी, सतोषी माता आदि लोक देवी-देवताओ के प्रति विश्वास अटूट भाव से विद्यमान हैं।

धर्म और दर्शन— राजस्थानी लोकनाट्यो मे मनुष्य और भाग्य का सघर्ष दिखलाया गया है। इनमे मानव शक्ति की विवशता व भाग्य की प्रवलता दिखला कर परोक्ष सत्ता के प्रति विश्वास उत्पन्न किया गया है। राजस्थानी समाज की मानसिक प्रवृति अथवा प्रारम्भिक सस्कार ही ऐसे होते हैं कि उसका धर्म मे अटूट विश्वास होता है। वह अनैतिक कार्य करने से डरता है। राजा हरिश्चन्द्र का उदाहरण द्रष्टव्य है।

कर्मगति वलवान जगत में क्या से क्या हो जाता है।
निर्धन हो धनवान और धनपति निर्धन वन जाता है॥

धर्म एव भाग्य की प्रबलता दिखला कर लोक के हृदय मे अपने धर्म के प्रति दृढ़ आस्था एव विश्वास उत्पन्न किया जाता है।

नारी की स्थिति— राजस्थानी समाज में स्त्री को अत्याधिक मान मर्यादा एव प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है। किसी सामाजिक उत्सव एव पर्व पर विना स्त्री के किसी प्रकार का अनुष्ठान नही होता।

समाज मे पति के कारण ही पत्नि की मान्यता होती थी अतः स्त्रियां पति को परमेश्वर का अवतार मानती थी। पत्नि की मृत्यु पर स्वय भी सती हो जाती थी। विधवा हो जाने पर समाज उन्हे हेय दृष्टि से देखता था।

लोक-विश्वास— हमारा तात्पर्य समाज में प्रचलित रूढ धारणाएँ यथा जादू-टोना, भूत-प्रेतो मे विश्वास, शकुन मनाना, ज्योतिष में विश्वास आदि हैं। राजस्थानी लोकनाट्यो में श्रद्धा और विश्वास की शक्ति को असीम मन कर चलना पड़ता हैं। इसी कारण इसमे योगिक शक्ति के बल पर मृतक का जीवित होना, आकाश में उड़ना, विशाल समुद्र का सूख जाना, दीवार का चलना तथा पर्वत का उड़ना आदि बाते नितान्त स्वाभाविक स्वीकार की गई हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लोकनाट्यो का सृजन सर्वदा एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है। समाज के बौद्धिक एव सास्कृतिक विकास के साथ ही लोकनाट्यों की अभिवृद्धि होती रहती हैं। लोक नाटक सदैव विकासोन्मुख होने के कारण सम सामयिकता का ध्यान रखते हैं। इनमे परपरा के साथ सामयिक प्रेरणा का निर्वाह होता हैं। फलतः सामाजिक चितन, आचार-विचार, रीति-नीति निष्ठा तथा पारस्परिक विश्वास लोकनाटयो में छद्म रूप में प्रकट होते हैं। अतः नाट्य के कथानक उनकी घटनाएँ, प्रसग, पात्र आदि कितने ही प्राचीन क्यों न हो, जीवन व्यवहार की दृष्टि से शत प्रतिशत आधुनिक हैं।

–श्री तेजसिह–पारलू

पारलू क चारण

सवत् १८१३ (मन् १७५८) के पट्टो को देखने से पता लगता है कि पारलू महाराजा विजयमिहजी द्वारा श्री ग्रभयसिह, श्री दुर्जनसिह व श्री मवलमिह खाप जोधा को इनायत किया गया था ग्रौर उस समय यह मात मौ रुपये वार्षिक की रेख का गाव था इनके मौ माल पहले यह गाव मिवाना परगने के नीचे खालसा गाव वनाया गया। मवत् १७०० (मन १६४३) मे इसे इस्माखिया गाव वनाया है ग्रौर नदी के पानी का फैलाव होने के कारण सेवज व काठे गेहूँ होने का उल्लेख है। मन् १८०० के ग्रास पास महाराजा श्री भीममिहजी जोधपुर के सिहासन पर थे ग्रौर उनका ग्रपने भाई मानमिहजी से झगडा चल रहा था भीममिहजी गुमानसिहजी के पुत्र जिनके गुलावराय नाम की एक पासवान थी गुलावराय के पास राजा गुमानमिहजी के ममय से ग्रनक जगह के किलो ग्रौर खजानो का चाविया थी जिस समय भीममिहजी मानमिहजी को स्थान स्थान से खदेड रहे थे ता मेडता से भी मानमिहजी का खदेडा गया उस ममय गुलावराय पासवान ने जालौर किले की चाविये जो उसके पास थी मानमिहजी को देकर उन्हे जालौर जाने की मलाह की।

मेडता के घेरे मे पाटौदी के जोधा मरदारो को महाराजा भीममिहजी ने सहयोग के लिए वुलाया था। जव मानमिहजी मेडता से जालौर जा रहे थे तो ग्राहौर के पास कोहडा गाव मे जुगतीदान चारण से उनके खेत मे मानसिहजी के माथ मुलाकात हुई वातचीत के वाद जुगतीदान ने मानसिहजी के साथ जालौर जाना स्वीकार किया ग्रौर व जालौर किले मे चले गये।

ज्योही राजा भीममिहजी को पता लगा कि मानमिहजी जालौर मे है। तो उन्होने जालौर का घेरा डलवा दिया यह घेरा काफी दिन तक चलता रहा ग्रौर भीतर रसद खत्म होने लगी तो किले मे पडे हाथियो के व घोडे के जेवरो को देकर गुप्त रास्ते मे श्री मानमिहजी ने जुगतीदान को घाणेराव ठाकुर के पास भेजा ताकि वह इने जेवरो के वदले रकम इकट्ठी कर रसद का मामान ला सके।

पर घाणेराव ठाकुर ने उनमे सारा गहना लेकर उनको जेल मे डाल दिया। जेल के पहरे के व्यवस्थापक की स्त्री श्री जुगतीदान के पास के गाव की रहने वाली थी ग्रौर इसलिए उसने मौका देखकर जेलर से कहा कि इनको किसी तरह छुडवा दिया जाय। एक बार जव ये शौच गये हुए थे तो जेलर के इशारे पर भाग खडे हुए ग्रौर ठाकुर को जव इसकी सूचना मिली तो यह मोच कर कि गहना उसके कब्जे में है ग्रौर न तो यह ग्रौर न इनका मालिक उसका कुछ विगाड सकता है इनका पीछा नही किया यह वापस ग्रपने गाव कोटडा ग्राए ग्रौर पास मे थाम्वला मठ के महन्तजी के पास गए ग्रौर उनसे कुछ महयोग करने के लिए कहा ग्रपनी स्त्री के थोडे से जेवर भी महन्तजी के पास गिरवी रखने को गये।

महन्तजी ने जेवर लेने मे इन्कार करते हुए यह शर्त लगाई कि यदि जुगतीदान अपने लडके को उनका चेला बनाने को तैयार हो तो काफी रकम रसद के लिए दे सकते है जुगतीदान ने कहा कि यदि छ माह मे रकम न चुके तो वे उनके लडके को चेला बना सकते है। और इस शर्त पर अपने मझले लडके को महन्तजी के पास गिरवी रख दिया और रसद का सामान लेकर गुप्त दरवाजे से किले मे पहुचे। उन्होने देरी से आने का कारण मानसिहजी को बताया पर अपने लडके को गिरवी रखने की बात नही कही।

कुछ समय महन्तजी ने किसी आदमी के साथ जुगतीदानजी को समाचार कहलवाये कि मानसिहजी तीन दिन तक किला नही छोडे तीसरे दिन घेरा डालने वाली फौज के पास राजा भीमसिहजी के मृत्यु के समाचार आये क्योकि भीमसिहजी किसी गहरे रोग से पीडित थे। इन पर घेरा डालने वाली फौज ने चूकि मानसिहजी गद्दी के वारिस थे। मानसिहजी की जय जयकार कर गद्दी पर बैठने को कहा। इसी समय मानसिहजी को पता लगा कि जुगतीदान ने अपने लडके को गिरवी रखा था। मानसिहजी जुगतीदान को अपने साथ जोधपुर ले गये व उनको पारलू गाव जागीर मे व बागर मे एक हवेली व ताजीम व सोना दिया इनके लडके भेरुदान को जिसे गिरवी रखा गया था पारमला खुडद जो पाली जिले मे है जागीर मे दिया गया।

पारलू को जागीर मे मागने के पीछे भी ऐसा बताया जाता है कि एक बार जुगतीदान तिलवाडा के मेले जाते हुए पारलू की ओर से गुजरे उन्होने ऊंट पर बैठे हुए कुए के पेचवानियो को हुक्के पर अगारे रखने के लिए कहा उस आदमी ने जवाब दिया ऐसा कौनसा गाव का पट्टा लिखाकर लाया है जो ऊट से भी नही उतरता इन्ही शब्दो को याद करते हुए उन्होने पारलू मागा पर पारलू देने के पीछे राजा भीमसिहजी को पाटौदी की मदद का कारण भी था जिनकी जागीर मे यह गाव उस समय था। यह जागीर एक बार मानसिहजी के पुत्र ने जबकि वह थोडे से समय के लिए गद्दी पर बैठा था जब्त कर ली थी पर पुन मानसिहजी के शासन सम्भालने पर उनको लौटा दी गयी व आज तक इनके वशज बैठे है।

–नरपतचंद सालेचा

गोपड़ी के उदावत

तेरहवी शताब्दी मे गोपडी पर राव सलखाजी का अधिकार था सलखाजी गोपडी से ही अपना राज्य विस्तार कर रहे थे। राव मल्लिनाथ का जन्म गोपडी का है और इसीलिए मल्लिनाथ के जन्म की लापसी अब तक गोपडी मे बनाई जाती है। महाराजा भीमसिंह व मानसिंह का झगडा प्रसिद्ध है! सामूजा मे उस समय उदावत राठौड़ तेजसिगोत जागीरदार थे जो वर, बरोठिया, गू दोज व हरजी होते हुए सामूजा व उसके आस पास के गावो के जागीरदार थे। उनके छोटे भाई सवाईसिंह ने जालोर के घेरे मे मानसिंहजी का साथ दिया। जालोर के युद्ध मे सवाईसिंह काम आए व उनके पुत्र बुधसिंह को गोपडी पट्टे हुई।

बुधसिंह के पुत्र वैरीशालसिंह व पौत्र बखतावरसिंह हुए। बखतावरसिंह के पुत्र शिवनाथसिंह बहुत होशियार मुसद्दी थे। वे हर विषय को अत्यन्त साहस व तर्कपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया करते थे।

महाराजा सर प्रतापसिंह जब जोधपुर के रीजेंट थे तो उन्होंने जागीरदारो के बतीस तरह के हक कम करने की आज्ञा निकाली जिसमे खानो, नमक, वन इत्यादि के अधिकार थे। सम्पूर्ण जागीरदारो ने सम्मिलित रूप से इनका विरोध करने हेतु श्री शिवनाथसिंह को अपना वकील मुकर्र किया। सर प्रतापसिंह इन सभी आमदनी के स्रोतो का ठेका अग्रेजो को देना चाहते थे। शिवनाथसिंह द्वारा आपत्ति करने पर उन्हें गिरफ्तरी कर दिया गया। इनकी गिरफ्दारी पर सभी जागीरदार अपने शस्त्रो सहित सर प्रतापसिंह के पास गए। सर प्रताप ने फौज बुलाने का आदेश दिया तो फौज ने जागीरदारो पर शस्त्र चलाने से इन्कार कर दिया।

सर प्रताप को शिवनाथसिंह को छोडना पड़ा। प्राकृतिक स्रोतो का ठेका रुका, उन बतीस तरह की आमदनी पर रोक की आज्ञा मे सुधार हुआ जिससे शान्ति स्थापित हो सकी।

इसके पश्चात ही फौज मे कयामखानी व जाटो की भी भर्ती शुरु हुई तथा जागीरदारो पर शस्त्रो के साथ अदालत मे जाने पर रोक लगी।

श्री शिवनाथसिंह सेठ गुलाबचन्द के पिता सेठ हजारीमल के गहरे मित्र थे व हर कार्य में एक दूसरे की सलाह से किया जाता था।

श्री शिवनाथसिंह के बड़े पुत्र बिसनसिंह अत्यन्त शान्त प्रकृति के थे। छोटे पुत्र मोतीसिंह राजनैतिक दृष्टि से सिद्धात के पक्के हैं। भूस्वामी आन्दोलन मे आपने भाग लिया तथा जागीर भूमि ग्रहण पर उसका मुआवजा नही लिया। कांग्रेस के विरोधी खेमे में सदा से रहे। अनेक दबावो पर भी आपने सिद्धान्तो से समझौता नही किया। सेठजी की पानी योजना मे सन ३५ मे मोटर खरीद कर टकी से पानी लाने पर मोटर चलाने व सम्भालने की व्यवस्था आपने की।

नल योजना के पूर्व उपजिलाधीश श्री गर्ग ने आपको ही कहा था कि पानी की कमी पर पेशाव को फिल्टर करके पीना चाहिए जिस पर सेठजी ने असेम्वली मे स्थगन प्रस्ताव रखवाया व चौतीस विधायको ने मिलकर सरकार की भर्त्सना की थी । क्षेत्र के विकास हेतु श्री मोतीसिह निरन्तर प्रयत्नशील है व गोपडी पचायत के सरपच व पचायत समिति मे महत्वपूर्ण पदो पर है ।

दुर्गादास के वशज

मारवाड के राव रिडमलजी के छोटे भाई करणजी के वशज करणोत कहलाए व इसी वश मे राठौड वीर दुर्गादास हुए । राठौड वीर दुर्गादास ने अपने अन्त समय मे अपने पुत्रो को मारवाड राज्य का विश्वास न करने की सलाह दी थी । उनके वडे पुत्र अभयकरणजी जयपुर नरेश के पास चले गए और उन्होने जयपुर व भरतपुर के सीमान्त युद्ध मे वहुत कौशल दिखाया । तत्पश्चात जव जयपुर व मारवाड नरेश का आपस मे समझौता हो गया तो महाराजा अजीतसिहजी इन सभी भाइयो को मना कर मारवाड लाए व उन्हे काणाणा, वालोतरा, समदडी, वागावास इत्यादि जागीर मे दिए । अभयकरणजी ने जयपुर नरेश की वादशाह वहादुरशाह के विरुद्ध भी सहायता की थी ।

इसी वश मे महाराजा मानसिहजी के जालोर के घेरे मे मदद करने से जगतसिहजी को नूरपुरा जागीर मे मिली तथा समदडी के ठाकुर इन्द्रकरणजी ने जोधपुर नरेश की किले को पोकरण द्वारा घेरे जाने मे मदद दी थी ।

वागावास से घनश्याम करणजी जयपुर गए जिन्हे वीरता के कारण नटवारा व कोटालावा जागीर मे मिले ।
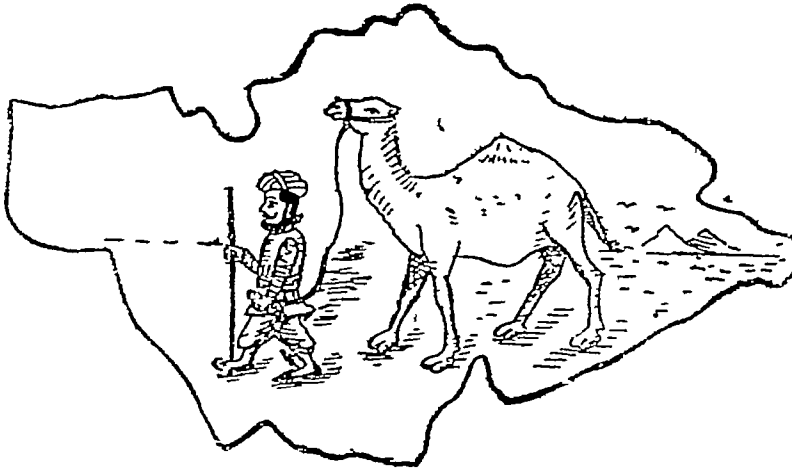
डा० मदनराज डी. मेहता

जस कीरत रो धाम-जसोल

जस नै वल रो धाम जसोल जूनी ख्याता नै वाता मे जसवल रै नाम सू जाणीजतो। आ वात कैणी तो दोरी है के जसोल री थापना कुण की नै कद कीवी पण आ वात खरी है के जसोल सवत १२१० मे आछी तरै सू वस गयो हो। जसोल मे एक जूनो लेख मिलियो है, जिण मे खेड रै राणा विजयसिंह रै लाग रो लेखो है—ओ लेख सवत १२१० रे सावण वद ७ रो है। जसोल मे सतिया री थामलिया नै आडे—पाड़े रा भागा-टूटा कमठाणा सू अठै रा पुरखा रै पराक्रम रा ओखाणा री ठा पडै।

जसोल मे केई वीर नै सील रा सेवक जनमिया। देश काल नै जीत नै—आपरै सत्कर्मा री सोरम सू महीमण्डल नै महकाई। सिद्ध, सन्त नै सन्यासी, मुनि, महात्मा नै मेहन्त, गुणी, गुरु नै ज्ञानी—मिनख पणे रो मोल आकियो, महत्ता ओलखी—आपाण आस्था नै आपरै वलवूता सू—कुल नै जात री पात नै आघी नाख—मिनख मातर रै मुरझावता मूल नै सीचियो। सिद्ध घोरीनाथजी, मल्लीनाथजी, रूपा दे, सन्त मुनि जीवराजजी, सती-दासजी, कपूरजी, पूनमजी सिरेमलजी, गणेशमलजी, जीवणमलजी, मुलतानमलजी, नोजाजी, प्याराजी, नानूजी, आपरी सतवाणी सू मिथ्यात नै मेट—भवरजाल मे कलीजती मिनख री अजाद री रक्षा सारु सव कुछ निछावर कर दियो।

अगम, अगोचर नै अलख री वाता रै साथै इणीज जसोल मे—काल री ऊडी कोख मे—ऊदम करणिया अटक गया—जद नगारा गाजता तो दोख्या रा मन ओधकता—धरम रै हेत लडता, पुरजा पुरजा कट पडता पण रण खेत नी छोडता। मलीनाथजी, जगमालजी, मण्डलकजी, कलोजी, वीदोजी, वीरमजी, तिलोजी नै जोराजी जैडा नर नाहरा सू धन है जसोल री धरती। राव जोधाजी रै वगत रावल वीदा मडोर माथे कब्जो करण सारु आपरी पूरी सगती लगाय दी। पछै राठौड वरजाग सू घोडा सारू वीदाजी घमसाण कियो नै—पोरस धन बीदाजी जगत मे आपरो जस राखियो।

अजनासतीरास रचता थका १६६७ मे हर्षकीरतीसूरि जसोल रै तपागच्छ रै उपासरै मे मा सरस्वती री स्तुति की

सरस वचनवर सरसती
तू जगदम्बा माय
कास्मीरी समरु सदा
खजूरणई वरदाय।
वीणा पुस्तक धारणी
कमण्डल करि भरि भारि
हम गमनि हमामनि
तू भलई सिरजी किरतार ॥

सादू जालो, भोजग सुरतो, सतो, पीरो नै सेवग धनो, रुगो, मोती नै पीथो—जेडा कविसरा अठै रैयनै वीरां रा बिड़द गाया साहित नै सिणगारियो।

लूणी री साख सूकडी रै काठै बाडमेर जिलै रै आथमण मे जसोल है। कदेई खेड री एक वसी रै नाम सू जसोल, मेवो, तिलवाडो नै तेमावास ओलखजीता पण पछै ए जुदा जुदा गाव वण गया। खेड मे राठौडा भरड कोट ठायो—गोयला रा गढ नै गजियो नै पछै—राठौडा री वेल वधतीहीज गई।

जसोल खास नै आडे पाडै कई जूना देहरा नै थान है। जसोल रै भाखर माथै—सिद्ध जोगी घोरीनाथजी रो थान ह। धोरोनाथजी राव सलखे जी रा गुरु हा। मुहता नैणसी आपरी ख्यात मे सलखेजी री वात मे इण सिद्ध अतीत री विगत लिखी है। 'राव सलखै रै पुत्र नही। एक दिन सिकार पधारिया सु तिरखा लागी, तद जल री ठौड जोवण लागा। तदै एके ठौडे देख तो धूवा नीकलै। तठै पधारिया, उठे देखे तो एक जोगी तपस्या करे, जोगी रै पगे लागा। तद् जोगी कहीयो—थारी किसी टौड-जद कह्यो वावाजी म्हारो साथ लारै रह गयो—सु मनै तिरस लागो छै सु पाणी पावौ। तद जोगी कह्यो इयै कमण्डल मे पाणी छै—थे पीवो अर घोडो तिन्नियो हुवै तो वोडा नू पावो। पछै सलखेजी आप पाणी पीयो अर घोडे नू पायो। पर कमण्डल खाली नी हुवो तद् सलखैजी दीठो ओ अतीत सिद्ध है तद् अरज कीवी और तो मन्व थोक छै, पण म्हारै पुत्र नही छै सिद्ध गोटो एक वभूत रो नै सोपारी च्यार काढ नै दीवी। तेरे वडो पुत्र होसी ते—रो नाम मल्लीनाथ काढै। पछै कितरैक दिन पुत्र हुवो। जोगी नू वोलाय—जोगी रा आभरण पैराय रावल मलिनाथ नाँम दियो।

ओलिया सांई रो तकियो पण जसोल मे घणो जूनो है। रमता फकीर-ओलिया साई-सिद्दीवावा रा मुरीद हा। फिरता फिरता जद जसोल पूगा तो जसोल वाने घणो मुहायो—सर ज्यू पाधरा—मीठा वोलणिया सू वा रो मन मस्त होय गयो नै वा अठे-इज आपरी आखरी सास ली।

नाकोडा जावता अठे केई साधु सत आपरा पगलिया किया। भक्तामर रचणवाला मानतुगसूरि, आचार्य देवसूरि, प० सुमतिशेखर, उपाध्याय श्रीधर शेखर–अठे रैयनै ज्ञान रो उपदेश दियो। नाकोडा नै खेड तो जातरी जावेहीज है पण जसोल खास मे राणी भटियाणी जी नै कवरसा रै थान, मोतीगरजी री मढी, रामस्नेहिया रै रामद्वारै, कन्हैयालालजी नै राज रणछोडजी रै मदरा माथै पण आपरी भावना-भावण वाला री कमती भीड नी रैवे। जसोल रो सबसू जूनो मदर तो लोहणा रो महादेवजी रो थान है।

जसोल इगरेजा रै जमाना में राजकाज रो मुख ठिकाणो वण गयो। इगरेज पोलिटिकल एजन्ट साब अठे वगलो वणियो दफ्तर नै कचेडी लागी। मालाणी रा सरदार नै साहूकार, कामेती नै कामदार, करसा नै कारीगर जसोल में भेला होवता। सन् १८६७ मे अठे इगरेज सरकार पेली सरकारी स्कूल खोली—इण स्कूल सू जसोल मे एक नवो जमाना आयो--नै जसोल मे लोगा नै परखण री आसग आय गई।

चले न पाखण मेर में, कर आया केई कोल।
कचन ज्यू कीमत करै, जवर कसोटी जोल॥

जसोल आपरै पेरवास, जीमण ने मनवार, लाडकोड मस्करी ने मजाक मारू आपरी जुदी ओलखाण राखे । अठे रै पेरवास मे एक खास ठमको है - ओप है । साफो आपरे रग ने पेच सू पेचाणीजे के ओ जसोल रो है - ओरणा नै चुनडी री पटली - पल्ला नै घू घटा सू जाणीजै के पैरणवाली जसोल री है । जीमण ने जीमण-वाला रे अलावा पुरसगारी करणिया सू आ ठा पड जावै के रगत जसोल री है । मनवार री मरोड ने हाँ ने ना रा लटका सू जसोल री छाप छानी नी रै । लाड कोड ने उमग उछाह री वाता रो पार नी । होली री गैर, लुगाइया री लूरां ने पिणयारिया री पाता मे रोलां - रा रलियामणा रग देखी जी है । मुनि मुलतानमलजी आपरै ग्र थ श्री गणेश महिमा मे दोय मगा री मसकरी रा सोरठा लिखने - जसोल री ओलख दी है । एक सगे कहो -

दाढी दे दातार - फरहर लागे फूटरी
चू खा मत दे चार, कलक लगावण कूतरी ।'

पाछो कहीयो

घास फूस डू गर घणा, सुणरे साह सगाह ।
अमल केसरी सिंह रै हुवे च्यार तगाह ।।

जूने जमाना रै सूरा वीरा री वाता तो आप सुणी पण महाराज मानसिंहजी रै जमाना मे जसोल - मारवाड री तवारीख मे ऊजला - आखरा मे लेखीजतो । मुहैता तिलाजी नै जोराजी नै तो श्रीहत्थ सू कागद ओलिया लिखीजता । सरदार ने कामेती सगला साथ मायड भोम सारू माथो देवण नै हुलसता ।

ठा० पहाडसिंह जसोल धरा रो थम वाजतो । वीखा मे आभो ढावतो । यू हीज भू का रो मोडो कीरतसिंह—जसोल रो जायो जनमियो--गढ जोधाण सारू—आपरा प्राणा री निछावल की । ठा० पहाडसिंह रावण ज्यू हठीलो हो जद आपरै साथ नै लेय चढतो तो सेसनाग रो सीस धूजण लागतो---वैरियाँ रो गर्व छीज जावतो । पहाडसिंह एडो वली हो के आपरी भुजावां मायै आभा नै ढाव लेतो । जाला नादू कहीयो

समर भाजवा थाट वाका भडा सालुलै ।
दुजड ग्रह विडाणी धरा दावै,
अ गज जोध डिगन्तो भुजा ऊपरै
विरद पत महैचो आभ ढावै ।
धरा रो थभ रजपूत वट धारिया
पटालो केहरी जोम पूरै ।
वणे जुध रूप कठीर रै वीरवर
चात मालाण दला चुरै ।।

य हीज सोढा कीरतसिंह रा विडद तो खुद महाराजा मानसिंह कहया । सवत १८६२ मे जद जोधपुर रै गढ मायै चढाई हुई तो मानसिंहजी कहीयो के अवै तो मुकावलो मुस्किल है—पण जसोल री धरती रो लाल-- सोढो कीरतसिंह एडो जू भियो के वैरी साग छूटा । कीरतसिंह काम आयो । जद फरमायो .

तन झड खागा तीख
पाडि घणा खल पोढियो
कीरतो नग कोडीक
जडियो गढ जोधाण रो

जसोल आपरा ऊडा वेरा, ऊँचा भाखर, नित नवो रूप धरणिया धोरा, कैर, कुमटिया, जाला नै खेजडिया, सू आगी नै नेडी भा मे—आपरी हस्ती री एक हीज वस्ती है। अठे री प्रकृति री पवितरता, पुरसा रे पोरस, साहित नै सगीत री सौरम सू—पान्वाण मे प्राण जागे। अठे रा नर नारी तीखी तरवार री धार माथे चालणो जाणे नै जाणै नेह निभावणो। जसोल जाता री भीता सू विखरयो नी, महाजन मनरणा, रजपूत, वामण, भोजग, भाट, सू गा, खत्री, माली, घाची, जटिया, वलाई, कु मार नै रवारी— तरै तरै रो जाता री खोडा मे अठे रग रूप नै सौरम रा पुसप फूलै—आपरी मरदा नै मस्ती सू इण कीरत रै धाम नै सिणगौर नै मेहकावे—एडो है जसकीरत रो धाम जसोल . ईणीज वास्ते कहोयो है

जसवल रा जाया जवर
सवल सरस सचेत।
हिम्मत री कीमत करै
राखे हिय सू हेत॥
सेवा करण सकल री
लौक हित रै काज
जसवल माहे जनमिया
जसधारी सिरताज॥
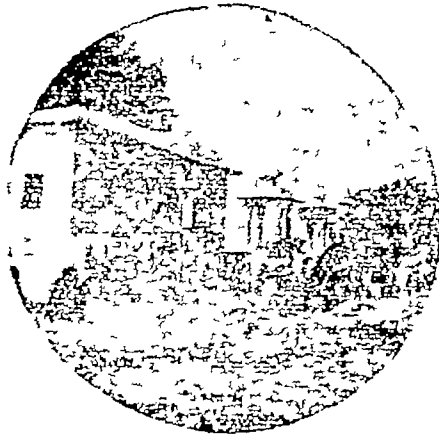
— गोविंदराम खारवाल

नमक निर्माता - खारवाल

पचपदरा के नमक दरीवे से खारवालो का अटूट सबध है। वापा चौहान के सातवी पीढी में सगराम हुआ के छ लडके थे। सगराम के छहो लडको ने छ स्थानो पर नमक उत्पादन शुरु किया। यह परिवार ग्राम इटाडी मेवाड मे रहता था। इटाड़ी वर्तमान उदयपुर शहर के समीप ही, उदयपुर जिले में स्थित है और आज भी वहा खारवालो की वस्ती है। यह स्पष्ठ दिखता है कि मेवाड मे पूर्व मे नमक का अच्छा उत्पादन तो था ही पर साथ ही यहा के नमक उत्पादक अपने हुनर मे अत्यत कुशल थे।

सन् १८७९ की ८ मई को एक सधि मेवाड के महाराणा सुजानसिंहजी की अग्रेजो के साथ हुई, जिसमे उन्होंने मेवाड में नमक के सभी श्रोत वद करवाए इस सधि मे ५१ जागीरदारो को नमक उत्पादन वद करने हेतु मुआवजे का उल्लेख हैं व ६९ स्थानों का नमक उत्पादन वद करने का वर्णन है इसमे स्पप्ट है मारवाड के नमक उत्पादन मे मेवाड के जिस खारवाल परिवार ने प्रवेश किया वह पर्याप्त कुशलता से अपने स्वय के स्थान पर काय कर रहे थे व कार्य विस्तार के ईच्छुक थे।

सगराम के पुत्र मामा पचपदरा आया था व उसने पचपदरा का नमक उत्पादन शुरू किया। अनेक स्थानो पर पचपदरा का नमक उत्पादन जाभा द्वारा शुरु करने का उल्लेख है। जाभा सगराम का पोता व मेया का लडका था। लगता है जाभा अपने कार्य मे अधिक कुशल होगा व सगराम अपने लडके पोते के साथ ही पचपदरा आया होगा। पचपदरा मे खारवालो की अन्य गोतो मे राठौड, सिसोदिया, गोमेती, हाडा वगैरा हैं जिन्हे जाभा पचपदरा लाया था।

सगराम के छ लडको मे पहला मामा अपने पौत्र जाभा के साथ पचपदरा आया। दूसरा रडमल धूखड गाव गया और वहाँ नमक उत्पादन शुरु किया। तीसरा आला ईटाडी मे ही नमक उत्पादन मे लगा रहा अथवा यो कहा जाय कि रूप ने यह ईटाडी नही किसी दूसरे गाव के हो सकते है वह ईटाडी मे नमक उत्पादन हेतु वचे जहाँ आला व उसके वशजो ने नमक उत्पादन चालू रखा। चौथा पुत्र गोपा झपोक गया। झपोक साभर क्षेत्र का एक नमक उत्पाक गाव है और साभर के नमक उत्पादन मे अभी भी झपोक क्षेत्र विशेष महत्व रखता है। पाचवा पुत्र खतो लूणसर अर्थात् बीकानेर जहा लूणकणसर के रूप मे नमक की प्रसिद्ध झील है वहा पहुचा और वहाँ भी उसने नमक उत्पादन शुरु किया। सबसे छोटा बेटा वागा चाणोद गया। चाणोद का नमक उत्पादन सन् १८७९ मे अग्रेजो की सधि मे वन्द हुआ है।

आज खारवाला परिवार उपरोक्त स्थानो के अलावा मेवाड क्षेत्र के अनेक गावो मे मारवाड के अनेक नमक आगरो पर, बीकानेर के ईर्द गिर्द व दिल्ली इत्यादि मे रहते है और खारवालो की एक अखिल भारतीय सभा उन्हें पुन एक धागे मे पीरोने का काम कर रही है।

यहा यह उल्लेख नीय है कि खारवालो की सबसे बडी बस्ती पचपदरा मे ही है और इसका कारण सम्भवतया उनके अधिकार के अन्य सभी स्रोतो से नमक उत्पादन कार्य का छीना जाना व पचपदरा मे आज तक इस परम्परागत कार्य का हाथ मे रहना लगता है। सन १८७९ के ब्रिटिश सरकार की संधि के समय पचपदरा व साभर का नमक उत्पादन बराबर था और चूकि सन १८८०-८१ मे जोधपुर राज्य ने जो रेल निर्माण कार्य हाथ मे लिया था उसमे पचपदरा से रेल सम्बन्ध को प्राथमिकता दी गई थी इससे स्पष्ट है कि आन्तरिक भूमिगत स्रोतो मे पचपदरा अपना एक विशिष्ट व महत्वपूर्ण स्थान रखता था। जोधपुर राज्य द्वारा पचपदरा के खारवाल समाज को दी जाने वाली सुविधाऐ उनके महत्व को बतलाती है।

मासा के पन्द्रहवी पीढी मे आज जाजा के वशजो की चार प्रमुख शृखलाये चल रही है। जिसमे चनाणियो मे श्री दत्ताराम मे जाणी, मोहन जोगाणी इत्यादि है। पदाणियो मे वस्तीराम, रूपचन्द जोगाराम, शिवनारायण, गोविन्दराम, घेवरचन्द इत्यादि का परिवार है। खताणियो श्री गेराराम, बीजराज, धीगडमल, छगनराज इत्यादि हैं और चौथी शृखला बनांणियो मे श्री हरीराम पुनमाजी बीजराज, गेबीरामाणी इत्यादि हैं। जो अन्य लोग मेवाड से या अन्य स्थानो से श्री जाजा लेकर आया उनमे राठौड और मेवाड के कनोर ग्राम से आए लोग थे। सीसोदिया(बागडा) मोरनगावली मेवाड से आए। सीसोदिया की एक अन्य शाखा डावरिया है जो दावरिया बिलाडा की आईमाता के पुजारी हैं और ये आईमाता के बैलबन्ध है। चू कि ये दावर गाँव से आए थे इसलिए दावरिया कहलाए। आईमाता के बैलबन्ध लडके व लडकी के जन्म मे ही सात गाठो का एक डोरा बान्धते हैं जो बैल कहलाता है। लडकी का बैल शादी के समय बडा कर दिया जाता है अर्थात खोल दिया जाता है। दावरिया मरने पर शरीर को जलाते नही गाडते हैं। यह परम्परा आईमाता के समस्त मानने वालो की है। जिसमे बिलाडा दिवानजी के भक्त परम्परा के समस्त सीरवी जाति भी शामिल है। वैसे मारवाड के लोक रिवाज मे लोक देवता के रूप मे 'आईमाता' का बडा महत्व है और शीतला की बात मे भी 'आइमाता' से स्त्रियो माँगणी किया करती है। पचपदरा मे 'आईमाता' का मन्दिर दावरियो के वास मे है।

पचपदरा मे खारवालो ने आने के बाद यहा के नमक उद्योग को अपनी जागीर के रूप मे समझा व जिसके पास जितनी नमक की खानें होती हैं उसी के हिसाब से उसकी सम्पन्नता समझी जाती है। वैसे नमक का उत्पादन कार्य करने के लिए लगभग प्रत्येक खारवाल अपनी एक गैंग बनाता है जिसे तीण कहते है और यही तीण का मालिक अपने गैंग के लिए औजार उपलब्ध करता है और पूरे गैंग की जो दैनिक मजदूरी की आमदनी होती है उसमे से औजारो का एक हिस्सा लिया जाता है जिसे टी बी कहते है। इस प्रकार के मजदूर व्यवस्था का एक बहुत बडा लाभ यह होता है कि हर खारवाल खान मालिक या खान की जमीनदार के साथ साथ मजदूर भी है और इसलिए वह साथ के मजदूरो से उचित काम ले सकता है। साथ ही एक बार कुछ खानो वालो से जब अपने मजदूरो की व्यवस्था कर लेते है तो 'सहकार' के रूप मे सभी खानो के लिए यह व्यवस्था बारी बारी मे हो पाती है और इसलिए प्रत्येक खारवाल को मजदूर इकट्ठे करने के लिए भागना नही पडता। साथ ही क्षेत्र का सारा मजदूर वर्ग इनके सम्पर्क व प्रभाव मे रहता है व तीण के शेष मजदूर अपने नेता को सम्मान देते हैं व पूरी 'तींण' कुटुम्ब सरीका कार्य करती है।

खारवाल खान मालिक (उद्योगपति) जमीदार अथवा मजदूर ही नही है खेती के मौसम मे वह किसान भी हैं। सभी खारवाल वर्षा की मौसम मे बहुत बढिया खेती करते हैं व अपनी भूमि की अच्छी सम्भाल भी करते हैं। जिस वर्ष अच्छी वर्षा होती है। मेंवज के रूप मे दूसरी फसल भी लेते हैं जो नमक के कार्य के साथ साथ ली जाती है। इस प्रकार एक खारवाल, बाहरो मास अपने कार्य मे तल्लीन रहता है। सदा से ही अपने उद्योग को चलाने के लिये उसे धन की आवश्यकता रही है और उसके लिये उसे महाजन पर आधारित रहना पडा है। पुराने दस्तावेजो मे उल्लेखित है कि जाजा पचपदरा आते समय वाणिया रूपचन्द लूकड को साथ लेकर आया था व आज भी स्पष्ट है कि पचपदरा मे महाजन लूकडो की वास व खारवालो का वास आपस मे सटी हुई है।

चूं कि नमक के व्यवसाय मे बहुत ज्यादा उतारचढाव आते रहे तथा एक उद्योग से सबन्धित होने के कारण खारवलो मे फिजूल खर्ची शराब व सामाजिक मोसर इत्यादि व प्रतिष्ठागत वाद विवादो का बाहुल्य रहा अत सदैव मे खारवाल कर्ज से दवा रहा। सन् 1880 मे ब्रिटिश सरकार ने उनको कर्जमुक्त करने के लिये उनका सारा कर्जा अपनी ओर से अदा किया था पर उसके बदले उनकी नमक दर आधी कर दी थी इसलिये नमक की चालू आय मे कमी के कारण उन्हें पुन कर्जे का शिकार होना पडा।

पचपदरा की नमक उत्पादन व्यवस्या पर उनका एकाधिकार है इस विषय पर पिछले पाच सौ वर्षों मे लगातार विवाद चलते रहे। पडौस के ग्राम खेड मे कुछ दूसरे खारवाल आकर बस गये थे और लोक जानकारी के अनुसार वे खारवाल पचपदरा के नमक क्षेत्र मे काम न करें इस हेतु युद्ध हुए थे। जसोल से जागीरदारो ने हीरागढ क्षेत्र मे खारवालो के नमक उत्पादन पर आपत्ति की थी और उस वाद विवाद मे जो खान खुदी थी उसे "तोपवाली" खान के नाम से पुकारा जाता है।

ब्रिटिश सरकार ने एक परीक्षण खान खुदवाई थी जिसके आपत्ति स्वरूप खानो के मालिकाना हक के सबध मे सन् 1898 - 99 मे वाद विवाद चला था। ऐसिसटेन्ट कमिश्नर ने अपना निर्णय दिया कि खारवालो को केवल 'हेक-ए-मजदूरी' है पर तत्कालीन कमीश्नर ने उस निर्णय को उल्टते हुये खारवालो का उस खान पर पूर्ण मालिकाना हक स्वीकार किया था। पर सन् 1879 की सधि के अन्तर्गत लीज की आधारभूत मान्यता के अनुसार विभाग द्वारा खान खुदवाने के हक की पुष्टि की थी। हालाकि कालान्तर मे यह खान देवी के मन्दिर के लिये उनके द्वारा दे दी गई थी। राजस्थान के निर्माण के पश्चात् यह विषय हाई कोर्ट व सुप्रीमकोर्ट में विवाद का कारण रहा पर आपातकाल मे समझौते के आधार पर विषय की स्पष्टता न होते हुए मामला समाप्त हो गया।

खारवाल समाज अपने त्यौहारो को एक सम्पन्न समाज के रूप मे मनाता आया है हालाकि शराब इत्यादि कुछ अवगुणो के कारण उनमे कुछ विकृतता आ गई है वैसे हर शुक्ला चतुर्दशी को देवी के मन्दिर पर मेला होता है व नवरात्रियो पर सामुहिक हवन इत्यादि हुआ करते हैं तथा खारवाल स्त्री पुरुष भजन कीर्तन व कथावाचन इत्यादि मे भी बहुत रुचि लेते हैं। खारवालो मे से स्त्री पुरुष दोनो मे से अनेक वैष्णव साधु भी हुए है। खारवालो की भजन मण्डली भी बहुत प्रसिद्ध है। शेष त्यौहार गावो के अन्य लोगो के साथ ही मनाए जाते हैं।

खारवाल समाज मे नाते का रिवाज है व यदि कोई स्त्री अपने पति को छोडना चाहती है तो सीन्दी देना अर्थात अपने ओरणे का एक पल्लू फाडकर देने का मतलब सम्बन्ध विच्छेद हुआ माना जाता है।

मृत्युभोज का पहले रिवाज था अब धीरे धीरे वन्द सा हो गया है वैसे सामाजिक सुधारो हेतु सस्था वनी हुई है जो सभी प्रकार की फिजूल खर्ची को वन्द कर रही है। जव कभी भी कोई व्यक्ति तीर्थ करके आता है तो उस समय वहुत वडा उत्सव मनाया जाता है व व्यय किया जाता है।

इस समाज मे पहले हिन्दी जानने वाले थोडे शिक्षित लोग थे हालाकि नमक विभाग व हकूमत के अपने कार्य हेतु अपने विषय को कुशलता से रखने की क्षमता रखते थे। समाज से पाच पचो को चुना जाता रहा है जो पच खारवाल कहलाते हैं व नमक विभाग लामुहित विषयो मे इन पच खारवालो से ही सम्वन्ध रखता है।

खारवाल समाज मे महाराजा मानसिंहजी के समय नाथजी के भक्त श्री वोथा हुए है जो महाराजा मानसिहजी के गुरुभाई व मित्र के रूप मे थे। सवत् १८७० मे इनकी मृत्यु होने पर उनके यहा जो पासवान थी जिसका नाम केसरा था, वह उनके पीछे सती हुई और इसलिए सती की एक विशाल छत्री तालाव के कुम्हारो के बास के किनारे पर वनी हुई है। जिसमे सती का लेख है। दो अन्य सतियो की और छत्रियें नाडी तालाव पर मन्दिरो के सम्मुख वनी हुई है जो सवत् १८३५ व १८७९ के है। जिसमे एक अपने पति के पीछे व एक अपने पुत्र के पीछे सती हुई थी। खारवालो का मठ जिसमे शिव मन्दिर इत्यादि हैं वाजार के मध्य मे एक वहुत वडा स्थान है जहा न्याति कार्यों के लिए खारवाल इकट्ठे भी होते हैं व खारवालो के धर्मगुरु भी यहा रहते हैं इसके अतिरिक्त खारवालो के मौहल्ले मे चामुण्डा देवी का मन्दिर वना हुआ है। इस मन्दिर की विशाल पीतल की देवी की मूर्ति पचपदरा की वनी हुई है व उस पर कलात्मक सुन्दर कारीगरी है।

आजकल खारवाल समाज के युवक पढाई के पश्चात सरकारी नौकरियो की ओर ज्यादा आकर्षित है जो नमक उद्योग के विकास हेतु अच्छा लक्षण नही कहा जा सकता क्योंकि धीरे धीरे जो श्रम की महत्ता खारवाल समाज मे वनी हुई है लुप्त होती जावेगी।
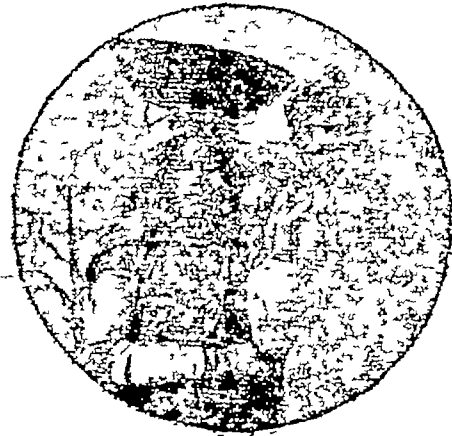
— गणपतचन्द सालेचा

पचपदरा के ओसवाल

पचपदरा मे ओसवाल व अन्य महाजन समाज को राज्य की ओर से आमंत्रित कर बसाया गया था और इसी कारण राज्य की ओर से उन्हे विशेष सुविधाएं व सम्मान की सनदें दी गई थी ऐसे कुछ शिलालेख बाजार के चबूतरे के पास व अन्य स्थानो पर लगे हुए हैं। बाजार का शिलालेख ओसवालो को व अन्य महाजनो को खाड़ा लाग की छूट का उल्लेख करता है। अधिकाश पचपदरा की ओसवाल व अन्य महाजन बस्ती सवत १७०० से १७५० के बीच बनी है पर इसके पूर्व भी यह सभी समीप के गावो मे रहते हुए भी नमक का कारोबार ही कर रहे होगे क्योकि सवत १६१० मे भी गोपडी मे ४० नमक की खानें दरीबा पचपदरा मे दाखिल थी और वहा रहते हुए भी महाजन नमक के व्यापार का सचालन कर रहे थे। इस काल मे हुआ दरीबा पचपदरा मे २०० नमक की खानें चालू थी, जबकि आज भी चालू खानें ४५० करीब ही है यह भी इन महाजनो का उस समय भी नमक के व्यापार से सबध बताता है।

आज से करीब १०० वर्ष पूर्व पचपदरा मे ओसवालो के लगभग ८०० घर थे। महेश्वरी न्याति ओसवाल न्याति से जुडी हुई थी जबकि अग्रवालो की अलग न्याति व्यवस्था थी पहले ओसवाल न्याति मे १२ पंच थे जिनमे लूंकड तीन चौपडा व दो सालेचा एक महेश्वरी व शेष तीन मे एक बागरेचा एक छाजेड व एक लोढा गौत्र से थे। सवत १९६५ मे महेश्वरी ओसवाल न्याति व्यवस्था से अलग हो गए व ओसवालो का पच सख्या इग्यारह बनी रही।

पचपदरा के महेश्वरी जैसलमेर से आए थे और वे वहाँ जैसलमेर दरबार के कोठारी कहलाते हैं। अभी हाल मे इनमें रामलालजी, छोगालालजी व कन्हैयालालजी काफी प्रभावी हुए हैं।

ओसवालो मे लूकड पचपदरा के सर्वप्रथम आने वालो में से गिने जाते हैं। कहते हैं जाझा खारवाल अपने साथ लूंकड रूपचद को लेकर आया था। वैसे लूकडो का खारवालो के मोहल्ले से सटा हुआ होना भी यह सूचित करता है।

लूकड परिवार पचपदरा मे नाणा से आए। इनकी वशावली के अनुसार सर्व प्रथम रायपालजी पचपदरा आए वही रायपालजी लूंकड मोहनलालजी के ११ पीढी पूर्व हुए, और तदनुसार रायपालजी का समय स १७०० के आस पास बैठता है। इस समय पचपदरा में लूंकडो की चार प्रमुख शाखाएं हैं जिनमें तीन इन्ही रायपालजी से सबधित हैं रायपालजी के सातवी पीढी में गोदाजी हुए जिनके नाम से एक शाखा गोदाणी कहलाते है। दूसरी शाखा में कुशालजी हुए जिनके परपरा के लूंकड कुशालजी वाले कहलाते हैं। इन्ही की तीसरी परपरा खारवालो की बास से सटी बारी के पास रहने से बारी वाले कहलाए। चौथी खत गो की परपरा है जिसका इन रायपालजी से सबध नही है।

श्री खुशालजी का राज्य में इतना सम्मान था कि स. १८८२ वि के एक पत्र में राज्य के दीवान ने सभी जागीरदारों को हुकम दिया था कि श्री खुशालजी अपने कार्य से जहाँ भी जावे रात्रि को उनकी सुरक्षा हेतु पहरे की व्यवस्था रखी जाय। लेनदेन के बड़े दस्तावेज भी इसी प्रभाव, सम्पन्नता को प्रकट करते हैं।

गोदाणी परिवार में रामचद्रजी अत्यत प्रभावी हुए। कहते है उनकी मृत्यु के समय एक सेवग ने कहा था "रामचद जावतो वास लागे वरग" और यह शब्द कहते ही, जहाँ से सीटी जा रही थी उसके पास मायर थाना बना हुआ था वह गिर पडा।

इन दोनो परिवारो का न्याति मे भी बडा मान रहा। सिवाणची के खर्च इनके द्वारा किए गए। खुशालजी के वशजो के सबध मे कहा जाता है कि एक बार सिवानची न्याति विवाद में भाईयो के हठ पूर्ण पक्ष को छोड़ न्याय के आधार पर न्याति के साथ रहने से यह न्याति मे नामवर्मी कहलाए व उन्हे न्याति मे विशेष बैठक दी गई। खुशालजी के परिवार के मोहनलालजी ने वर्तमान मे भी न्याति मे बडा सम्मान पाया व सलाहकार व्यक्ति माने जाते हैं। गोदाणीयो में स्व दुर्गादासजी का अपने सरल प्रकृति के कारण बहुत सम्मान था। स्व बकसीरामजी ने सेठ गुलाबचदजी के साथ सन १९३०से३८ तक सार्वजनिक कार्यो में सहयोग किया। श्री सोहनराजजी, केवलचदजी व घीसूलालजी लूंकड भी सार्वजनिक कार्यो में आज भी सक्रिय हैं।

चौपडा-पचपदरा के चौपडा कह चौपडा है। पचपदरा में इनकी एक शाखा के पूर्व पुरुष सखोजी जो सोमाजी के पुत्र थे घाणेराव से आए थे व सोमाजी के पुत्र होने से सोमावत कहलाए। इस शाखा में पचपदरा के हीराजी व चतराजी आते हैं। चौपडो की अन्य शाखाओ का उदगम भी सोमाजी से ही है। जिस परपरा मे लादोजी, वनाजी शिवदासजी वाले, मोदी, गोडोजी का परिवार इत्यादि मिलते है। यह कहना कठिन है कि सोमाजी दोनो परपराओ के एक ही व्यक्ति हैं। यदि एक ही व्यक्ति हो तो सखोजी व धनोजी भाई होने चाहिए जिनके अलग अलग परिवार बढे।

हीराजी व छत्रोजी परिवार के पूर्व पुरुष सखोजी सवत १७९९ मे पचपदरा आए। अर्थात कुछ अन्य गोत्रो के लोग यहाँ पहले आ चुके थे। इस परिवार ने न्याति मे अत्यन्त महत्व पाया, खर्च, औसर इत्यादि किए व सवत १९१२ मे सिवानची की पूर्ण न्याति का खरच किया।

हीराणियो मे शिवदासजी व मिरेमलजी का परिवार भी अत्यत प्रभावी हुआ जिनका सबध राजघरानो, जागीरदारो से था। इसी प्रकार हीराणियो के कलजी वालो का परिवार जिनमे भगवानदासजी इत्यादि हुए अपना प्रभावी महत्व रखता है। हीराणी परिवार मे ही फौजमलजी ने न्याति मे अपनी प्रभावशाली व महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। शिवदासजी के पिता सगजी तेरापथी समाज मे स्तभ गिने जाते थे। सवत १९२१ में जब उनका देहात हुआ तो तेरापथी आचार्य पूज्य जयाचार्य ने उनके सम्मान में इस वर्ष पचपदरा में होने वाला मर्यादा महोत्सव स्थगित कर यह कार्यक्रम अन्यत्र किया। श्री वस्तीरामजी ने भी न्याति मे सम्मान पाया।

चतरोजी के परिवार मे नथमलजी भी प्रभावी हुए। इनके वशज श्री वाडमलजी अपने धार्मिक जानकारी व व्यवहार के लिए तेरापथ समाज में एक विशिष्ठ सम्मान मे देखे जाते हैं।

हीराणी परिवार के श्री मागीलालजी पचपदरा पचायत में अत्यन्त सक्रिय व सूझ बूझ वाले पच रहे हैं। श्री पृथ्वीराजजी वर्तमान में उपसरपच है। श्री लक्ष्मीचंदजी व शकरलालजी का जोधपुर की मडी में बडा सम्मान है। श्री अमृतलालजी ख्याति विषयो मे बहुत सक्रिय रहते है। बन्नीरामजी के पुत्र चपालालजी लोक व्यवहार में अत्यत कुशल हैं। बछराजजी के पुत्र कुशलराजजी अमनराजजी व पौत्र गरापतचदजी, रूपचदजी इत्यादि सार्वजनिक कार्यों व मदिरो और विशेष रूप से नव निर्मित जैन क्रिया भवन मे अत्यन्त रूचि से भाग लेते हैं।

कुकु चौपडो की दूसरी शाखा में वनोजी, शिवदासजी, लादाजी व मोदी इत्यादि आते हैं। इस परपरा मे जेठोजी वीरांणी ने पचपदरा में शिखरबद मदिर बनवाया था व उनकी विरद कवियो ने "भलोजबोजो जेठा वीरांणी" कह कर गाई थी। वनाणियो मे श्री सोहनराजजी अपनी कठिन तपश्चर्या के लिए प्रसिद्ध हैं। श्री कानराजजी मोदरा मे व श्री हुक्मचदजी जोधपुर मे चेम्बर, किराणा एसोसिएशन व कृषि मडी के सम्मानीय कार्यकर्ताओ मे है। श्री पुखराजजी व श्री केवलचदजी जोधपुर के गुमाश्ता सघ, राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ, जनता युवा मोर्चा इत्यादि के सक्रिय व महत्वपूर्ण कार्यकर्ता है तथा अनेक आदोलनो मे भी सक्रिय रहे। शिवदासजी के परिवार के श्री मीठालालजी अत्यन्त प्रभावी व्यक्ति हुए व उनके पुत्रो श्री कानराजजी भवरलालजी व पारसमल जी का जयपुर मे प्लास्टिक उद्योग अपना महत्व रखता है। इन्हे जयपुर के प्लास्टिक उद्योग का जन्मदाता कहा जा सकता है। शिवदासजी के पुत्र चम्पालालजी पचपदरा के सार्वजनिक कार्यों मे रुचि लेते है व पचायत मे उन्हे स्पष्टवादी पच के रूप मे जाना जाता था। लालचन्दजी मोदी का व्यापारिक ज्ञान बाडमर के बाजार में अपनी छाप रखता है।

लादाणी परिवार के श्री केसरीमलजी ने जहा ख्याति मे अपनी बुद्धिमता की छाप छोडी वहा श्री पूनमचंद जी ने जोधपुर के वकील समुदाय मे महत्व पाया। श्री जसराजजी चौपडा जो डिस्ट्रीक्ट व सेशन्स जज हैं, अपने सेवा काल में फलौदी जैसलमेर, गगानगर, उदयपुर, भरतपुर, जोधपुर, बीकानेर सभी स्थानो पर जन सम्पर्क, जन कार्यों में रुचि व प्रभावी व्यक्तित्व की छाप छोडते रहे है। न्याय विभाग मे आप कुशल प्रशासनिक अधिकारी के रूप मे भी जाने जाते है।

सालेचो की पचपदरा मे दो प्रमुख शाखाएं हैं। प्रथम वरजागजी का परिवार दूसरे तिलोकाणी परिवार। वरजागजी सवत १७३५ मे गोपडी से पचपदरा आए वह उसी परिवार के सेठ श्री गुलाबचन्दजी के सम्मान में यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस परिवार की अन्य शाखाओ मे स्व जेठमलजी का परिवार भी महत्वपूर्ण है जेठमलजी ने जोधपुर के ओसवाल समाज मे बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त की तथा उनके पौत्र भवरलालजी एडवोकेट जोधपुर तेरापथ समाज, टैक्स बार एसोशिएशन, पावटा समाज लायन्स क्लब इत्यादि मे प्रमुख उत्तरदायित्वो पर हैं। दूसरे पौत्र श्री मोहनराजजी की अहमदाबाद मे डाईग प्रिटिंग मिल्स अपनी विशेष डिजाइनो हेतु मशहूर हैं। दूसरे परिवार के श्री जसराजजी सालेचा के पुत्र कानराजजी अणुव्रत मे सम्बन्धित अनेक सस्थाओ में कार्यशील हैं। जसराजजी के पौत्र श्री राजेन्द्र जोधपुर बैंक कर्मचारी सघ मे प्रमुख कार्यकर्ताओ में रहे हैं।

सालेचा परिवार की शाखा मे ही 'भाईजी वाले' नाम से वायतु मे मशहूर दीपचन्दजी व किसनमलजी का परिवार है। इनके सम्बन्ध मे 'भाईजी वाला भला घणा' लोक व्यवहार मे प्रचलित है। श्री धनसुखदासजी

के वश मे श्री नरसीगराजजी ने पचपदरा मे प्याऊ व विश्राम स्थल वनवाया। स्व. हस्तीमलजी सालेचा भी न्याति में बहुत विवेकशील व न्याति के दस्तावेजो के सग्रहकर्ता थे।

तिलोकोणीयो मे श्री मोहनराजजी सालेचा पचपदरा, पाली, ग्रहमदावाद व वम्बई के मारवाडी समाज मे वहुत सक्रिय हैं व तेरापथी समाज व सार्वजनिक कार्यो मे वहुत रुचि लेते हैं। इनके भाई घमडीरामजी शात प्रकृति के व्यापारी है।

वागरेचा–पचपद्रा का वागरेचा परिवार भी वहुत महत्वपूर्ण रहा है। वागरेचा सोजत से पचपदरा सं १८३९ मे ग्राए थे। इनकी सेठाई की धाक सम्पूर्ण क्षेत्र मे थी। इनकी सम्पति के सम्वन्ध मे कहा जाता है कि नौ लाख की तो केवल किसानो मे इनकी उधारी थी। इस वश के श्री मोतीचन्दजी के परिवार के किसी व्यक्ति को डाकू उठा ले गए तो जोधपुर राज्य ने विशेष व्यवस्था से उन्हे छुडाया व मारवाड राज्य की ग्रोर से इस सम्वन्ध मे खेद प्रकट किया गया। पर इन काड मे इनके परिवार को भारी धक्का लगा। प्रसिद्ध है कि 'मोती समन्दर फूटो जद कई ताल तलैया भरीजीया'। इनके यहा पचपदरा ग्रोसवाल समाज का 'सिरा' व सिवाणची न्याति मे सम्मान था जो विपत्ति ग्राने पर ग्रापने स्वय छोड दिया। ग्रापके समय के कई पुराने हस्तलिखित ग्रथ भी हैं। इसी परिवार में श्री हुमराजजी काग्रेस के ग्रग्रणी कार्यकर्ता व श्री डूगरमलजी तेरापथी समाज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

छाजेड– छाजेड वंश का प्रारम्भ छगोजी के नाम से हुग्रा ऐसा वताते हैं ग्रौर वे मल्लीनाथजी की वंश परम्परा के कहे जाते हैं। पचपदरा के छाजेड वोरावा(तिलवाडा) से ग्राए व उनमे चेलोजी इतने प्रभावी हुए कि उनके श्लोक वने हुए प्रचलित हैं। इनके भाई मदोजी से मदाणी परिवार मे मीठालालजी मदाणी पचपदरा के सार्वजनिक जीवन में सक्रिय थे। वर्तमान मे मोहनलालजी मदाणी पचपदरा के हर सार्वजनिक कार्य मे ग्रग्रणी हैं व ग्रत्यन्त रुचि से जन कार्यो मे भाग लेते हैं। इनके पुत्रो मे पुखराजजी व लक्ष्मीचन्दजी का ग्रहमदावाद मे वडा वस्त्र व्यवसाय है व केवलचन्दजी कुशल डाक्टर है। मीठालालजी के पुत्र ग्रमीचन्दजी वालोतरा ग्रोसवाल सुधार समिति के ग्रध्यक्ष व जनता पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता हैं छाजेड परिवार से ही परम ग्रादरणीय श्री प्रतापमलजी मेहता व उनके ग्रनुज श्री मीठालालजी व मिसरीमल ने जोधपुर के सार्वजनिक जीवन मे ग्रत्यन्त श्रद्धा व ख्याति ग्रर्जित की।

लोढा– लोढा परिवार के दलीचन्दजी व सरदारमलजी वहुत प्रभावी व्यक्ति थे। वर्तमान मे पचपदरा मे लोढो के वहुत कम परिवार रह गए हैं।

ललवानी - पचपदरा मे इस समय ललवानी नही है पर पूर्व में श्री राजमलजी ललवानी व जसराजजी ललवानी मारवाड के ग्रत्यत प्रभावी व्यक्तियो मे हुए हैं।

काठेड--श्री ताराचदजी काठेड के पूर्व पुरुप पृथ्वीराजजी काठेड का मारवाड राज्य व इस इलाके मे वड़ा नाम था।

सखलेचा-पचपद्रा के सखलेचा परिवार का धार्मिक दृष्टि से वहुत नाम है जिस ग्रकेले परिवार से ग्रनेक लोग प्रभावी जैन साधु हुए। श्री दौलतराजजी सोहनराजजी सखलेचा के पिता व चाचा इत्यादि श्री छोगालाल जी केसरीमलजी, दुलीचदजी व वादरमलजी तेरापथ समाज के महत्वपूर्ण साधु हैं। श्री दुलीचदजी महाराज चिकित्सा मे चित्रकारी मे ध्यान भोग इत्यादि मे प्रवीण है व ग्रापका एक कैसर का इलाज वहुत प्रभावी है।

तातेड—श्री धनराजजी तातेड़ साधीधाम मे सार्वजनिक कार्यो मे वहुत रुचि लेते हैं।

ढेलरिया—पचपद्रा के ढेलरीया परिवार मे श्री घीसूलालजी ढेलरीया सार्वजनिक कार्यो हेतु, श्री लालचदजी ढेलरीया अहमदाबाद के क्लोथ मार्केट मे अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से, स्व० श्री गुलाबचदजी ढेलरीया पचपदरा के न्याति कार्यो मे रुचि के कारण, श्री भवरलालजी सुपुत्र वच्छराजजी ढेलरीया तेरापथी समाज मे सक्रियता हेतु प्रसिद्ध हैं। श्री मागीलालजी ढेलरीया व पारसमलजी ढेलरीया राजस्थान व गुजरात विश्वविद्यालय मे विशेष ख्याति अर्जित कर चुके हैं।

भडारी—पचपदरा के गुणेशमलजी भडारी नमक व्यवसाय के विशेषयज्ञ गिने जाते थे। उनके पुत्र रूपचदजी ने भी नमक के व्यापार, उद्योग, वस्त्र रगाई छपाई उद्योग इत्यादि में बहुत ख्याति अर्जित की है।

बालड—पचपदरा का बालड परिवार तिलवाडा से आया। तिलवाड़ा के जागीरदारो के मूता होने से इनको मेहता की उपाधि है। जहा श्री कानराजजी मेहता ने व्यापार में नाम अर्जित किया था श्री दलीचदजी मेहता ने जो पचपदरा जनता पार्टी के अध्यक्ष हैं, सार्वजनिक कार्यों में व जनता के सहयोग मे बहुत रुचि ली।

पारख—पचपद्रा के पारख परिवार के श्री हस्तीमलजी पारख ने अपनी योग्यता से राजस्थान के वकीलो में विशिष्ट स्थान बनाया है तथा उनके बडे भाई भूरचदजी ने अपनी पत्नी की स्मृति में कन्या पाठशाला भवन की नीव डाली जो सपना उनके पुत्रो द्वारा पूरा किया गया। भूरचदजी के सभी पुत्र सर्व श्री चपालालजी, मोहन लालजी, जीतमलजी, पारसमलजी, पृथ्वीराजजी अहमदाबाद के वस्त्र उद्योग में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं व इनका पचपदरा के सार्वजनिक जीवन मे भी महत्वपूर्ण आर्थिक योगदान चल रहा है। श्री लालचदजी पारख भी पचपदरा पचायत के सक्रिय पच हैं।

काकरिया—महाराज सा० के भक्तो का काकरिया परिवार भी अपना एक अलग ठाट रखता है। श्री घीसूलालजी काकरिया इनमें अग्रणी हैं। इनकी इस भक्ति से ही वर्तमान पीठासीन महाराज अभयरामजी ने पचपदरा में नवीन मदिर व द्वार स्थापित करवाया।

कनाना से श्री खुबाजी श्री श्रीमाल सवत १८९९ मे पचपदरा आए। इनके परिवार से श्री केसरीमलजी जन कार्यों में रुचि लेते रहे हैं व सेठजी के साथ भी सक्रिय रहे। इनके पुत्र हस्तीमलजी तहसील पंचायत के पच थे व जलदाय योजना के ठेके मे सेठजी के आग्रह पर साथ हुए। दूसरे पुत्र श्री मागीलालजी श्री श्रीमाल भी पचायत में पच रहे तथा मन्दिर निर्माण मे सहयोगी रहे। यह दोनो भाई राजनीति व समाज कार्यों मे दिलचस्पी लेते हैं।

इसके अतिरिक्त भी पदपदरा में ओसवालो की अनेक महत्वपूर्ण गौत्रे हैं। ऊपर वर्णित इतिहास यहा के ओसवालो का अपने स्थान पर ही नही पर समस्त मारवाड के जीवन में एक महत्वपूर्ण योग प्रदर्शित होता है। विशेष बात यह है कि आज पचपदरा का युवक भारत भर में अपने अनोखे कृतित्वपूर्ण जीवन के कारण अपने स्थान के नाम से पहचाना जाता है, पचपदरा की सेठाई, मनवार, योग्यता, व्यवहार सभी अपनी विशेषता रखते हैं।

– डा० सोभाग माथुर

रावल मल्लिनाथ

राजपूती और वीरता तो एक दूसरे के पर्याय है। पर वीरता के साथ सिद्धि और करामात का सगम यदा-कदा ही दृष्टिगोचर होता है। रावल मल्लिनाथ करामाती, सिद्ध और वीर पुरुष थे। उनका जन्म वि० स० १३८५ के आसपास राव सलखा के घर हुआ था ।

रावल मल्लिनाथ सिद्ध पुरुष थे। ऐसी प्रसिद्धि है कि देवी ने उनको साक्षात् दर्शन दिया था। एक बार जब रावलजी एक तालाब के किनारे बैठे थे तो देवी उनके समक्ष प्रकट हुई। रावलजी ने देवी को भोग लगाया। देवी ने प्रसन्न हो रावलजी को वर मागने को कहा। रावलजी ने देवी को अपने घर चलने का ही वर मागा। देवी ने वचन दिया कि वह उनके देश मे ही जन्म लेगी और चमत्कार करेगी। लगभग दस वर्ष पश्चात् एक दिन जब रावजी एक राजपूत के घर की ओर से निकल रहे थे तो बाहर एक कुआरी कन्या बैठी दिखाई दी। उसके पास अनाज का भण्डार था। रावलजी के लोगो ने अपने घोडो के लिए उससे अनाज मागा। उसने पर्याप्त-अनाज दिया पर उसके भण्डार मे कोई कमी नही हुई। जब यह बात मल्लिनाथजी को ज्ञात हुई तो उन्हे देवी की बात याद आई। उन्होने उस कन्या के माता-पिता से विवाह का प्रस्ताव किया। मल्लिनाथजी उस कन्या से, जो साक्षात देवी थी, विवाह कर घर आये। रुपादे और मल्लिनाथ ने मालाणी मे अनेक चमत्कार दिखाए। यही कारण है कि आज तक मालाणी के लोग उनकी पूजा करते हैं। उनकी स्मृति मे प्रति वर्ष चैत्र मास मे तिलवाडा मे मेला लगता हैं।

मल्लिनाथ केवल सिद्ध करामाती पुरुष ही नही थे वरन् तलवार के धनी भी थे। उन्होने पडोसी भोमियो को अपने अधीन कर लिया था और जिन्होने उनकी अधीनता स्वीकार नही की उनको दण्डित कर अपने राज्य का विस्तार किया। महेवा से उमरकोट ८० कोस की दूरी पर है। इस समग्र क्षेत्र पर अपना अधिपत्य स्थापित कर वे अत्यन्त शक्तिशाली हो गये थे। जैसलमेर तक उनके नाम की दुदुभी बजती थी। मेवाड, मण्डोवर, गुजरात और सिंध मे यवन लोग बिगाड करते थे। अत लोग इन क्षेत्रो को छोड कर रावलजी का आश्रय लेते थे।

इस समय मडोर पर मुसलमानो का अधिपत्य था। वे भी मल्लिनाथजी की वीरता से भयभीत थे। मल्लिनाथजी की शक्ति से आतकित होकर उन्होने दिल्ली के सुल्तान से रक्षा के लिये निवेदन किया। दिल्ली-सुल्तान ने सवत् १४३५ मे मल्लिनाथ के विरूद्ध अपनी सेना भेजा। यवन सेनानायक ने तेरह तुगे (दल) बनाकर मल्लिनाथजी पर आक्रमण किया पर वह उनकी शक्ति को पार नही पा सका। यह परास्त होकर भाग गया। इस सम्बन्ध मे यह कहावत प्रसिद्ध है—

तेरे तूगा भाजिया,
माले सलखाणी ।

अर्थात सलखा के पुत्र मल्लिनाथ ने यवन सेना के तेरह दलों को तोड दिया ।

दिल्ली के सुल्तान ने अपनी सर्वोच्चता के प्रदर्शन के लिए समग्र राजाओं पर दण्ड डाला । जब सुल्तान-सिरोडी- दण्ड वसूल करने के लिये आया तो मल्लिनाथजी ने न केवल उसे दण्ड देने से इन्कार कर दिया वरन् सिरोडी को कैद कर लिया । किरोडी ने मल्लिनाथजी से जीवित छोड देने की अनुनय-विनय की और बदले में सुल्तान से मेहवा की रावली विधिवत् रूप से दिलाने का वचन दिया । तब मल्लिनाथ से सुल्तान के किरोडी को मुक्त कर दिया । नैणसी की ख्यात मे लिखा है उसने दिल्ली जाकर सुल्तान से मल्लिनाथ की प्रशंसा की और मल्लिनाथ के मेहवा की रावली मांगी । बादशाह ने आदेश दिया— 'मालै कू मेहवा दिया ।' तत्पश्चात मल्लिनाथ दिल्ली सुल्तान के दरबार में गये, वहा स्वय सुल्तान ने मल्लिनाथ को रावल का टीका दिया ।

मल्लिनाथ अपने दृढप्रतिज्ञ थे । अपने वचनों के पालन करने मे उन्होंने कभी हिचक नही दिखाई । यहा तक कि एक बार दीवान के साथ चौपड खेलते हुए वे अपनी रानी को हार गये तो उसे दीवानजी के सुपुर्द कर दी । रावलजी ने तो अपने वचनो का पालन किया पर रानी ने भी अपने सत की रक्षा की और जौहर-व्रत कर आग मे जल कर अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी । इस सम्बन्ध गाया जाने वाला यह लोकगीत प्रसिद्ध है—

वाईजी थो, जीतिया जीतिया दिल्ली रा दिवाण
मालजी हारिया घर री गोरडी
मालजी ओ, करियो थे धरती मे अन्याय
घर री चानणियो किण विध हारिया

मल्लिनाथजी ने अपनी रानी रूपादे के चमत्कारों और उगमसी भाटी के उपदेशों से प्रभावित हो कर एक पंथ चलाया था। जिसमे गुरुभक्ति और ईश्वर भक्ति के माध्यम से मानव जीवन की सफलता को मुख्य ध्येय माना गया है । जात पात के बंधन मे उनका कोई विश्वास नही था । धारूजी मेघवाल के उपदेशों से वे प्रभावित हुए थे । उनके उपदेशों से प्रभावित होकर वे सर्वशक्तिमान निराकार अलख मे विश्वास करने लगे थे ।

रामदेवजी रा भगत हरजी भाटी 'मालैजी री मैमा' मे रावलजी के गुणों का उल्लेख इस प्रकार किया है–

अनन्त निरंजण सिवारियो
साधा नाम भजियो राजा रिणछोड
साहिब एक भेस सगना में
रा नहेन नावा में एक हीज गोड
महिमा धणी माल रे मेल
नन री पया नाभलो साधा
साधा धरम पाना निज ठोड
नाम लियां हेरा निम्नारो
उणरो दम फिकर लागे नहीं जोर

सइल कहता जके साँच कमाया
सरगाँ चढ लूमती लोल
माणक वगस माल सनखा रो
ज्याने पीरा निवण करे जोड

रावल मल्लिनाथ तलवार के धनी, नीतिज्ञ और दृढ प्रतिज्ञ थे वे सिद्ध और करामाती पुरुष थे। इन्ही गुणो के कारण वे जन साधारण में पूजनीय हो गये।

– पुखराज आर्य

किराडू

मालानी परगने के मुख्य स्थान बाडमेर मे १६ मील उत्तर-पश्चिम मे हाथमा गाव के निकट किराडू नामक नगर के अवशेष मात्र विद्यमान है । शिलालेखो मे इसका प्राचीन नाम किराटकूप मिलता है ।

१२-१३ वी शती तक किराडू का इतिहास तो गर्भ मे छिपा है । किराडू से प्राप्त १३ वी शती के शिलालेखो से ज्ञात होता है कि यह स्थान गुजरात के शासक कुमारपाल सोलकी के अधीन था और उस समय उसके सामन्त महाराजा अल्हणदेव और उसके पुत्र कल्हणदेव यहा राज्य करते थे । इस शिलालेख मे पशुवध निषेध का भी उल्लेख हैं । एक अन्य लेख सिन्धुराज को मारवाड का शासक बताया गया है । तीसरे लेख में यवन आक्रमण और उनके मूर्तिया के ध्वस करने का उल्लेख है ।

किराडू मे लगभग २४ मन्दिर विद्यमान थे पर उनमे अब केवल ५ मन्दिर खडे है । पाच मे से केवल एक को छोड कर बाकी मन्दिर शिव के हैं । मुख्य मन्दिर के लेख मे देवदेव शम्भू और गौरी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की गई है । इस मन्दिर मे खुदाई का बहुत सुन्दर कार्य किया गया है । द्वार पर ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्तिया खुदी है और ऊपर के भाग पर ब्रह्मा विष्णु और सूर्य की एक सम्मिलित मूर्ति है जिसके एक सिर और दस हाथ हैं । सूर्य के दोनो हाथो मे कमल, विष्णु के आयुधो मे से गदा और चक्र है और ब्रह्मा के आयुधो मे से सुत्र है । बाहर के ताको मे भैरव, नटेश और चामुडा की मूर्तिया है । इसके अतिरिक्त मन्दिर मे राम और कृष्ण लीलाओ के तक्षण का कार्य भी किया हुआ है ।

सोमेश्वर मन्दिर के समीप एक अन्य शिवालय है । इसके बाहरी ताको में ब्रह्मा, विष्णु और शिव की मूर्तिया है । प्रधान ताको के नीचे रामायण और महाभारत सम्बन्धी कुछ दृश्य अकित है । इस मन्दिर का सर्वाधिक आकर्षण शरशय्या पर लेटे भीष्म पितामह का अकन है । भारतीय मूर्तिकला मे दृढ प्रतिज्ञ भीष्म का ५८ दिन तक मृत्यु की प्रतीक्षा का भाव अन्यत्र कही भी उपलब्ध नही है । इस मूर्ति मे शरशय्या, भीष्म का मुकुट, अधोवस्त्र आदि का बारीकी से तक्षण किया गया है । इस मन्दिर के निकट दो अन्य शिव मन्दिर हैं जो दूसरे शिव मन्दिरो के समान ही है ।

मन्दिरो की शृ खला मे पाचवा मन्दिर विष्णु का है । विद्वानो की धारणा है कि यही देवालय किराडू की प्रारम्भिक कला का प्रतीक है । प्रधान ताक में विष्णु की मूर्ति विद्यमान है । डा भन्डारकर का विचार है कि यहाँ वराह, मनुष्य और सिंह के सम्मिलित रूप को अकित किया गया है । इस मूर्ति के नीचे ५ पक्तियो का एक लेख भी विद्यमान है ।

उक्त मन्दिर के सामने पहाडी पर महिषासुरमर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति है। कला की दृष्टि से तीन टांगो वाली यह त्रिपाद-मूर्ति बहुत महत्वपूर्ण है। कुछ विद्वान इस मूर्ति का साम्य अतिरिक्ताङ्ग भैरव की मूर्ति से करते हैं।

किराडू के इन देवालयो द्वारा रामायण, महाभारत व भागवत पुराणादि के विविध दृश्यो के अतिरिक्त शृंगार एव प्रेम-रस सम्बन्धी कतिपय दृश्य भी उपलब्ध है। इनके साथ-साथ परस्पर युद्ध करते हुए अनेक दृश्यो द्वारा तत्कालीन युद्धास्त्र विद्या सम्बन्धी प्रचुर सामग्री उपलब्ध है।

लगभग एक हजार वर्ष की धूप तथा वर्षा आघातो को सतत सहते हुए भी किराडू के ये ध्वसावशेष भारतीय मूर्ति और स्थापत्य कला की अनुपम थाती के रूप मे निर्जन स्थान मे विद्यमान कलाविज्ञो तथा सत्य शिव सुन्दर के उपासको को आकर्षित करने मे सदैव समर्थ रहेगे।

– मागीलाल चौपड़ा

सिवांची की ओसवाल पंचायत

सिवाची की ओसवाल पचायत सत्तर गावो के पूर्व सिवाना राज्य के ओसवाल समाज का सगठन है। यह कहना अत्यन्त कठिन है कि यह पचायत कब से चल रही है क्योंकि जिन सत्तर गावो का यह सामुहिक रूप है उनमे से अब केवल २८ गावो मे ओसवाल बस्ती रह गई है। बोलचाल की भाषा मे इसे सात बीसी सिवाणची कहते है जो सत्तर को 'बवणा कर' अर्थात दुगना कर बोली जाती है, जिसका कारण शायद सिवाणा के पूर्व राज्य के अन्य गांवो मे आबादी के विस्तार की कामना से हो या न्याति के महत्व को प्रकट करने की दृष्टि से हो।

सिवाणची पचायत पूर्णरूपेण 'फेडरल' अर्थात सघीय विधान पर आधारित है जो उस समय मे आज के सयुक्त राष्ट्र स घ की कल्पना को उस जमाने में दिखा रहा है। ऐसी कल्पना कीजिए कि एक बडा तम्बू लगा है। तम्बू को छोब अर्थात केन्द्रीय स्तम्भ के पास ही न्याति का कानू गा जिसे महामन्त्री कहा जा सकता है बैठता है व उसके पास बायी ओर चौधरीजी अध्यक्ष के रूप है, के बैठने का स्थान है व फिर सिवाना के दो प्रतिनिधि बैठते है सिवाना के पीछे सिवाना की जिलायत के ३५ गाव बैठते है। छोब से सिवाना के समकोणीय दाहिनी ओर कनाना के चार पच बैठते हैं जिनके पीछे कनाना की २७ गावो की जिलायत मे उपजिलायत को छोड, सीधे कनाना के अन्तर्गत के गाव बैठते हैं। कनाना प्रारम्भ मे ही सिवाना राज्य का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। कनाना के पास बालोतरा के दो पच बैठते है। बालोतरा के कोई जिलायत के गाँव नहीं है। सिवाना के बायो ओर क्रम मे तीसरा महत्वपूर्ण केन्द्र पचपदरा चार पचो से बैठता व उसके जिलायत के आठ गाव बैठते है व पास मे समदडी क्रम में पाचवें महत्व पर बैठती है। इस चौकोर के सामने बालोतरा के पास बीटूजा दो पचो मे व करमावास दो पंचो से बैठा करता है जिनके पीछे उनके जिलायत के गाव बैठते है।

पिछले पाच छ वर्ष से सभी सदस्य ग्रामो को बैठने का समान अधिकार देकर जिलायत के गावो को जोड यह चोकोर बडा कर दिया गया है जब सपूर्ण सभा कार्य करने बैठती है तो सघ सभा कहलाती है व न्याति को श्री सघ कहते हैं। गावो के प्रतिनिधि गावो द्वारा मनोनीत करके भेजे जाते हैं पर उनकी कार्यवाही सारे ग्राम की न्याति परपरा से अथवा पचायत की मानी जाती है। जितने सदस्य सम्मलित होने जाते हैं उनके सभी के अपने अलग अलग डेरे लगते हैं, जहा उनके साथ रसोईया, सेवक व नाई होता है। सभा मे गावो के अन्य सदस्य आते हैं तो अपने गाव के प्रतिनिधि के पीछे बैठते है व अपने डेरे मे ही ठहरते हैं। सभा प्रारम्भ होने पर सर्वप्रथम सिवाना के सदस्य आकर बैठते हैं व सभी गावो के प्रतिनिधियो का जै श्री केसरीया नाथ जी की ध्वनि से स्वागत करते हैं।

-सभा का सचालन चौधरी कानूगा की राय से करता है व हर गाव का प्रतिनिधि अपने गाव के या जिलायत का प्रमुख है तो जिलायत के गावो की ओर मे अपना मत रखता है। व्यक्तिगत मत का महत्व नही है व किसी गाव के अलग अलग सदस्यो का अलग बात कहना महत्वहीन व हल्का समझा जाता है। हर विषय पर सभा मे आने के पूर्व गाव आपस मे और अपने जिलायत के गावो के साथ विचार कर अपनी सम्मति बना कर ही जाते हैं ताकि उनकेजत्थे मे एकरूपता आ सके।

सघ सभा मे विचारार्थ विषयो पर बैठक के अलावा समय मे आपस म भी एक दूसरे डेरे पर जाकर विचार विनिमय होता रहता है, क्योंकि सिवानची के सभी निर्णय सर्वसम्मत ही से होते हैं, और जब तक सर्व-सम्मत निर्णय पर नही पहुँचा जाता, आपसी विचार विनिमय से सर्व सम्मति बनाने का प्रयत्न चलता रहता है।

सिवाणची इकट्ठी होने की भी निश्चित पद्धति है। पहले सिवाना गाव के पच आपस मे निर्णय लेते हैं, व फिर कानाना, पचपदरा व बालोतरा से राय मागते है व यह गाव भी अपने ग्राम की पचायतो की जिलायतो से राय करके स्वीकृति देते हैं तो मोहर्त दिखाकर स्थान तै कर सिवान्ची के आमत्रण के पत्र इसी क्रम मे जिन्हे सीधे पत्र जाने का रिवाज है उन्हे सीधे व जिन्हे अपने जिलायत समूह के प्रमुख से पत्र जाने का रिवाज है उनके मार्फत पत्र जाते है। आठ गावो को सीधे पत्र जाते हैं, जो अपने अपने अतर्गत आने वाले जिलायती गावो को पत्र भेजा करते हैं।

अधिकाश विवादो के निर्णय हेतु छोटी कमेटी बनाई जाती है कमेटी के बनते ही पचो को एक स्थान पर बद कर दिया जाता है तथा उन्हें किसी बाहरी व्यक्ति से बात नही करने दी जाती है। यदि शौचादि निवृति मे भी जावे तो सेवक यह ध्यान रखने-हेतु साथ रहता है कि उनका सपर्क बाहरी लोगो से होकर न्याय मे प्रभाव बाधा न डाले। निर्णय सुनाने के पश्चात ही वे स्वतत्र फिर सकते हैं।

खुले विचार के प्रश्नो पर सभी जिलायत वाले सघसभा मे आने के पूर्व जिलायत प्रमुख के डेरे पर विचार करके अपना रुख बनाकर आते हैं जिससे सघसभा मे सर्वसम्मत मत बनाने मे आसानी रहे।

पुराने समय मे जो विवाद पचायत के सम्मुख विचारार्थ आते थे उनमे "सवेरी" के झगडे अर्थात सबध तय होने के पश्चात विवाह न करने के विवाद "रतन व्यवहार" के मामले जिनमे उन न्यातियो मे शादी करना जिनसे शादी का व्यवहार नही है, व भाण व्यवहार के विवाद जिनमे खानपान सबधी शुद्धता व व्यवहार के मामले होते थ। न्याती के सम्मान मे धक्का लगाने वाले किसी व्यक्ति विशेप के कार्य भी विचार का विषय बनते थे। न्याति भोजो हेतु स्वीकृति प्रदान करने के मामलो मे व्यक्ति की पात्रता, व्यवहार प्रतिष्ठा, समाजसेवा, सामाजिक स्तर इत्यादि को ध्यान मे रखा जाता था। दापत्य जीवन मे अत्यधिक क्रुर व्यवहार भी, जो समाज के सपूर्ण वातावरण को प्रभावित करें विचार के विषय बन जाते थे।

समय के परिवर्तन के साथ अब यह सभी विषय गोण हो गए है, अब रीति रिवाजो मे ऐसे परिवर्तन जिनसे फिजूलखर्ची घटे, असुविधा कम हो, समय की बचत हो, साधारण स्थिति के व्यक्ति पैसे वालो के देखादेखी न पिसे, की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है।

बदलते परिवेशो मे आज चिंतन का दायरा व्यक्ति वादी होता जा रहा है, अत यह सस्थाऐ किसी प्रकार व किसी सीमा तक समाज के हित चिंतन मे लगी रह सकेगी, व अपने अस्तित्व को बनाए रख सकेगी यह भविष्य ही बताएगा।

— रामानंद बनजारा

बनजारा

रेल के भारत मे आगमन के पूर्व परिवहन का आधार वनजारा था। वनजारा शब्द 'वणज' अर्थात व्यापार से वना है। जब वैलो को लदी कतार चलती है तो आगे चलने वाले वैल के गले मे एक घंटी होती है जिसकी आवाज गूंजती रहती है। यह आवाज वणजार कहलाती है और उस कतार का मालिक वणजारा नाम से पुकारा जाता है। पुराने जमाने मे यह धंधा किसी कौम के साथ वंधा नही था वरन अनेक जातियों के व्यक्ति यह धंधा करते थे और वे वणजारे कहलाते थे। इनमे लाखी, मारु, लवाना (मुसलमान), वामणीया, चारण वणजारा, जाट वणजारा, देसी, वालदिया भाट, वागोरा इत्यादि अनेक जातियें या भेद थे। पचपदरा के क्षेत्र मे अधिकाश देशी व वामणीया भाट या वालदिये ही पिछले वर्षो आते रहे है, जबकि लगभग १०० वर्ष पूर्व उपरोक्त सभी प्रकार के वणजारे वहा नमक भरने आते थे।

वणजारा एक घुमक्कड जाति के रूप मे रही है व इनका पहले कोई निश्चित निवास स्थान नहीं था। कहीं कही इन्होंने देवी देवताओ के मदिर वना कर उनके साथ अपने एकत्र होने के स्थान पट्टाशुद्ध करवा रखे थे पर यह स्थान अधिकाश उनके न्याति एकत्रिकरण अथवा व्याह शादी हेतु एकत्र होने के स्थान थे, स्थायी निवास यहा नही होता था।

देसी वनजारे जिन्हे मारू भी कहते हैं, चार शाखाओ मे विभक्त हैं जो पट्टीया कहलाती हैं जैसे सिवाणची, गोडवाडी, मारवाडी व जोधपुरीया। मारू वनजार अपने आपको राजपूतो का 'नखभाई' वताते है तथा इनकी सोलह प्रमुख गोत्रें हैं जैसे चामण्डीया, राठौड, भाटी, वाघल, मूण, परिहार, चौहान कावा, देवडा, पवार, वामण भोलावत, गेलडा, सोलकी, जावडा इत्यादि।

यह वणजारे शक्ति व देवी के पुजारी हैं व दशहरे मे इनके भैंसा चढाने का रिवाज था। हर गौत्र के अपने अपने देवी के मदिर अलग अलग स्थानो पर वने हुए हैं। वणजारे सदैव शस्त्रो से सुसज्ज रहा करते थे व प्रमुख शस्त्रो मे नीमड अर्थात ठोस डाग या गेडी अर्थात लाठी होती है जो तारो के वद वाध कर व पूरी तारो से जड कर और मजवूत करदी जाती है। ढाल व तलवार हर वनजारा अपने पास रखता है। वन्दूके भी साथ रहती है। गले मे एक चमडे का वटुआ एक तरफ लटकता है तो वडी सी कटारी दूसरी तरफ। छोटी एक छोटा वार करने का मोटा डडा होता है। कातर जाल की छडी का हलका गरम कर वनाया जाता है जो शत्रु के पैरो मे उलझा कर उसे गिराने मे काम आता है। फरी लाठी के किनारे चौडा वार करके काटने वाला शस्त्र होता है। धारिया लाठी क आगे टेढा धारदार शस्त्र लगाया हुआ होता है।

वणजारा अपनी मल्कियत ठोस जेवर के रूप मे रखना पसद करता है। सोना व चादी के हैसियत अनुसार गहने वनाए जाते है जो औरत व आदमी दोनो काफी शौक से पहनते हैं। वणजारो के ठोस गहने का,

रिवाज भी धंधे से सम्बन्ध रखता है। पुराने समय में जब व्यापार हेतु यह लोग जगह जगह घूमते थे तो हर राज्य में अलग अलग सिक्के चलते थे व सिक्को का वजन भी ज्यादा होता था इसलिए सोने के रूप में कम वजन खींचना पडे व मौका आने पर वही गहने व्यापार में भी काम आ जाय तथा शरीर पर पहने गहने की रक्षा भी आसानी से हो, इसलिए गहना इनके लिए अपने धन के रक्षण का सबसे आसान तरीका था।

प्रमुख पुरुषो के गहनो में सांकलीयो, मुरकीयो, गोखरू मुरकीया, गले में सोने के फूल (देवताओं के) सोने का काठला, डोरा, हाथो में सोने की माठीयो या चादी के कडा लिए, चादी का भारी कदोरा, पाँव में लगर व वेडी इत्यादि प्रमुख रूप से पहने जाते है। युवक चादी का कांगसिया साथ रखते है। अधिकाश वनजारे तेज लाल रंग का बडा भारी साफा या गुलावी छाटो वाला सफेद साफा जिसे मोलरा साफा कहेते है गोल वाधते है व उस पर एक रूमाल वधा रहता है, शरीर पर अगरखी व मोटी धोती, कमर वधी हुई होती है। कमर में डोरे की वुनी रोकड रखने के लिए नोली वाधते है।

स्त्रिया कानो में चादी के झूमर, डोरना, झेले, वोरीया, नाक में सोने की वाली, गले में तेडिया, तमणीया कठी, वारना, हाथो में सादा या चांदी की पतीयो वाला हाथी दात का चूडा व चूडिया, कातरीया, मादलीया, कांकण, चमक चूडी, कमर में चादी का भारी कदोरा, व पैरों में तोडा कडीयो इत्यादि पहना करती है। स्त्रियों के शादी के समय जो दुपटा वनता था उसमे चादी के तार, चादी की टिकलीयो, इत्यादि लगाई जाती थी। स्त्रियो के पाच वेष में गाघरा, ओरना, काचलो, अगरखी व पगरखी गिने जाते है।

शादी के समय दहेज का विशेष रिवाज नहीं है, लडके वाला लडकी वाले को लडकी के जरी के दो वेष व चौरासी रुपये रिवाज के देता है, पहली जीम लडकी वाले की व दूसरे पचो की जीम दोनो की शामलाती होती है। पहले शादियो में शराव का वहूत रिवाज था। शादीयो हेतु यह पचपदरा आया करते थे। पचपदरा में वनजारो की ताली सावन भादो में विशेष छटा रखती थी जव वनजारो के विभिन्न 'टाडे' अपने 'नायक' के साथ आकर डेरे डालते थे। प्रमुख नायक नगारा निशाने के डंके से अपने महत्व का दर्शाते थे।

जब भी कोई वनजारा रिश्तेदार स्त्रियों आपस में मिलती है तो हर्ष के साथ रोते व गाते मिश्रित भाषा में कहती है "तू मामा री हू भुआ री कद मलसो।" वास्तव में घुम्मकड व्यवसाय के कारण रिश्तेदार स्त्रिया भी पन्द्रह वीस वर्ष में मिल पाती थी अत यह मिलन हृदय स्पर्शी होता था।

वनजारो का मुख्य कार्य परिवहन था व परिवहन का मुख्य साधन बैल, जिसे 'पोट या वालद' कहते हैं, था। पर इसके अतिरिक्त परिवहन में ऊट, गाडी (गाडा) व गधा अर्थात् रासभ भी काम में लेते थे। इन्हीं साधनो इनका सारा घर का सामान भी चलता था। स्त्रियो के प्रसव भी मार्ग में ही हुआ करते थे, पर ऐसे अवसर पर किसी पानी के तालाव का स्थान देख कर वे रुकजाया करते थे।

वनजारे सभी प्रकार का व्यापार किया करते थे पर उस व्यापार का इकतरफा मुख्य कारोवार नमक का होता था। पुरानी कविताओं में नमक का लाने वाला वनजारा ही गिना गया है, मीरा का गोविंद नमक के वदले ही खरीदा गया था। अत जहा जहा नमक के स्रोत हैं, वनजारो का विशेष आकर्षण व सवध रहा हैं व पचपदरा भी ऐसे प्रमुख वनजारा केन्द्रो में से एक है।

वनजारे की रकम के सम्वन्ध में वडी महत्वपूर्ण पैठ है। कहा जाता है कि वनजारे की रकम सौ-साल भी नही डूवती व उसका वकाया उसके वेटे-पौते चुकाते है व रिश्तेदार भी चुकाते हैं। इस पैठ का भी कारण स्वाभाविक है। यदि ऐसे पेठ न होती तो वनजारो को, जो देश विदेश में स्थाई निवास के विना घूमते हैं कोई रुपया उधार नही देता व व्यापार उधार की व्यवस्था के विना चल नही सकता। अत इस हेतु सपूर्ण जाति की अत्यन्त गहरी पैठ होना जरूरी है।

वनजारो मे जाति सगठन भी कडा है व झगडे भी भयकर होते है। जव भी इनके किसी एक गुट का दूसरे गुट से झगडा होता है तो प्रत्येक की पूरी जाति अपने व्यक्ति के सहयोग हेतु इकट्ठी हो जाती है। झगडे मे यह लोग माहिर होते हैं। लाठी से पत्थरो को भी नजदीक नही आने देते। हर वनजारा युवक 'धामो' लगवाना अत्यन्त गौरव की वात समझते हैं। धामा युवक के कलाई पर जलते कपडे से लगाये गए चिन्ह होते हैं। जो उन युवक के लगाये जाते हैं जो स्वय वेल पर रखी जाने वाली 'गूण' उठा सके, लाठी चलाने मे होश्यार हो, अधिक से अधिक लोगों से अकेला लडने मे निपुण हो, गायें चराने मे भी होश्यार हो व चिन्ह लगाते समय उसकी आखो से आंसू न आवे। लडाई मे स्त्री-पुरुष दोनो भाग लेते हैं, पुरुप लाठी चलाता है, ढाल-तलवार काम में लेता है, स्त्री पत्थर फेंकती हैं।

वनजारो के झगडे अदालत मे नही जाते आपस मे तय होते हैं। न्याति के आगे लकडी डालने का मतलव न्याति से फैसला करवाने की सहमति होना है। यदि कभी झगडा चल रहा हो, और कोई तीसरा व्यक्ति वीच में साफा खोल कर फेंक देता है तो झगडा रोक दिया जाता है। पचायत गोलाकार वैठती है व सभी लोग पैरो पर वैठा करते हैं। एक एक व्यक्ति अपनी वात उदाहरणो के साथ कहता है। "एक टप्पो म्हारी भी सुणये रे सगा।" कहते हुए अत्यन्त रोचक ढग से पचायत की वात-चीत चलती है।

वनजारो में कभी कभी गालियो के 'वैर' चलते है और उस स्थिति मे जहा भी वह जातिया मिलती हैं लडने लग जाती हैं। ऐसे झगडे पीढीयो तक चलते रहते हैं।

वनजारो का मुख्य धन उनके वैल व सोना-चादी होता है। अपना अतिरिक्त धन पचपदरा में आने वाले वनजारे यहाँ के साहूकारो के पास रखते थे। साहूकार इस पर रखवाली अर्थाथ सम्भालने का भाड़ा लेते थे। पर अनेक वार वे जगलो मे भी धन दवा कर ऊपर कब्र जैसा पाथर लगा देते थे। जिससे उन्हें इस धन की निशानी रहे व दूसरा उसे कब्र समझ कर छूवे नही। ऐसा धन अनेक वार विमारियो या अकालो में बूढो वडो के अचानक मर जाने पर ढूढना भी मुश्किल हो जाता है। 'छपना व छिनवा' के भयकर अकालो मे इनका पशुधन भी वहुत भारी मात्रा मे मर गया था जो वनजारो की समृद्धि पर बहुत वडा आघात सिद्ध हुआ।

आज रेल मोटर व अन्य परिवहन के विकास के साथ ही वनजारो का कारोवार वद सा हो गया व आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछडी अवस्था मे पहुच गए है। न तो इनके पास स्वय की भूमि है जिससे खेती कर सकें न स्वय का कोई गाव व स्थान है जहा समुह मे रह सकें। व्यापार हेतु न तो इनके पास शिक्षा है न धन अर्थात् सव प्रकार से उपक्षित व दयनीय स्थिति मे आज वनजारा जीवन विता रहा है। अव यह लोग पाली जिले मे वाडमेर जिले के पचपदरा क्षेत्र मे, जोधपुर में व जोधपुर के आसपास वस गये हैं। इनके लिए पचपदरा में शिक्षा हेतु सरकार ने एक वनजारा छात्रावास भी शुरु किया है पर विखरे होने से उसमे भी विशेष छात्र नही आते। आर्थिक स्थिति भी वच्चों को पढाने भेजने में वाधा है। पुरुप व स्त्रिया मजदूरी पर जाती है तो वच्चो को मवेशी चराने जाना पडता है। आज इस ऐतिहासिक परिवहन माध्यम के उपेक्षित लोगो का पुनर्वास समय की आवश्यकता है।

बनजारा पुरुष

वृद्ध पुरुष

बाड़मेर के दर्शनीय स्थल

पचपदरा का रेलवे स्टेशन
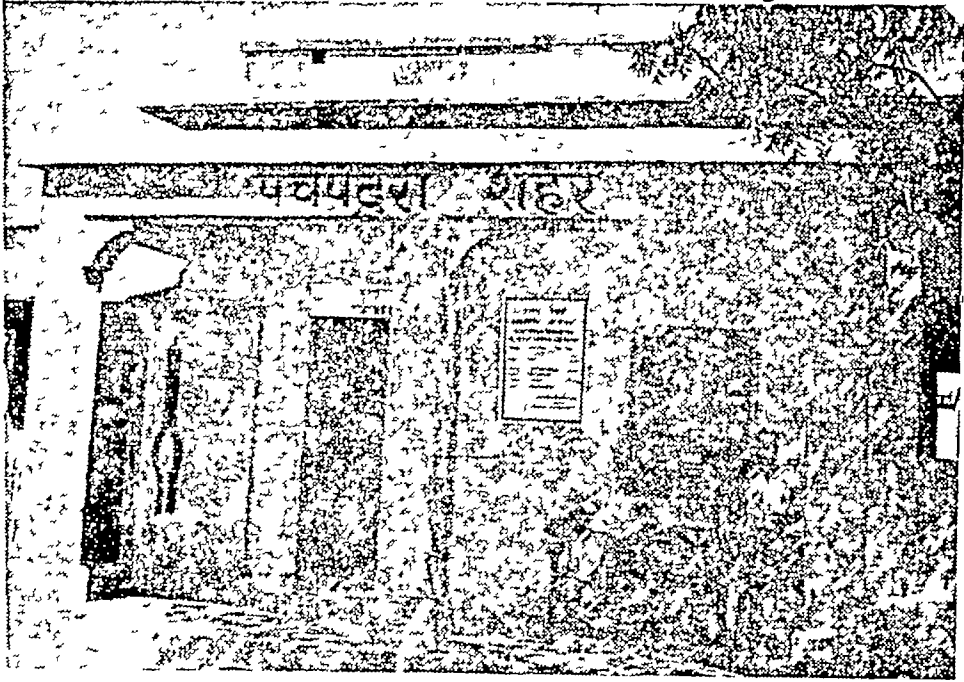
पचपदरा की जलदाय टंकी
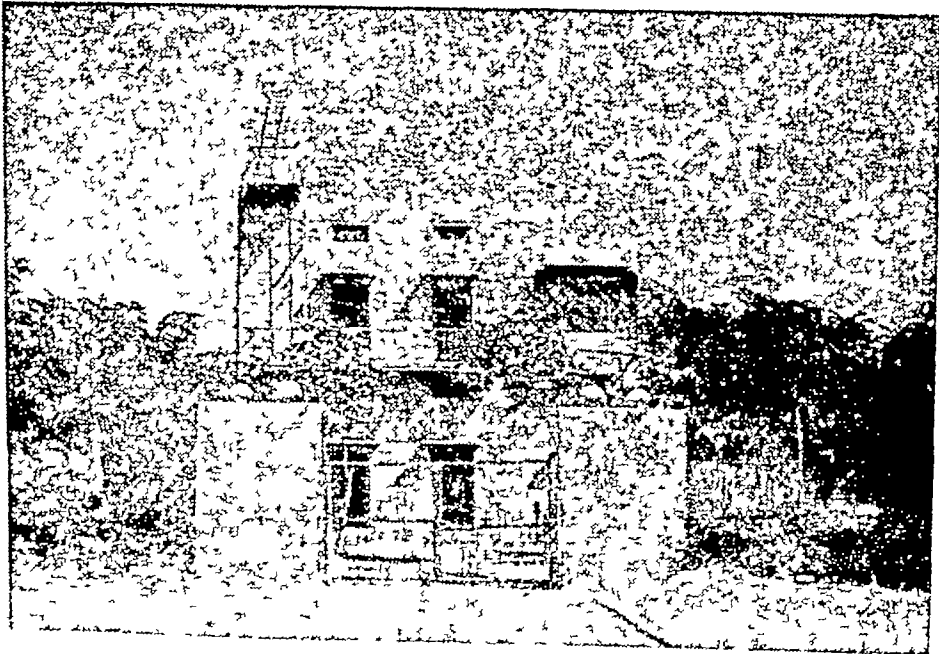
श्वे. जैन तेरापथी सभा भवन

सेठजी की हवेली का मुख्य द्वार
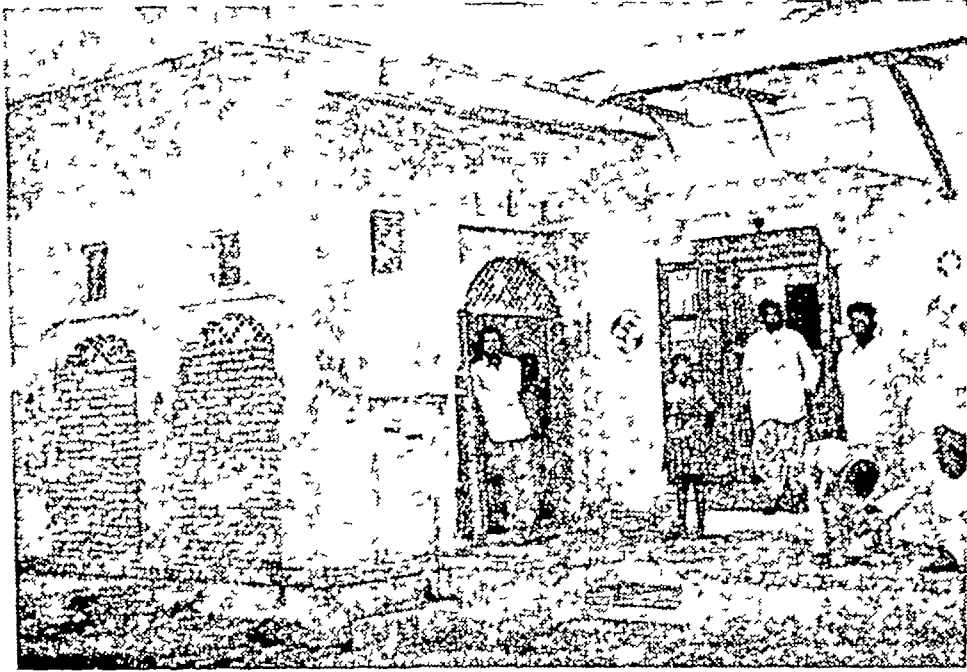
सेठजी की मर्दानी हवेली
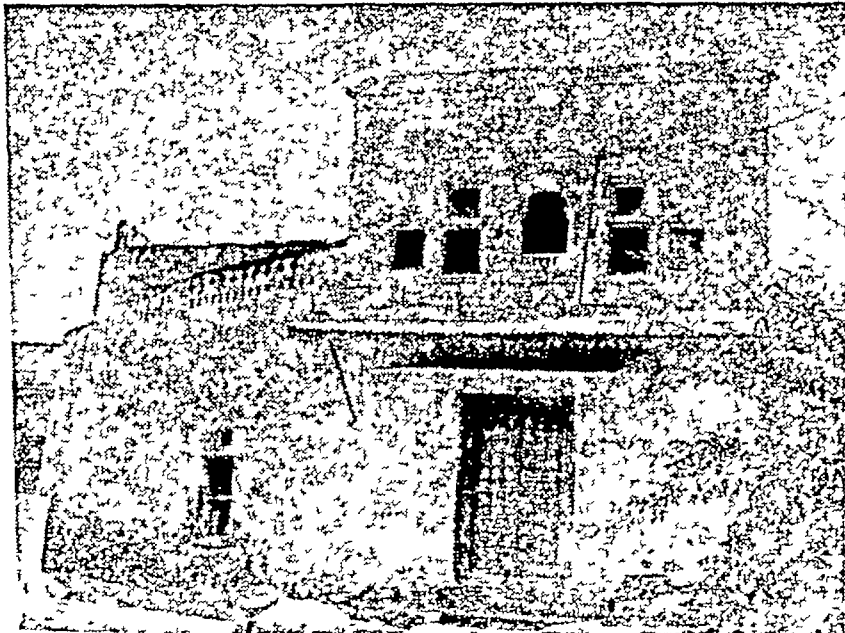
सेठजी की जनानी हवेली

हवेली की पिछली पोल
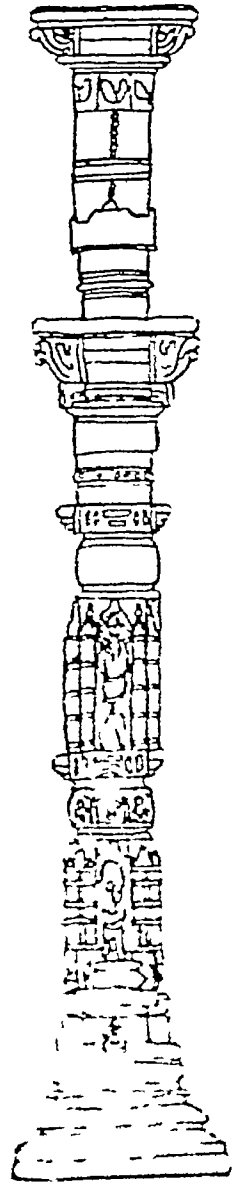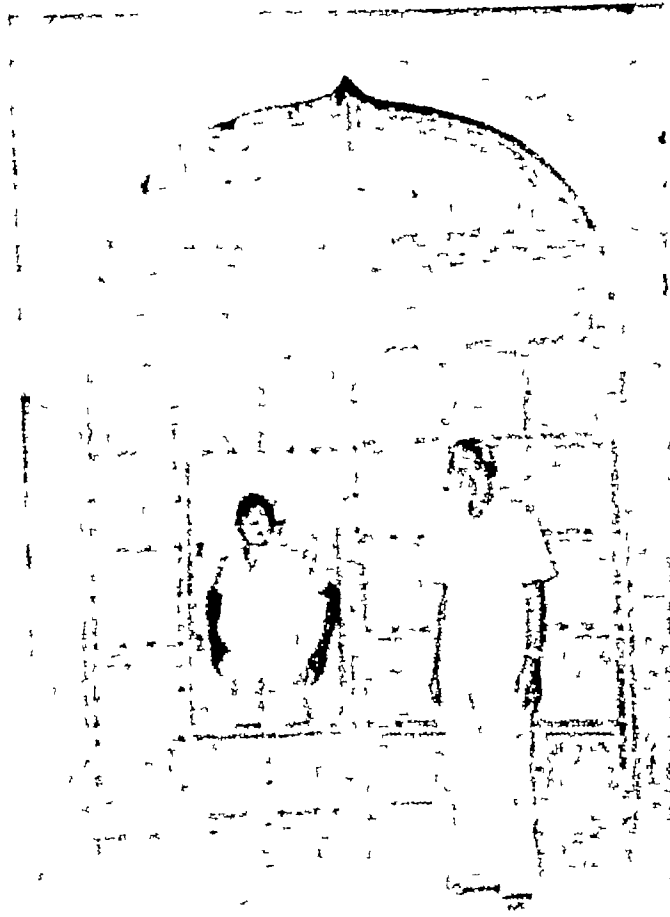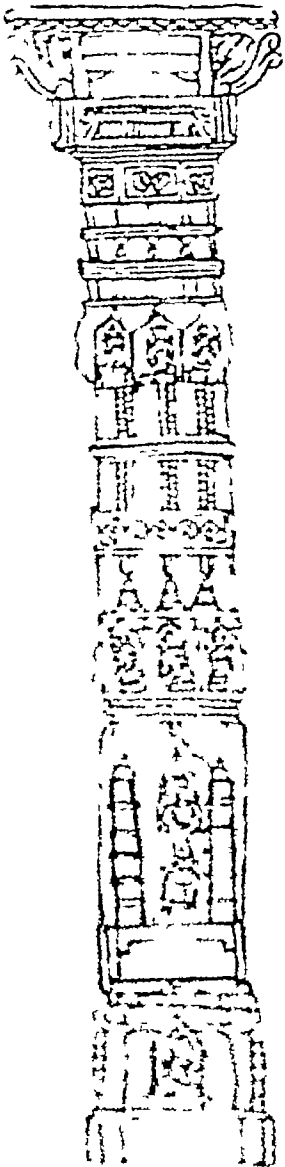
बनजारा – महिलाएँ

नवविवाहित

वृद्ध

दो बनजारा युवतियाँ
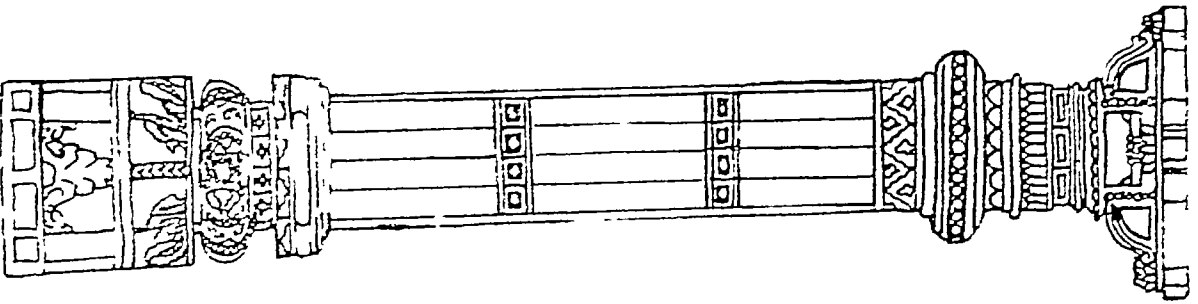
तिलवाड़ा में लोकदेवता मल्लिनाथजी का थान
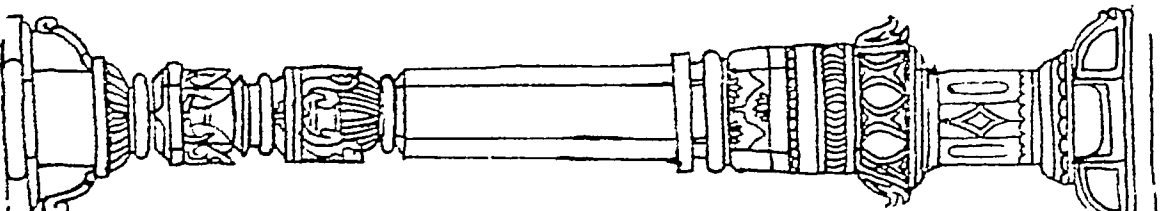
– डूंगरमल बागरेचा

जैन तेरापंथ इतिहास में पचपदरा

१ इतिहास की खोज से ऐसा ज्ञात हुआ है कि पचपदरा मे 'तेरापथ सघ' के प्रचार-प्रसार का कार्य वि स. १८२० से ही प्रारम्भ हो गया था। उस समय यहा पर करीब ६०० घर ओसवालो के थे। वि स १८२० से १८२६ तक यहां श्री शोभाचन्दजी भण्डारी व वि सं १८५६ मे चतुर्भुजजी भण्डारी हकुमत (तहसील) मे हाकिम बनकर पधारे। उन्ही की प्रेरणा से यहा पर तत्कालीन आचार्य श्री भिक्षु द्वारा नव निर्मित तेरापथ स घ की स्थापना का कार्य प्रारम्भ हो गया था।

२ यहा की प्रथम दीक्षा वि स १८४४ मे साध्वी श्री हीराजी की आचार्य श्री भिक्षु स्वामी द्वारा हुई। अल्प समय मे ही यहा पर दीक्षा का होना तेराप थ स घ के प्रति बढते हुए श्रद्धा का द्योतक था।

३ वि स १८६७ मे द्वितीय आचार्य श्री भारमलजी स्वामी का इस पुनीत धरती पर पधारने का गौरव प्राप्त हुआ था।

४ वि स १९२१ मे चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी का पदार्पण हुआ था। उसी चिन्तन के दौरान आचार्य श्री के सान्निध्य में तेराप थ सघ का प्रथम मर्यादा महोत्सव मनाने का विचार हुआ था पर दुर्भाग्य वश उस समय यहा के प्रतिष्ठित श्रावक श्री मगजी चौपडा का तत्कालीन स्वर्गवास हो जाने के कारण इस सौभाग्य से वंचित रह कर लघु उत्सव मनाया गया। तत्पश्चात् बालोतरा वालो के विशेष आग्रह से मर्यादा महोत्सव का श्री गणेश वहा से हुआ।

५ तेरापथ सघ के छट्ठे आचार्य श्री माणकगणी स्वामी ने अग्रगण्य मुनि अवस्था मे वि.स १९३२ तथा १९४१ में क्रमश दो चतुर्मास यहा पर किए थे।

६. सप्तम् आचार्य श्री डालगणी स्वामी से अग्रगण्य मुनि अवस्था में वि स १९५२ में यहा चतुर्मास किया था।

७ पचपदरा की पावन धरा को करीब १५० वर्षो से लगातार चरित्रात्माओ के पावन चतुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हो रहा हैं जो आचार्यो के शुभ दृष्टि की ही देन हैं।

८ अष्टमाचार्या श्री कालूगणी स्वामी ने यहां पर वि स १९७२ व १९९० में क्रमश दो बार पधारने का अवसर प्रदान किया।

९ वि स १९८९ मे यहा पर अद्वितीय घटना घटित हुई। उस समय यहा पर मुनि श्री रिखीरामजी व लिछीरामजी का चतुर्मास था। दुर्भाग्यवश उनके विचारो मे सघ व सघपति के प्रति श्रद्धा मे कमजोरी के लक्षण प्रतीत होने लगे-उन्होने विपरीत प्रचार-प्रसार करना शुरु कर दिया। उनके व्याख्यानो को सुनकर 'प्रज्ञा चक्षु' श्री सहजरामजी चोपडा को उनकी श्रद्धा पर सदेह होने लगा तत्पश्चात कुछ श्रावक आचार्य श्री कालूगणी के दर्शन करने गए और सारी वस्तु स्थिति से अवगत कराया। उस समय के दौरान साधुओ ने स्थानीय 'कुछ

कतिपय' श्रावको को अपने वहकावे मे ले लिया। इस सारी स्थिति को दृष्टि मे रखते हुए आचार्य श्री के आदेशानुसार समदडी के श्रावक श्री बिरदोजी के विशेष सहयाग से रिखीरामजी व लिच्छीरामजी को सघ मे पृथक कर दिया। कुछ श्रावक उन साधुओ के वहकावे में आने के कारण यहा की स्थिति तनाव पूर्ण जरुर बन गई थी पर वि स १९९० में आचार्य श्री कालूगणी के यहां पधारने से सारा वातावरण ठीक हो गया। आचार्य श्री कालूगणी के ये शब्द जो उन्होने स्थानीय श्रावक श्री खूबचन्द चौपडा को सम्बोधित करते हुए फरमाए थे वे आज भी ताजे है 'खूबजी थारे होतो थको ऐसो वातावरण हो रह्योयो है और सघ रे वास्ते चोको कोनी, तूं भी जात रो चौपडो और मैं भी जात रो चौपडो हू' यह शब्द खूबचन्दजी को तीर की तरह लगे और उन्होने श्रद्धा से नतमस्तक होकर वातावरण को शान्त करने की सारी जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली। कुछ ही दिनो में वातावरण स्वच्छ हो गया

१० वि सं २०१६, २०२१ व २०२३ मे राष्ट्र सन्त, युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी के पावन चरणो से पचपदरा की प्यासी धरती धन्य धन्य हो उठी। आचार्य श्री की बलवत्ती प्रेरणा से इन क्षेत्र मे रूढीवादिता की कमी हुई। बच्चो ने तत्व ज्ञान व चरित्र निर्माण के सस्कारो का अभ्युदय व साहित्यिक जागृति भी आपकी अनोखी देन है।

११ वि स २०२० में आचार्य श्री ने यहा के श्रावको की परीक्षा ली। अन्ततोगत्वा परीक्षा में सफल होने का सोभाग्य प्राप्त हो गया, पर था वह कसोटी का समय। आचार्य प्रवर ने उस वर्ष पचपदरा को कोई चतुर्मास नहीं फरमाया बस इसी सन्देह के साथ सभी श्रावको में खलबली मच गई। दौड धूप शुरु हुई। यहा के करीब १५० वर्षो के लगातार चतुर्मास के इतिहास में यह पहली घटना थी। यहा से श्रावको का एक शिष्ट मण्डल आचार्य श्री के श्री चरणो में अतीत के इतिहास के साथ उपस्थित हुआ। श्रद्धा व विनय से आचार्य श्री ने गद् गद् होकर इतिहास को पुनर्जीवित रखने के लिए यहा के श्रावको की आकाक्षाए पूरी की और साध्वी श्री नगीनाजी का चतुर्मास विशेष रूप से प्रदान करने की घोषणा की। इस उपकार को श्रावक आज भी बहुत महत्व देते हैं।

१२ वि स २०२५ मे मुनि श्री अगरचन्दजी स्वामी के साथ मुनि श्री रेवतकुमारजी का चातुर्मास हुआ। मुनि रेवतकुमारजी तप मे धनी थे। उन्होने इस तपोभूमि पर आछ के आगार मे एक वर्ष की एक साथ कठोर तपस्या आरम्भ की। उनका मनोबल बहुत ऊचा था। तपस्या के साथ-२ शास्त्रवाचन, व्याख्यान, स्वय के लिए आछ लाना, ध्यान, मौन व स्वाध्याय आदि उल्लेखनीय प्रवृतिया चलती थी,। बाहर से दर्शनार्थ श्रद्धालुओ का ताता लग गया था। पर सयोग की बात थी मुनि श्री ४ मास २६ दिन को तपस्या ही पूर्ण कर दिव्य लोक पधार गए। यहा की धरती धन्य धन्य हो गई। आज भी उनकी तपो गाथा यहा के कण कण में गूज रही है। इस ऐतिहासिक प्रसग पर आचार्य श्री तुलसी ने फरमाया—

"पचपदरे भारी तप्यो, मुनि रेवत कुमार"
"भिक्षु शासन में खप्यो, कर गयो बेडा पार"

१३ वि स २०३१ में मुनि श्री धनराजजी स्वामी (सिरसा) के चतुर्मास में इस क्षेत्र को आध्यात्मिक जागृति की नई देन प्राप्त हुई। बच्चो मे धार्मिक सस्कार तत्वज्ञान के प्रति अभिरुचि नैतिक जागरण व रचनात्मक प्रवृतियां पैदा करने की एक सुन्दर टकशाला स्थापित की गई। परिणामस्वरूप वर्तमान में निरन्तर प्रगति की ओर बढने वाली श्री वर्द्धमान ज्ञानशाला सैकडो बच्चो में धार्मिक सस्कार पैदा कर भावी पीढी की निर्माता बन रही है। इस क्षेत्र का यह अनुपम उपहार आचार्य श्री की कल्पना का साक्षातकार है।

–सुल्तानमल जैन,

श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ जैन तीर्थ मेवानगर

श्री नाकोडा पार्श्वनाथ जैन तीर्थ वाडमेर जिले मे ही नही अपितु सपूर्ण मारवाड के प्रमुख जैन तीर्थो मे से एक है। यहा के मदिर पाच सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। यहा की मूर्तियो मे नाकोडा पार्श्वनाथ की मूर्ति १० वी शताब्दी के आस-पास की है इसके अतिरिक्त 1060 की पार्श्वनाथ पचतीर्थी, 12 वी सदी के नेमीनाथ भगवान की खडी मूर्तिया और 1376 की जिनचन्द्रसूरि की गुरुमूर्तिया मे प्राचीनतम गुरुमूर्ति आदि प्राचीन मूर्तिया है। अत यहा के मदिर और मूर्तियाँ, प्राचीन हैं।

यहा के शिलालेखो और मूर्तिलिखो के आधार से राठोडो और राउलो की वशावली, वीरमपुर की स्थापना महेवा और वीरमपुर का सबध, शखवाल गोत्र और लिगागोत्र आदि से सवधित इतिहास से कई नवीन ज्ञातव्य प्राप्त होते हैं और इनके आधार से इतिहास की कई विखरी हुई कडियाँ जोडी जा सकती है। स्थापत्य कला की दृष्टि मे यहा आदिनाथ मंदिर और शातिनाथ मदिर के शिखर, विविध नृत्यमुद्राओ से युक्त देव-पुत्तलिकाये, शातिनाथ मदिर का तोरण, लक्ष्मीदेवी की उत्कीर्ण मूर्ति, हँसपक्ति आदि दर्शनीय हैं और मूर्ति-कला की दृष्टि से नाकोडा पार्श्वनाथ, 1504 की पार्श्वनाथ प्रतिमा 1518 की महावीर प्रतिमा, चारो खडी मूर्तियाँ और नाकोडा भैरव आदि की परम रमणीय, नयनाभिराम और दर्शनीय मूर्तिया यहा विद्यमान है।

"नाकोडा तीर्थ" जोधपुर से वाडमेर रेल्वे के मध्य में वालोतरा स्टेशन से करीव 10 किलोमीटर की दूरी पर है। जसोल से 5 किलोमीटर के लगभग है।

पर्वत शृखलाओ के मध्य मे स्थित यह तीर्थ सुरम्य और शात वातावरण मे परिपूर्ण है।

तीर्थस्थ मदिरो के चारो तरफ पुराने खण्डहरो के अवशेष विखरे हुए पडे हैं। महेवा गाव यहा से एक किलोमीटर की दूरी पर है, जहा राजपूतो और भीलो आदि के लगभग 150 घर एव ढाणिया है।

मारवाड रा परगना री विगत, मुहता नैणसी री ख्यात तथा जोधपुर के इतिहास आदि ग्रथो के अनुसार राव आसथान ने गोहिली मे खेड छीनकर उस पर अपना अधिकार कर लिया। राव मालाजी मल्लिनाथजी / ने कान्हडदे से छीनकर महेवा पर अपना अधिकार कर लिया था। राव मालाजी अधिकृत प्रदेश मालानी परगना कहलाता है। समय समय पर महेवा पर मुगलो के आक्रमण और चचेरे भाईयो मे गृह युद्ध होता रहता था। संभव है इन्ही कारणो मे वि स 1574 के आसपास महेवा पर खेडवालो का प्रभाव रहा हो और उन्ही दिनो छाजहड गोत्रीय श्रेष्ठी कुतपाल ने महेवा नगर के क्षेत्र मे भगवान् पार्श्वनाथ की विशालमूर्ति निर्माण कराकर उसमे स्थापित की हो।

महेवा पर मुगलो के आक्रमण और गृहयुद्धो के कारण महेवा उजडने लगा। इस उथल - पुथल के समय निकट मे ही नव निर्मित वीरमपुर की प्रचुर उन्नति और सुरक्षा देखकर महेवा के श्रेष्ठिगण वीरमपुर मे रहने

लग गये और मूर्ति को महेवा से लाकर वीरमपुर मे स्थापित कर दी । यह मूर्ति आज पचतीर्थी मदिर में विराजमान है और सम्प्रतिकालीन मूर्ति के नाम से प्रसिद्ध है ।

महावीर एव पार्श्वनाथ मदिर –

इन दोनो मदिरो के सबध मे, विद्यमान नाकोडा पार्श्वनाथ के मदिर में रगमडप, नौ चौकी की दीवारो पर तीन तथा दोनो गर्भगृहो की दीवारो पर दो, इस प्रकार पाच शिलापट्ट प्राप्त हैं। ये शिलालेख क्रमश वि स 1667, 1678, 1681, 1682 और 1864 के हैं ।

मुगलो के आक्रमण से मदिर नष्ट होने पर अथवा मूर्तियों की रक्षा हेतु या किसी अन्य कारणो को लेकर वि म 1667 मे वीरमपुर श्रीसघ ने दो भूमिगृह बनाकर इन दोनो मूर्तियो को पृथक - पृथक रूप में गर्भगृहो में विराजमान कर दिया । स 1864 के लेख मे इन्हीं गर्भगृहो का पातालचैत्य के रूप में उल्लेख हुआ हैं ।

महावीर मदिर बृहद्गच्छीय था और पार्श्वनाथ मदिर पल्लिवाल गच्छ था । बृहद्गच्छ का 16 वी शती के पश्चात् कोई लेख प्राप्त नही होता है अतः सभव है कि महावीर मदिर की व्यवस्था भी पल्लिवालगच्छ करने लगा हो । यही कारण है कि दोनो गर्भगृहो का निर्माण तथा उनकी प्रतिष्ठा पल्लिवाल गच्छ के ही सघ और आचार्यों द्वारा की गई है ।

11 वर्ष पश्चात् अर्थात 1678 में पल्लिवाल गच्छ ने महावीर मदिर में चौकी बनवाई जो कि आज भी मदिर के प्रवेश द्वार पर विद्यमान है उसके तीन वर्ष बाद अर्थात 1681 में वीरमपुर के ही पल्लिवाल गच्छीय श्रीसघ ने पार्श्वना चैत्य में तीन झरोखो सहित सु दर निर्गम चौकी बनवाई । 1682 में इसी गच्छ के श्रीसघ ने पार्श्वनाथ चैत्य नालिमडप बनवाया जो आज भी जीने के ऊपर विद्यमान है ।

वि० स० १५१८ से लेकर १६८२ तक पल्लिवाल गच्छ के उक्त लेख प्राप्त होते हैं उसके पश्चात कोई लेख प्राप्त नही होता है । स भव है कि १८वी शती के प्रथम चरण मे ही इस वीरमपुर से पल्लिवाल गच्छ वाले यहा से चले गये हो ।

वि० स० १८६४ मे खरतरगच्छीय श्रीजितहर्षसूरि के उपदेश से वीरमपुर के समस्त श्रीसघ ने इन दोनो पाताल-चैत्यो को नवीन सा बनाकर, जीर्णोद्धार करवाकर इन मूर्तियो को पुन स्थापित किया ।

वि० स० २०१६ मे पचतीर्थी के म दिर बनाकर इन दोनो मूर्तियो की यहां स्थापनाकी गई जो आज भी विद्यमान है और सम्पतिकालीन मानी जाती है । ये दोनो महावीर और पार्श्वनाथ की पीत और श्वेतवर्णी प्रतिमायें एक समान विशालकाय, कलापूर्ण अतीव आकर्षक, भव्य, मनोरम और दर्शनीय है तथा एक ही कलाकार की ही सजीव रचना प्रतीत होता है ।

३. विमलनाथ मंदिर :

तपागच्छीय लिंगागोत्रीय सा० चम्पा द्वारा निर्मापित विमलनाथ मंदिर इस नाम से आज प्रसिद्ध नही है। इस मंदिर से सम्बन्धित छह शिलालेख आदिनाथ मंदिर ने रगमण्डपादि की दीवारो पर लगे हुए हैं और विमलनाथ की मूर्ति खण्डित हो जाने के कारण इस मूर्ति का परिकर आदिनाथ मदिर के मूल सभामडप मे विद्यमान हैं, जिसमे विमलनाथ के स्थान पर वि० सं० १६५१ मे प्रतिष्ठित अजितनाथ की मूर्ति स्थापित है । इससे यह अनुमान अधिक पुष्ट है कि आदिनाथ का मंदिर प्राचीन विमलनाथ का मदिर था और विमलनाथ की मूर्ति खण्डित हो जाने पर उस मूर्ति को मूलनयाक के स्थान से हटा दी गई तथा मूलनायक के स्थान पर आदिनाथ की मूर्ति विराजमान कर दी गई अब वही विमलनाथ का मंदिर आज आदिनाथ का मदिर कहलाता है ।

१. नाकोडा पार्श्वनाथ मन्दिर —

यह मुख्य मदिर परकोटे के मुख्य द्वार सूरज पोल के भीतर प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है । यह मदिर विशाल जगह मे बना हुआ है । मदिर के बाहर दोनो तरफ नवनिर्मित दीप स्तभ हैं। दोनो तरफ सवार सहित भीमकाय हाथी कृत्रिम होते हुए भी सजीव से प्रतीत होते हैं। प्रवेश द्वार मे प्रवेश करते ही सामने ऊंचे पद्मासन पर विराजमान है नाकोडा पार्श्वनाथ की भव्य मूर्ति दर्शनार्थियो को दृष्टिगत होती है। यह नयनाभिराम श्यामवर्णी प्रतिमा तेवीस इच की है। यह मन्दिर तीन शिखरों वाला है। मदिर में मूल गर्भगृह गूढ मण्डप, सभा मण्डप, नवचौकी, शृंगार चौकी और झरोखे हैं। मदिर के चौकमे दाहिनी तरफ दो गभगृह हैं और इसी तरफ जालीदार बरामदे मे श्यामला पार्श्वनाथ की देहरी तथा उसके पास ही पचतीर्थ मदिर है। चौक के बायी-तरफ की शाल मे केसरघर है और इसी शाल के एक कमरे मे कई मूर्तिया विराजमान है । मदिर तथा सभी मण्डप प्रकाश से परिपूर्ण है ।

मदिर के शिखर का पहिले जीर्णोद्धार हो चुका था। वर्तमान मे मूलगर्भगृह वेदी, गूढ मण्डप श्वेत-सगमर्मर पाषाण से नया बना है । इससे भी प्राचीनता समाप्त सी हो गई है । सभामण्डप, नवचौकी और शृंगार-चौकी का फर्श सफेद और काले रग के पत्थर से नये बने हैं। इस मदिर मे प्राचीनता के नाम पर केवल सभामण्डप, नवचौकी और शृंगारचौकी की ऊपर की दीवारें रह गई हैं। इतिहास और कला सरक्षण की दृष्टि से त्याग देवें तो इस मदिर का जीर्णोद्धार नयनाभिराम भव्य और मनोरम हुआ है ।

जीर्णोद्धार के नाम से प्राचीनता का लोप हो जाने से कला और शैली की दृष्टि से यह मदिर कितनी शताब्दी पूर्व का है निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता नवचौकी, शृंगारचौकी की दीवारो तथा प्राप्त लेखो से यह निश्चित है कि इसकी रचना ३५० ४०० वर्ष पुरानी अवश्य है ।

कई लेखकों ने यह उल्लेख किया है कि मूल नायक के पद्मासन पर वि० स० ११३३ का शिलालेख है किन्तु मुझे खेद है कि यह प्राचीन लेख आज प्राप्त नही है । पुराने और अनुभवी पुजारी से पूछताछ करने पर मालूम हुआ, यहां एक लेख अवश्य था किन्तु जब गर्भगृह सगमरमर का बना तो प्राचीन पद्मासन के ऊपर ही बना । इससे वह

लेख इनके भीतर ही रह गये। यह है जीर्णोद्धार के समय सावधानी न रखने का नमूना। अस्तु।

मूर्ति की प्राचीनता —

मूलनायक पार्श्वनाथ की मूर्ति बहुत ही भव्य, दर्शनीय नेत्रानन्ददायिनी, अतिशयपूर्ण और कलामय है। मूर्ति काले पाषाण की है। मूर्ति पर कोई लेख नहीं है फिर भी कला की दृष्टि से यह मूर्ति ९–१०वी शताब्दी की प्रतीत होती है। जनश्रुति के अनुसार यह मूर्ति ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी की प्रतीत होती है। इस श्रुति का कुछ अंश मैंने तीसरे अध्याय में वीरमपुर और नाकोडा के प्रसंग में उद्धृत किया है। मूर्ति के संबंध में पूर्ण 'जनश्रुति'' के साराश से गया लिख रहा हूं।

जनश्रुति में चाहे तथ्य एव सत्यता हो या न हो, परन्तु जनमानस में यह अमिट रूप गहराई से पैठ चुकी है कि यह मूर्ति प्राचीनतम है। नाकोडा में वीरमपुर से लाई गई है, इसलिये नाकोडा पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। इस मूर्ति की पुन प्रतिष्ठा खरतगच्छाचार्य श्री कीर्तिरत्नसूरि के करकमलो से हुई है और इन्ही आचार्य द्वारा स्थापित 'नाकोडा भेरू' अतीव चमत्कारी तथा मनोकामना पूरक है।

तीर्थ प्रसिद्धि का मापदण्ड केवल मूर्ति की प्राचीनता ही नही होती उसकी प्रसिद्धी मे यह आवश्यक है कि मूर्ति प्रभावशाली हो और अधिष्ठायक देव जागरूक हो। नाकौडा तीर्थ की प्रसिद्धि में यह दोनो ही तत्त्व प्राप्त है।

जैन साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान श्री अगरचदजी नाहटा ने नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ शीर्षक लेख में लिखा है 'नाकोडा तीर्थ का प्राचीन शान्तिनाथ मदिर शखलेचा शाह माला ने बनवाया था अर्थात वह मदिर खतर-गच्छ का था और उसमे आगे चलकर पार्श्वनाथजी की प्रतिमा मूलनायक चमत्कारी स्थापित की गई। अर्थात नाकोडा पार्श्वनाथ का मूल मदिर खतरगच्छ का शातिनाथ जिनालय है।'

प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि, वीरमपुर की स्थापना वि० स० १५११ में हुई थी और शाति मदिर की प्रतिष्ठा स० ९५१८ जेष्ठ वदि ५ तथा महावीर की प्रतिष्ठा स० १५१८ माघ सुदि ५ को हुई थी। मेरे विचा-रानुसार १५१२ में पार्श्वनाथ की मूर्ति प्रकट हुई थी। ऐसी अवस्था में श्री नाहटाजी का यह मत स्वीकार्य नहीं हो सकता। सवत हैं यह मूर्ति वीरमपुर में नवीन मदिर बनवाकर अथवा किसी स्थान पर स्थापित की गई काला-न्तर मे सभवत १७वी शती के उत्तरार्ध मे महावीर, पार्श्वनाथ आदि की मूर्तिया जब पाताल-चैत्य मे स्थापित कर दी गई तो उस समय इस नाकोडा पार्श्वनाथ मूर्ति को मदिर मे मूलनायक के रूप मे स्थापित की गई जहा कि आज विराजमान है।

एक बात और है, मदिर के परकोटे के निकट ही एक प्राचीन मदिर के अवशेष प्राप्त है। कही यही तो वह प्राचीन मदिर नही है, जिसमे इस नाकोडा पार्श्वनाथ की मूर्ति को पहले स्थापित की गई हो और कालान्तर मे उस मदिर मे भग्न होने पर इस मूर्ति को वहा से हटा कर यहा विराजमान की गई हो, जहा आज पूजित है।

यह अनुसधान का विषय है और जिस स्थान पर म.दिर के अवशेष प्राप्त है उसके पास पास के स्थान की शोध होनी अपेक्षित हैं।

म दिरस्थ मूर्तियो का परिचय

नाकोडा पार्श्वनाथ मे मूलनायक के आस पास सफेद पाषाण की परिकर सहित पार्श्वनाथ की दो मूर्तिया हैं। इन दोनो की प्रतिष्ठा वि० स० २०१६ मे विजयहिमाचलसूरिजी ने करवाई थी इसमे से एक मूर्ति का निर्माण तखतगढ निवासी जवानमल साकलचद ने करवाया दूसरी मूर्ति का निर्माण वेलूर निवासी जवानमल गणेश मल ने करवाया और परिकर का निर्माण तखतगढवासी जवानमल साकलचद्र ने करवाया।

मदिर मे धातु की एक शातिनाथ पचतीर्थी है जिसकी प्रतिष्ठा वि० स० २०२६ मे विजयजिनसूरि ने की थी।

इसके अतिरिक्त विशाल तीर्थंकर की मूर्ति और नवपद यत्र हैं। इन दोनो पर कोई लेख नही है किन्तु ये दोनो इसी २१वी शताब्दी की प्रतिष्ठित है।

कीर्तिरत्नसूरि की मूर्ति

मूल गर्भगृह के बाहर के मडप में बाई ओर की छत्री में आचार्य कीर्तिरत्नसूरि की आकर्षक प्रतिमा विराजमान है। यह मूर्ति जैसलमेरी पीत पाषाण की है। आचार्य की मूर्ति के सिर पर पार्श्वनाथ की प्रतिमा उत्कीर्ण है। इस गुरुमूर्ति का निर्माण सा० जेठा की पुत्री रोहिणी श्राविका ने वि० स० १५३६ में करवाया था। यह रोहिणी कीर्तिरत्नसूरि की भतीजी थी।

जैसा कि पूर्व में प्रतिपादन किया जा चुका है कि इस नाकोडा पार्श्वनाथ मदिर मूर्ति की स्थापना इन्ही आचार्य कीर्तिरत्नसूरि के वरदहस्तो मे हुई थी।

कीर्तिरत्नसूरि की स्वतत्र दादावाडी होते हुए भी यह गुरुमूर्ति यहाँ कैसे स्थापित है। इस प्रकार के समाधान में जो एक रोचक घटना घटित हो चुकी है उसे यहा प्रस्तुत कर रहा हू

इस नाकोडा तीर्थ की व्यवस्था वि० स० १९६५ तक खतरगच्छ की भावहर्ष शाखा के श्रीपूज्य श्रीजिन-फलेन्द्रसूरिजी बालोतरा वालो के हाथ में थी। इन्ही पूज्यजी ने १९६५ में इस तीर्थ की समस्त व्यवस्था का भार तपागच्छीया साध्वीजी श्री को सौपा जो व्यवस्था करवाने में एकमना दत्तचित्त हो गई। सु दरश्रीजी को स्वप्न में आदेश दिया—'कीर्तिरत्नसूरि की गुरमूर्ति को वहा से लाकर यहा मेरे सामने विराजमान कराओ।' नाकोडा भेरू के इस आदेश का सु दरश्रीजी ने अक्षरश. पालन किया और इस गुरुमूर्ति को दादावाडी से उत्थापित कर यहा नाकोडा भेरू की मूर्ति के सम्मुख पुन महोत्सव के साथ स्थापित की।

स वत २०१६ में विजयहिमाचलसूरि ने इस छत्री पर स्वर्णकलश और ध्वज दण्ड की प्रतिष्ठा की।

मूल गर्भगृह के बाहर के म डप में दाहिनी ओर की छत्री में नाकोडा भेरूजी विराजमान हैं। खरतर-गच्छ के मान्यता प्राप्त अधिष्ठायक देव होने के कारण नाकोडा पार्श्वनाथ की स्थापना के साथ ही इनकी स्थापना आचार्य कीर्तिरत्नसूरि ने की थी। समय समय पर इस मूर्ति पर चोले चढते रहे इस कारण से वर्तमान समय में यह मूर्ति बडी ही आकर्षक और नेत्राल्हादक प्रतीत होती है।

भेरूजी की उक्त प्रतिमा बहुत ही चमत्कारी तथा अनेक प्रभावकारी चमत्कारों से परिपूर्ण मानी जाती है। आज लाखों लोग विश्वास से इनकी मान्यता करते हैं और मनोवाछित फल प्राप्त करते हैं। नाकोडा भेरू जागृत-देव हैं और आज सारे भारत मे नाकोडा भेरू के नाम से प्रसिद्ध है।

वर्तमान मे नाकोडा तीर्थ का जो सर्वाधिक विकास हुआ है उसके मूल मे समयसु दरजी का 'नितनाम जपो श्री नाकोडा' स्तवन तथा नाकोडा भेरू के चमत्कार ही हैं।

आदिनाथ म दिर

नाकोडा पार्श्वनाथ मदिर की पिछली तरफ श्री आदिनानाथ भगवान का शिखरबद्ध मदिर है। यह म दिर और इसका शिखर लाल रग के पत्थरो का बना हुआ है। शिखर के तीनो ओर कलापूर्णपुतलिकाए और देव-मूर्तिया बनी हुई है जो विभिन्न भावम गिमाओ, विविध रूपो, विभिन्न वाहनो तथा विविध वादियो से अलकृत हैं। इन पुतलिकाओ की शोभा कलाप्रिय दर्शनार्थी को सहसा अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। इस शिखर की स्थापत्य कला निश्चित रूप से पाच सौ वष पुरानी है।

इस म दिर मे मूलनायक के रूप मे श्वेत पाषाण की भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा विराजमान है। इस प्रतिमा पर कोई लेख नही हैं किंतु मूर्तिकला की दृष्टि से यह १५वी १६वीं शती की मूर्ति प्रतीत होती है। यह मंदिर मे गर्भगृह, सभामडप, रगम डप छहचौकी और शृंगारचौकी से युक्त है। इस म दिर के बाहर बायी ओर एक भूमिगृह है, जो प्राचीन है। म दिर के सम्मुख ही पडरीक गणधर की देहरी, बायी ओर चौमुखजी की देहरी, पीछे की ओर आदिनाथ की छत्री है। ये तीनो स्थान नवनिर्मित हैं।

मंदिर का निर्माण

जनश्रुति के अनुसार वि० स० १५१२ में लाछांबाई नामक श्राविका ने यह म दिर बनवाया था। इसी-लिये यह म दिर लाछाबाई शखवाल का म दिर भी कहलाता है। कहा जाता है कि यह लाछाबाई शखवाला गोत्रीय सघपति मालासा की बहिन थी। लाछाबाई के सबध मे निम्न किम्वदती प्रसिद्ध है।

'सोलहवी शताब्दी मे वीरमपुर मे लाछाबाई नामक एक भक्त श्राविका रहती थी जो विधवा थी। अधिक धन की स्वामिनी होने पर भी सन्तानहीन थी। धर्मनिष्ठ होने के कारण उसने विचार किया कि भगवान का

ऐतिहासिक जैन – तीर्थ नाकोड़ा

के

मूलनायक

तीर्थंकर पार्श्वनाथ
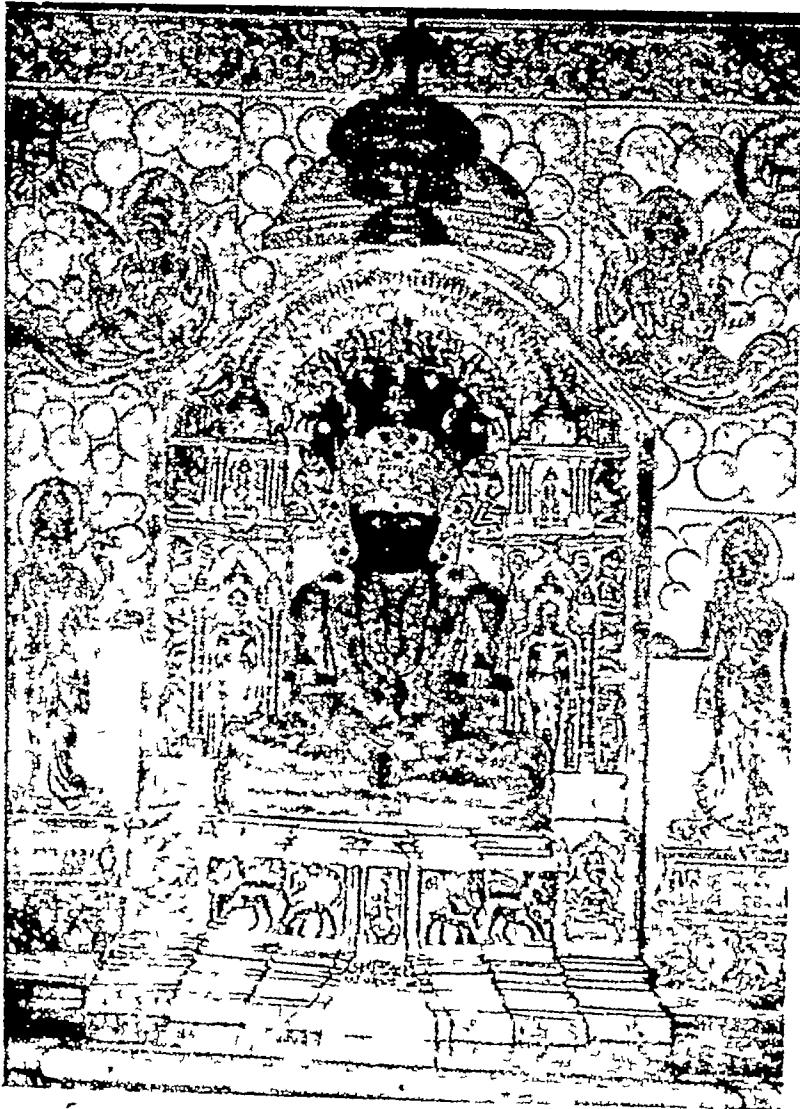
खेड़ – मन्दिर में ब्रह्माजी की मूर्ति

पचपदरा साल्ट के देवल का एक बाहरी दृश्य
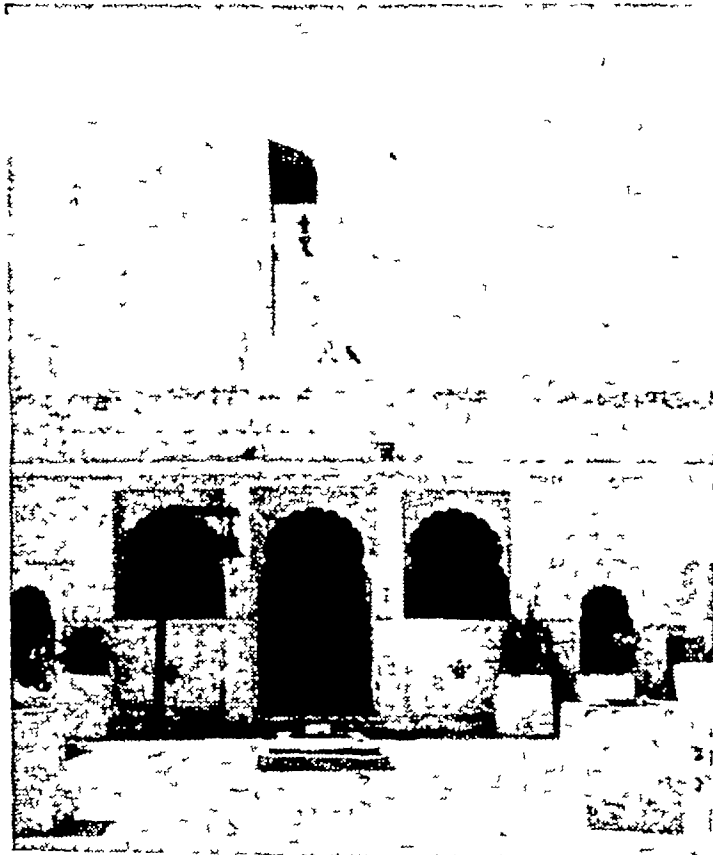
खेड़ के कलात्मक – स्तम्भ
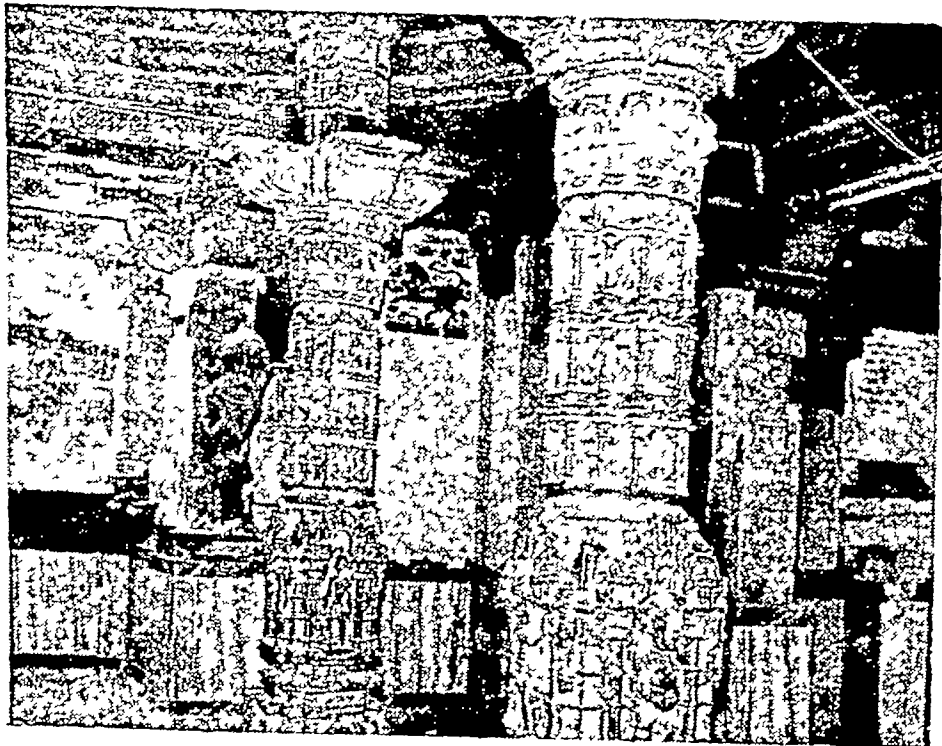
श्री आदिनाथ मन्दिर की नयनाभिराम छबि

प्राचीन खेड़ के वैष्णव मन्दिर

के

मुख्य आराध्य
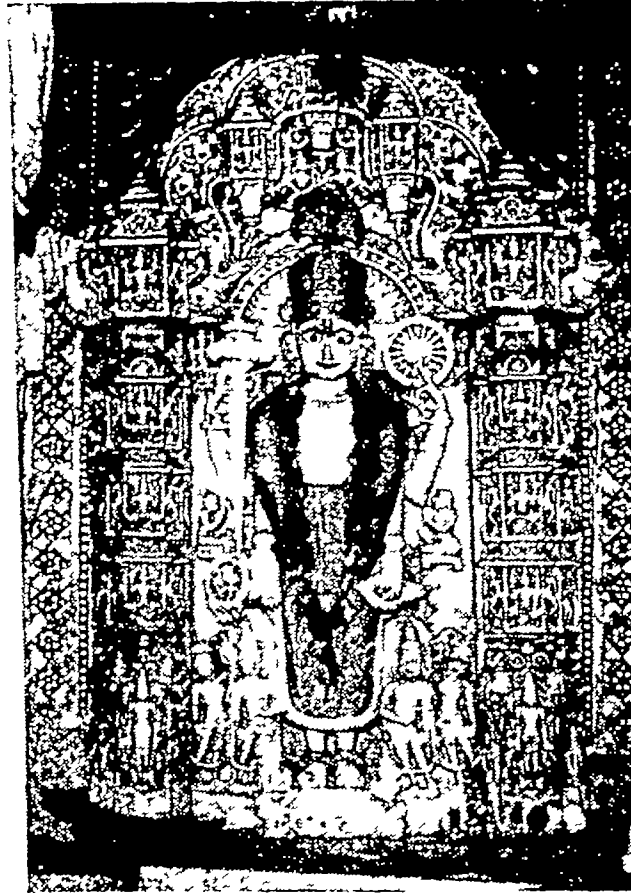
नाकोड़ा तीर्थ का एक विहंगम दृश्य
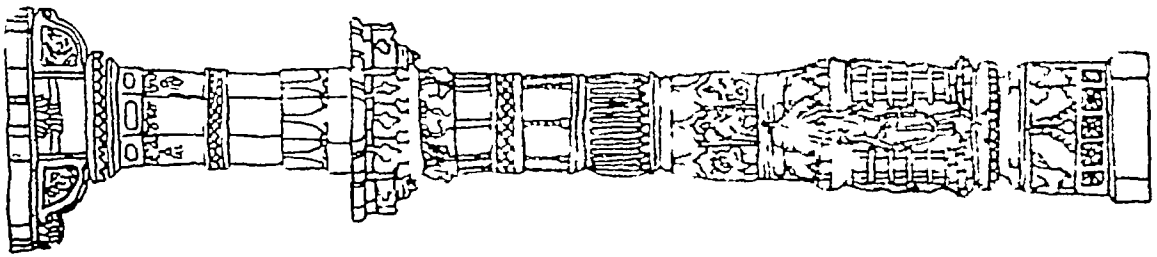
नाकोड़ा तीर्थ की दो कलात्मक प्रतिमाएँ
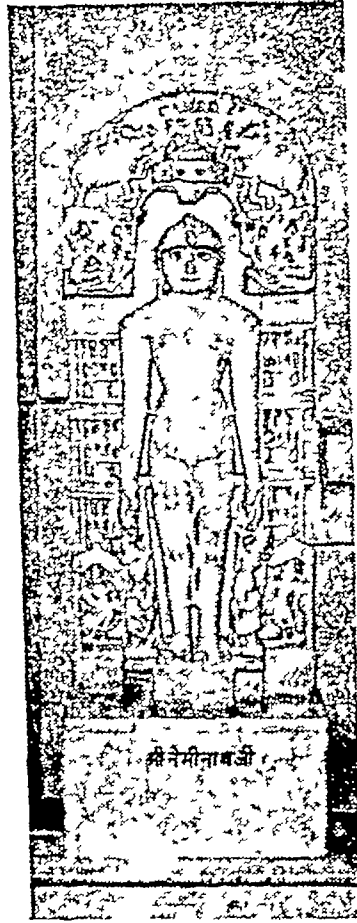
महाराजा मानसिंह जी (जोधपुर) द्वारा सम्मानित भांडियावास के
कविराजा बांकीदास और बुधजी आसिया अन्य कवि के साथ

म'दिर वनवाकर क्यो न धन का सदुपयोग कर लू । इन्ही विचारो से प्रेरित होकर उसने यह नूतन मन्दिर बनवाया और इस मन्दिर की प्रतिष्ठा स० १५१२ तपागच्छ के आचार्य हेमविमल सूरि ने से करवाई । मूल नायक की प्रतिमा सम्प्रति कालीन है, आदि आदि ।

इस दतकथा पर उहापोह उपेक्षित है । लाछावाई ने सोलहवी सदी मे वीरमपुर मे मन्दिर वनवाया । स० १५१२ मे इसकी प्रतिष्ठा हुई यहा तक कि दतकथा सत्य मानी जा सकती है । परन्तु वह तपागच्छ की थी ऐसी सान्यता युक्तिस गत प्रतीत नही होती क्योकि उस समय स खवालेचा गोत्र का समस्त परिवार खतरगच्छ का ही अनुयायी था । दूसरी वात आचार्य हेमविमल सूरि उस समय तक आचार्य ही नही वने थे । अत यह तपागच्छीय गुर्वावली के विरुद्ध होने से मान्य नही है ।

हेमविमलसूरि के नाम की कल्पना वि० स० २०२५ मे प्रकाशित 'नाकोडा पार्श्वनाथ तीर्थ मेवानगर परिचय' नामक पुस्तिका मे लेखक ने पृष्ट २० पर की हैं किंतु वह भ्रामक है । लेखाक ६० मे उल्लिखित स वत १५६२ की लिपी की अनभिज्ञता के कारण १५१२ समझकर ही उसने यह कल्पना की हैं, ऐसा प्रतीत होता है । अत १५१२ मे प्रतिष्ठा की कल्पना भ्रमक मात्र हैं ।

वस्तुत जैसा कि मैंने विमलनाथ मन्दिर के प्रसग मे ऐतिहासिक प्रमाणो के साथ प्रतिपादित किया है, तदनुसार यह मूस मदिर विमलनाथ का हो मन्दिर था जिसको वि स १५२४ मे लिगागोत्रीय शाह चापा ने वनवाया था और जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छाचार्य श्री लक्ष्मीसागरसूरि ने करवाई थी । कालातर मे स १६६७ के वाद विमलनाथ की मूर्ति के खण्डित होने पर, उसके परिकर की सभा मडप मे स्थान दे दिया गया और उसके स्थान पर आदिनाथ की प्रतिमा को मूलनायक के रूप मे विराजमान कर दिया गया । तव से लेकर आज तक लगभग ३०० वर्षों मे यह आदिनाथ मदिर के नाम से प्रसिद्ध है ।

आदिनाथ मन्दिर की मूर्तियाँ –

मूल नायक के आजू बाजू पीले पाषाण की दो प्रतिमायें विराजमान है । दोनो के लेख मूर्ति के पृष्ठ भाग मे उत्कीर्ण है । इनमे से एक मूर्ति स० १५१३ की और दूसरी सोलहवी सदी की है ।

प्राचीन मूलनायक विमलनाथ का परिकार गोखडे मे विराजमान है जिसमे आज विमलनाथ के स्थान पर स १६५१ मे प्रतिष्ठित अजितनाथ की मूर्ति विद्धमान है । परिकर के सवध मे विमलनाथ मन्दिर के प्रसग मे विस्तार से प्रकाश डाला जा चुका है ।

सभा मडप मे श्वेत पाषण की कार्योत्सर्ग मुद्रा मे दो मूर्तिया शातिनाथ मूर्ति और नेमिनाथ की है यह दोनों प्रतिमायें प्राचीन है । शातिनाथ मूर्ति पर उत्कीर्ण लेख लेखाक ४ से यह स्पष्ट है "वि. स १२०३ श्री वच्छक चैत्य में सोलिकिक वशज सद्धारण वराहपेपकु पापन सुत जेमल नादा देल्हा ने स्वमाता मोहिनी के साथ यह प्रतिमा वनवाई । इसकी प्रतिष्ठा "उरेशगच्छीय सिद्धाचार्य गच्छवाली ने करवायी ।"

नेमीनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख लेखाक ५ का सारांश है। "वि स १२०३ वैशाख सुदि १२ के दिन श्री वच्छक चैत्य मे मौलिकिक वंशज का उद्धारण वाराह पेपकु वासुदेव सहित शिणचद ने यह प्रतिमा बनवाई। इसकी प्रतिष्ठा सडेरकीय गच्छ के शातिभद्राचार्य ने करवाई।"

इन दोनो लेखो मे अकित "श्री वच्छकचैत्य" शब्द महत्वपूर्ण हैं। श्री वच्छकचैत्य कहा था। इसकी खोज अपेक्षित है।

सभव है ये दोनो मूर्तियाँ महेवा या किसी प्राचीन स्थान से लाकर यहा विराजमान की गई हो।

इनके अतिरिक्त सोलह प्रतिमायें और भी विद्यमान हैं। इनमे से एक मूर्ति पर लेख नही है, एक मूर्ति १५२४ की है, चार मूर्तिया १६वी शदी की हैं। इनके लेख मूर्ति के पृष्ठ भाग मे उत्कीर्ण हैं, एक मूर्ति १६०६की हैं, एक मूर्ति १६३२ की है, दो मूर्तियें १६५८ की हैं, पाच मूर्तियें १६६१ की हैं और एक मूर्ति २०१६ की है।

शातिनाथ मदिर :

सूरपोल मे प्रवेश करने पर बायी ओर शाँतिनाथ भगवान का विशाल मदिर है। इसे मालासा का मदिर भी कहते है। सगमरमर पाषाण की नवनिर्मित सीढिया पार करने पर शातिदायक भगवान के सहसा दर्शन होते हैं। यह मदिर यहा के सब मदिरो से विशाल, प्राचीन और कलापूर्ण हैं। यह मदिर गगनचुम्बी शिखर से अलकृत है। मदिर लाल रग के पाषाण का बनाहुआ है और शिखर, सवापाच-सौ वर्ष प्राचीन समक की मजबूत इन्टो से निर्मित हैं।

इस मदिर मे दो तोरण शोभित हैं। ये दोनो तोरण अत्यन्त सूक्ष्म कला मे परिपूर्ण है। रग-मडप मे प्रवेश करने से पूर्व ही प्रास्तर पर लक्ष्मी देवी की सुशोभना छवि उत्कीर्ण है और इसके नीचे हसपक्ति दृष्टिगत होती है। वस्तुत यह मदिर प्राचीन कला से ओत-प्रोत है।

यह मदिर, मूल गर्भगृह गुढ मडप, दो सभा मडप, नवचौकी और शृगार चौकी से युक्त अत्यन्त रमणीय प्रतीत होता है।

इस मन्दिर मे एक गर्भग्रह है और इस गर्भग्रह के भीतर तलघर है जिसमे लगभग ६० मूर्तिया, चरण आदि सुरक्षित हैं।

मदिर के चारो ओर आदिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी की नवनिर्मित चार देव-कुलिकायें हैं।

मदिर के दाहिनी तरफ लम्बी गेलेरी की दीवार पर शातिनाथ के बारह भवो मे सबधित कलापूर्ण विशाल शिल्प बन रहे हैं और बॉई तरफ लम्बी गेलेरी मे पार्श्वनाथ, जीवन मे सम्बन्ध तथा नदीश्वरद्वीप आदि के शिल्पो का निर्माण कार्य चल रहा है।

सघपति मालाशाह —

सघपति मालाशाह कारित यह शातिनाथ मदिर मालासा का मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह मालाशाह कौन थे ? किस के पुत्र थे ? किस गोत्र के थे ? आदि प्रश्नो के उत्तर 'शखवाल गौत्र का इतिहास' जो इसी पुस्तक के प्रथम परिशिष्ट के रूप मे दिया है और श्री पूनमचदजी नाहर के जैन लेख सग्रह तृतीय भाग के लेखांक २१५४ मे तथा कीर्तिरत्नसूरि स्तूप प्रशस्ति लेखाक ४९ मे विस्तार से प्राप्त होते है। यहा उसका मे सारांश मात्र प्रस्तुत करता हू।

जालोर के चौहान लखमसी शाखलो ग्राम मे जाकर कहने लगे। यहा की रटवाल गच्छीय रत्नप्रभसूरि के उपदेश से लखमसी ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। शखवाल ग्राम मे रहने के कारण लखमसी के वशज शखवाल कहलाये जो आगे जाकर अवटक-गौत्र के रूप मे प्रसिद्ध हो गया।

लखमसी के वशजो मे सा आववीर के पुत्र कोचरशाह प्रसिद्ध पुरुष हुए। इनके दो धर्म-पत्नियाँ थी। कोचरशाह ने शखवाल ग्राम मे जिनेश्वर भगवान का नवीन मन्दिर बनवाया और उसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छाचार्य श्री जिनेश्वरसूरि द्वितीय से वि० स० १३३१ मे करवाई और उसी समय कोचरशाह ने गच्छपरिवर्तन कर खरतरगच्छ स्वीकार कर लिया। यहा से कोचरसाह की वश परम्परा दो गच्छो मे विभक्त हो गई। बडी पत्नी के चारो पुत्र उपकेशगच्छ के अनुयायी रहे और छोटी पत्नी का पुत्र मूला खेरतरगच्छ का अनुयायी रहा।

कुछ समय पश्चात कोचरशाह शखवाल ग्राम छोड कर कोरटा मे आकर बस गये। शखवाल ग्राम से 'उचली आव्या' इसलिये इनका शखवालेचा गोत्र प्रसिद्ध हो गयी। कोचरसाह ने शखवाल ग्राम मे जैन प्रासाद बनवाया।

कोचरशाह का पुत्र मूला हुआ। मूला के दो पुत्र हुए। एक रतन रोलू, और दूसरा हिरा। रतन की पत्नी का नाम मोहिनी देवी था। जैसलमेर लेखाक २१५४ मे माणिकचद नाम प्राप्त होता है। रतन रोलू के दो पुत्र हुए आपमल्ल और देपमल्ल। आपमल्ल की भार्या का नाम कमलादे और देपमल्लकी धर्म-पत्नी का नाम देवलदे था। देपमल्ल के चार पुत्र हुए लवखा, भादा, केल्हा और देल्हा— देल्हा ही भविष्य मे कीर्तिरत्नसूरि बने। किसी बात मे राज विरोध होने के कारण स० १४६२ मे भादा आदि ने कोरटा छोड दिया। भादा बीसलपुर जा बसा। तीनो भाई लवखा, केल्हा और हुल्हा मेहवा आ बसे। कुछ वर्षो बात बडा भाई जैसलमेर जाकर रहने लगा। दोनो भाई केल्हा और देल्हा मेहवा ही रहे।

केल्हा की पत्नी का नाम केल्हणदेवी था। केल्हा के सात पुत्र हुए। १ धन्ना, २ मन्ना, ३ माला, ४ जग्गा, ५. डूगर, ६ गोरा और ७ शेषा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मालाशाह शखवालेचा गोत्रीय सा० केल्हा के तीसरे पुत्र हैं और आचार्य-कीर्तिरत्नसूरि के भ्रात-पुत्र हैं। वि० स० १४६७ मे जब कीर्तिराज उपाध्याय को जैसलमेर मे आचार्य जिनभद्रसूरि

ने आचार्य पद प्रदान कर कीर्तिरत्नसूरि नाम रखा था तब मेहवा से आकर सा० लखा और सा० केल्हा ने ही आचार्य पद का महान महोत्सव किया था ।

वि० स० १५११ मे वीरमपुर आवाद हो जाने के बाद मालाशाह मेहवा छोड कर वीरमपुर मे आकर बस गये ।

मालाशाह के चार पुत्र– साडा, भाडा, नोडा और चुडा ।

कहा जाता है कि मेरे प्रधान शिष्य लावण्यशीलोपाध्य का मेरे सन्मुख ही स्वर्गवास हो जायेगा । यह जानकर कीर्तिरत्नसूरि को हार्दिक दुःख हुआ । अपने छोटे भाई की मानसिक व्यथा देख कर सा० केल्हा अपने चारो पौत्रो साडा, भाडा, नोडा और चूडा को साथ लेकर आचार्यश्री के पास आया और उनसे निवेदन किया– आचार्य । आप दुखी क्यो होते हैं । ये चारो पौत्र- मालाशाह के पुत्र आपके सामने हैं, आपको जो प्रिय लगे उसे स्वीकार करें । कीर्तिरत्नसूरि ने उनके भविष्य को देखा तो उन्हे प्रतीत हुआ कि इनमे से कोई सघपति होगा । कोई अपूर्व मन्दिरो का निर्माता होगा अत, उन्होने मालाशाह के चारो पुत्रो मे से किसी को भी अगीकार नहीं किया ।

मालाशाह के प्रथम पुत्र साडा ने दानशाला खुलवाई । दूसरा पुत्र सा० भाडा भविष्य मे मेहवा छोड कर बीकानेर जाकर बस गया । बीकानेर में सा० भाडा ने एक गगनचुबी शिखर युक्त विशाल मदिर बनवाया जो आज 'भाडासनजी का मद्रिर' के नाम से प्रसिद्ध है । तीसरे पुत्र सा० नोडा ने सघ निकाला और चौथे पुत्र चूडा ने दानशाला खुलवाई ।

कीर्तिरत्नसूरि ने स्तत्-प्रतिशत् लेखाय ४९ में लिखा है–' वीरमपुर नरेश वीदा के आदेश से वि स १५१४ मे सा० केल्हा अपने पुत्रो-स०वन्न, सा० सन्ना, सा० माला, सा० गोरा, सा० डूंगर सा० सेवराज सा० भादा के पुत्र सा० भोजा, सा० लक्खा, सा० गणदत्त पुत्र सा० माडण, सा० जगा आदि समस्त परिवार ने तीर्थयात्रा करने हेतु विशाल सघ निकाला । इस सग मे अनेक स्थानो के स घ सम्मिलित हुए थे । इस संघ ने शत्रुज्य, गिरिनार आदि अनेक तीर्थों की यात्रा कर स घपति पद प्राप्त किया । इसके पश्चात् वीरमपुर मे शांतिनाथ भगवान का महाप्रसाद बनवाया ।

प्रसग को देखते हुए यह स्वत सिद्ध है कि यह सघ सा० केला ने अथवा उनके पुत्र मालाशाह ने निकलवाया था और सघपति पदवी भी प्राप्त की थी । वि स १५१४ की सघ यात्रा के कुछ समय पश्चात ही सा. केल्हा के पुत्र मालाशाह ने वीरमपुर मे शातिनाथ का यह विशाल मन्दिर बनवाया ।

मालाशाह ने यह विशाल और भव्य मन्दिर क्यो बनवाया, इस सबध मे एक बड़ी ही रोचक घटना का उल्लेख मिलता है जो प्रामाणिक सी प्रतीत होती है ।

कहा जाता है "मालाशाह की मातुश्री केल्हणदेवी अन्य स्त्रियो के साथ भगवान के दर्शन करने मन्दिर मे गई थी । दर्शन करने के बाद आपस मे बातें करते हुए केल्हणदेवी ने सहजभाव से कहा-"मन्दिर तो बहुत ही

सुन्दर है परन्तु कुछ नीचा है। यदि ऊचा होता तो कितना रमणीय लगता।" केल्हणदेवी की बात सुनकर पास ही खडी एक स्त्री ने ताना मारते हुए कहा–"दोष निकालना तो सब को आता है, अगर सुन्दरता की तुम्हे चाहना है तो बना दो न अपनी मन पसन्दगी का एक सुन्दर मन्दिर। उस स्त्री के ये मर्मवाक्य मालाशाह की माता केल्हणदेवी के हृदय मे तीर की तरह घुम गये। बिना उत्तर दिये वह अपने घर आ गई और उदास होकर बैठ गई।

मालाशाह ने अपनी माता को उदास और दुखी देखकर आग्रह पूर्वक इसका कारण पूछा। माता ने अपने पुत्र को सारी घटना सुना दी। माके मुझसे दु ख का कारण सुनकर, मालाशाह ने तत्काल ही कहा– मा मेरे रहते हुए तुम क्यो दु खी होती हो। उठो, प्रसन्नता से मुझे अर्शीवाद दो मे शीघ्र हो तुम्हारी इच्छानुसार विशाल मदिर बनवायेगा मालाशाह ने उसी दिन नया मदिर बनवा ने का कार्य प्रारम्भ कर दिया और अपनी माता की इच्छा-नुसार ही सुन्दर और विशाल मदिर बनवाया। कुछ ही समय मे मदिर का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर वि० स० 1518 मे बले महोत्सव के साथ इस मदिर की प्रतिष्ठा करवाई और मूलनायक के रुप मे शाँतिनाथ भगवान को विराजमान किया।

प्रतिष्ठा होने के बाद मालाशाह की माता ने उम ताना मारने वाली महिला से उसका आभार मानते हुए कहा - बहन। तुम्हारे उन शब्दो के कारण ही मुझ से यह महान् कार्य सपन्न हो सका, एतदर्थ मे हृदय से तुम्हारी बहुत ही आभारी हू। "यह कहकर उस महिला को एक सोने की जीभ भेंट दी।"

इस घटना में प्रतिष्ठा का जो सवत 1518 दिया है वह युक्ति सगत प्रतीत होता है। कर्हतिरत्नसूरि स्तूप प्रशस्ति के अनुमार स, 1514 मे सघ निकाला गया। और उसके पश्चात् शातिनाथ मदिर के निर्माण का उल्लेख है अत यह स्वाभाविक है कि इस विशाल मदिर के निर्माण मे ३–४ वर्ष अवश्य लगे होंगे।

यह निश्चित है कि वि म. 1518 ज्येष्ठ वदि 5 के दिन इस मदिर की प्रतिष्ठा जैसलमेर ज्ञान भडार के सस्थापक खरतरच्छाचार्य श्री जिनभद्रसूरि के पट्टधर श्री जिनचद्रसूरि ने करवाई थी।

इस सवत्, मरस तिथि की पुष्ठि लेखांक 31, 32 से भी होती है। घटनाओ को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि मालाशाह ने अपने पूज्य पिता की उपस्थिति और उन्ही के निर्देशानुसार यह मदिर बनवाया था। प्रतिष्टा के समय सा केल्हा विद्यमान थे। श्री पूरणचद नाहर के "जैन लेख सग्रह" भाग 3 के लेखाक 2123 सेमीसा, केल्हा की विद्यमान सदेह रहित है।

आश्चर्य है कि वर्तमान मे उस समय का कोई शिलालेख आदि प्राप्त नही हैं।

मूर्ति परिवर्तन :-

कालान्तर मे मूलनायक की मूर्ति शायद भग्न होने पर वहा से हटा दी गई। वि स. 1690 की प्रतिष्ठित शातिनाथ, चद्रप्रभ और सुपार्श्वनाथ की मूर्ति मूर्तिया उस स्थान पुन विराजमान की गई।

इन तीनों मंदिरों से संलग्न अनेक परिकर मंदिर, चरणपादुकायें व भूमिगृह इत्यादि हैं जिनमें प्राचीन प्रतिमाएँ सुरक्षित हैं। आसपास की खंडित अथवा खुदाई से प्राप्त प्रतिमाओं को भी सुरक्षित रखा गया है, तथा मंदिर की संपूर्ण व्यवस्था जिसमें विशाल धर्मशालाएं, भोजनशाला, दादाबाड़ियें, पहाड़ों पर चरण पादुकाओं पुष्प हेतु उद्यान, गोशाला, कर्मचारियों व व्यवस्थापकों हेतु निवासस्थान, डाकघर, मोदीखाना, शोभा यात्रा के उपकरण, रथ इत्यादि कुआ व जल व्यवस्था, चिकित्सालय, सभा भवन, व अन्य विकास व व्यवस्था योजनाऐं एक अलग विषय है, जिसका अलग से विस्तार से वर्णन किया जा सकता है यहां इतना ही उल्लेख पर्याप्त होगा कि समस्त जैनतीर्थों में यात्रियों को इस तीर्थ की व्यवस्था व प्रगति विशेष रूप से प्रभावित करती है और तीर्थ की बढ़ती हुई लोकप्रियता का यह भी एक कारण है।

– भूरचन्द जैन

अदम्य प्रहरी--सिवाना दुर्ग

राजस्थान के कण कण मे शोर्य, वीरता, साहस और बलिदान की अनेको गौरव गाथाएं विद्यमान है। जिसके कारण आज भी राजस्थान के विरोचित इतिहास की सर्वत्र प्रशंसा होती है। मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करना मान और सम्मान की रक्षा करने के लिए आत्मदाह करना, स्वामी की रक्षा के लिए लाडलेलाल को तलवार की धार पर सुलाना, व्यभिचारियो एव भ्रष्ट शासको के दमन को दवाने को कडा मुकाबला यहा के वीर योद्धाओ ने समय समय पर किया। जिसके बलिदान के पश्चात् उनकी स्मृति मे बने ऐतिहासिक स्मारक आज भी मूकवाणी से उन महान विभूतियो एव शूरवीरो की याद को तरोताजा करने मे एक मात्र प्रतीक बने हुए है। ऐसे स्थान राजस्थान प्रदेश मे एक नही, अनेको है जिनमे से एक स्थान राजस्थान के भारत-पाक सीमावर्ती बाडमेर जिले का सिवाना दुर्ग है। जिसके पवित्र पाषाणो मे स्वतत्रता की रक्षा के लिये राव चन्द्रसेण की कहानी गूजती है, राठौड कल्याणसिह का बलिदान बोलता है, वीर दुर्गादास की स्वामी भक्ति इसी किले के पास की छप्पन की पहाडियो मे यादगार बनी हुई है। भारत की स्वतत्रता की लडाई लडने वाले कई स्वतत्रता सेनानी इस किले की चार दीवारी मे बन्दी के रूप मे रहे। इसी कारण सिवाना किले का प्रत्येक कण स्वतत्रता का प्रतीक और पूजनीय बना हुआ है।

सिवाना दुर्ग को बनाने एव गाव को बसाने के सम्बन्ध मे ऐतिहासिक प्रमाण तो उपलब्ध नही है। परन्तु कुछ अस्पष्ट शिलालेखो एवं जनश्रुतियो ने इसकी स्थापना के सम्बन्ध मे बताया है कि इस दुर्ग का निर्माण परमार राजा भोज के लडके वीरनारायण जिसका नाम कुम्भनाथ था ने वि० स० १०११ मे करवाया था। जो आज भी सिवाना की पहाडी पर सिसकते पाषाणो को लिए खडा है। इस किले के नीचले भाग पर सिवाना नगर को बसाया गया है। परमार राजा वीरनारायण के पश्चात् परमारो की सात पीढियो तक इस क्षेत्र पर शासन रहा। उसके पश्चात् नाडोल के चौहान कीर्तिपाल का अधिकार वि० स० १२१८ से १२३९ तक रहा। चौहान कीर्तिपाल के वशज सोनगरा कान्हड देव तक का अधिकार इस दुर्ग पर रहा। सोनगरा चौहान कान्हडदेव के समय मे दुर्ग की रक्षा चौहान सातलदेव एव शीतलदेव द्वारा की जाती रही। वि० स० १३६५ मे बादशाह अल्लाद्दीन खिलजी ने अपने सैनिक कमरूद्दीन द्वारा दोनो दुर्ग रक्षको को मरवाकर दुर्ग पर अपना अधिकार कर लिया। इस युद्ध मे इन दोना दुर्ग रक्षकों के मामा महेवा के राव तीडा भी वीरगति को प्राप्त हुए। बादशाह अल्लाद्दीन खिलजी के हाथो से यह दुर्ग निकलकर मालानी मारवाड के वीर राठौड मल्लीनाथ के भाई जेतमाल के कब्जे मे चला गया। राठौड जेतमाल का इस दुर्ग पर

वि० स० १८३२ से १८३५ तक आधिपत्य रहा। वि० स० १५९८ में राव मालदेव ने इस दुर्ग पर विजय प्राप्त की जिनका शिलालेख अब भी किले मे विद्यमान हैं ।

वि० स० १६२३ मे राव चन्द्रसेण को मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार न करते हुए अपनी घोड़ियो पर बादशाही अंक (निशान) न लगाने और सम्मव स्वीकार न करने के फलस्वरूप मुगल सैनिको से सदैव सघर्ष करना पडा। राणा प्रताप ने जिस प्रकार कठिन घडियो मे स्वतन्त्रता सग्राम लडा था उसी प्रकार चन्द्रसेण भी लडा और अ तिम दम तक मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नही की और अपने जीते जी बादशाह की अधीनस्ता मे चला गया सिवाना दुर्ग को वापिस अपने अधिकार मे कर लिया । वि० स० १६३१ मे सिवाना दुर्ग अकबर बादशाह के अधिकार मे चला गया था जिसे राव चन्द्रसेण से लडकर वापिस वि० स० १६३६ मे अपने अधिकार मे कर लिया । माघ सुदी सप्तमी १६३७ मे स्वतन्त्रता सग्रामी राव चन्द्रसेण का स्वर्गवास हो गया । चन्द्रसेण के स्वर्गवास के समाचार सुनकर अकबर बादशाह ने सुख की सास ली और सिवाना के किले पर इनके भतीजे राव कल्याणसिंह (राव कल्ला) ने बादशाह अकबर के शाही दरबार की चाकरी को ठोकर मारकर वीरता एव बुलन्दी के साथ अपना अधिकार जमा लिया । इस सम्बन्ध मे विभिन्न इतिहासो मे राव कल्ला की वीरता का उल्लेख मिलता हैं कि वह अकबर के दरबार मे चाकरी पर था । यहा पर बादशाह अकबर के पुत्र शहजादा सलीम ने राव कल्ला की बहन से शादी का प्रस्ताव कल्ला के समक्ष रखा । जिसे राव कल्ला ने बिना किसी भय से ठुकरा दिया । जिसके परिणामस्वरूप शाही दरबार मे बादशाही सैनिको एव कल्ला के बीच तलवारे खिच गई । वीर कल्ला ने भरे दरबार मे एक मुगल सैनिक का सिर धड से अलग कर दिया और वहाँ से रवाना होकर सिवाना आकर, सिवाने दुर्ग पर अपना अधिकार जमाकर रहने लगे । इस घटना पर बादशाह अकबर अत्यधिक क्रोधित हुए और राव कल्ला को पकडने के लिये जोधपुर के मोटा राजा उदयसिह को सिवाना दुर्ग पर वि० स० १६४४ मे हमला बोलने का हुक्म दिया ।

जोधपुर के मोटा राजा उदयसिह ने सिवाना दुर्ग पर आक्रमण बोल दिया लेकिन सिवाना दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था अत्यधिक कडी होने के कारण मोटा राजा उदयसिह को एक वर्ष तक सघर्ष करना पडा । लेकिन फिर भी उन्हे सफलता नही मिली । इस किले मे निवास करने वाले नाई पोलिया जो सदैव किले के गोपनीय मार्ग से रात्रि मे आता जाता था, एक दिन मोटा राजा उदयसिह के सैनिको ने उसे किले के नीचे अनजान आदमी समझ कर पकड लिया । मोटा राजा उदयसिह की चतुराई के कारण पोलिया नाई ने किले के गुप्त द्वार पाढल्ली की जानकारी दी और अपने सहयोग से दुश्मन को किले मे प्रवेश करवा दिया । जिसके कारण किले मे भयंकर युद्ध छिड़ गया । [illegible] सेना की भारी तादाद पर भूखे शेर की भाति टूटने वाले राजपूत अ तिम दम तक मातृभूमि की रक्षा करने हेतु लडते रहे । इसी युद्ध मे राव कल्ला भी शहीद हुए । राव [illegible] का सिर कटने के पश्चात् भी वह बिना सिर के दुश्मनो से लोहा लेते रहे और उसने [illegible] मातृभूमि की भेंट चढा दिया । वि० स० १६४५ [illegible] दिन दुर्ग फिर अकबर की शाही सेना के अधिकार मे चला गया ।

सिवाना दुर्ग एक ऊ ची पहाडी पर स्थित है जिसके चारो तरफ बडे-बडे गुम्बज बने हुए है। पहाडी की ढालानदार चढाई के कारण इस पर चढना अत्यधिक मुश्किल है। किले के अन्दर पीने के पानी के लिए विशाल सुन्दर तालाब बना हुआ है। किले के मुख्य द्वार के पास के बुर्जो का निर्माण सुन्दरता की दृष्टि के साथ साथ युद्ध कौशलता की दृष्टि से निर्मित किया हुआ है। जिसकी ओट मे बैठकर नीचले भाग मे खडी दुश्मन की सेना को करारी मार आसानी से दी जा सकती है। इसी किले के ऊपरी भाग पर तत्कालीन शासको के निवास स्थानो के भग्नावशेष अब भी खडित स्थिति मे विद्यमान हैं।

यह स्थान वीर राठौड दुर्गादास की पदधुली से भी पवित्र हुआ है। जिन्होने अपने स्वामी जोधपुर के महाराजा अजीतसिह की दुश्मनो से रक्षा करने के लिए इस किले का एव इसके पास की छप्पन की पहाडियो का सहारा लिया था। राजस्थान के स्वतन्त्रता सग्रामी लोकनायक जयनारायण व्यास को भी इस किले मे बन्दी बनाया जाकर रखा गया था। किले की मुख्य पोल के बाहर जहा राव कल्याणसिह जू जकर शहीद हुए थे। उस स्थान पर स्मारक बना हुआ है जो आज भी दर्शनीय ही नही श्रद्धा स्थल बना हुआ है।

ऐतिहासिक स्थल

जूना

जूना किराडू या जूना बाहडमेर इस प्रदेश की परमारो, चौहानो और राठोडो के प्राचीन और मध्य-कालीन समय से राजधानी रहा है। यहा के भग्नावशेषो मे आदिनाथ के जैनमन्दिर के अतिरिक्त दो अन्य मन्दिरो के चिन्ह पाये जाते हैं। आदिनाथ मन्दिर का सुन्दर सभा-मण्डप साल-डेढसाल पूर्व कुछ अबोध और नादान सैनिको द्वारा तोड डाला गया। इस मन्दिर के आधारस्तम्भो पर वि स १३५२, १३५६ के तीन शिलालेख अकित है, जिनमे प्रथम लेख सोनगरा सामन्तसिह का है, जिसे बाहडमेर का महाराजा बतलाया गया है।

जूना के पहाडो पर कुछ प्राचीन दुर्ग भी बने हुए हैं, जो प्राचीन परमारो और चौहानो की की देन है। वि स १६४० तक यही स्थान बाहडमेर के नाम से जाना जाता था और औरगजेब के समय वि स १७४४ के लगभग यही पर दुर्गादास राठौड का निवास था। दुर्गादास ने यही पर शाहशाह औरगजेब के पौत्र, अकबर के पुत्र और पुत्री बुलन्द अख्तर और सफियतुन्निसा को रक्खा था। जूना के इन प्राचीन दुर्गों की खोज और अरोर ही चौहानो की मरूदेशीय राजधानिया थी। कर्नल टाड के अनुसार वि स १०८२ (ई स १०२६) मे महमूद गजनवी के द्वारा गुजरात जाते समय चौहानो के इस दुर्ग का भी विध्वस किया गया। टाड साहब ने इसे हयदाज्य की प्राचीन राजधानी भी लिखा है।

आज जूना के सूने देवमन्दिरो और दुर्गों का केवल ऐतिहासिक और प्राकृतिक-महत्व ही बाकी है। जन-साधारण के लिये और कलाप्रेमियो के लिये यहा की सामग्री अब उतना महत्व नही रखती जितना कि कभी रखती थी। पुरातत्व और ऐतिहासिक शोध की दृष्टि से अभी जूना का महत्व पर्याप्त है। वि स की दसवी ग्यारवी शताब्दियो मे जूना की स्थिति अवश्य रही। सम्भवत मरुमण्डल (मारवाड) के नवदुर्गो मे से एक दुर्ग किराडू यही पर विद्यमान था। वि. स १०३० और १०५२ के बीच मे धरणीवराह या धरणीधर यहा का राजा था, जिसका राज्य आबू से किराडू तक विस्तीर्ण था। ख्यातो और एक प्राचीन कवित्त के अनुसार इसने अपना राज्य अपने भाईयो मे बाट दिया था। इस कथन की प्रमाणिकता को विवादग्रस्त माना जाय, तब भी धरणी-वराह के द्वारा यहा का शासक होना एक निर्विवाद तथ्य है।

कपालेश्वर मदिर

बाडमेर से दक्षिण-पश्चिम मे तीस मील की दूरी पर कथित पाडवो के वनवास की क्रीडास्थली से युक्त चौहटन, नामक कस्बा है, जिसकी पहाडियो के आधे मार्ग मे तीन शिवमन्दिरो के अवशेष पाये जाते है। इनमे से प्रथम जो नवीनता लिये हुए है उसमे एक समाधिगृह, एक सभामडप और दो ड्योढीदार द्वार हैं, जिनमे से एक स्तम्भ पर सोनगरा कान्हडदेव के समय वि० स० १३६५ का शिलालेख अकित है।

इसके उत्तर मे एक अन्य मन्दिर के द्वार पर सप्त फणाच्छादित लकुलीश के मस्तक की रोचक और पवित्र अवस्थिति है। इसके स्तम्भो और शिखर भागो के निरीक्षण के आधार पर इसका समय वि० स० की बारहवी से चौदहवी सदी तक माना जाता है। वि० स० १३६५ मे उत्तमराशि के शिष्य धर्मराशि ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था। यहा यह ज्ञात रहे कि ये दोनो साधु लकुलीश शैव सम्प्रदाय मे अनुयायी थे। मेवाड के एकलिंग का पुजारी हारीतराशि भी इसी सम्प्रदाय का पूर्ववर्ती साधु था। लकुलीश शिव के अवतार माने जाते है।

तीसरा मदिर भी इसी समय के आसपास मे बना बतलाते हैं। इसके तीन ड्योढी (औसारे) दार द्वार हैं। इसके शिखर और उपर्युक्त द्वार धराशायी होने की प्रतीक्षा मे है। इसके समाधिगृह के बन्द द्वार पर अलकृत शिवलिग का रोचक और आश्चर्यजनक पाषाणोत्कीर्ण अकन पाया जाता है, जिसके एक ओर पार्श्व मे पुरुष और दूसरी ओर नारी है। इन दोनो के द्वारा शिवलिग पुष्प-मालाओ से सुसज्जित किया गया है। इस मदिर के चारो ओर मध्य मे शिव, दायी ओर ब्रह्मा और बायी ओर शिव का अकन किया गया है। यहा दो पहाडी चट्टानो की मध्यभूमि मे कपालतीर्थ नामक कुण्ड और कपालेश्वर के (शिवमन्दिर के) स्थान हैं। कपालेश्वर का यह शिवमन्दिर इस समय भग्नावशेषो मे ही अपना अस्तित्व रखता है, पर यह कभी बडी प्रभावशाली पुण्यस्थली रहा है। कपालेश्वर के एक मील आगे 'विष्णु पगलिया' नामक पवित्र स्थान है, जहा भगवान विष्णु के चरणचिन्ह पूजे जाते हैं। इन स्थानो के आसपास मे प्रति वर्ष सोमवती अमावस्या को एक मेला लगता है। इसी तरह हर एक बारहवे वर्ष मे एक विशाल मेला लगा करता है, जिसमे दूर-दूर